Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112575

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

RT-0669

112575

६ वर्ष ५
जून
१९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-पाठकों से

दोस्ती के हाथ

प्रिय भारतीय मित्रो !

जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारत स्थित व्यापार-दूतावास की ओर से हम हिन्दी भाषा में भी सूचना-पत्रिका के प्रकाशन का शुभारम्भ कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास हमारी अंग्रेज़ी-बुलेटिन के पाठकों के निरन्तर आग्रह का परिणाम है। हम आशा करते हैं कि हमारा यह नया प्रयास आप के महान देश में नये मित्रों की परिधि बढ़ाने में तथा हमारे दोनों राष्ट्रों की मैत्री को और सुदृढ़ आधार प्रदान करने में सहायक होगा।

अपने नये पाठकों की जानकारी के लिए अपने देश से संबंधित कुछ विवरण और भारत से अपने व्यापार-संबंध की कुछ तफ़सील देने की हम यहाँ अनुमति चाहेंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र जर्मनी के पूर्वी भाग में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १०७८३४ वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या लगभग १ करोड़ ७५ लाख है। इसकी राजधानी बर्लिन है जो हमारे देश के ठीक मध्य में स्थित है। हमारे देश के अन्य बड़े नगरों में लइपजिग एक नगर है जहाँ साल में दो बार अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के व्यापारिक मेले लगते हैं। ड्रेसडन नगर जर्मन कला और संस्कृति की सुप्रसिद्ध परम्पराओं का केन्द्र है। गत महायुद्ध में यह नगर ध्वस्त हो चुका था। उसके बाद इसका नये सिरे से नव-निर्माण किया गया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र औद्योगिक दृष्टि से बहुत ही आगे बढ़ा हुआ देश है। योरप की औद्योगिक शक्तियों में इसका पाँचवां और दुनिया में इसका सातवाँ स्थान है। इसका मुख्य उत्पादन विभिन्न मशीनों का निर्माण है, जैसे मशीन-यंत्र, सूती मिलों के यंत्र और छापेखाने की मशीनें। इसके अतिरिक्त रसायन के उत्पादन में इसका अपना अलग ही स्थान है।

ग्रामीण क्षेत्र के सभी किसान सहकारी खेती में शामिल हो चुके हैं। इसके फलस्वरूप निजी खेती की अपेक्षा उपज बहुत आगे बढ़ गयी है और ग्रामीण जनता सुख-समृद्धि के नये जीवन में प्रवेश कर चुकी है।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सन् १९५४ में १ करोड़ ९४ लाख रुपये का व्यापारिक समझौता हुआ था, सन् १९५८ में उसकी मात्रा साढ़े तीन गुनी बढ़ गयी और सन् १९५९ तक उसमें ४५ प्रतिशत वृद्धि हुई, अर्थात् रुपयों में वह संख्या ११ करोड़ २० लाख तक पहुँच गयी। भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच १९५९ में जो समझौता हुआ, उसका आधार परस्पर-व्यापार के रूप में निश्चित हुआ है और दोनों पक्ष रुपयों में ही रक़म अदा करेंगे। इस समझौते के अनुसार १९६२ तक दोनों देशों के व्यापार में काफ़ी वृद्धि होगी। इस प्रकार आपकी तीसरी पंचवर्षीय योजना के ढांचे के अन्तर्गत जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत को सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि ये थोड़े से विवरण हमारे देश के प्रति आपकी जानकारी बढ़ाने में सहायक होंगे, और इस पत्रिका द्वारा हम जो सूचनाएँ निरन्तर देते रहेंगे उन्हें आप पसन्द करेंगे। जब भी आपके मन में कोई खास सवाल पैदा हो या कोई टिप्पणी या सुझाव देना चाहें, तो बग़ैर किसी प्रकार की दुविधा में पड़े, कृपया, हमें तुरन्त लिखें।

आपका

रेन आइज़न
(भारत स्थित व्यापार-प्रतिनिधि)

वर्ष ५, अंक ६ — २० जून, १९६०

यह अंक

	पृष्ठ
जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ अन्य देशों के संबंध	३
व्यक्तित्व की झाँकी—विल्हेम पीक	५
जर्मन जनवादी गणतंत्र में बिजली उद्योग	६
गृह समिति-सामाजिक जीवन की इकाई	८
सफलताएं बोलती हैं	९
जाले घाटी में येना क़स्बा	१२
सरकारी साझेदारी का सुफल	१५
रोटी और कला का समन्वय—मज़दूर नाटक मंडलियाँ	१७
जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रकाशन का एक दशक	१९
डेफ़ा फ़िल्म जगत: 'पुराना प्यार' नये गाँव की कहानी	२१
जर्मन जनवादी गणतंत्र की खबरें	२२

मुख पृष्ठ :

श्वेट-ओडर पर कागज मिल का निर्माण हो रहा है। यह योरप के सबसे बड़े मिलों में से है और इसमें प्रतिवर्ष २४०,००० टन कागज का उत्पादन होगा।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार—दूतावास, २३ कर्जन रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा० लि०, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112525

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ अन्य देशों के संबंध

इधर हाल में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में जो परिवर्तन हुए हैं और जर्मन जनवादी गणतंत्र से प्रत्यक्षरूप से संबंधित जो घटनाएँ हुई हैं उन्हें देखते हुए यह प्रश्न एक बार फिर उभर कर सामने आगया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ अन्य देशों के जो संबंध हैं उसमें आगे और सुधार लाया जाय।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री ने सन् १९५९ में संयुक्त अरब गणतंत्र, ईराक़, भारत, उत्तर वियतनाम और चीन की यात्राएँ कीं। इन यात्राओं के दौरान में प्रधान मंत्री श्री ग्रोटेवाल ने राष्ट्रपति नासिर, प्रधानमंत्री क़ासिम, प्रधान मंत्री नेहरू, माओ-त्से-तुंग, राष्ट्रपति हो ची-मिन्ह तथा उन देशों के दूसरे प्रमुख व्यक्तियों से वार्ताएँ कीं। इन यात्राओं का एक सुफल यह रहा कि क़ाहिरा में जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार-दूतावास स्थापित हुआ और संयुक्त अरब गणतंत्र के विदेश मंत्री ने व्यापार-दूतावास के मुख्य अधिकारी को जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि के रूप में काम करने की अनुमति दी। दूसरा सुफल प्रधानमंत्री क़ासिम से एक समझौते के रूप में प्राप्त हुआ जिसके अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र और इराक़ के बीच वर्तमान परिस्थितियों में राजनायिक संबंधों की स्थापना हुई।

गत वर्ष वसन्त और ग्रीष्म में विदेश मंत्रियों का जेनेवा में सम्मेलन हुआ था। उससे अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में न सिर्फ़ एक नये परिवर्तन का श्रीगणेश हुआ, बल्कि उसका एक सुफल यह भी रहा कि अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रान्स की सरकारों ने वर्तमान जर्मन परिस्थिति की ओर अपेक्षाकृत अधिक यथार्थवादी रवैया अपनाया। पहली बार दोनों जर्मन राज्यों ने इस प्रकार के एक सम्मेलन में बराबर हैसियत रखकर भाग लिया। सच बात तो यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने इस सम्मेलन में भाग लेकर अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रान्स से वस्तुतः मान्यता प्राप्त कर ली। साथ ही यह भी निश्चित हो गया कि दोनों जर्मन राज्यों के अस्तित्व की स्वीकृति के आधार पर ही जर्मनी से संबंधित समस्याओं का हल संभव है।

इन घटनाओं ने स्पष्टरूप से यह सिद्ध कर दिया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का विकास एक नये युग में प्रवेश कर चुका है।

आज से नौ-दस वर्ष पूर्व सन् १९४९ में ही दुनिया के दो-तिहाई भाग में स्थित राज्यों और एक-तिहाई आबादी के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के यथोचित संबंध स्थापित हो चुके थे। इसके बाद के वर्षों में उन राज्यों से जीवन के हर क्षेत्र में हमारे संबंध अधिक सुन्दर तथा दृढ़तर हुए हैं।

सन् १९४९ के बाद ग़ैर-समाजवादी देशों से भी संबंध स्थापित हुए और धीरे-धीरे उसमें विस्तार आया। आज संसार का संभवतः कोई भी ऐसा देश नहीं जिसका जर्मन जनवादीगणतंत्र या उसकी विभिन्न संस्थाओं से किसी न किसी रूप में वस्तुतः सम्पर्क न हो।

जर्मन जनवादी गणतंत्र और फ़िनलैंड के बीच सन् १९५१ में ही समझौतों

प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू और जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधानमन्त्री श्री ओटो ग्रोटेवाल उल्लास की मुद्रा में। श्री ग्रोटेवाल जनवरी, सन् १९५९ में दिल्ली आये थे। यह चित्र उसी समय का है।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में संबंध स्थापित हो चुके थे। इन दोनों सरकारों में अब तक अनेक समझौते हो चुके हैं तथा एक दूसरे के यहाँ व्यापार-दूतावास क़ायम किये जा चुके हैं।

सन् १९५३ और १९५४ में एशिया और अफ्रीका के स्वतंत्र राष्ट्रों से व्यापक आधार पर संबंध स्थापित होने लगे। इस बीच संयुक्त अरब गणतंत्र, इराक़, यमन, सुडान, लेबनान, घाना, गिनी, भारत, बर्मा और हिन्देशिया के साथ सरकारी स्तर पर अनेक समझौते हुए और विभिन्न कोटि के राजनायिक अधिकारों के साथ व्यापार-दूतावासों की स्थापना हुई। सन् १९५९ के सितम्बर में संयुक्त अरब गणतंत्र में व्यापार राजदूत नियुक्त हुआ। इससे पूर्व १९५७ में भूतपूर्व शाम गणतंत्र के साथ इसी प्रकार का संबंध स्थापित हो चुका था। एशिया और अफ्रीका के स्वतंत्र राष्ट्रों और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच फ़िलहाल ५० समझौते हो चुके हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र और यूगोस्लाविया के बीच राजनायिक संबंध और दूतावास स्थापित करने के उद्देश्य से सन् १९५७ में समझौता हुआ और उसे लागू भी कर दिया गया है।

फ्रान्स, बेल्जियम, नेदरलैंड, नार्वे, आइसलैंड, आस्ट्रिया, ग्रीस, इटली, पुर्तगाल और तुर्की के साथ सरकारी या अर्ध-सरकारी स्तर पर व्यापारिक संबंध क़ायम हो चुके हैं। अर्जेन्टाइना, कोलम्बिया, यूरुगुए और ब्राज़ील में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास हैं तथा बेल्जियम, ब्रिटेन, फ्रान्स, ग्रीस, आइसलेंड, डेनमार्क, नेदरलैंड, नार्वे, आस्ट्रिया, स्वेडन, तुर्की और इटली में हमारे विदेश व्यापार संघ के प्रतिनिधि रहते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र १३० से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है और ६० अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों से उसका सम्पर्क है जिनमें समाजवादी और गैर-समाजवादी देश शामिल हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से पेरिस, स्टाकहोम, वियना, मिलन, डमस्कस, क़ाहिरा, नयी दिल्ली आदि में औद्योगिक प्रदर्शिनियाँ और मेले आयोजित हो चुके हैं। इनमें हज़ारों-लाखों दर्शकों ने भाग लिया और वे जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्तित्व तथा उसकी आर्थिक शक्ति में पूर्ण विश्वास लेकर गये। जर्मन जनवादी गणतंत्र के राजनायकों, वैज्ञानिकों तथा कलाकारों ने उसके संदेशवाहकों के रूप में विदेशों की यात्राएँ कीं। इसी प्रकार पूंजीवादी देशों में भी राजनायकों, लोकसभा के सदस्यों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्राएँ कीं और वे हमारे अथक विकास को देखकर विश्वस्त हुए।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की आगे बढ़ती हुई यह प्रगति और उसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का सुदृढ़ होते जाना एक सर्वथा वैधानिक प्रक्रिया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र नये शांतिकामी जर्मनी का मूर्त स्वरूप है। यहाँ उस जर्मन सैनिकवाद की नीवें सदा-सदा के लिए मटियामेट कर दी गयी हैं जिसने संसार को दो-दो बार युद्ध की लपटों में झोंका। जर्मन जनवादी गणतंत्र एक प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र है। वह अपने आन्तरिक और विदेशी मामलों पर आज़ादी के साथ फ़ैसले लेता है। वह राष्ट्रों के बीच शांति और सद्भाव की नीति का पालन करता है जिसका प्रमाण जर्मन-समस्या, निशस्त्रीकरण, मध्य योरप में अणु-मुक्त क्षेत्र की रचना तथा एशिया और अफ्रीका के स्वातन्त्र्य-आन्दोलनों के प्रति उसके रवैये से मिलता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र अल्जीरिया की स्वतंत्रता-संग्राम-रत जनता की माँगों का समर्थन करता है, गोआ पर भारत के अधिकार को मान्यता देता है तथा पश्चिम इरियन से उपनिवेशी शासन खत्म करने की हिन्देशिया की माँग को उचित समझता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में जो वृद्धि हुई है इसका एक मुख्य आधार है उसकी महान् आर्थिक प्रगति। सन् १९३६ की तुलना में आज उसका आर्थिक उत्पादन तीन गुना आगे बढ़ गया है और आज की अपेक्षा सन् १९६३ में दुगना हो जायगा। यदि संसार को सामने रखकर देखा जाय तो इस समय औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में जर्मन जनवादी गणतंत्र को आठवाँ स्थान प्राप्त है और योरप में उसका पाँचवाँ स्थान है। रासायनिक उत्पादन में इसका छठां

बर्मा के पूर्व मंत्री बोमन गौंग के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश तथा अन्तर्जर्मन व्यापार मन्त्री मीन्टिश रो

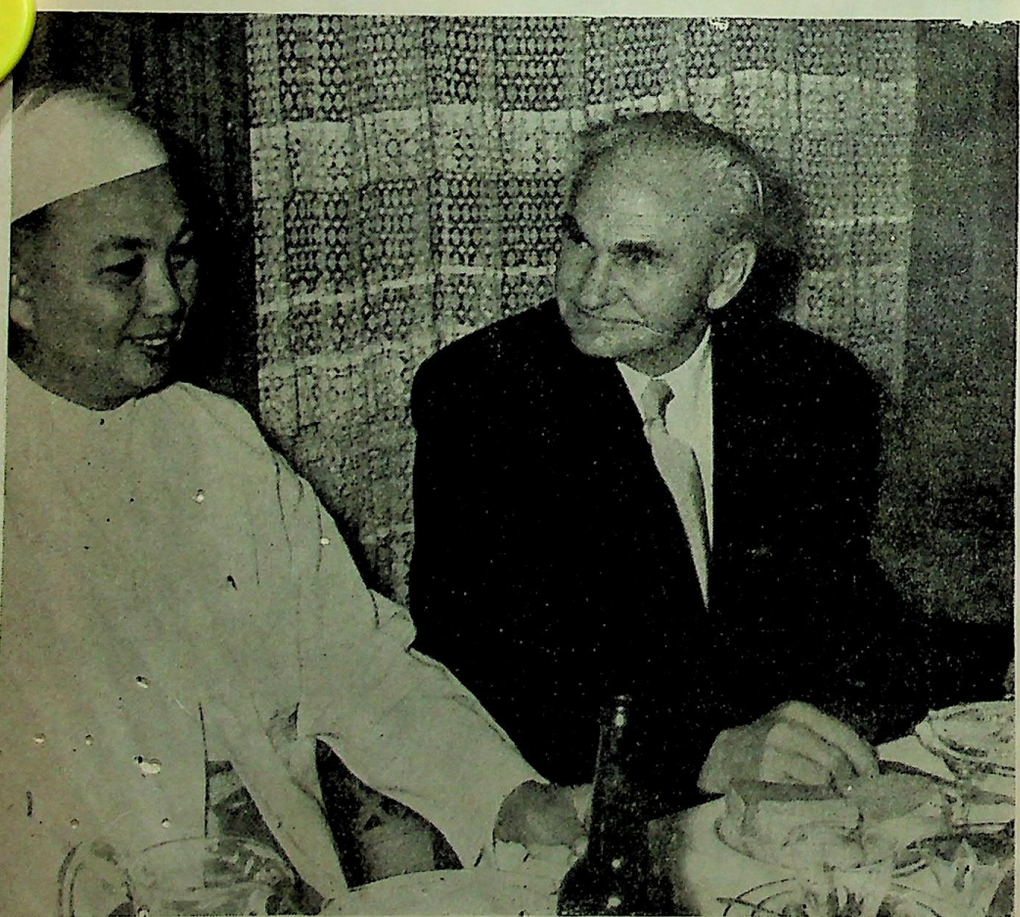

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान है। लिग्नाइट के उत्पादन और उपयोग में यह संसार का आगे बढ़ा हुआ देश है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में जर्मन जनवादी गणतंत्र सबसे आगे बढ़े हुए देशों के बीच अपना स्थान बना चुका है। और अनेक देशों के विदेश व्यापार की दृष्टि से इसका अनुपम महत्व है। इसका आधार विदेश व्यापार संबंधी उसकी वह नीति है जो समानता, परस्पर सम्मान और लाभ के सिद्धान्तों पर आधारित है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ऐसी आर्थिक प्रगति प्रमाणित करती है कि उसकी सामाजिक व्यवस्था की नींव स्थायी है और उसके विकास में देश का हर प्राणी अथक रूप से सक्रिय सहयोग दे रहा है।

योरप के ठीक मध्य में प्रतिष्ठित जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजनीतिक आर्थिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए पश्चिमी राष्ट्रों के समक्ष यह तथ्य अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के बगैर मध्य योरप की समस्याओं का हल सोचा ही नहीं जा सकता। योरप स्थित तनाव में कमी लाने के लिए जर्मनी के प्रथम शांतिप्रिय राष्ट्र से, जो दस वर्ष पूर्व ही अस्तित्व में आ चुका है, यथोचित संबंध बनाने जरूरी हैं। उससे ऐसा संबंध बनाने और उसे मान्यता देने का भाव उन वास्तविक राजनीतिक परिस्थितियों का सम्मान करना होगा जो दूसरे महायुद्ध के बाद अस्तित्व में आयीं और विकसित हुई हैं। इन परिस्थितियों को अनदेखा करने से जर्मन समस्या का हल असंभव है तथा योरप में फैले तनाव को कम करने की बात सोची भी नहीं जा सकती। प्रभुसत्ता, समानता और हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्तों के आधार पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ संबंध स्थापित करना शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और राष्ट्रसंघ के निर्देशों के पूर्णतया अनुकूल है। साथ ही दोनों जर्मन राज्यों से समान संबंध क़ायम करना जर्मन राष्ट्र के आत्म-निर्णय के अधिकार को स्वीकृति देना है, तथा उसके राष्ट्रीय मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त का पालन करना है। इससे दोनों जर्मन राज्यों के बीच सद्भाव बढ़ाने में मदद मिलेगी, इसका भाव जर्मनी के विभाजन की खाई को और गहरी करना नहीं, बल्कि दोनों जर्मन राज्यों में समझौता-वार्ता का वातावरण तैयार करने में सहायक बनना है। कहने की ज़रूरत नहीं कि दोनों जर्मन राज्यों में मेल और एकता पैदा करने का एकमात्र यही उपाय है।

अतः जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ सहयोग करना और यथोचित संबंध बनाना योरप और सारे संसार में शांति की रक्षा में एक महत्वपूर्ण योगदान के समान है।

व्यक्तित्व की झाँकी :

श्रमिक राष्ट्रपति विल्हेम पीक

विल्हेम पीक जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रपति हैं जिनका समस्त जीवन श्रमजीवी जनता की सुख समृद्धि को समर्पित है।

३ जनवरी सन् १८७६ को एक मज़दूर परिवार में आप का जन्म हुआ। मज़दूरों की पीड़ाएं और चिन्ताएं शुरु से ही आपके जीवन की सजीव अनुभूतियां बनीं। सन् १८९० में आपने बढ़ई का काम सीखना शुरु किया। उन्नीस वर्ष की आयु में जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में शामिल हुए। शीघ्र ही आप अपने साथियों के विश्वासपात्र बन गये और पार्टी तथा उससे सम्बन्धित मज़दूर संघों के अनेक पदों पर रहकर कार्यभार संभालना शुरु कर दिया।

प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) छिड़ा तो विल्हेम पीक ने बड़े ही साहस और शक्ति के साथ उसका विरोध किया। इसी अपराध में वे गिरफ्तार भी कर लिये गये और सेना में बलपूर्वक भर्ती करके मोर्चे पर भेज दिये गये। एक मोर्चे के घाव अभी हरे ही थे कि उन्हें फिर दूसरे मोर्चे पर जाने के लिए मजबूर किया जाने लगा लेकिन विल्हम पीक ने उस मजबूरी के सामने सर झुकाने से नइकार कर दिया और भागकर हालैंड चले गये। वहां उन्होंने एक युद्ध-विरोधी पत्र का सम्पादन शुरु कर दिया।

उन दिनों जर्मनी के वामपंथी ही एकमात्र ऐसे तत्व थे जो अपनी भूमि में युद्ध के ख़िलाफ़ अडिग संघर्ष चला रहे थे। उन वामपंथियों ने १९१८ में जब जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की तो विल्हेम पीक को पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सदस्य चुन लिया गया।

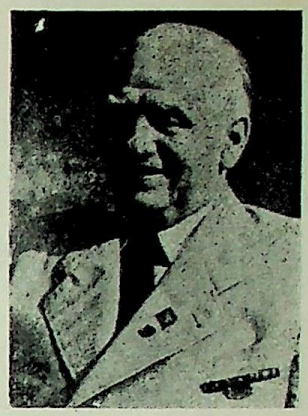

जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रपति

१९३३ में जब हिटलर के गिरोह का आतंकपूर्ण शासन शुरु हुआ तो जर्मनी के अनेक सपूतों की भांति विल्हेम पीक को भी उसका शिकार बनना पड़ा। उन्हें अपना निर्वासन काल सोवियत संघ में बिताना पड़ा। १९३६ में विल्हेम पीक को जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष के पद पर सुशोभित किया गया। नाजियों के विरुद्ध जर्मनी के मज़दूरों और जनवादी शक्तियों की एकता क़ायम करने में उन्होंने अपनी सारी शक्ति लगा दी। सन् १९४६ में कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष विल्हेम पीक और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष ओटो ग्रोटेवाल ने जब हाथ मिलाया तो जर्मनी के मज़दूरों और जनवादी शक्तियों की सुदृढ़ एकता पर मुहर लगी।

इस महान सफलता के बाद विल्हेम पीक ने तमाम नाज़ी-विरोधी जनवादी पार्टियों और जन संगठनों को शांतिप्रिय शक्तियों के खेमे में एकजुट करने का अद्भुत प्रयत्न किया। ७ अक्टूबर १९४९ को जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई और विल्हेम पीक सर्वसम्मति से उसके राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की अडिग शांतिपूर्ण अभेद्य नीति विल्हेम पीक के नाम के साथ अभेद्य रूप से जुड़ी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बिजली-उद्योग

हरबर्ट हिन्केलमन्न

जर्मन जनवादी गणतंत्र के वर्तमान क्षेत्रफल में, लड़ाई से पहले, सन् १९३६ में बिजली का कुल उत्पादन १४० अरब कीलोवाट और गैस का उत्पादन ३३० अरब ६० करोड़ घनफुट था। लड़ाई के बाद सन् १९४५-४६ में यह आँकड़े बहुत नीचे आ गये थे, लेकिन सन् ५० में और ही चित्र सामने आया। सन् ५० के आँकड़े इस प्रकार हैं:—

कुल बिजली—१९० अरब ५० करोड़ कीलोवाट

कुल गैस —५३६ अरब घनफुट

इस प्रगति का कारण क्या है? जर्मन जनवादी गणतंत्र में उद्योगों का विकास हुआ। उनकी माँग बढ़ी, जनता को अधिकाधिक बिजली और गैस की आवश्यकता हुई। फलतः इस व्यापक माँग को पूरा करने के लिए बिजली और गैस दोनों का उत्पादन बढ़ा।

सन् १९५८ में आँकड़े और ऊपर उठे:—

कुल बिजली—३४९ अरब कीलोवाट

कुल गैस —११७ अरब घनफुट

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बिजली का उत्पादन और खपत का स्तर बहुत बढ़ चुका है। अन्य समाजवादी देशों की तुलना से यह बात और भी प्रमाणित हो जाती है:—

देश		सन् १९५८ में प्रतिव्यक्ति बिजली की खपत (यूनिट)
रुमानिया	—	२७६
बल्गारिया	—	३०३
हंगरी	—	५६१
पोलैंड	—	६८०
सोवियतसंघ	—	१०००
चेकोस्लोवाकिया	—	१,३२०
जर्मन जनवादी गणतंत्र	—	१,६९०

जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रति-व्यक्ति खपत होने वाली बिजली का उपर्युक्त आँकड़ा सन् १९५८ का है। सन् १९६५ में वह बढ़कर २,७६० यूनिट हो जायगा, अर्थात् ६३ फ़ीसदी वृद्धि होगी। हमारे देश की जनता के लिए बिजली और गैस का उपयोग दिन-प्रति-दिन महत्वपूर्ण बनता जा रहा है क्योंकि जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए यह एक बुनियादी माध्यम बन गया है। यह भी सच है कि आवश्यक बिजली और गैस के अभाव में देश की आर्थिक उन्नति सुनियोजित सीमा तक हो भी नहीं सकती।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में १९६५ तक बिजली और गैस के उत्पादन में निम्नलिखित स्तर तक वृद्धि करने की योजना है:—

	१९५८	१९६५ में	७ वर्षों में वृद्धि	वार्षिक वृद्धि
बिजली अरब यूनिट में	३४९	६३०	८०.६%	८.८%
गैस अरब घनपुट में	११७	२०५.४	८५.५%	९.२%

इसी प्रकार बिजली घरों पर उत्पादन-भार और तेजी से—संभवतः

लुबेनो का बिजली घर जिसका निर्माण शीघ्र ही सम्पन्न होने को है। यह योरप का सबसे बड़ा बिजली घर होगा।

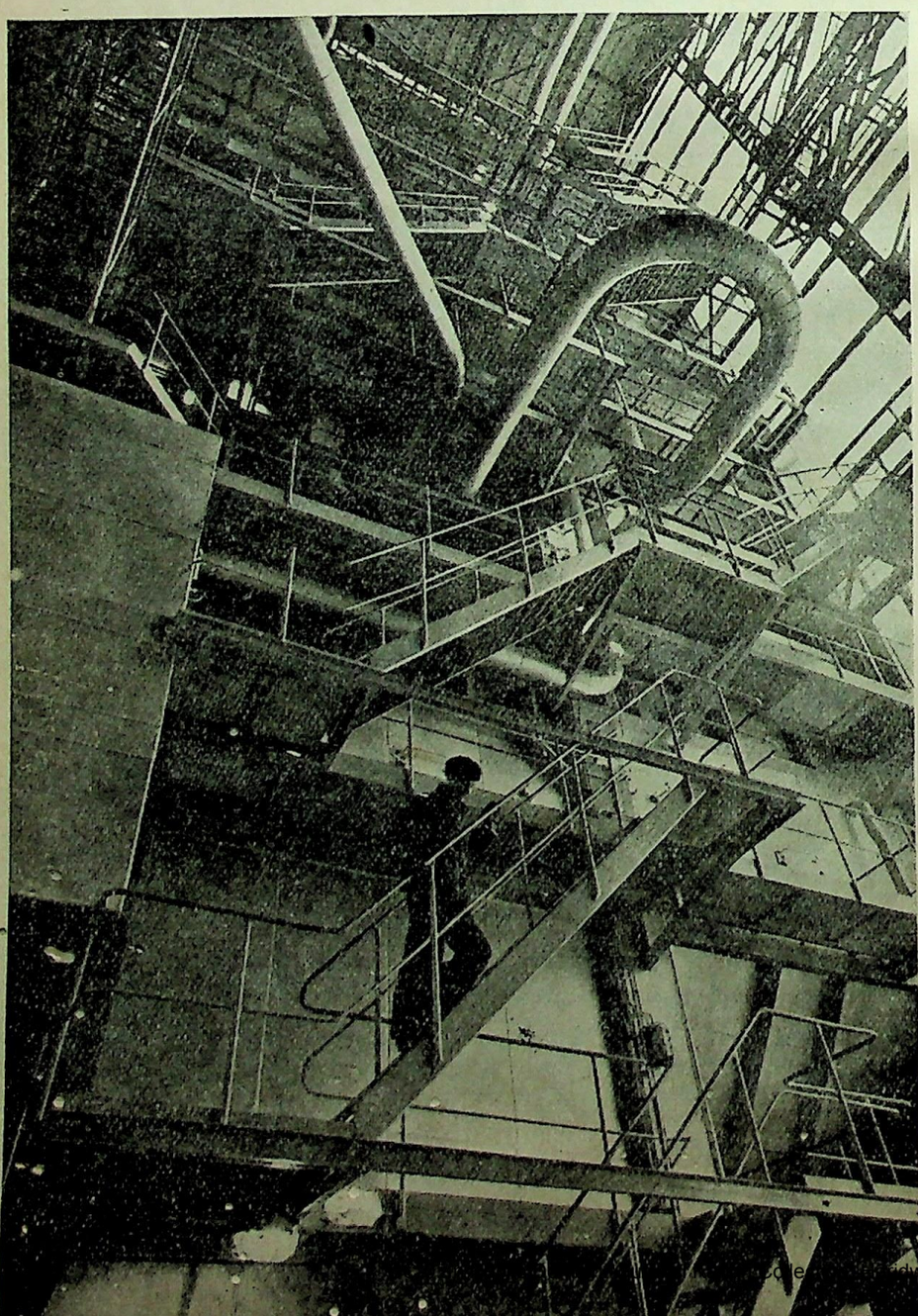

Digitized by Gurukul Kangri Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०.५ प्रतिशत की दर से बढ़ेगा। सन् १९६५ में सन् ५८ की अपेक्षा उत्पादन भार बढ़कर दुगना हो जायगा। इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए नये बिजली घरों और गैस-कारखानों का बड़े पैमाने पर निर्माण किया जायगा तथा मौजूदा कारखानों का विकास भी होगा।

गैस उद्योग के विकास के लिए मुख्यतः देश में ही प्राप्त लिग्नाइट का उपयोग किया जाता है। १९५९ में लिग्नाइट गैस का उत्पादन ३८ प्र. श. और कोयला गैस का ६१ प्र. श. रहा, किन्तु आगे चल कर यह अनुपात-क्रम बदल कर ५८ प्र. श. और ३७ प्र. श. हो जायगा। प्राकृतिक गैस के उत्पादन में भी वृद्धि होगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बिजली की अपेक्षा गैस का उपयोग काफ़ी अधिक मात्रा में होगा। उद्योगों, व्यापारिक कार्यालयों और घरों को गरम रखने के लिए गैस का विशेष रूप से उपयोग किया जायगा। इससे बिजली का अन्य प्रयोजनों में उपयोग करने की सुविधा मिलेगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उत्तरी भाग में गैस-पूर्ति की व्यवस्था में सुधार करने के लिए लम्बी गैस लाइनों का निर्माण सन् १९५८ में ही शुरू हो गया था। वे लाइनें लईपज़िग से मेग्डेबर्ग की ओर चलकर बाल्टिक तट तक जायँगी और वहाँ से फिर वापस होकर स्ट्रालसुंड होती हुई बर्लिन पहुँचेंगी। इस प्रकार इस उत्तरी भाग में गैस लाइनों का एक जाल सा बिछा दिया जायगा। इसके अतिरिक्त एक बहुत ही शक्तिशाली गैस-इंजन ज़मीन के अन्दर लगाया जायगा। विभिन्न मौसमों के हिसाब से गैस का उपयोग घटता-बढ़ता रहता है, इस अन्तर में संतुलन रखने के लिए यह इंजन लगाया जा रहा है। साथ ही उसका यह भी उद्देश्य होगा कि गैस के कारखाने साल भर निरन्तर समान क्षमता के साथ काम करते रहें।

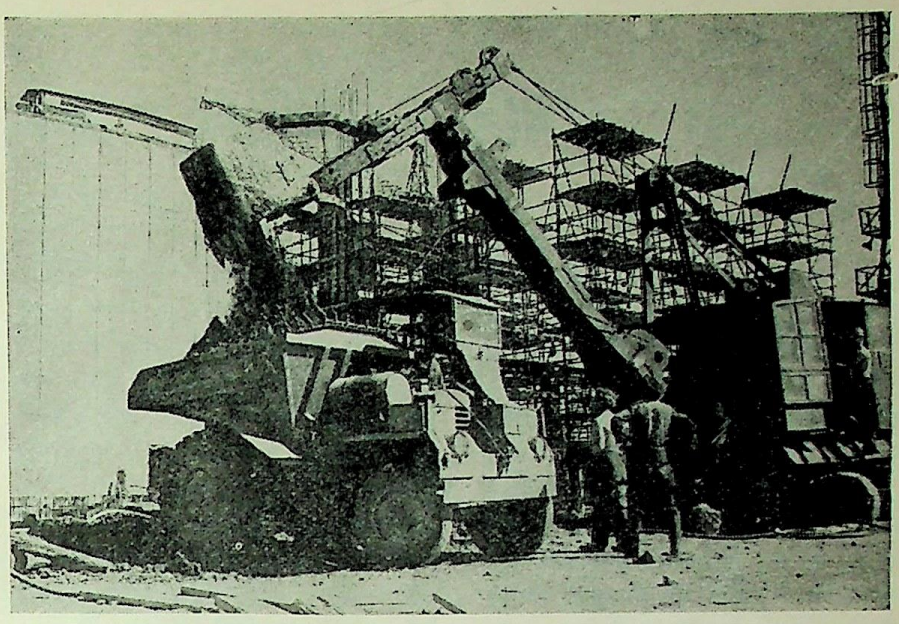

वर्जड्रोफ बिजली घर का अन्तिम शीत गुम्बद बन कर तैयार हो रहा है।

बिजली उद्योग की दूरगामी प्रगति की संभावनाओं की छान-बीन से पता लगा है कि इसके लिए समाजवादी देशों में कुशल श्रमिकों के वर्गीकरण और आर्थिक सहयोग की वर्तमान स्थिति में काफ़ी सुधार की अपेक्षा है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए परस्पर आर्थिक सहायता परिषद् ने सन् १९५९ में अपने तिराना सम्मेलन में निर्णय किया कि योरप के समाजवादी देशों और सोवियत संघ के पश्चिमी क्षेत्रों की बिजली-व्यवस्था को मिला दिया जाय।

सन् १९६० से चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच बिजली का परस्पर आदान-प्रदान शुरू हो जायगा। इस दिशा में विभिन्न बिजली घरों में संबंध स्थापित हो जायँगे। फलतः जो देश बिजली और विशेषतः पानी की बिजली के दृष्टिकोण से अधिक सम्पन्न हैं वे लघु साधन वाले देशों को शक्ति-प्रदान करेंगे और इस प्रकार सारे समाजवादी देशों को विकास के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी।

वर्जड्रोफ बिजली घर के इस स्विच-बोर्ड से जर्मन जनवादी गणतंत्र के समस्त बिजली केन्द्रों से वार्ता की जा सकती है।

LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

गृह समिति : सामाजिक जीवन की इकाई

डब्ल्यु श्रोवाख़,

'व्हायस ऑफ़ पैट्रिअट' के सम्पादक मण्डल के सदस्य

दुनिया के हर बड़े नगर में ऐसा होता है कि एक एक मकान में कई कई परिवार गुज़र बसर करते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के नगर भी इसके अपवाद नहीं। पिछले युग में ऐसा होता था कि एक ही मकान के रहने वाले एक-दूसरे के पास से गुज़र जाते लेकिन शायद ही कभी एक-दूसरे को अभिवादन करते। किन्तु आज स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। आज हर मकान के निवासियों का अपना समुदाय है, वे अब समूहबद्ध हैं, उनकी अपनी गृह समितियाँ हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पिछले महायुद्ध ने घरों का ध्वंस करके और हर तरह की सुख-सुविधाओं को नष्ट करके अनेक समस्याएँ पैदा कर दीं थीं। अब तक लोगों को केवल अपने घरों की चिन्ता रहती, आज वे धीरे-धीरे समूची जनता और पूरे राष्ट्र के लिए चिन्तित रहने लगे हैं। लोग हर तरह की समस्याओं में दिलचस्पी लेने लगे हैं।

गत कुछ वर्षों में यह बात एक बार फिर सिद्ध हो गयी कि जनता की शक्ति और पहल अनन्त है। "मिल कर योजनाएँ बनाओ, मिलकर काम करो, मिलकर शासन चलाओ।" यह नारा, फलतः, कारख़ानों, दफ़्तरों, कृषि सहकारी समितियों के कर्मचारियों और पूरी आबादी के दिल में घर कर गया। विधेयकों और योजनाओं पर समूची जनता विचार-विमर्श करने लगी। और जनता के बहुमूल्य प्रस्तावों और संकेतों को कार्यरूप में परिणत भी किया जाने लगा। इस प्रकार देश की योजनाओं में और अधिक गहराई और व्यापकता आयी।

सन् १९५८-५९ में जनता ने विशेषरूप से महान् सफलतायें अर्जित कीं, उदाहरण के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय पुनर्निर्माण योजना के अन्तर्गत सन् १९५८ में लाखों व्यक्तियों ने श्रमदान करके २६ करोड़ ७० लाख मार्क (लगभग ३० करोड़ ३० लाख ५० हज़ार रुपये) के मूल्य का काम किया। इन समस्त रचनात्मक कार्यों में हज़ारों गृह-समितियों, उनकी समाजवादी सामूहिक क्रियाशीलताओं, उनकी पहल और शक्ति ने प्रेरक के रूप में अपनी भूमिका सब से आगे रखी।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण योजनाओं के महत्वपूर्ण कार्यों में जनता पूरी दिलचस्पी ले—इसके लिए ये गृह-समितियाँ अथक रूप से प्रयत्नशील हैं। इन गृह-समितियों का निर्वाचन एक मकान में रहनेवाले अनेक परिवारों के सदस्य करते हैं इसलिए उनपर सारे लोगों का पूरा विश्वास होता है। गृह समुदायों के सीमित क्षेत्र में रहते हुए भी ये समितियाँ घरवालों को समाजवादी राज्य के सजग निर्माता के रूप में शिक्षित करती हुई समाजवादी निर्माण में मूल्यवान् योग देती हैं।

इन गृह-समितियों का एक प्रमुख कार्य है सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं के प्रति लोगों में जागरुकता भरना। उनका यह प्रयत्न रहता है कि घरों के सभी सदस्य समाजवादी निर्माण में दिलचस्पी लें, वे समाजवादी समाज को एकताबद्ध करने में सुदृढ़ सहायक बनें, अपने प्रतिनिधियों, राज्य-संगठनों तथा आयोगों के समक्ष अपने प्रस्ताव पेश करें, अपने आलोचनात्मक विचार प्रस्तुत करें तथा अपने हितों की ओर संकेत करें।

इस प्रकार ये गृह समितियाँ घरों की व्यवस्था, व्यवसाय, उपभोक्ता के सामानों के उत्पादन आदि सभी क्षेत्रों

रोस्टक के नये पड़ोस में बने मकानों के लान की सुन्दरता बनाये रखने के लिये लोग प्रयत्नशील हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सुधार करने के लिए स्थानीय जन प्रतिनिधियों के पास सुझाव भेजती हैं। वे पड़ोसियों में सांस्कृतिक और शिक्षा संबंधी घटनाओं तथा भाषणों में दिलचस्पी पैदा करती हैं तथा जनप्रतिनिधित्व में भाग लेने के लिए प्रेरणा देती हैं।

ये गृह-समितियां हमारे सामाजिक जीवन की सबसे छोटी इकाई हैं। ये जर्मन जनवादी गणतंत्र को शक्ति प्रदान करती हैं और अपने अथक श्रम से समाजवाद की रचना में सहायता देती हैं।

इस प्रकार की हज़ारों गृहसमितियों में बर्लिन स्थित मेरिन्स्ट्रेसे गृहसमिति है। इसमें सात सदस्य हैं। यहाँ एक मकान में ३८ परिवार रहते हैं जिनमें मज़दूर भी हैं, इंजीनियर भी, कारीगर भी हैं और पेन्शनयाफ़्ता वृद्ध भी। इस गृह समिति की क्या उपलब्धियाँ हैं? इसने उक्त ३८ परिवारों को एक सुदृढ़ समुदाय के सूत्र में आबद्ध कर दिया है।

इस गृह समिति के कार्यों की जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इसकी प्रेरणा से उक्त ३८ परिवारों के लोग एक-दूसरे से परिचित हो गये, एक दूसरे की सहायता करने लगे, पूरी इमारत की सामूहिक मरम्मत कर डाली और मित्र बन गये। आज कोई अपने को अजनबी महसूस नहीं करता। 'मैं' की जगह पूरे समुदाय ने 'हम' को अपना लिया।

सन् १९५८ में इस मकान के रहने वालों ने राष्ट्रीय निर्माण योजना के अन्तर्गत ४३०० घंटे श्रमदान किया और इस प्रकार मकान की मरम्मत में राजकीय ख़र्चे में ६ हज़ार मार्क (लगभग ९ हज़ार रुपये) की बचत की। उन्होंने मिल जुल कर सारी इमारत को नया रूप दे डाला और इस प्रकार दिन-प्रतिदिन उनकी सामुदायिक भावना भी बढ़ती गयी।

समाजवाद के सामुदायिक जीवन का गहरा अर्थ और महत्व अब उनके सामने दिन प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा है। इन्हीं गृह समितियों के प्रयत्न से म्युनिस्पिल बोर्ड ने एक टेलीविज़न-सेट, फ़र्नीचर और एक पुस्तकालय की भी व्यवस्था कर दी।

उन्हीं घरों के सदस्यों ने एक ऐसे मकान की मरम्मत करके उसे क्लब के रूप में परिवर्तित कर दिया जो इस प्रकार ध्वस्त हो चुका था कि उसमें रहना असंभव था। अब वहाँ शामों को टेलीविज़न दिखाया जाता है, सांस्कृतिक समारोह होते हैं, विवाद गोष्ठियाँ होती हैं और सामाजिक आयोजन होते हैं। अब पेन्शनयाफ़्ता बूढ़े लोग भी अकेले अपने घरों में नहीं बैठे रहते, बल्कि वे भी पूरे समुदाय के उल्लास और उत्सव में हिस्सा लेते हैं। इस बर्लिन गृह-समिति की सफलताओं का यहीं अन्त नहीं। उसने सामूहिक उपयोग के लिए एक धुलाई मशीन, एक इस्त्री मशीन और एक सिलाई मशीन ख़रीदी; फूलों से भरा एक बग़ीचा लगाया; और अब सारे घरों के कमरों और सीढ़ियों को सुसज्जित करने का कार्य प्रारम्भ हो चला है।

सफलताएं बोलती हैं

ब्रूनो विल्के, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

ब्रन्डेबुर्ग क्षेत्र में कुछ वर्ष पूर्व शेनरमार्क एक साधारण-सा गाँव था जो अन्य पड़ोसी स्थानों से भिन्न नहीं था। लेकिन जब सन् १९५२ के दिसम्बर मास में हमारे गाँव के कुछ पथ-प्रदर्शक किसानों ने सामूहिक-खेती आरंभ की तो शेनरमार्क जर्मन जनवादी गणतन्त्र में, उत्तरोत्तर प्रसिद्धि प्राप्त करने लगा। आज स्थिति यह है कि हमारा यह गाँव अतिशय-उत्पादन के लिये, सारे गणतन्त्र के समक्ष एक आदर्श बन गया है।

आज यह बात निस्संकोच कही जा सकती है कि शेनरमार्क सहकारी-खेती में हमको जो सफलतायें मिली हैं, उनसे हम बहुत लोकप्रिय हो गये हैं। इस बात को, कतिपय तुलनात्मक-आंकड़ों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। सन् १९५२ में हमारी सहकारी-समिति ने १०० एकड़ ज़मीन की जुताई की। उस समय इसमें केवल नौ सदस्य थे। खेती के अच्छे तरीक़ों ने एक सौ से अधिक किसानों को सामूहिक खेती में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। आज हम सामूहिक रूप से १,५१३ एकड़ ज़मीन की जुताई करते हैं।

अधिक अच्छे और वैज्ञानिक तरीक़ों से खेतों को जोतने के कारण, हर साल, फ़सल का उत्पादन बढ़ता ही गया।

नीचे कुछ फ़सलों की उपज के तुलनात्मक आंकड़े दिये जाते हैं:

	सन् १९५३				सन् १९५८			
दालें	— ९७०	पौंड	प्रति	एकड़	१२६०	पौंड	प्रति	एकड़
आलू	— ५३८०	,,	,,	,,	८२००	,,	,,	,,
चुकन्दर	— ६९००	,,	,,	,,	१५४४०	,,	,,	,,

पशु-पालन संबंधी उत्पादन भी काफ़ी बढ़ा है। सहकारी खेती में जितनी ज़मीन पर काम शुरु हुआ, उसमें प्रति एकड़ पशु-पालन संबंधी उत्पादन की दर इस प्रकार बढ़ी:

	सन् १९५३				सन् १९५८			
दूध	१७६	पौंड	प्रति	एकड़	७५६.८	पौंड	प्रति	एकड़
गो मांस	२४.६४	,,	,,	,,	५३.६८	,,	,,	,,
सूअर का मांस	४४.६६	,,	,,	,,	१०६.४८	,,	,,	,,

	सन् १९५४				सन् १९५८			
अंडे	५६		प्रति	एकड़	१२४		प्रति	एकड़
ऊन	.८८		पौंड	,,	१.३२		,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९५९ में, पशु-पालन संबंधी यह पैदावार निर्धारित लक्ष्यों से आगे बढ़ी हुई है।

बहुत से पाठक उल्लिखित आँकड़ों को देखकर कहेंगे कि हम बहुत खुशक़िस्मत हैं और सौभाग्य ने हमारा साथ दिया है। लेकिन पाठकों को मैं यहाँ इस बात का स्मरण दिला दूं कि हमारा सौभाग्य हमको दैवी-उपहार के रूप में नहीं मिला। अपने सौभाग्य के निर्माता हम स्वयं हैं। उदाहरण के लिये, हमारी समिति के सदस्य श्री आर्थर लेस्के को ही लें। आपने बीज उगाने की नयी पद्धति खोज निकाली, जिसके उपलक्ष्य में आपको विशेषज्ञ की उपाधि भी मिली। इस खोज से बीज उत्पादन की वृद्धि में काफ़ी सहायता मिली। आज हमारे आलुओं की ९० प्रतिशत और हमारे अनाज की २० प्रतिशत उपज तथा २७५ एकड़ पर पैदा होने वाला चारा (मटर, घास आदि) नयी सहकारी खेती की ही देन है।

जहाँ तक पशु-पालन का सवाल है, हम सहकारी खेती के प्रारम्भ से ही, पशु-धन को, अधिकाधिक मात्रा में बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार, सन् १९५३ से १९५८ तक, कृषि योग्य प्रति २५० एकड़ पर पशु-धन की वृद्धि ३३ से ७६ पशु हो गये (गायें १७ से ३३.६ बढ़ गईं); और सूअर २९ से १५४ हो गये। (इनमें सूअरी १.६ से १६ बढ़ गईं)। सन् १९५३ में हमारे पास चूज़े नहीं थे। लेकिन सन् १९५८ में प्रति १०० एकड़ पर ११२ चूज़ों की उपज होने लगी। पशु-धन की वृद्धि के अतिरिक्त हमने पशुओं से उत्पन्न वस्तुओं की उपज को भी संयोजित ढंग से बढ़ा दिया। एक ओर तो हमने कम उपज वाले सभी पशुओं को समाप्त कर दिया, और दूसरी ओर हमने अपने क्षीण पशुधन की वृद्धि अपने पालतू पशुओं की सन्तति से की। ५० प्रतिशत पशु उस रजिस्टर में दर्ज किये गये हैं जिसमें उनका हिसाब किताब रखा जाता है। हम रजिस्ट्री शुदा ३८ सुअरिनों और नये पाले हुए लेगहार्न तथा इटली के चूज़ों के मालिक हैं। सन् १९५२ में, जब हम अलग-अलग खेती करते थे, हमारे गाँव में प्रति गाय पर दूध की उपज औसतन १,७०० किलोग्राम तक (अधिक से अधिक) पहुँचती थी। लेकिन (सहकारी खेती में शामिल होने के बाद) पिछले साल प्रति गाय पर, दूध की उपज, लगभग ३,७०७ किलोग्राम तक पहुँच चुकी थी। यह आवश्यक है कि प्रत्येक गाय प्रत्येक वर्ष में २,८०० किलोग्राम दूध दे। अन्यथा हम उसको लाभकर नहीं समझते। सन् १९५४ में प्रति मुर्ग़ी ११५ अंडे देती थी। आज यह संख्या बढ़कर १७५ हो गई है। दर्बो में हमने एक ऐसा यंत्र लगा रखा है जिसके द्वारा जाली में गिरने वाले अंडों की संख्या को गिना जा सकता है। इस प्रकार, हमें हर उस मुर्ग़ी का फ़ौरन पता लग जाता है जिसने वर्ष में १२० से कम अंडे दिये हों।

मादा सूअरों की संख्या भी बढ़ा दी गई है। सन् १९५४ में सूअरों की प्रजनन शक्ति १५.६ बच्चे प्रति वर्ष थी, लेकिन सन् १९५८ में यह संख्या बढ़कर १८.३ हो गयी। पशु-पालन के क्षेत्र में, प्रशिक्षितों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। आज हमारे पास, एक प्राणिशास्त्री विशेषज्ञ है जो चारे का ठीक ठीक हिसाब जोड़ता है। इस विधि से हमें चारे की कम से कम मात्रा द्वारा पशुओं से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार से हम आठ महीने के सुअर-बच्चे को २५३ पौंड वज़न का बनाने में सफल रहे। इस वर्ष हर सूअर का वज़न ६०० ग्राम तक बढ़ाने में हम सफल रहे। हम हर महीने पशुओं का वज़न भी लेते हैं। हमारे देश में औसत वज़न ५०० ग्राम से कम है।

सुअर पालन में हमें पुराने और अनुभवी विशेषज्ञ विलहेल्म कीलिंग से बड़ी सहायता मिलती है। इरविन और मारटिन सीगर उनके सहायक हैं, जो सुअर-पालन की विशेष शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। हमारे पास दूध दुहने वाले तीन विशेषज्ञ और एक सहायक है। हमारी कृषि सहकारी-समिति के प्रत्येक सदस्य को अपने अपने कार्य विशेष का ज्ञान बढ़ाने का काफ़ी अवसर प्राप्त है। हमारे गाँव की अकादमी, नियमित रूप से, हमारे काम संबंधी विषयों पर भाषण आदि का आयोजन करती है। तीस सदस्य तो नियमित रूप से, और कभी-कभी ८० सदस्य भी इन आयोजनों में भाग लेते हैं।

बड़ी चीज़ों से शुरुआत हमेशा अच्छी होती है। हमारी गोशालायें प्रथम श्रेणी के पशुओं से भरी हुई हैं। इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि हमारा उत्पादन बहुत बढ़ गया और हमें मुनाज़ा भी हुआ है। सन् १९५३ में जहाँ हमारी कुल बिक्री २,५६,९०० मार्क की थी, सन् १९५८

दूध दुहने में मशीन के उपयोग से काम में आसानी और कौशल पैदा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वह ११,५६,४०० मार्कों तक बढ़ गई। सब प्रकार के ख़र्चे निकालने के बाद, सन् १९५३ में, १,५८,२०० मार्कों का हमको लाभ हुआ, लेकिन सन् १९५८ में लाभ की यह रक़म ७००६०० मार्कों तक पहुँच गई। हर इकाई के प्रतिव्यक्ति उत्पादन का मूल्य १९५३ में ११.७१ मार्क था जो १९५८ में बढ़ कर १५ मार्क हो गया (इसमें जिन्स का मूल्य शामिल नहीं)। पैसा बचाने के लिए एक-एक मार्क व्यय करने से पहले, हम खूब सोच-विचार कर लेते हैं।

उन यात्रियों को शायद हमारे गाँव शेनरमार्क में निराशा ही होगी जो वहाँ, आधुनिकतम (यान्त्रिक) शिल्पों से सुसज्जित बड़े बड़े शानदार भवन देखने की आशा रखते हों। बहरहाल, इसका यह तात्पर्य नहीं कि वहाँ हमारे पास मशीनें नहीं हैं। हमारी सहकारी समिति की मशीनों का मूल्य १,७५,४०० मार्क है। इसके अतिरिक्त अन्य उपकरणों का मूल्य ३५,७०० मार्क है। सहकारी खेती के प्रारंभ में हमने अनेक सस्ते मकान बनाये और वे आज भी हमारे काम आ रहे हैं।

मुक्त वातावरण में सूअरों को स्वास्थ्य-लाभ की अधिक सुविधा होती है।

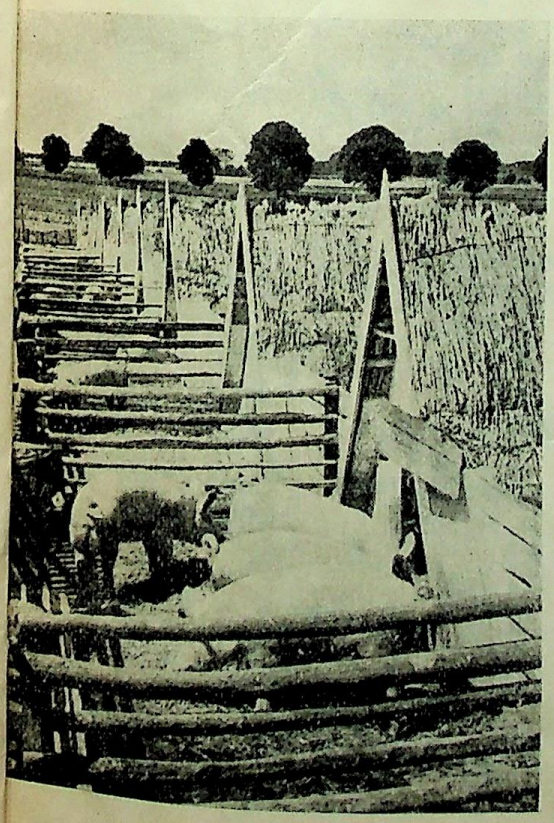

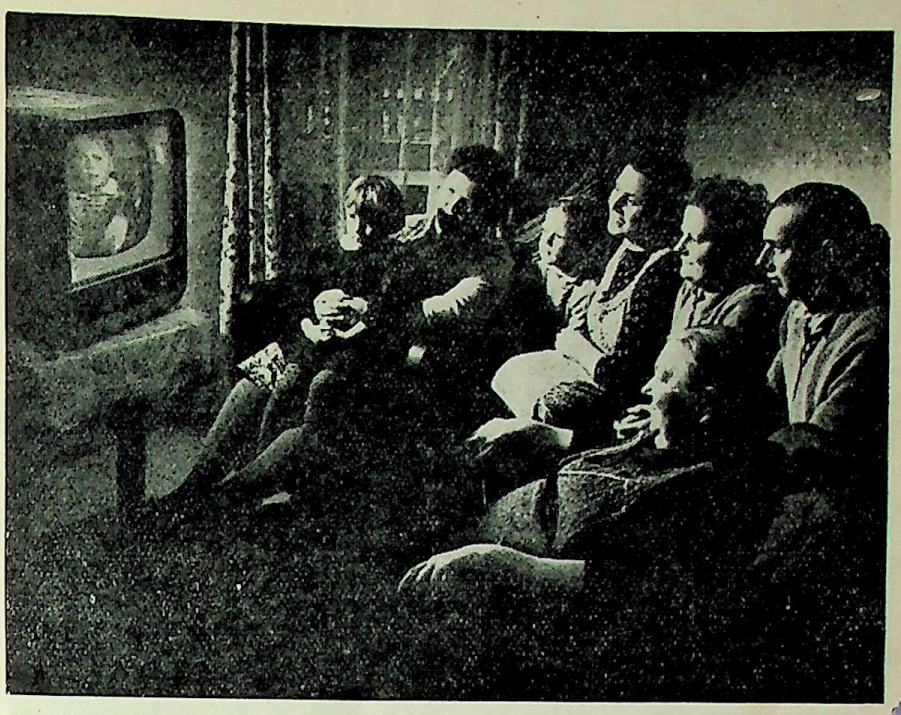

"... फिलहाल २९ परिवारों के पास टेलीविज़न सेट हैं ..."

देश की अन्य कृषि सहकारी समितियों की तुलना में हमारी स्थिति अभी कुछ पिछड़ी हुई ही है। फिर भी ऊपर दिये गये सन् १९५३ से सन् १९५८ तक की उत्पादन-वृद्धि के तथ्यों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान मशीनों तथा उद्योगों का उपयोग, और इसके फलस्वरूप, हमारी समिति की प्रगति सन्तोषजनक है। हमारे भवन-निर्माण दल में आठ सदस्य हैं। इस दल ने आज तक सुअरों और सुअरनियों के लिये दो दो बाड़ों, छोटे सुअरों को रखने के लिये चार बाड़ों, एक खुले ढंग का अस्तबल, छोटे छोटे पशुओं तथा बछड़ों के लिये एक-एक गोशाला का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त एक पशु-प्रसवगृह, चार दर्बों, एक मधु-मक्खियों के घर तथा एक चारा रखने के गोदाम का भी निर्माण किया है। टूट-फूट के बाद भी इन मकानों का मूल्य आज ४,०४,७०० मार्क है।

सहकारी खेती से प्रत्येक सदस्य के जीवन पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा। एक उदाहरण पर्याप्त होगा जो सभी सदस्यों पर लागू हो सकता है। सहकारी खेती की स्थापना के पहले, पाल बेर्गमन्न एक ज़मींदार के साथ काम करता था। उस समय उसकी मासिक मज़दूरी केवल १९० मार्क थी। लेकिन आज उसकी औसत मासिक आय ५०० मार्क (लगभग ५६८ रु०) है। इसके अतिरिक्त उसका एक निजी मकान और फ़ार्म भी है जिसके उत्पादन से वह दुगुनी रक़म वसूल करता है। हमारे सहकारी समिति के सदस्य का जीवन-स्तर कितना ऊँचा है यह इन तथ्यों से स्पष्ट होगा कि २९ परिवारों के पास टेलिविज़न सेट हैं और १४ परिवारों के पास अपनी मोटरें हैं। इसके अतिरिक्त, ३० सदस्यों के पास विभिन्न प्रकार की अपनी-अपनी मोटर-साइकिलें हैं।

अन्य चीज़ों के अतिरिक्त सहकारी समिति के सदस्यों के लिये हमने एक बालकनजीबारी, एक शिशुगृह, एक पुस्तकालय, एक कैन्टीन और सांस्कृतिक कामों के लिये एक कमरे की भी स्थापना की है। सदस्य हफ़्ते में एक बार सिनेमा भी देख सकते हैं। अपनी सहकारी समिति के सांस्कृतिक फ़ण्ड के पैसे से हम रंगशालाओं और बर्लिन अथवा देश के अन्य सुन्दर स्थानों के भ्रमण की व्यवस्था भी करते हैं। पिछले दो वर्षों में, सदस्यों की आधी संख्या, छुट्टियों में मुफ़्त भ्रमण कर आई है।

इस प्रकार, हम अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं। हमने दृढ़ और संयुक्त सहकारिता के द्वारा सफलतायें प्राप्त की हैं और हमारा जीवन, प्रत्येक दृष्टि से अधिक सुन्दर तथा संपन्न बन गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

ज़ाले घाटी में येना क़स्बा

ओल्फ़गंग नोय् हाउस

जर्मनी में येना के अलावा शायद ही कोई दूसरा क़स्बा देखने को मिले जहाँ भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों परस्पर आलिंगन में जुड़े दिखायी देते हों। जहाँ कहीं भी आप जायँ, आपको कुछ न कुछ ऐसी चीज़ें दिखायी पड़ेंगी जिनसे बरबस इतिहास के प्रारम्भिक दिनों की याद ताज़ा हो जायगी—ज़ाले नदी के तट पर खड़े पुराने महल, यनिस्टर की मेहराबें, विश्वविद्यालय की शीतल घुमावदार छतें, काल के हाथों विकृत पुरानी मीनारों के ध्वंस और उसके सामने 'दार्शनिकों की गली'—यह सब येना के वक्ष में सोये हज़ारों वर्षों के इतिहास के साक्षी हैं।

यह ग्यारह सौ वर्षों की पुरानी कहानी है जब ज़ाले नदी की घाटी की छोटी सी बस्ती ने एक उगते हुए क़स्बे का रूप धारण किया था। उस समय यहाँ रोम के नवाबों का शासन था। येना की घाटी का नाम आज से १२४३ वर्ष पूर्व तभी पहली बार इतिहास के पन्नों में अंकित हुआ। आज इतिहास के वे पन्ने समय के साथ धूमिल और पीले पड़ गये हैं। तब से जाने कितनी बार इस घाटी की दीवारों पर प्लेग और भीषण अग्निकांडों, अकाल और युद्ध के तूफ़ानों ने प्रहार किये, फिर भी पिछली सदियों ने उन दीवारों पर अपनी ऐसी छाप छोड़ी है कि आज भी यहाँ के प्राचीन वृक्षों के घने साये में घूमने पर हर क्षण ऐसा लगता है जैसे किसी रोमांचकारी प्रकोष्ठ से एकाएक कोई मध्ययुगीन दार्शनिक निकल पड़ेगा।

येना ने इतिहास के जाने कितने महापुरुषों को अपनी घाटी के छांव में जगह दी है, जिन्होंने यहाँ बैठकर चिन्तन और मनन किये।

घनी हरियालियों और बाग़ीचों के बीच वहाँ एक सराय है। सराय के चारों ओर ऐसी निर्विघ्न और निर्मल शांति विराजती है कि जैसे उसकी रचना कविता के सृजन के लिए ही की गयी हो। उसी सराय के पीछे ल्यूत्रा पर फ्रेड्रिक शिलर ने अपने

येना का प्रतीक—कार्ल ज़ीस के एक भाग का चित्र

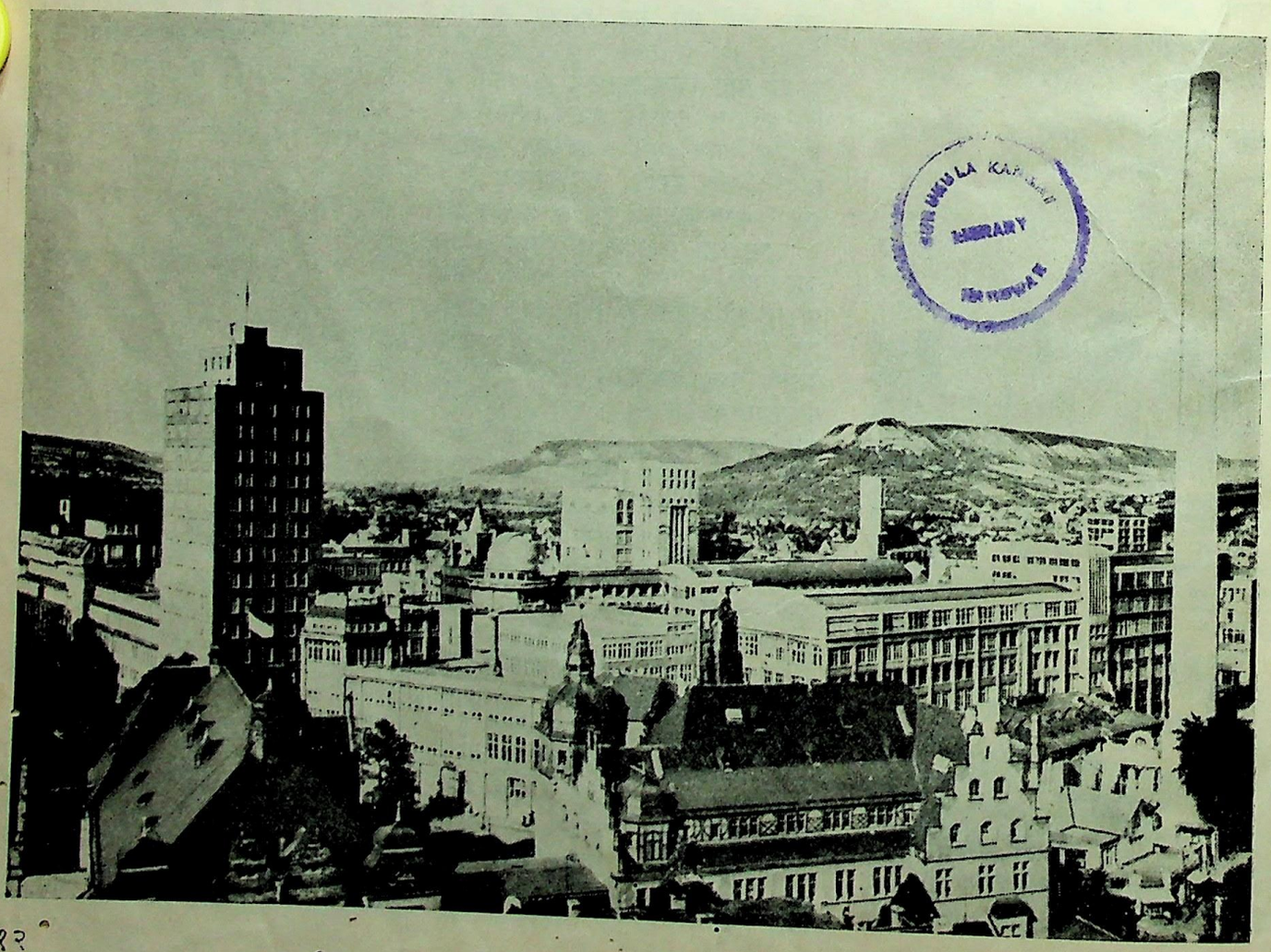

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीष्म-निवास में विश्वविख्यात नाटक 'दस्यु' की रचना की थी। यहीं अपने सृजनशील क्षणों में फ्रेड्रिक शिलर अपने मित्र-कवि गेटे से मिला करते थे। हीगल, शेलिंग और फ़िच्शे ने भी येना में रहकर सृजन किया है। टीक और युवक मार्क्स भी येना में रह चुके हैं।

और जब औद्योगिक युग का उदय हुआ तब भी इतिहास ने चश्मे के निर्माता कार्ल जीस कम्पनी के साथ येना का नाम जोड़ दिया।

यह सन् १८४६ की बात है। संसार के प्रगतिशील देशों जैसे इंग्लैंड, फ्रांस, अमेरिका और जर्मनी ने भाप और बिजली के उपयोग से उत्पादन के साधनों में क्रान्ति शुरू कर दी थी। उन्हीं दिनों चश्मे, दूरबीन और दूसरे यंत्रों का निर्माण शुरू हो गया था और मज़े की बात यह कि इन सारे निर्माण-कार्यों में किसी वैज्ञानिक या गणित संबंधी नियमों का आधार सुलभ न था। उन्हीं दिनों कार्ल ज़ीस ने येना में पहला कारख़ाना खड़ा किया जिसमें चश्मे से संबंधित यंत्रों और रासायनिक तत्वों का निर्माण और बिक्री शुरू हुई। कार्ल ज़ीस ने यह धंधा शुरू करते ही तत्कालीन खुर्दबीनों में निहित कमी भांप ली। कार्ल जीस वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ऐसे यंत्रों के उत्पादन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। सन् १८६६ में गणित के आचार्य प्रो० अबे कार्ल ज़ीस के सहयोगी

गिरजे के सामने येना की बाज़ार

प्रकृति की मनोरम गोद में येना

बने। प्रो. अबे के पिता किसी सूती मिल के मज़दूर थे। उनके सहयोग से ज़ीस-कारख़ाने के नाम में चार चाँद लग गया। वह दुनिया में अपने ढंग का बेजोड़ कारख़ाना बन गया। प्रो. अबे ने नेत्र-ज्योति संबंधी विज्ञान की खोज की, खुर्दबीन का टेकनिक खोज निकाली, और ज्यामित-नेत्र-विज्ञान का आधार प्रस्तुत किया। किन्तु यदि रसायनशास्त्री डा० ओटो शट ने आवश्यक शीशों की प्रयोगात्मक खोज न की होती तो सम्भवतः प्रो० अबे का सिद्धान्त वर्षों तक कार्यरूप में परिणत न हो पाता। शट और अबे ने नये ढंग के शीशों की ईजाद की और पुरुषार्थी ज़ीस ने सन् १८८४ में प्रो० अबे के साथ शट एंड कम्पनी, येना, की स्थापना कर डाली।

dwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

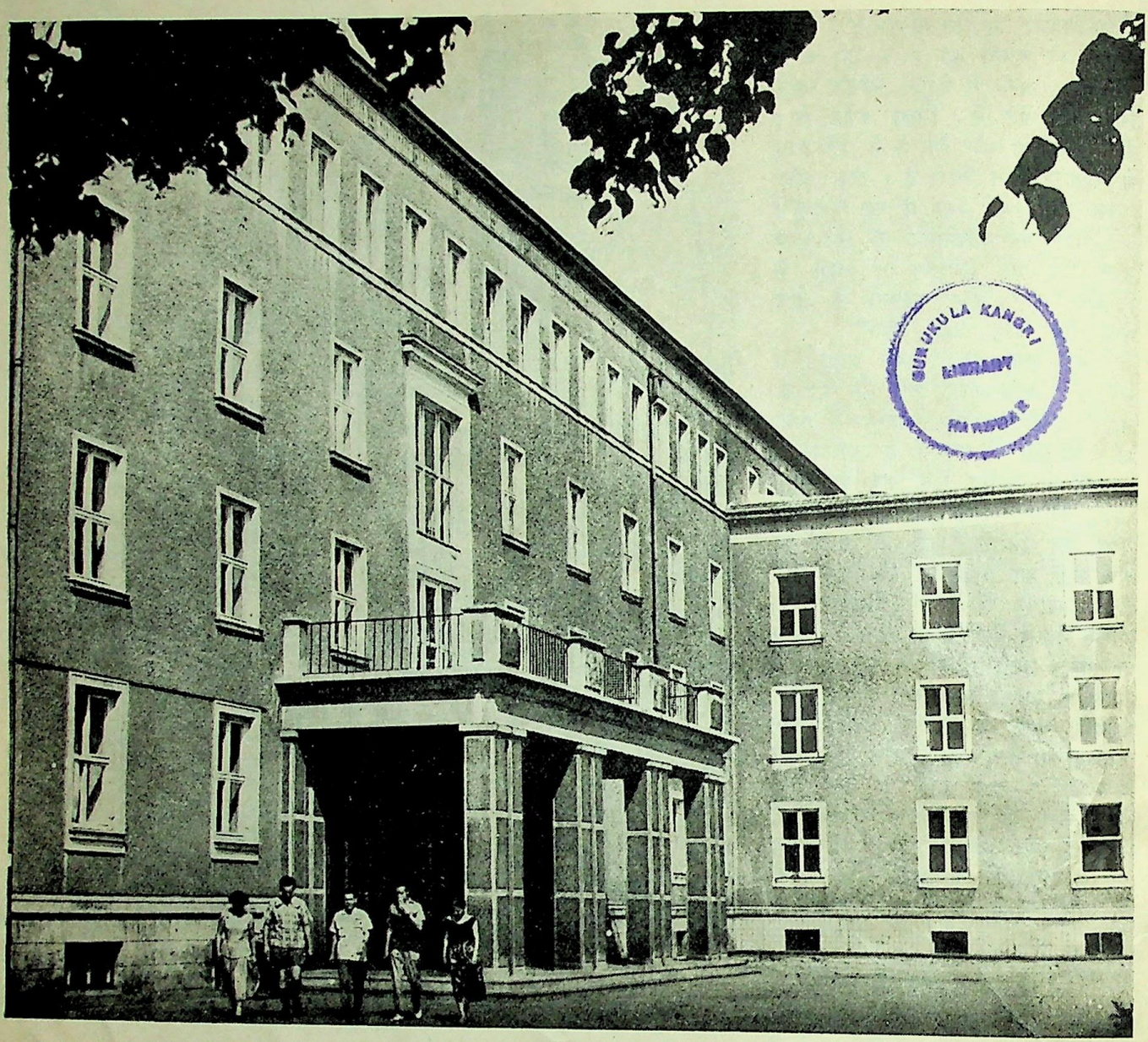

येना में नये जीवन की भी रचना हो गयी है। नयी पीढ़ी अध्ययन करने और राष्ट्रीय परम्पराओं को संजो कर रखने के लिये आतुर है।

ज़ीस, अबे और शट—इन्हीं तीन नामों ने येना को औद्योगिक ख्याति प्रदान की। ज़ीस कारखाने के वैज्ञानिक और तकनीकी विस्तार का बहुत कुछ श्रेय प्रो० अबे को है क्योंकि इन्होंने उत्पादन बढ़ाने और नयी खोजों को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं का ठोस सहयोग प्राप्त किया।

आज यह ज़ीस कारखाना शट एंड कम्पनी का 'शीशे का नगर' कहलाता है और येना की विभूति और सौन्दर्य का मुख्य आकर्षण बन गया है। येना के बीचो बीच ज़ीस वेधशाला भी बनी हुई है जो किसी भी दर्शक को मंत्र-मुग्ध करने के लिए पर्याप्त है।

ज़ीस कारखाना और शट एंड कम्पनी—दोनों आज से कई वर्ष पूर्व जनता की मिलकियत बन चुके हैं और येना में नयी ज़िन्दगी भी फल-फल रही है। नौजवानों में सीखने की भूख होती है। उन्हें बूढ़े और अनुभवी इंजीनियर काम सिखला रहे हैं ताकि वे जर्मन कौशल की परम्परा आगे बढ़ा सकें। पहले येना के विश्वविद्यालय तक केवल धनियों के लड़कों की पहुँच होती थी, आज वहाँ की कक्षाएँ मज़दूरों और किसानों के बच्चों से भरी रहती हैं। वैभव के मद में चूर छात्रों के कुरूप रीति-रिवाज़ों, कुश्तियों उपद्रवों और नशेबाज़ियों को सदा-सदा के लिए ख़त्म कर दिया गया है। आज हर कोई सारे राष्ट्र की सुख-समृद्धि की मंज़िल की ओर आगे बढ़ रहा है।

आज येना में फूलों से लदे जीवन का वर्तमान स्रोत प्रवाहित हो रहा है, मौन भूत अपरिमित संतोष के साथ उस स्रोत के दर्शन कर रहा है, संकरी घाटियों में भविष्य के मधुर गीत गूंज रहे हैं। हमारी जनता जिस स्वर्णिम भविष्य के सपने देखा करती थी और जिसके लिए उसने जाने कितनी यातनाएँ सहीं, आज वह ज़ाले की घाटी में साकार हो उठा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोरमन फ़ैशन केन्द्र :

सरकारी साझेदारी का सुफल

गेरहार्ड एच. केगल

बोरमन फ़ैशन केन्द्र खूबसूरत पोशाकें तैयार करने के लिए मशहूर है। लेकिन उसका श्रीगणेश बड़े ही मामूली पैमाने पर हुआ था। लड़ाई से पहले मेग्डेबर्ग की अनेक रेडी-मेड कपड़ों की छोटी-छोटी दूकानों में वह भी एक था। लेकिन वहाँ औरतों के लिए बड़ी ही सुरुचिपूर्ण पोशाकें तैयार होती थीं। दूकान के मालिक की बेटी को महिलाओं के लिए हैट बनाने में कमाल हासिल था। लेकिन उस छोटी-सी दूकान की नीव बहुत मज़बूत न थी। उस लड़की ने हीन्ज़ बोरमन नामक एक व्यवसायी से विवाह कर लिया। लेकिन युद्ध की आंधी में सब कुछ नष्ट हो गया।

लड़ाई के बाद बोरमन ने शीनीबेक में किसी तरह फिर अपना धन्धा शुरू किया। शीनीबेक मेग्डेबर्ग से ९ मील दूर एक उगते हुए औद्योगिक केन्द्र के रूप में जन्म ले चुका था। बोरमन ने एक छोटा सा कारख़ाना खोला और सिलाई की पुरानी मशीनों से काम शुरू किया।

उस समय उनकी दूकान में तीस कर्मचारी थे। वहाँ मुख्यतः पुरुषों के रेडी-मेड कपड़े ही बनते थे। काम तो उन्हें ज़रूर बहुत मिलने लगा था किन्तु बोरमन के यहाँ जल्द ही फ़ैशन वालों की भीड़ लगने लगी। फलतः उन्हें औरतों के लिए भी एक छोटा सा विभाग खोलना पड़ा और जल्द ही उन्होंने यह अनुभव किया कि पुरुषों के बजाय महिलाओं के लिए ही कपड़े तैयार करने में कल्याण है। उन्हों ने इस दिशा में विशेष कौशल भी प्राप्त करना निश्चित किया।

इस प्रकार रेडी-मेड कपड़ों की एक दूकान की मज़बूत नींव पड़ी। दूकान छोटी ही थी लेकिन फ़ैशन की तरक़्क़ी के साथ आगे बढ़ते हुए उसने जिस सुरुचि और प्रतिभा का परिचय दिया उससे पूरे समूह में उसे एक विशिष्टता प्राप्त हो गयी। बोरमन में दूरदर्शिता भी कम न थी। इससे उनके व्यवसाय को और बढ़ावा मिला। उन्हों ने अपने व्यवसाय की सीमाएँ फैलाना चाहीं, दुनिया भर से उन्हें व्यावसायिक रिश्ते की फ़िक्र पड़ी और इस सिलसिले में उन्होंने विदेशों से लेन-देन भी शुरू कर दो।

सन् १९५६ में जर्मन जनवादी गणतंत्र में अनेक कारखानों को भांति बोरमन-फ़र्म की भी राज्य से साझेदारी करने का अवसर मिला, फलतः वह एक अर्ध-सरकारी कम्पनी बन गयी। हींज बोरमन ने तुरन्त ही इस सुयोग को पहचान लिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि एक समाजवादी राज्य —निरन्तर विकास के पथ पर आगे बढ़ता हुआ मज़दूरों और किसानों के राज्य से बढ़कर अच्छा साझेदार कहाँ मिल सकता है।

बोरमन की इच्छा थी कि उनके कारख़ाने की उत्पादन-क्षमता बढ़े, अधिक मशीनें लगें और विदेशों में निर्यात बढ़े और जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक सफलताओं से बोरमन जैसे निजी मालिक की योजना की कामयाबी का पूरा आश्वासन भी प्राप्त था। जिस दिन बोरमन और सरकारी प्रतिनिधियों में साझेदारी पर हस्ताक्षर हुए, उसके पूरे कर्मचारियों ने भी उत्सव मनाये क्योंकि इससे उनकी भी हालत में भारी सुधार होने वाले थे। साझेदारी से पहले उस कारख़ाने में तीस कर्मचारी काम करते थे, धीरे-धीरे २७० नये कर्मचारी भी आगये। कर्मचारियों के लिए बोनस

बोरमन के यहाँ सिर्फ़ रेडी-मेड पोशाकें ही नहीं बनतीं, बल्कि श्रीमती बोरमन की डिज़ाइनों के लिये भी वह प्रसिद्ध है। चित्र में तम्बाकू-माडेल दिखाया गया है।

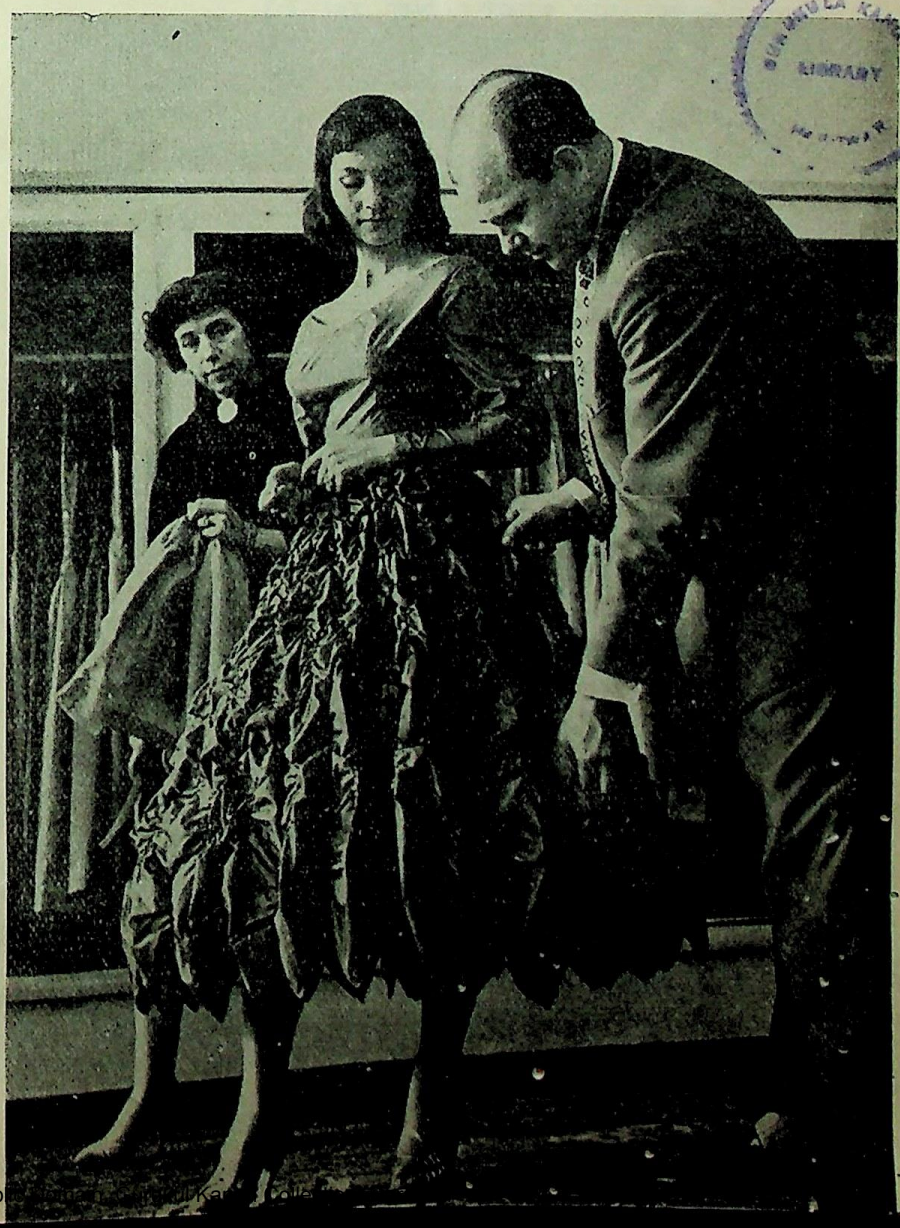

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की व्यवस्था की गयी, उनकी मज़दूरी सरकारी उद्योगों में काम करने वाले मज़दूरों के अनुसार दी जाने लगी। इस अर्ध सरकारी कारख़ाने में भी हफ़्ते में ४५ घंटे काम की प्रथा चालू कर दी गयी। नये वर्कशाप क़ायम किये गये, नये विभागों को चालू करते समय कर्मचारियों की सामाजिक सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया।

साझेदारी के बाद इस नयी कम्पनी में बोरमन की ५० फ़ीसदी पूंजी लगी, लेकिन कम्पनी का पूरा उत्तरदायित्व अब भी उन्हीं पर है, वे उसके संचालक हैं। इस प्रकार कम्पनी के सरकारी हिस्से की पूंजी का भी उत्तरदायित्व उन्हीं पर है और उसका सदुपयोग किस प्रकार होता है इसकी सूचना वे समय-समय पर राज्य को दिया करते हैं। और यह काम भी वे मुफ़्त नहीं करते। इसके लिए उन्हें पारिश्रमिक के रूप में वेतन मिलता है—अपनी पूंजी का मुनाफ़ा तो अलग मिलता ही है। श्रीमती बोरमन फ़ैशन विभाग और मेग्डेबर्ग स्थित वर्कशाप की अध्यक्षा हैं। फ़ैशन की नयी-नयी विधियों का सृजन उनका मुख्य काम है लेकिन उनके सृजन में सादगी और निखार अपनी अलग विशेषता रखते हैं। इस काम में कपड़ों के स्वभाव को समझ कर उन्हें नया रूप देना महत्वपूर्ण बात है, कहने की आवश्यकता नहीं कि श्रीमती बोरमन जिस सज्जा का निर्माण करती हैं उसमें शैली का संतुलन और रंगों का सुरुचिपूर्ण मेल देश-विदेश सब जगह चर्चा का विषय बना हुआ है।

मशीनें काम को आसान बना देती हैं और फिर बिजली से चलने वाली मशीनों का क्या कहना !

यही कारण था कि जब १९५७ में मास्को और लेनिनग्राद में फ़ैशन-प्रदर्शिनियों का आयोजन हुआ तो इस कम्पनी के बने कपड़ों की सभी ने सराहना की। आज इसका निर्यात बराबर बढ़ता जा रहा है। बोरमन का सोवियत संघ से बड़ा ही घनिष्ट व्यापारिक संबंध क़ायम हो गया है। इस संबंध का प्रारम्भ १९५७ में हुआ जब सोवियत संघ ने ५ लाख मार्क की महिलाओं की पोशाकें मँगवायीं। आगे चलकर इस कम्पनी का फ्रान्स, पश्चिम जर्मनी, हालैंड, स्वेडन, मिस्र, मोरक्को, ट्यूनीसिया और यहाँ तक कि घाना से भी व्यापारिक संबंध स्थापित हो गया। यह जर्मन कम्पनी अपने गाहकों की माँगों और इच्छाओं को पूरी तरह समझती है और यही कारण है कि उसने इतने देशों में गाहकों के दिल जीत लिये। लईपज़िग मेले में भी इस कम्पनी की प्रदर्शनी हुई जहाँ सुदूरपूर्व से आये हुए गाहकों की रुचि के अनुकूल विशेषरूप से पोशाकें तैयार की गयी थीं। आज कम्पनी के कुल उत्पादन का आधा विदेशों में निर्यात होता है। सरकारी साझेदारी के बाद उत्पादन भी तेज़ी से बढ़ा। सन् १९५६ में तीस लाख मार्क की पोशाकें तैयार होती थीं, सन् ५८ में उत्पादन दुगना हो गया, अर्थात् ६० लाख मार्क की पोशाकें बनने लगीं। इस विकास में नयी मशीनों का भारी योगदान है। चालू वर्ष में भी भारी उत्पादन-वृद्धि की आशा है। कहने की ज़रूरत नहीं कि विकास की इस तेज़ प्रगति का श्रेय सरकारी साझेदारी और सहायता को है।

बोरमन परिवार ! देखें किसकी रफ़्तार तेज़ है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोटी और कला का समन्वय:

मज़दूर नाटक मंडलियाँ

एफ़ा ज़्हफ़

गत वर्ष बर्लिन में एक कला-समारोह का आयोजन हुआ था। इस समारोह में कुछ अतिथि-कलाकारों ने भी भाग लिया जिन्हें इससे पहले कोई जानता न था और न जिन्हें अपनी कला में पारंगत होने का ही कोई दावा था। फिर भी उनके प्रदर्शनों को जनता ने बहुत पसन्द किया और उनकी काफ़ी चर्चा रही।

फ्रेडरिख उल्फ़ का एक नाटक है 'कटारो के नाविक'। रोस्टाक में जहाज़ बनाने का एक कारख़ाना है जिसे वार्नो कारख़ाने के नाम से पुकारा जाता है, यहीं के लुहारों और इंजीनियरों ने 'कटारो के नाविक' को मंच पर प्रस्तुत किया। इस क्रांतिकारी नाटक के अभिनय में श्रमिकों ने अपना दिल उतार कर रख दिया। उनका अभिनय मानवीय सरलता का नमूना सिद्ध हुआ। साथ ही उनके अभिनय ने यह भी प्रमाणित किया कि ज़ंजीरों से मुक्त श्रमिक-वर्ग में कितनी प्रबल सृजनशील प्रतिभा छिपी होती है।

मज़दूरों का यह रंगमंच सन् १९५८ में स्थापित हुआ। यह रंगमंच सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की सांस्कृतिक प्रेरणा के अनुकूल ही सिद्ध हुआ। इस रंगमंच की सफलता से यह लगा कि कला के क्षेत्र से मज़दूर वर्ग और अन्य मेहनतकश जनता के दूर रहने के दिन लद गये, अब उन्हें इसमें पूरी लगन से भाग लेना है। उन्हें अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा के विकास के लिए सृजन का उत्तरदायित्व भी अपने हाथों में लेना है, उन्हें कला के क्षेत्र में भी सक्रिय होना है।

'मज़दूर साथियो, क़लम उठाओ', इस नारे ने सचमुच एक जन-आन्दोलन छेड़ दिया। आज इस आन्दोलन के अन्तर्गत हज़ारों मज़दूर लिख रहे हैं, चित्रकारी कर रहे हैं, संगीत-साधना में लगे हुए हैं।

और मज़दूरों का वह रंगमंच इस दिशा में पहला प्रयास था। उसके अधिकांश सदस्यों को अभिनय की कोई जानकारी न थी। उनमें से कम ही ऐसे थे जो अभिनय-केन्द्रों से परिचित थे।

वार्नो की इस मज़दूर-नाटक-मंडली ने अपने प्रयासों के सुफल की समीक्षा करते हुए अपने उद्देश्यों पर निम्नलिखित शब्दों में प्रकाश डाला:

"हम अपने प्रयास को मज़दूर-नाटक मंडली केवल इसलिए नहीं कहते कि इसके २१ सदस्यों में से १८ मज़दूर हैं बल्कि इस नाम के पीछे हमारा जीवन-दर्शन भी छिपा हुआ है। यद्यपि हमें इस काम में बड़ा ही आनन्द और सन्तोष मिलता है, लेकिन यही हमारा अन्तिम लक्ष्य नहीं। प्रशंसा पाना भी हमारा लक्ष्य नहीं। हम अभिनय इसलिए करते हैं कि हम इसे एक महत्वपूर्ण कार्य समझते हैं।

रोस्टाक में इस मंडली के सामने कठिनाइयाँ भी कुछ कम न थीं। अपने काम के घंटों के बाद उन्हें रिहर्सल की झंझट उठानी पड़ती थी, ऊपर से अपने साथियों का मज़ाक और फिर प्रबन्धकों की आपत्ति अलग। प्रबन्धकों की राय में जहाज़ बनानेवाले मज़दूरों का काम जहाज़ बनाना है, अभिनय करना नहीं।

लेकिन "कटारो के नाविक" का पहला अभिनय ही बेहद कामयाब रहा। इससे भी विचित्र एक और बात देखने में आयी। जिस-जिस ने

कटारों के नाविक

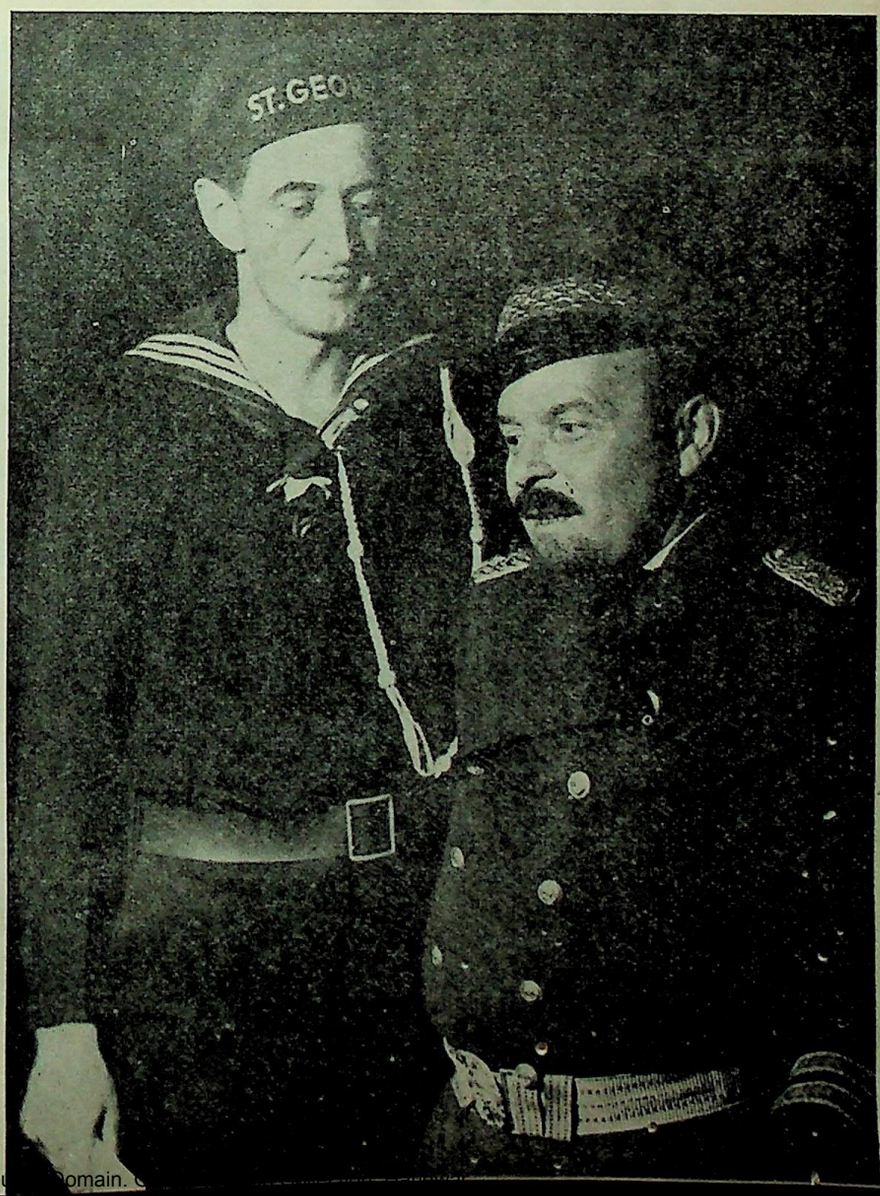

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

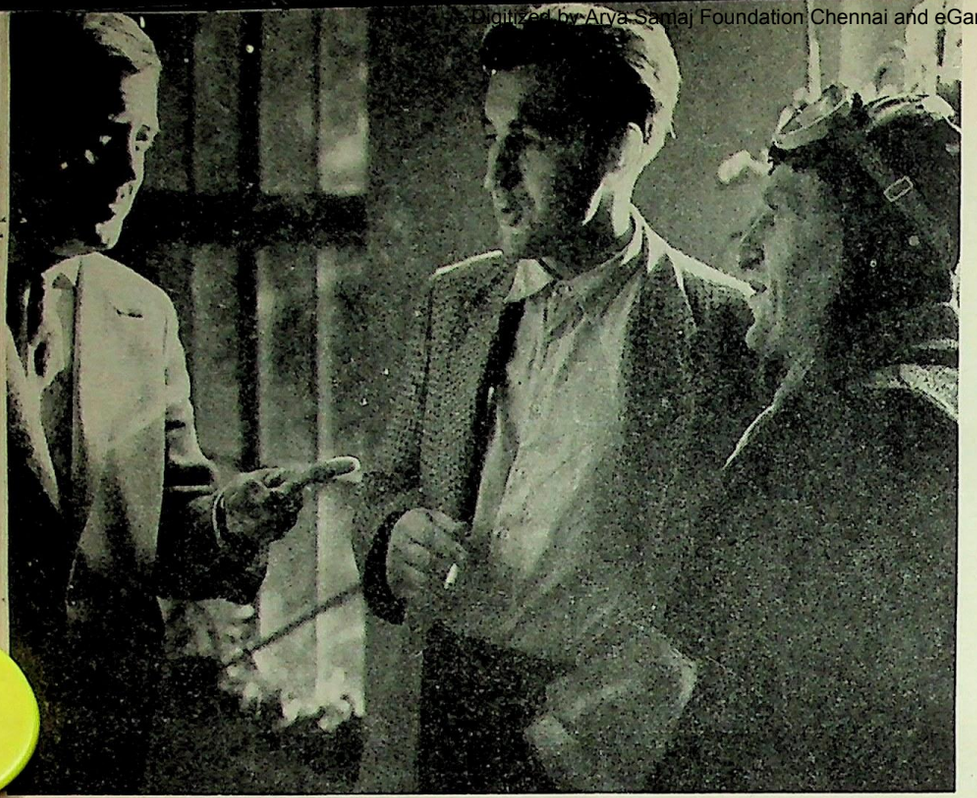

'मिलकर चलो' नाटक के दृश्यों पर खदान-मज़दूर विचार-विमर्श कर रहे हैं।

इसमें अभिनय किया, स्वयं उसका जीवन भी बदल गया। अभिनय से पूर्व उनके अवकाश का सारा समय हंसी-ठट्टे और गप्पों में बर्बाद हो जाता था, लेकिन अब वे अपने उन क्षणों का सदुपयोग करने लगे, साथ ही मज़दूरों के रूप में भी उन्होंने नये आदर्श उपस्थित कर दिखाये। आज उस जहाज़-कारख़ाने का हर मज़दूर अपने इस रंगमंच पर गर्व का अनुभव करता है।

विस्मिथ खान मज़दूरों के रंगमंच की दूसरी ही कहानी है। यहाँ के मज़दूर अपनी बीवियों को अपने काम की जगह और तरीक़े दिखाना चाहते थे। लेकिन महिलाओं को खान के अन्दर जाने की अनुमति नहीं होती। इसलिए मज़दूरों ने निश्चय किया कि उन सारे दृश्यों को रंगमंच पर ही प्रदर्शित करके बीवियों का मनोरथ पूरा किया जाय।

इन मज़दूरों ने अनबर्ग म्युनिस्पिल थियेटर से संबंध स्थापित किया। मई सन् १९५९ में सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी ने बर्लिन में एक रंगमंच सम्मेलन आयोजित किया। इन मज़दूरों के एक प्रतिनिधि ने उसमें भी भाग लिया, जिसमें उसे कुछ बहुत ही अच्छे सुझाव मिले।

फिर इन खदान-मज़दूरों ने अपना नाटक प्रस्तुत किया—**मिलकर चलो**। यह नाटक उनके अपने काम की कहानी है। अनबर्ग थियेटर के साथ मिलकर ख़ुद उन्होंने ही इसे लिखा था। बर्लिन-कला-समारोह के बाद नाटक का रिहर्सल और अधिक जागरुकता के साथ शुरू हुआ। वार्नो के मज़दूरों की तरह इन्हें भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनमें से बहुतों को तो रिहर्सल से सीधे रात की पाली में अपने काम पर चला आना पड़ता था। और रंगमंच पर पहले-पहल पाँव रखना भी तो कुछ कम मुश्किल नहीं होता। लेकिन इन मज़दूरों की सृजन-शक्ति का कमाल यह था कि उन्होंने न सिर्फ़ अपने नाटक के अभिनय में ही सफलता प्राप्त की, बल्कि निर्धारित समय में ११७ प्रतिशत उत्पादन कर दिखाया जिसके फलस्वरूप उन्हें "समाजवादी टुकड़ी" की उपाधि से भी विभूषित किया गया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इनमें से हर मज़दूर यह जानता है कि उसके काम की यह सफलता उसके कलात्मक क्रिया-कलापों की उपज है, जिसने उसके सम्पूर्ण जीवन को समृद्ध बना दिया है।

'मिलकर चलो'

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अपनी सफलता से वे अंधे भी नहीं हुए! उन्होंने अपना वही नाटक फिर से लिखा क्योंकि इस बीच उनके कलात्मक और सैद्धान्तिक मान-दण्डों में काफ़ी विकास हो चुका था और वे अपनी कमियों को अधिक सजगता के साथ पहचान सकते थे।

एक दूसरी मंडली ने ८ मई के सम्मान में 'कर्नल कुस्मिन' का अभिनय किया। इस दिन नाजी-मुक्ति-दिवस की १५वीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी।

ये दो उदाहरण ऐसे अनेक रंग-मंचों के प्रतीक मात्र हैं। जुरिंगन के जंगलों में 'बारनाख' नाम का एक छोटा सा गाँव है। यहाँ किसी ज़माने में महान् नाटककार शिलर निवास कर चुके हैं। इस गाँव के निवासियों ने श्रम-दान से एक खुला रंगमंच तैयार किया। १९५९ में, शिलर की वर्षगांठ मनायी जा रही थी। उसी अवसर पर गांववालों ने शिलर रचित 'विल्हेमटेल' का अभिनय किया और पेशेवर मंचों से भी अधिक सफलता प्राप्त की। रिहर्सल के दौरान गाँव में एक नये और मैत्रीपूर्ण विचार-विमर्श के वातावरण का भी प्रादुर्भाव हो गया।

मेन्सफ़ील्ड ताँबा खान के मज़दूरों ने तरुण लेखक गेर्हार्ड फ़ेबियन को 'वे जो बलशाली हैं', नामक नाटक लिखने में मदद की। इसमें उन्हीं मज़दूरों का जीवन चित्रित किया गया है और इसमें वे ही अभिनय भी कर रहे हैं। फलतः यहाँ के मज़दूर लेखक के सबसे अच्छे और मैत्रीपूर्ण आलोचक सिद्ध हुए। फ़ेबियन आजकल दूसरा सुखान्त नाटक उन्हीं खान-मज़दूरों के लिए लिख रहा है।

इसी प्रकार ल्यूना रसायन कारखाने और ड्रेस्डन के विमान-कारखाने के मज़दूर तथा अनेक स्थानों के किसान भी श्रम के साथ-साथ कला के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं।

हमारे देश के सांस्कृतिक विकास के मौजूदा दौर की नयी विशेषता यह है कि वह लोक-कला के सीमित क्षेत्र से निकल कर व्यापक क्षेत्रों में फल-फूल रहा है। इस दौर में अधिकाधिक जन-समुदाय सृजन की ओर आगे बढ़ रहा है, तथा समाज और जीवन-पद्धति में एक आमूल परिवर्तन आता जा रहा है। जनता में संस्कृति की जड़ें कितनी गहरी होती हैं और नये समाजवादी मानव को नया रूप देने में संस्कृति की कितनी बड़ी निर्णायक भूमिका है—हमारा यह सांस्कृतिक युग इसका भी एक सुन्दर प्रमाण है।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रकाशन का एक दशक

काल्हेन्ज़ ऐले

जर्मन जनवादी गणतंत्र के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक विकास में पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण की बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका है। यह तथ्य पुस्तकों के प्रकाशन की दिशा में हमारी राष्ट्रीय परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने का केवल उत्तरदायित्व मात्र नहीं, बल्कि हम हेनारिख मन्न के शब्दों में—आज की पुस्तकों को कल की सुकृतियाँ—मान कर भी इस महान् कार्य का संचालन करते हैं।

सन् १९४९ के आसपास जर्मन जनवादी गणतंत्र में नये प्रकाशनगृहों का नये नामों के साथ जन्म हुआ। इनके अतिरिक्त अनेक ऐसे प्रकाशनगृह तो थे ही जो अपनी वर्षों पुरानी परम्परा के लिए सुप्रसिद्ध थे। उनके नामों से ही उनकी योजनाएँ स्पष्ट हो जाती हैं। जैसे अफ़्बाउलैंग को ही लें। इसका प्रबन्ध जर्मन संस्कृति संघ के हाथों में है। इसके द्वारा जर्मनी के क्लासिक साहित्य और प्रमुख समकालीन साहित्य का सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हुआ है। दूसरे नये प्रकाशन-गृहों का परिचय इस प्रकार है: **संस्कृति और प्रगति**—इसे विशेषरूप से सोवियत संस्कृति और विज्ञान की निधियों के प्रकाशन में ख्याति प्राप्त है; **नवजीवन**—यह नयी पीढ़ी को समर्पित है; **जनता और स्वास्थ्य**—इसका संचालन राष्ट्रीय देख-रेख में होता है। इसे

बर्लिन स्थित किन्डर बुशवर्लाग द्वारा प्रकाशित बच्चों के लिये परियों की कहानी

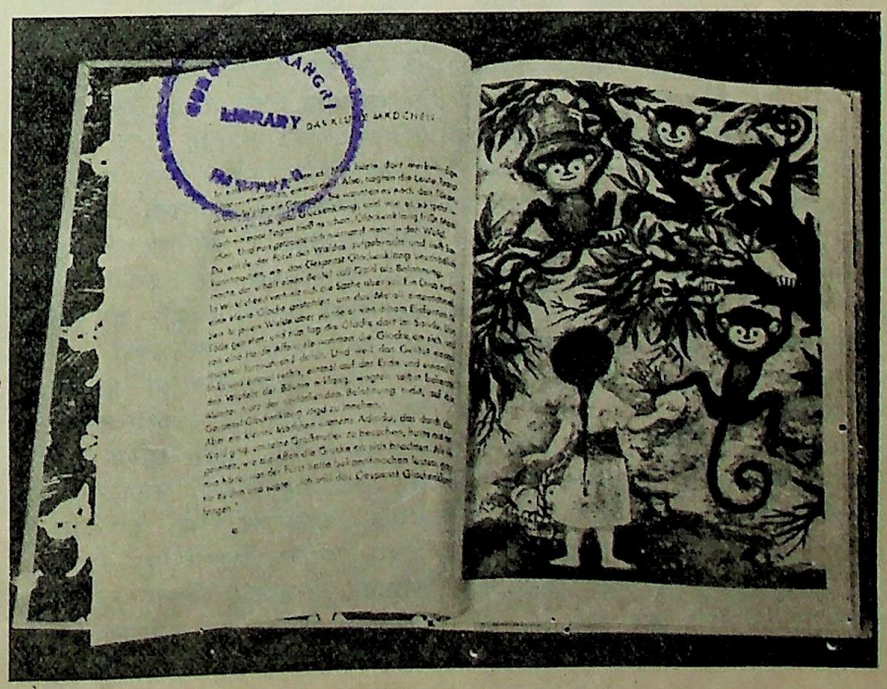

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक जर्मन लेखकों की पुस्तकें

स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त है। नये औषधि विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन इसकी विशेषता है। इस संबंध में उन प्रकाशनों का भी उल्लेख ज़रूरी है जो स्कूलों की आवश्यकता पूरी करते हैं।

इन नये प्रकाशनों के अतिरिक्त और भी अनेक प्रकाशक हैं जो इस क्षेत्र में बड़ा काम कर रहे हैं। इनमें निम्नलिखित के नाम उल्लेखनीय हैं: ऱ्यूटन एंड लोनिंग, लईपज़िग स्थित इन्स्चीच्यूट आफ विबिलियोग्राफी; एसोसिएशन आफ एकेडमिक पब्लिशर्स गोइस्ट एंड पोटिंग; एफ. ए. ब्रोरवस; जान एम्ब्रासिस बार्थ आदि। इन प्रकाशनों का और चाहे जो उद्देश्य हो, किन्तु इतना निश्चित है कि ये पुस्तकों का प्रकाशन केवल मुनाफ़े के लिए नहीं करते। उनके सामने सबसे पहला लक्ष्य हमारी जनता और नवजात राष्ट्र के सांस्कृतिक और राजनीतिक हितों को पूरा करना है।

पिछले कुछ वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र में पुस्तकों की प्रकाशन-प्रगति इस प्रकार है:—

१९५१	—२०८६ पुस्तकें	—श.प्र. वृद्धि
५६	—५९२० ,,	—२८३.८ ,,
५८	—६२०५ ,,	—२९७.४ ,,

इस प्रकार हम देखते हैं कि केवल सात वर्षों में पुस्तकों का प्रकाशन लगभग तीन गुना बढ़ गया। सन् १९५८ में कुल प्रकाशित पुस्तकों की संख्या ८,८१,०३,००० तक पहुँच गयी अर्थात् १९५६ की अपेक्षा १४ प्रतिशत वृद्धि हुई।

दूसरी ओर पुस्तकों में अच्छे क़िस्म का कागज़ लगाया गया, उनकी रूप-सज्जा में और सुधार किया गया, फिर भी इन प्रकाशनों का औसत मूल्य न सिर्फ़ बढ़ा नहीं, बल्कि उसमें ४ प्रतिशत की कमी हुई।

हमारे गणतंत्र ने अपने पहले वर्ष में ही उन साहित्यिक प्रकाशनों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जिनसे हिटलर की नाज़ी व्यवस्था ने जर्मन जनता को और विशेषतया नयी पीढ़ी को वंचित कर दिया था। इनमें हेनरिख हीने, टामस मन्न, हेनरिख मन्न मैक्सिम गोर्की, जोनेस आर, बेशर, एरिक बीनर्ट, अन्ना सेगर्स आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी बीच नये जर्मन साहित्य में भी फलफूल लगने लगा था जिसमें हमें जनजीवन की अभिव्यक्ति मिलती है और जो पाठकों के लिए महान् प्रेरणा बनता है।

आज हमारे देश का साहित्यिक विकास एक नये युग में प्रवेश कर चुका है। हमारे यहाँ 'पाठक श्रमिक आन्दोलन' चला जिसने आगे चलकर 'लेखक श्रमिक आन्दोलन' का रूप धारण किया। हमारा नारा था—"मज़दूर साथियो, क़लम गहो"। सन् १९५९ के अप्रैल में लेखकों का सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन ने मज़दूरवर्ग में सुप्त कलात्मक और साहित्यिक प्रतिभाओं को खोजने और उन्हें विकास की दिशा बतलाने का प्रयत्न किया।

एक ओर हमारे राष्ट्रीय अर्थतंत्र, विज्ञान और तकनीकी ज्ञान का पुनर्निर्माण हो रहा है, दूसरी ओर जर्मन लेखकों की कृतियाँ अधिकाधिक संख्या में जनता के सामने आ रही हैं जिनमें हमारे जीवन के विभिन्न अंगों से संबंधित समस्याओं के हल का प्रयत्न निहित है। उनमें समाजशास्त्र की पुस्तकें हैं जो जर्मन जनता के भूतकाल का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं; कुछ में समाजवादी पुनर्निर्माण की दिशा में दर्शन, अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र का विवेचन मिलता है। प्राकृतिक विज्ञान और औषधि-विज्ञान से संबंधित भी अनेक महत्वपूर्ण प्रकाशन हुए हैं तथा प्राकृतिक विज्ञान, तकनीकी ज्ञान और कृषिशास्त्र के हर क्षेत्र में नयी पाठ्य पुस्तकें भी छापी जा रही हैं।

हमारे प्रकाशनों को कितनी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है इसका प्रमाण यह है कि विदेशों में हमारी पुस्तकों का निर्यात प्रतिवर्ष बढ़ता चला जा रहा है और आजकल लगभग ९६ देशों में जर्मन जनवादी गणतंत्र की पुस्तकें खरीदी जाती हैं। योरप के सभी महत्वपूर्ण व्यापारिक मेलों में हमारी पुस्तकें जाती हैं।

अगले छः-सात वर्षों में हमारी पुस्तकों और पुस्तिकाओं के प्रकाशन में और भी वृद्धि होगी। छपी हुई पुस्तकों की संख्या में ६० से लेकर ७० प्रतिशत की वृद्धि होगी। हमारी जनता की विविध साहित्यिक माँग बढ़ती जा रही है, स्कूलों और प्रशिक्षण केन्द्रों को भी अधिकाधिक पुस्तकों की आवश्यकता पड़ रही है। इसीलिए हमारे गणतंत्र के भावी राजनीतिक और आर्थिक विकास के साथ सन् १९६५ तक की प्रकाशन-योजना भी जुड़ी हुई है। इन प्रकाशन-योजनाओं को पूरा करने के उद्देश्य से निजी प्रकाशनगृहों के ढांचे और कार्य-क्षेत्र में भी परिवर्तन करना पड़ेगा। छापेखाने से संबंधित उद्योग का पुनर्निर्माण भी जारी रखना पड़ेगा। साहित्यिक पत्रों, पुस्तक-व्यापार और पुस्तकालयों की प्रगति में तेजी लानी पड़ेगी और साहित्य का वितरण अधिक कुशलता और योजनाबद्ध ढंग से करना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१)

डेफ़ा फ़िल्म जगत :

'पुराना प्यार' नये गाँव की कहानी

फ्रेडा और आगस्त वाकोवेक अपने विवाह की ३० वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। वे दोनों बहुत दिनों तक खेतिहर मज़दूरों की ज़िन्दगी बिताते रहे। उनके दिन उस समय बदले जब १९४५ के बाद ज़मीन्दारी प्रथा का ख़ात्मा कर दिया गया और उन्हें कुछ ज़मीन २) दी गयी। अब वे किसानी करने लगे। लेकिन वह भी क्या किसानी थी! सुबह से शाम तक खेतों में जुते रहते। उनकी मेहनत का कोई अन्त ही न था। तभी उनके सामने एक सुन्हरा अवसर आया। उनके गाँव में किसानों की सहकारी समिति बनी और वे उस समिति के संस्थापकों में शामिल हो गये। फ्रेडा उस समिति की सदर चुन ली गयी क्योंकि हर किसी ने उसकी मेहनत, उसकी सूझबूझ और उसके अनुभवों की सराहना की। फिर यदि वे अपने विवाह की ३० वीं वर्षगाँठ शानदार ढंग से मनायें तो इसमें आश्चर्य ही क्या।

लेकिन अदृश्य भी जाने कितने द्वन्द्व अपने आँचल में छुपाये रहता है!

सहकारी खेती के सामने अशांति के दिन आते हैं। फ्रेडा अपनी ३) चिन्ताओं के बोझ से टूट रही है, कोई उसका हाथ बटाने वाला नहीं। आगस्त अपने एक पुराने मित्र हेनरिख रैन्श से मिलने जाता है। रैन्श उस गाँव का अकेला किसान है, जो सहकारी समिति से अलग है। वह बड़े घमंड से अपनी ज़मीन के साथ चिपका हुआ है और सहकारी समिति को फूटी आँखों भी नहीं देखना चाहता। आगस्त को कुछ अच्छी सलाह देना तो दूर, वह ऐसी बातें करता है, जिससे आगस्त का मन कटुता से और भी भर जाता है। आगस्त काम पर नहीं जाता और धीरे-धीरे दूसरे भी उसी का अनुसरण करने लगते हैं। फ्रेडा को अपनी ज़िम्मेदारी का ख़्याल है और जब वह आदमियों को समझाना बुझाना चाहती है तो वे एक औरत की सीख का बुरा मानते हैं। फ्रेडा को सारा काम ख़ुद ही करना पड़ता है, ४) एक भी आदमी उसकी मदद के लिए नहीं आता और वह थक कर चूर हो जाती है। आगस्त अपनी टेक पर अड़ा रहता है और उनकी लड़की हेल्गा अपने माँ-बाप के दिनरात के झगड़ों से छुटकारा पाने के लिए शहर चली जाती है। फ्रेडा को सहकारी खेती के एक सम्मेलन में जाना पड़ता है जहाँ वह बोलते-बोलते मूर्छित हो जाती है।

यह ख़बर गाँव भर में फैल जाती है। लोग इससे बहुत प्रभावित होते हैं और सोचने के लिए मजबूर होते हैं। सबसे पहले आगस्त को अपनी भूल का पता चलता है। किसी भी परिवर्तन के रास्ते में भूलों और कड़ुवे अनुभवों का आना लाज़िमी है। मुख्य बात इस आस्था की है कि अन्त में सही रास्ता मिलकर रहेगा। फ्रेडा की सहकारी खेती भी सही रास्ते पर आ लगती है लेकिन ऐसा एकाएक भी ५)

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(ऊपर से) १. फ्रेडा और आगस्त की शादी आज से तीस साल पहले हुई, लेकिन उनकी मुसीबतें आज भी ज्यों की त्यों हैं। २. फ्रेडा के कन्धे तमाम मुसीबतों से बोझिल हैं। ३. मर्द, औरतों की बातें भला कब मानने वाले होते हैं। ४. रैन्श अपनी निजी खेती छोड़ने को तैयार नहीं। ५. फ्रेडा की लड़की-एक प्रश्न चिन्ह है। ६. अन्त में फ्रेडा को लोग समझते हैं और उसका समर्थन करते हैं।

६)

112575

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होता, काफ़ी समय लगता है, काफ़ी कड़े अन्दुरूनी संघर्षों से गुज़रना पड़ता है और फिर फ्रेडा और उसका परिवार भी तो अकेला या बेसहारा नहीं । उनकी अपनी सरकार है जिसे वही नहीं, सारी ग़रीब जनता अपना समझती है । सरकार उन्हें सलाह देती है, उनकी मदद करती है । और इस सचाई पर हेनरिख रैन्श जैसा कट्टरपंथी भी पर्दा नहीं डाल सकता । और एक दिन वह भी आता है जब हेनरिख भी अपने मानसिक घेरे से निकलता है और सहकारी खेती में शामिल हो जाता है ।

'पुराना प्यार' एक चलचित्र है जिसकी भाषा सीधी और सरल है । जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसानों के सामने आज जो समस्याएं हैं और जो संघर्ष हैं, इस चित्र में पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ उनको अभिव्यक्ति मिली है । उन समस्याओं के हल के लिए कोई सूत्र या सिद्धांत नहीं पेश किया गया है । चित्र में केवल इतना भर प्रदर्शित किया गया है कि हर किसी को अपना भावी पथ स्वयं चुनना है लेकिन भविष्य का वह पथ समाजवादी सहयोग का ही पथ होगा—दूसरा नहीं ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

व्यापारिक समझौते

क्यूबा के साथ

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के विदेश-व्यापार संघ का एक प्रतिनिधि-मण्डल, संघ के उपाध्यक्ष श्री हरबर्ट मर्कल के नेतृत्व में क्यूबा की राजधानी ला हवाना गया । यहाँ २९ फरवरी, १९६० को, क्यूबा और जर्मन गणतन्त्र के बैंकों के बीच एक व्यापारिक तथा भुगतान समझौते पर हस्ताक्षर हुये । साथ ही दोनों देशों ने, एक दूसरे की राजधानी में, व्यापारिक दफ्तर नियुक्त करने का भी निश्चय किया । इन दफ्तरों को पर्याप्त अधिकार प्राप्त होंगे । पहली मार्च, सन् १९६० से यह समझौता कार्यान्वित हो गया । मुख्य दस्तावेज़ से नत्थी हुये एक परिशिष्ट में उन विभिन्न वस्तुओं की सूची दी गई है जिनका आदान-प्रदान होगा । इसके अनुसार, जर्मन जनवादी गणतन्त्र, क्यूबा को मशीनें और तत्संबंधी सामग्री, इंजीनियरिंग के सामान, शीशे तथा बिजली के सामान और अन्य उपभोक्ता सामग्रियां देगा । इसके बदले में क्यूबा चमड़ा, कच्चा लोहा, तम्बाकू, शहद, विभिन्न मौसमी फल और अन्य खेतिहर उपज का निर्यात करेगा ।

चीन के साथ

इस वर्ष मार्च में, जर्मन जनवादी-गणतन्त्र और चीन के जनवादी-गणतन्त्र के सरकारी प्रतिनिधियों के बीच जो बातचीत हुई, उसके फलस्वरूप बर्लिन में व्यापारिक तथा भुगतान समझौते के एक मसविदे पर हस्ताक्षर हुआ । इसकी शर्तें वही हैं जो पिछली जनवरी को, पीकिंग में हुए १९६०-६२ के व्यापारिक समझौते में तय पा चुकी हैं । इसके अनुसार, दोनों देशों के बीच होने वाला आदान-प्रदान १९५९ से १० प्रतिशत अधिक हो गया ।

चीन से जर्मन जनवादी गणतन्त्र को तेल, तेलहन, चावल, चाय, सेब, मौसमी फल, डिब्बों वाले खाद्य और फलों का रस हमारे देश में आयेगा तथा रसायन और खनिज पदार्थ जैसे सोहागा, कच्चा लोहा

पश्चिम जर्मनी में युवकों को ज़बर्दस्ती सेनामें भर्ती किया जाता है, जिनमें से हज़ारों जर्मन जनवादी गणतंत्र में भाग आते हैं । उनमें से नीचे कुछ के चित्र हैं : (बायें से) हर्बर्ट उलरिख २१ वर्ष, फ्रीडेल्म-२० वर्ष, इलियस-१९ वर्ष, डब्ल्यु विकन्ट २२ वर्ष, के. रिशर २१ वर्ष, पी. शाब्रो-२१ वर्ष । इन्हें कुछ दिनों के लिए शरणार्थी-घरों में ठहराया गया है । शीघ्र ही उनके लिए मकान और नौकरी की व्यवस्था कर दी जायगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्चा बोरिक, टिन और पारा भी आयगा इसके अतिरिक्त हमारे देश में चीन के सूती उद्योग से संबंधित कच्चा और पक्का माल तथा चमड़े के जूते भेजे जायेंगे।

इसके बदले जर्मन जनवादी गणतन्त्र से चीन को बने-बनाये कारखाने, मशीनें, भारी उद्योगों के लिए कल-पुर्ज़े, इंजीनियरिंग, शीशे और बिजली के सामान, फ़िल्में, उर्वरक और क्रिमिनाशक पदार्थ भेजे जायेंगे।

औद्योगिक प्रदर्शिनियाँ

...घाना में

इस वर्ष, मार्च में, घाना की राजधानी अक्रा में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने अपनी प्रथम औद्योगिक प्रदर्शिनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शिनी ने लगभग एक लाख बीस हज़ार घाना-निवासियों को आकर्षित किया। प्रदर्शन में रखी गई अधिकांश मशीनें, घाना सरकार के अधीन व्यापारिक कम्पनियों ने खरीद लीं। लोगों ने विभिन्न प्रकार के यन्त्रों तथा औज़ारों और छोटी-छोटी मशीनों में विशेष रुचि दिखाई।

इस वर्ष कासाब्लांका में सोलहवें अन्तर्राष्ट्रीय मेले का २८ अप्रैल से १५ मई तक आयोजन रहा। इसमें जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने तीसरी बार भाग लिया। ६५०० वर्गफुट पर फैली हुई जगह में, हमारे देश की आठ विदेशी-व्यापार एजेन्सियों ने अपनी बनाई हुई वस्तुओं का प्रदर्शन किया। बिजली की विभिन्न प्रकार की मोटरों के अलावा छोटे उद्योगों के अनेक उत्पादनों के अतिरिक्त दूसरी कई तरह की चीज़ें भी प्रदर्शनी में दिखाई गयीं।

...पेरिस में

जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने पेरिस के उनचासवें अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव में भाग लिया। यह मेला १४ मई, १९६० से २९ मई तक चलता रहा। गणतन्त्र की प्रदर्शिनी ५००० वर्ग फुट के क्षेत्रफल पर फैली हुई थी। जर्मन गणतन्त्र ने यहाँ इंजीनियरिंग उद्योग के विशेष प्रदर्शन की भी व्यवस्था की।

पोज़नान में

जर्मन जनवादी गणतन्त्र, पोज़नान में १२ से २६ जून तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय मेले में सम्मिलित होगा। इस मेले में, गणतन्त्र की प्रदर्शिनी ३०,००० वर्गफुट से भी अधिक जगह घेरेगी।

इस मेले में जर्मन जनवादी गणतन्त्र की १६ विदेश-व्यापार एजेन्सियां अपने माल भेजेंगी। ये एजेंसियाँ यंत्र, बिजली के सामान, सूती मिलों की मशीनों, छापेखाने और दफ़्तर और खाद्य-उद्योगों की मशीनों का व्यापार करती हैं।

'जर्मन जनवादी गणतन्त्र का विश्वव्यापी महत्व'

'जर्मन जनवादी गणतन्त्र की आर्थिक शक्ति' नामक शीर्षक से लन्दन के प्रमुख दैनिक 'डेली हेरल्ड' के ८ मई के अंक में एक लेख प्रकाशित हुआ है,। उस लेख में कहा गया है 'कि '१५ वर्ष पूर्व जर्मनी को नाज़ियों से मुक्ति मिली और तभी जर्मन जनवादी गणतन्त्र की आधारशिला रखी गयी"। जर्मन-धरती पर पहली बार एक शांतिपूर्ण राज्य की स्थापना और उसकी प्रगति को विश्वव्यापी महत्व का बताते हुए उस लेख में इस राज्य की सराहना की गयी है।

'डेली हेरल्ड' के इस लेख का कहना है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र अपने प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन में संसार के औसत उत्पादन से साढ़े चार गुना आगे बढ़ गया है। यह एक ध्यान देने योग्य प्रगति है। साथ ही इस तुलना से यह भी सिद्ध होता है कि दुनिया में औद्योगिक दृष्टि से सबसे आगे बढ़े हुए देशों की पंक्ति में खड़ा होने के लिए वह बड़ी तेज़ी से प्रगति कर रहा है। सच तो यह है कि अनेक औद्योगिक क्षेत्रों में जर्मन जनवादी गणतन्त्र आज भी अगली पंक्ति में है, उदाहरण के लिए दुनिया में जितना कच्चा लोहा पैदा होता है उसका ४० प्रतिशत अकेले इस देश में ही मिलता है; प्रति व्यक्ति बिजली के उत्पादन में इस देश का दुनिया में पांचवां स्थान है, तथा रसायन-उद्योगों में यह प्रमुख देशों में गिना जाता है।

और इन सफलताओं का असली महत्व तब आँका जा सकता है जब महायुद्ध के बाद जर्मन जनवादी गणतन्त्र के पुनर्निर्माण के सामने खड़ी भीषण कठिनाइयों पर दृष्टिपात किया जाय। 'डेली हेरल्ड' के उक्त लेख का कहना है कि "इन महान् सफलताओं का कारण उन लाखों मज़दूरों, किसानों और समूची जनसंख्या का सहयोग है, जिन्होंने अपने इतिहास से सही सबक़ हासिल किया।" धीरे-धीरे उन्होंने महान् कार्य पूरे किये और कठिनाइयों और अड़चनों को दूर करने में अपने राज्य की सहायता की।

(पृष्ठ १९ का शेष)

२ मई से १६ मई १९६० तक अन्तर्राष्ट्रीय शांति साइकिल के दौड़ (प्राहा से वार्सा होते हुए बर्लिन तक) का आयोजन हुआ। इस दौड़ में व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूपों में जर्मन जनवादी गणतंत्र के खिलाड़ी विजयी रहे। इस चित्र में व्यक्तिगत रूप से विजयी एरिक हेगेन अपनी साइकिल पर दिख रहे हैं।

मज़दूर नाटक मंडलियाँ

किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मज़दूरों की ये नाटक मंडलियाँ पेशेवर रंगमंचों को चुनौती हैं। दोनों के सामने अपने-अपने कर्त्तव्य हैं जिन्हें पूरा करने का दोनों अपना उत्तरदायित्व समझते हैं।

मज़दूर नाटक-मंडलियों का सुसंगत विकास मज़दूर वर्ग और समस्त मेहनतकश जनता की सृजनशीलता का सुन्दर उदाहरण है। उनके लिए कला उतनी ही आवश्यक हो जायगी जितनी रोटी। इससे नगरों और गाँवों में महान् सांस्कृतिक क्रियाकलापों के द्वार खुल जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन विश्वविद्यालयों की संभावनाएँ

पश्चिमी जर्मनी

जर्मन जनवादी गणतंत्र

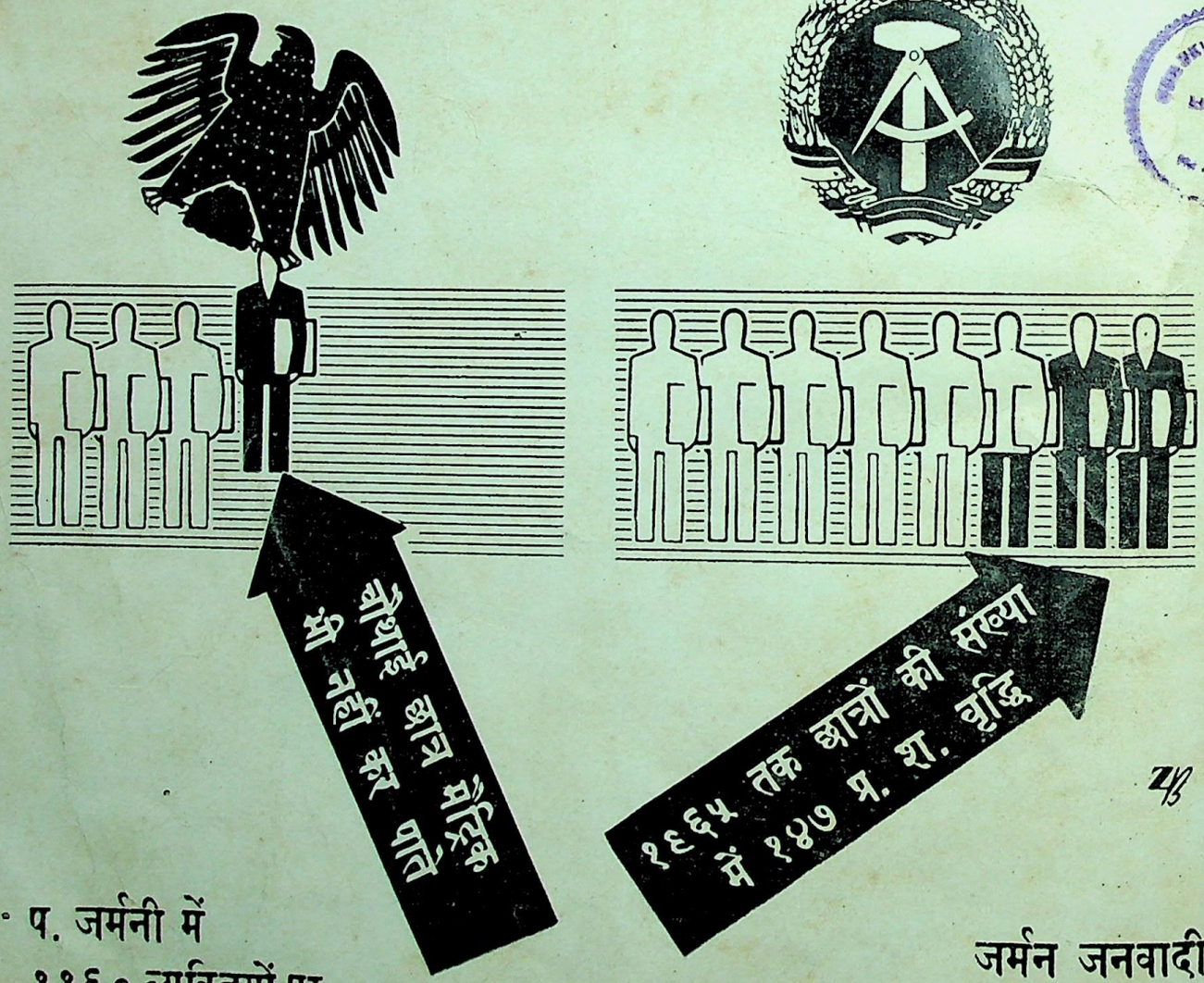

प. जर्मनी में
११६० व्यक्तियों पर
४ छात्रों का औसत

जर्मन जनवादी
गणतंत्र में ११६०
व्यक्तियों पर ५.६ छात्रों का औसत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

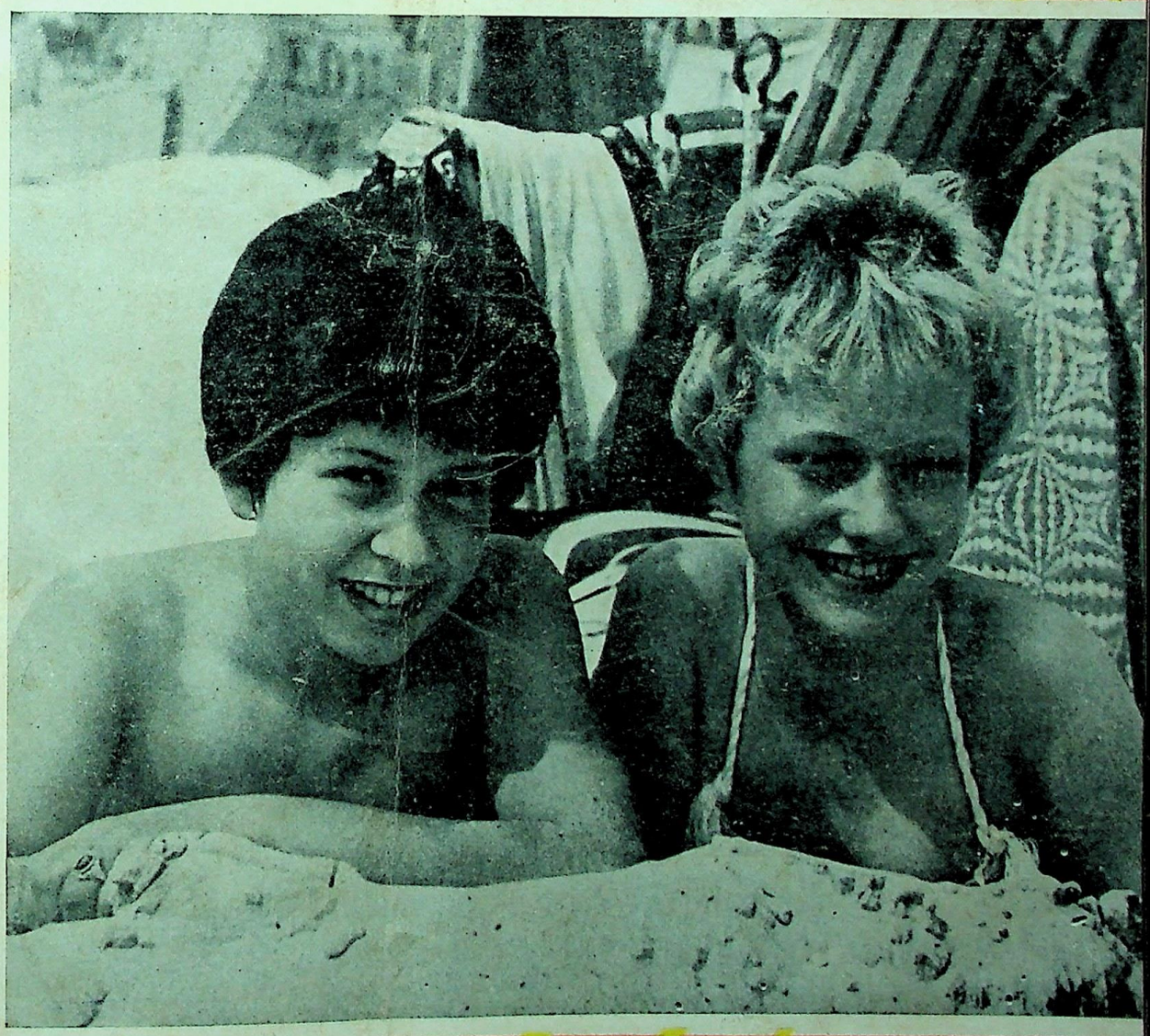

७
वर्ष ५
जुलाई
१९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४०७२३, ४३७०८ केबल्सः हावदिन, नई दिल्ली

●

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्सः हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्सः कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फ़ोन : ६१३१४ केबल्सः हावजर्मन

वर्ष ५, अंक ७ २० जुलाई, १९६०

यह अंक

	पृष्ठ
एक महान राष्ट्रीय समझौता	३
व्यक्तित्व की झाँकी	
प्रधानमंत्री ओटो ग्रोटेवाल	५
जनवाद के बढ़ते चरण	
राष्ट्रीय मोर्चे से सरकार का सहयोग	५
जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत में व्यापारिक मैत्री	८
"मोतियों की माँ" : एक फ़ैशन बटन	१०
१९६०—एक निर्णायक वर्ष	११
जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन	
स्पात नगर रीज़ा	१२
गाँव के शिक्षक का जीवन	१५
भवन-शृंखलाओं का निर्माण	१६
जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर की रोकथाम	१८
जल-थल पर अभिनीत जननाटक	२०
डेफ़ा-फ़िल्म जगत	
ब्रिटेन में हमारी फ़िल्में	२२
जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें	२३

मुख पृष्ठ

बाल्टिक-तट पर सुखमय छुट्टियाँ बितायी जा रही हैं। स्वतंत्र जर्मन ट्रेड यूनियन फ़ेडरेशन दस लाख से भी अधिक मज़दूरों को ऐसी ही छुट्टियाँ मनाने के लिए अपनी ओर से ३ करोड़ ६० लाख मार्क का धन प्रति वर्ष देता है।

अंतिम पृष्ठ

भवन-निर्माण

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, ३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा० लि०, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

एक महान राष्ट्रीय समझौता

पीटर लॉफ़

जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने हाल में पश्चिमी जर्मनी की मेहनतकश जनता के सामने जर्मनी के एकीकरण की दिशा में एक योजना पेश की थी। उसे हम 'जनता की जर्मनी योजना' कह सकते हैं। यह योजना पेश होते ही राजनीतिक बहसों का मुद्दा बन गयी। उस मसविदे का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसके द्वारा किया गया जर्मन समस्या का सरल और तर्कसंगत विश्लेषण है, जिसमें यह बताया गया है कि जर्मन जनता अपने विकास के एक ऐसे फ़ैसला-कुन मोड़ पर पहुँच चुकी है जहाँ उसके सामने केवल तीन रास्ते दिखायी पड़ते हैं:

पहला रास्ता पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवादियों का है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध जंग छेड़ कर उसे 'मुक्त' करने का मंसूबा रखते हैं, (युद्ध की यही परिपाटी हिटलर ने पोलैंड आदि के विरुद्ध अपनायी थी जिसके लिए हिटलर ने ब्लिट्ज़क्रेग शब्द का प्रयोग किया था, अर्थात् ऐसा युद्ध जो बिजली गिरने की ताह अचानक और सर्वनाशी हो।) इस रास्ते का अन्त निश्चय ही विश्व-व्यापी आणविक युद्ध में होगा, और साथ यह भी निश्चित है कि जर्मनी की जनता को यह रास्ता हर्गिज मंजूर नहीं। वैसे यह और बात

ब्रेन्डेनबुर्ग द्वार : शीत युद्ध से पीड़ित पश्चिम बर्लिन का प्रवेश-मार्ग ! यह संयुक्त जर्मनी की शांतिमय राजधानी के सपने देख रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि युद्ध की इस परिपाटी का फल खुद सैनिकवादियों की आत्महत्या के अलावा दूसरा कुछ नहीं होगा।

दूसरा रास्ता है जर्मनी के विभाजन को अगले बीस या तीस या और अधिक सालों तक बनाये रखा जाय। लेकिन शायद बोन सरकार के 'इस कुचक्र को भी जर्मन जनता मंजूर नहीं करेगी।

तीसरा रास्ता शान्ति सन्धि और महासंघ की मंज़िलों से होता हुआ जर्मन-एकता के लक्ष्य तक पहुँचता है। यह शांति सन्धि दोनों जर्मन राज्यों और उन तमाम देशों के बीच होना चाहिए जिन्होंने दूसरी लड़ाई में हिटलर के विरुद्ध मोर्चा बनाया था। कहना न होगा कि केवल यही एक रास्ता है जिसे शांतिमय समझा जा सकता है।

'जनता की जर्मनी योजना' में कहा गया है कि यही एक रास्ता है जिसपर चलने में कोई खतरा नहीं है और यह निष्कर्ष भी बड़े गंभीर विश्लेषण के बाद किया गया है।

सन् १९४७-४८ में यह संभव था कि यदि चारों अधिपति शक्तियों को समझौते का अवसर मिला होता तो जर्मनी की एकता हो सकती थी। किन्तु पश्चिमी जर्मनी का अलग से निर्माण होना था कि इस आशा पर भी पानी फिर गया।

फिर एक दूसरा अवसर १९५०-५१ में आया जब सारे जर्मनी में आम चुनाव के ज़रिए एकता क़ायम की जा सकती थी। लेकिन इस रास्ते को भी पश्चिमी जर्मनी ने अपने शस्त्रीकरण और पुनर्सैनिकवाद के द्वारा तथा नाटो में शामिल होकर रोक दिया।

अब १९६० हमारे सामने है। आज अगर जर्मनी की एकता किसी भी ढंग से संभव है तो वह यह है कि दोनों जर्मन राज्यों में शांति-सन्धि हो और दोनों राज्यों का एक महासंघ बना दिया जाय।

इस रास्ते की कौन-कौन सी मंज़िलें होंगी?

पहली मंज़िल पर दोनों राज्यों के साथ उन तमाम देशों की शांति-सन्धि होनी चाहिए जो दूसरी लड़ाई में हिटलर के विरुद्ध लड़े थे। दूसरे महायुद्ध के समाप्त हुए आज कितने साल होने को आये, लेकिन आज भी जर्मनी में उस युद्ध का एक दम घुटा देने वाला अवशेष बाक़ी है। यह सन्धि कम से कम उस वातावरण को दूर करने और ख़ासतौर से पश्चिमी बर्लिन की त्रिशंकु जैसी स्थिति समाप्त करने में सहायक होगी। दोनों जर्मन राज्यों के बीच एक शांतिपूर्ण वातावरण का सृजन होगा, जर्मन सीमाएँ निर्धारित हो सकेंगी और सुसंगत शांति नीति के लिए परिस्थिति तैयार होगी।

जर्मन जनता के लिए यह एक निर्णायक प्रश्न है। यदि पश्चिमी जर्मनी स्वतः या विवश होकर निश्चित शांति नीति अपनाता है तो जर्मनी की एकता की एक बहुत बड़ी शर्त पूरी हो जाती है।

लेकिन यदि अन्य देश दोनों जर्मन राज्यों के साथ एक ही सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं, तो वे अलग-अलग सन्धि-पत्रों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

और यदि इन दोनों में से किसी तरह की शांति सन्धि के लिए वे देश तैयार नहीं होते, तब तो एक ही परिणाम सामने आ सकता है और वह यह कि जर्मनी की समस्या और भी उलझ जायगी; खास तौर से पश्चिमी बर्लिन में पश्चिमी राष्ट्रों की सेनाओं का अस्तित्व और बर्लिन के उस भाग में उन सेनाओं के अधिकार गंभीर स्थिति पैदा करेंगे।

इस प्रकार की शांति-सन्धि को ठुकराने का मतलब जर्मनी के एकीकरण को बहुत दिनों के लिए फिर खटाई में डाल देने के बराबर होगा। इस लिए जर्मन जनता तमाम संबंधित देशों से आशा करती है कि वे जर्मन समस्या के इस विवेकपूर्ण और यथार्थवादी हल का विरोध नहीं करेंगे।

यदि एक बार यह शांति-सन्धि हो जाती है तो हम जर्मन एकता के रास्ते की दूसरी मंज़िल पर पहुँच सकते हैं---वह इस एकता के लिए दोनों जर्मन-राज्यों में समझौता-वार्ता की मंज़िल होगी। दोनों राज्यों का एक महासंघ बने और दोनों में सहयोग बढ़े---यही एकमात्र उपाय है। उस महासंघ की क्या हैसियत हो और उसमें दोनों राज्यों की क्या भूमिका हो---यह उतना महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं। सबसे महत्व की बात यह है कि एक महासंघ में रहकर दोनों राज्य परस्पर सहयोग की दिशा में आगे बढ़ें। महासंघ में रहकर दोनों राज्यों की सामाजिक व्यवस्थाएँ जीवन के हर क्षेत्र में अपने-अपने उदाहरण प्रस्तुत करेंगी और एक दिन ऐसा आयेगा जब जर्मन जनता दोनों में से किसी एक व्यवस्था को अंगीकार कर लेगी।

दोनों जर्मन राज्यों में यदि इस प्रकार का एक राष्ट्रीय समझौता हो जाता है तो जर्मन जनता के सामने पूर्णरूप से आत्मनिर्णय की समस्त संभावनाओं का उदय अवश्यम्भावी है।

प० बर्लिन की सड़कों पर अमरीकी टैंक बर्लिनवासियों की आंखों में कांटे की तरह चुभते हैं।

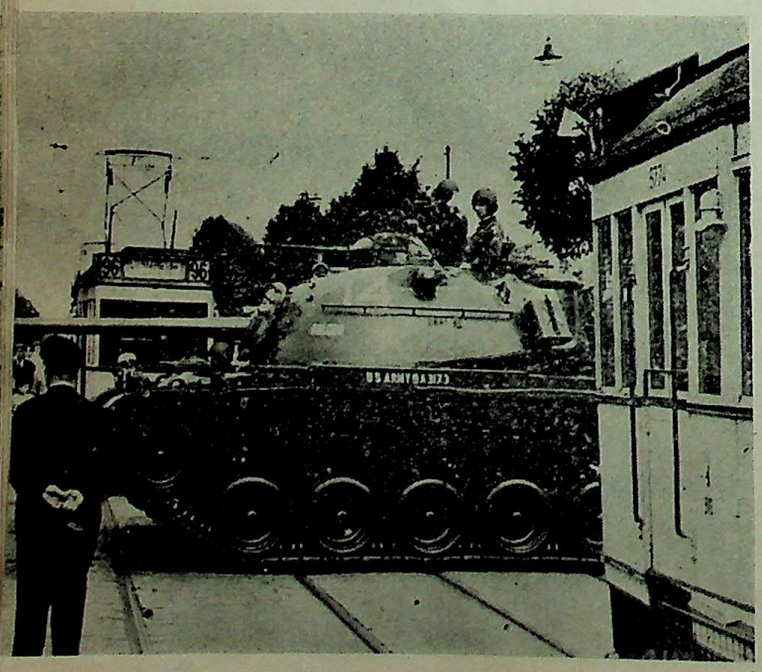

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झाँकी :

प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल

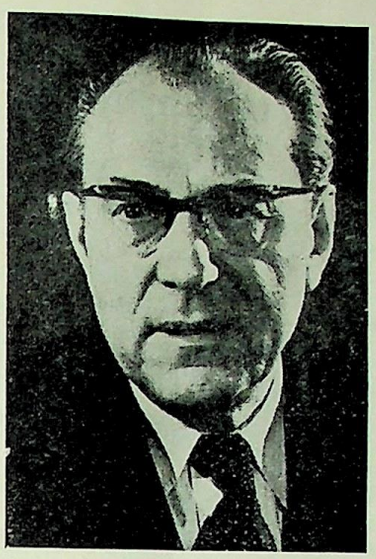

ओटो ग्रोटेवाल

ओटो ग्रोटेवाल का जन्म ब्रन्सविक में ११ मार्च सन् १८९४ को हुआ। आप १६ साल की उम्र में छपाई का काम ही सीख रहे थे तभी समाजवादी आन्दोलन से आपका सम्पर्क हुआ। सन् १९२१ में ब्रन्सविक विधान सभा ने आपको मंत्री बनाकर आन्तरिक तथा शिक्षा-विभाग का भार सौंपा। उस समय आपकी उम्र २७ साल थी और बइसर गणतंत्र के मंत्रियों में आप सबसे तरुण थे। १९२३ से १९२४ तक आप को आन्तरिक और न्याय विभाग के मंत्री पद का भार संभालना पड़ा। ब्रन्सविक की जनता की ओटो ग्रोटेवाल में इतनी श्रद्धा और आस्था थी कि आप म्युनिस्पल बोर्ड, विधान सभा और अखिल जर्मन लोकसभा के सदस्य चुने जाते रहे। आपने हैनोवर की अकादमी और बर्लिन विश्व-विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

जर्मनी में जिस समय नाज़ियों का प्रभुत्व बढ़ रहा था, ओटो ग्रोटेवाल ब्रन्सविक सूबे की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष थे। नाज़ियों ने एक स्थिति ऐसी पैदा कर दी कि उन्हें अपना शहर छोड़ देना पड़ा। अब वे बर्लिन और हैम्बर्ग में फ़ासिज्म के विरुद्ध ग़ैर-क़ानूनी संघर्ष में जुट गये। इस संघर्ष के फलस्वरूप उन्हें सन् ३८-३९ में जेल हो गयी।

१९४५ में जब हिटलरी फ़ासिज्म की हार हुई तो ओटो ग्रोटेवाल जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के फिर अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने जर्मनी के मज़दूर वर्ग की एकता क़ायम करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। २१ अप्रैल सन् १९४६ को वह शुभ घड़ी आ ही गयी, जब सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी में विलयन हुआ। कहना न होगा कि इस ऐतिहासिक एकता में ओटो ग्रोटेवाल की भूमिका कुछ कम न थी। तभी से आप मजदूरों की एकता के प्रतीक—सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी—की केन्द्रीय कमेटी और पोलिट-ब्यूरो के सदस्य हैं।

१९४९ में जर्मनी के विभाजन के बाद पीपुल्स चैम्बर द्वारा ओटो ग्रोटेवाल जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री चुने गये। प्रधान मंत्री की हैसियत से आपने जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाने, और उसके आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास की दिशा में महान भूमिका अदा की है। आपके नेतृत्व में दोनों जर्मन राज्यों को शांतिमय ढंग से मिलाने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बार-बार सुझाव पेश किये। सन् १९५८ के आम चुनाव में ओटो ग्रोटेवाल फिर प्रधान मंत्री चुने गये।

विश्वशांति, जर्मनी की शांतिपूर्ण एकता और समाजवाद का निर्माण ये आपके जीवन के सबसे पवित्र लक्ष्य हैं।

जनवाद के बढ़ते चरण :

राष्ट्रीय मोर्चे से सरकार का सहयोग

क्रिस्टा फ्रेड्रिक

जर्मन जनवादी गणतंत्र का संविधान नागरिकों के मौलिक कानूनों का प्रतिरूप है। इसमें हर नागरिक को सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भाग लेने के अधिकार की गारंटी दी गयी है। साथ ही यह भी बताया गया है कि हर नागरिक का यह कर्त्तव्य भी है। (ज. ज. ग. के संविधान की तीसरी धारा)

"मिलकर योजना बनाओ, मिलकर काम करो, मिलकर शासन चलाओ!" यह नारा जनता के हितों और इच्छाओं का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है। जनता की यही इच्छा भी तो थी कि वह अपने देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं के हल में सीधे-सीधे भाग ले और देश को खुशहाली की ओर आगे बढ़ाये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद से उसके आर्थिक और राजनीतिक मामलों को प्रगति की ओर आगे बढ़ाने में नागरिकों की भूमिका दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण सरकारी अधिकारियों का राष्ट्रीय मोर्चे के साथ घनिष्ठ सहयोग भी है। जर्मनी का जनवादी ढंग से एकीकरण हो—इस लक्ष्य की प्राप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए राष्ट्रीय मोर्चा सभी देशभक्त तत्वों को एकजुट करता है। इसका एक सुपरिणाम यह भी हुआ कि राष्ट्रीय मोर्चे के मंच पर एकत्र सभी दलों और जनसंगठनों ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया जिसके अनुसार यह तय हो गया कि लोक सभा और जिला, क्षेत्र, नगर, और गाँव की परिषदों में जो उम्मेदवार भेजे जायँ, उन्हें संयुक्तरूप से नामज़द किया जाय। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय मोर्चा जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों को उत्तरोत्तर आर्थिक प्रगति के लिए विशेषरूप से आन्दोलित और प्रेरित करता है। जनता के रहन-सहन का स्तर लगातार और तेज़ी से बढ़ता जा रहा है इसके लिए इस मोर्चे को श्रेय प्राप्त है।

सन् १९४७ तक राष्ट्रीय मोर्चे का मुख्य काम उन कानूनों और प्रस्तावों को जनता के बीच समझाना और उन्हें लागू करने के लिए जनता में जोश पैदा करना था जिन्हें लोक सभा, मज़दूरों की पार्टी, सरकार, स्थानीय जन अधिकारियों तथा खुद राष्ट्रीय मोर्चा परिषद् ने स्वीकृत किया था। इस प्रकार राष्ट्रीय मोर्चे ने जनता की समझ साफ़ करने तथा नाज़ी-युद्ध के भयंकर ध्वंस से देश को निकालने में जनता का जो सक्रिय सहयोग प्राप्त किया वह एक सराहनीय सफलता है।

अवकाश के क्षणों में ! बच्चों का यह क्लब राष्ट्रीय मोर्चे के सहयोग का सुफल है।

जब इस ध्वंस की सफ़ाई हो गयी तो नगरों और गावों की निर्माण-योजना का दौर शुरू हुआ। सन् १९५३ में राष्ट्रीय निर्माण योजना का श्री गणेश हुआ। इसके लिए आवश्यक था कि अधिक से अधिक जनता का सहयोग प्राप्त किया जाय तथा पुन-र्निर्माण के मुख्य स्थलों पर सारी संभव शक्ति लगा दी जाय। इसी के साथ इसका यह भी अर्थ था कि जनता से सुझाव लिये जायँ, उसकी इच्छाओं का ध्यान रखा जाय और उसे राजकीय भवन कार्यक्रम में शामिल किया जाय। इस योजना के अन्तर्गत सन् १९५३ से १९५८ के भीतर जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों ने ६६ करोड़ ९४ लाख मार्क के मूल्य का श्रम किया। जनता के इस महान् पुरुषार्थ का फल यह हुआ कि राजकीय भवन कार्यक्रम को देश की राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं के एक स्थायी अंग के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

इस राष्ट्रीय आर्थिक योजना के समक्ष जो कर्त्तव्य हैं उन्हें पूरा करने के लिए राष्ट्रीय मोर्चे की कमेटियों और स्थानीय परिषदों ने मिल जुलकर अपने कार्यक्रमों पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त अपने-अपने क्षेत्रों के लिए तैयार की जाने वाली योजनाओं पर भी उनमें विचार-विमर्श होता है और वे अनुकूल सुझाव पेश करती हैं। इसके बाद वे सुझाव जनता के समक्ष लाये जाते हैं जिनमें जनता भी अपने गहरे अनुभवों के आधार पर अपना योगदान करती है और बाद को उन्हें लागू भी करती है। इस प्रकार मिल-जुल कर योज-नाएँ बनाने तथा जनता के बीच ले जाकर उनपर विचार-विमर्श करने के कई लाभ हुए हैं। एक उदाहरण काफ़ी होगा। रोथेनबर्ग मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशन क्षेत्र में पशु पालन भी होता है। इस दिशा में राज्य के अधिकारियों ने कुछ सुझाव दिये थे। वे सुझाव जनता के बीच गये तो विचार-विमर्श के बाद पशु-पालन के लक्ष्यों में वृद्धि करनी पड़ी। निम्न-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखित आँकड़े इस तथ्य पर स्वयं ही रोशनी डालते हैं:

अधिकारियों के सुझाव	जनता की राय लेने के बाद
५,७०० पशुधन	६,४७० पशुधन
३,३०० गायें	३,६२५ गायें
६,६०० सूअर	७,६३८ सूअर
१,५०० भेड़ें	२,०७० भेड़ें

इसी प्रकार मांस के उत्पादन लक्ष्यों में भी वृद्धि हुई।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हर कहीं इस तरह की मिसालें मिलेंगी। यही वजह है कि जनता की दिनोंदिन बढ़ती माँगों की पूर्ति में कोई अड़चन नहीं आने पाती।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बेरोज़गारी का नाम तक नहीं है। समाजवादी समाज में ही यह संभव है कि हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार चाहे कोई काम सीखे या अध्ययन करे। हमारे देश में योग्य और कुशल मज़दूरों, हर तरह के इंजीनियरों और वैज्ञानिकों का बड़ा महत्व है, और यह ज़रूरी भी है क्योंकि रोज़ नये-नये उद्योग खुलते जा रहे हैं और उनमें सब तरह से शिक्षित व्यक्तियों की माँग बढ़ती जाती है। आज जर्मन जनवादी गणतंत्र एक महान् निर्माण की रंगस्थली बना हुआ है। नये-नये उद्योगों के साथ नये मकान, नये स्कूल, नये अस्पताल, नयी शोध संस्थाएँ बच्चों के नये उद्यान और नये दफ्तर उगते जा रहे हैं, और वे सब के सब आधुनिकतम साधनों से सुसज्जित हैं। जन जीवन निरन्तर समृद्ध होता जा रहा है। लोगों की आमदनी बढ़ती जा रही है और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ सस्ती होती जा रही हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मेहनतकश जनता देश की राष्ट्रीय प्रगति में अपने आप इतने उत्साह के साथ क्यों हाथ बटा रही है? इस बात का उत्तर हमारी सफलताएँ हैं।

जनता का यह सहयोग जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी मिलता है। उदाहरण के लिए ज्विकाउ ज़िले में एक सरकारी ईंटों का भट्ठा है। वह अपने लक्ष्य से पीछे रह गया था। उसकी पूर्ति के लिए दस लाख ईंटें और बनानी थीं। ज़िले की राष्ट्रीय मोर्चा समिति ने उस क्षेत्र की अन्य कमेटियों का सहयोग प्राप्त किया और भट्ठे के अधिकारियों के साथ एक समझौता हुआ जिसमें सरकारी कर्मचारियों के भी प्रतिनिधि रखे गये। ५३१८ घंटे का श्रमदान हुआ। जिसके फलस्वरूप ८२०० मार्क के मूल्य का काम हुआ।

राष्ट्रीय मोर्चे की देख-रेख में एक कृषि सहकारी समिति के किसानों ने इस धुलाई-गृह का निर्माण किया है।

इस तरह के सहयोग का एक और सुपरिणाम है। उद्योगों के आस-पास बसने वाली जनता का उन कारखानों से घनिष्ठ संबंध हो जाता है। यह संबंध एकतरफा भी नहीं। कारखाने के लोग भी उस क्षेत्र के निवासियों की हर संभव तरीक़े से मदद करते हैं। मिसाल के लिए बर्लिन-ट्रेप्टाओ के मज़दूरों ने आस-पास के घरों की मरम्मत करने का फ़ैसला किया। इससे कारखाने के काम के घंटों को कुछ क्षति पहुँचना

(शेष पृष्ठ ९ पर)

प्रिय पाठक बन्धु,

जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक नये जीवन का सृजन हो रहा है जिसके प्रति भारतीय मित्रों की दिलचस्पी स्वाभाविक है। क्या ही अच्छा हो, यदि आप 'सूचना पत्रिका' को अपने अन्य सुहृदों के लिए भी सुलभ बनाते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत में व्यापारिक मैत्री

जर्मन जनवादी गणतंत्र में जनता के रहन-सहन का स्तर दिन-प्रति-दिन ऊँचा होता जा रहा है और भविष्य में भी इसके बढ़ते रहने की पूरी आशा है। निश्चय ही इस प्रगति का कारण हमारी आर्थिक योजनाएँ ही हैं।

हमारे जीवन-स्तर के लगातार ऊँचा होते रहने का एक प्रमाण व्यापक पैमाने पर खाद्यान्नों का आयात भी है। इस आयात का एक बड़ा भाग भारत से आता है क्योंकि उसके बदले में जर्मन जनवादी गणतंत्र से भारत में जाने वाले माल का परिमाण भी उसी अनुपात में बढ़ सकता है।

इस प्रकार परस्पर व्यापार-समझौते का लाभ स्पष्ट है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का जितना माल भारत में बिका, उस सारे पैसे से भारत का माल खरीद लिया गया। इसका सुफल यह रहा कि भारत ने खाद्यान्न संबंधी अपने परम्परागत निर्यात में पर्याप्त वृद्धि की। भारत में पैदा हुई चीज़ें मसलन काफ़ी, चाय, काजू, गोलमिर्च आदि की जर्मन जनवादी गणतंत्र में बहुत बिक्री है।

लइपज़िग मेले (१९५९) में भारतीय प्रदर्शिनी के संचालक श्री कुमार के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप-विदेश व्यापार मंत्री जी० वाइस।

भारतीय व्यापारियों ने सबसे पहले लइपज़िग मेले में ज. ज. गणतंत्र के आयात-संगठनों के सामने काजू के व्यापार का सुझाव रखा था। तब से इसका व्यापार बहुत बढ़ गया और उसे इतना पसन्द किया गया कि अब जर्मन जनवादी गणतंत्र में मिठाई और रोटी का जितना भी कारोबार है उसके लिए भारत के अलावा और कहीं का काजू नहीं मँगाया जा रहा है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सन् १९५८ में भारत से १९,५५५ बक्से काजू के खरीदे थे। हर बक्स ५० पौंड वज़न का था, और १९५९ में वह संख्या ७३,००० बक्सों तक बढ़ गयी। इस प्रकार हमारा देश भारतीय काजू के खरीदारों जैसे अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन में सबसे आगे रहा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत की जिस दूसरी चीज़ की सबसे ज्यादा खपत होती है और जिसका व्यापार तेज़ी से बढ़ रहा है, वह है कच्ची काफ़ी। १९५९ में भारतीय काफ़ी के खरीदारों में ज. ज. गणतंत्र सबसे आगे रहा। इससे भारतीय काफी उद्योग को बड़ी सहायता मिली। दक्षिण अमेरिका में काफ़ी का भारी स्टाक जमा हो गया था। अतः वहाँ से दामों में गिरावट आयी। लेकिन उसका भारत पर कोई असर नहीं पड़ सका। सन् १९५८ में ज. ज. गणतंत्र नें भारत से १५०० टन काफ़ी का आयात किया, सन् १९५९ में वह बढ़कर ३७०० टन हो गया। ज. ज. गणतंत्र में लोगों को भारतीय काफ़ी का स्वाद सबसे अधिक पसन्द है।

ज. ज. गणतंत्र में काफ़ी की तुलना में चाय की खपत कम होती है। इसलिए उसकी खरीद भी कम ही है। फिर भी सन् १९५८ में जितनी भारतीय चाय खरीदी गयी थी,

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९५९ में उसकी मात्रा में ५० प्र. श. की वृद्धि हुई।

हमारे देश में गोलमिर्च का कई तरीक़ों से उपयोग किया जाता है। फलतः भारतीय गोलमिर्च की ज. ज. गणतंत्र में हर कहीं माँग है—मांस सुरक्षित करने के उद्योग में, होटलों और रेस्तराँ में तथा घरों में। पहले ज. ज. गणतंत्र अन्य देशों से भी गोलमिर्च मंगाता था। लेकिन अब हमारे देश में गोलमिर्च की सारी माँग केवल भारत से ही पूरी की जाती है। दूसरे मसाले भी अब भारत से ही बराबर मँगायें जाते हैं।

हमारी योजनाओं में पशुधन की वृद्धि को भी बहुत महत्व दिया जाता है ताकि हमारी जनता को मक्खन, गोश्त और अंडे अधिक से अधिक मात्रा में मिला करें। लेकिन पशुधन की वृद्धि के साथ चारे की माँग भी बढ़ती है जिसे पूरा करने के लिए हम भारत से खली का अधिकाधिक आयात करने लगे हैं। सन १९५८ तक भारत से खली का हमारे देश में कुछ भी आयात नहीं था। लेकिन १९५९ में हमने १०,००० टन खली मँगायी अब तक ३०,००० टन खली का आर्डर बुक किया जा चुका है, जो सन् १९६० तक हमारे देश में पहुँच जायगा।

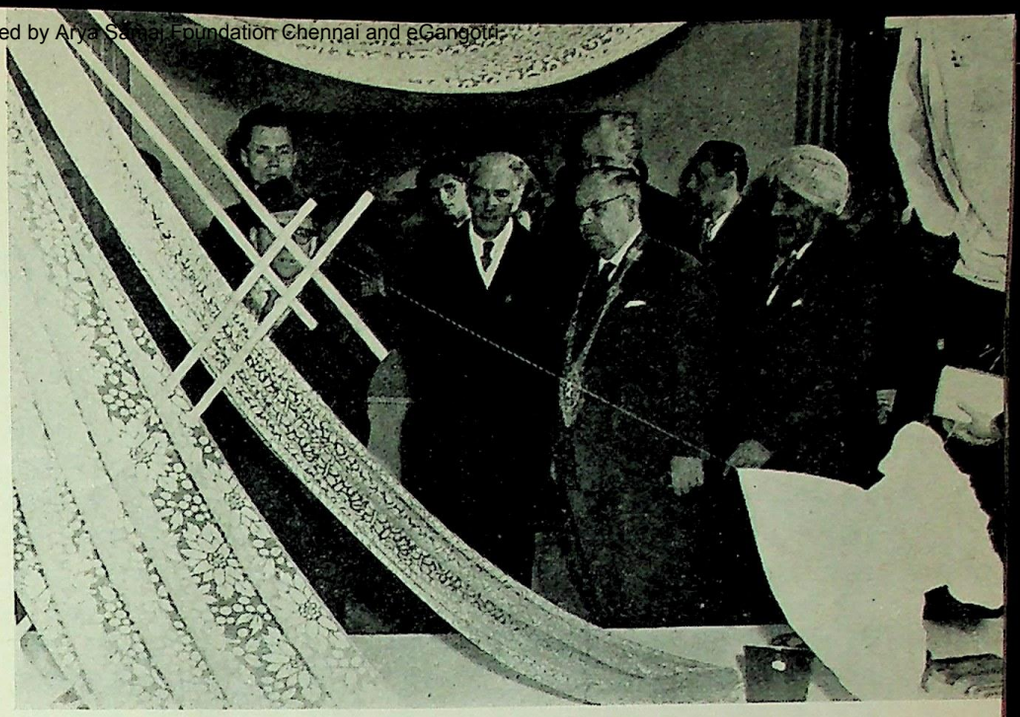

लइपज़िग मेले (१९५९) में जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री डा० लोथर बोल्ज़ भारतीय मंडप का निरीक्षण कर रहे हैं!

इस प्रकार हम देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत से अपने व्यापार की मात्रा हर साल बढ़ाता आ रहा है। इस प्रगति को क़ायम रखने के लिए ज़रूरी है कि भारत से जाने वाले माल की सूची में नयी-नयी चीज़ें जुड़ती रहें। इनमें मिसाल के लिए फलों का रस, शहद आदि शामिल किये जा सकते हैं। कहने की ज़रूरत नहीं कि इस व्यापार संबंध के लिए ख़रीदने और बेचने वालों में सद्भावनापूर्ण सहयोग की आवश्यकता है।

लइपज़िग मेले (१९५९) में भारत ने अपने खेलकूद के सामान की भी प्रदर्शिनी की। जर्मन जनवादी गणतंत्र के खिलाड़ियों को यह बल्ला शायद बहुत पसंद आ रहा है!

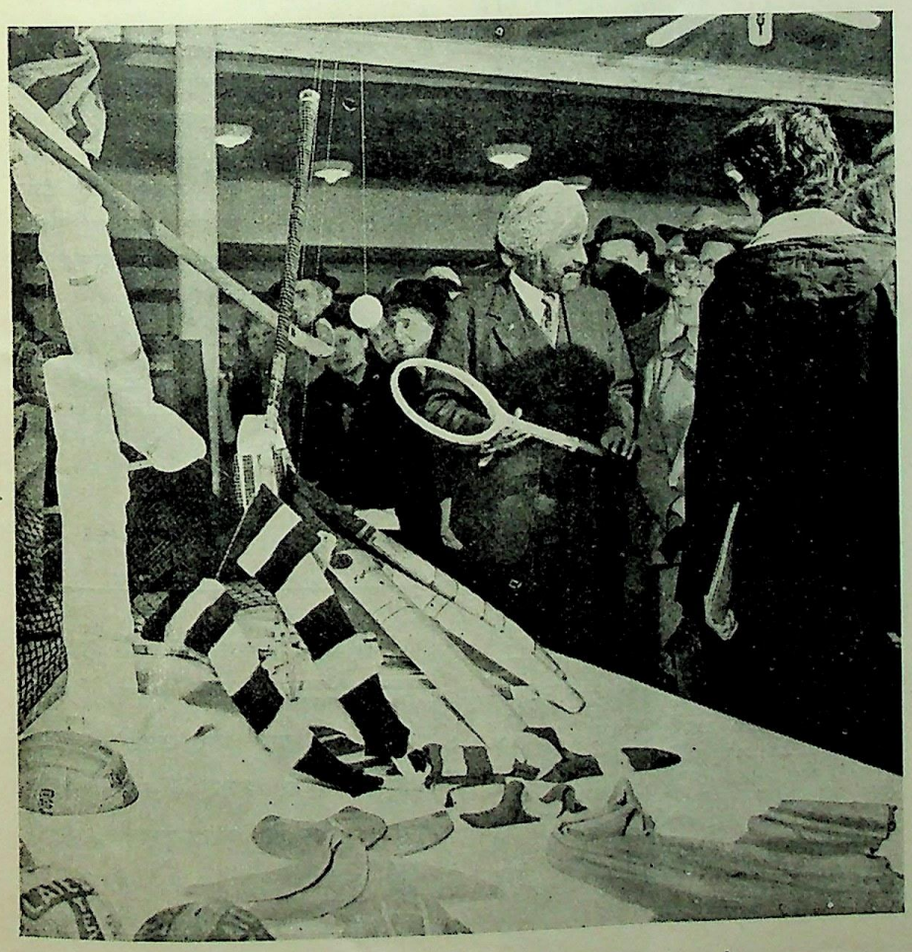

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्वाभाविक था। किन्तु मज़दूरों ने अपनी ड्यूटी के अलावा भी काम करके उस क्षति को पूरा किया। यह समाजवादी समाज के परस्पर सहयोग का चरम उदाहरण है, और हमारे देश में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। साथ ही इस उदाहरण से जनता और राज्य के आत्मीय संबंधों का भी पता चलता है और यह सिद्ध होता है कि शांति, सुख और समृद्धि के लिए जनता में कितनी महान् चेतना व्याप्त है और वह साथ मिलकर काम करने, योजना बनाने और शासन करने के प्रति कितनी जागरुक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मोतियों की माँ' : एक फ़ैशन - बटन

'मोतियों की माँ'--यही वह सीप है जो अपनी रंगबिरंगी छाँव के नाते सदियों से हीरे-जवाहरात की सहेली बनती आ रही है। आगे चलकर उसका उपयोग बटन बनाने में किया जाने लगा। आज वह फ़ैशन के तमाम परिवर्तनों की भी सहेली बनी हुई है। रेशमी कपड़ों के लिए तो इस तरह के बटनों की माँग सबसे ज्यादा होती है। फिर उसके कारखाने की तिजारत का क्या कहना!

निर्माण की प्रक्रिया

इन बटनों के बनाने की प्रक्रिया बड़ी सरल है। मोतियों की माँ--सीप को गोल-गोल खानों में डाल कर कसा जाता है। इसे 'क्विंक' माडल कहते हैं। इस कसाव के दौरान वह सीप कई दशाओं से होती हुई अन्त में बटनों का रूप धारण कर लेती है। आठ घंटे के दिन में एक मशीन से ७२०० बटन तैयार होते हैं।

इसके बाद बटनों की मोटाई की दृष्टि से उन्हें कई श्रेणियों में विभाजित किया जाता है ताकि उनका खुरदुरापन मिटाने के लिए अगला क़दम उठाया जा सके।

इनमें 'बैल की आंख' नामक बटन भी तैयार होती है जिसपर बैल के कान की बिलकुल स्वाभाविक तस्वीर उतर आती है। इस प्रकार के बटन दो प्रक्रियाओं से गुज़रने के बाद तैयार होते हैं। पहले बटन के अगले हिस्से को गावदुम बनाया जाता है, फिर पिछले हिस्से पर बैल के कान और आँख की स्वाभाविक आकृति उतारी जाती है। इन दोनों प्रक्रियाओं के लिए हम 'बोम्बिना' मशीन को काम में लाते हैं।

फिर बटनों में छेद करने का नम्बर आता है। इसके लिए या तो 'यूनियन पर्फ़ेक्टा' का या 'पर्फ़ेक्ट' नामक बोरिंग मशीन का इस्तेमाल किया जाता है। 'पर्फ़ेक्ट' हमारी सबसे नयी मशीन का नाम है। यह काम इतना सरल है कि नये मज़दूर भी इसे संभाल सकते हैं और अपनी योग्यतानुसार प्रतिदिन ४ से लेकर ८ हज़ार तक बटनों में छेद कर सकते हैं। 'पर्फ़ेक्ट' की उत्पादन-क्षमता लगभग १६ हज़ार बटनों में छेद बनाने तक की है। बैल की आँख वाले बटनों पर कान बनाने के लिए 'ट्रोकाज' बोरिंग मशीन को काम में लाया जाता है।

इसके बाद बटनों में चमक और आब लाने का क्रम शुरू होता है। यह क्रम बहुत ही सरल है। इसके लिए काम में लायी जाने वाली मशीन का नाम यूनियन है। इसमें एक बड़ी सी ढोल के आकार का एक पात्र होता है जिसके १।३ भाग में पानी और १।३ भाग में बटन भर दिया जाता है। ढोल का १।३ भाग खाली रहता है। पानी के साथ ही ज़रूरत भर को झाँवा भी मिला रहता है। इसके बाद ढोल धीरे-धीरे घूमता है। एक निश्चित समय के बाद बटनों का खुरदुरापन मिट जाता है, किनारे साफ़ हो जाते हैं और चमक आ जाती है।

बटनों पर पालिश

लेकिन इस प्रक्रिया के बाद बटनों में जो चमक आती है, उससे शायद गाहकों को संतोष न हो, तो उन पर पालिश का क्रम चालू होता है। वह भी बहुत ही सरल है। बटनों को पानी से भरे लोहे के टब में डाल देते हैं और पानी को तब तक गरम करते रहते हैं जब तक उसमें एक उबाल न आ जाये। फिर टब में एक प्रकार का एसिड डालते हैं तथा टब को हिलाते रहते हैं। फिर उन्हें निकाल कर सुखा लिया जाता है। अब बटनों में इच्छित चमक और निखार आ जाता है।

मोतियों की माँ--सीप यदि सौ की संख्या में जमा किया जाय तो उनमें से हर एक का रंग और निखार अलग-अलग होगा। यहाँ तक कि एक ही सीप के बने कई बटन अलग-अलग रंगों की झलक लिये होते हैं। इसे किसी प्रकार बटन बनाने वालों की कमी नहीं समझ लेना चाहिए--क्योंकि यही रंग-बिरंगापन ही तो 'मोतियों की माँ' की अद्भुत विशेषता है।

नक़ल संभव नहीं

अन्ततः इन बटनों को कई श्रेणियों में बाँट दिया जाता है। पहली, दूसरी और तीसरी श्रेणी को चाँदी के खानों में रखा जाता है तथा चौथी श्रेणी को नीली दफ़्तियों में।

बटनों को श्रेणियों में बाँटते समय उनकी चमक और निखार के साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि वह सीप कहाँ की है। सर्वोत्तम बटन मकासार सीप से बनते हैं। फिर लिंगाह, बम्बई, ला पाज़, पनामा और वेजुएला की सीपों का नम्बर आता है।

कहना न होगा कि 'मोतियों की माँ' वाले बटन अपने आश्चर्यजनक सौंदर्य के कारण सदा ही ग्राहकों का मन मोहते रहेंगे। इसकी कोई नक़ल सम्भव नहीं।

विस्तृत विवरण के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारत स्थित व्यापार-दूतावास और उसकी शाखा मिस्त्री भवन, १२२ दिनशा वाचा रोड, बम्बई से कृपया सम्पर्क स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९६० — एक निर्णायक वर्ष

क्लाउस उंगर

सन् १९६० के पदार्पण के साथ ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में महान् उथल-पुथल मच गयी। १९५९ के अन्त तक सहकारी समितियों द्वारा केवल ५० प्र. श. भूमि पर खेती होती थी। सन् १९६० के अप्रैल महीने से एक नया अध्याय शुरू हुआ यानी अब समूची भूमि पर समाजवादी ढंग से खेती होने लगी और इस प्रकार इतने बड़े पैमाने की खेती में दस हज़ार आधुनिक कृषि-यंत्रों का उपयोग किया जा सकता है, उपज बढ़ाने तथा पशुधन की वृद्धि में नये तरीक़े लागू किये जा सकते हैं।

उत्पादन-क्षमता की यह वृद्धि जनता की आवश्यकता को पूरी करने में कितनी बड़ी सहायक सिद्ध होगी --यह आसानी से अनुभव किया जा सकता है। सहकारी खेती में किसानों की आमदनी भी साथ-साथ बढ़ जायगी, काम के घंटे, और छुट्टियाँ नियमित हो जायँगी तथा जिस तरह के सांस्कृतिक जीवन का स्वप्न हमारा किसान सदियों से देखा करता था, आज मूर्त रूप में देखने का उसे सुअवसर मिलेगा।

गांवों में जो समाजवादी परिवर्तन आया है उसका फल यह होगा कि सातवर्षीय योजना (१९५९-१९६५) ने कृषि के क्षेत्र में जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं, वे दो वर्ष पहले ही पूरे हो जायँगे। इसका मतलब यह भी होगा की जर्मन जनवादी गणतंत्र में पशुओं से बनने वाली जितनी भी वस्तुओं की ज़रूरत है उसकी पूर्ति १९६३ तक देश के ही उत्पादन से होने लगेगी। फलतः अभी उन चीज़ों को विदेशों से मँगाने में जो पैसा खर्च होता है, वह बच जायगा और उसका उपयोग दूसरे आयात पर किया जा सकेगा।

गाँवों में यह जो समाजवादी वसन्त आ रहा है उससे उद्योगों के सामने नये और महान् उत्तरदायित्व आना स्वाभाविक है। पिछले तीन सालों में खेती की मशीनों के उत्पादन में ढाई गुनी वृद्धि हुई है लेकिन यह काफ़ी नहीं है, क्योंकि सन् ६० में जितनी खेतिहर मशीनों की माँग का अनुमान किया गया था, सन् १९६१ में वह मांग ५० प्रतिशत अधिक हो जायगी। अतः अधिक मशीनें बनाने के लिए इसी वर्ष अधिक पूंजी लगानी पड़ेगी।

सन् १९६० केवल खेती की उपज बढ़ाने की दिशा में ही नहीं, बल्कि अन्य आर्थिक प्रश्नों के हल के लिए भी निर्णायक है, अर्थात् यह वर्ष समूचे औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने और क़ीमतें कम करने की ओर भी एक महत्वपूर्ण क़दम सिद्ध होगा। इस लक्ष्य के लिए बिजली और रसायन का अधिक उत्पादन पहली शर्त है। सन् १९५९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र ३७२० करोड़ कीलोवाट बिजली पैदा करता था जो सन् ६० में बढ़ कर ४ करोड़ और सन् ६५ में ६३०० करोड़ कीलोवाट से भी अधिक हो जायगा।

बिटल फ़ील्ड और हाले नामक स्थानों पर करोड़ों मार्क की पूंजी से बड़े-बड़े रसायन कारखाने बन कर खड़े हैं। इसी वर्ष के भीतर इन नये कारखानों में उत्पादन शुरू हो जायगा। अन्य स्थानों पर खनिज और तेल के मिले-जुले कारखाने बन चुके हैं। इसी प्रकार दूसरे उद्योगों से संबंधित कारखानों की भी इमारतें दिखायी पड़ती हैं। खनिज तेल कारखाने से कुछ ही मील दूर कागज़ का एक भारी कारखाना बन रहा है जहाँ सन् ६१ तक मशीनें लग कर तैयार हो जायेंगी।

उद्योगों की प्रगति की चर्चा करते समय उस उद्योग का जिक्र बहुत ज़रूरी हो जाता है जिसमें बिजली से चलने वाले यंत्रों जैसे टेलीविज़न सेट, टेलीफ़ोन, इलेक्ट्रिक मोटर, मोटर जेनरेटर आदि का उत्पादन होता है। इस उद्योग का उत्पादन सन् ६५ में सन् ५८ की अपेक्षा २६६ प्रतिशत अधिक हो जायगा। देश के तमाम औद्योगिक क्षेत्रों में यह प्रगति सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

चौके-चूल्हे में आधुनिक प्रसाधन घरवालियों के लिए नये जीवन का द्वार खोल देते हैं।

CC-0. In Pu... ur...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

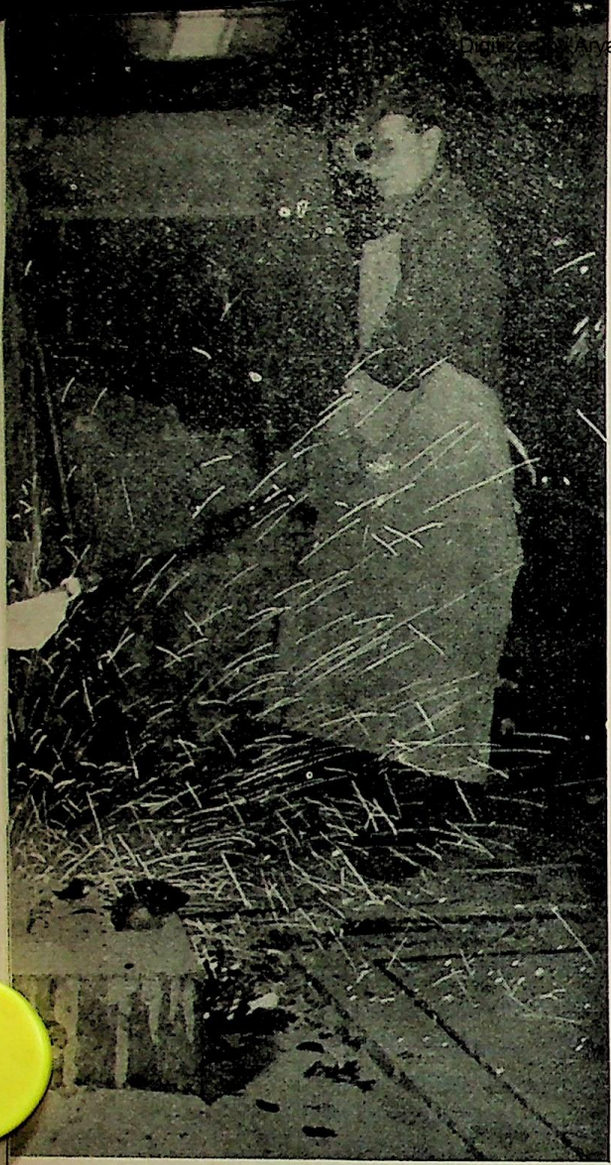

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

स्पात नगर रीज़ा

डी० एच० केगेल

वैसे तो रीज़ा को एक क़स्बे की हैसियत आज से लगभग तीन सौ साल पहले, यानी सन् १६२३ में ही मिल चुकी थी, लेकिन वह नाम उस दिन सार्थक हुआ जब सन् १८३९ में एल्बे नदी के नये पुल से होती हुई पहली बार रीज़ा में रेल पहुँची और वहाँ एक औद्योगिक केन्द्र का जन्म हुआ। उन दिनों वहाँ अधिकांश किसानों की ही आबादी थी।

रीज़ा के स्पात मज़दूरों को अपनी भूमिका पर गर्व है।

रीज़ा स्पात कारख़ाना

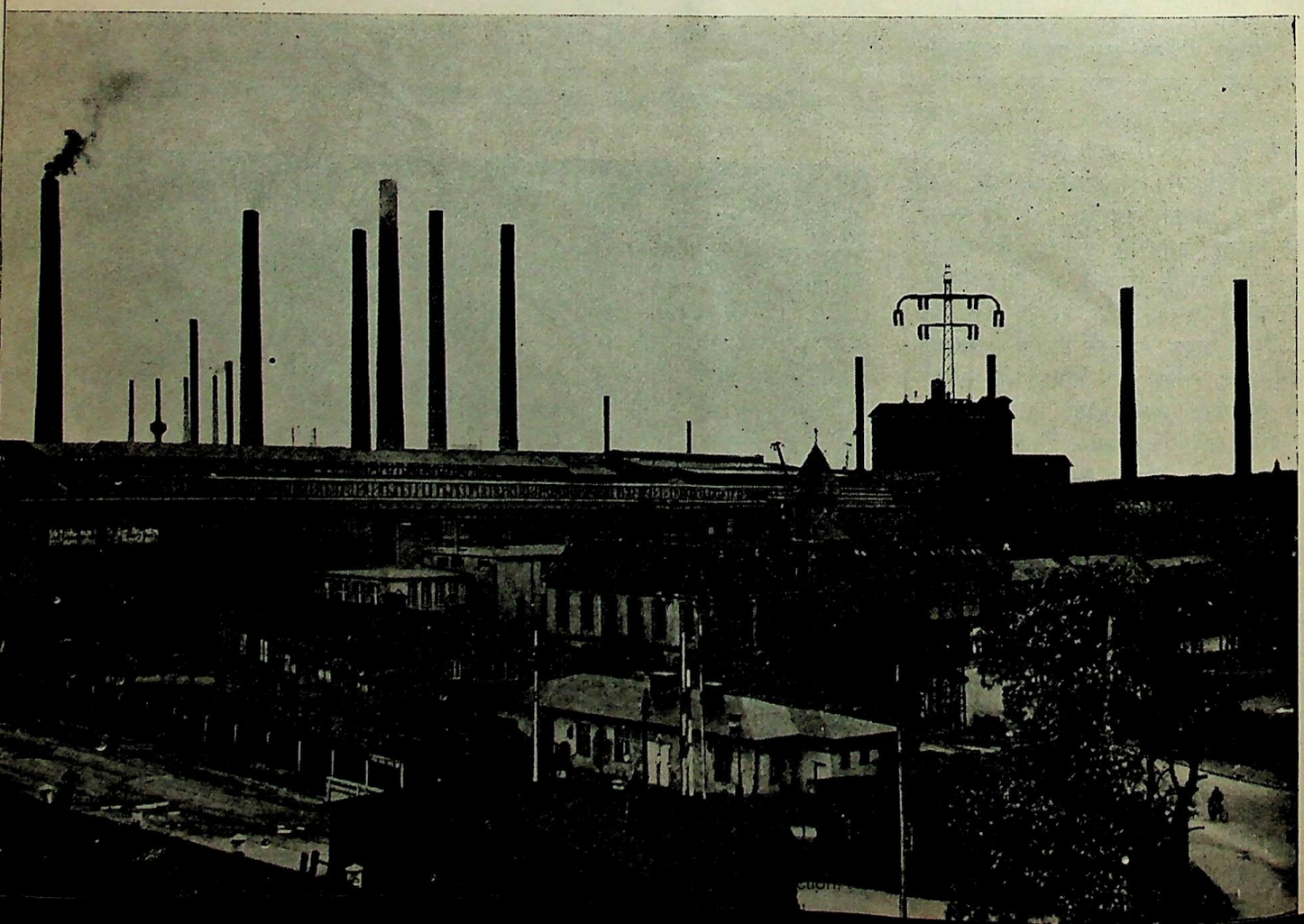

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

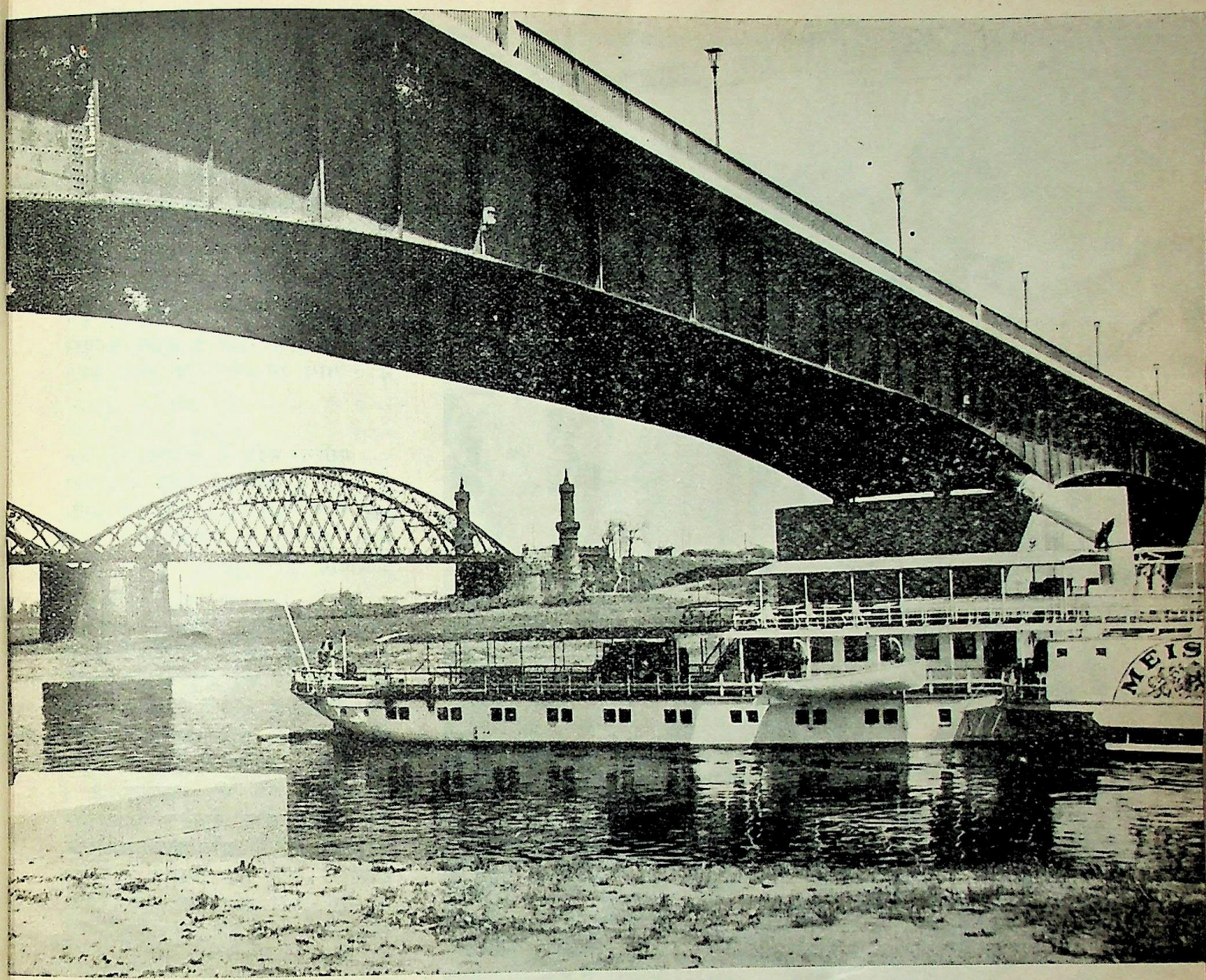

रीज़ा के नये और पुराने पुलों की पृष्ठभूमि

रीज़ा के अंचल में बहने वाली एल्बे नदी और रेलवे, दोनों ने मिलकर वहाँ उद्योगों के पनपने में बड़ी सहायता की। सन् १८४३ और १८४८ के बीच वहाँ लोहा गलाने का जो कारखाना बना, वही आज सचमुच जर्मन जनवादी गणतंत्र के सबसे बड़े धातु कारखाने का मर्मस्थल सिद्ध हुआ।

लेकिन रीज़ा में सबसे पहले एल्बे नदी के द्वारा जलमार्ग विकसित हुआ, फिर क्रमशः आरामिल, तेल मिल, और जहाज़ बनाने का एक छोटा सा कारखाना खुला। फिर और भी उद्योग उगने लगे जिनमें दियासलाई और साबुन के कारखानों ने रीज़ा को कुछ ही दिनों में एक औद्योगिक केन्द्र का महत्व दे डाला। तब तक अनेक नयी बस्तियाँ बस चुकी थीं, सड़कों का जाल बिछ चुका था और रेलवे और देहात का भेद मिट चुका था।

लेकिन फिर भी रीज़ा को एक ऐसे तकनीकी शक्ति की ज़रूरत हमेशा बनी रही जो उसे दुनिया के बड़े औद्योगिक नगरों की पाँत में लाकर खड़ा कर देती। वह शक्ति उसे रेल आने के लगभग सौ वर्ष बाद मिली। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने रीज़ा को वह शक्ति दी और आज रीज़ा एक नामी स्पात नगर बन चुका है।

रीज़ा के भव्य स्पात कारखाने, उसकी दर्जनों गगनचुम्बी चिमनियों, धधकती हुई भट्टियों और उनमें काम करने वाले ९ हज़ार स्पात-मज़दूरों की छाप किसी भी दर्शक के मन पर अमिट रह सकती है। समाजवाद के निर्माण में ज. ज. गणतंत्र आज जिस तेज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येना की एक भवन-शृंखला का नमूना

से अपना आर्थिक विकास कर रहा है --रीज़ा के स्पात की उसमें बहुत बड़ी भूमिका है।

सन् १९४९ में यहाँ २५ वर्कशाप खुले, एक बिल्कुल नया रोलिंग मिल का निर्माण हुआ, दो बिजली की और नौ दूसरी तरह की भट्टियाँ खोली गयीं। फलतः आज प्रतिदिन १९०० टन स्पात इन भट्टियों से निकलता है। सन् १९५९ में रीज़ा के स्पात मज़दूरों ने ७ लाख टन स्पात पैदा किया था।

मार्टिन भट्टी के मज़दूर सन् ५० में १७९.२ कीलोग्राम स्पात प्रति घंटा पैदा करते थे। सन् १९५८ तक आते-आते उनकी उत्पादन-क्षमता २६५ कीलोग्राम हो गयी।

ये स्पात मज़दूर रीज़ा को अपना नगर कहने में गर्व का अनुभव करते हैं। औद्योगिक क्षेत्र के किनारे-किनारे हरियालियों के बीच उनके घर बने हैं। उनका अपना एक क्लब है। उसमें मंच की भी व्यवस्था है। यहाँ ड्रेसडन और मोयसेन के मशहूर कलाकार आते हैं और अपना अभिनय करते हैं। अब एक विशाल स्टेडियम भी बन चुका है। यहाँ एक ट्रेनिंग स्कूल भी है जहाँ एक हज़ार अपरेन्टिसों को काम सिखाया जाता है।

इस 'स्पात-केन्द्र' को देखने से ऐसा लगता है कि यहाँ अब किसी और उद्योग के लिए कोई गुंजायश नहीं। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र के ड्राइवरों को रीज़ा के बने टायर बहुत पसन्द हैं। सिग्रेट पीने वालों को रीज़ा की दियासलाइयाँ बहुत प्यारी लगती हैं।

पिछले युद्ध ने एल्बे के विशालकाय पुल को नष्ट कर दिया था। उसका फिर से उद्धार किया गया। आज एल्बे का पुल और स्पात कारखाना --दोनों एक ऐसे औद्योगिक नगर के प्रतीक बन चुके हैं जिसमें समृद्धि के फूल दिन दूने रात चौगुने बढ़ते जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव के शिक्षक का जीवन

वेरनर क्लीन

जर्मन जनवादी गणतंत्र के शिक्षा-मंत्रालय ने १२ जून १९५८ को चौबीस शिक्षकों को 'विशिष्ट जन शिक्षक' की उपाधि से पुरस्कृत किया था।

उनमें से एक हैं श्री जोसेफ क्रोमर। आपका एक हाथ लड़ाई में जाता रहा। सन् १९४५ में आप लड़ाई से लौटे और तभी से बच्चों को पढ़ाने का काम कर रहे हैं। शिक्षक क्रोमर किसी बड़े शहर में नहीं रहते, न किसी बड़े स्कूल में ही पढ़ाते हैं, बल्कि उन्होंने यह काम ऐसी जगह शुरू किया जहाँ शिक्षकों को कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। क्रोमर ने एक गाँव में शिक्षण प्रारम्भ किया।

वे आज भी उसी गाँव में रहते हैं और वहाँ वे अपने उत्तरदायित्व को इस ढंग से पूरा करते हैं कि 'विशिष्ट शिक्षक' की उपाधि उनके सर्वथा योग्य कही जायगी।

उस गाँव का नाम वेसेन्धल है जो स्ट्रासबर्ग शहर के पास स्थित है। यह गाँव सुन्दर बनों और झीलों से घिरा हुआ है और इसीलिए बर्लिन-निवासियों में इसके प्रति बड़ा ही आकर्षण है। बर्लिन से भी इस गाँव की दूरी केवल ४० कीलोमीटर है।

शिक्षक क्रोमर इस गाँव की एक हस्ती हैं जो अनेक जिम्मेदारियों के बीच गाँव के युवकों के साँस्कृतिक विकास और शिक्षा पर विशेष ध्यान रखते हैं।

श्री क्रोमर के साथ कुछ ही घंटे रहने के बाद मुझमें उनके काम के तरीकों के प्रति गहरी दिलचस्पी पैदा हो गयी।

श्री क्रोमर का निवास ही यह बता देता है कि इस गाँव में भी उनका रहन-सहन बहुत ही मनमोहक है। तीन सुसज्जित कमरे, बढ़िया रेडियो और एक छोटी सी मोटर। उन्होंने मुझसे कहा, "यह सच है कि गाँव के अध्यापक की आमदनी हज़ारों तक नहीं जाती, लेकिन यहाँ सुख और संतोष के साथ जीवन बिताने के लिए इतना काफ़ी है।"

गाँव के किसी अध्यापक के लिए खेती की समस्याओं से परिचित होना ज़रूरी है क्योंकि आख़िरकार उसे किसानों के बच्चों को ही तो पढ़ाना होता है। फलतः जोसेफ़ क्रोमर ने खेती से संबंधित पर्याप्त वैज्ञानिक ज्ञान अर्जित कर लिये हैं और इसीसे वे कृषि सहकारी समिति के स्थायी सलाहकार भी हैं। लेकिन क्या यह सारे काम उनके पेशे के अनुकूल हैं? जोसेफ़ क्रोमर की राय है, 'क्यों नहीं, बिलकुल अनुकूल हैं। हम बच्चों को बहुविध शिक्षाएँ देना चाहते हैं ताकि उन्हें जीवन में अपना मार्ग चुनने में आसानी हो और वे समाज के उपयोगी सदस्य बन सकें। मेरा अनुभव है कि किसान के बच्चों में बड़ी प्रतिभाएँ होती हैं। मेरे कुछ पुराने छात्र आज इन्टरमीडिएट और हाई स्कूलों में पढ़ रहे हैं, कुछ ट्रैक्टर ड्राइवरी कर रहे हैं, कुछ पुस्तकालयों में हैं और इस प्रकार वे अनेक पेशों में लगे हुए हैं।" क्रोमर ने एक विशेष गर्व के साथ मुझे बताया कि आठवीं से निकलने के बाद अब तक उनके सारे छात्र किसी न किसी पेशे में दक्षता प्राप्त कर चुके हैं।

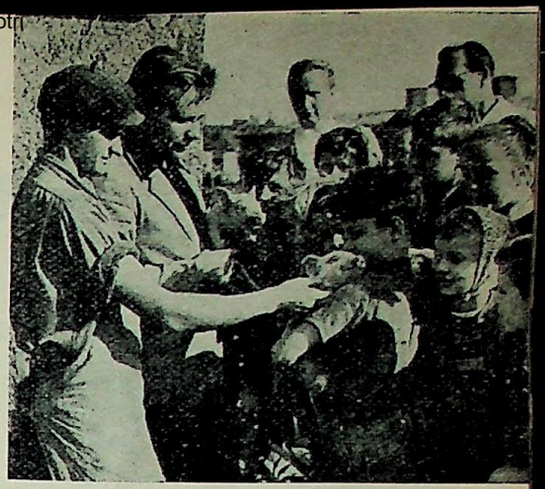

बच्चों के बहुविध शिक्षाक्रम में सुअर-पालन भी शामिल है।

इस स्कूल की कक्षाओं और पढ़ाई के साधनों की एक झलक से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अच्छी शिक्षा के लिए जिन-जिन साधनों की ज़रूरत होती है वे सब के सब देहाती स्कूलों में भी उपलब्ध हैं। यहाँ सारे विषयों तथा विशेषरूप से भौतिक शास्त्र, जीवशास्त्र तथा रसायन शास्त्र जैसे प्राकृतिक विज्ञान के विषयों पर चित्रों से संबंधित पर्याप्त सामग्री है। ऐसी स्थिति में इन विषयों के अध्यापन के समय यदि बच्चे अपने पाठ के दौरान होने वाले प्रयोगों पर पूर्ण मनोयोग से काम करते हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

स्कूल चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। यह एक महत्व-पूर्ण प्रश्न है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्कूलों का ख़र्च सरकार उठाती है। किसानों को अपने बच्चों की शिक्षा की कोई चिन्ता नहीं होती। इस समय वेसेन्धल जैसे छोटे से गाँव में चालीस बच्चे स्कूल में शिक्षा पा रहे हैं। उन्हें सारी पाठ्यपुस्तकें, चित्र और अन्य सामग्री मुफ्त मिलती है। इस स्कूल के ख़र्चे के लिए ६ हज़ार मार्क प्रतिवर्ष का अनुदान स्वीकृत किया जाता है। क्रोमर ने मुझे बताया कि किसी-किसी ग्रामीण स्कूल को सरकार की ओर से ५० हज़ार मार्क तक के भी अनुदान मिलते हैं।

गाँवों के लिए तथा वहाँ के बच्चों के विकास के लिए शिक्षकों का कितना बड़ा महत्व है, इसे किसान अच्छी तरह समझते हैं।

इसीलिए शिक्षक का उत्तरदायित्व कुछ आसान तो नहीं, लेकिन उसका फल भी कुछ कम मीठा नहीं होता।

कोमल वनस्पतियाँ कैसे हरी-भरी रहें? बच्चे भी प्रयोग में लगे हुए हैं।

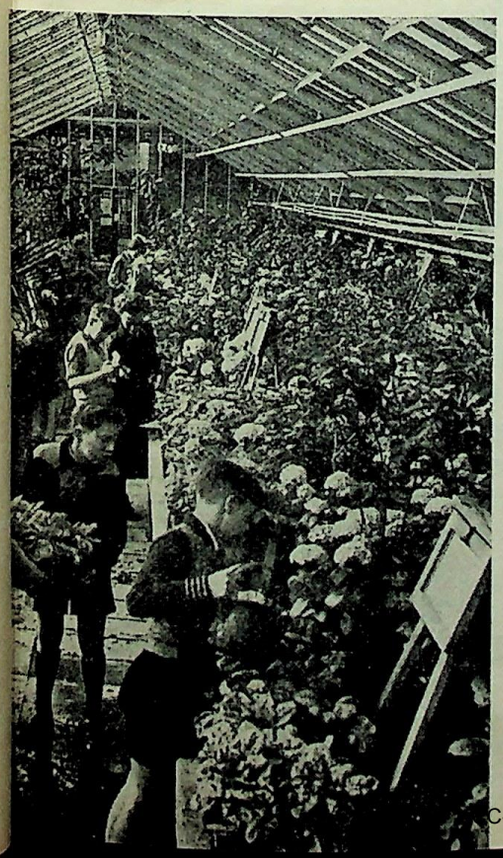

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन - शृंखलाओं का निर्माण

जी० एच० केगेल

समस्त आधुनिक साधनों से सुसज्जित एक लाख नये मकानों (फ्लैट) का निर्माण कोई आसान बात नहीं। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की सात वर्षीय योजना में इतने ही मकानों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसे पुनर्निर्माण का एक महान अभियान ही कहना चाहिए क्योंकि इसमें मुख्य ज़ोर उन शहरों और क़स्बों पर लगाया जा रहा है जो पिछली लड़ाई में ध्वस्त हो चुके थे।

पिछली लड़ाई में जिन शहरों पर बमबारी हुई थी और फलस्वरूप जो ध्वस्त हो गये थे, उनके पुनर्निर्माण में युद्ध के बाद मुख्य रूप से जनता ने प्रशंसनीय योगदान दिया। बर्लिन-निवासियों ने स्तालिनअले के निर्माण में जो मिसालें पेश कीं वह समाजवादी निर्माण की प्रतीक कही जा सकती है। उन्हीं के पगचिह्नों पर बाद को लइपज़िग, ड्रेसडन, मेग्डेबुर्ग और रोस्तक के निवासियों ने चल कर अपने शहरों का पुनर्निर्माण किया। ये शहर भी युद्ध में बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे। सात वर्षीय योजना के सामने कार्ल-मार्क्स-स्टड, फ्रैन्कफ़र्ट-आन-ओडर, नुब्रैन्डन्बुर्ग, गेटा आदि नगरों में सर्वथा नये भवन-केन्द्रों के निर्माण का उत्तर-दायित्व है। इस निर्माणकार्य में समाज-वादी जीवन की समस्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखना पड़ेगा।

पहले ज़माने में एक-एक करके मकान बना करते थे। अब उस तरीक़े को बिल्कुल छोड़ देना है और वैज्ञानिक पद्धति अपनानी है, अब एक-एक ईंट जोड़कर दीवारें खड़ी करने और छतें जोड़ने के बजाय पूरी-पूरी दीवारें और छतें खड़ी करके मकान बनाये जायँगे। इसी तरीक़े को अपनाकर लगभग २२० भवन-शृङ्खलाएं तैयार करनी हैं जिनके बन जाने के बाद बहुतेरे शहरों का रूप बदल कर सर्वथा नया हो जायगा। इन भवन-शृङ्खलाओं में आवास के अलावा सार्वजनिक इमारतें जैसे स्कूल, बच्चों की फुलवारी, बाज़ार, रेस्तराँ, क्लब, खेल का मैदान, घास से हरे-भरे लान और पार्क तथा शिशु-शालाएँ भी शामिल होंगी। इन स्थानों का उपयोग करके यहाँ के निवासी एक दूसरे से परिचित होने, रिश्ते जोड़ने, मैत्री बढ़ाने और दैनिक जीवन की घटनाओं पर विचार-विमर्श करने में सफल होंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन मकानों का निर्माण अपने में एक पूरी नगर-योजना है। इन योजनाओं की रूपरेखा पहले जनता के विचार-विनिमय के लिए पेश कर दी गयी थी। उसके बाद भवन-शिल्पकारों ने जनता के सुझावों को ध्यान में रखते हुए निर्माण-कार्य शुरू कराया। हमारे शिल्पकारों के सामने जन-जीवन को सुखमय और समृद्धिमय बनाना ही सर्वोपरि लक्ष्य होता है।

इन भवन-शृङ्खलाओं की एक विशेषता यह भी है कि इनके अस्तित्व में आ जाने से नगरों का अपना महत्व खंडित नहीं होने पाता, बल्कि उसमें वृद्धि ही होती है क्योंकि उनके निर्माण के समय मेहनतकश जनता की तमाम सुख-सुविधाओं के साथ-साथ ऐसी सामग्री और शैली का उपयोग किया जाता है कि इनमें एक अपूर्व सौन्दर्य, निखार, सुरुचि और भव्यता पैदा हो जाती है। वे नगर-योजना की परा-काष्ठा होते हैं। इन नगर-केन्द्रों में जन-समारोहों और अवकाश-उत्सवों के लिए बड़े-बड़े मैदान भी सुसज्जित रखे जाते हैं।

अधिकांश नगरों का निर्माण अब पूरा होने को आ गया है। मेग्डेबुर्ग

लइपज़िग की भवन-शृंखला। पीछे बायीं ओर अपेरा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

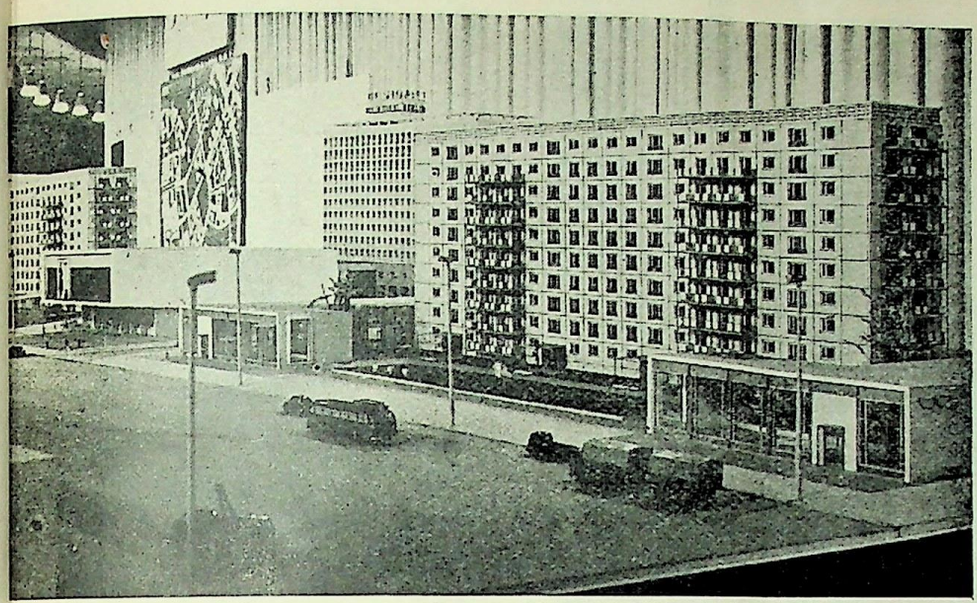

'टूरिस्ट'—बर्लिन में नये होटल की रूप-रेखा

वाला है, एक संस्कृत-विज्ञान-भवन, एक चित्र-कक्ष तथा रेडियो और टेलीविज़न स्टेशन का निर्माण शामिल है।

नवीन पोस्डम में अनेक इमारतों के अलावा एक सुन्दर नाच-घर और २००० व्यक्तियों तक को बैठाने के लिए एक सभा-हाल की योजना शामिल है।

रोस्तक के आधुनिक बन्दरगाह को भी विस्तृत किया जा रहा है। यहाँ की चौड़ी-चौड़ी सड़कों और ऐतिहासिक बाज़ार को देखने से नगर-योजना का बड़ा ही सुन्दर उदाहरण मिलता है।

बर्लिन में इस प्रकार की भवन-शृङ्खला संबंधी नगर-योजना स्तालिन-अले से आगे बढ़ कर अलेक्ज़ेन्डर स्क्वायर और वहाँ से फिर और आगे तक ले जाने की है।

नये भवनों का नया परिधान पहन चुका है। उसमें अन्तिम निखार लाने के लिए सेन्ट्रल स्क्वायर के सामने एक भव्य प्रशासकीय भवन, एक शानदार होटल और एक विशाल स्टोर का निर्माण शेष है। १२,००० भवनों (फ्लैट) का निर्माण नये नगर-केन्द्र के गले में आवास-शृङ्खलाओं के एक सुन्दर हार के समान मोहक लगता है।

ड्रेस्डन की पुरानी बाज़ार युद्ध के तमाचे से नष्ट हो चुकी थी। आज उसे एक नया रूप मिल चुका है। यहाँ के ऐतिहासिक भवनों को बड़े ही प्यार और श्रद्धा के साथ सुरक्षित किया गया है और उनके बीच एल्बे का संगीतमय प्राकृतिक दृश्य एक नयी ताज़गी और सौन्दर्य पा चुके हैं। सभी संग्रहालयों और कक्षों को फिर से संवारा गया है। ड्रेस्डन सूबे की लगभग ५० प्र. श. आबादी केवल ड्रेस्डन नगर में ही बसती है। अतः यहाँ की भवन-निर्माण योजना में १९६५ तक ९० करोड़ मार्क की पूंजी लगायी जायगी।

लइपज़िग को मेलों का नगर कहते हैं। यहाँ के नगर-केन्द्र की योजना कार्ल-मार्क्स स्क्वायर को एक राजनीतिक और सामाजिक केन्द्र-स्थल के रूप में परिवर्तित करने के बाद पूरी होगी। इस केन्द्र-स्थल में एक नया आपेरा-हाउस, जो बन कर तैयार होने

१९६०—एक निर्णायक वर्ष

(पृष्ठ ११ का शेष)

इस उद्योग का एक विश्वव्यापी स्तर है। सन् ६० तक हमें उस स्तर तक पहुँचना है। सन् ६१ के अन्त तक इस प्रकार के सारे यंत्रों पर 'क्यू' चिह्न लगा दिये जायँगे। यह उनकी सर्वोत्तमता के प्रमाण होंगे।

इसका प्रभाव जनता की आवश्यकताओं पर पड़ना लाज़िमी है। नीचे के आँकड़े उस दिशा में रोशनी डालते हैं:

(यूनिटों में)

	१९५८	१९६१
इलेक्ट्रिक मोटर से चलनेवाले रसोई यंत्र	८२,०००	५२७,०००
मकानों को गरम करने की मशीनें	१०९,०००	१,१००,०००

(यूनिटों में)

	१९५८	१९६१
बिजली की धुलाई मशीनें	२६२,०००	५०५,०००
टेलीविज़न सेट	१८०,०००	५६०,०००

लेकिन इसका यह भी मतलब नहीं कि आर्थिक प्रगति के दूसरे पक्षों का महत्व कम है। मसलन् नये मकानों की ही समस्या लें। सन् ६० में ९०,००० नये मकान बनकर तैयार हो जायँगे। जहाज़रानी को भी बढ़ाया जायगा। काटबस ब्रिले में टेलीविज़न बल्ब बनाने का एक कारखाना बन रहा है जिसमें सन् १९६२ से ५० लाख बल्ब हर साल बनने लगेगा। स्टालिनिस्टड में स्पात कारखाना चालू हो गया है, रोस्तक में १० हज़ार टन सामान ढोने वाला जहाज़ गत पहली मई को समुद्र में उतर चुका है। इस वर्ष के अन्त तक ८ लाख टन सामान ढोया जा चुका होगा। अगले कुछ महीनों में काफ़ी काम होना है; लेकिन जल्द ही उनकी सफलताएँ भी हाथ आने लगेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर की रोकथाम

योहान्ना कोय्लर

आज कल संसार में दो बीमारियाँ ऐसी हैं जिनमें सबसे अधिक मौतें हो रही हैं। इनमें पहला नम्बर दिल की बीमारी का है और दूसरा कैंसर का। इसीलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजकीय स्वास्थ्य सेवाएँ कैंसर की रोकथाम को अपनी बहुत बड़ी जिम्मेदारी समझती है।

इस सिलसिले में सन् १९५२ में एक सर्वे किया गया। तब से यह नियम बना दिया गया है कि जिसे कैंसर हो गया हो, या उसका शुबहा हो, या उसका दुबारा हमला हुआ हो, इस सबकी तथा कैंसर से होने वाली मौतों की सूचना कैंसर-रोकथाम दफ्तर में अवश्य दी जाय। कैंसर का कितने दिन तक इलाज हुआ और उसका क्या परिणाम रहा—इसकी भी सूचना देनी पड़ती है। हमारे देश में कैंसर की रोकथाम के सिलसिले में १६८ केन्द्र खोले गये हैं जहां केवल कैंसर की रोकथाम ही नहीं, स्वस्थ व्यक्तियों की डाक्टरी जाँच करके उन्हें कैंसर से बचने के उपाय भी बताये जाते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हर सूबे में राजकीय स्वास्थ्य सेवाओं की ओर से एक कमिश्नर नियुक्त रहता है जो ट्यूमर की रोकथाम का काम देखता है। उसके लिए डाक्टरी योग्यता ज़रूरी है। कमिश्नर की सहायता के लिए एक सलाहकार समिति होती है जिसके बड़े ही अनुभवी डाक्टर सदस्य होते हैं। वह समिति डाक्टरों और दूसरे कर्मचारियों को ट्यूमर की रोकथाम के लिए विशेष शिक्षा का प्रबन्ध करती है, साथ ही इसके इलाज की दिशा में नयी-नयी खोजें कराती हैं।

इस प्राणघातक बीमारी का शुरू में ही पता लगाना उसकी रोकथाम की बुनियादी शर्त है। दूसरी महत्वपूर्ण शर्त यह है कि शुरू में ही पता लग जाने पर रोगी डाक्टरों से सलाह-मशविरा करने में कोई ढिलाई न करे।

हमारे देश में इन नियमों का ठीक ढंग से पालन किया जाता है। सन् १९५८ में लगभग २ लाख ९० हज़ार ऐसी उम्र की औरतों की जाँच करायी गयी जिन्हें कैंसर का काफ़ी ख़तरा रहता है। इनमें से ०.६७ प्र. श. औरतों में कैंसर की बीमारी पायी गयी। १५ प्र. श. औरतों में कैंसर के लक्षण पाये गये।

फेफड़ों और फेफड़े की नालियों का (ब्रोंकियल) कैंसर अन्य देशों की तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र में भी बहुत बढ़ गया है। अतः सारी जनता का साल में एक बार अवश्य स्क्रीनिंग कराया जाता है। इससे कैंसर की जाँच योजना में बड़ी सहायता मिलती है और बहुतेरे रोगियों के कैंसर का पता समय पर लग जाता है। इससे अनेक ज़िन्दगियाँ बचायी जा सकती हैं। यह भी देखा गया है कि पुरुषों में ब्रोंकियल कैंसर अधिक होता है। सन् १९५८ में ९० लाख आदमियों की स्क्रीनिंग की गयी। उनमे प्रति १० हज़ार व्यक्तियों में से १.९ व्यक्ति कैंसर के रोगी पाये गये। इस प्रकार बिना अपवाद के यदि सभी की स्क्रीनिंग और जाँच हो जाय तो फेफड़े और फेफड़े की नालियों का कैंसर का पता लगाना सरल हो जाता है।

बड सलजुंगेन का आधुनिक चिकित्सालय

अभी तक कैंसर के दो ही मुख्य इलाज हैं—आपरेशन और बिजली से उपचार। काफ़ी खोज-बीन के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि आपरेशन और बिजली के इलाज के तरीक़ों में काफ़ी सुधार किया जा सकता है। लेकिन कैंसर का इलाज यहीं तक आकर ख़त्म नहीं हो जाता। आपरेशन या बिजली से इलाज हो जाने के बाद भी ऐसा उपचार आवश्यक है जिससे रोगी के शरीर में इस बीमारी से लड़ने की शक्ति पैदा हो। ऐसा उपचार बड़े ही व्यवस्थित ढंग से होना चाहिए और इसके लिए सबसे बढ़कर रोगी की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अच्छी होनी चहिए ताकि उसे हर वक्त रोटी की फिक्र न पड़ी रहे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर के रोगियों को इलाज के दौरान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके बाद के उपचार के लिए बीमारी का भत्ता मिलता है। रोगियों के लिए रमणीक स्थानों पर रहने की सुन्दर व्यवस्था की जाती है। हर साल लगभग १० हज़ार रोगी आपरेशन या बिजली के इलाज के बाद ऐसे स्वास्थ्य-केन्द्रों में भेजे जाते हैं जहां उन्हें शांतिपूर्ण और सुखद वातावरण मिलता है, प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण परिचर्य्या मिलती है। फलतः इस प्रकार चार सप्ताह तक यहाँ रहने के बाद फिर वे अपने जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। हमारा यह अनुभव रहा है कि जिन रोगियों को इलाज के बाद इन आरामघरों में आगे के उपचार के लिए रखा जाता है उनके स्वास्थ्य पर एक विशेष स्फूर्तिदायक प्रभाव पड़ता है। इस समय इसी तरह के दो और आराम-घरों की व्यवस्था हो चुकी है जिनमें ३५ और ४० रोगियों के ठहराने का प्रबन्ध है। निकट भविष्य में ऐसे अनेक आराम-घरों का निर्माण होगा।

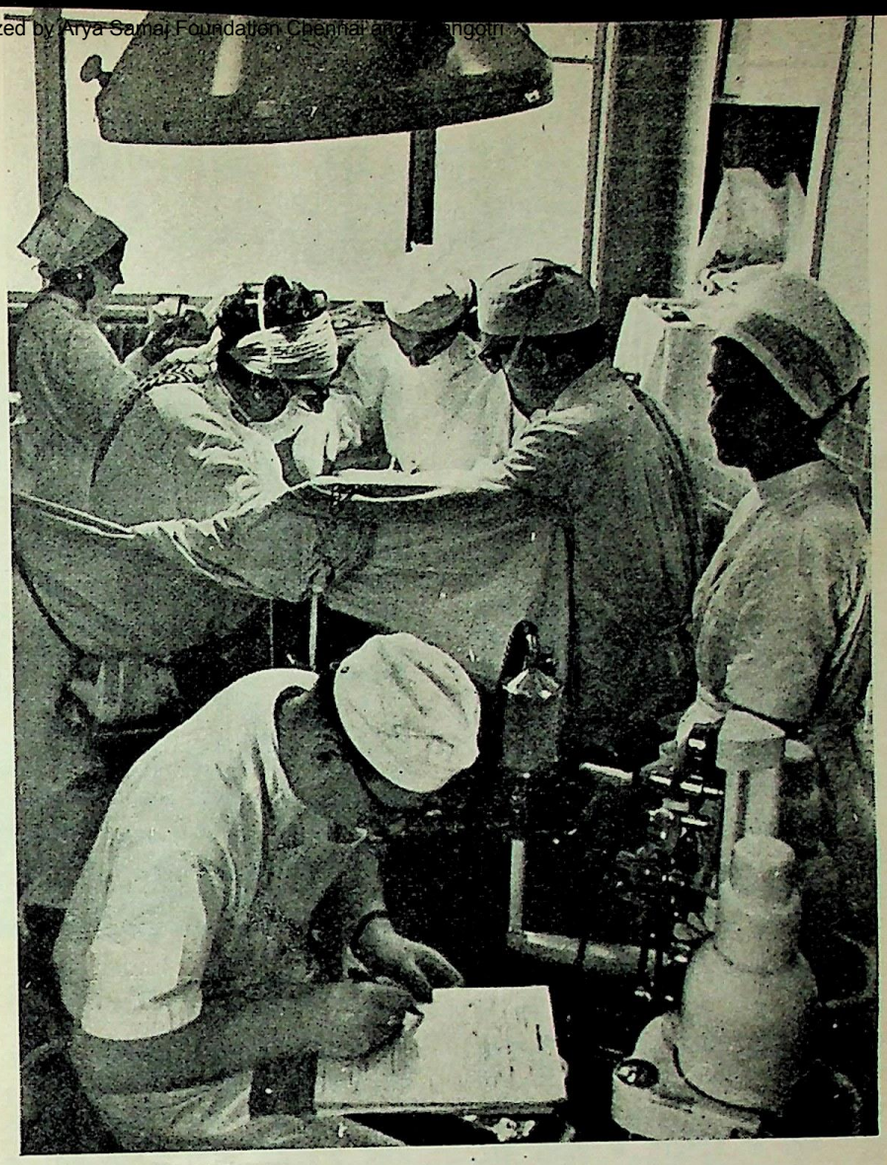

फेफड़े के कैंसर का आपरेशन हो रहा है।

लेकिन अब भी लोगों को कैंसर के खतरे से आगाह करने की समस्या सबसे प्रमुख है। खास तौर से नवयुवकों को यह चेतावनी देनी चाहिए कि वे सिग्रेट का धुआँ बहुत अन्दर तक न ले जायँ क्योंकि सिग्रेट का धुआं अन्दर जाकर फेफड़ों पर असर करता है और कैंसर का खतरा पैदा करता है। शराबियों के पेट में भी छाले पाये गये हैं। इन छालों से पेट का कैंसर होता है। अतः अधिक शराब पीने से भी लोगों को रोकना चाहिए।

वैसे यह बात जितनी बार दोहरायी जाय कम ही है कि स्वस्थ और संयमित जीवन-क्रम तमाम बीमारियों की सबसे बड़ी गारंटी है। स्वास्थ्य रक्षा और उसकी देखभाल स्वयं व्यक्ति के लिए और पूरे समाज के लिए बड़े ही महत्व का है। इसीलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र जनता के स्वास्थ्य की रक्षा और देखभाल में तथा बीमारों के उपचार में कोई कमी उठा नहीं रखता।

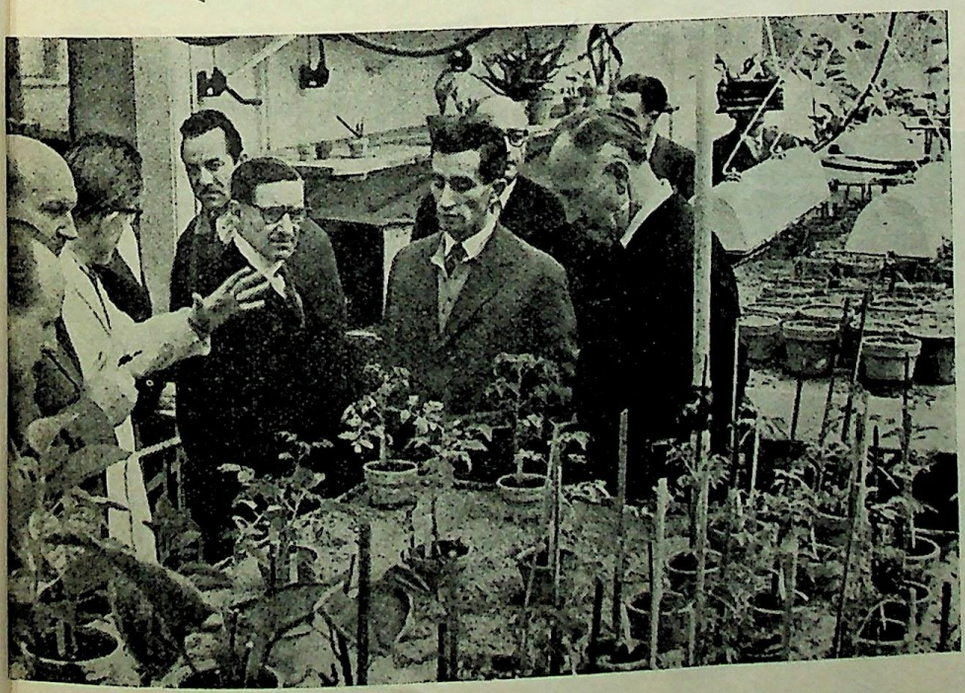

← गत दिसम्बर में, बर्लिन में कैंसर की रोकथाम के लिए एक विचारगोष्ठी हुई थी। उसके बाद विदेशी डाक्टरों ने जर्मन विज्ञान अकादमी के ओषधि-संस्थान का निरीक्षण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल - थल पर अभिनीत जन नाटक

र्युगेन मेले में कूबा रचित "क्लाउस स्टोर्टबेकर"

डा० वाल्टर पोलाट्चेक

बाल्टिक सागर में रुइगन एक द्वीप है। वैसे तो यह द्वीप अपनी शानदार हरियाली के लिए मशहूर है ही, लेकिन इसका सबसे सुन्दर और सबसे अनुपम दृश्य है जसमंड की वह पतली और लम्बी खाड़ी जिसके किनारे पहाड़ियों और जंगलों से घिरे हैं। यह खाड़ी अब तक गुमनामी के दिन बिता रही थी। और उसके छोटे से गाँव राल्सवीक से भी कम ही लोग परिचित थे।

लेकिन सन् १९५९ के अगस्त में ऐसा हुआ कि हर रोज़ सात-आठ हज़ार के बीच लोग यहाँ आते रहे। यहाँ तक जाने के लिए लोगों को ट्रेनों, मोटरों, बसों, और पानी के जहाज़ों तक का सहारा लेना पड़ा।

इतने दिनों से विस्मृति के कुहरे में लिपटे इस एकाकी राल्सवीक में एकाएक क्या जादू हो गया! इतने लोगों की भीड़ आख़िर यहाँ कैसे पहुँचने लगी! दरअसल पिछले साल यहां के इतिहास में पहली बार रुइगन मेला लगा था जिसकी अब पुनरावृत्ति होती रहेगी।

र्युगेन मेला युवतियों के लिए एक भारी आकर्षण है।

हर कला या कला-कृति व्यापक जनसमूह की सम्पत्ति नहीं बन पाती। यही हाल मेलों और उत्सवों का भी होता है। सही अर्थों में जन-मेलों के लिए ऐसे जन-नायकों और उनपर आधारित ऐसे विषयों, नृत्यों और नाटकों की ज़रूरत होती है जो जन-जन की स्मृति में जीवित हों।

क्लाउस स्टोर्टबेकर एक ऐसा ही जन नायक है। पाँच से भी अधिक सदियाँ गुज़रीं जब क्लाउस को फांसी मिली थी, लेकिन वह आज भी जर्मन जनता के लिए जीवित है। कहना न होगा कि उसी के जीवन पर आधारित एक महान् नाटक का इस मेले में अभिनय हुआ था और यही इतनी बड़ी भीड़ का आकर्षण था।

क्लाउस एक 'समुद्री डाकू' था क्योंकि वह 'हंसा' बन्दरगाह के शक्तिशाली लोगों के खिलाफ़ लड़ता था, क्योंकि वह सुनहरे दिनों के सपने देखा करता था, और क्योंकि वह धनियों को लूटता और लूट का सारा माल ग़रीबों में बांट देता था। क्लाउस डाकुओं के एक बहुत बड़े दल का सरदार था। उसे और उसके पूरे दल को ग़रीबों और अमीरों की खाई किसी क़ीमत पर मंज़ूर न थी।

इसीलिए जनता के दिल से क्लाउस की यादें मिटा देने के लिए धनी सौदागरों और नवाबों ने पूरी कोशिशें भी कीं, लेकिन वे अपने इरादों में सफल न रहे और आज भी समूचा

खुले रंगमंच पर "क्लाउस स्टोर्टबेकर"

ridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

वाल्टिक तट क्लाउस की कहानियों से गूंजा करता है। क्लाउस को धनियों से जो कुछ मिला उसने ग़रीबों को दे दिया। और ग़रीबों ने भी वह सब कुछ क्लाउस को समर्पित कर दिया जिसकी उसे ज़रूरत थी। क्लाउस को ग़रीबों के घरों में छुपने के लिए शरण मिला, प्यार मिला।

फिर ऐसे जननायक के अलावा किसी जनमेले के लिए दूसरा कौनसा विषय हो सकता है? वह जनता का मेला था, जनता ही उसकी अभिनेता थी।

एक पुराने नगर के भीमकाय दरवाज़ों और पत्थर की इमारतों के बीच बड़ा सा मैदान लोगों से खचा-खच भरा है। सामने समुद्र की लहरें अपनी चमक से आँखों को चकाचौंध कर रही हैं और उनपर मध्यकालीन जहाज़ों और नावों का समूह डगमग हो रहा है। घुड़सवारों का एक दल सरपट आगे निकल जाता है। सैकड़ों नवाब और उनके साथ उतनी ही संख्या में सुन्दर और बड़ी-बड़ी आँखोंवाली युवतियाँ विजय-नृत्य कर रही हैं। दूसरी ओर पराजित जन-समूह के ऊपर भालों और बर्छियों के तम्बू तने हुए हैं। लाल वर्दी में खूंखार जल्लाद एक ओर ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है और शिकार का इन्तज़ार कर रहा है। उसके सामने ज़ंजीरों में बँधे आदमियों की बहुत ही लम्बी क़तार खींच खींच कर पास लायी जा रही है।

'क्लाउस स्ट्रोर्टबेकर' नृत्य नाटक का यह पहला दृश्य है। इसमें २ हज़ार आदमी भाग लेते हैं। दर्जनों अभिनेता, बड़े-बड़े समूह-नृत्य, आर्केस्ट्रा और जाने कितने सहायक! ज़ाहिर है ऐसे महान् मंच के लिए सैकड़ों ग़ैरपेशेवर कलाकारों को आमंत्रित करना ही पड़ेगा।

इसके रचयिता कुबा नामक सुप्रसिद्ध नाटककार हैं। इसमें जहाज़ी-डाकू का समूचा जीवन और बहादुरों जैसी मौत को पूरी शक्ति के साथ अभिव्यक्ति मिली है। इसमें वह पूरा ज़माना, और उसके सारे संघर्ष मूर्त हो उठते हैं। इसे मंच पर प्रस्तुत करने के लिए प्रदर्शन और अभिनय के नये साधनों का उपयोग करना पड़ा। इसमें प्रस्तुत सहगान (कोरस) की शैली आल्हा है जो घटनाओं का बड़ा ही कवित्वमय और मर्मस्पर्शी अर्थ प्रस्तुत करती है। एक अंधा गायक भी है जिसके गीतों का विषय आज की घटनाएँ हैं, लेकिन उसके गीतों का ऐसा मोहक समावेश हुआ है कि नाटक के दृश्यों की लड़ी बनती जाती है। और अन्त में होने वाला नृत्य तो सचमुच नाटकीय पराकाष्ठा ही है। यह नृत्य-नाटक समूची घटनाओं का इतना यथार्थ प्रतीक है और वह ऐसे सुगठित रूप में सामने आती हैं जैसे कोई अद्भुत मूर्तिकला सामने खड़ी हो।

इस नृत्य-नाटक में साज़िशों के तत्व शायद किसी को ज़रूरत से ज्यादा लगें, लेकिन कुल मिलाकर यह एक महान् काव्य-कृति है जिसकी सुन्दरता, गीतात्मकता और लोककलाओं से उजागर दृश्य एक ऐसा ओज भर देते हैं

क्लाउस फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार है!

जो यदि इतिहास की ओर देखने को विवश करते हैं तो केवल इसलिए कि वर्तमान के प्रति हमारी आस्था और गर्व को चट्टान जैसा दृढ़ आधार और स्वर्णिम भविष्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा मिले।

'क्लाउस स्टोर्टबेकर' के गीत दिलों को पिघलाने वाले हैं। तीन घंटे तक इसके दृश्य चलते हैं। बीच में कहीं अवकाश नहीं। फिर भी कोमल प्रेम, जनमानस की पीड़ा और अनेक रंगों में जनसमूहों का उद्वेलन दृश्यों की लड़ी के रूप में एक ऐसा जादू पैदा करते हैं कि दर्शक को समय का ज्ञान ही नहीं रह जाता। नृत्यों में अपरिमित शक्ति है। एक क्रान्ति-नृत्य भी है। इसकी शैली अपनी सुन्दरता और शक्ति के लिए बेजोड़ कही जायगी।

जंगलों और कुंजों और समुन्दर की लम्बी भुजाओं के बीच यह नृत्य-नाटक एक महान् और रोमांचकारी अनुभव है। इस वर्ष एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों ने रुइगन का यह मेला देखा। अगले वर्ष निश्चय ही वह संख्या बढ़ेगी।

"क्लाउस स्टोर्टबेकर" का एक दृश्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफ़ा-फ़िल्म जगत :

ब्रिटेन में हमारी फ़िल्में

ब्रिटिश फ़िल्म इम्पोर्ट कम्पनी, प्लेटो फ़िल्म लि० के संचालक स्टेनली फ़ोरमैन अभी हाल में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में आये थे। उन्होंने यूनियन प्रेस सर्विस के एक संवाददाता को अपनी एक भेंट में जर्मन-ब्रिटिश संबंधों तथा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की समस्या पर अपने विचार भी प्रकट किये। यूनियन प्रेस सर्विस क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (ज. ज. गणतंत्र) द्वारा संचालित होती है।

संवाददाता : जर्मनी की मौजूदा स्थिति के बारे में इंगलैंड का जनसाधारण क्या सोचता है?

फ़ोरमैन : बौन (प. जर्मनी) सरकार जो ख़तरे बुला रही है उसके बारे में ब्रिटिश जनमत बहुत चिन्तित है, और शायद युद्ध के बाद पहली बार वह इतनी सफ़ाई से इस समस्या पर विचार भी कर रहा है। यह चिन्ता 'स्वस्तिक-घटना' को देखकर शुरू हुई और जब यह भेद खुला कि बौन सरकार स्पेन के फ़ासिस्तों से गठबन्धन करना चाहती है तब तो हमारी चिन्ता और भी बढ़ गयी। वैसे हम लोग आसानी से व्यग्र होने वालों में से नहीं, लेकिन इस बार तो हद हो गयी। मेरा ख्याल है कि ब्रिटिश जनता में नाज़ीवाद के इस नये रूप के ख़िलाफ़ जो आन्दोलन छिड़ा है वह एक स्वस्थ राजनीतिक घटना है।

संवाददाता : ओबरलैन्डर के ऊपर बनी 'मरडर इन ल्वोव' नामक फ़िल्म का ब्रिटिश जनता पर कैसा प्रभाव रहा?

फ़ोरमैन : वह फ़िल्म प्रेस वालों को और कामन्स सभा के लगभग ६० सदस्यों को दिखायी गयी थी। फ़िल्म में जो कुछ उन्होंने देखा उसकी छाप उनके चेहरों पर साफ़ मालूम हो रही थी--वह छाप क्रोध की थी। और मैं यह भी बता दूं कि उनमें महज़ लेबर पार्टी के ही सदस्य नहीं थे, अनेक अनुदार और लिबरल सदस्य भी थे। इंगलैंड में ओबरलैंडर का जुर्म हर किसी की ज़बान से सुना जा सकता है। यहाँ तक कि बौन सरकार के दोस्तों को भी चोट पहुँची है।

संवाददाता : क्या ब्रिटेन और ज. ज. गणतंत्र के बीच सरकारी तौर पर फ़िल्मों का आदान-प्रदान होता है?

फ़ोरमैन : इस सिलसिले में पहले मैं आपको यह बता दूं कि पूर्वी बर्लिन में जब अंग्रेज़ी फ़िल्म सप्ताह मनाया जा रहा था तो उस समय हमने अपने देश की कई फ़िल्में दिखायी थीं। इस वर्ष, अक्तूबर में हम 'लन्दन फ़िल्म समारोह' करेंगे। उस अवसर पर दुनिया की सर्वोत्तम फ़िल्में दिखाने का आयोजन होगा। अगर वार्ता सफल रही तो "ख़ामोश सितारे" और 'मुहब्बत की उलझन' प्रदर्शित करने का भी प्रयास करेंगे। मुझे उम्मीद है कि मैं इसमें सफल होकर रहूँगा और ज. ज. गणतंत्र से फ़िल्में अपने समारोह में ले जा सकूंगा। सन् १९६१ के शुरू में ब्रिटिश फ़िल्म इन्स्टीट्यूट भी डेफ़ा-सप्ताह मना रही है।

संवाददाता : डेफ़ा और ब्रिटिश कम्पनियाँ मिलकर फ़िल्म बनायें--इसके बारे में आपका क्या मत है?

फ़ोरमैन : पिछले कुछ महीनों से ज. ज. गणतंत्र और ब्रिटेन के फ़िल्मी बन्धुओं में सहयोग बढ़ता नज़र आ रहा है। 'रूसी चमत्कार' के निर्माण में ब्रिटेन की ओर से कुछ सामग्री द्वारा सहयोग प्रदान किया गया था। डेफ़ा की एक डाक्युमेन्टरी फ़िल्म जार्ज फ्रेड्रिक हैन्डेल के जीवन पर बन रही है। ये १८वीं-१९वीं सदी के प्रमुख संगीतज्ञ थे। इस फ़िल्म के निर्माण में ब्रिटेन भाग ले रहा है। मेरे विचार से यही दोनों देशों के सहयोग का श्रीगणेश कहा जा सकता है।

संवाददाता : डेफ़ा की और भी कोई नयी या पुरानी फ़िल्म इंगलैंड में प्रदर्शित की गयी है?

फ़ोरमैन : हाँ, हाँ, 'जर्मन स्टोरी' हमारे यहाँ बहुत ही सफल रही। नटिंघम और कारड्रिफ़ में तो टिकट के लिये लोगों को लाइनों में घंटों खड़ा रहना पड़ता था। नटिंघम के एक सबसे बड़े सिनेमा-घर में, जहाँ ६०० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है, हफ्ते भर तक एक भी सीट ख़ाली नहीं गयी। 'स्टार्स' को भी वैसी ही सफलता मिली। 'हालीडे आन स्लिट' और 'इन्टरप्राइज़ ट्यूटॉनिक सोर्ड' भी काफ़ी जनप्रिय रहे। (यू. पी. डी.)

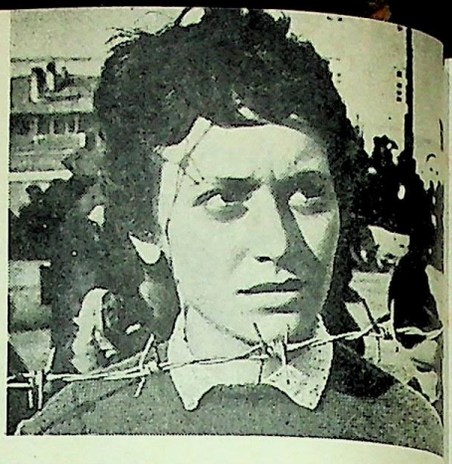

"सितारे" की नायिका एक भावपूर्ण मुद्रा में

"इन्टरप्राइज़ ट्यूटानिक स्वोर्ड"

"ख़ामोश सितारे"

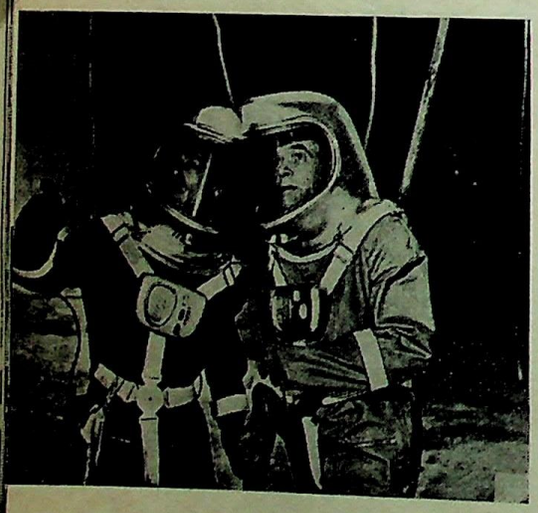

"मुहब्बत की उलझन"

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

लइपज़िग मेले की प्रतिष्ठा

इस वर्ष लइपज़िग मेले में अनेक देशों की भांति हंगरी ने भी भाग लिया। हंगरी के वाणिज्य संघ के अध्यक्ष से "दर आसेनहैन्डल" पत्रिका के एक प्रतिनिधि ने जब भेंट की तो वे बड़े संतुष्ट दिखायी पड़ रहे थे। उन्होंने कहा:

"इस वर्ष लइपज़िग का वसन्त मेला व्यवसाय की दृष्टि से बड़ा ही लाभप्रद रहा। जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार एजेन्सियों से हमने बात-चीत की। फलतः ज. ज. गणतंत्र से २०.७ करोड़ रुबल के माल का आयात करने तथा २१.१ करोड़ रुबल का माल बेचने का समझौता हुआ। शायद इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि ऊपर जितने माल के आयात-निर्यात का ज़िक्र हुआ है वह सर्वथा अलग और स्वतंत्र विनिमय है, तयशुदा कोटे से उसका कोई संबंध नहीं।"

हंगरी के वाणिज्य संघ के अध्यक्ष ने आगे कहा कि इस मेले में भाग लेने से पूंजीवादी देशों से भी हमारा व्यापार बहुत बढ़ा है। पूंजीवादी देशों से हमने १४ लाख डालर के निर्यात और ९ लाख ६० हज़ार डालर का आयात किया है। यह नतीजे स्वयं कह रहे हैं कि लइपज़िग, पूर्व-पश्चिम में न केवल व्यापारिक संबंधों का केन्द्र बन गया है, बल्कि उन संबंधों को निरन्तर आगे बढ़ा रहा है।

ग्याना के मंत्री का आगमन

ब्रिटिश ग्याना के मंत्री डा० बेन हाल में जर्मन जनवादी गणतंत्र आये। इस अवसर पर आपने अनेक कारखानों का निरीक्षण किया। आपने ज. ज. गणतंत्र के उप-विदेश व्यापार मंत्री श्री गेरहार्ड वीस से आर्थिक समस्याओं पर वार्ता भी की।

यूनानी एम० पी०

गत अप्रैल में यूनानी संसद् के सदस्यों का एक दल श्री जोनिस इबैंजिलिडिस के नेतृत्व में ज. ज. गणतंत्र आया और मंत्रि परिषद् के अध्यक्ष तथा विदेश व्यापार मंत्री हर हेनरिख राउ से भेंट की। इस अवसर पर दोनों देशों के व्यापारिक और आर्थिक सहयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

अमेरिका से व्यापार

अमेरिका से भी हाल में एक व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ है जिसके अनुसार ज. ज. गणतंत्र ने अपने मोटर उद्योग के लिए १० हज़ार टन लोहे की चद्दरें और अन्य वस्तुएँ मँगायी हैं। यह समझौता दोइत्चे स्थाल एन्द मेटाल--जर्मन मेटल--तथा पासेल ओर एन्ड मेटल कारपोरेशन न्यूयार्क तथा सुट्टन स्टील एन्ड मेटल कारपोरेशन (अमेरिकी कम्पनियों) के बीच हुआ है। जून से माल आना शुरू हो गया है। सुट्टन स्टील एन्ड मेटल कारपोरेशन ने तय किया है कि सन् १९६१ के लइपज़िग मेले में वह अपनी प्रदर्शिनी भी लायेगा। यही कम्पनी पिछले कई वर्षों से ज. ज. गणतंत्र का रसायन भी काफी मात्रा में ख़रीद रही है।

लेबनान से व्यापार

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार मंत्री तथा लेबनान के विदेश मंत्री के बीच हाल में हुए पत्र-व्यवहार के फलस्वरूप दोनों देशों के बीच सन् १९६० में डेढ़ करोड़ (लेबनानी पौंड) के परस्पर व्यापार का निश्चय हुआ है।

दोनों देशों में एक दीर्घकालीन व्यापारिक समझौता हो चुका है—उपर्युक्त निश्चय उसी के अधीन लिया गया है। सन् १९५९ में ज. ज. गणतंत्र ने लेबनान से ७ हज़ार टन फल ख़रीदा था। उस वर्ष इतनी मात्रा में लेबनान से और किसी देश ने फलों की ख़रीद न की थी।

वियतनाम में प्रथम शीशा-कारखाना

वियतनाम में प्रथम शीशा कारखाना सन् १९६१ से उत्पादन शुरू कर देगा। इसके निर्माण में ज. ज. गणतंत्र के इंजीनियरों और विशेषज्ञों ने सहयोग दिया है। कारखाने की मशीनें भी हमारे देश से जायँगी। इस कारखाने से १.६ लाख वर्गफुट खिड़की के शीशे, ३० लाख बिजली के बल्ब, ७ करोड़ डाक्टरी संबंधी पात्र तथा ४० लाख बिअर और लेमनेड की बोतलें प्रतिवर्ष बन कर तैयार होंगी।

दीर्घकालीन व्यापार-समझौते

. . . बुल्गेरिया के साथ

बुल्गेरिया और ज. ज. गणतंत्र के बीच सन् ६१-६५ के लिए एक दीर्घकालीन व्यापार-समझौता हुआ है जिसके अनुसार ३ करोड़ १० लाख रुबल के माल का आदान-प्रदान होगा।

ज. ज. गणतंत्र से बुल्गेरिया भेजे जाने वाले माल में मुख्य निर्यात होगा --समूचे कारखाने, लिग्नाइट, खान के लिए सम्पूर्ण मशीनें, इंजीनियरिंग चश्मे, बिजली की मशीनें, मोटर गाड़ियाँ, रसायन और उपभोक्ता की वस्तुएँ। इसके बदले बुल्गेरिया से ट्रांसफ़ार्मर, बिजली-मोटर, बिजली के अन्य सामान, तम्बाकू, शराब, फल आदि हमारे देश में आयेंगे।

. . . हंगरी के साथ

इसी प्रकार हंगरी और ज. ज. तंत्र में सन् ६१-६५ तक के लिए एक व्यापार-समझौता हुआ है। इसके अनुसार हंगरी को कारखानों की मशीनें, पावर-स्टेशन, खेती की मशीनें तथा रसायन संबंधी सामान भेजा जायगा, बदले में हंगरी से बाक्साइट, अल्यूमूनियम, बसें, सूती कपड़े, जूते, खेती से पैदा होने वाली वस्तुएँ ज. ज. गणतंत्र में आयेंगी। यह व्यापार ४ करोड़ २० लाख रुबल का होगा।

डेनमार्क में ट्राफ़िक-दफ़्तर

डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन में, गत अप्रैल में, ज. ज. गणतंत्र का एक ट्राफ़िक-दफ़्तर खोला गया। इस अवसर पर दोनों देशों के उच्च अधिकारी मौजूद थे।

हाल के वर्षों में डेनमार्क और ज. ज. गणतंत्र के बीच यात्रियों और माल का यातायात बहुत बढ़ गया है। इस क्रम को और आगे बढ़ाने के लिए ही उक्त दफ़्तर खोला गया है। डेनमार्क के पत्रों ने दोनों देशों में यात्रियों की संख्या बढ़ाने पर भी ज़ोर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन निर्माण

भवन-निर्माण का कुल कार्यक्रम = १०० प्र० श०

पूरी-पूरी दीवारों और छतों को जोड़कर
भवन-निर्माण प्र० श० में

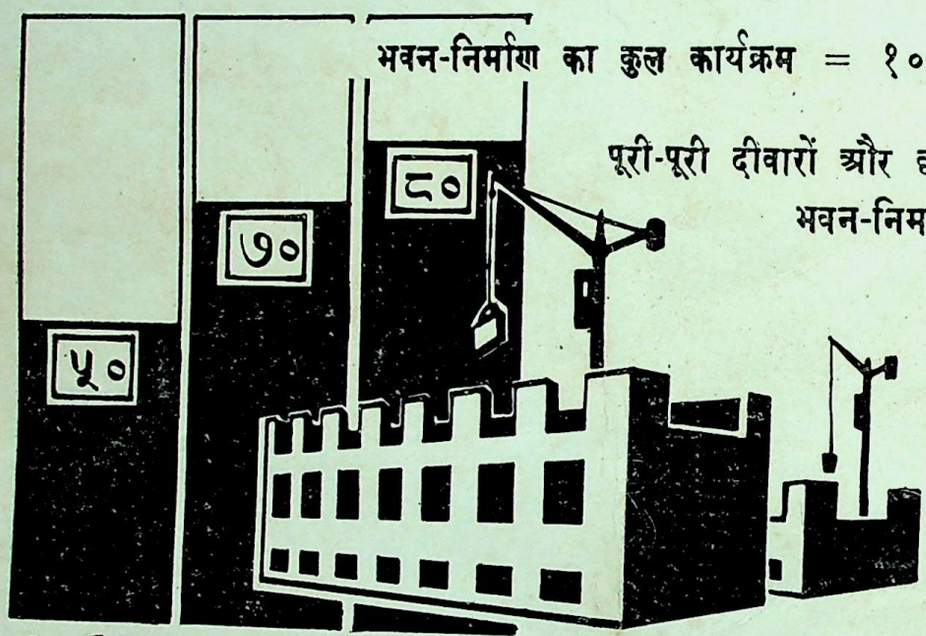

१९६० १९६२ १९६५

सन् १९६५ तक राष्ट्रीय भवन उद्योग
निम्नलिखित मशीनों से सुसज्जित
हो जायगा :

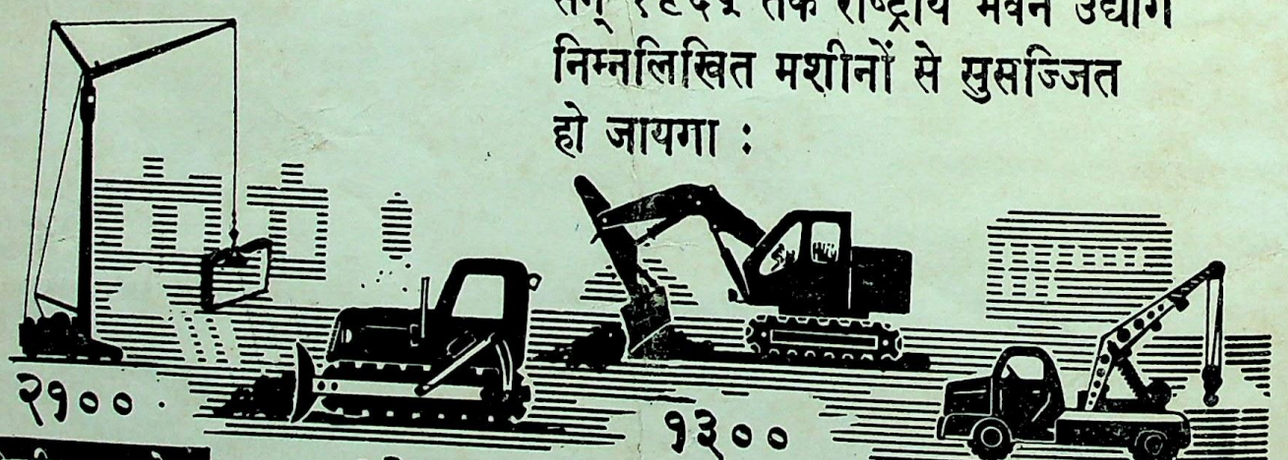

२१०० रोटरी टावर क्रेन

१३७० हमवार करनेवाली मशीन

१३०० बकेट ड्रेज

९५० लारियों पर क्रेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

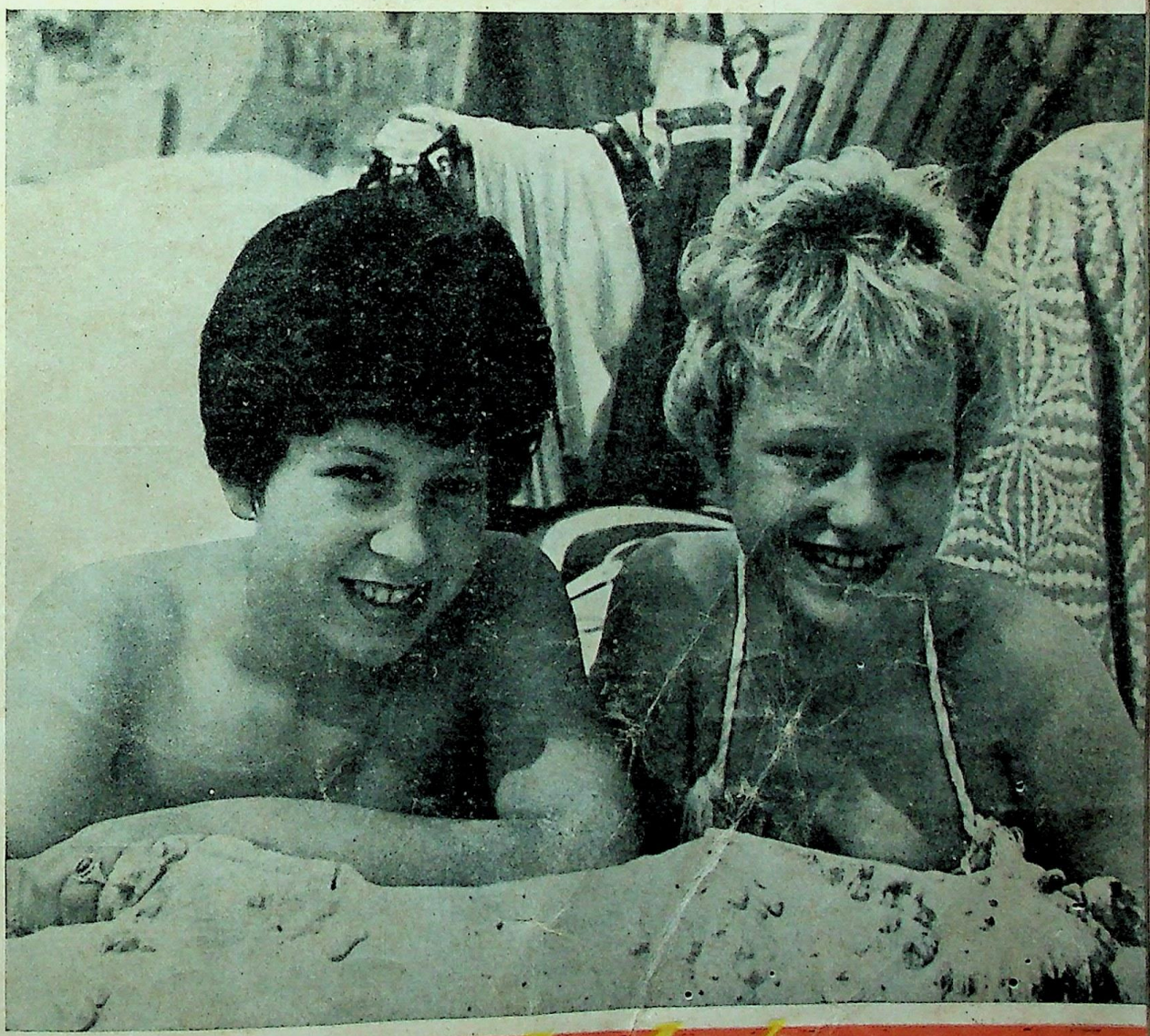

७ वर्ष ५
जुलाई
१९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४०७२३, ४३७०८ केबल्सः हावदिन, नई दिल्ली

●

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्सः हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्सः कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन : ६१३१४ केबल्सः हावजर्मन

वर्ष ५, अंक ७ २० जुलाई, १९६०

यह अंक

पृष्ठ

एक महान राष्ट्रीय समझौता ३

व्यक्तित्व की झाँकी

प्रधानमंत्री ओटो ग्रोटेवाल ५

जनवाद के बढ़ते चरण

राष्ट्रीय मोर्चे से सरकार का सहयोग ५
जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत में व्यापारिक मैत्री ८
"मोतियों की माँ" : एक फ़ैशन बटन १०
१९६०—एक निर्णायक वर्ष ११

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन

स्पात नगर रीज़ा १२
गाँव के शिक्षक का जीवन १५
भवन-शृंखलाओं का निर्माण १६
जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर की रोकथाम १८
जल-थल पर अभिनीत जननाटक २०

डेफ़ा-फ़िल्म जगत

ब्रिटेन में हमारी फ़िल्में २२
जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें २३

मुख पृष्ठ

बाल्टिक-तट पर सुखमय छुट्टियाँ बितायी जा रही हैं। स्वतंत्र जर्मन ट्रेड यूनियन फ़ेडरेशन दस लाख से भी अधिक मज़दूरों को ऐसी ही छुट्टियाँ मनाने के लिए अपनी ओर से ३ करोड़ ६० लाख मार्क का धन प्रति वर्ष देता है।

अंतिम पृष्ठ

भवन-निर्माण

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम अभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, ३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा० लि०, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

एक महान राष्ट्रीय समझौता

पीटर लॉफ़

जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने हाल में पश्चिमी जर्मनी की मेहनतकश जनता के सामने जर्मनी के एकीकरण की दिशा में एक योजना पेश की थी। उसे हम 'जनता की जर्मनी योजना' कह सकते हैं। यह योजना पेश होते ही राजनीतिक बहसों का मुद्दा बन गयी। उस मसविदे का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसके द्वारा किया गया जर्मन समस्या का सरल और तर्कसंगत विश्लेषण है, जिसमें यह बताया गया है कि जर्मन जनता अपने विकास के एक ऐसे फ़ैसलाकुन मोड़ पर पहुँच चुकी है जहाँ उसके सामने केवल तीन रास्ते दिखायी पड़ते हैं:

पहला रास्ता पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवादियों का है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध जंग छेड़ कर उसे 'मुक्त' करने का मंसूबा रखते हैं, (युद्ध की यही परिपाटी हिटलर ने पोलैंड आदि के विरुद्ध अपनायी थी जिसके लिए हिटलर ने ब्लिट्ज़क्रिग शब्द का प्रयोग किया था, अर्थात् ऐसा युद्ध जो बिजली गिरने की ताह अचानक और सर्वनाशी हो।) इस रास्ते का अन्त निश्चय ही विश्व-व्यापी आणविक युद्ध में होगा, और साथ यह भी निश्चित है कि जर्मनी की जनता को यह रास्ता हर्गिज मंजूर नहीं। वैसे यह और बात

ब्रेन्डेनबुर्ग द्वार : शीत युद्ध से पीड़ित पश्चिम बर्लिन का प्रवेश-मार्ग ! यह संयुक्त जर्मनी की शांतिमय राजधानी के सपने देख रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि युद्ध की इस परिपाटी का फल खुद सैनिकवादियों की आत्महत्या के अलावा दूसरा कुछ नहीं होगा।

दूसरा रास्ता है जर्मनी के विभाजन को अगले बीस या तीस या और अधिक सालों तक बनाये रखा जाय। लेकिन शायद बोन सरकार के इस कुचक्र को भी जर्मन जनता मंजूर नहीं करेगी।

तीसरा रास्ता शान्ति सन्धि और महासंघ की मंज़िलों से होता हुआ जर्मन-एकता के लक्ष्य तक पहुँचता है। यह शांति सन्धि दोनों जर्मन राज्यों और उन तमाम देशों के बीच होना चाहिए जिन्होंने दूसरी लड़ाई में हिटलर के विरुद्ध मोर्चा बनाया था। कहना न होगा कि केवल यही एक रास्ता है जिसे शांतिमय समझा जा सकता है।

'जनता की जर्मनी योजना' में कहा गया है कि यही एक रास्ता है जिसपर चलने में कोई खतरा नहीं है और यह निष्कर्ष भी बड़े गंभीर विश्लेषण के बाद किया गया है।

सन् १९४७-४८ में यह संभव था कि यदि चारों अधिपति शक्तियों को समझौते का अवसर मिला होता तो जर्मनी की एकता हो सकती थी। किन्तु पश्चिमी जर्मनी का अलग से निर्माण होना था कि इस आशा पर भी पानी फिर गया।

फिर एक दूसरा अवसर १९५०-५१ में आया जब सारे जर्मनी में आम चुनाव के ज़रिए एकता क़ायम की जा सकती थी। लेकिन इस रास्ते को भी पश्चिमी जर्मनी ने अपने शस्त्रीकरण और पुनर्सैनिकवाद के द्वारा तथा नाटो में शामिल होकर रोक दिया।

अब १९६० हमारे सामने है। आज अगर जर्मनी की एकता किसी भी ढंग से संभव है तो वह यह है कि दोनों जर्मन राज्यों में शांति-सन्धि हो और दोनों राज्यों का एक महासंघ बना दिया जाय।

इस रास्ते की कौन-कौन सी मंज़िलें होंगी?

पहली मंज़िल पर दोनों राज्यों के साथ उन तमाम देशों की शांति-सन्धि होनी चाहिए जो दूसरी लड़ाई में हिटलर के विरुद्ध लड़े थे। दूसरे महायुद्ध के समाप्त हुए आज कितने साल होने को आये, लेकिन आज भी जर्मनी में उस युद्ध का एक दम घुटा देने वाला अवशेष बाक़ी है। यह सन्धि कम से कम उस वातावरण को दूर करने और ख़ासतौर से पश्चिमी बर्लिन की त्रिशंकु जैसी स्थिति समाप्त करने में सहायक होगी। दोनों जर्मन राज्यों के बीच एक शांतिपूर्ण वातावरण का सृजन होगा, जर्मन सीमाएँ निर्धारित हो सकेंगी और सुसंगत शांति नीति के लिए परिस्थिति तैयार होगी।

जर्मन जनता के लिए यह एक निर्णायक प्रश्न है। यदि पश्चिमी जर्मनी स्वतः या विवश होकर निश्चित शांति नीति अपनाता है तो जर्मनी की एकता की एक बहुत बड़ी शर्त पूरी हो जाती है।

लेकिन यदि अन्य देश दोनों जर्मन राज्यों के साथ एक ही सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं, तो वे अलग-अलग सन्धि-पत्रों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

और यदि इन दोनों में से किसी तरह की शांति सन्धि के लिए वे देश तैयार नहीं होते, तब तो एक ही परिणाम सामने आ सकता है और वह यह कि जर्मनी की समस्या और भी उलझ जायगी; ख़ास तौर से पश्चिमी बर्लिन में पश्चिमी राष्ट्रों की सेनाओं का अस्तित्व और बर्लिन के उस भाग में उन सेनाओं के अधिकार गंभीर स्थिति पैदा करेंगे।

इस प्रकार की शांति-सन्धि को ठुकराने का मतलब जर्मनी के एकीकरण को बहुत दिनों के लिए फिर खटाई में डाल देने के बराबर होगा। इस लिए जर्मन जनता तमाम संबंधित देशों से आशा करती है कि वे जर्मन समस्या के इस विवेकपूर्ण और यथार्थवादी हल का विरोध नहीं करेंगे।

यदि एक बार यह शांति-सन्धि हो जाती है तो हम जर्मन एकता के रास्ते की दूसरी मंज़िल पर पहुँच सकते हैं---वह इस एकता के लिए दोनों जर्मन-राज्यों में समझौता-वार्ता की मंज़िल होगी। दोनों राज्यों का एक महासंघ बने और दोनों में सहयोग बढ़े---यही एकमात्र उपाय है। उस महासंघ की क्या हैसियत हो और उसमें दोनों राज्यों की क्या भूमिका हो---यह उतना महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं। सबसे महत्व की बात यह है कि एक महासंघ में रहकर दोनों राज्य परस्पर सहयोग की दिशा में आगे बढ़ें। महासंघ में रहकर दोनों राज्यों की सामाजिक व्यवस्थाएँ जीवन के हर क्षेत्र में अपने-अपने उदाहरण प्रस्तुत करेंगी और एक दिन ऐसा आयेगा जब जर्मन जनता दोनों में से किसी एक व्यवस्था को अंगीकार कर लेगी।

दोनों जर्मन राज्यों में यदि इस प्रकार का एक राष्ट्रीय समझौता हो जाता है तो जर्मन जनता के सामने पूर्णरूप से आत्मनिर्णय की समस्त संभावनाओं का उदय अवश्यम्भावी है।

प० बर्लिन की सड़कों पर अमरीकी टैंक बर्लिनवासियों की आंखों में काँटे की तरह चुभते हैं।

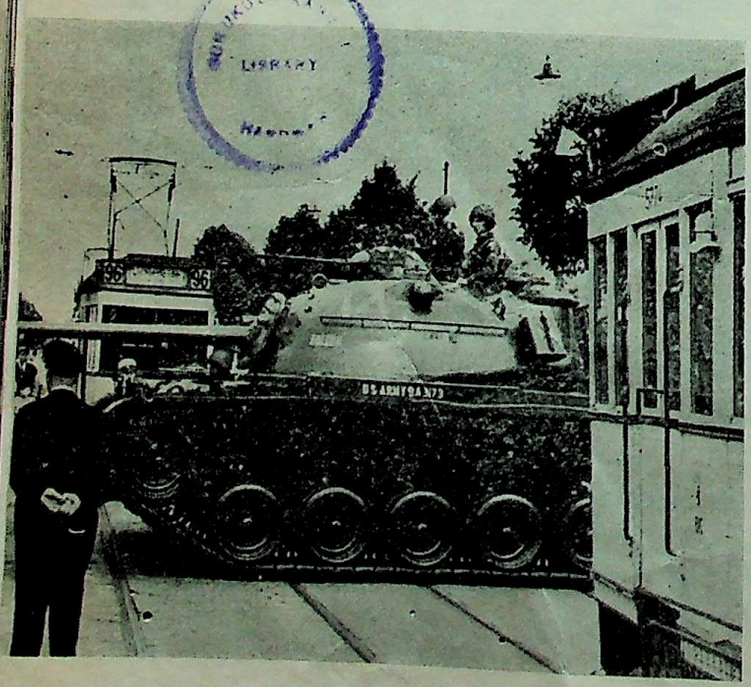

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

व्यक्तित्व की झाँकी :

प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल

ओटो ग्रोटेवाल का जन्म ब्रन्सविक में ११ मार्च सन् १८९४ को हुआ। आप १६ साल की उम्र में छपाई का काम ही सीख रहे थे तभी समाजवादी आन्दोलन से आपका सम्पर्क हुआ। सन् १९२१ में ब्रन्सविक विधान सभा ने आपको मंत्री बनाकर आन्तरिक तथा शिक्षा-विभाग का भार सौंपा। उस समय आपकी उम्र २७ साल थी और वइमर गणतंत्र के मंत्रियों में आप सबसे तरुण थे। १९२३ से १९२४ तक आप को आन्तरिक और न्याय विभाग के मंत्री पद का भार संभालना पड़ा। ब्रन्सविक की जनता की ओटो ग्रोटेवाल में इतनी श्रद्धा और आस्था थी कि आप म्युनिस्पल बोर्ड, विधान सभा और अखिल जर्मन लोकसभा के सदस्य चुने जाते रहे। आपने हैनोवर की अकादमी और बर्लिन विश्व-विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

जर्मनी में जिस समय नाज़ियों का प्रभुत्व बढ़ रहा था, ओटो ग्रोटेवाल ब्रन्सविक सूबे की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष थे। नाज़ियों ने एक स्थिति ऐसी पैदा कर

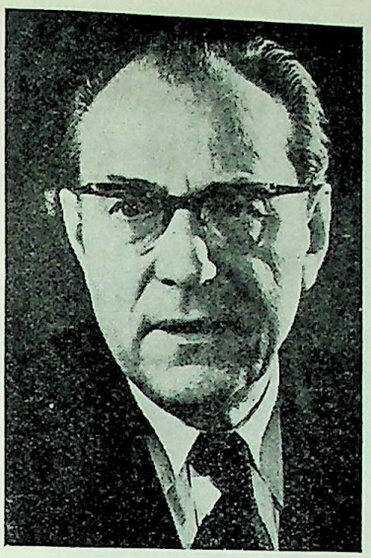

ओटो ग्रोटेवाल

दी कि उन्हें अपना शहर छोड़ देना पड़ा। अब वे बर्लिन और हैम्बर्ग में फ़ासिज्म के विरुद्ध ग़ैर-क़ानूनी संघर्ष में जुट गये। इस संघर्ष के फलस्वरूप उन्हें सन् ३८-३९ में जेल हो गयी।

१९४५ में जब हिटलरी फ़ासिज्म की हार हुई तो ओटो ग्रोटेवाल जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के फिर अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने जर्मनी के मज़दूर वर्ग की एकता क़ायम करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। २१ अप्रैल सन् १९४६ को वह शुभ घड़ी आ ही गयी, जब सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी में विलयन हुआ। कहना न होगा कि इस ऐतिहासिक एकता में ओटो ग्रोटेवाल की भूमिका कुछ कम न थी। तभी से आप मजदूरों की एकता के प्रतीक—सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी—की केन्द्रीय कमेटी और पोलिट-ब्यूरो के सदस्य हैं।

१९४९ में जर्मनी के विभाजन के बाद पीपुल्स चैम्बर द्वारा ओटो ग्रोटेवाल जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री चुने गये। प्रधान मंत्री की हैसियत से आपने जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाने, और उसके आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास की दिशा में महान भूमिका अदा की है। आपके नेतृत्व में दोनों जर्मन राज्यों को शांतिमय ढंग से मिलाने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बार-बार सुझाव पेश किये। सन् १९५८ के आम चुनाव में ओटो ग्रोटेवाल फिर प्रधान मंत्री चुने गये।

विश्वशांति, जर्मनी की शांतिपूर्ण एकता और समाजवाद का निर्माण ये आपके जीवन के सबसे पवित्र लक्ष्य हैं।

जनवाद के बढ़ते चरण :

राष्ट्रीय मोर्चे से सरकार का सहयोग

क्रिस्टा फ्रेड्रिक

जर्मन जनवादी गणतंत्र का संविधान नागरिकों के मौलिक कानूनों का प्रतिरूप है। इसमें हर नागरिक को सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भाग लेने के अधिकार की गारंटी दी गयी है। साथ ही यह भी बताया गया है कि हर नागरिक का यह कर्त्तव्य भी है। (ज. ज. ग. के संविधान की तीसरी धारा)

"मिलकर योजना बनाओ, मिलकर काम करो, मिलकर शासन चलाओ!" यह नारा जनता के हितों और इच्छाओं का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है। जनता की यही इच्छा भी तो थी कि वह अपने देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं के हल में सीधे-सीधे भाग ले और देश को खुशहाली की ओर आगे बढ़ाये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद से उसके आर्थिक और राजनीतिक मामलों को प्रगति की ओर आगे बढ़ाने में नागरिकों की भूमिका दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। इसका मुख्य कारण सरकारी अधिकारियों का राष्ट्रीय मोर्चे के साथ घनिष्ठ सहयोग भी है। जर्मनी का जनवादी ढंग से एकीकरण हो—इस लक्ष्य की प्राप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए राष्ट्रीय मोर्चा सभी देशभक्त तत्वों को एकजुट करता है। इसका एक सुपरिणाम यह भी हुआ कि राष्ट्रीय मोर्चे के मंच पर एकत्र सभी दलों और जनसंगठनों ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया जिसके अनुसार यह तय हो गया कि लोक सभा और जिला, क्षेत्र, नगर, और गाँव की परिषदों में जो उम्मेदवार भेजे जायँ, उन्हें संयुक्तरूप से नामज़द किया जाय। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय मोर्चा जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों को उत्तरोत्तर आर्थिक प्रगति के लिए विशेषरूप से आन्दोलित और प्रेरित करता है। जनता के रहन-सहन का स्तर लगातार और तेज़ी से बढ़ता जा रहा है इसके लिए इस मोर्चे को श्रेय प्राप्त है।

सन् १९४७ तक राष्ट्रीय मोर्चे का मुख्य काम उन कानूनों और प्रस्तावों को जनता के बीच समझाना और उन्हें लागू करने के लिए जनता में जोश पैदा करना था जिन्हें लोक सभा, मज़दूरों की पार्टी, सरकार, स्थानीय जन अधिकारियों तथा खुद राष्ट्रीय मोर्चा परिषद् ने स्वीकृत किया था। इस प्रकार राष्ट्रीय मोर्चे ने जनता की समझ साफ़ करने तथा नाज़ी-युद्ध के भयंकर ध्वंस से देश को निकालने में जनता का जो सक्रिय सहयोग प्राप्त किया वह एक सराहनीय सफलता है।

अवकाश के क्षणों में! बच्चों का यह क्लब राष्ट्रीय मोर्चे के सहयोग का सुफल है।

जब इस ध्वंस की सफ़ाई हो गयी तो नगरों और गावों की निर्माण-योजना का दौर शुरू हुआ। सन् १९५३ में राष्ट्रीय निर्माण योजना का श्री गणेश हुआ। इसके लिए आवश्यक था कि अधिक से अधिक जनता का सहयोग प्राप्त किया जाय तथा पुन-र्निर्माण के मुख्य स्थलों पर सारी संभव शक्ति लगा दी जाय। इसी के साथ इसका यह भी अर्थ था कि जनता से सुझाव लिये जायँ, उसकी इच्छाओं का ध्यान रखा जाय और उसे राजकीय भवन कार्यक्रम में शामिल किया जाय। इस योजना के अन्तर्गत सन् १९५३ से १९५८ के भीतर जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों ने ६६ करोड़ ९४ लाख मार्क के मूल्य का श्रम किया। जनता के इस महान् पुरुषार्थ का फल यह हुआ कि राजकीय भवन कार्यक्रम को देश की राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं के एक स्थायी अंग के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

इस राष्ट्रीय आर्थिक योजना के समक्ष जो कर्त्तव्य हैं उन्हें पूरा करने के लिए राष्ट्रीय मोर्चे की कमेटियों और स्थानीय परिषदों ने मिल जुलकर अपने कार्यक्रमों पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त अपने-अपने क्षेत्रों के लिए तैयार की जाने वाली योजनाओं पर भी उनमें विचार-विमर्श होता है और वे अनुकूल सुझाव पेश करती हैं। इसके बाद वे सुझाव जनता के समक्ष लाये जाते हैं, जिनमें जनता भी अपने गहरे अनुभवों के आधार पर अपना योगदान करती है और बाद को उन्हें लागू भी करती है। इस प्रकार मिल-जुल कर योज-नाएँ बनाने तथा जनता के बीच ले जाकर उनपर विचार-विमर्श करने के कई लाभ हुए हैं। एक उदाहरण काफ़ी होगा। रोथेनबर्ग मशीन तथा ट्रैक्टर स्टेशन क्षेत्र में पशु पालन भी होता है। इस दिशा में राज्य के अधिकारियों ने कुछ सुझाव दिये थे। वे सुझाव जनता के बीच गये तो विचार-विमर्श के बाद पशु-पालन के लक्ष्यों में वृद्धि करनी पड़ी। निम्न-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

लिखित आँकड़े इस तथ्य पर स्वयं ही रोशनी डालते हैं:

अधिकारियों के सुझाव	जनता की राय लेने के बाद
५,७०० पशुधन	६,४७० पशुधन
३,३०० गायें	३,६२५ गायें
६,६०० सूअर	७,६३८ सूअर
१,५०० भेड़ें	२,०७० भेड़ें

इसी प्रकार मांस के उत्पादन लक्ष्यों में भी वृद्धि हुई।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हर कहीं इस तरह की मिसालें मिलेंगी। यही वजह है कि जनता की दिनोंदिन बढ़ती माँगों की पूर्ति में कोई अड़चन नहीं आने पाती।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बेरोज़गारी का नाम तक नहीं है। समाजवादी समाज में ही यह संभव है कि हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार चाहे कोई काम सीखे या अध्ययन करे। हमारे देश में योग्य और कुशल मज़दूरों, हर तरह के इंजीनियरों और वैज्ञानिकों का बड़ा महत्व है, और यह ज़रूरी भी है क्योंकि रोज़ नये-नये उद्योग खुलते जा रहे हैं और उनमें सब तरह से शिक्षित व्यक्तियों की माँग बढ़ती जाती है। आज जर्मन जनवादी गणतंत्र एक महान् निर्माण की रंगस्थली बना हुआ है। नये-नये उद्योगों के साथ नये मकान, नये स्कूल, नये अस्पताल, नयी शोध संस्थाएँ बच्चों के नये उद्यान और नये दफ्तर उगते जा रहे हैं, और वे सब के सब आधुनिकतम साधनों से सुसज्जित हैं। जन जीवन निरन्तर समृद्ध होता जा रहा है। लोगों की आमदनी बढ़ती जा रही है और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ सस्ती होती जा रही हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मेहनतकश जनता देश की राष्ट्रीय प्रगति में अपने आप इतने उत्साह के साथ क्यों हाथ बटा रही है? इस बात का उत्तर हमारी सफलताएँ हैं।

जनता का यह सहयोग जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी मिलता है। उदाहरण के लिए ज्विकाउ ज़िले में एक सरकारी ईंटों का भट्टा है। वह अपने लक्ष्य से पीछे रह गया था। उसकी पूर्ति के लिए दस लाख ईंटें और बनानी थीं। ज़िले की राष्ट्रीय मोर्चा समिति ने उस क्षेत्र की अन्य कमेटियों का सहयोग प्राप्त किया और भट्टे के अधिकारियों के साथ एक समझौता हुआ जिसमें सरकारी कर्मचारियों के भी प्रतिनिधि रखे गये। ५३१८ घंटे का श्रमदान हुआ। जिसके फलस्वरूप ८२०० मार्क के मूल्य का काम हुआ।

राष्ट्रीय मोर्चे की देख-रेख में एक कृषि सहकारी समिति के किसानों ने इस धुलाई-गृह का निर्माण किया है।

इस तरह के सहयोग का एक और सुपरिणाम है। उद्योगों के आस-पास बसने वाली जनता का उन कारखानों से घनिष्ठ संबंध हो जाता है। यह संबंध एकतरफा भी नहीं। कारखाने के लोग भी उस क्षेत्र के निवासियों की हर संभव तरीक़े से मदद करते हैं। मिसाल के लिए बर्लिन-ट्रेप्टाओ के मज़दूरों ने आस-पास के घरों की मरम्मत करने का फ़ैसला किया। इससे कारखाने के काम के घंटों को कुछ क्षति पहुँचना

(शेष पृष्ठ ९ पर)

प्रिय पाठक बन्धु,

जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक नये जीवन का सृजन हो रहा है जिसके प्रति भारतीय मित्रों की दिलचस्पी स्वाभाविक है। क्या ही अच्छा हो, यदि आप 'सूचना पत्रिका' को अपने अन्य सुहृदों के लिए भी सुलभ बनाते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत में व्यापारिक मैत्री

जर्मन जनवादी गणतंत्र में जनता के रहन-सहन का स्तर दिन-प्रति-दिन ऊँचा होता जा रहा है और भविष्य में भी इसके बढ़ते रहने की पूरी आशा है। निश्चय ही इस प्रगति का कारण हमारी आर्थिक योजनाएँ ही हैं।

हमारे जीवन-स्तर के लगातार ऊँचा होते रहने का एक प्रमाण व्यापक पैमाने पर खाद्यान्नों का आयात भी है। इस आयात का एक बड़ा भाग भारत से आता है क्योंकि उसके बदले में जर्मन जनवादी गणतंत्र से भारत में जाने वाले माल का परिमाण भी उसी अनुपात में बढ़ सकता है।

इस प्रकार परस्पर व्यापार-समझौते का लाभ स्पष्ट है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का जितना माल भारत में बिका, उस सारे पैसे से भारत का माल ख़रीद लिया गया। इसका सुफल यह रहा कि भारत ने खाद्यान्न संबंधी अपने परम्परागत निर्यात में पर्याप्त वृद्धि की। भारत में पैदा हुई चीज़ें मसलन काफ़ी, चाय, काजू, गोलमिर्च आदि की जर्मन जनवादी गणतंत्र में बहुत बिक्री है।

लइपज़िग मेले (१९५९) में भारतीय प्रदर्शिनी के संचालक श्री कुमार के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप-विदेश व्यापार मंत्री जी० वाइस।

भारतीय व्यापारियों ने सबसे पहले लइपज़िग मेले में ज. ज. गणतंत्र के आयात-संगठनों के सामने काजू के व्यापार का सुझाव रखा था। तब से इसका व्यापार बहुत बढ़ गया और उसे इतना पसन्द किया गया कि अब जर्मन जनवादी गणतंत्र में मिठाई और रोटी का जितना भी कारोबार है उसके लिए भारत के अलावा और कहीं का काजू नहीं मँगाया जा रहा है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सन् १९५८ में भारत से १९,५५५ बक्से काजू के ख़रीदे थे। हर बक्स ५० पौंड वज़न का था, और १९५९ में वह संख्या ७३,००० बक्सों तक बढ़ गयी। इस प्रकार हमारा देश भारतीय काजू के ख़रीदारों जैसे अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन में सबसे आगे रहा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत की जिस दूसरी चीज़ की सबसे ज्यादा खपत होती है और जिसका व्यापार तेज़ी से बढ़ रहा है, वह है कच्ची काफ़ी। १९५९ में भारतीय काफ़ी के ख़रीदारों में ज. ज. गणतंत्र सबसे आगे रहा। इससे भारतीय काफी उद्योग को बड़ी सहायता मिली। दक्षिण अमेरिका में काफ़ी का भारी स्टाक जमा हो गया था। अतः वहाँ से दामों में गिरावट आयी। लेकिन उसका भारत पर कोई असर नहीं पड़ सका। सन् १९५८ में ज. ज. गणतंत्र नें भारत से १५०० टन काफ़ी का आयात किया, सन् १९५९ में वह बढ़कर ३७०० टन हो गया। ज. ज. गणतंत्र में लोगों को भारतीय काफ़ी का स्वाद सबसे अधिक पसन्द है।

ज. ज. गणतंत्र में काफ़ी की तुलना में चाय की खपत कम होती है। इसलिए उसकी ख़रीद भी कम ही है। फिर भी सन् १९५८ में जितनी भारतीय चाय ख़रीदी गयी थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

सन् १९५९ में उसकी मात्रा में ५० प्र. श. की वृद्धि हुई।

हमारे देश में गोलमिर्च का कई तरीक़ों से उपयोग किया जाता है। फलतः भारतीय गोलमिर्च की ज. ज. गणतंत्र में हर कहीं माँग है—मांस सुरक्षित करने के उद्योग में, होटलों और रेस्तराँ में तथा घरों में। पहले ज. ज. गणतंत्र अन्य देशों से भी गोलमिर्च मंगाता था। लेकिन अब हमारे देश में गोलमिर्च की सारी माँग केवल भारत से ही पूरी की जाती है। दूसरे मसाले भी अब भारत से ही बराबर मँगायें जाते हैं।

हमारी योजनाओं में पशुधन की वृद्धि को भी बहुत महत्व दिया जाता है ताकि हमारी जनता को मक्खन, गोश्त और अंडे अधिक से अधिक मात्रा में मिला करें। लेकिन पशुधन की वृद्धि के साथ चारे की माँग भी बढ़ती है जिसे पूरा करने के लिए हम भारत से खली का अधिकाधिक आयात करने लगे हैं। सन १९५८ तक भारत से खली का हमारे देश में कुछ भी आयात नहीं था। लेकिन १९५९ में हमने १०,००० टन खली मँगायी अब तक ३०,००० टन खली का आर्डर बुक किया जा चुका है, जो सन् १९६० तक हमारे देश में पहुँच जायगा।

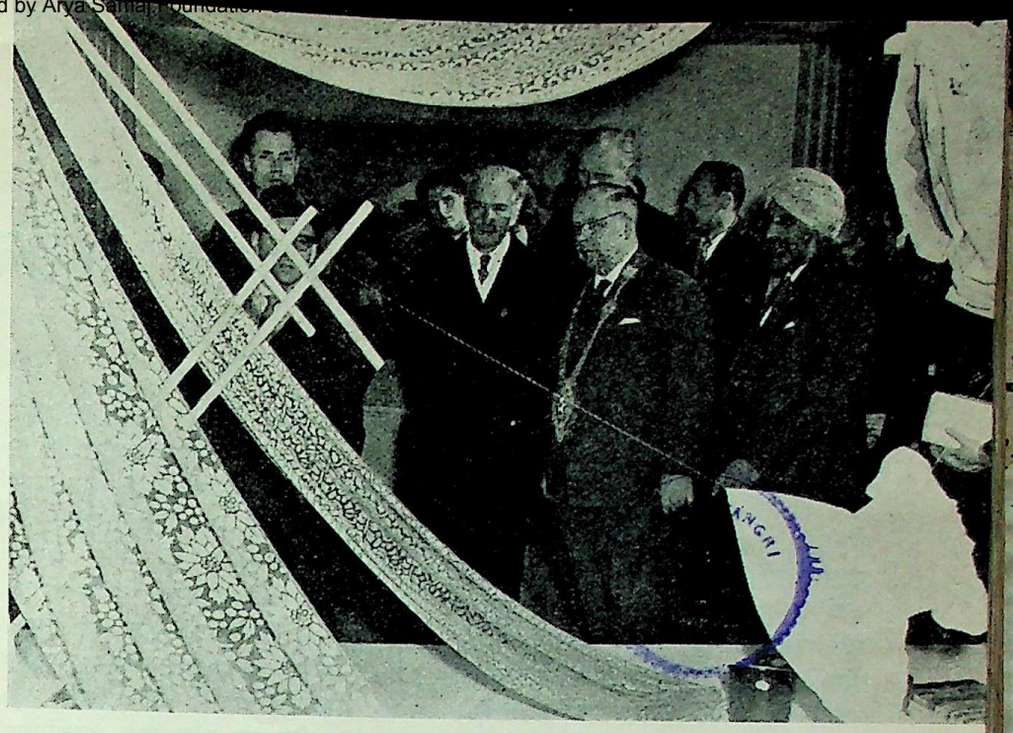

लइपज़िग मेले (१९५९) में जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री डा० लोथर बोल्ज़ भारतीय मंडप का निरीक्षण कर रहे हैं!

इस प्रकार हम देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत से अपने व्यापार की मात्रा हर साल बढ़ाता आ रहा है। इस प्रगति को क़ायम रखने के लिए ज़रूरी है कि भारत से जाने वाले माल की सूची में नयी-नयी चीज़ें जुड़ती रहें। इनमें मिसाल के लिए फलों का रस, शहद आदि शामिल किये जा सकते हैं। कहने की ज़रूरत नहीं कि इस व्यापार संबंध के लिए ख़रीदने और बेचने वालों में सद्भावनापूर्ण सहयोग की आवश्यकता है।

लइपज़िग मेले (१९५९) में भारत ने अपने खेलकूद के सामान की भी प्रदर्शिनी की। जर्मन जनवादी गणतंत्र के खिलाड़ियों को यह बल्ला शायद बहुत पसंद आ रहा है!

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्वाभाविक था। किन्तु मज़दूरों ने अपनी ड्यूटी के अलावा भी काम करके उस क्षति को पूरा किया। यह समाजवादी समाज के परस्पर सहयोग का चरम उदाहरण है, और हमारे देश में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। साथ ही इस उदाहरण से जनता और राज्य के आत्मीय संबंधों का भी पता चलता है और यह सिद्ध होता है कि शांति, सुख और समृद्धि के लिए जनता में कितनी महान् चेतना व्याप्त है और वह साथ मिलकर काम करने, योजना बनाने और शासन करने के प्रति कितनी जागरुक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मोतियों की माँ' : एक फ़ैशन - बटन

'मोतियों की माँ'--यही वह सीप है जो अपनी रंगबिरंगी छवि के नाते सदियों से हीरे-जवाहरात की सहेली बनती आ रही है। आगे चलकर उसका उपयोग बटन बनाने में किया जाने लगा। आज वह फ़ैशन के तमाम परिवर्तनों की भी सहेली बनी हुई है। रेशमी कपड़ों के लिए तो इस तरह के बटनों की माँग सबसे ज्यादा होती है। फिर उसके कारखाने की तिजारत का क्या कहना!

निर्माण की प्रक्रिया

इन बटनों के बनाने की प्रक्रिया बड़ी सरल है। मोतियों की माँ--सीप को गोल-गोल खानों में डाल कर कसा जाता है। इसे 'क्विक' माडल कहते हैं। इस कसाव के दौरान वह सीप कई दशाओं से होती हुई अन्त में बटनों का रूप धारण कर लेती है। आठ घंटे के दिन में एक मशीन से ७२०० बटन तैयार होते हैं।

इसके बाद बटनों की मोटाई की दृष्टि से उन्हें कई श्रेणियों में विभाजित किया जाता है ताकि उनका खुरदुरापन मिटाने के लिए अगला क़दम उठाया जा सके।

इनमें 'बैल की आंख' नामक बटन भी तैयार होती है जिसपर बैल के कान की बिलकुल स्वाभाविक तस्वीर उतर आती है। इस प्रकार के बटन दो प्रक्रियाओं से गुज़रने के बाद तैयार होते हैं। पहले बटन के अगले हिस्से को गावदुम बनाया जाता है, फिर पिछले हिस्से पर बैल के कान और आँख की स्वाभाविक आकृति उतारी जाती है। इन दोनों प्रक्रियाओं के लिए हम 'बोम्बिना' मशीन को काम में लाते हैं।

फिर बटनों में छेद करने का नम्बर आता है। इसके लिए या तो 'यूनियन पर्फ़ेक्टा' का या 'पर्फ़ेक्ट' नामक बोरिंग मशीन का इस्तेमाल किया जाता है। 'पर्फ़ेक्ट' हमारी सबसे नयी मशीन का नाम है। यह काम इतना सरल है कि नये मज़दूर भी इसे संभाल सकते हैं और अपनी योग्यतानुसार प्रतिदिन ४ से लेकर ८ हज़ार तक बटनों में छेद कर सकते हैं। 'पर्फ़ेक्ट' की उत्पादन-क्षमता लगभग १६ हज़ार बटनों में छेद बनाने तक की है। बैल की आँख वाले बटनों पर कान बनाने के लिए 'ट्रोंकाज' बोरिंग मशीन को काम में लाया जाता है।

इसके बाद बटनों में चमक और आब लाने का क्रम शुरू होता है। यह क्रम बहुत ही सरल है। इसके लिए काम में लायी जाने वाली मशीन का नाम यूनियन है। इसमें एक बड़ी सी ढोल के आकार का एक पात्र होता है जिसके १।३ भाग में पानी और १।३ भाग में बटन भर दिया जाता है। ढोल का १।३ भाग खाली रहता है। पानी के साथ ही ज़रूरत भर को झाँवा भी मिला रहता है। इसके बाद ढोल धीरे-धीरे घूमता है। एक निश्चित समय के बाद बटनों का खुरदुरापन मिट जाता है, किनारे साफ़ हो जाते हैं और चमक आ जाती है।

बटनों पर पालिश

लेकिन इस प्रक्रिया के बाद बटनों में जो चमक आती है, उससे शायद गाहकों को संतोष न हो, तो उन पर पालिश का क्रम चालू होता है। वह भी बहुत ही सरल है। बटनों को पानी से भरे लोहे के टब में डाल देते हैं और पानी को तब तक गरम करते रहते हैं जब तक उसमें एक उबाल न आ जाये। फिर टब में एक प्रकार का एसिड डालते हैं तथा टब को हिलाते रहते हैं। फिर उन्हें निकाल कर सुखा लिया जाता है। अब बटनों में इच्छित चमक और निखार आ जाता है।

मोतियों की माँ--सीप यदि सौ की संख्या में जमा किया जाय तो उनमें से हर एक का रंग और निखार अलग-अलग होगा। यहाँ तक कि एक ही सीप के बने कई बटन अलग-अलग रंगों की झलक लिये होते हैं। इसे किसी प्रकार बटन बनाने वालों की कमी नहीं समझ लेना चाहिए-- क्योंकि यही रंग-विरंगापन ही तो 'मोतियों की माँ' की अद्भुत विशेषता है।

नक़ल संभव नहीं

अन्ततः इन बटनों को कई श्रेणियों में बाँट दिया जाता है। पहली, दूसरी और तीसरी श्रेणी को चाँदी के खानों में रखा जाता है तथा चौथी श्रेणी को नीली दफ़्तियों में।

बटनों को श्रेणियों में बाँटते समय उनकी चमक और निखार के साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि वह सीप कहाँ की है। सर्वोत्तम बटन मकासार सीप से बनते हैं। फिर लिंगाह, बम्बई, ला पाज़, पनामा और वेजुएला की सीपों का नम्बर आता है।

कहना न होगा कि 'मोतियों की माँ' वाले बटन अपने आश्चर्यजनक सौंदर्य के कारण सदा ही ग्राहकों का मन मोहते रहेंगे। इसकी कोई नक़ल सम्भव नहीं।

विस्तृत विवरण के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारत स्थित व्यापार-दूतावास और उसकी शाखा मिस्त्री भवन, १२२ दिनशा वाचा रोड, बम्बई से कृपया सम्पर्क स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

१९६० — एक निर्णायक वर्ष

क्लाउस उंगर

सन् १९६० के पदार्पण के साथ ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में महान् उथल-पुथल मच गयी। १९५९ के अन्त तक सहकारी समितियों द्वारा केवल ५० प्र. श. भूमि पर खेती होती थी। सन् १९६० के अप्रैल महीने से एक नया अध्याय शुरू हुआ यानी अब समूची भूमि पर समाजवादी ढंग से खेती होने लगी और इस प्रकार इतने बड़े पैमाने की खेती में दस हज़ार आधुनिक कृषि-यंत्रों का उपयोग किया जा सकता है, उपज बढ़ाने तथा पशुधन की वृद्धि में नये तरीक़े लागू किये जा सकते हैं।

उत्पादन-क्षमता की यह वृद्धि जनता की आवश्यकता को पूरी करने में कितनी बड़ी सहायक सिद्ध होगी --यह आसानी से अनुभव किया जा सकता है। सहकारी खेती में किसानों की आमदनी भी साथ-साथ बढ़ जायगी, काम के घंटे, और छुट्टियाँ नियमित हो जायँगी तथा जिस तरह के सांस्कृतिक जीवन का स्वप्न हमारा किसान सदियों से देखा करता था, आज मूर्त रूप में देखने का उसे सुअवसर मिलेगा।

गांवों में जो समाजवादी परिवर्तन आया है उसका फल यह होगा कि सातवर्षीय योजना (१९५९-१९६५) ने कृषि के क्षेत्र में जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं, वे दो वर्ष पहले ही पूरे हो जायँगे। इसका मतलब यह भी होगा की जर्मन जनवादी गणतंत्र में पशुओं से बनने वाली जितनी भी वस्तुओं की ज़रूरत है उसकी पूर्ति १९६३ तक देश के ही उत्पादन से होने लगेगी। फलतः अभी उन चीज़ों को विदेशों से मँगाने में जो पैसा ख़र्च होता है, वह बच जायगा और उसका उपयोग दूसरे आयात पर किया जा सकेगा।

गाँवों में यह जो समाजवादी वसन्त आ रहा है उससे उद्योगों के सामने नये और महान् उत्तरदायित्व आना स्वाभाविक है। पिछले तीन सालों में खेती की मशीनों के उत्पादन में ढाई गुनी वृद्धि हुई है लेकिन यह काफ़ी नहीं है, क्योंकि सन् ६० में जितनी खेतिहर मशीनों की माँग का अनुमान किया गया था, सन् १९६१ में वह मांग ५० प्रतिशत अधिक हो जायगी। अतः अधिक मशीनें बनाने के लिए इसी वर्ष अधिक पूंजी लगानी पड़ेगी।

सन् १९६० केवल खेती की उपज बढ़ाने की दिशा में ही नहीं, बल्कि अन्य आर्थिक प्रश्नों के हल के लिए भी निर्णायक है, अर्थात् यह वर्ष समूचे औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने और क़ीमतें कम करने की ओर भी एक महत्वपूर्ण क़दम सिद्ध होगा। इस लक्ष्य के लिए बिजली और रसायन का अधिक उत्पादन पहली शर्त है। सन् १९५९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र ३७२० करोड़ कीलोवाट बिजली पैदा करता था जो सन् ६० में बढ़ कर ४ करोड़ और सन् ६५ में ६३०० करोड़ कीलोवाट से भी अधिक हो जायगा।

बिटल फ़ील्ड और हाले नामक स्थानों पर करोड़ों मार्क की पूंजी से बड़े-बड़े रसायन कारखाने बन कर खड़े हैं। इसी वर्ष के भीतर इन नये कारखानों में उत्पादन शुरू हो जायगा। अन्य स्थानों पर खनिज और तेल के मिले-जुले कारखाने बन चुके हैं। इसी प्रकार दूसरे उद्योगों से संबंधित कारखानों की भी इमारतें दिखायी पड़ती हैं। खनिज तेल कारखाने से कुछ ही मील दूर कागज़ का एक भारी कारख़ाना बन रहा है जहाँ सन् ६१ तक मशीनें लग कर तैयार हो जायेंगी।

उद्योगों की प्रगति की चर्चा करते समय उस उद्योग का जिक्र बहुत ज़रूरी हो जाता है जिसमें बिजली से चलने वाले यंत्रों जैसे टेलीविज़न सेट, टेलीफ़ोन, इलेक्ट्रिक मोटर, मोटर जेनरेटर आदि का उत्पादन होता है। इस उद्योग का उत्पादन सन् ६५ में सन् ५८ की अपेक्षा २६६ प्रतिशत अधिक हो जायगा। देश के तमाम औद्योगिक क्षेत्रों में यह प्रगति सबसे महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

चौके-चूल्हे में आधुनिक प्रसाधन घरवालियों के लिए नये जीवन का द्वार खोल देते हैं।

CC-0. In

amaj Foundation Chennai and eGangotri

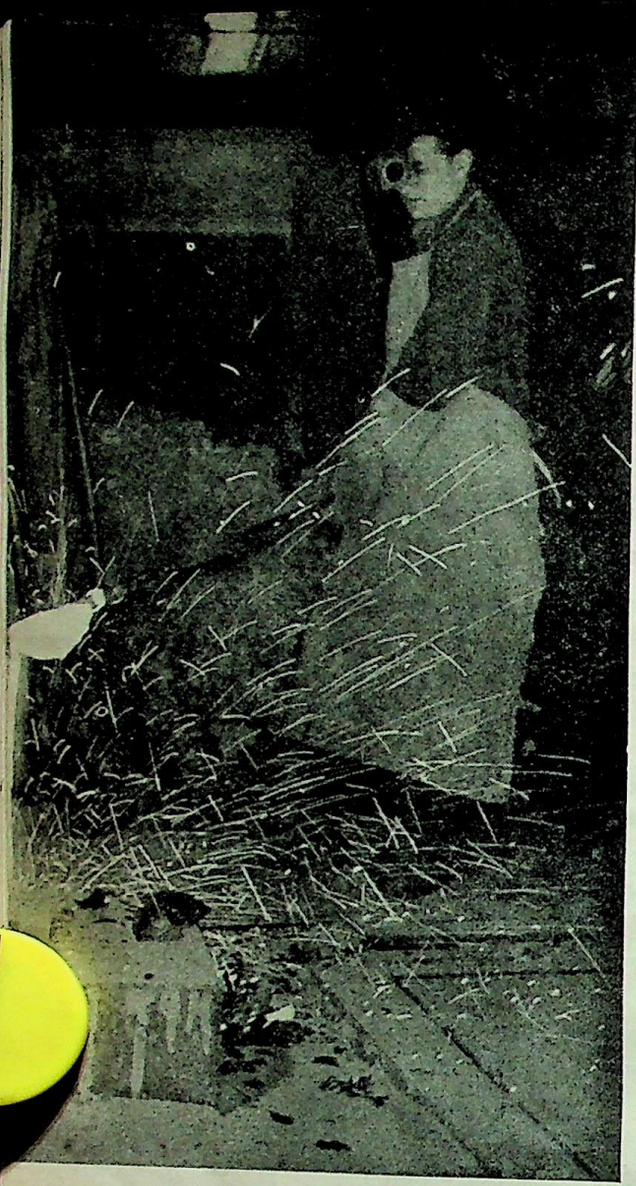

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

स्पात नगर रीज़ा

डी० एच० केगेल

वैसे तो रीज़ा को एक क़स्बे की हैसियत आज से लगभग तीन सौ साल पहले, यानी सन् १६२३ में ही मिल चुकी थी, लेकिन वह नाम उस दिन सार्थक हुआ जब सन् १८३९ में एल्वे नदी के नये पुल से होती हुई पहली बार रीज़ा में रेल पहुँची और वहाँ एक औद्योगिक केन्द्र का जन्म हुआ। उन दिनों वहाँ अधिकांश किसानों की ही आबादी थी।

रीज़ा के स्पात मज़दूरों को अपनी भूमिका पर गर्व है।

रीज़ा स्पात कारख़ाना

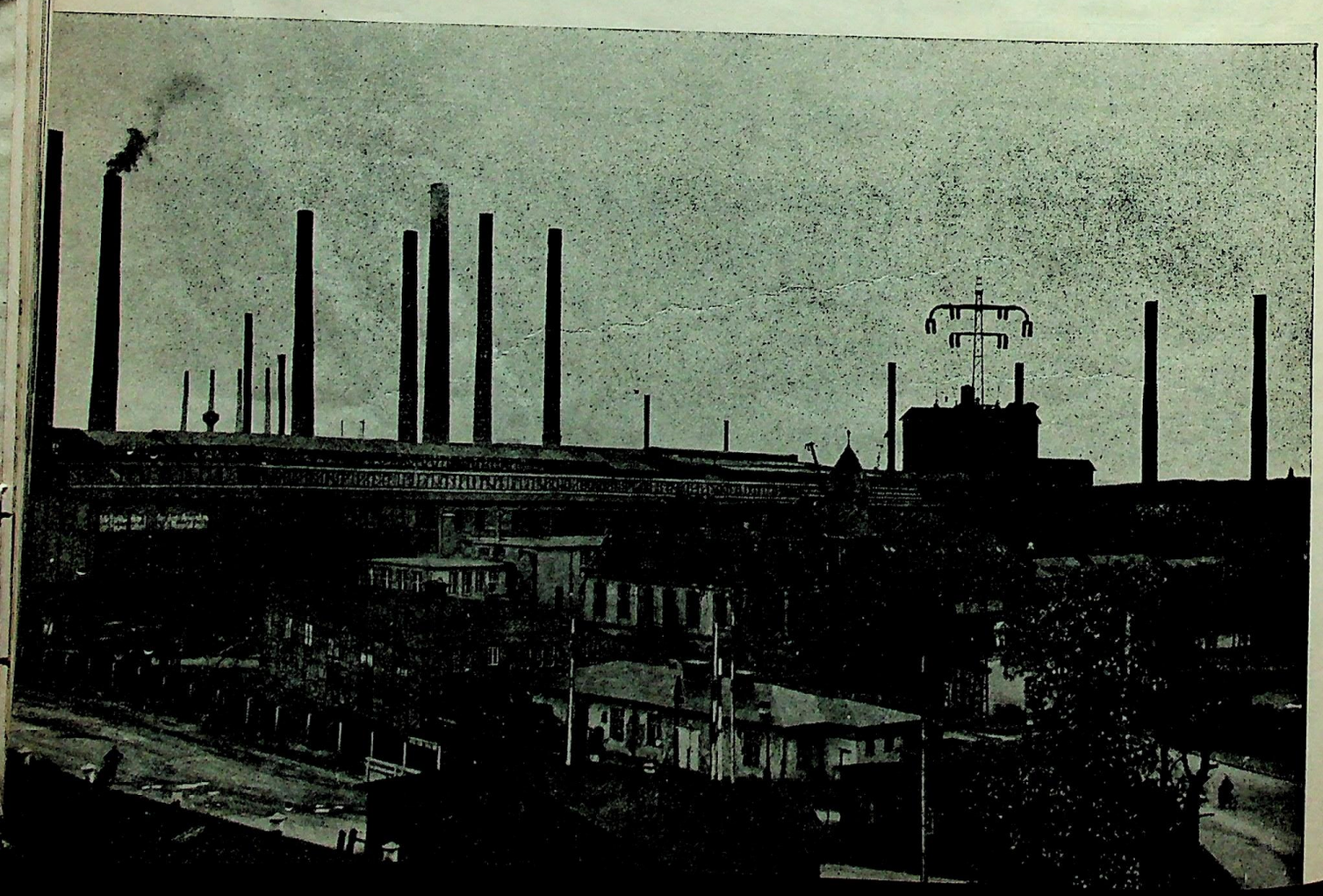

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

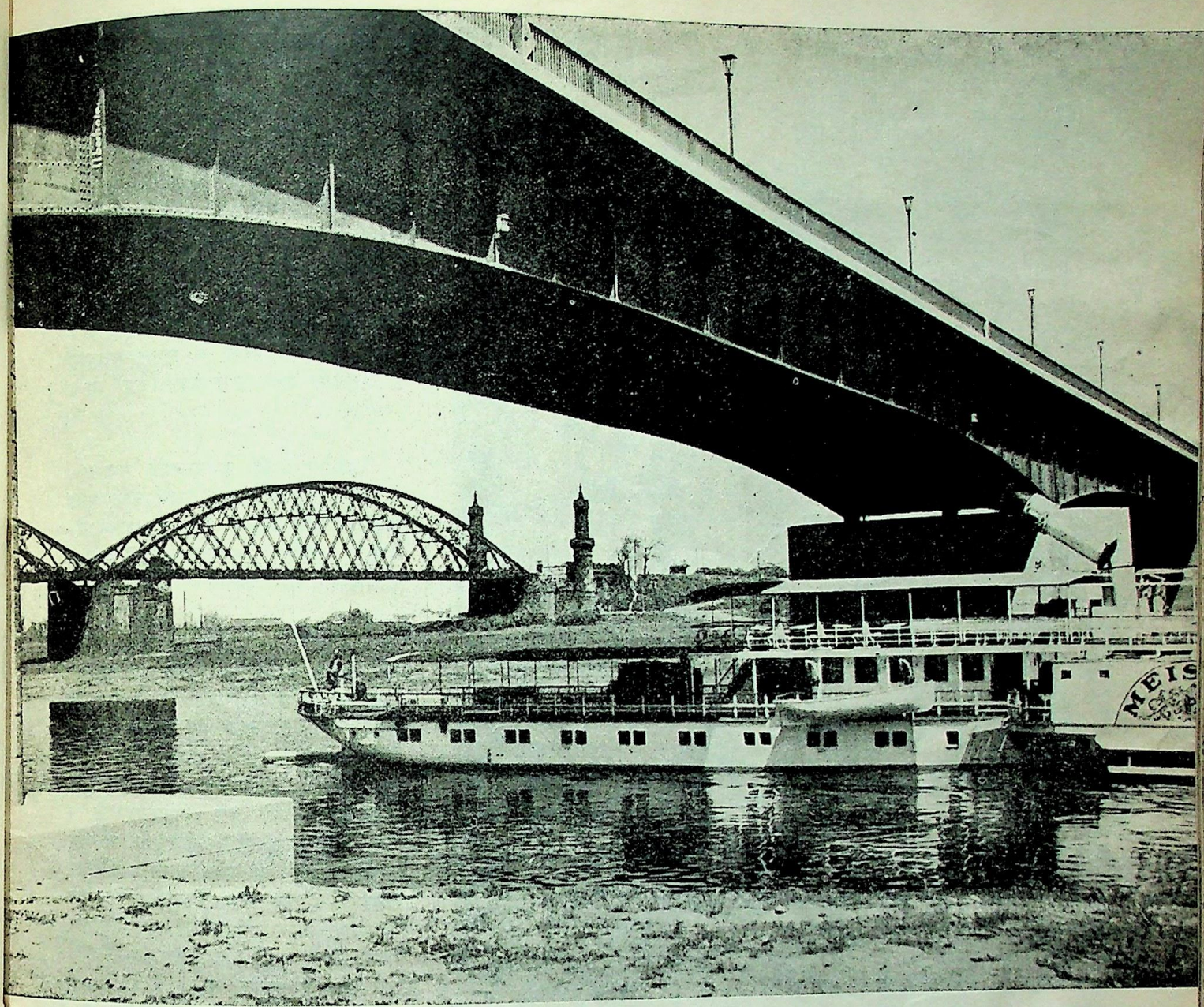

रीज़ा के नये और पुराने पुलों की पृष्ठभूमि

रीज़ा के अंचल में बहने वाली एल्बे नदी और रेलवे, दोनों ने मिलकर वहाँ उद्योगों के पनपने में बड़ी सहायता की। सन् १८४३ और १८४८ के बीच वहाँ लोहा गलाने का जो कारखाना बना, वही आज सचमुच जर्मन जनवादी गणतंत्र के सबसे बड़े धातु कारखाने का मर्मस्थल सिद्ध हुआ।

लेकिन रीज़ा में सबसे पहले एल्बे नदी के द्वारा जलमार्ग विकसित हुआ, फिर क्रमशः आरामिल, तेल मिल, और जहाज़ बनाने का एक छोटा सा कारखाना खुला। फिर और भी उद्योग उगने लगे जिनमें दियासलाई और साबुन के कारखानों ने रीज़ा को कुछ ही दिनों में एक औद्योगिक केन्द्र का महत्व दे डाला। तब तक अनेक नयी बस्तियाँ बस चुकी थीं, सड़कों का जाल बिछ चुका था और रेलवे और देहात का भेद मिट चुका था।

लेकिन फिर भी रीज़ा को एक ऐसे तकनीकी शक्ति की ज़रूरत हमेशा बनी रही जो उसे दुनिया के बड़े औद्योगिक नगरों की पाँत में लाकर खड़ा कर देती। वह शक्ति उसे रेल आने के लगभग सौ वर्ष बाद मिली। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने रीज़ा को वह शक्ति दी और आज रीज़ा एक नामी स्पात नगर बन चुका है।

रीज़ा के भव्य स्पात कारखाने, उसकी दर्जनों गगनचुम्बी चिमनियों, धधकती हुई भट्टियों और उनमें काम करने वाले ९ हज़ार स्पात-मज़दूरों की छाप किसी भी दर्शक के मन पर अमिट रह सकती है। समाजवाद के निर्माण में ज. ज. गणतंत्र आज जिस तेज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येना की एक भवन-शृंखला का नमूना

से अपना आर्थिक विकास कर रहा है --रीजा के स्पात की उसमें बहुत बड़ी भूमिका है।

सन् १९४९ में यहाँ २५ वर्कशाप खुले, एक बिल्कुल नया रोलिंग मिल का निर्माण हुआ, दो बिजली की और नौ दूसरी तरह की भट्टियाँ खोली गयीं। फलतः आज प्रतिदिन १९०० टन स्पात इन भट्टियों से निकलता है। सन् १९५९ में रीज़ा के स्पात मज़दूरों ने ७ लाख टन स्पात पैदा किया था।

मार्टिन भट्टी के मज़दूर सन् ५० में १७९.२ कीलोग्राम स्पात प्रति घंटा पैदा करते थे। सन् १९५८ तक आते-आते उनकी उत्पादन-क्षमता २६५ कीलोग्राम हो गयी।

ये स्पात मज़दूर रीज़ा को अपना नगर कहने में गर्व का अनुभव करते हैं। औद्योगिक क्षेत्र के किनारे-किनारे हरियालियों के बीच उनके घर बने हैं। उनका अपना एक क्लब है। उसमें मंच की भी व्यवस्था है। यहाँ ड्रेसडन और मोयसेन के मशहूर कलाकार आते हैं और अपना अभिनय करते हैं। अब एक विशाल स्टेडियम भी बन चुका है। यहाँ एक ट्रेनिंग स्कूल भी है जहाँ एक हज़ार अपरेन्टिसों को काम सिखाया जाता है।

इस 'स्पात-केन्द्र' को देखने से ऐसा लगता है कि यहाँ अब किसी और उद्योग के लिए कोई गुंजायश नहीं। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र के ड्राइवरों को रीज़ा के बने टायर बहुत पसन्द हैं। सिग्रेट पीने वालों को रीज़ा की दियासलाइयाँ बहुत प्यारी लगती हैं।

पिछले युद्ध ने एल्बे के विशालकाय पुल को नष्ट कर दिया था। उसका फिर से उद्धार किया गया। आज एल्बे का पुल और स्पात कारखाना --दोनों एक ऐसे औद्योगिक नगर के प्रतीक बन चुके हैं जिसमें समृद्धि के फूल दिन दूने रात चौगुने बढ़ते जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव के शिक्षक का जीवन

वेरनर क्लीन

जर्मन जनवादी गणतंत्र के शिक्षा-मंत्रालय ने १२ जून १९५८ को चौबीस शिक्षकों को 'विशिष्ट जन शिक्षक' की उपाधि से पुरस्कृत किया था।

उनमें से एक हैं श्री जोसेफ क्रोमर। आपका एक हाथ लड़ाई में जाता रहा। सन् १९४५ में आप लड़ाई से लौटे और तभी से बच्चों को पढ़ाने का काम कर रहे हैं। शिक्षक क्रोमर किसी बड़े शहर में नहीं रहते, न किसी बड़े स्कूल में ही पढ़ाते हैं, बल्कि उन्होंने यह काम ऐसी जगह शुरू किया जहाँ शिक्षकों को कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। क्रोमर ने एक गाँव में शिक्षण प्रारम्भ किया।

वे आज भी उसी गाँव में रहते हैं और वहाँ वे अपने उत्तरदायित्व को इस ढंग से पूरा करते हैं कि 'विशिष्ट शिक्षक' की उपाधि उनके सर्वथा योग्य कही जायगी।

उस गाँव का नाम वेसेन्धल है जो स्ट्रासबर्ग शहर के पास स्थित है। यह गाँव सुन्दर बनों और झीलों से घिरा हुआ है और इसीलिए बर्लिन-निवासियों में इसके प्रति बड़ा ही आकर्षण है। बर्लिन से भी इस गाँव की दूरी केवल ४० कीलोमीटर है।

शिक्षक क्रोमर इस गाँव की एक हस्ती हैं जो अनेक जिम्मेदारियों के बीच गाँव के युवकों के साँस्कृतिक विकास और शिक्षा पर विशेष ध्यान रखते हैं।

श्री क्रोमर के साथ कुछ ही घंटे रहने के बाद मुझमें उनके काम के तरीकों के प्रति गहरी दिलचस्पी पैदा हो गयी।

श्री क्रोमर का निवास ही यह बता देता है कि इस गाँव में भी उनका रहन-सहन बहुत ही मनमोहक है। तीन सुसज्जित कमरे, बढ़िया रेडियो और एक छोटी सी मोटर। उन्होंने मुझसे कहा, "यह सच है कि गाँव के अध्यापक की आमदनी हज़ारों तक नहीं जाती, लेकिन यहाँ सुख और संतोष के साथ जीवन बिताने के लिए इतना काफ़ी है।"

गाँव के किसी अध्यापक के लिए खेती की समस्याओं से परिचित होना ज़रूरी है क्योंकि आखिरकार उसे किसानों के बच्चों को ही तो पढ़ाना होता है। फलतः जोसेफ़ क्रोमर ने खेती से संबंधित पर्याप्त वैज्ञानिक ज्ञान अर्जित कर लिये हैं और इसीसे वे कृषि सहकारी समिति के स्थायी सलाहकार भी हैं। लेकिन क्या यह सारे काम उनके पेशे के अनुकूल हैं? जोसेफ़ क्रोमर की राय है, 'क्यों नहीं, बिलकुल अनुकूल हैं। हम बच्चों को बहुविध शिक्षाएँ देना चाहते हैं ताकि उन्हें जीवन में अपना मार्ग चुनने में आसानी हो और वे समाज के उपयोगी सदस्य बन सकें। मेरा अनुभव है कि किसान के बच्चों में बड़ी प्रतिभाएँ होती हैं। मेरे कुछ पुराने छात्र आज इन्टरमीडिएट और हाई स्कूलों में पढ़ रहे हैं, कुछ ट्रैक्टर ड्राइवरी कर रहे हैं, कुछ पुस्तकालयों में हैं और इस प्रकार वे अनेक पेशों में लगे हुए हैं।" क्रोमर ने एक विशेष गर्व के साथ मुझे बताया कि आठवीं से निकलने के बाद अब तक उनके सारे छात्र किसी न किसी पेशे में दक्षता प्राप्त कर चुके हैं।

कोमल बनस्पति [illegible] बच्चे [illegible] प्रयो[illegible]

कोमल बनस्पतियाँ कैसे हरी-भरी रहें? बच्चे भी प्रयोग में लगे हुए हैं।

इस स्कूल की कक्षाओं और पढ़ाई के साधनों की एक झलक से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अच्छी शिक्षा के लिए जिन-जिन साधनों की ज़रूरत होती है वे सब के सब देहाती स्कूलों में भी उपलब्ध हैं। यहाँ सारे विषयों तथा विशेषरूप से भौतिक शास्त्र, जीवशास्त्र तथा रसायन शास्त्र जैसे प्राकृतिक विज्ञान के विषयों पर चित्रों से संबंधित पर्याप्त सामग्री है। ऐसी स्थिति में इन विषयों के अध्यापन के समय यदि बच्चे अपने पाठ के दौरान होने वाले प्रयोगों पर पूर्ण मनोयोग से काम करते हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

स्कूल चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। यह एक महत्व-पूर्ण प्रश्न है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्कूलों का खर्च सरकार उठाती है। किसानों को अपने बच्चों की शिक्षा की कोई चिन्ता नहीं होती। इस समय वेसेन्धल जैसे छोटे से गाँव में चालीस बच्चे स्कूल में शिक्षा पा रहे हैं। उन्हें सारी पाठ्यपुस्तकें, चित्र और अन्य सामग्री मुफ्त मिलती है। इस स्कूल के खर्चे के लिए ६ हज़ार मार्क प्रतिवर्ष का अनुदान स्वीकृत किया जाता है। क्रोमर ने मुझे बताया कि किसी-किसी ग्रामीण स्कूल को सरकार की ओर से ५० हज़ार मार्क तक के भी अनुदान मिलते हैं।

गाँवों के लिए तथा वहाँ के बच्चों के विकास के लिए शिक्षकों का कितना बड़ा महत्व है, इसे किसान अच्छी तरह समझते हैं।

इसीलिए शिक्षक का उत्तरदायित्व कुछ आसान तो नहीं, लेकिन उसका फल भी कुछ कम मीठा नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन - शृंखलाओं का निर्माण

जी० एच० केगेल

समस्त आधुनिक साधनों से सुसज्जित एक लाख नये मक़ानों (फ्लैट) का निर्माण कोई आसान बात नहीं। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की सात वर्षीय योजना में इतने ही मकानों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसे पुनर्निर्माण का एक महान् अभियान ही कहना चाहिए क्योंकि इसमें मुख्य ज़ोर उन शहरों और क़स्बों पर लगाया जा रहा है जो पिछली लड़ाई में ध्वस्त हो चुके थे।

पिछली लड़ाई में जिन शहरों पर बमबारी हुई थी और फलस्वरूप जो ध्वस्त हो गये थे, उनके पुनर्निर्माण में युद्ध के बाद मुख्य रूप से जनता ने प्रशंसनीय योगदान दिया। बर्लिन-निवासियों ने स्तालिनअले के निर्माण में जो मिसालें पेश कीं वह समाजवादी निर्माण की प्रतीक कही जा सकती है। उन्हीं के पगचिह्नों पर बाद को लइपज़िग, ड्रेसडन, मेग्डेबुर्ग और रोस्तक के निवासियों ने चल कर अपने शहरों का पुनर्निर्माण किया। ये शहर भी युद्ध में बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे। सात वर्षीय योजना के सामने कार्ल-मार्क्स-स्टड, फ्रैन्कफ़र्ट-आन-ओडर, नुब्रैन्डन्बुर्ग, गेटा आदि नगरों में सर्वथा नये भवन-केन्द्रों के निर्माण का उत्तर-दायित्व है। इस निर्माणकार्य में समाज-वादी जीवन की समस्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखना पड़ेगा।

पहले ज़माने में एक-एक करके मकान बना करते थे। अब उस तरीक़े को बिल्कुल छोड़ देना है और वैज्ञानिक पद्धति अपनानी है, अब एक-एक ईंट जोड़कर दीवारें खड़ी करने और छतें जोड़ने के बजाय पूरी-पूरी दीवारें और छतें खड़ी करके मकान बनाये जायँगे। इसी तरीक़े को अपनाकर लगभग २२० भवन-शृङ्खलाएं तैयार करनी हैं जिनके बन जाने के बाद बहुतेरे शहरों का रूप बदल कर सर्वथा नया हो जायगा। इन भवन-शृङ्खलाओं में आवास के अलावा सार्वजनिक इमारतें जैसे स्कूल, बच्चों की फुलवारी, बाज़ार, रेस्तराँ, क्लब, खेल का मैदान, घास से हरे-भरे लान और पार्क तथा शिशु-शालाएँ भी शामिल होंगी। इन स्थानों का उपयोग करके यहाँ के निवासी एक दूसरे से परिचित होने, रिश्ते जोड़ने, मैत्री बढ़ाने और दैनिक जीवन की घटनाओं पर विचार-विमर्श करने में सफल होंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन मकानों का निर्माण अपने में एक पूरी नगर-योजना है। इन योजनाओं की रूपरेखा पहले जनता के विचार-विनिमय के लिए पेश कर दी गयी थी। उसके बाद भवन-शिल्पकारों ने जनता के सुझावों को ध्यान में रखते हुए निर्माण-कार्य शुरू कराया। हमारे शिल्पकारों के सामने जन-जीवन को सुखमय और समृद्धिमय बनाना ही सर्वोपरि लक्ष्य होता है।

इन भवन-शृङ्खलाओं की एक विशेषता यह भी है कि इनके अस्तित्व में आ जाने से नगरों का अपना महत्व खंडित नहीं होने पाता, बल्कि उसमें वृद्धि ही होती है क्योंकि उनके निर्माण के समय मेहनतकश जनता की तमाम सुख-सुविधाओं के साथ-साथ ऐसी सामग्री और शैली का उपयोग किया जाता है कि इनमें एक अपूर्व सौन्दर्य, निखार, सुरुचि और भव्यता पैदा हो जाती है। वे नगर-योजना की परा-काष्ठा होते हैं। इन नगर-केन्द्रों में जन-समारोहों और अवकाश-उत्सवों के लिए बड़े-बड़े मैदान भी सुसज्जित रखे जाते हैं।

अधिकांश नगरों का निर्माण अब पूरा होने को आ गया है। मेग्डेबुर्ग

लइपज़िग की भवन-शृंखला। पीछे बायीं ओर अपेरा है।

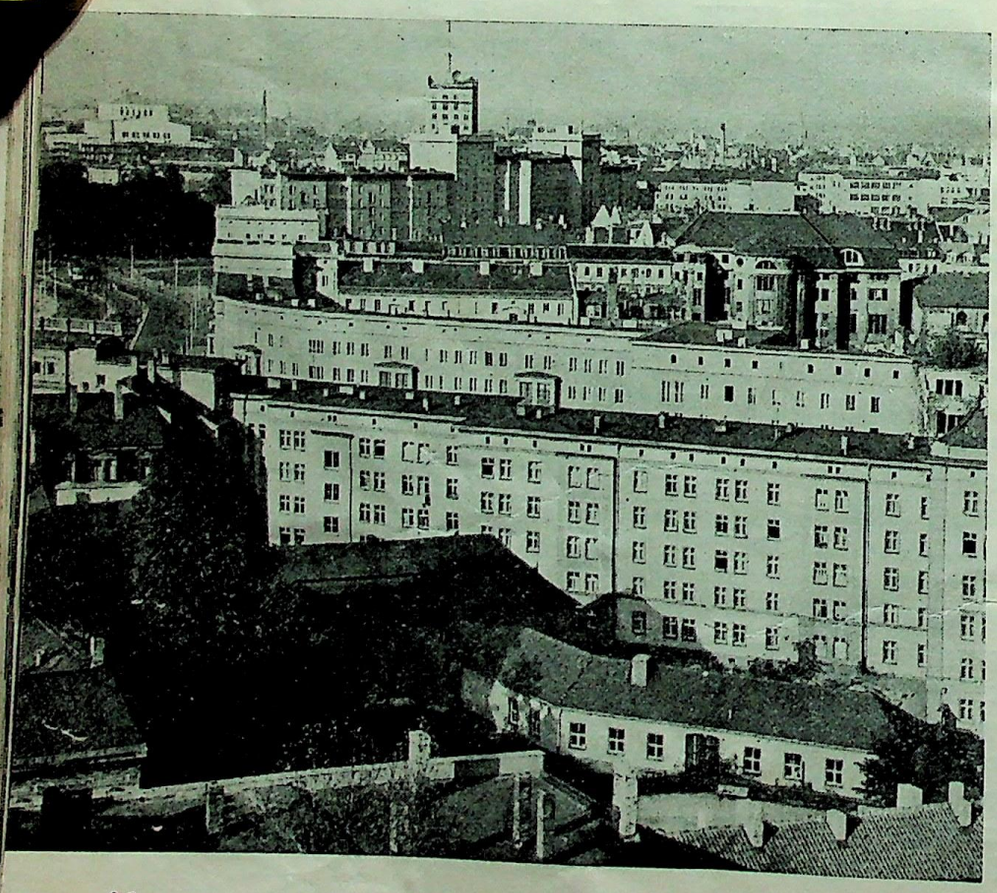

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

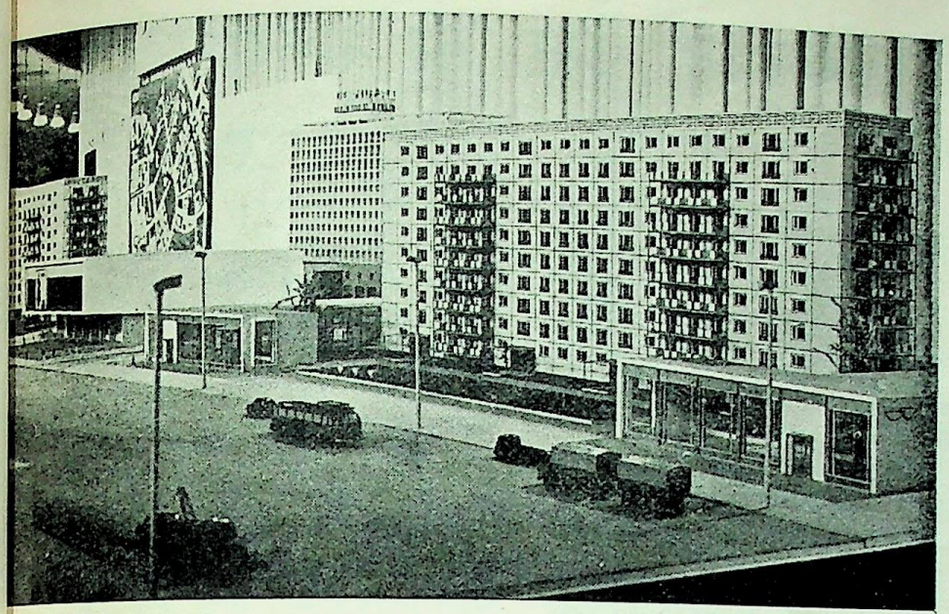

'टूरिस्ट'—बर्लिन में नये होटल की रूप-रेखा

वाला है, एक संस्कृत-विज्ञान-भवन, एक चित्र-कक्ष तथा रेडियो और टेलीविज़न स्टेशन का निर्माण शामिल है।

नवीन पोस्डम में अनेक इमारतों के अलावा एक सुन्दर नाच-घर और २००० व्यक्तियों तक को बैठाने के लिए एक सभा-हाल की योजना शामिल है।

रोस्तक के आधुनिक बन्दरगाह को भी विस्तृत किया जा रहा है। यहाँ की चौड़ी-चौड़ी सड़कों और ऐतिहासिक बाज़ार को देखने से नगर-योजना का बड़ा ही सुन्दर उदाहरण मिलता है।

बर्लिन में इस प्रकार की भवन-शृङ्खला संबंधी नगर-योजना स्तालिन-अले से आगे बढ़ कर अलेक्ज़ेन्डर स्क्वायर और वहाँ से फिर और आगे तक ले जाने की है।

नये भवनों का नया परिधान पहन चुका है। उसमें अन्तिम निखार लाने के लिए सेन्ट्रल स्क्वायर के सामने एक भव्य प्रशासकीय भवन, एक शानदार होटल और एक विशाल स्टोर का निर्माण शेष है। १२,००० भवनों (फ्लैट) का निर्माण नये नगर-केन्द्र के गले में आवास-शृङ्खलाओं के एक सुन्दर हार के समान मोहक लगता है।

ड्रेस्डन की पुरानी बाज़ार युद्ध के तमाचे से नष्ट हो चुकी थी। आज उसे एक नया रूप मिल चुका है। यहाँ के ऐतिहासिक भवनों को बड़े ही प्यार और श्रद्धा के साथ सुरक्षित किया गया है और उनके बीच एल्बे का संगीतमय प्राकृतिक दृश्य एक नयी ताज़गी और सौन्दर्य पा चुके हैं। सभी संग्रहालयों और कक्षों को फिर से संवारा गया है। ड्रेस्डन सूबे की लगभग ५० प्र. श. आबादी केवल ड्रेस्डन नगर में ही बसती है। अतः यहाँ की भवन-निर्माण योजना में १९६५ तक ९० करोड़ मार्क की पूंजी लगायी जायगी।

लइपज़िग को मेलों का नगर कहते हैं। यहाँ के नगर-केन्द्र की योजना कार्ल-मार्क्स स्क्वायर को एक राजनीतिक और सामाजिक केन्द्र-स्थल के रूप में परिवर्तित करने के बाद पूरी होगी। इस केन्द्र-स्थल में एक नया आपेरा-हाउस, जो बन कर तैयार होने

१९६०—एक निर्णायक वर्ष

(पृष्ठ ११ का शेष)

इस उद्योग का एक विश्वव्यापी स्तर है। सन् ६० तक हमें उस स्तर तक पहुँचना है। सन् ६१ के अन्त तक इस प्रकार के सारे यंत्रों पर 'क्यू' चिह्न लगा दिये जायँगे। यह उनकी सर्वोत्तमता के प्रमाण होंगे।

इसका प्रभाव जनता की आवश्यकताओं पर पड़ना लाज़िमी है। नीचे के आँकड़े उस दिशा में रोशनी डालते हैं:

(यूनिटों में)

	१९५८	१९६१
इलेक्ट्रिक मोटर से चलनेवाले रसोई यंत्र	८२,०००	५२७,०००
मकानों को गरम करने की मशीनें	१०९,०००	१,१००,०००

(यूनिटों में)

	१९५८	१९६१
बिजली की धुलाई मशीनें	२६२,०००	५०५,०००
टेलीविज़न सेट	१८०,०००	५६०,०००

लेकिन इसका यह भी मतलब नहीं कि आर्थिक प्रगति के दूसरे पक्षों का महत्व कम है। मसलन् नये मकानों की ही समस्या लें। सन् ६० में ९०,००० नये मकान बनकर तैयार हो जायँगे। जहाज़रानी को भी बढ़ाया जायगा। काटबस ज़िले में टेलीविज़न बल्ब बनाने का एक कारखाना बन रहा है जिसमें सन् १९६२ से ५० लाख बल्ब हर साल बनने लगेगा। स्टालिनिस्टड में स्पात कारखाना चालू हो गया है, रोस्तक में १० हज़ार टन सामान ढोने वाला जहाज़ गत पहली मई को समुद्र में उतर चुका है। इस वर्ष के अन्त तक ८ लाख टन सामान ढोया जा चुका होगा। अगले कुछ महीनों में काफ़ी काम होना है; लेकिन जल्द ही उनकी सफलताएँ भी हाथ आने लगेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर की रोकथाम

योहान्ना कोय्लर

आज कल संसार में दो बीमारियाँ ऐसी हैं जिनमें सबसे अधिक मौतें हो रही हैं। इनमें पहला नम्बर दिल की बीमारी का है और दूसरा कैंसर का। इसीलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजकीय स्वास्थ्य सेवाएँ कैंसर की रोकथाम को अपनी बहुत बड़ी जिम्मेदारी समझती है।

इस सिलसिले में सन् १९५२ में एक सर्वे किया गया। तब से यह नियम बना दिया गया है कि जिसे कैंसर हो गया हो, या उसका शुबहा हो, या उसका दुबारा हमला हुआ हो, इस सबकी तथा कैंसर से होने वाली मौतों की सूचना कैंसर-रोकथाम दफ्तर में अवश्य दी जाय। कैंसर का कितने दिन तक इलाज हुआ और उसका क्या परिणाम रहा—इसकी भी सूचना देनी पड़ती है। हमारे देश में कैंसर की रोकथाम के सिलसिले में १६८ केन्द्र खोले गये हैं जहां केवल कैंसर की रोकथाम ही नहीं, स्वस्थ व्यक्तियों की डाक्टरी जाँच करके उन्हें कैंसर से बचने के उपाय भी बताये जाते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हर सूबे में राजकीय स्वास्थ्य सेवाओं की ओर से एक कमिश्नर नियुक्त रहता है जो ट्यूमर की रोकथाम का काम देखता है। उसके लिए डाक्टरी योग्यता ज़रूरी है। कमिश्नर की सहायता के लिए एक सलाहकार समिति होती है जिसके बड़े ही अनुभवी डाक्टर सदस्य होते हैं। वह समिति डाक्टरों और दूसरे कर्मचारियों को ट्यूमर की रोकथाम के लिए विशेष शिक्षा का प्रबन्ध करती है, साथ ही इसके इलाज की दिशा में नयी-नयी खोजें कराती हैं।

इस प्राणघातक बीमारी का शुरू में ही पता लगाना उसकी रोकथाम की बुनियादी शर्त है। दूसरी महत्वपूर्ण शर्त यह है कि शुरू में ही पता लग जाने पर रोगी डाक्टरों से सलाह-मशविरा करने में कोई ढिलाई न करे।

हमारे देश में इन नियमों का ठीक ढंग से पालन किया जाता है। सन् १९५८ में लगभग २ लाख ९० हज़ार ऐसी उम्र की औरतों की जाँच करायी गयी जिन्हें कैंसर का काफ़ी ख़तरा रहता है। इनमें से ०.६७ प्र. श. औरतों में कैंसर की बीमारी पायी गयी। १५ प्र. श. औरतों में कैंसर के लक्षण पाये गये।

फेफड़ों और फेफड़े की नालियों का (ब्रोंकियल) कैंसर अन्य देशों की तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र में भी बहुत बढ़ गया है। अतः सारी जनता का साल में एक बार अवश्य स्क्रीनिंग कराया जाता है। इससे कैंसर की जाँच योजना में बड़ी सहायता मिलती है और बहुतेरे रोगियों के कैंसर का पता समय पर लग जाता है। इससे अनेक ज़िन्दगियाँ बचायी जा सकती हैं। यह भी देखा गया है कि पुरुषों में ब्रोंकियल कैंसर अधिक होता है। सन् १९५८ में ९० लाख आदमियों की स्क्रीनिंग की गयी। उनमे प्रति १० हज़ार व्यक्तियों में से १.९ व्यक्ति कैंसर के रोगी पाये गये। इस प्रकार बिना अपवाद के यदि सभी की स्क्रीनिंग और जाँच हो जाय तो फेफड़े और फेफड़े की नालियों का कैंसर का पता लगाना सरल हो जाता है।

अभी तक कैंसर के दो ही मुख्य इलाज हैं—आपरेशन और बिजली से उपचार। काफ़ी खोज-बीन के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि आपरेशन और बिजली के इलाज के तरीक़ों में काफ़ी सुधार किया जा सकता है। लेकिन कैंसर का इलाज यहीं तक आकर ख़त्म नहीं हो जाता। आपरेशन या बिजली से इलाज हो जाने के बाद भी ऐसा उपचार आवश्यक है जिससे रोगी के शरीर में इस बीमारी से लड़ने की शक्ति पैदा हो। ऐसा उपचार बड़े ही व्यवस्थित ढंग से होना चाहिए और इसके लिए सबसे बढ़कर रोगी की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अच्छी होनी चहिए ताकि उसे हर वक्त रोटी की फिक्र न पड़ी रहे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कैंसर के रोगियों को इलाज के दौरान में

बड सलजुगेन का आधुनिक चिकित्सालय

GURUKUL KANGRI LIBRARY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके बाद के उपचार के लिए बीमारी का भत्ता मिलता है। रोगियों के लिए रमणीक स्थानों पर रहने की सुन्दर व्यवस्था की जाती है। हर साल लगभग १० हज़ार रोगी आपरेशन या बिजली के इलाज के बाद ऐसे स्वास्थ्य-केन्द्रों में भेजे जाते हैं जहां उन्हें शांतिपूर्ण और सुखद वातावरण मिलता है, प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण परिचर्या मिलती है। फलतः इस प्रकार चार सप्ताह तक यहां रहने के बाद फिर वे अपने जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। हमारा यह अनुभव रहा है कि जिन रोगियों को इलाज के बाद इन आरामघरों में आगे के उपचार के लिए रखा जाता है उनके स्वास्थ्य पर एक विशेष स्फूर्तिदायक प्रभाव पड़ता है। इस समय इसी तरह के दो और आराम-घरों की व्यवस्था हो चुकी है जिनमें ३५ और ४० रोगियों के ठहराने का प्रबन्ध है। निकट भविष्य में ऐसे अनेक आराम-घरों का निर्माण होगा।

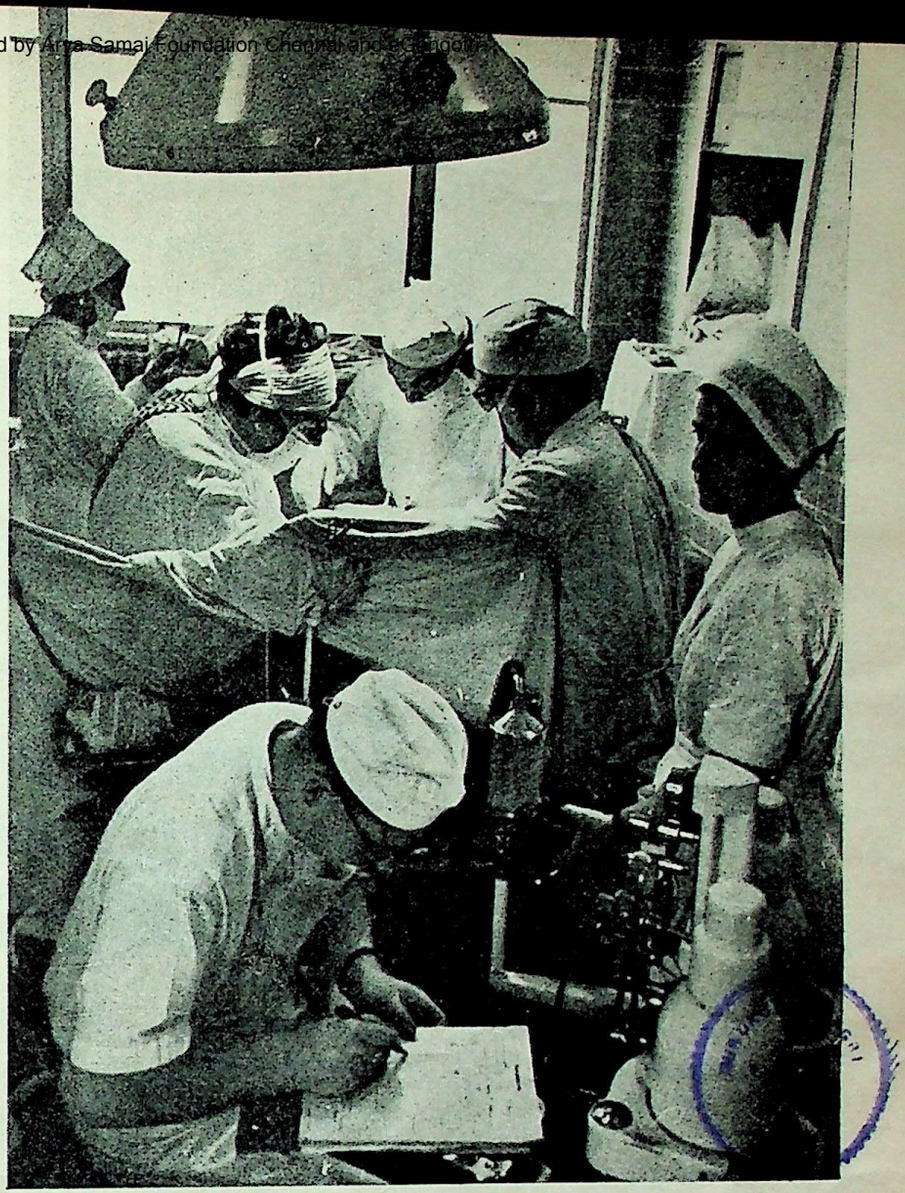

फेफड़े के कैंसर का आपरेशन हो रहा है।

लेकिन अब भी लोगों को कैंसर के खतरे से आगाह करने की समस्या सबसे प्रमुख है। ख़ास तौर से नवयुवकों को यह चेतावनी देनी चाहिए कि वे सिग्रेट का धुआँ बहुत अन्दर तक न ले जायँ क्योंकि सिग्रेट का धुआ अन्दर जाकर फेफड़ों पर असर करता है और कैंसर का ख़तरा पैदा करता है। शराबियों के पेट में भी छाले पाये गये हैं। इन छालों से पेट का कैंसर होता है। अतः अधिक शराब पीने से भी लोगों को रोकना चाहिए।

वैसे यह बात जितनी बार दोहरायी जाय कम ही है कि स्वस्थ और संयमित जीवन-क्रम तमाम बीमारियों की सबसे बड़ी गारंटी है। स्वास्थ्य रक्षा और उसकी देखभाल स्वयं व्यक्ति के लिए और पूरे समाज के लिए बड़े ही महत्व का है। इसीलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र जनता के स्वास्थ्य की रक्षा और देखभाल में तथा बीमारों के उपचार में कोई कमी उठा नहीं रखता।

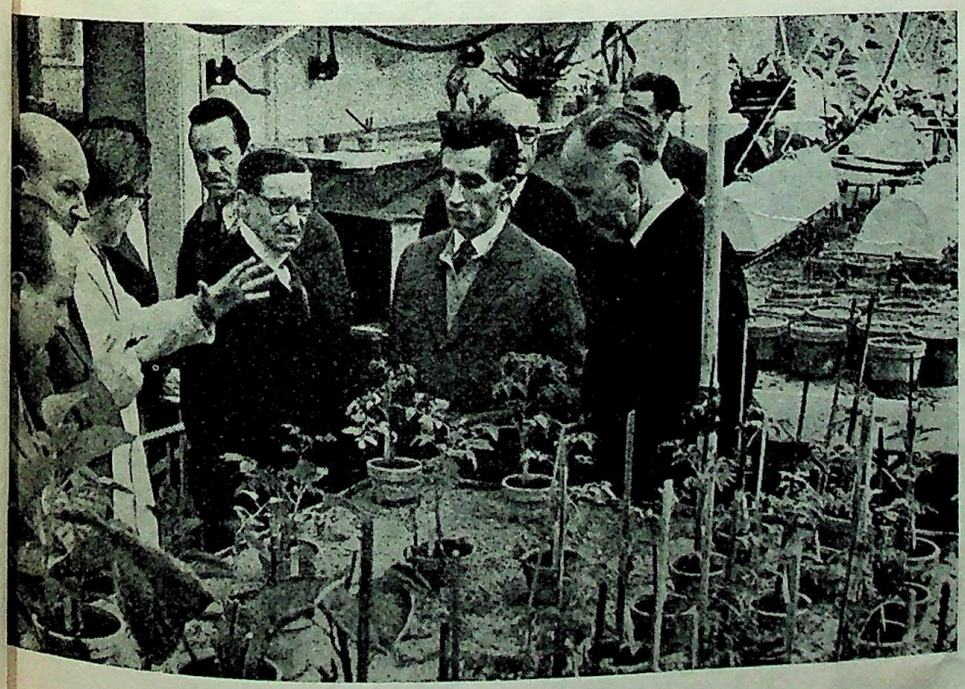

←
गत दिसम्बर में, बर्लिन में कैंसर की रोकथाम के लिए एक विचारगोष्ठी हुई थी। उसके बाद विदेशी डाक्टरों ने जर्मन विज्ञान अकादमी के ओषधि-संस्थान का निरीक्षण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल - थल पर अभिनीत जन नाटक

रयुगेन मेले में कूबा रचित "क्लाउस स्टोर्टबेकर"

डा० वाल्टर पोलाट्चेक

बाल्टिक सागर में रुइगन एक द्वीप है। वैसे तो यह द्वीप अपनी शानदार हरियाली के लिए मशहूर है ही, लेकिन इसका सबसे सुन्दर और सबसे अनुपम दृश्य है जसमंड की वह पतली और लम्बी खाड़ी जिसके किनारे पहाड़ियों और जंगलों से घिरे हैं। यह खाड़ी अब तक गुमनामी के दिन बिता रही थी। और उसके छोटे से गाँव राल्सवीक से भी कम ही लोग परिचित थे।

लेकिन सन् १९५९ के अगस्त में ऐसा हुआ कि हर रोज़ सात-आठ हज़ार के बीच लोग यहाँ आते रहे। यहाँ तक जाने के लिए लोगों को ट्रेनों, मोटरों, बसों, और पानी के जहाज़ों तक का सहारा लेना पड़ा।

इतने दिनों से विस्मृति के कुहरे में लिपटे इस एकाकी राल्सवीक में एकाएक क्या जादू हो गया! इतने लोगों की भीड़ आख़िर यहाँ कैसे पहुँचने लगी! दरअसल पिछले साल यहां के इतिहास में पहली बार रुइगन मेला लगा था जिसकी अब पुनरावृत्ति होती रहेगी।

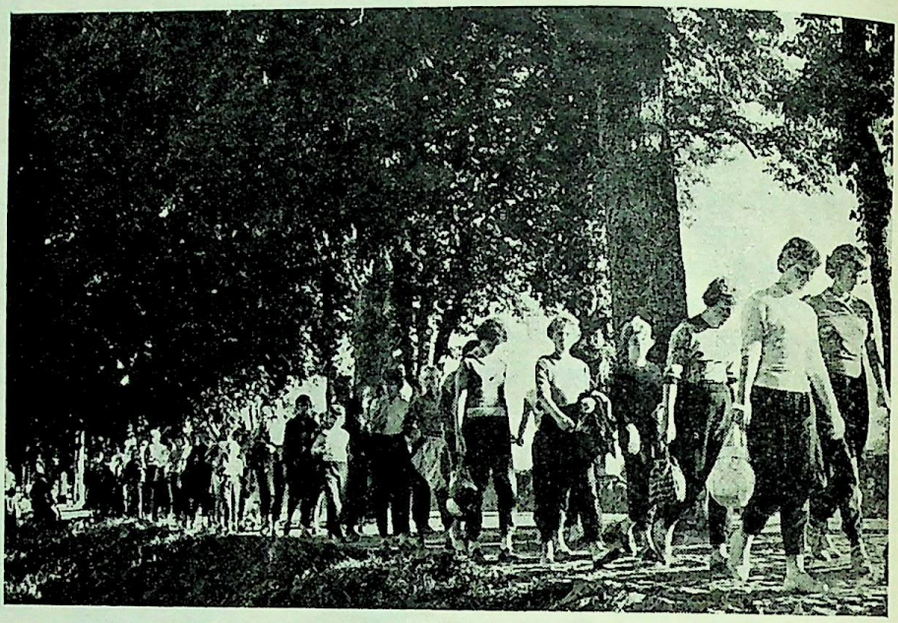

रयूगेन मेला युवतियों के लिए एक भारी आकर्षण है।

हर कला या कला-कृति व्यापक जनसमूह की सम्पत्ति नहीं बन पाती। यही हाल मेलों और उत्सवों का भी होता है। सही अर्थों में जन-मेलों के लिए ऐसे जन-नायकों और उनपर आधारित ऐसे विषयों, नृत्यों और नाटकों की ज़रूरत होती है जो जन-जन की स्मृति में जीवित हों।

क्लाउस स्टोर्टबेकर एक ऐसा ही जन नायक है। पाँच से भी अधिक सदियाँ गुज़रीं जब क्लाउस को फांसी मिली थी, लेकिन वह आज भी जर्मन जनता के लिए जीवित है। कहना न होगा कि उसी के जीवन पर आधारित एक महान् नाटक का इस मेले में अभिनय हुआ था और यही इतनी बड़ी भीड़ का आकर्षण था।

क्लाउस एक 'समुद्री डाकू' था क्योंकि वह 'हंसा' बन्दरगाह के शक्तिशाली लोगों के ख़िलाफ़ लड़ता था, क्योंकि वह सुनहरे दिनों के सपने देखा करता था, और क्योंकि वह धनियों को लूटता और लूट का सारा माल ग़रीबों में बांट देता था। क्लाउस डाकुओं के एक बहुत बड़े दल का सरदार था। उसे और उसके पूरे दल को ग़रीबों और अमीरों की खाई किसी क़ीमत पर मंज़ूर न थी।

इसीलिए जनता के दिल से क्लाउस की यादें मिटा देने के लिए धनी सौदागरों और नवाबों ने पूरी कोशिशें भी कीं, लेकिन वे अपने इरादों में सफल न रहे और आज भी समूचा

खुले रंगमंच पर "क्लाउस स्टोर्टबेकर"

aridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल्टिक तट क्लाउस की कहानियों से गूंजा करता है। क्लाउस को धनियों से जो कुछ मिला उसने ग़रीबों को दे दिया। और ग़रीबों ने भी वह सब कुछ क्लाउस को समर्पित कर दिया जिसकी उसे ज़रूरत थी। क्लाउस को ग़रीबों के घरों में छुपने के लिए शरण मिला, प्यार मिला।

फिर ऐसे जननायक के अलावा किसी जनमेले के लिए दूसरा कौनसा विषय हो सकता है? वह जनता का मेला था, जनता ही उसकी अभिनेता थी।

एक पुराने नगर के भीमकाय दरवाज़ों और पत्थर की इमारतों के बीच बड़ा सा मैदान लोगों से खचा-खच भरा है। सामने समुद्र की लहरें अपनी चमक से आँखों को चकाचौंध कर रही हैं और उनपर मध्यकालीन जहाज़ों और नावों का समूह डगमग हो रहा है। घुड़सवारों का एक दल सरपट आगे निकल जाता है। सैकड़ों नवाब और उनके साथ उतनी ही संख्या में सुन्दर और बड़ी-बड़ी आँखोंवाली युवतियाँ विजय-नृत्य कर रही हैं। दूसरी ओर पराजित जन-समूह के ऊपर भालों और बर्छियों के तम्बू तने हुए हैं। लाल वर्दी में ख़ूंख़ार जल्लाद एक ओर ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है और शिकार का इन्तज़ार कर रहा है। उसके सामने ज़ंजीरों में बँधे आदमियों की बहुत ही लम्बी क़तार खींच खींच कर पास लायी जा रही है।

'क्लाउस स्ट्रोर्टबेकर' नृत्य नाटक का यह पहला दृश्य है। इसमें २ हज़ार आदमी भाग लेते हैं। दर्जनों अभिनेता, बड़े-बड़े समूह-नृत्य, आर्केस्ट्रा और जाने कितने सहायक! ज़ाहिर है ऐसे महान् मंच के लिए सैकड़ों गैरपेशेवर कला-कारों को आमंत्रित करना ही पड़ेगा।

इसके रचयिता कुबा नामक सुप्रसिद्ध नाटककार हैं। इसमें जहाज़ी-डाकू का समूचा जीवन और बहादुरों जैसी मौत को पूरी शक्ति के साथ अभिव्यक्ति मिली है। इसमें वह पूरा ज़माना, और उसके सारे संघर्ष मूर्त हो उठते हैं। इसे मंच पर प्रस्तुत करने के लिए प्रदर्शन और अभिनय के नये साधनों का उपयोग करना पड़ा। इसमें प्रस्तुत सहगान (कोरस) की शैली आल्हा है जो घटनाओं का बड़ा ही कवित्वमय और मर्मस्पर्शी अर्थ प्रस्तुत करती है। एक अंधा गायक भी है जिसके गीतों का विषय आज की घटनाएँ हैं, लेकिन उसके गीतों का ऐसा मोहक समावेश हुआ है कि नाटक के दृश्यों की लड़ी बनती जाती है। और अन्त में होने वाला नृत्य तो सचमुच नाटकीय पराकाष्ठा ही है। यह नृत्य-नाटक समूची घटनाओं का इतना यथार्थ प्रतीक है और वह ऐसे सुगठित रूप में सामने आती हैं जैसे कोई अद्भुत मूर्तिकला सामने खड़ी हो।

इस नृत्य-नाटक में साज़िशों के तत्व शायद किसी को ज़रूरत से ज्यादा लगें, लेकिन कुल मिलाकर यह एक महान् काव्य-कृति है जिसकी सुन्दरता, गीतात्मकता और लोककलाओं से उजागर दृश्य एक ऐसा ओज भर देते हैं

क्लाउस फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार है!

जो यदि इतिहास की ओर देखने को विवश करते हैं तो केवल इसलिए कि वर्तमान के प्रति हमारी आस्था और गर्व को चट्टान जैसा दृढ़ आधार और स्वर्णिम भविष्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा मिले।

'क्लाउस स्टोर्टबेकर' के गीत दिलों को पिघलाने वाले हैं। तीन घंटे तक इसके दृश्य चलते हैं। बीच में कहीं अवकाश नहीं। फिर भी कोमल प्रेम, जनमानस की पीड़ा और अनेक रंगों में जनसमूहों का उद्वेलन दृश्यों की लड़ी के रूप में एक ऐसा जादू पैदा करते हैं कि दर्शक को समय का ज्ञान ही नहीं रह जाता। नृत्यों में अपरिमित शक्ति है। एक क्रान्ति-नृत्य भी है। इसकी शैली अपनी सुन्दरता और शक्ति के लिए बेजोड़ कही जायगी।

जंगलों और कुंजों और समुन्दर की लम्बी भुजाओं के बीच यह नृत्य-नाटक एक महान् और रोमांचकारी अनुभव है। इस वर्ष एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों ने रुइगन का यह मेला देखा। अगले वर्ष निश्चय ही वह संख्या बढ़ेगी।

"क्लाउस स्टोर्टबेकर" का एक दृश्य

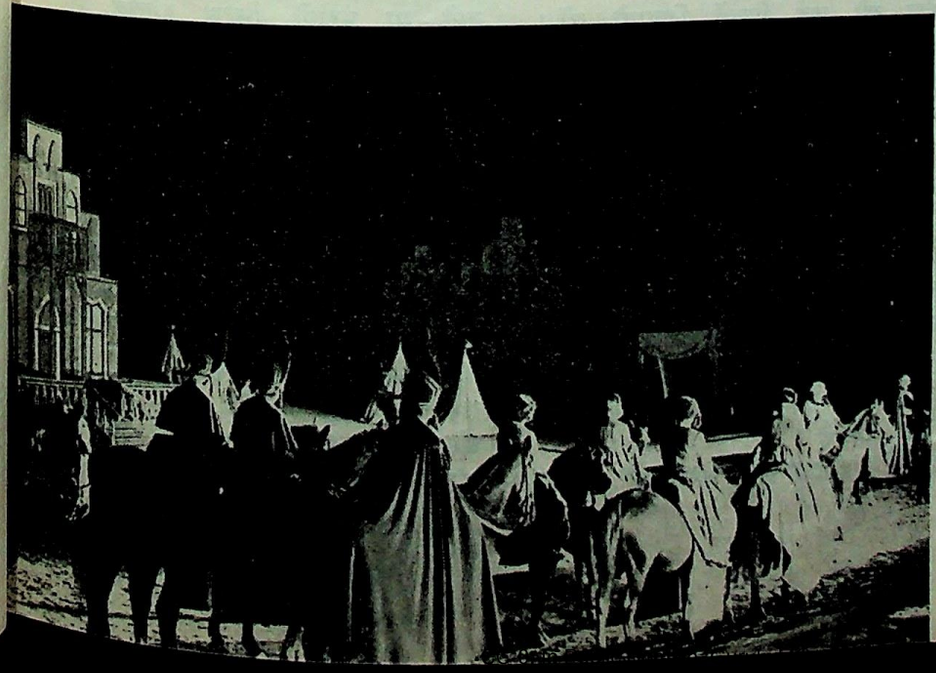

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफ़ा-फ़िल्म जगत :

ब्रिटेन में हमारी फ़िल्में

ब्रिटिश फ़िल्म इम्पोर्ट कम्पनी, प्लेटो फ़िल्म लि० के संचालक स्टेनली फ़ोरमैन अभी हाल में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में आये थे। उन्होंने यूनियन प्रेस सर्विस के एक संवाददाता को अपनी एक भेंट में जर्मन-ब्रिटिश संबंधों तथा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की समस्या पर अपने विचार भी प्रकट किये। यूनियन प्रेस सर्विस क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (ज. ज. गणतंत्र) द्वारा संचालित होती है।

संवाददाता : जर्मनी की मौजूदा स्थिति के बारे में इंगलैंड का जनसाधारण क्या सोचता है?

फ़ोरमैन : बौन (प. जर्मनी) सरकार जो ख़तरे बुला रही है उसके बारे में ब्रिटिश जनमत बहुत चिन्तित है, और शायद युद्ध के बाद पहली बार वह इतनी सफ़ाई से इस समस्या पर विचार भी कर रहा है। यह चिन्ता 'स्वस्तिक-घटना' को देखकर शुरू हुई और जब यह भेद खुला कि बौन सरकार स्पेन के फ़ासिस्तों से गठबन्धन करना चाहती है तब तो हमारी चिन्ता और भी बढ़ गयी। वैसे हम लोग आसानी से व्यग्र होने वालों में से नहीं, लेकिन इस बार तो हद हो गयी। मेरा ख्याल है कि ब्रिटिश जनता में नाज़ीवाद के इस नये रूप के ख़िलाफ़ जो आन्दोलन छिड़ा है वह एक स्वस्थ राजनीतिक घटना है।

संवाददाता : ओबरलैन्डर के ऊपर बनी 'मरडर इन ल्वोव' नामक फ़िल्म का ब्रिटिश जनता पर कैसा प्रभाव रहा?

फ़ोरमैन : वह फ़िल्म प्रेस वालों को और कामन्स सभा के लगभग ६० सदस्यों को दिखायी गयी थी। फ़िल्म में जो कुछ उन्होंने देखा उसकी छाप उनके चेहरों पर साफ़ मालूम हो रही थी--वह छाप क्रोध की थी। और मैं यह भी बता दूं कि उनमें महज़ लेबर पार्टी के ही सदस्य नहीं थे, अनेक अनुदार और लिबरल सदस्य भी थे। इंगलैंड में ओबरलैंडर का जुर्म हर किसी की ज़बान से सुना जा सकता है। यहाँ तक कि बौन सरकार के दोस्तों को भी चोट पहुँची है।

संवाददाता : क्या ब्रिटेन और ज. ज. गणतंत्र के बीच सरकारी तौर पर फ़िल्मों का आदान-प्रदान होता है?

फ़ोरमैन : इस सिलसिले में पहले मैं आपको यह बता दूं कि पूर्वी बर्लिन में जब अंग्रेज़ी फ़िल्म सप्ताह मनाया जा रहा था तो उस समय हमने अपने देश की कई फ़िल्में दिखायी थीं। इस वर्ष, अक्तूबर में हम 'लन्दन फ़िल्म समारोह' करेंगे। उस अवसर पर दुनिया की सर्वोत्तम फ़िल्में दिखाने का आयोजन होगा। अगर वार्ता सफल रही तो "ख़ामोश सितारे" और 'मुहब्बत की उलझन' प्रदर्शित करने का भी प्रयास करेंगे। मुझे उम्मीद है कि मैं इसमें सफल होकर रहूँगा और ज. ज. गणतंत्र से फ़िल्में अपने समारोह में ले जा सकूंगा। सन् १९६१ के शुरू में ब्रिटिश फ़िल्म इन्स्टीट्यूट भी डेफ़ा-सप्ताह मना रही है।

संवाददाता : डेफ़ा और ब्रिटिश कम्पनियाँ मिलकर फ़िल्म बनायें--इसके बारे में आपका क्या मत है?

फ़ोरमैन : पिछले कुछ महीनों से ज. ज. गणतंत्र और ब्रिटेन के फ़िल्मी बन्धुओं में सहयोग बढ़ता नज़र आ रहा है। 'रूसी चमत्कार' के निर्माण में ब्रिटेन की ओर से कुछ सामग्री द्वारा सहयोग प्रदान किया गया था। डेफ़ा की एक डाक्युमेन्टरी फ़िल्म जार्ज फ्रेड्रिक हैन्डेल के जीवन पर बन रही है। ये १८वीं-१९वीं सदी के प्रमुख संगीतज्ञ थे। इस फ़िल्म के निर्माण में ब्रिटेन भाग ले रहा है। मेरे विचार से यही दोनों देशों के सहयोग का श्रीगणेश कहा जा सकता है।

संवाददाता : डेफ़ा की और भी कोई नयी या पुरानी फ़िल्म इंगलैंड में प्रदर्शित की गयी है?

फ़ोरमैन : हाँ, हाँ, 'जर्मन स्टोरी' हमारे यहाँ बहुत ही सफल रही। नटिंघम और कारड्रिफ़ में तो टिकट के लिये लोगों को लाइनों में घंटों खड़ा रहना पड़ता था। नटिंघम के एक सबसे बड़े सिनेमा-घर में, जहाँ ६०० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है, हफ्ते भर तक एक भी सीट ख़ाली नहीं गयी। 'स्टार्स' को भी वैसी ही सफलता मिली। 'हालीडे आन स्लिट' और 'इन्टरप्राइज़ ट्यूटॉनिक सोर्ड' भी काफ़ी जनप्रिय रहे। (यू. पी. डी.)

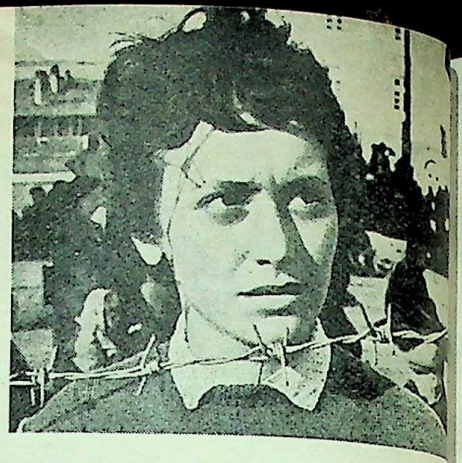

"सितारे" की नायिका एक भावपूर्ण मुद्रा में

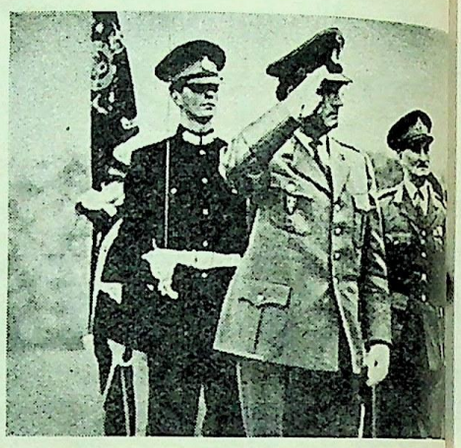

"इन्टरप्राइज़ ट्यूटानिक स्वोर्ड"

"ख़ामोश सितारे"

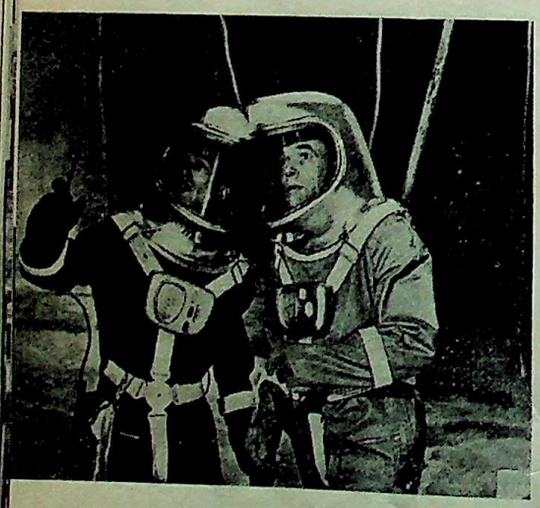

"मुहब्बत की उलझन"

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

लइपज़िग मेले की प्रतिष्ठा

इस वर्ष लइपज़िग मेले में अनेक देशों की भांति हंगरी ने भी भाग लिया। हंगरी के वाणिज्य संघ के अध्यक्ष से "दर आसेनहैन्डल" पत्रिका के एक प्रतिनिधि ने जब भेंट की तो वे बड़े संतुष्ट दिखायी पड़ रहे थे। उन्होंने कहा:

"इस वर्ष लइपज़िग का वसन्त मेला व्यवसाय की दृष्टि से बड़ा ही लाभप्रद रहा। जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार एजेन्सियों से हमने बात-चीत की। फलतः ज. ज. गणतंत्र से २०.७ करोड़ रुबल के माल का आयात करने तथा २१.१ करोड़ रुबल का माल बेचने का समझौता हुआ। शायद इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि ऊपर जितने माल के आयात-निर्यात का ज़िक्र हुआ है वह सर्वथा अलग और स्वतंत्र विनिमय है, तयशुदा कोटे से उसका कोई संबंध नहीं।"

हंगरी के वाणिज्य संघ के अध्यक्ष ने आगे कहा कि इस मेले में भाग लेने से पूंजीवादी देशों से भी हमारा व्यापार बहुत बढ़ा है। पूंजीवादी देशों से हमने १४ लाख डालर के निर्यात और ९ लाख ६० हज़ार डालर का आयात किया है। यह नतीजे स्वयं कह रहे हैं कि लइपज़िग, पूर्व-पश्चिम में न केवल व्यापारिक संबंधों का केन्द्र बन गया है, बल्कि उन संबंधों को निरन्तर आगे बढ़ा रहा है।

ग्याना के मंत्री का आगमन

ब्रिटिश ग्याना के मंत्री डा० बेन हाल में जर्मन जनवादी गणतंत्र आये। इस अवसर पर आपने अनेक कारखानों का निरीक्षण किया। आपने ज. ज. गणतंत्र के उप-विदेश व्यापार मंत्री श्री गेरहार्ड वीस से आर्थिक समस्याओं पर वार्ता भी की।

यूनानी एम० पी०

गत अप्रैल में यूनानी संसद् के सदस्यों का एक दल श्री जोनिस इबैंजिलिडिस के नेतृत्व में ज. ज. गणतंत्र आया और मंत्रि परिषद् के अध्यक्ष तथा विदेश व्यापार मंत्री हर हेनरिख राउ से भेंट की। इस अवसर पर दोनों देशों के व्यापारिक और आर्थिक सहयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

अमेरिका से व्यापार

अमेरिका से भी हाल में एक व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ है जिसके अनुसार ज. ज. गणतंत्र ने अपने मोटर उद्योग के लिए १० हज़ार टन लोहे की चद्दरें और अन्य वस्तुएँ मँगायी हैं। यह समझौता दोइत्चे स्थाल एन्द मेटाल--जर्मन मेटल--तथा पासेल ओर एन्ड मेटल कारपोरेशन न्यूयार्क तथा सुट्टन स्टील एन्ड मेटल कारपोरेशन (अमेरिकी कम्पनियों) के बीच हुआ है। जून से माल आना शुरू हो गया है। सुट्टन स्टील एन्ड मेटल कारपोरेशन ने तय किया है कि सन् १९६१ के लइपज़िग मेले में वह अपनी प्रदर्शिनी भी लायेगा। यही कम्पनी पिछले कई वर्षों से ज़. ज. गणतंत्र का रसायन भी काफी मात्रा में खरीद रही है।

लेबनान से व्यापार

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार मंत्री तथा लेबनान के विदेश मंत्री के बीच हाल में हुए पत्र-व्यवहार के फलस्वरूप दोनों देशों के बीच सन् १९६० में डेढ़ करोड़ (लेबनानी पौंड) के परस्पर व्यापार का निश्चय हुआ है।

दोनों देशों में एक दीर्घकालीन व्यापारिक समझौता हो चुका है--उपर्युक्त निश्चय उसी के अधीन लिया गया है। सन् १९५९ में ज. ज. गणतंत्र ने लेबनान से ७ हज़ार टन फल खरीदा था। उस वर्ष इतनी मात्रा में लेबनान से और किसी देश ने फलों की खरीद न की थी।

वियतनाम में प्रथम शीशा-कारखाना

वियतनाम में प्रथम शीशा कारखाना सन् १९६१ से उत्पादन शुरू कर देगा। इसके निर्माण में ज. ज. गणतंत्र के इंजीनियरों और विशेषज्ञों ने सहयोग दिया है। कारखाने की मशीनें भी हमारे देश से जायँगी। इस कारखाने से १.६ लाख वर्गफुट खिड़की के शीशे, ३० लाख बिजली के बल्ब, ७ करोड़ डाक्टरी संबंधी पात्र तथा ४० लाख बिअर और लेमनेड की बोतलें प्रतिवर्ष बन कर तैयार होंगी।

दीर्घकालीन व्यापार-समझौते

. . . बुल्गेरिया के साथ

बुल्गेरिया और ज. ज. गणतंत्र के बीच सन् ६१-६५ के लिए एक दीर्घकालीन व्यापार-समझौता हुआ है जिसके अनुसार ३ करोड़ १० लाख रुबल के माल का आदान-प्रदान होगा।

ज. ज. गणतंत्र से बुल्गेरिया भेजे जाने वाले माल में मुख्य निर्यात होगा --समूचे कारखाने, लिग्नाइट, खान के लिए सम्पूर्ण मशीनें, इंजीनियरिंग चश्मे, बिजली की मशीनें, मोटर गाड़ियाँ, रसायन और उपभोक्ता की वस्तुएँ। इसके बदले बुल्गेरिया से ट्रांसफ़ार्मर, बिजली-मोटर, बिजली के अन्य सामान, तम्बाकू, शराब, फल आदि हमारे देश में आयेंगे।

. . . हंगरी के साथ

इसी प्रकार हंगरी और ज. ज. तंत्र में सन् ६१-६५ तक के लिए एक व्यापार-समझौता हुआ है। इसके अनुसार हंगरी को कारखानों की मशीनें, पावर-स्टेशन, खेती की मशीनें तथा रसायन संबंधी सामान भेजा जायगा, बदले में हंगरी से बाक्साइट, अल्यूमूनियम, बर्तन, सूती कपड़े, जूते, खेती से पैदा होने वाली वस्तुएँ ज. ज. गणतंत्र में आयेंगी। यह व्यापार ४ करोड़ २० लाख रुबल का होगा।

डेनमार्क में ट्राफ़िक-दफ्तर

डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन में, गत अप्रैल में, ज. ज. गणतंत्र का एक ट्राफ़िक-दफ्तर खोला गया। इस अवसर पर दोनों देशों के उच्च अधिकारी मौजूद थे।

हाल के वर्षों में डेनमार्क और ज. ज. गणतंत्र के बीच यात्रियों और माल का यातायात बहुत बढ़ गया है। इस क्रम को और आगे बढ़ाने के लिए ही उक्त दफ्तर खोला गया है। डेनमार्क के पत्रों ने दोनों देशों में यात्रियों की संख्या बढ़ाने पर भी ज़ोर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन निर्माण

भवन-निर्माण का कुल कार्यक्रम = १०० प्र० श०

पूरी-पूरी दीवारों और छतों को जोड़कर
भवन-निर्माण प्र० श० में

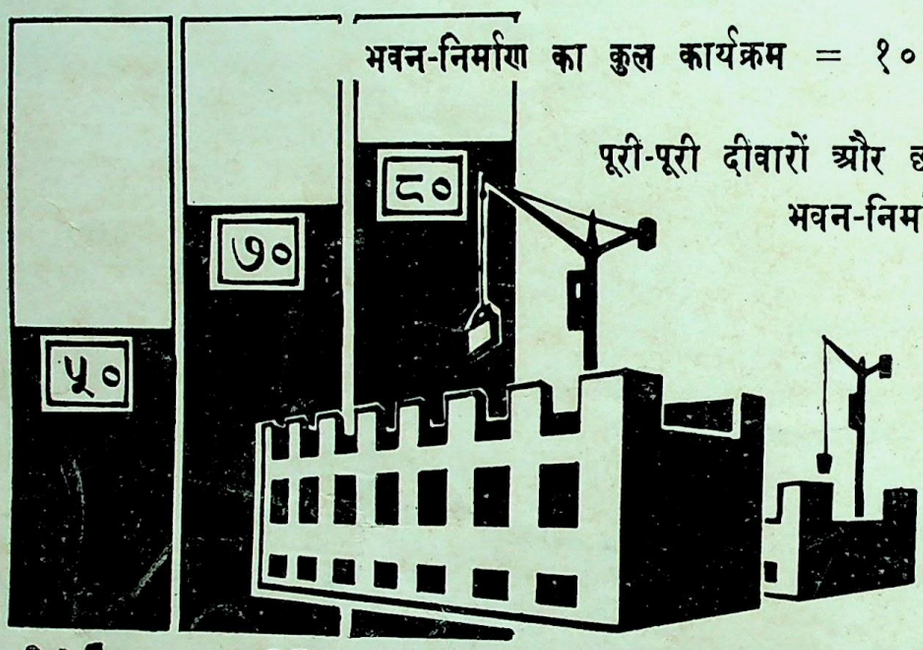

१९६० १९६२ १९६५

सन् १९६५ तक राष्ट्रीय भवन उद्योग
निम्नलिखित मशीनों से सुसज्जित
हो जायगा :

२१०० रोटरी टावर क्रेन

१३७० हमवार करनेवाली मशीन

१३०० बकेट ड्रेज

९५० लारियों पर क्रेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

८ वर्ष ५
अगस्त
१९६०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४४२६१, ४४२६२ केबल्सः हावदिन, नई दिल्ली

●

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्सः हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्सः कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन : ६१३१४ केबल्सः हावजर्मन

वर्ष ५, अंक ८ २० अगस्त, १९६०

यह अंक

पृष्ठ

लइपज़िग का शरद मेला ३
जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत से निर्यात ४

व्यक्तित्व की झाँकी

डा. जोहान्स डीक्मन ५

जनवाद के बढ़ते चरण

सन् १९६० के लिए ज. ज. गणतंत्र का बजट ६
चन्द्रगुप्त अग्रवाल कहते हैं... ७
भारतीय विज्ञान ९
ट्रेक्टर उपहार ११

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन

नोयब्रन्डेनबुर्ग का कायाकल्प १२
लइपज़िग का डाक-बिक्री-घर १४
गर्मियों में विहार १६
शारीरिक व्यायाम की जर्मन अकादमी १८

डेफ़ा-फ़िल्म जगत

मुहब्बत की उलझन १९

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें २०

शुभेच्छाएँ २३

मुख पृष्ठ

इस वर्ष जून में द्वितीय श्रमिक मेले का आयोजन हुआ। इसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। इस मेले का सबसे बड़ा आकर्षण "बुद्धिमान नाथन" नाटक था जिसमें इडुअर्ड वान विन्टारस्टीन ने नायक की भूमिका की। चित्र में नायक प्रशंसकों से घिरा हुआ है।

अंतिम पृष्ठ

जापानी अभिनेत्री योको तानी ने "ख़ामोश सितारे" में अभिनय किया है। यह चित्र पोलैंड और जर्मन जनवादी गणतंत्र के संयुक्त प्रयास का सुफल है।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लइपज़िग का शरद मेला : पूर्व-पश्चिम व्यापार का सिंह-द्वार

फ्रैंक पीटर

लइपज़िग में शरद मेले की तैयारियाँ हो रही हैं। मेला-बोर्ड, उसके दफ्तरों और पूरे लइपज़िग नगर में चहल-पहल मची हुई है। यह मेला आगामी ४ सितम्बर से शुरू होगा और ११ सितम्बर तक चलेगा।

इस वर्ष इस मेले में ४० देश भाग ले रहे हैं। वे अपने यहाँ की बनी हुई चीज़ों की प्रदर्शिनी करेंगे। लइपज़िग का यह मेला दुनिया भर में जिस प्रकार चर्चा और आकर्षण का विषय बन गया है और उसे जो विश्वव्यापी प्रतिष्ठा मिलती जा रही है, उसे देखते हुए यही कहना पड़ता है कि शीत युद्ध की कोशिशें यहाँ भी नाकाम होकर रह गयीं। आनेवाले दिनों में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की विचार-धारा और बलवती होगी, विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच शांतिमय प्रतिस्पर्द्धा की जड़ें और गहरी होंगी। फिर ऐसी स्थिति में लइपज़िग का अस्तित्व पूर्व-पश्चिम व्यापार के सिंह-द्वार के रूप में और भी महत्वपूर्ण बनता जायगा। राज-नायकों और अर्थ-शास्त्रियों का कहना है कि ऐसे मेले या आर्थिक सम्मेलन पूर्व-पश्चिम की खाई पार कराने वाले पुल हुआ करते हैं।

इस मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र की ५००० से भी अधिक औद्योगिक और व्यावसायिक संस्थाएँ अपनी चीजों का प्रदर्शन करेंगी। इनके लिए १६ प्रदर्शिनी भवन और ४ बड़े-बड़े हाल स्थायी रूप से बने हुए हैं जो १२,०५,००० वर्ग फुट ज़मीन में फैले हुए हैं।

लइपज़िग के इस मेले में समाजवादी खेमे के सभी देश भाग ले रहे हैं। इसमें भाग लेने से उन देशों को जर्मन जनवादी गणतंत्र से और स्वयं आपस में व्यापार बढ़ाने का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही वे ग़ैर-समाजवादी देशों के साथ भी बड़े परिमाण में लेन-देन करने का अवसर पाते हैं। ग़ैर-समाजवादी देशों से आने वाली प्रदर्शिनियों के लिए १,५०,००० वर्ग फुट ज़मीन सुरक्षित है। इनमें योरप के देशों के अलावा भारत, ट्यूनिसिया, तुर्की, संयुक्त अरब गणतंत्र, सूडान, क्यूबा, जमैका, अर्जनटाइना, युरुगुए, ब्राज़ील, इक्वेडर, जापान तथा अन्य देश हैं। इन देशों से लगभग १८०० कम्पनियाँ अपनी प्रदर्शिनियाँ लगायेंगी। आस्ट्रिया की कम्पनियां सामूहिकरूप से अपनी एक बड़ी सी प्रदर्शिनी लगायेंगी जिसके लिए उनकी ओर से ७२६५ वर्ग फुट जमीन का अनुरोध किया है। भारत ने ३७७० वर्ग फुट की मांग की है। ऐसी आशा है कि पश्चिमी जर्मनी की ९०० से भी अधिक बड़ी बड़ी फर्में मेले में भाग लेंगी।

इस वर्ष के शरद मेले में भारत की अनेक कम्पनियाँ चाय, गोलमिर्च, काजू, तेलहन, जूट के माल तथा कच्चे लोहे की प्रदर्शिनी करेंगी। भारत का हथकरघा उद्योग योरप में वैसे ही बहुत मशहूर है। अतः उसके कपड़े तो मेले में रहेंगे ही, लेकिन इस बार भारत के बने चमड़े के माल संभवतः

लइपज़िग का मेला : व्यापार के साथ मैत्री भी

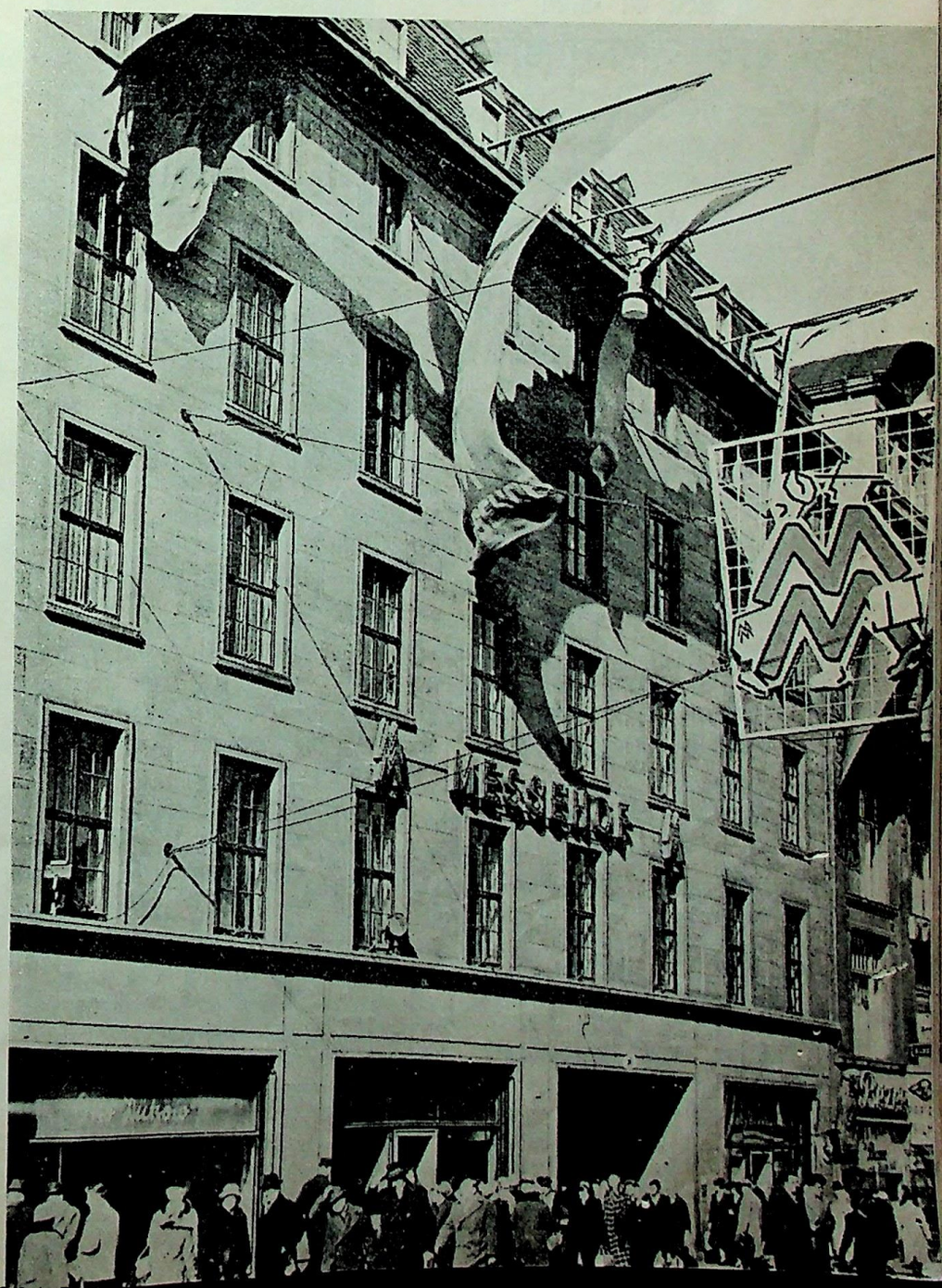

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे और उसमें भी जूतों की प्रदर्शिनी को सबसे प्रमुख स्थान मिलेगा क्योंकि इस सिलसिले में एक समझौता पहले ही हो चुका है, जिसके अनुसार भारत से ज. ज. गणतंत्र जूतों का आयात करेगा। इस समझौते का एक सुफल यह भी है कि भविष्य में भारत के जूतों के वार्षिक निर्यात की गारंटी हो जायगी।

भारत और जर्मन जनवादी गणतन्त्र के बीच इस व्यापार- समझौते के प्रसंग में जब बात-चीत चल रही थी तभी इस पर भी विचार किया गया कि भारत से बिजली और रसायन उद्योग के हलके सामान का निर्यात बढ़ाया जा सकता है। ऐसी हालत में इन भारतीय उद्योगों की प्रदर्शिनी लइपज़िग के इस शरद मेले में लगाना लाभप्रद तो होगा ही साथ ही दोनों देशों के व्यापार की परिधि बढ़ाने में भी सहायक होगा।

भारतीय व्यापारियों के लिए एक और आकर्षण है, लइपज़िग में इस साल फ़र की अन्तर्राष्ट्रीय बिक्री की फिर से व्यवस्था कर दी गयी है। यहाँ के शरद मेलों में हर साल जिन चीजों का प्रदर्शन किया जाता है, फ़र उनमें बड़ी ही क़ीमती चीज़ मानी गयी है। अतः यदि भारतीयों ने अपने भी फ़र भेजे तो उन्हें काफ़ी फ़ायदा होने की आशा की जा सकती है।

अभी तक भारत का राजकीय व्यापार निगम केवल वसन्त मेले में ही भाग लेता है। यदि वह शरद मेले में भी आने लगे तो लइपज़िग में आये अनेक देशों से उसके व्यापार संबंध स्थापित हो सकते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का समूचा व्यापार समानता और परस्पर लाभ के सिद्धान्त पर आधारित है। दिसम्बर सन् १९५९ में भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच १९६० से ६२ तक के लिए जो व्यापार समझौता हुआ है, खुद उस में भी इस सिद्धान्त की झांकी मिलती है। लइपज़िग का यह शरद-मेला इस सिद्धान्त को एक बार फिर कार्यरूप में परिणत करने का सुअवसर प्रदान करता है।

व्यक्तित्व की झांकी

डा० जोहान्स डीक्मन

डा० एच. सी. जोहान्स डीक्मन जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर (संसद्) के अध्यक्ष हैं।

आपका जन्म १९ जनवरी, सन् १८९३ को ब्रेमेन ज़िले के फ़िशरहुद नामक स्थान पर हुआ। आपने बर्लिन, गीसेन और गोयटिंजेन विश्व-विद्यालयों में अर्थशास्त्र और आधुनिक भाषाओं की शिक्षा प्राप्त की। सन् १९१८ में आप जर्मन पीपुल्स पार्टी में शामिल हुए। आगे चल कर आप उसके महामंत्री भी बने। सन् १९२९ से १९३३ तक आप सैक्सन लोकसभा के सदस्य भी रहे।

हिटलर का शासन आया। तमाम जनवादी पार्टियाँ गैर-कानूनी होने लगीं। फिर जोहान्स डीक्मन भी कैसे बचते! उनके सार्वजनिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लग गया और सख्त निगरानी होने लगी।

हिटलर का शासन खत्म हुआ। तमाम जनवादी शक्तियों ने एक नये शांतिप्रिय जर्मनी की रचना शुरू की। जोहान्स डीक्मन उसमें पीछे नहीं रहे। इस महान् उद्देश्य की पूर्ति में आप भी तन-मन से जुट गये।

सन् १९४५ में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ़ जर्मनी की

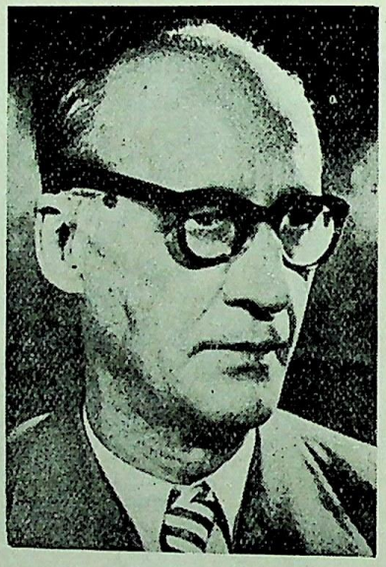

डा० एच० सी० जोहान्स डीक्मन

स्थापना हुई। डीक्मन उसके नींव डालने वालों में से हैं। आप पार्टी के उपाध्यक्ष भी रहे। सन् १९४६ में सैक्सन लोकसभा के सदस्य चुने गये और न्याय मंत्री का पद सौंपा गया, साथ ही सैक्सनी सूबे के उप प्रधान मंत्री बनाये गये। अक्तूबर, १९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के अवसर पर आपको पीपुल्स चैम्बर का अध्यक्ष चुना गया। तब से पूरी योग्यता और लगन से आप इस पद का भारसंचालन कर रहे हैं।

डीक्मन का जीवन देशभक्तों और शांति के योद्धाओं के समक्ष एक आदर्श है। आपका दृढ़ विश्वास है कि सुन्दर समाज रचना का दुस्तर कार्य तभी पूरा हो सकता है जब तमाम फ़ासिस्ट-विरोधी दलों और संगठनों का मज़बूत एका हो और वे मिलजुल कर काम करें।

आप सोवियत संघ के सच्चे मित्र हैं। आप जर्मन-रूस मैत्री संघ के संस्थापकों में से हैं। एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन के अवसर पर आपने कहा था, "महान् सोवियत संघ के साथ कंधे से कंधा मिलाकर ही हम एकता और शांति की अपनी लड़ाई में विजयी हो सकते हैं," जर्मनी को फिर से एक करने और शांति बनाये रखने की दिशा में आपकी भूमिका अविस्मरणीय है। जर्मन समस्या के शांतिमय हल के उद्देश्य से निर्मित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जर्मन जनवादी गणतंत्र भी अपने एक स्थायी-प्रतिनिधि मंडल के साथ शामिल है। डीक्मन उसके अध्यक्ष हैं। आप सैनिकवाद के कट्टर शत्रु हैं। राष्ट्रों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और मैत्री के लिए आप का समस्त जीवन समर्पित है।

आपका जीवन महान सफलताओं का पुंज है। आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रीय स्वर्ण पदक, कोरिया के जनवादी गणतंत्र का राष्ट्रीय ध्वज-पदक, शांति-पदक, अर्नेस्ट-मोरिट्ज़ पदक तथा डा. विल्हेल्मक्रुज़ पदक आदि आपकी महान् सेवाओं की स्वीकृतियाँ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत से निर्यात : कुछ संकेत

गत कुछ वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत के व्यापार संबंधों में काफ़ी हद तक मज़बूती आयी है। सन् १९५४ तक दोनों देशों के बीच नाममात्र को ही व्यापार होता था। उसी वर्ष दोनों सरकारों के बीच पहला व्यापार-समझौता हुआ और तब से व्यापारिक और आर्थिक संबंधों में मज़बूती आने लगी तथा आयात-निर्यात बढ़ने लगा। सन् ५४ में यह व्यापार २ करोड़ २० लाख रु० तक ही सीमित था। लेकिन सन् ५९ में ११ करोड़ १० लाख रु० तक का व्यापार हुआ और सन् ६० में वह और भी आगे बढ़ेगा। भारत से जर्मन जनवादी गणतंत्र में जाने वाले माल का परिमाण भी तेज़ी से बढ़ा है। सन् ५४ में ९७ हज़ार रुपये का माल भारत से गया था। लेकिन सन् १९५९ में उसमें वृद्धि हुई और ५ करोड़ १० लाख रुपये का माल गया।

भारत से होने वाले निर्यात में ऐसी वृद्धि देखकर यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या अब उसके मार्ग में पूर्ण विराम आ गया है या उसके आगे बढ़ते रहने की भी कोई संभावना है। इस प्रश्न का उत्तर कठिन नहीं।

दोनों देशों के बीच आयात-निर्यात संबंध इतनी तेज़ी से बढ़े हैं इसकी एक बुनियादी वजह तो यह है कि दोनों देशों के राष्ट्रीय अर्थतंत्र एक दूसरे के पूरक हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का उद्योग बहुत विकसित है। विशेषरूप से मशीनें बनाने के या रसायन संबंधी उद्योग तो विश्वविख्यात हैं। ऐसी स्थिति में वह भारत की इन आवश्यकताओं को अच्छी तरह से पूरा कर सकता है। इस कथन का प्रमाण हमारे सामने है। जर्मन जनवादी गणतंत्र से भारत में विभिन्न मशीनें, फाउंड्री के सामान, पोलीग्रैफिक मशीनें, कच्ची फिल्में, एक्स-रे फ़िल्में आदि जो भी आयी हैं, उन्हें भारत की बाज़ारों में विशेष ख्याति प्राप्त हुई है।

दूसरी तरफ जर्मन जनवादी गणतंत्र का आर्थिक ढांचा इस तरह से विकास करता जा रहा है कि हमें न सिर्फ़ कच्चे माल की, बल्कि दैनिक आवश्यकताओं और विलास की चीज़ों की भी अधिकाधिक ज़रूरत पड़ती है। हमारी इन ज़रूरतों को भारत अच्छी तरह पूरा कर सकता है, इसका सबूत यह है कि भारत के खनिज-पदार्थों जैसे मैंगनीज़, कच्चा लोहा, अबरक आदि तथा खली, कच्ची काफ़ी, चाय और तेल की हमारे यहाँ बहुत खपत है।

और इन दोनों देशों में व्यापारिक संबंधों की संभावना कितनी प्रबल है —इसका अनुमान हमारी सात वर्षीय योजना से लगाया जा सकता है। यह योजना हमारी प्रगति का एक बहुत बड़ा क़दम है। इसकी पुष्टि हमारे विदेश व्यापार की एक झलक से ही हो जाती है। सन् १९५८ में लगभग १४५० करोड़ मार्क का हमारा विदेश-व्यापार था जो सन् १९६५ में बढ़ कर २५०० करोड़ मार्क तक पहुँच जायगा। इसका अर्थ यह है कि सन् १९६५ में हमारे आयात में बहुत वृद्धि होगी। ज़ाहिर है, इसमें भारत का काफ़ी हिस्सा हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

लइपज़िग का बसन्त (१९६०) मेला : प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल भारतीय मंडप का निरीक्षण कर रहे हैं।

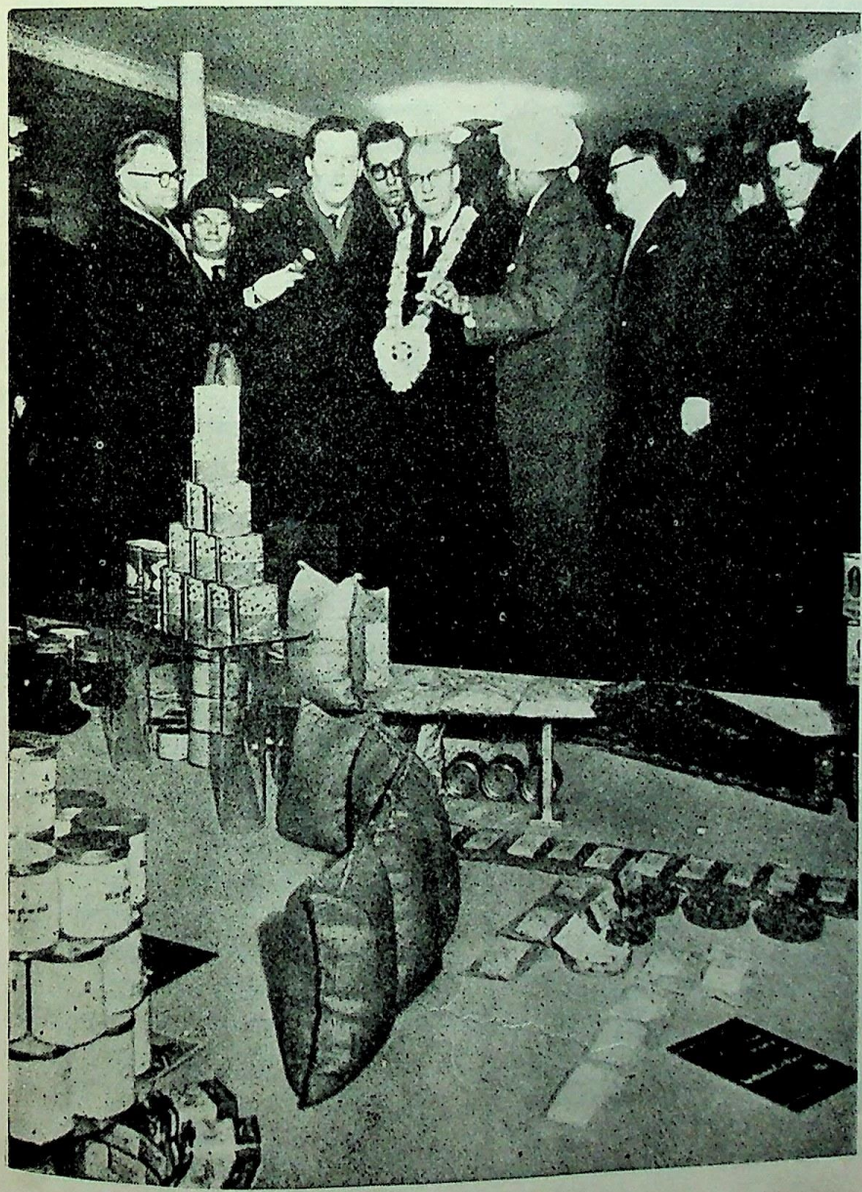

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

सन् १९६० के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र का बजट

मनफ्रेड फ्लेगेल

पीपुल्स चैम्बर के बजट और वित्त समिति के सदस्य

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सन् १९६० के बजट में विभिन्न मदों को मिलाकर कुल खर्च ५०८० करोड़ मार्क था। जिस समय विभिन्न मदों के खर्च पर विचार किया जा रहा था, पीपुल्स चेम्बर (संसद्) और सरकार की यह धारणा थी कि भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव क्रमशः घटता जायगा। इसीलिए जहाँ और खर्चों में ५०० करोड़ की वृद्धि की गयी, सैनिक खर्च में एक पाई की भी वृद्धि ज़रूरी नहीं समझी गयी। इसी वजह से कुल खर्च का १.९ प्रतिशत ही सेना के हिस्से पड़ा।

दूसरी ओर, आर्थिक विकास के साधनों पर काफ़ी ज़ोर दिया गया। केवल सरकारी उद्योगों के लिए ७०६.३ करोड़ मार्क की पूंजी निश्चित की गयी है ताकि उनमें उत्पादन के नये से नये तरीक़े लागू किये जा सकें और कारख़ानों के कामों का अभिनवीकरण हो सके। इसके अलावा इन उद्योगों को बैंक-कर्ज़े अलग से मिले हैं। उद्योगों पर यह ख़र्च प्रति व्यक्ति ४०७.९९ मार्क पड़ता है।

साथ ही जो चीज़ें जनता के रहन-सहन पर सीधे असर करती हैं, उनके सिलसिले में भी काफ़ी धन ख़र्च के मद में डाला गया है। ऊपर जिस ५०० करोड़ मार्क के अतिरिक्त ख़र्चे का उल्लेख किया गया है उसके १।४ भाग का उपयोग सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं में किया जायगा। इसके अलावा शिक्षा और शोध आदि कार्यों पर ७० करोड़ से कुछ अधिक लगाया जायगा। स्वास्थ्य और समाज-कल्याण के ख़र्च में ५० करोड़ और बढ़ा दिया गया है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि इस तरह की मदें बजट के कुल ख़र्चे की ३९.५ प्रतिशत हैं। इनके साथ ही वेतन-वृद्धि, मूल्यों में कमी और इसी प्रकार के अन्य कामों के लिए भी काफ़ी धन निश्चित किया गया है।

कहने की ज़रूरत नहीं कि इस बजट का ढांचा ही बता देता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र शांति का इच्छुक है। हमारे देश की जनता का जीवन-स्तर जिस गति से निरन्तर ऊँचा होता जा रहा है उससे समूचे जर्मनी के लोग यह देख सकते हैं कि किसी राष्ट्र की खुशहाली हिंसा-प्रतिहिंसा की नीति से नहीं, बल्कि शांतिमय कार्यों से संभव है। इस सदी के पूर्वार्द्ध में हो दो-दो बार जर्मनी को विश्वयुद्ध का अखाड़ा बनाया गया। आज फिर जर्मन भूमि पर तनाव की सबसे ख़तरनाक चालें चली जा रही हैं। इसीलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति, जो कि उसके बजट में भी परिलक्षित होती है, मानवता की आशाओं और इच्छाओं को पूरा करने की दिशा में, जन-जीवन से सदा-सदा के लिए युद्ध सामाप्त कर देने की दिशा में इतना बड़ा महत्व रखती है।

साथ ही इस बजट के आँकड़े हमारी आर्थिक स्थिति की प्रगति के भी प्रमाण हैं।

हमारे उद्योगों में उत्पादन का जो अभिनवीकरण किया गया है उससे सरकारी उद्योगों के मुनाफ़े बढ़े हैं। फलतः बजट में उनका योगदान भी बढ़ा है। सरकारी उद्योगों से ४४३ करोड़ मार्क यानी १९.९ प्रतिशत की आमदनी होती है जो कि समूची राष्ट्रीय आमदनी का ६४ प्र. श. है। दूसरी ओर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के बजट में मज़दूरों और कर्मचारियों से वसूले गये टैक्सों की भूमिका नगण्य है। कुल आय का केवल ४.८ प्र. श. करों के रूप में आता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक स्थिति कितनी मज़बूत है इसका एक प्रमाण यह भी है कि हमें कभी घाटे का बजट नहीं बनाना पड़ता। ख़र्चे की अपेक्षा हमारी आमदनी अधिक रहती है। इस साल भी ८२ लाख मार्क की बचत है, जबकि १९५९ से १२ लाख ४० हजार मार्क जमा के

(शेष पृष्ठ १५ पर)

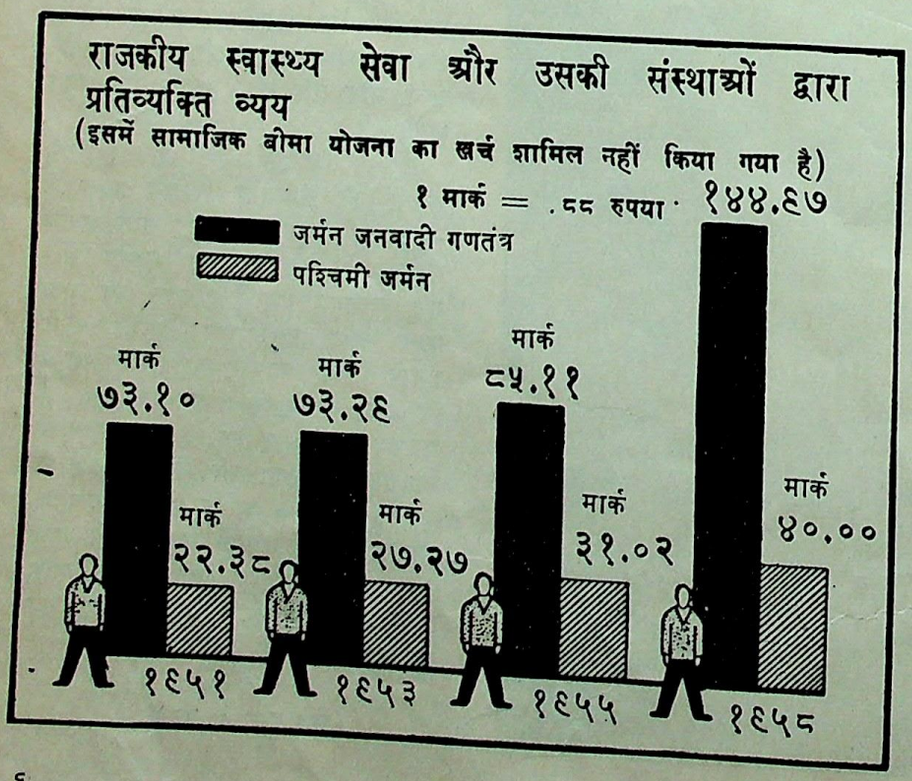

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्र गुप्त अग्रवाल कहते हैं :

"जर्मन जनवादी गणतंत्र हमें बहुत अच्छा लगता है"...

वर्नर क्लीन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत के अनेक छात्र अध्ययन कर रहे हैं। बीस वर्षीय युवक श्री चन्द्रगुप्त अग्रवाल भी उनमें से एक हैं। "इंडिया इन्टरनेशनल क्लब" (कलकत्ता) के मंत्री के आप सुपुत्र हैं।

लइपज़िग स्थित कार्ल मार्क्स विश्व-विद्यालय में विदेशियों के अध्ययन के लिए एक विभाग है। श्री अग्रवाल साल भर से उसी विभाग में जर्मन भाषा सीख रहे हैं। जर्मन भाषा की जानकारी हासिल कर लेने के बाद आप रसायन शास्त्र का अध्ययन शुरू करेंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र आने और वहाँ अध्ययन करने की प्रेरणा श्री अग्रवाल को कैसे मिली—इसका वर्णन करते हुए आपने कहा :

"जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक प्रतिनिधिमंडल भारत आया था। हमने उसे कलकत्ता आने के लिए भी आमंत्रित किया। उस समय मैं जर्मन भाषा में बातचीत नहीं कर सकता था, अलबत्ता थोड़ा-बहुत पढ़ ज़रूर लेता था। मुझे क्लब की ओर से स्वागत-भाषण पढ़ने की आज्ञा हुई। बाद को प्रतिनिधिमंडल के नेता और जर्मन जनवादी गणतंत्र की संसद् के अध्यक्ष डा० जोहान्स डीक्मन के साथ मुझे बातचीत करने का सौभाग्य मिला। उनसे मैंने टूटीफूटी जर्मन भाषा में ही बातचीत की और तभी मुझे जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर अध्ययन करने की प्रेरणा मिली।"

श्री अग्रवाल को लइपज़िग आने में ज. ज. गणतंत्र के भारत स्थित व्यापार दूतावास के अतिरिक्त विश्व-विद्यालय संबंधी राज्य मंत्रालय और बर्लिन स्थित ट्रेड स्कूल सिस्टम ने सहायता दी। श्री अग्रवाल यहाँ रसायन शास्त्र का अध्ययन करने आये हैं। वे इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र अपनी रसायन-विद्या के लिए संसार में सबसे आगे है।

चन्द्रगुप्त अग्रवाल (पहली पंक्ति में दायें) लइपज़िग संस्थान में विदेशी छात्रों के साथ। शा[illegible] को प्रकाश दिखलाता है।

नौ महीने रहने के बाद श्री अग्रवाल को जर्मन भाषा की अच्छी ख़ासी जानकारी हासिल हो गयी है। डेढ़ महीने में ही आपने प्रारम्भिक परीक्षा पास कर ली और ज्विकाउ में पढ़ने लगे थे। श्री अग्रवाल के लिए ज़रूरी था कि वे अपने विषय के अध्ययन के लिए जर्मन भाषा के टेकनिकल और पारिभाषिक शब्दों की जानकारी हासिल करें, इसलिए वे जर्मन भाषा का अभी और अध्ययन कर रहे हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लगभग सभी छात्रों की भांति इस भारतीय युवक की भी शिक्षा मुफ्त है। उन्हें सरकार की ओर से २८० मार्क प्रति माह की छात्र-वृत्ति मिलती है। इससे उनका जीवन-निर्वाह अच्छी तरह हो जाता है। 'मैत्री-निवास' में वे रहते हैं। वहाँ उन्हें हर तरह की सुख-सुविधा है। महीने में १० मार्क कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

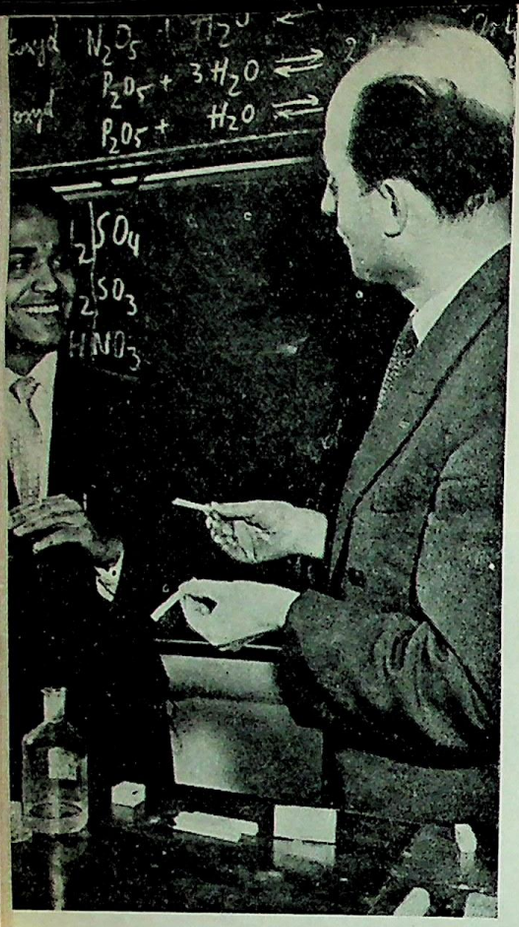

चन्द्र गुप्त अग्रवाल को रसायन कक्षा भी 'बहुत अच्छी लगती है'।

का किराया पड़ता है जिसमें बिजली और कमरा गरम रखने का ख़र्च भी शामिल है। भोजन रुचिकर मिलता है। कई देशों के छात्रों से मेल-मिलाप है। कुल मिलाकर श्री अग्रवाल यहां बिलकुल घर जैसा महसूस करते हैं।

पढ़ाई के बाद जो समय मिलता है उसका बड़ा ही सुन्दर सदुपयोग होता है और यही इस भारतीय युवक के लिए सबसे बड़ा आकर्षण है।

श्री अग्रवाल का कहना है :

"जर्मन इतिहास और साहित्य में मेरी बड़ी दिलचस्पी है। गेटे और शिलर मुझे उतने ही प्रिय लगते हैं जैसे अपने कालिदास। हम लइपज़िग तक ही अपने को सीमित नहीं रखते, बल्कि उन तमाम जगहों में घूमते हैं जो अपनी महान् सांस्कृतिक विरासत के लिए मशहूर हैं। हर महीने हम कहीं न कहीं बाहर घूमने जाते हैं। हम कल-कारखानों में भी जाते हैं और इस प्रकार मज़दूरों के जीवन से परिचय प्राप्त करते हैं। हम विदेशियों को ऐसे भ्रमण बहुत अच्छे लगते हैं। मज़दूरों और किसानों की सरकार यहाँ विकास के काम किस गति से आगे बढ़ा रही है—इसकी जानकारी में हम बड़ी दिलचस्पी लेते हैं।"

यहाँ खेल की तालीम की भी बड़ी गुंजायश है। सर्दियों में श्री अग्रवाल एक शिविर में गये हुए थे। वहाँ उन्होंने स्केटिंग सीखने का प्रयत्न किया और कहा कि एक भारतीय के लिए यह अनुभव बड़ा ही रोमांचकारी था।

जनता से मिलना-जुलना भी एक अच्छी बात है। हमारे देश के मज़दूर परिवार और जाने-माने लोग इन नौजवान छात्रों को दावतें देते हैं और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

श्री चन्द्रगुप्त अग्रवाल पाँच वर्ष तक यहाँ अध्ययन करेंगे। इस बीच वे अपने घर भी जायेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिकारियों और जनता की ओर से इन विदेशी छात्रों को जो स्नेह मिलता है उससे उनका प्रवास बड़ा ही सुखमय हो जाता है। स्वयं इस हँसमुख भारतीय युवक का कहना है, "जर्मन जनवादी गणतंत्र हमें बहुत अच्छा लगता है। हमें यहाँ अपने माँ-बाप की तरह का ही स्नेह मिल रहा है। यहाँ से इल्म और हुनर सीखने के बाद अपने मुल्क वापस जाऊँगा और मातृभूमि की सेवा करते हुए उन हज़ारों-लाखों हाथों में मेरा भी हाथ शामिल होगा जो भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र की दोस्ती मज़बूत करने म लगे हुए हैं।"

(पृष्ठ ५ का शेष)

जर्मन जनवादी गणतंत्र के आयात की संभावनाएँ इस प्रकार हैं:

	१९५८		१९६५	
कच्चा लोहा	५,५७,०००	टन	१४,३५,०००	टन
स्पात (रोल्ड)	१२,४३,०००	,,	२२,६५,०००	,,
ऊन	१२,५००	,,	३४,४००	,,
अच्छे ढंग का ऊन	३,०००	,,	२०,७००	,,
कपास	८८,०००	,,	१,४७,०००	,,
कच्चा चमड़ा	१७,२००	,,	३१,२००	,,

इसके अलावा मौसमी फलों, कच्ची काफ़ी, नारियल के बीज, धुलाई की मशीनें, रेफ्रिजीरिटर तथा सूती कपड़े आदि का आयात तो कई गुना बढ़ेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत के बीच व्यापार की व्यापक संभावनाएँ हैं। भारतीय-निर्यात संस्थाओं को चाहिए कि वे इनका पूरी तरह से सदुपयोग करें। इस प्रसंग में भारत के कच्चे चमड़े और उससे तैयार की हुई चीज़ों तथा ग्लेसरीन, तेल आदि का उल्लेख आवश्यक है जिनका बहुत बड़े पैमाने पर भारत से निर्यात हो सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में पशु-पालन पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। इसके लिए हमें खली और मछलियों की बड़ी आवश्यकता होगी। खेती की मशीनों का उत्पादन बढ़ेगा जिनकी पैकिंग के लिए हमें भारतीय जूट की आवश्यकता होगी। भारत में स्पात और रसायन के उद्योगों की स्थापना हो रही है। इन उद्योगों से पैदा हुए माल की भी हमारे देश में काफ़ी खपत होगी।

भारत से अधिकाधिक माल मंगाने के पीछे जर्मन जनवादी गणतंत्र का यह भी मंतव्य रहता है कि भारत का निर्यात बढ़े और उसे विदेशी मुद्रा के संकट से छुटकारा मिले।

जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत के बीच सन् ६० से ६२ तक के लिए सरकारी स्तर पर जो समझौता हुआ है उसमें आयात-निर्यात की पहलेवाली सूची में संशोधन और परिवर्तन करके भारतीय निर्यात की संभावनाओं को काफ़ी आगे बढ़ाया गया है। यदि दोनों पक्षों की ओर से इस दिशा में सत्प्रयास जारी रहे तो हमारे व्यापार-संबंधों के गहरे होने में कोई रुकावट नहीं आ सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुम्बल्ड विश्वविद्यालय बर्लिन में

भारतीय विज्ञान विभाग

हिलद्रड रयुस्ताड

हुम्बल्ड विश्वविद्यालय, बर्लिन में पहले केवल भारतीय भाषाओं की पढ़ाई होती थी। उस विभाग को अब नया नाम देकर उसके अन्तर्गत भाषाओं के अलावा अन्य भारतीय विषयों की भी पढ़ाई और शोध प्रारम्भ कर दिया गया है। इस विभाग का नया नाम 'भारतीय विज्ञान' रखा गया है। इस विभाग के संचालक हैं प्रो० डा० वाल्टर रचूबेन।

हुम्बल्ड विश्वविद्यालय में भारतीय विज्ञान विभाग का उद्देश्य यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के वैज्ञानिकों और छात्रों के सामने भारत की ऐतिहासिक परम्पराओं के साथ-साथ आधुनिक भारत के महत्वपूर्ण विकास का सम्पूर्ण चित्र सामने आ सके। इस व्यापक उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए भारतीय पुस्तकों का महज़ दार्शनिक विवेचन और शोध पर्याप्त नहीं होता। इसके साथ ही भारत की अनेक गहन समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन भी ज़रूरी है। उपनिषदों या भागवत-गीता के वैज्ञानिक विश्लेषण को महत्वपूर्ण मानते हुए आधुनिक भारत को समझना उस विभाग का परम लक्ष्य है।

भारतीय विज्ञान विभाग के समक्ष जो उत्तरदायित्व हैं उसे देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वाधीन भारत के महान् और नये परिवर्तनों के अध्ययन और शोध के प्रति विशेष ध्यान देना स्वाभाविक ही है। इस विभाग में जितने भी जर्मन वैज्ञानिक और छात्र हैं वे उस भारत के, जिसने अंग्रेजों की पहनायी हुई बेड़ियां सफलतापूर्वक काट फेंकी, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के अध्ययन में गहरी दिलचस्पी लेते हैं। इन दिशाओं में भारत को जब भी कोई सफलता मिलती है, तो जर्मन बुद्धजीवी गद्गद हो जाते हैं। पहले भारतीय पुस्तकों का जर्मन भाषा में उल्था मात्र हो जाया करता था और इतने भर से जर्मनी के प्राच्य भाषा विशारद् खुश हो लिया करते थे। लेकिन आज वह स्थिति नहीं रही। हुम्बल्ड विश्वविद्यालय का यह भारतीय विज्ञान विभाग आज नये क्षितिज छू रहा हैं।

लेकिन इसका भाव यह नहीं कि प्राचीन भारत के अध्ययन और शोध की समस्याओं को नज़रअन्दाज़ किया जाता है। बल्कि असलियत तो यह है कि भारतीय अध्ययन की दिशा में जर्मनी अपनी जिस सुप्रसिद्ध पुरानी परम्परा के लिए विश्वविख्यात रहा है, जर्मन जनवादी गणतंत्र उसे और सुसम्पन्न करने और आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। इस संबंध में शोध कार्यों के अलावा जो पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है, उसमें प्राचीन भारतीय इतिहास का वैज्ञानिक विश्लेषण, भारतीय दर्शन और साहित्य, भारतीय समाज विकास और आधुनिक भारतीय इतिहास का अध्ययन शामिल है। आधुनिक इतिहास में सन् १८५७ और उसके बाद की धाराओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में औपनिवेशिक दासता के युग में भारत की आर्थिक स्थिति और विकास का अध्ययन भी शामिल है। इस विभाग के छात्रों को अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य और भारतीय दर्शन का अध्ययन करना पड़ता है। भारतीय दर्शन के अध्ययन में महान् दार्शनिक सर्वपल्ली राधाकृष्णन की कृतियाँ से शामिल हैं।

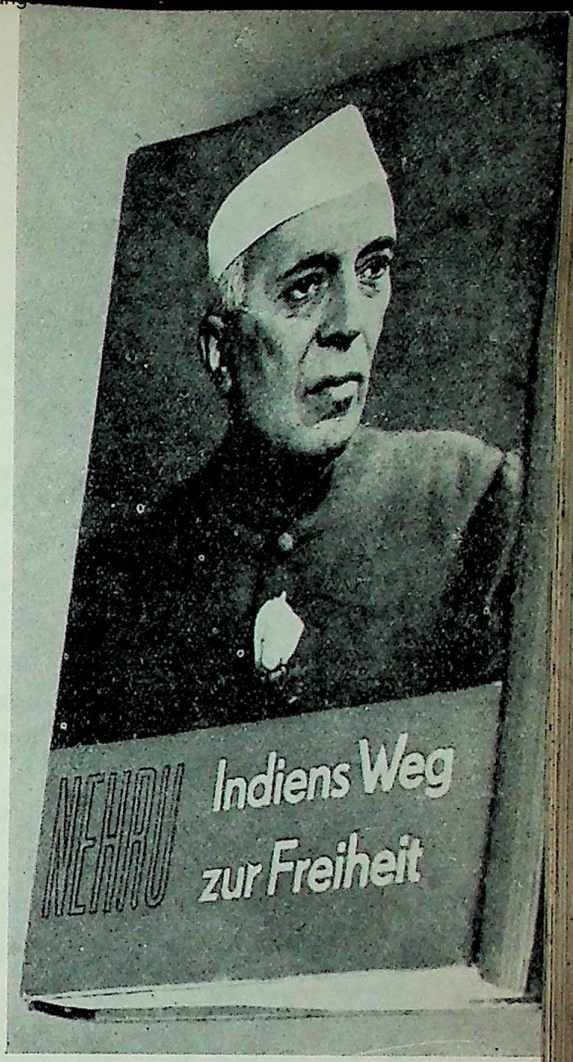

'मेरी कहानी' का जर्मन संस्करण

इस विभाग में छात्रों को अपने समय का काफ़ी अंश भारतीय भाषाओं के अध्ययन में लगाना पड़ता है। सारे छात्रों के लिए पाँच वर्ष तक हिन्दी का अध्ययन करना अनिवार्य है। इसके अलावा हर छात्र को एक और अन्य भारतीय भाषा पढ़नी पड़ती है। उसमें अधिकांश छात्र बंगला पढ़ते हैं। छात्रों के पाठ्यक्रम में संस्कृत भी है। भारतीय भाषा शास्त्र का इतिहास भी सक आवश्यक विषय है जिसके लिए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी, नयी (खड़ी बोली) हिन्दी, बंगला और उर्दू की कक्षाएं होती हैं। दुःख का विषय यह है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी, बंगला और उर्दू के अलावा इस विभाग में अन्य भाषाओं की पढ़ाई अभी तक शुरू नहीं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

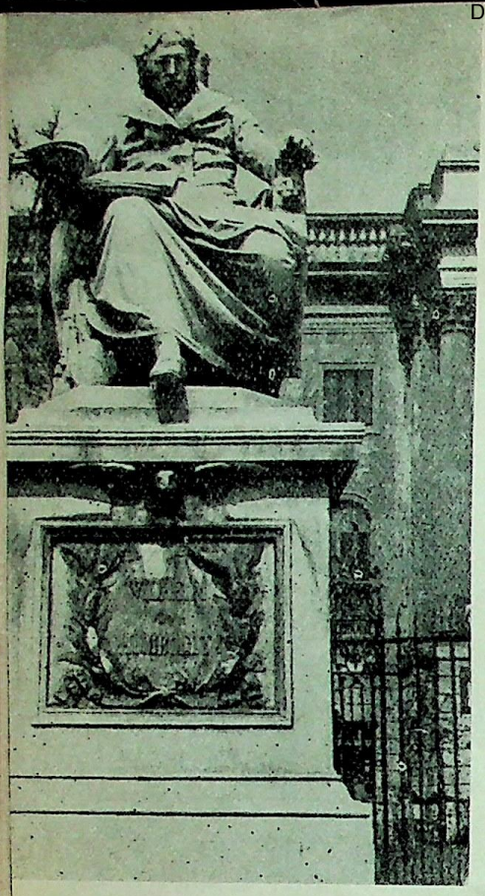

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय बर्लिन के सामने हुम्बोल्ड भाइयों की मूर्तियाँ। जब एक तरफ विल्हेम वान हुम्बोल्ड सन् १८१० में इस विश्वविद्यालय की स्थापना कर रहे थे तो दूसरी तरफ़ उनके भाई अलेक्जेन्डर वान हुम्बोल्ड भौतिक भूगोल, निरुक्त, भूमि-आकर्षण, प्रकृति-विज्ञान और मानव तथा प्रकृति के सम्बन्धों पर अपने गहन शोध से ज्ञान का प्रकाश फैला रहे थे। दूसरे महायुद्ध में यह विश्वविद्यालय भी ध्वंस हो चुका था। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने उसे ज्यों का यों बनाकर खड़ा किया। आज हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय फिर ज्ञान वैभव के शिखर पर है। यहां लगभग १७००० छात्र अध्ययन करते हैं।

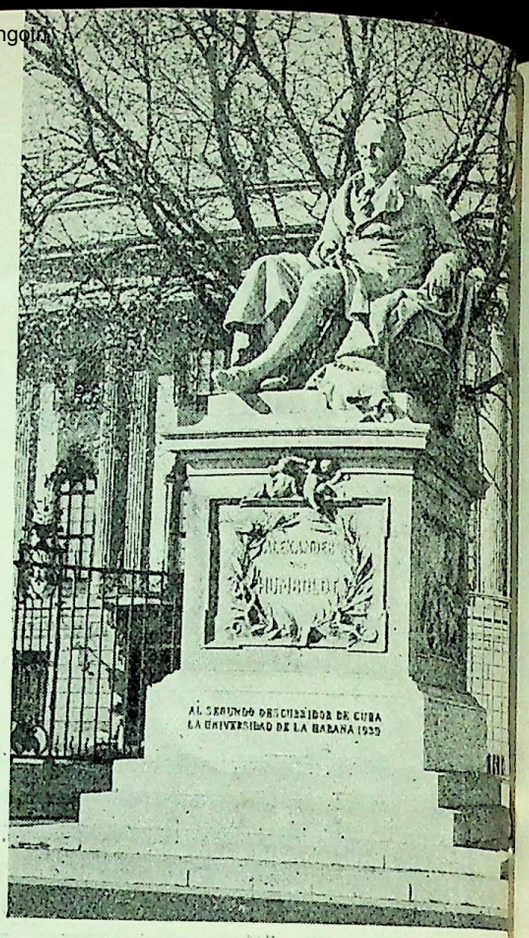

जा सकी है। यद्यपि इस ओर पढ़ने-वालों की पूरी दिलचस्पी है लेकिन उन भाषाओं के लिए अभी तक हमें शिक्षक नहीं मिल सके हैं।

इस विभाग के शोध का केन्द्र विन्दु आधुनिक भारत की समस्याएं हैं। उन्हें समझने में भारतीय उपन्यास भी बड़े सहायक होते हैं जिनके विश्लेषण में हमें विशेष रुचि है। तिलक, विवेकानन्द और रोमेश चन्द्र दत्त के दार्शनिक पक्ष की मीमांसा और आधुनिक भारत में संस्कृत की भूमिका, गांधीजी के कार्यों का वैज्ञानिक शोध आदि ऐसे कार्य हैं जिनके संचालन में भारतीय विज्ञान विभाग को बड़ा गर्व है। भारतीय ग्राम-समाज का विकास कैसे हुआ—इस पर शोध करने के लिए इस विभाग ने एक विद्वान् को नियुक्त कर रखा है। इसी सिलसिले में डा० हेड्रिख़ गत अप्रैल में भारत आये और इस समय मद्रास विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं।

यह भारतीय विभाग विदेशों के विद्वानों और संगठनों से सहयोग और सम्पर्क स्थापित करता है। लेनिनग्राद में प्राच्य भाषा विशारदों का सम्मेलन हो रहा है। इसकी तैयारियों में हुम्बल्ड विश्वविद्यालय के इस विभाग ने भी सहयोग दिया है।

रवि ठाकुर के अध्ययन को बड़ा महत्व दिया जाता है। इस महाकवि पर व्यापक और गहन शोध कार्य की तैयारियां हो रही हैं। वह सारा कार्य रविठाकुर की स्मृति में मनाये जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष को समर्पित है।

हुम्बल्ड विश्वविद्यालय के भारतीय विज्ञान विभाग को इस प्रकार पूर्णतया नयी दिशा देना कोई सरल काम नहीं। खास तौर से शुरू में तो बहुत सी कठिनाइयाँ पैदा होती हैं जिन्हें हल किये बग़ैर कोई भी संस्था सफलता तक नहीं पहुँच सकती।

हमारे सामने एक विशेष कठिनाई महत्वपूर्ण शोध क्षेत्रों से संबंधित आधुनिक साधनों की कमी है; मसलन रोमेश चन्द्र दत्त की समूची कृति हमारे पास नहीं, या रामकृष्ण मिशन का पूरा साहित्य नहीं जिसके बग़ैर विवेकानन्द का आलोचनात्मक विश्लेषण असंभव है। इसी प्रकार हमारे पास और भी बहुतेरी सामग्री की कमी है।

इस विभाग के सहकर्मी सबसे बढ़ कर भारत में होने वाले आधुनिक शोध कार्यों में दिलचस्पी रखते हैं। यदि भारतीय विद्वान् अपने देश के आधुनिक विचारकों जैसे विवेकानन्द, तिलक, गांधी आदि पर हुए शोध कार्यों से जर्मन विद्वानों को अवगत कराते रहें तो हम जर्मन लोग उनके बड़े ही आभारी होंगे। इस तरह के सहयोग का हम हृदय से स्वागत करेंगे। हुम्बल्ड विश्वविद्यालय ऐसे भारतीय विद्वानों को सर आँखों पर बिठाने के लिए तैयार है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक दो साल रहकर भारतीय भाषा शास्त्र, साहित्य और इतिहास का अध्ययन कर सकें।

किसी देश के बारे में उसी देश का नागरिक गहराई में बैठकर शोध कार्य कर सकता है। यह भारतवासियों के लिए भी सच है। लेकिन हम जर्मन जनवादी गणतंत्र के विकास और प्रगति पर दूसरों के मत जानने के लिए भी उत्सुक हैं। इसी प्रकार हमें आशा है कि हुम्बल्ड विश्वविद्यालय के भारतीय विज्ञान विभाग की गतिविधियों में भारतीयों को भी दिलचस्पी होगी। आख़िर देशों के अनुभव विचारों के आदान-प्रदान से ही तो बढ़ते हैं। और सबसे बढ़कर एक दूसरे की संस्कृति, साहित्य, इतिहास और परम्परा को समझना राष्ट्रों के बीच सद्भाव पैदा करने का सुनहला रास्ता है। कहना न होगा कि हमारी उक्त संस्था का यही सर्वोपरि लक्ष्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रैक्टर-उपहार

'एक भारतीय गांव को जर्मन जनवादी गणतंत्र की भेंट'

के० एस० भाटिया
'फूड एंड फ़ार्मिंग' के संवाददाता

उत्तर प्रदेश में जौली नामक एक गांव है। उसकी आबादी ३ हजार है। यहाँ किसानों के अलावा बढ़ई, कारीगर और ग्वाले बसते हैं। सन् १९५९ के प्रारम्भ में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री श्री ओटो ग्रोटेवाल ने जब भारत की यात्रा की तो इस छोटे से गांव को भी श्री ग्रोटेवाल के स्वागत-सत्कार का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

जौली का निरीक्षण करते हुए प्रधान मंत्री ने एक ट्रैक्टर भेंट किया था जो आज उस गांव की एक बहुमूल्य निधि बन गया है। इस पर सारे गांव का अधिकार है और लगभग १६०० एकड़ ज़मीन की जुताई करता है। यह ट्रैक्टर गत मार्च में जौली पहुंचा।

गांव में जाने से पहले इस ट्रैक्टर का विश्व-कृषि मेले (दिल्ली) के भारतीय मण्डप में प्रदर्शन किया गया था। मेले में ही उपहार-समारोह आयोजित हुआ था; जिसमें श्री ग्रोटोवाल की ओर से जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपप्रधान मंत्री श्री एच० राउ ने जौली गांव के प्रधान, महाराज सिंह को उक्त ट्रैक्टर भेंट किया था।

गांव वालों ने मुझे बताया कि जिस दिन से ट्रैक्टर जौली पहुंचा है, उसी दिन से काम में आने लगा और अब तक ४०० एकड़ बंजर भूमि तोड़ चुका है।

कहना न होगा कि जौली में पहली बार एक ऐसी मशीन पहुंची है जिसका उपयोग समूचे किसानों के हित में हो रहा है। गांव पंचायत ने एक नया ट्रैक्टर-विभाग खोल दिया है जो नयी जमीनें तोड़ने और उन छोटी जोतों वाले किसानों की, जो सहकारी समिति में आते जा रहे हैं, सहायता करने का कार्यक्रम बनाता है और उसे पूरा करता है।

उपहार तो वैसे सभी को प्रिय होते हैं, पर महराज सिंह को और ही आनन्द मिल रहा है। अब तो खेत सोना उगलेंगे!

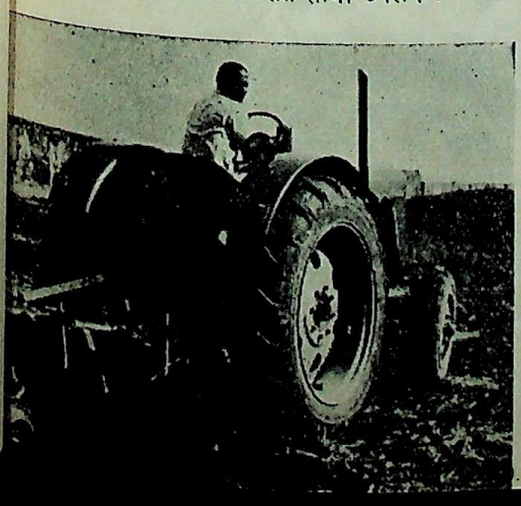

जौली के किसान

गांव में मानसून उतरा ही था कि मैं भी पहुंच गया। वर्षा की नशीली हवाओं से प्यासी धरती और पेड़-पौदे हरे हो गये। उनमें एक नयी ताजगी आ गयी। बादलों से भरे आसमान के नीचे गांव की युवतियां कजरी गाने लगीं, मोर नाचने लगे।

ऐसे ही मोहक वातावरण में गांव के प्रधान, महाराज सिंह से मेरी भेंट हुई। ट्रैक्टर-सम्बन्धी सारे कामों का आप ही संचालन करते हैं। मिलते ही आपने मुझसे कहा, "यह ट्रैक्टर मैत्री का प्रतीक है। यह हमारे दोनों देशों को अधिकाधिक सहयोग के सूत्र में बांधने का एक नया कदम है क्योंकि ये दोनों देश शान्ति और प्रगति की समान दिशाओं की ओर आगे बढ़ रहे हैं।"

श्री महराज सिंह ने आगे कहा, "ज० ज० गणतंत्र के प्रधान मंत्री श्री ग्रोटेवाल के भ्रमण के लिए मेरा गांव चुना गया—इससे हमें बड़ी खुशी हुई थी। हमारा यह गांव लोनी सामुदायिक खंड का सबसे आगे बढ़ा हुआ गांव है। हम सहकारिता के आधार पर अपनी खेती करते और अपने जीवन को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करते हैं। श्री ग्रोटेवाल के आगमन से सामुदायिक विकास की ओर आगे बढ़ने के लिए हम में एक नया उत्साह पैदा हुआ।"

गांव वालों ने मुझे बताया कि जेठ-बैशाख में पुराने हल-बैल से खेतों में काम करना नाकों चने चबाना था। लेकिन इस ट्रैक्टर ने हमारी सारी मुश्किलें दूर कर दीं।

श्री महराज सिंह ने कहा कि इस पूरे इलाके में ऐसा ट्रैक्टर कहीं नहीं है। फसल काट चुकने के बाद सारे

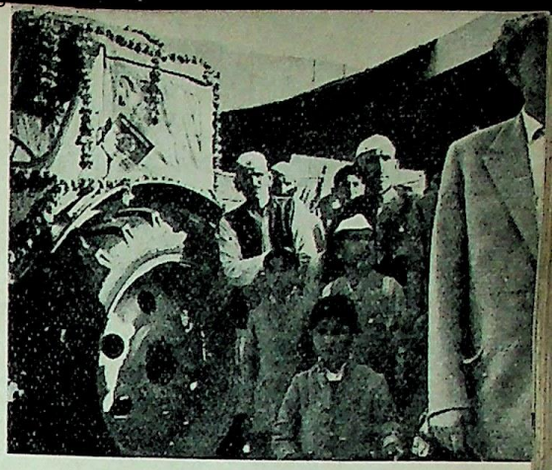

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपप्रधान मन्त्री एच० राउ जौली के किसानों को ट्रैक्टर भेंट कर रहे हैं।

खेतों की हमने इसी की मदद से जुताई की है। जाहिर है, हमारी अगली फसल बहुत ही अच्छी होगी। श्री महराज सिंह ने अनुमान लगाते हुए कहा कि हमें आशा है कि इस ट्रैक्टर की महिमा और अच्छे बीज-खाद से हमारी उपज दुगुनी हो जायगी।

नया क़दम

गांव के प्रधान, श्री महराज सिंह ने हाल में एक सहकारी समिति का भी संगठन शुरू कर दिया है। इसमें २०० किसान सम्मिलित हो चुके हैं जिनके पास कुल मिलाकर ६०० एकड़ जमीन है। यह समिति अपने सदस्यों के लिए अच्छे बीज, खाद, खेती के यंत्र तथा सहकारी आधार पर खरीद-बेच का प्रबन्ध करती है।

श्री महराज सिंह ने आगे कहा, "हम एक नया कदम भी उठाने वाले हैं। हमारा इरादा कृषि सहकारी समिति बनाने का भी है। जब हम छोटी-छोटी जोतों को एक में मिलाकर खेती करना शुरू कर देंगे तभी हमें सहकारिता का पूरा-पूरा लाभ समझ में आयेगा।"

जौली गांव का निरीक्षण करने से लगता है कि सहकारिता आन्दोलन एक नये जीवन को जन्म दे रहा है। जिन किसानों ने नई दिल्ली में विश्व-कृषि मेला देखा, उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र के उत्तरी भाग में स्थित त्रिनविलेरशेगेन की कृषि सहकारी समिति की प्रगति और उसके संचालकों की रचनात्मक क्रियाशीलता का रहस्य समझ लिया। उस कृषि मेले में नक्शों और चित्रों द्वारा त्रिन विलेरशेगेन समिति की प्रगति का दिग्दर्शन कराया गया था। हमारे देश के किसानों ने उसे सहकारिता का एक जीवित उदाहरण समझा होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं।

In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन:

नोयब्रन्डेन्बुर्ग का कायाकल्प

नोयब्रन्डेन्बुर्ग नगर। उसके चारों ओर पहाड़ीनुमा दीवार। उस दीवार के चारों ओर पेड़ों की घनी हरियालियों के बीच तीन-तीन खाइयाँ और दो-दो धुस। दीवार की रक्षा के लिए अडिग सन्तरियों की तरह चार-चार सिंह दरवाज़े--दरवाज़ों पर ऊँची-ऊँची मीनारें। यह सब गोथिक कला का एक नमूना तो हैं ही, साथ ही पुराने ज़माने के किसी ऐसे दुर्ग की

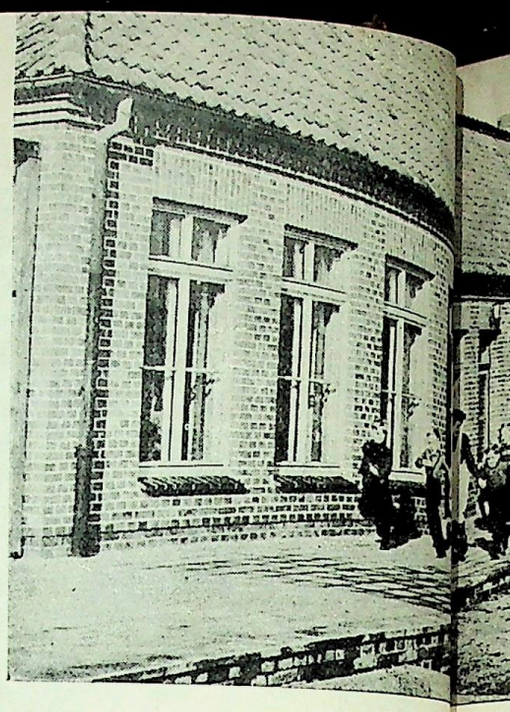

नोयब्रन्डेन्बुर्ग का स

पांच-छ सौ वर्ष पुरानी प्राचीर, पीछे उसका सिंह द्वार। इनके पुनर्निर्माण में सरकार ने लाखों मार्क व्यय किये हैं।

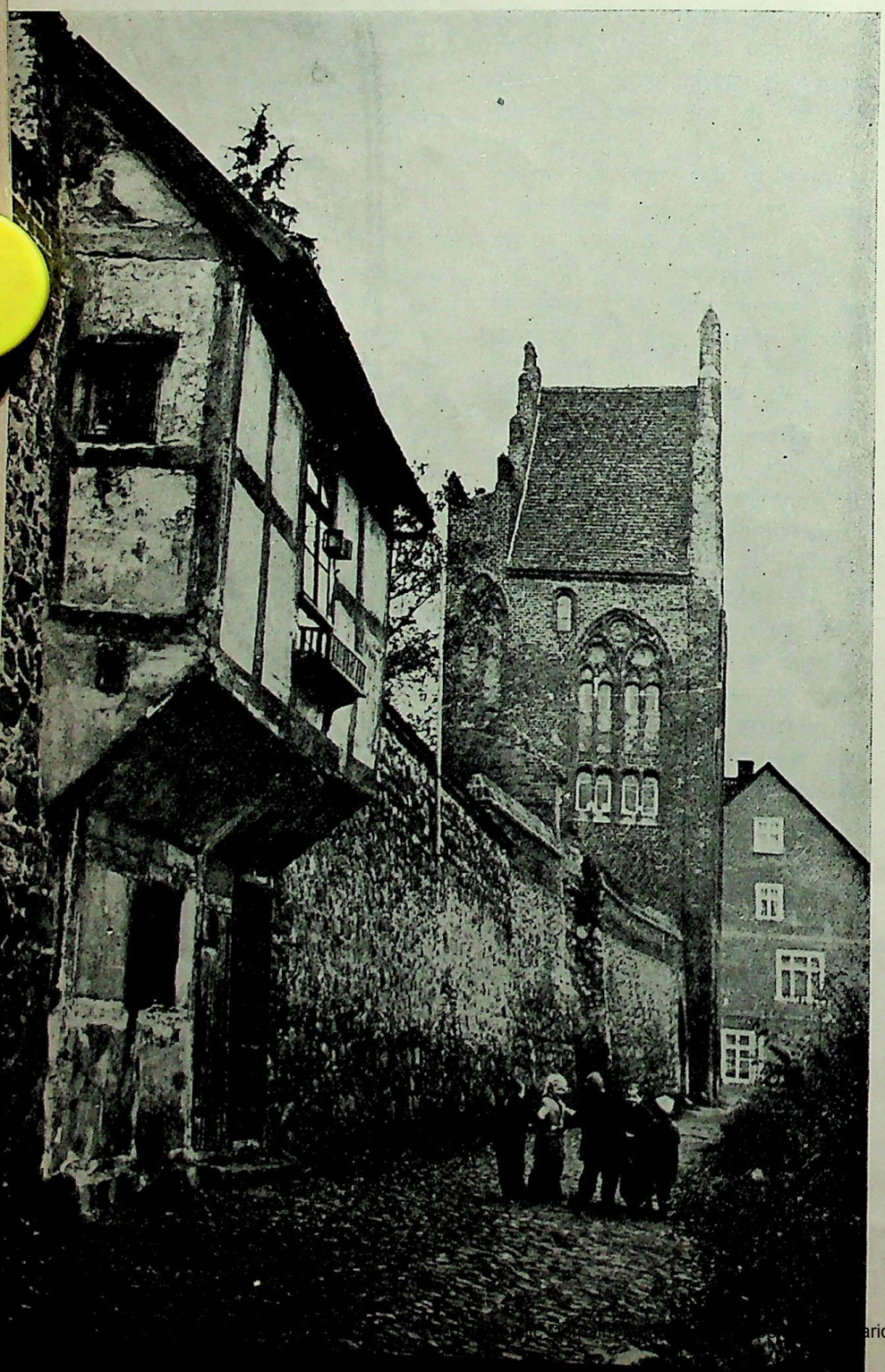

याद दिलाते हैं जिन पर फ़तह पाना आसान नहीं।

और नोयब्रन्डेन्बुर्ग की वह प्राचीर सचमुच अजेय है। पिछली लड़ाई में सभी शहरों की तरह यह भी बुरी तरह से मिसमार हुआ था, लेकिन उस दीवार को जैसे यह गवारा न था कि नोयब्रन्डेनबुर्ग का ध्वंस सब की आंखों में पड़े और उसकी इज्ज़त लुटे। बाहर से देखने पर ऐसा लगता कि जैसे वहाँ कुछ हुआ ही न हो। सारा ध्वंस, सारा धुआँ, सारी आग उसी दीवार के घेरे में छुपी रही।

उस पहाड़ीनुमा दीवार की जैसे यह एक गौरवशाली परम्परा ही रही हो क्योंकि १७३७ में भी एक भीषण अग्निकांड ने ऐसा ही ध्वंस किया था और तब भी यह दीवार पूरे गर्व के साथ खड़ी रही।

सन् १२४८ में आस्तित्व में आने के बाद नोयब्रन्डेन्बुर्ग इतिहास की करवटों का निरन्तर साक्षी बना रहा। इसने इन्क़लाब भी देखे हैं और उनका फल भी। मसलन इसने सन् १८४८-४९ का पूंजीवादी इन्क़लाब भी देखा जब कुल मिलाकर एक ही प्रगति सामने आयी और वह यह कि यहाँ के नागरिकों को सड़कों पर सिग्रेट पीने की आज़ादी मिल गयी।

इस शहर ने जर्मनी के एक बड़े ही जनप्रिय कवि फ़्रिट्ज़ रयूटर को पनाह भी दी है। रयूटर ने कई सालों

aridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोयब्रन्डेनबुर्ग का स्कूल

की नज़रबन्दी से छूटने के बाद यहाँ बैठकर अमर कृतियों की रचना की।

और आज जर्मन जनवादी गणतंत्र के उत्तरी भाग में स्थित यह शहर समाजवादी वसन्त के मनोहर चित्र देख रहा है। नाज़ी-युद्ध के ध्वंस और घावों की पीड़ाएँ भूलना आसान न था। लेकिन नयी ज़िन्दगी की रगों में भी तो गज़ब का जादू होता है। आज नोयब्रन्डेन्बुर्ग पर लड़ाई की एक खरोंच भी न दिखायी पड़ेगी।

सन् १९५२ में यहाँ सूबे (काउन्टी) की राजधानी बनायी गयी। यह सूबा जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे बड़ा खेतिहर इलाक़ा है। इसलिए सबसे बड़े प्रशासन केन्द्र का भार भी इस पर आया। इतने बड़े काम के लिए ज़रूरी था कि इस अंग-भंग नगर को नया रूप दिया जाय—एक बड़ी सी योजना बनायी जाय और उसे जल्द पूरा किया जाय। हालांकि यह काम उतना आसान भी न था क्योंकि नये निर्माण के साथ-साथ नोयब्रन्डेन्बुर्ग के पुराने रूप-रंग और खिंचाव को भी ज्यों का त्यों रखना था। ख़ैर, तेज़ी से काम शुरू हुआ। पुरानी बुनियादों पर एक के बाद एक नयी सड़कों की क़तारें चल निकलीं और उस पुरानी गोलाकार प्राचीर के अन्दर पुराने शहर को नया सज-धज मिलने लगा। यहाँ की सारी इमारतों में अगर एक ओर नये ज़माने की हर ज़रूरत पूरी करने के साधन हैं तो वहीं दूसरी ओर उनका पुराना रूप भी ज्यों का त्यों पाया जा सकता है।

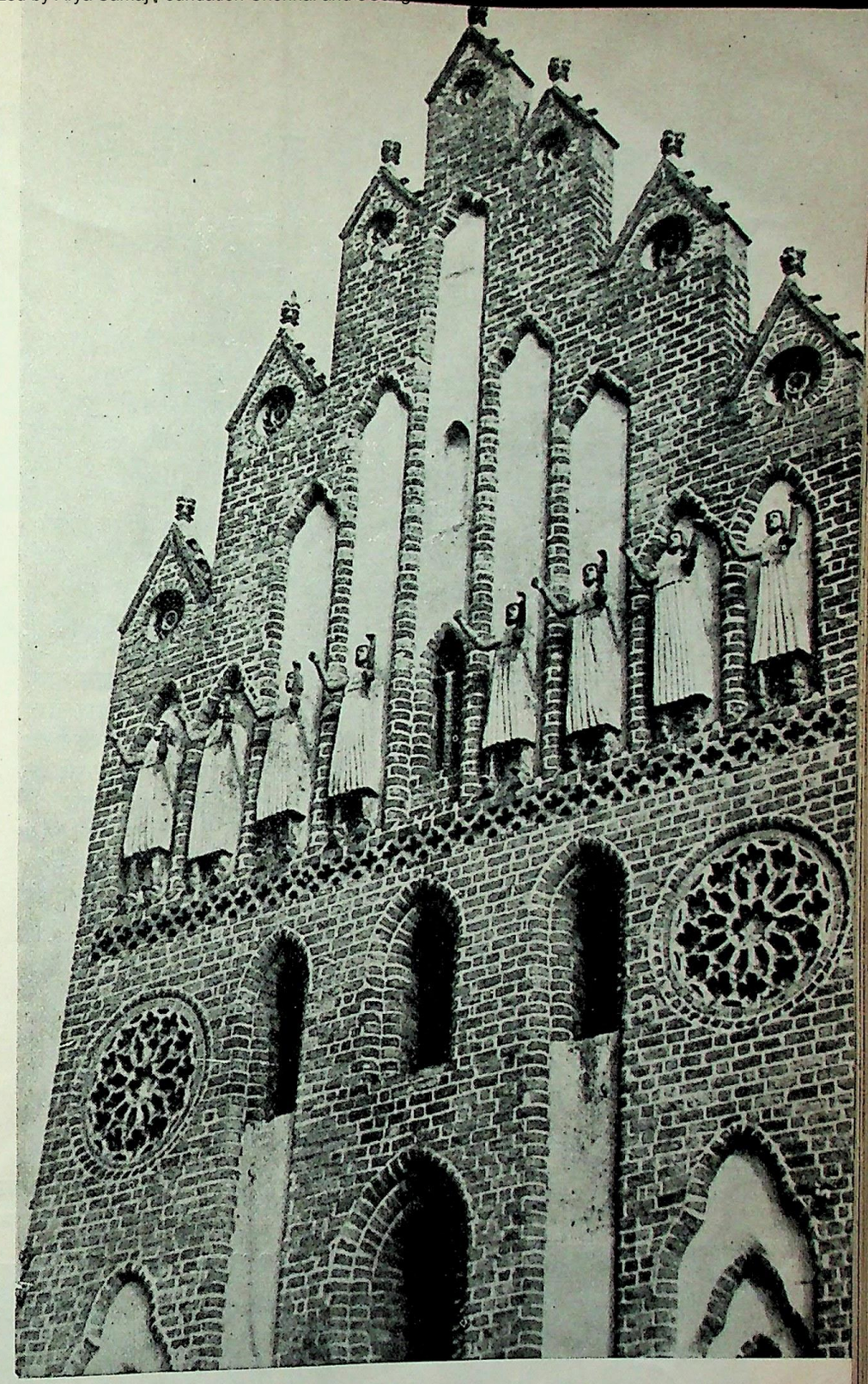

नोयब्रन्डेनबुर्ग का एक सिंह द्वार, प्रार्थना में कुमारियों के हाथ उठे हैं।

आज से कई सौ वर्ष पहले जिन हाथों ने २३०० मीटर लम्बी, ८ मीटर ऊँची और २ मीटर चौड़ी यह दीवार खड़ी की थी—वे सृजन के हाथ थे। वे अपने नोयब्रन्डेन्बुर्ग की थाती को युद्ध और आग से बचा कर रखना चाहते थे। आज वह थाती सिर्फ़ बचा कर ही नहीं रखी जा रही है, बल्कि भविष्य के तमाम सुनहरे सपनों को भी वहाँ साकार किया जा रहा है। तोलेन्से झील की लहरों से खेलती हुई नोयब्रन्डेन्बुर्ग की समाजवादी प्रगति किसी भी संभावित नाश का मुंहतोड़ जवाब है। ये नये हाथ नोयब्रन्डेन्बुर्ग की दाग़बेल डालने वाले उन्हीं पुराने हाथों के सही वारिस हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लइपज़िग का डाक-बिक्री-घर

लिज़ा शिरमर

इसी साल, फरवरी की बात है, एक दिन डमबेक गाँव के किसान शाम को खेतों से घर लौटे ही थे कि उन्हें एक बड़ा सा लिफ़ाफ़ा मिला। भेजने वाला था—मेल आर्डर हाउस, लइपज़िग। "आखिर इस लिफ़ाफ़े में क्या हो सकता है? वसन्त की भेंट की सूची तो नहीं?" किसानों ने अपनी आराम कुर्सियों पर बैठे-बैठे लिफ़ाफ़ा खोलते हुए सोचा।

और वह सचमुच वसन्त की भेंट ही थी।

लइपज़िग में एक ऐसी फ़र्म है जो हर वसन्त और शरद में अपने ग्राहकों के पास चीज़ों की सूची भेजती है।

उस गाँव में जब नयी सूची पहुँची तो घरों में एक चहल-पहल मच गयी। कौन-कौन सी चीज़ें पसन्द की जायँ, क्योंकि उस सूची में तो २६०० चीज़ें गिनायी गयी थीं। उसमें रेडियो भी थे, घड़ियाँ भी थीं, फर्नीचर, कालीन, टाइपराइटर, कैमरे, किताबें सफ़ाई की मशीनें, फुटबाल, चमड़े के बैग और खिलौने—सभी कुछ तो था। फिर भांति-भांति के कपड़ों और पोशाकों के नाम भी सूची में दिये हुए थे। गांव वाले सोचने लगे; उस फ़र्म का स्टोर कितना बड़ा है और उसमें क्या दुनिया भर की चीज़ें समा जाती हैं।"

घर ही में बैठे-बैठे दुनिया भर की चीज़ें खरीदिये। न दुकान बन्द होने की कोई जल्दी, न बार-बार जाने की झंझट, न दुकान-दुकान भटकने की परेशानी। किसी-किसी परिवार में तो तीन-चार शामें चीज़ों की पसन्द में ही बीत जाती हैं। फिर सारे गाँव के लोग अपने अपने आडर एक लेटर बक्स में डाल देते हैं। दूसरे दिन वह सब लइपज़िग पहुँच जाता है और कोई ताज्जुब नहीं जब उसी दिन पूरे जर्मन जनवादी गणतंत्र से ५ हजार और इसी तरह के आडर आ रहे हों।

ऐसी डाक लाते-ले जाते डाकिए के चेहरों पर एक मुस्कराहट नाचती रहती है जैसे वह कह रहा हो—शायद वसन्त सचमुच पास आ पहुँचा है।

अब लइपज़िग के उस स्टोर में धूम मच गयी। कोने-कोने से आयी हुई चिट्ठियाँ छांटी जा रही हैं, सबके पते और चीज़ों के आडर फ़ार्मों पर चढ़ाये जा रहे हैं। अगर पहले-पहल कोई गाहक बन रहा है तो उसका नाम स्थायी रजिस्टर में चढ़ाया जा रहा है ताकि आगे से उसके पास बराबर सूची पहुँचती रहे।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि गाहकों के पतों पर एक नज़र डालते ही यह साफ़ हो जाता है कि उनमें से अधिकांश देश के छोटे-छोटे गाँवों और क़स्बों के लोग हैं। और लइपज़िग की इस फ़र्म का यही असली मक़सद भी है। समाजवादी निर्माण का यही उद्देश्य भी है कि गाँवों और शहरों का अन्तर मिटे। पहले इन गाँवों में अच्छी और क़ीमती चीज़ों की कोई खपत न थी। लेकिन आज जर्मन

लइपज़िग के डाक-बिक्री घर में हर रोज़ ७००० गाहकों के आडर आते हैं।

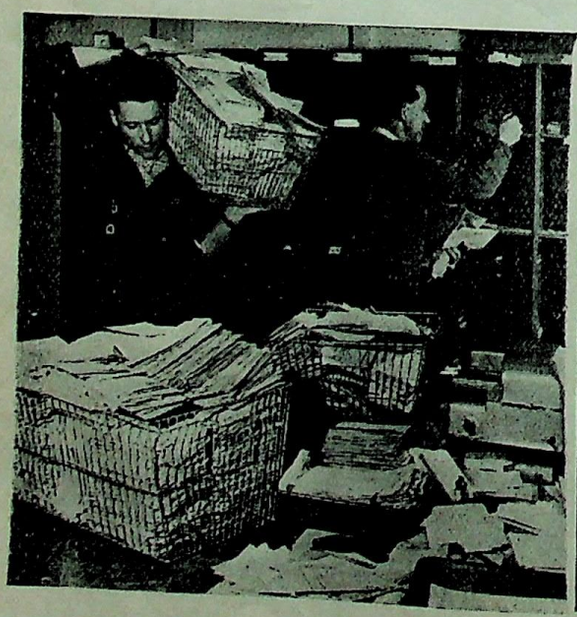

डाक-बिक्री घर का एक विभाग जहां सामान जमा करने, गिनने और आगे बढ़ाने का सारा काम आटोमेटिक मशीनों द्वारा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाहकों के लिये सामान चुनने और बांधने में आप कितनी सजग हैं।

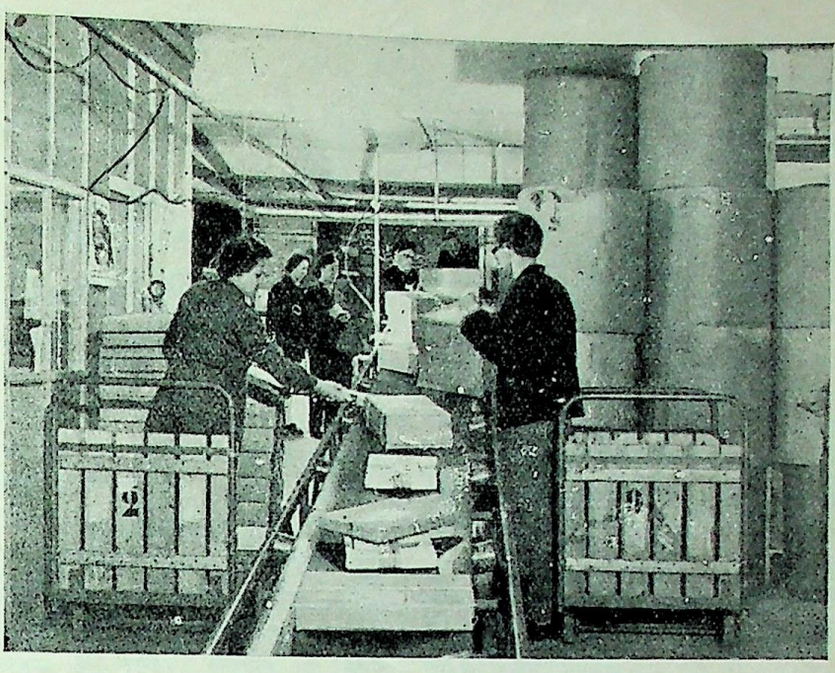

गाड़ी में सामान लादा जा रहा है।

जनवादी गणतंत्र के किसे भी कोने में कोई गाँव क्यों न हो, वहाँ से अच्छी-भली चीज़ों के आडर आते रहते हैं।

पश्चिमी देशों में भी क्या कोई ऐसा बिक्री घर है जिसकी आमदनी चार सालों के अन्दर पन्द्रह गुनी बढ़ गयी हो? शायद नहीं! यह तो समाजवादी देशों में ही संभव है जहाँ जनता के रहन-सहन का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। लइपज़िग का यह बिक्री-घर सन् १९५६ में खुला। उसी साल उसे १०,५०० गाहक मिल गये। उन दिनों हर रोज औसतन ३१० गाहकों की माँग पूरी की जाती थी। चार साल बाद आज गाहकों की संख्या ७,३०,००० तक पहुँच गयी है। हर रोज औसतन् ५,००० पार्सल भेजे जाते हैं। वसन्त और शरद के आते ही गाहकों की संख्या बढ़ जाती है। नयी सूची की ४ लाख कापियाँ और ५० लाख प्रास्पेक्ट्स छपवाकर गाहकों के पास भेजे जाते हैं और बदले में प्रतिदिन ६ हजार से भी अधिक आडर आने लगते हैं। बढ़ते हुए गाहकों की संख्या देखकर देश भर में अब तो इस बिक्री-घर की १२ शाखाएँ खोल दी गयी हैं। विलन्जेन्थल वाद्य-उद्योग का एक बहुत बड़ा केन्द्र है। वहाँ भी एक शाखा खोली गयी है जो हर तरह के बाजे सप्लाई करती है।

लेकिन इतनी प्रगति से सन्तोष नहीं है। लक्ष्य यह है कि सन् १९६५ तक प्रतिदिन गाहकों का औसत २० हज़ार और मौसमों में ४० हज़ार तक हो जाय। यदि यह मानकर चला जाय कि हर गाहक अपने तीन सदस्यों के परिवार के लिए चीज़ें मँगाता है तो इस प्रकार १० हज़ार गाँवों में ५० लाख लोगों तक लइपज़िग के इस बिक्री-घर की चीज़ें पहुँचती हैं।

लइपज़िग के इस बिक्री-घर के ७०० कर्मचारी इस लक्ष्य तक कैसे पहुँचेंगे? प्रबन्ध संचालक हर रोज़ का कहना है कि १९६३ तक एक नया बिक्री-घर बन कर तैयार हो जायगा। जिसका सारा काम यंत्र-चालित होगा।

यह बिक्री-घर अपने गाहकों की पसन्द का पूरा ख़्याल रखते हुए उनकी सौन्दर्य चेतना को भी उजागर करने की कोशिश करता है। मसलन् वह अपनी सूची में कपड़ों के ज़िक्र के साथ-साथ यह भी बताता है कि किस रंग के बालों पर कौन से रंग या डिज़ाइन का कपड़ा सजेगा। यही नहीं, बल्कि बिक्री-घर के अधिकारी गाँवों का दौरा करते हैं, गाँववालों से सम्पर्क स्थापित करते हैं, नये गाहक बनाते ह और गाँवों की ज़रूरतों को समझते हैं।

बजट

(पृष्ठ ६ का शेष)

रूप में भी मिला है।

ख़र्च और आमदनी की यही स्थिति हमारी छोटी से छोटी म्युनिसिपैलिटी में भी देखने को मिलेगी। जर्मन जनवादी गणतंत्र के बजट में एकरूपता रहती है, यानी यह कि, उसमें तमाम क्षेत्रीय संगठनों के बजट शामिल रहते हैं। हर गांव और हर शहर या क़स्बे को आर्थिक साधन उपलब्ध हैं, ताकि वे अपने सुनियोजित ख़र्च पूरे कर सकें। स्थानीय संगठनों (म्युनिसिपल बोर्डों आदि) के बजट का कितना अधिक महत्व है यह इसी से सिद्ध हो जाता है कि उनके हाथों में एक तिहाई उद्योगों और समूचे सरकारी व्यापार और खेती के संचालन का उत्तरदायित्व रहता है। इस प्रकार स्थानीय संगठनों की आर्थिक स्थिति का बुनियादी आधार हमारा राष्ट्रीय अर्थतंत्र बन जाता है। राष्ट्रीय उद्योगों का ३६ प्र. श. इन्हीं स्थानीय प्रशासनों के हाथों में रहता है। इन स्थानीय प्रशासनों का उत्तरदायित्व साल-ब-साल बढ़ता जा रहा है। यह तथ्य स्वयं अपने में इस बात की पुष्टि करता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवादी जनवाद किस अडिग रूप से आगे बढ़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मियों में विहार

नॅरव क्लीन

देखिये ! बाल्टिक सागर की ओर जाने वाली ट्रेनों में फिर भीड़ बढ़ने लगी। थुरिन्जियन के जंगल, सैक्सन का स्विटज़रलैंड और हार्ज़ की पहाड़ियाँ लोगों को बुला रही हैं और सुखमय गर्मियों की छुट्टियाँ मनाने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र के तमाम हिस्सों से लोग खिंचे चले जा रहे हैं। फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन कन्फ़ेडरेशन ने इन तमाम जगहों पर खूबसूरत इमारतें बनवा रखी हैं जहाँ ३० मार्क में ३० दिन की छुट्टी मज़े में बितायी जा सकती है और यह अवसर इस देश में सबको सुलभ है।

छुट्टियाँ बिताने वालों को बाल्टिक तट बहुत प्यारा लगता है। वहाँ की इमारतें, जिनमें वे ठहरते हैं, उन्हें बहुत प्यारी लगती हैं। उत्सव-गृह की तरह वे मनमोहक हैं।

ट्रेड यूनियन कन्फ़ेडरेशन का एक अलग विभाग है जिसके ज़िम्मे रमणीक प्राकृतिक स्थलों को चुनना, वहाँ छुट्टियाँ बिताने वालों की सुख-सुविधा का हर तरह का इन्तज़ाम करना, मनोरंजन के साधन जुटाना आदि काम होते हैं। इस विभाग के अपने भी कई होस्टल हैं और कई इमारतें किराये पर ली गयी हैं। सिर्फ़ बाल्टिक तट पर १६० तो इसकी अपनी ही इमारत हैं और ९० मकान किराये पर लिये गये हैं। इन मकानों में २,७२,००० मर्द, औरत, युवक और बच्चों के रहने, आराम करने और मनोरंजन के साधन सुलभ हैं।

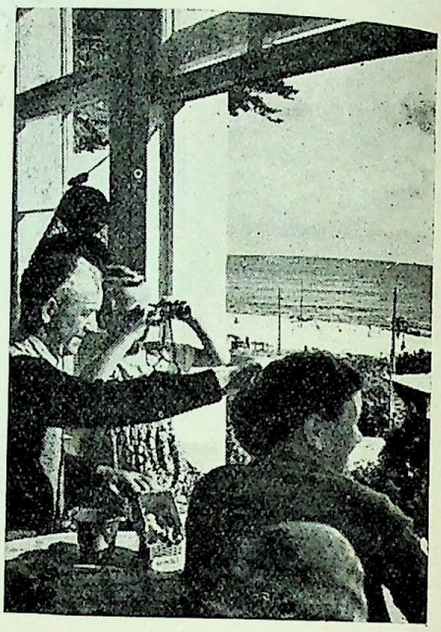

बाल्टिक तट पर खान मजदूर के परिवार।

ट्रेड यूनियन, कन्फ़ेडरेशन ने सन् १९५९ में इन स्थानों पर ११ लाख मेहनतकशों के निवास की व्यवस्था की थी।

इसी बीच जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक और सुहाने मौसम का पर्दा उठता है—नहाने का मौसम। यह मौसम बाल्टिक के तट पर उतरता है। बाल्टिक के तट पर ख़ेमों का नगर बस जाता है। हज़ारों लोग बाल्टिक सागर में नहाते और साल भर की थकन एक पखवारे के आराम से दूर कर लेते हैं।

बाल्टिक तट पर कन्फ़ेडरेशन के अलावा अनेक सरकारी उद्योगों की भी अपनी अपनी इमारतें हैं जहाँ उनके कर्मचारी अपनी छुट्टियाँ मनाते हैं।

इन सारी जगहों में दस लाख सेभी अधिक लोग छुट्टियाँ मनाने आते हैं इतनी बड़ी संख्या में लोगों की यात्रा, ठहराने, खाने-पीने और मनोरंजन के साधन जुटाने की कितनी बड़ी जिम्मेदारी है—इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इसके लिए पहले से योजना बनानी पड़ती है, तैयारियां करनी पड़ती हैं ताकि इस सुहाने मौसम का

सुहानी धूप हो, अच्छे लोगों का साथ हो, फिर जल-विहार में क्यों न आनन्द आये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A... ...tion Chennai and...

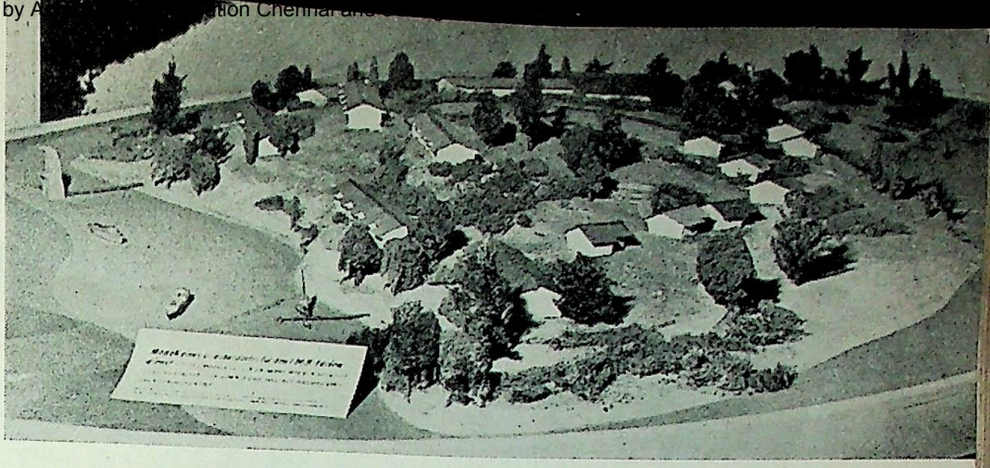

उत्सव-गावों का नमूना। ट्रैड यूनियन कन्फ़ेडरेशन की भावी योजना।

पर्दा उठते ही हर चीज़ तैयार मिले। कहना न होगा कि ट्रेड यूनियन कन्फ़ेडरेशन का यह विभाग इतना बड़ी ज़िम्मेदारी को महज़ पूरा ही नहीं कर रहा है, बल्कि उसकी बराबर यह कोशिश रहती है कि इन उत्सव-गृहों की शोभा साल-ब-साल बढ़ती रहे। पिछले साल दो जगहों पर दो बड़ी-बड़ी इमारतें अलग से ली गयीं जिनमें बच्चों के ठहरने और खाने-खेलने का इन्तज़ाम किया गया। इससे उनके माता-पिताओं का बड़ा बोझ हलका हुआ और यह समझ कर कि बालकनजी बारी के योग्य शिक्षक पूरे लाड़-प्यार के साथ उनके बच्चों की देख-भाल कर रहे हैं, वे लम्बे पिकनिकों पर जाते रहे। पिछले वर्ष के अनुभवों से लाभ उठाकर इस बार बच्चों की देखभाल और भी कुशलता से होगी।

सन् १९६५ तक ऐसी २ लाख जगहें और बन कर तैयार हो जायँगी। इसके लिए नयी जगहों की तलाश है। कन्फ़ेडरेशन की योजना है कि प्रकृति की मनोरम गोद में छुट्टियाँ मनाने वालों के लिए पूरे-पूरे उत्सव-ग्रामों की ही रचना कर डाली जाय। दो जहाज़ भी लंगर डाले खड़े हैं जिनमें हर बार ९०० लोग समुद्रों और दूसरे देशों का भ्रमण करके आनन्द उठा सकते हैं। एक उत्सव-ट्रेन भी बनायी जायगी जिसमें सोने की जगहें, क्लब, सिनेमा, और भोजन के कमरे होंगे। यह ट्रेन जर्मन जनवादी गणतंत्र के तमाम मनोरम स्थलों, सांस्कृतिक नगरों और ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण करायेगी।

इन उत्सव-ग्रामों की क्या योजना है। विभिन्न पहाड़ियों की छाया में नदियों और झीलों के अंचल में एक-एक परिवार के रहने लायक रंग-बिरंगे घर बनाये जायँगे। यह घर सृजन की चेतना जगानेवाले होंगे। इनमें हर तरह की आराइश से भरे तीन-तीन कमरे होंगे। एक ड्राइंग-रूम होगा, बच्चों का अलग एक कमरा होगा और चूंकि सारे दिन धूप अपनी नरम अँगुलियों से अपनी ओर बुलाती रहती है, इसलिए हर घर के सामने मखमली घास वाली लान और बग़ीचे में आरामदेह फ़र्नीचर का भी इन्तज़ाम रहेगा। इन रंगीन बस्तियों के बीच एक ऐसी जगह भी होगी जहाँ लोग भोजन करेंगे—इससे न सिर्फ़ उन्हें खाना पकाने की ज़हमद से छुट्टी मिल जायगी, बल्कि यहाँ भी मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध रहेंगे। अचानक बीमार पड़ जाने पर दवा-दारू की भी व्यवस्था सुलभ होगी।

ट्रेड यूनियन कन्फ़ेडरेशन की यह भावी योजनाएँ हैं। इस वर्ष मौसम शुरू हो गया है। मेक्लेनबुर्ग की ख़ाबीदा झीलों, धूप से नहाते हुए बाल्टिक तटों और थुरिन्जियन की घनी हरियालियों में हज़ारों लोग अभी से बिहार करने लग गये होंगे।

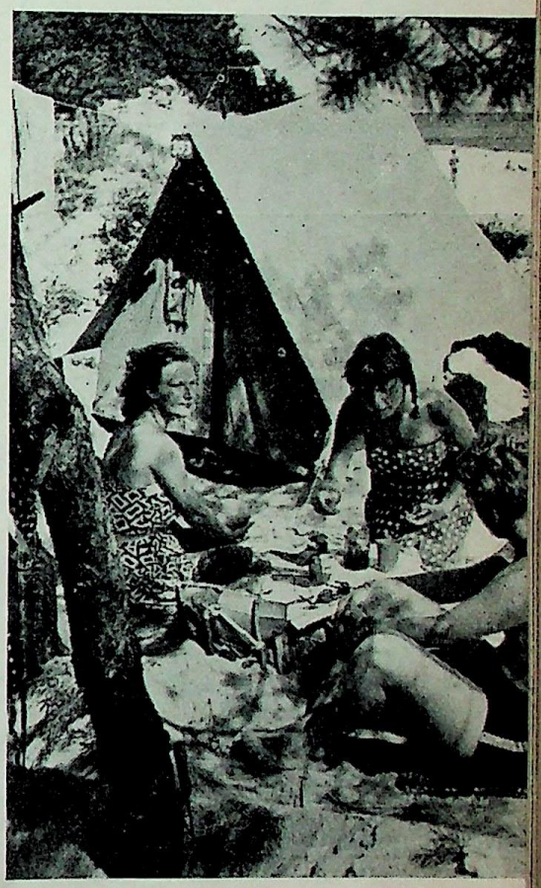

पिकनिक भी क्या चीज है!

यह सुखद काटेज भी छुट्टियाँ बिताने के लिए ही बना है।

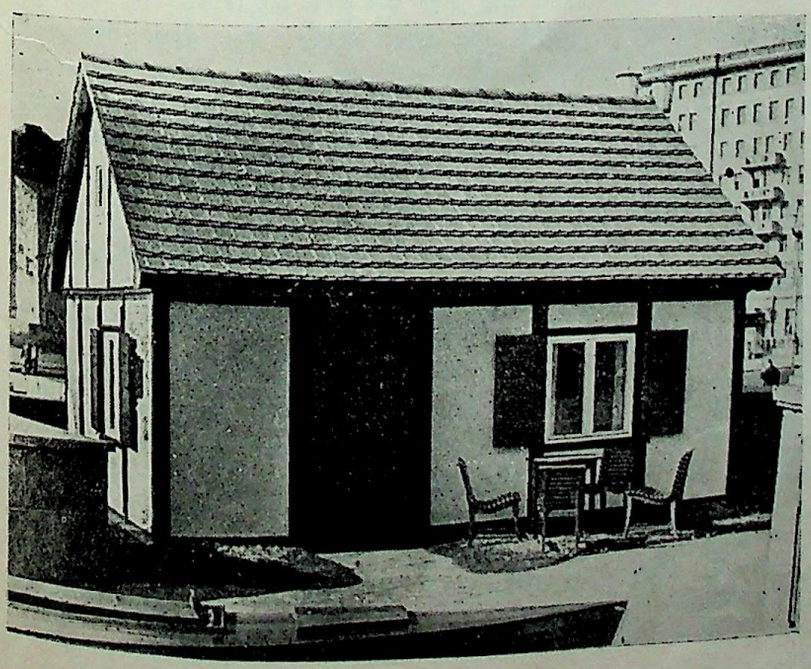

CC-0. In Public Domain. Gurukul K...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेफ़न लिसेन्स्की, (डीटर) और अंजलिका, (सोंजा)। दोनों के सपने एक ही हैं।

अंजलिका (सोंजा) और विली श्रेडे (इडी) की उत्सव में आंखें मिल जाती हैं। यह भी क्या हसीन इत्तफ़ाक है।

अंजालिका (सोंजा) और विली श्रेडे (इडी) को महसूस हुआ कि प्यार के दरिया का असल किनारा तो यहाँ है।

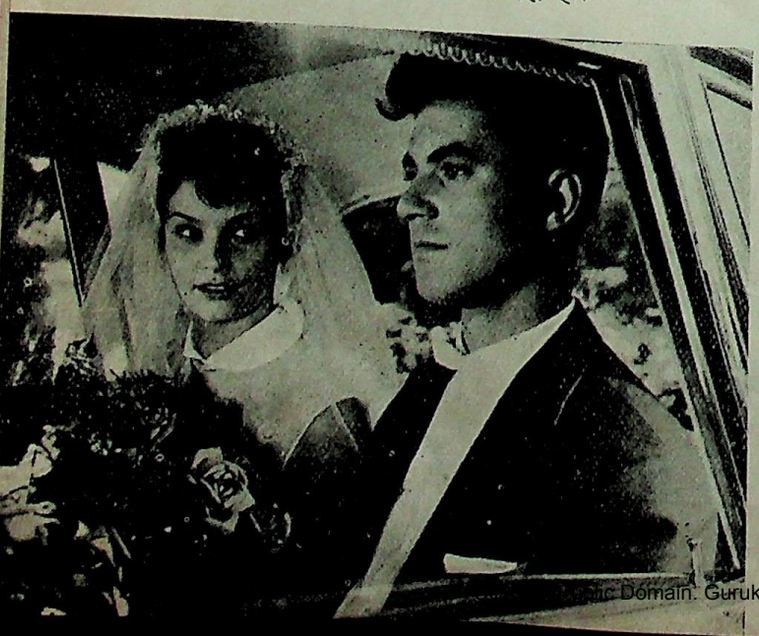

डेफ़ा फ़िल्म जगत

'मुहब्बत की उलझन'--एक रंगीन चित्र

मुहब्बत एक राज़ है। वह राज़ जितना ही खुलता है उतना ही उलझता है। अब तक जाने कितनी तस्वीरों, कहानियों, मूर्तियों, नाटकों और नृत्यों के माध्यम से मुहब्बत का राज़ सामने लाया गया, फिर भी वह एक राज़ ही बना रहा, एक प्यारी और हसीन उलझन।

और जब स्लातन डुडो 'मुहब्बत की उलझन' पेश करते हैं तो वे भी उसी चिरंतन रहस्य की एक गाँठ खोलने की प्यारी सी कोशिश करते हैं।

जवानी, प्यार और मुहब्बत के चिराग़ जाने कब और कैसे जला देता है। सोंजा और डीटर, सीजी और इडी भी जवान हैं और उनके दिल प्यार और मुहब्बत की गर्मी महसूस करने लगे हैं। सोंजा का बाप एक छापेख़ाने में काम करता है और वह चित्रकला की तालीम पूरी कर चुकने वाली है। उसके हाथ काफ़ी मश्क़ पा चुके हैं। डीटर सोंजा का चाहने वाला है। वह एक मशीन के कारख़ाने में काम करता है लेकिन अपने साथियों की प्रेरणा से उसने पढ़ाई भी शुरू कर दी है। लेकिन अभी वह अपनी मंज़िल की ओर कुछ टटोलता हुआ सा ही आगे बढ़ रहा है। वह सोंजा से प्यार तो करता है पर उसके प्यार का निर्झर अभी फूटने को बाक़ी ही है। हसीन सोंजा के सपनों को वह अपने सपने तो समझता है लेकिन अभी वह प्यार की आँधी से शायद दूर ही दूर है।

इसी बीच हसीन सोंजा अपने दूसरे साथियों की मदद से एक उत्सव करती है। लोग रंग-बिरंगी पोशाकों में जमा होते हैं, गाते हैं, नाचते हैं प्यार करते हैं। डीटर अपनी सोंजा की तलाश में है। सोंजा के मन में चुहल पैदा होती है और वह एक अजीब पोशाक पहन लेती है जिसमें वह पहचानी ही नहीं जाती।

डीटर के हाथ कोई और ही लग जाता है--सोंजा के अलावा भला और कौन ऐसे हुस्न की मलिका हो सकती है। डीटर सोचता है और सीजी का हाथ पकड़ लेता है। सीजी का दोस्त इडी का दिल ज़रा बड़ा है, उसके मिजाज़ में रश्क़ भी कुछ कम है और उसकी आदत खिलाड़ियों जैसी है। सीजी का दिल कुछ नयेपन की ओर ज्यादा खिंचता है। वह कला के छात्रों में घुल मिलकर ज़रा उधर का भी रस लेना चाहती है।

डीटर अपने सपने का पीछा करते-करते जब किसी जगह पहुँचता है तभी सोंजा और इडी की आँखें मिलती हैं। दोनों को एक बिजली-सी लगती है और दोनों महसूस करते हैं कि प्यार के दरिया का असल किनारा तो यहाँ है!

'मुहब्बत की उलझन' की रंगीन अदाकारी में जिन चेहरों ने काम किया है वे सब नये हैं। सबके दिलों में प्यार के तार छिड़े हैं। इसीलिए इस रंगीन फ़िल्म में उनकी अदाकारी ने एक लय और सुर भर दिया है--वे अदाकार हैं: अंजेलिका डोमोसी, अनेकात्रिन बेरगा, विली शेडे और स्टेफ़न लिसेन्स्की।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

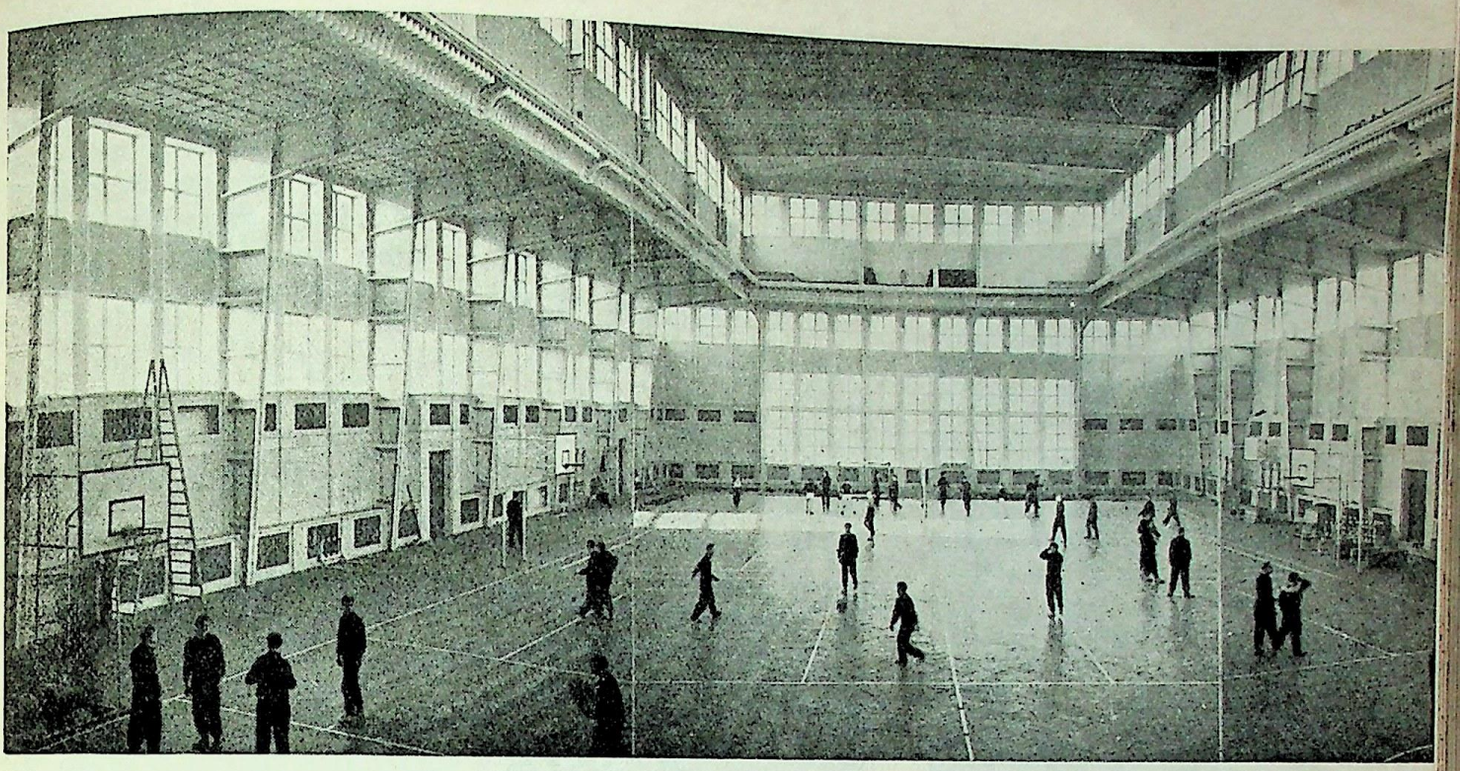

हलके खेल-कूद का हाल—६८ मीटर लम्बा और ३८ मीटर चौड़ा।

शारीरिक व्यायाम की जर्मन अकादमी

ग्युन्टर इरबाख़

जर्मन जनवादी गणतंत्र में खेल-कूद कुछ ही लोगों तक सीमित नहीं। वह अपने में एक जनवादी आन्दोलन है जिसमें शामिल होने के लिए हर नौजवान को पूरा अवसर है।

हमारी सरकार खेल-कूद की समस्या को गंभीरता से हल करना चाहती है। इसीलिए आज से ९ साल पहले ही सन् १९५० के फ़रवरी में शारीरिक व्यायाम का एक कालेज लइपज़िग में खुला। वहाँ इस दिशा में ट्रेनिंग दी जाने लगी और शोध कार्य भी शुरू किया गया। पहले ६ महीने का तैयारी-पाठ चला, फिर उस कालेज में ८० छात्रों की भर्ती करके पढ़ाई और प्रशिक्षण शुरू किया गया। यह काम सन् १९५० के शरद में १० शिक्षकों के साथ चालू हुआ था।

शिक्षकों की ट्रेनिंग के लिए ४ साल का कोर्स है। सन् १९५३ से पत्र-व्यवहार द्वारा भी ट्रेनिंग की व्यवस्था कर दी गयी है। यह पाँच साल का कोर्स होता है।

सन् १९५५-५६ में अकादमी स्थापित हुई। उसके अन्तर्गत जिमनास्टिक और अथलेटिक में शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जाती है। इसके अलावा शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण और डाक्टर की उपाधि देने की व्यवस्था है।

थोड़े ही समय में इस अकादमी की प्रगति आश्चर्यजनक रही। सन् १९५२ में एक नयी इमारत की भी बुनियाद डाल दी गयी थी, जो अभी बन ही रही है, लेकिन उसका जितना भाग बन चुका है वही बेमिसाल है। उसमें चार नये सभा मंडप हैं, जिनमें ढाई सौ से लेकर पाँच सौ लोग बैठ सकते हैं; जिमनास्टिक, यूडो, बाक्सिग, भारी अथलेटिक्स, पहलवानी, भारी जिमनास्टिक तथा बच्चों की जिमनास्टिक के लिए आठ विशेष ढंग के बने हुए हाल हैं। हलकी कसरत के लिए एक हाल है। आधुनिक साधनों से सुसज्जित कई कमरे हैं। कई स्टैडियम हैं। केन्द्रीय स्टैडियम में १ लाख आदमियों के लिए सीटें हैं, तैरने का एक तालाब है जिसके किनारे ८ हज़ार आदमी बैठ सकते हैं, हाकी-स्टैडियम में २० हज़ार की सीट है; फिर और दूसरे भांति-भांति के खेल-मैदान और लान आदि हैं।

इस जर्मन अकादमी की देखरेख में खेल-कूद कितनी तरक्की कर रहा है इसका प्रमाण वे छात्र हैं जिनकी संख्या बढ़ती जा रही है और जिनमें से कई अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पाते रहे हैं। सन् १९५६-५७ तक १६८० छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा चुका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

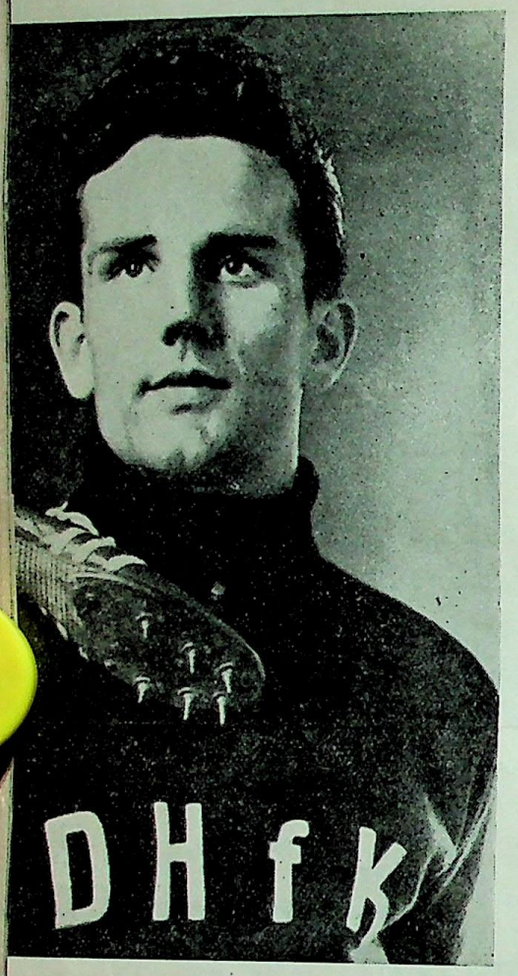

जर्मन व्यायाम अकादमी। हर खिलाड़ी को इस नाम पर गर्व है!

है। इसके लिए १६ विभागों में १३० अध्यापक काम करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में उस अकादमी के छात्रों ने ५ विश्व चैम्पियनशिप जीते, मेलबोर्न के ओलम्पिक में यूरोप के २ रिकार्ड तोड़े और २ मेडल पाया। खेल-कूद की दिशा में विदेशों में क्या हो रहा है, अकादमी उसकी भी पूरी-पूरी जानकारी रखती है, वैज्ञानिक प्रगति का ध्यान रखती है। इस अकादमी का संबंध विश्वव्यापी हो गया है। फ़िनलैंड से मिस्र तक और चीन से फ्रांस और इंग्लैंड तक चारो ओर संबंध फैल गया है। सोवियत संघ में भी इस प्रकार की एक अकादमी है उससे हमारी अकादमी का विशेष संबंध है। हम तमाम मित्र देशों से छात्रों और अध्यापकों का आदान-प्रदान करते रहते हैं। इसमें हमें दूसरों के अनुभवों से लाभ होता है।

अकादमी की व्यायाम-परीक्षाओं में सफल हो जाने के बाद अभ्यास का समय आता है। इस अकादमी के कई ग्रेजुएट ऐसे हैं जिनकी देश के व्यायाम संबंधी विकास में बहुत बड़ी भूमिका है। मसलन् ग्यन्टर हीब्ज़ को ही लें। आप जर्मन फ़ेडरेशन आफ़ स्पोर्टस एंड जिमनास्टिक्स की कार्य समिति के मंत्री हैं या डा. हैन्स सुशर फ़िज़िकल कल्चर एंड स्पोर्टस की स्टेट कमेटी के उपाध्यक्ष हैं; हलके अथ-लेटिक्स की ट्रेनिंग देने में कार्ल हीब्ज़ मशहूर हैं, पोलो कूद में मनफ्रेड ने जर्मन रिकार्ड क़ायम किया है; डा० हेलमेट वेसफल पोस्डम में शारीरिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रिंसिपल हैं।

बास्केट बाल की ट्रेनिंग दी जा रही है। खेल-कूद में भी अनुशासन ज़रूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

दो चित्र

ज. ज. गणतंत्र की क्रय शक्ति बढ़ी

इस वर्ष जुलाई के शुरू होते ही मर्दों और बच्चों के लिए बनने वाले रेडीमेड कपड़ों के भाव में २३.५ प्र. श. कमी कर दी गयी है। इसी प्रकार लिनेन की चद्दरों के भाव में ७.१ प्र. श., सिल्क में २१.३ प्र. श. मोज़ों में १२.५ प्र. श. और छातों में ८ प्र. श. की कमी की गयी :

भावों में इस कमी के बाद सारे देश में कपड़ों की एक क़ीमत हो गयी। सिल्क, मोज़ों, और छातों आदि के दामों में कमी लाकर उनका कम से कम मूल्य निर्धारित किया गया है।

कपड़ों के दामों में इस कमी से ज. ज. गणतंत्र की जनता की क्रयशक्ति में ३७ करोड़ मार्क प्रतिवर्ष की वृद्धि हुई है।

पश्चिमी जर्मनी की कमर झुकी

"हर अगला दिन महँगा होता जा रहा है", पश्चिमी जर्मनी के कई अख़बारों में एक दिन यही हेडलाइन पढ़ने को मिली। वहाँ सबका यही रोना है।

हैम्बर्ग के एक अख़बार ने लिखा, "बढ़ी हुई क़ीमतों की एक नयी चक्की हमें पीसे डाल रही है। मकानों का किराया, भाड़ा, खाने की चीज़ें, कपड़े, बिजली और पानी सबके दाम आसमान छूने लगे हैं।" रोज़मर्रा की इन ज़रूरतों के दाम बढ़ने से पश्चिमी जर्मनी की क्रयशक्ति में इस साल ७५० करोड़ मार्क की कयी आयेगी। मज़दूर की तो कमर ही टूट जायगी क्योंकि उसके माहवारी ख़र्च में ५० मार्क का और बोझ लद जायगा। सन् १९५० से अबतक कपड़ों के दाम डेढ़ गुना बढ़ चुके हैं।

अतिथियों का आगमन

क्यूबा का प्रतिनिधि मंडल

क्यूबा की क्रान्तिकारी सरकार ने गत जून में अपना एक प्रतिनिधि मंडल हमारे यहाँ भेजा जिसके नेता क्यूबा भूमि सुधार संस्थान के संचालक डा० नुंज़ जिमेंज़ थे। यह प्रतिनिधि मंडल आर्थिक समस्याओं के अध्ययन के लिए आया था। उसके सदस्यों ने बर्लिन के अलावा कई स्थानों का भ्रमण किया। वाल्टर उलब्रेख्त ने अतिथियों का स्वागत किया और परस्पर हितकारी प्रश्नों पर विचार विमर्श किया।

ज. ज. गणतंत्र के उपनिवेश मंत्री ने भी प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

बर्लिन विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों की एक विशाल सभा में डा. नुंज़ ने कहा कि क्यूबा की क्रान्तिकारी प्रगति समूचे लैटिन अमेरिका के मुक्ति संग्राम की विजय है। क्यूबा दुनिया के शांति शिविर में है। आपने क्यूबा के भूमि सुधार को एक महान् आर्थिक क़दम बताया। तालियों के बीच आपने कहा, 'हमारी घोषणा है कि हम केवल सोवियत संघ से नहीं, बल्कि तमाम समाजवादी देशों के साथ राजनायिक संबंध स्थापित करना चाहते हैं।"

क्यूबा-प्रतिनिधि मंडल के नेता डा० नुंज़ जिमेंज़ के साथ वाल्टर उलब्रेख्त।

अरब प्रतिनिधि का आगमन

संयुक्त अरब गणतंत्र के जहाजरानी संगठन के अधिकारी मुहम्मद तौफ़ीक़ अहमद मई में ज. ज. गणतंत्र आये। विदेश व्यापार मंत्री हेनरिख़ राउ ने आपका स्वागत किया।

दोनों नेताओं के बीच वार्ता हुई। संयुक्त अरब गणतंत्र हमारे जहाज़ (सवारी और माल) ख़रीदना चाहता है और टेकनिकल सलाह चाहता है। दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को और आगे बढ़ाने की दिशा में भी संतोषजनक वार्ता हुई।

योजना की विधियों का अध्ययन

घाना के वित्त मंत्रालय के सचिव श्री के० अपेदु गत मई में जर्मन जनवादी गणतंत्र आये और योजना कमीशन के साथ बैठकर योजना की विधियों का अध्ययन किया। आपने देश के अनेक औद्योगिक केन्द्रों का भी निरीक्षण किया।

व्यापार समझौते

ट्यूनीसिया के साथ

ट्यूनीसिया और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच गत मई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यापारिक समझौता हुआ। इस समझौते के अनुसार हमारे देश मे इंजीनियरिंग के सामान, चश्मे के सामान, आफ़िस मशीनें, शीशे, वाद्य-यंत्र और खेल के सामान ट्यूनीसिया भेजे जायँगे और बदले में वहाँ से फल, ऊन, चमड़े, कार्क और दूसरी चीज़ें हमारे यहाँ आयेंगी।

यूगोस्लाविया के साथ

जर्मन जनवादी गणतंत्र और यूगोस्लाविया के संयुक्त कमीशन की बैठक हाल में समाप्त हुई और सन् ६० में १ करोड़ ७७ लाख डालर के अतिरिक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसका अर्थ यह हुआ कि पिछले वर्ष अगस्त में सन् ६० के लिए जो समझौता हुआ था उसमें २५ प्र. श. की वृद्धि हुई। इसके अलावा एक और दीर्घकालीन समझौता हुआ है जिसमें सन् ६१ से ६५ तक यूगोस्लाविया सब्जियाँ और आलू भेजेगा।

ब्रिटिश स्टील ट्रस्ट के साथ

इंग्लैंड की मशहूर फ़र्म ब्रिटिश स्टील ट्रस्ट के साथ जर्मन स्टील एंड मेटल का एक दीर्घकालीन समझौता हुआ जिसके अनुसार ब्रिटिश फ़र्म सन् ६५ तक स्पात की चीज़ें भेजती रहेगी।

छपाई का ठेका

ब्रिटेन की एक मशहूर फ़र्म ने हमारे यहाँ अपना वैज्ञानिक साहित्य छपाने का ठेका दिया है। यह ठेका सन् ६१ से ६५ तक चलेगा। इसमें ७४ लाख मार्क कुल छपाई का बिल होगा।

बर्मा के लिए चावल और तेल का मिल

ग्रिमा नामक जर्मन फ़र्म ने बर्मा के लिए एक चावल और तेल मिल भेजा है। इस प्रकार के दो मिल पहले भी भेजे जा चुके हैं। पहला मिल चालू हो गया है और दूसरे को स्थापित करने का काम जारी है।

बर्मा और जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक समझौता हुआ है जिसके अनुसार इस प्रकार के कई मिल बर्मा भेजे जायँगे।

आस्ट्रिया से स्पात और कच्चा लोहा

आस्ट्रिया और ज. ज. गणतंत्र के बीच सन् ६१ से ६५ तक के लिए हाल में एक समझौता हुआ है, जिसके अनुसार आस्ट्रिया से स्पात और कच्चा लोहा हमारे देश में आयेगा।

इसी सिलसिले में जर्मन स्टील एंड मेटल कं. लि. का एक प्रतिनिधि मंडल आस्ट्रिया गया था।

आस्ट्रिया की ओर से भी इस बात का उल्लेख किया गया कि दोनों देशों के बीच ऐसे संबंधों में लगातार वृद्धि होनी चाहिए। उक्त समझौते में भी इस सद्भावना पर ज़ोर दिया गया है।

ट्रैक्टर ट्रेलर और मल्टीकार सरकारी उद्योग की उपज हैं। सन् १९६१ तक इस उद्योग का निर्यात दुगना हो जायगा।

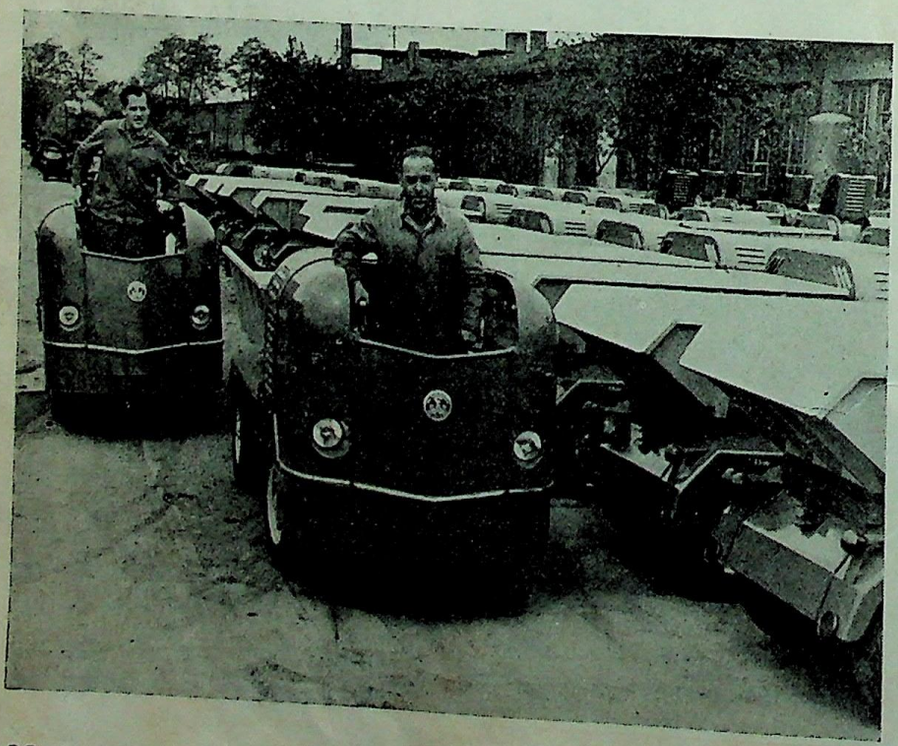

व्यापारिक मेले में ज. ज. गणतंत्र

पिछले साल विदेशों में कई व्यापारिक मेले हुए जिनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भाग लिया। पश्चिमी जर्मनी में हुए मेले में भी हमारी चीज़ों की प्रदर्शिनी हुई। इन प्रदर्शिनियों में—४५० करोड़ मार्क की हमारी चीज़ें बिकीं। इसके अलावा अनेक नये व्यापारिक संबंध कायम हुए।

सन् १९६० में घाना, बग़दाद, पेरिस, पोज़नान, डमस्कस, ज़ग्रेब, वियना और ब्रनों में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय मेलों में भाग लेने का कार्यक्रम बन रहा है।

सोमालिया के स्वाधीन होते ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रपति विल्हम पीक और प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल ने सोमालिया गणतंत्र के राष्ट्रपति को बधाई के तार भेजे। प्रधान मंत्री ने अपने तार में कहा कि हमारी सरकार ने सोमालिया गणतंत्र को मान्यता देने का निर्णय कर लिया है।

मैत्री के दस वर्ष

जर्मन जनवादी गणतंत्र और हंगरी की मैत्री संधि की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर २ जुलाई को हंगरी के राजदूत इस्त्वान रोस्टस ने एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में ज. ज. गणतंत्र सरकार के प्रतिनिधियों के अलावा सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और नेशनल फ्रंट कौंसिल के सदस्यों तथा अनेक राजनायकों ने भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभेच्छाएं

.....सूचना-पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकार करें। मुझे पत्रिका अच्छी लगी। इसमें जानकारी बढ़ाने का मसाला तो है ही, साथ ही मुझे यक़ीन है कि यह पत्रिका हमारे बीच सद्भाव बढ़ाने और दोनों मुल्कों के दोस्ताना रिश्तों को मजबूत करने में भी मददगार साबित होगी। मेरी ख्वाहिश है कि आपकी यह कोशिश कामयाब हो।

(पं.) सुन्दर लाल

.....आपकी सूचना-पत्रिका का छठा अंक प्राप्त हुआ। इस उपयोगी पत्रिका का हिन्दी में प्रकाशन प्रारम्भ करके आपने भारतवर्ष की विशाल जनसंख्या का बड़ा उपकार किया है। पत्रिका की सूचनात्मक तथा ज्ञातव्य सामग्री की उपादेयता सर्वथा असंदिग्ध है। मैं इस सफलता पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं।....

जर्मन जनवादी गणतन्त्र का व्यापार एवं व्यवसाय पक्ष ही इस पत्रिका से हमारे सामने नहीं आता वरन् उसकी औद्योगिक प्रगति का भी हमें प्रामाणिक तौर पर पता चलता है। पत्रिका के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए।

(डा.) विजयेन्द्र स्नातक, एम. ए., पी एच. डी.
रीडर हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

.....मुझे आपकी सूचना-पत्रिका देख कर खुशी हुई। पत्रिका से हमारी जानकारी बढ़ती है। आपके देश में जो समाजिक, आर्थिक राजनीतिक तथा अन्य विकास-धाराएं आगे बढ़ रही हैं, यह पत्रिका उनका दर्पण है। राजनीति का अध्यापक होने के नाते मुझे यह प्रकाशन बड़ा ही उपयोगी लगा।

उमेशप्रसाद सिंह एम. ए., बी. एल.
अध्यक्ष, राजनीति विभाग टी. पी. कालेज, सहरसा

..... हमने सूचना-पत्रिका को बड़े ध्यान से पढ़ा। सामग्री विशेष रुचिकर लगी। ..... सूचना-पत्रिका (छठा अंक) के पहले लेख में हमने उत्साह के साथ पढ़ा कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र अफ्रीकी-एशियाई जनता, अल्जीरिया, गोआ, पश्चिमी इरियन तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का हार्दिक समर्थन करता है।

निरस्त्रीकरण, आणविक अस्त्रों पर प्रतिबन्ध, अणुमुक्त क्षेत्र का निर्माण, जर्मनी की पुनर्एकता आदि समस्याओं पर आपकी पत्रिका बराबर रोशनी डालती रहे—यह हमारी इच्छा है।

ओमप्रकाश पालीवाल
मंत्री, अखिल भारतीय शांति परिषद, दिल्ली

.....आपकी सूचना पत्रिका मिली, इसके लिए धन्यवाद। हिन्दी में इतने उत्तम प्रकाशन के लिए आपका प्रयत्न श्लाघनीय है। पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री पठनीय है, सामग्री का चयन और संकलन दृष्टव्य है, मुखपृष्ठ भी कम मनोहर नहीं है तथा साथ-साथ विविध चित्रावली ने पत्रिका को और अधिक आकर्षक एवं हृदयग्राही बना दिया है। पत्रिका के अध्ययन से आपके प्रिय देश के विकास की जानकारी प्राप्त होती है।

चन्द्रदत्त शर्मा इंदु
जनसम्पर्क अधिकारी, भारत युवक समाज, दिल्ली

.....अब आपके यहां से सूचना-पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित होने लगी है। निसंदेह यह प्रसन्नता की बात है।

विश्वनाथ मुखर्जी
सहायक सम्पादक, 'आपका स्वास्थ्य' वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

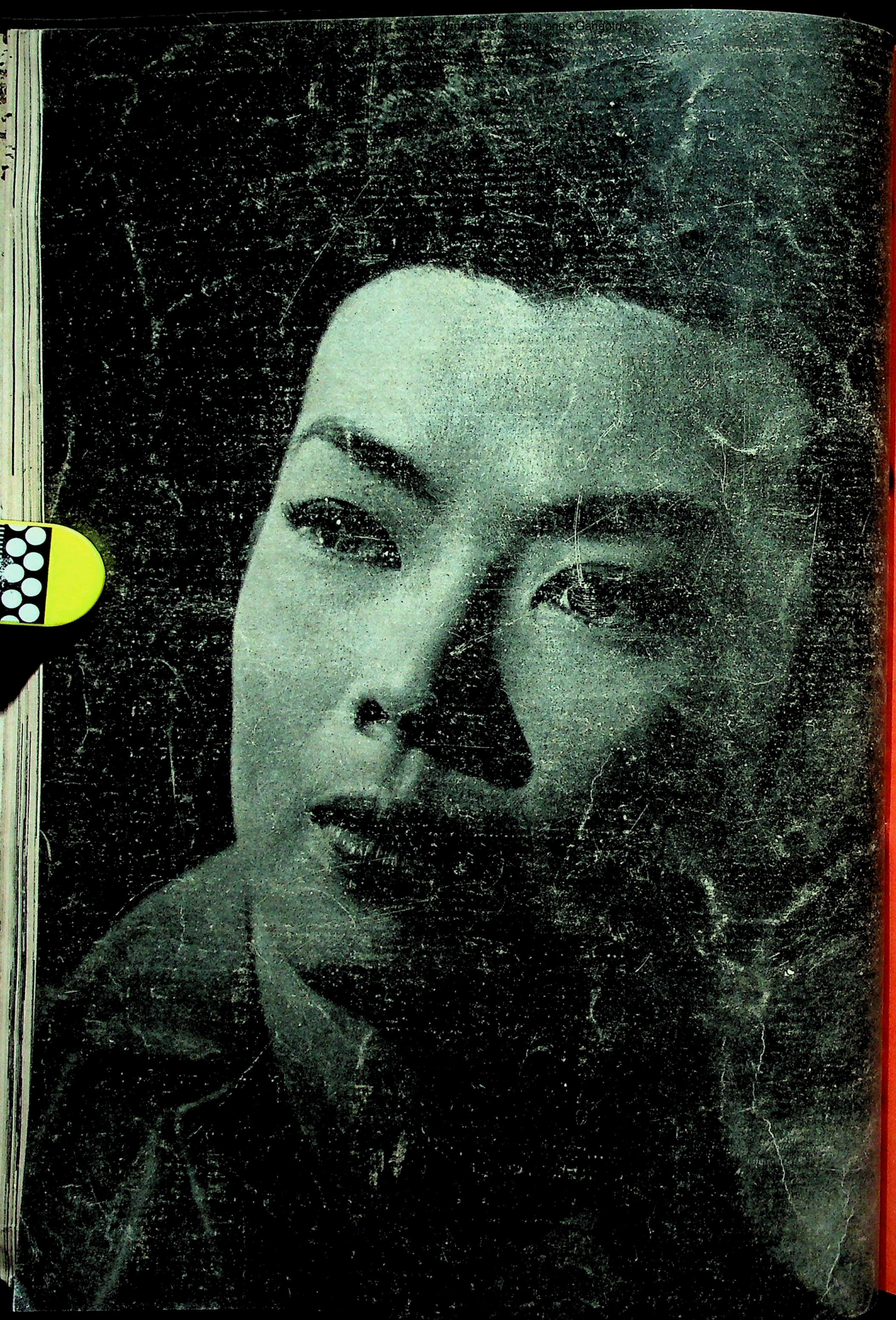

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

९ वर्ष ५
सितम्बर
१९६०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४४२६१, ४४२६२ केबल्सः हावदिन, नई दिल्ली

●

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्सः हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्सः कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन : ६१३१४ केबल्सः हावजर्मन

वर्ष ५, अंक ९ २० सितम्बर, १९६०

यह अंक

शोक प्रस्ताव
विल्हेम पीक के महान जीवन का अन्त
शोक संवेदनाएं

फौजी कप्तानों की क्या मंशा है
राजनायिक संबंध

जनवाद के बढ़ते चरण
पीपुल्स चैम्बर

व्यक्तित्व की झाँकी
वाल्टर उलिब्रख्त

भारत में मेट्रिक प्रणाली

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन
मछुओं का मेला : खुशियों का सागर
ब्ल्युथनर पिआनों—लइपज़िग की थाती
नया जर्मन आपेरा

डेफ़ा-फ़िल्म जगत
"ज़िन्दगी शुरू हुई"

अणु शक्ति और शांतिमय सृजन
'आदमी की यह दुनिया' और ब्रेख्त
खेल-कूद भी एक जन-आन्दोलन है

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

शुभेच्छाएँ

मुख पृष्ठ
विल्हेम पीक १८७६-१९६०

अंतिम पृष्ठ
उनकी बांहों में भविष्य

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

विल्हेम पीक के महान जीवन का अन्त

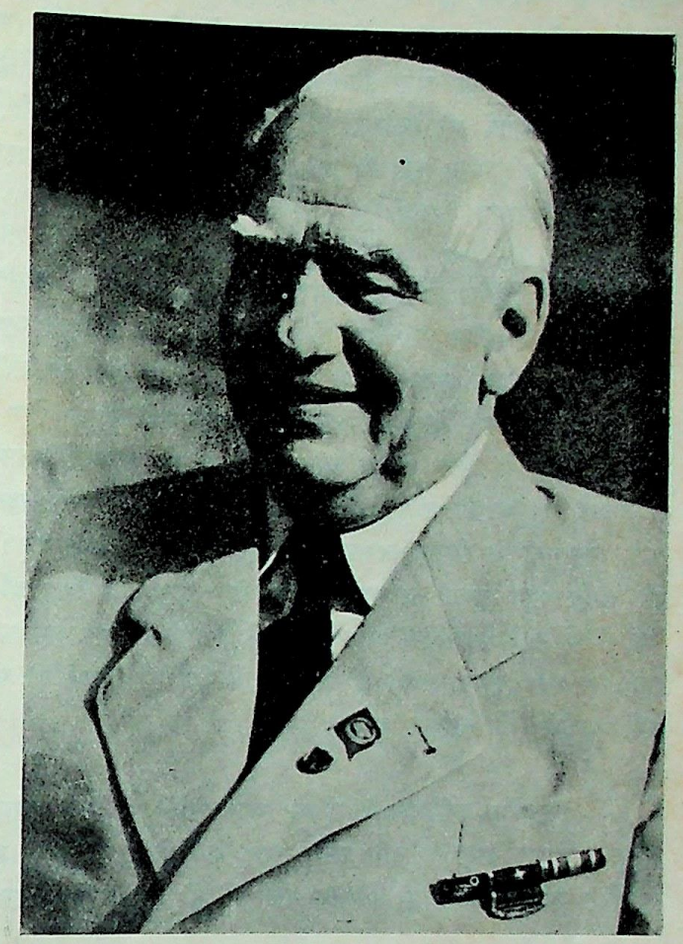

शोक प्रस्ताव

जर्मन राष्ट्र के महान् सपूत, जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रपति विलहेम पीक ने सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं। इस भीषण राष्ट्रीय क्षति से केन्द्रीय कमेटी, मंत्री परिषद्, पीपुल्स चैम्बर और राष्ट्रीय परिषद् को गहनतम पीड़ा पहुँची है। राष्ट्रपति के निधन से मजदूरवर्ग, पूरे जर्मन राष्ट्र, शांति और समाजवाद के हित में समर्पित एक महान् जीवन का--एक महापुरुष के जीवन का--अन्त हो गया।

आज से पैंसठ वर्ष पूर्व विल्हेम पीक ने घूम-घूम कर बढ़ई का काम शुरू किया। तभी वे मजदूर आन्दोलन में शामिल हुए और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य बने। उस दिन से जीवन के अन्तिम क्षण तक समाजवाद की लाल पताका उनके हाथों में लहराती रही। १९१४-१९१८ का विश्वयुद्ध शुरू भी नहीं हुआ था कि उनकी गिनती जर्मनी के उन वामपंथी नेताओं में होने लगी थी, जिन्होंने जर्मन साम्राज्यवाद के विरुद्ध सीना खोल कर जर्मन राष्ट्र को युद्ध की आग में झोंकने वाली तमाम कुटिल शक्तियों को ललकारना शुरू कर दिया था। जब वह विभीषिका आ गयी और बड़े बड़े पूंजीपतियों ने दुनिया का फिर से बँटवारा करने के लिए युद्ध की आग लगा दी और लाखों मजदूरों को युद्ध की लपटों में भस्म करने लगे, तो उस समय भी कार्ल लीवक्नेख़्त, रोज़ा लग्ज़ेमबर्ग, फ्रांज मेहरिंग, क्लाराज़ेट्किन और विल्हेम पीक सर्वहारा की अन्तर्राष्ट्रीयता के महान् लक्ष्य पर अडिग भाव से खड़े रहे। जब साम्राजी जर्मनी की फ़ौज के पैर उखड़े और मजदूरों और सैनिकों के नेतृत्व में १९१८ की नवम्बर क्रान्ति हुई तो उस समय भी अपमान और तबाही से, युद्ध के ठेकेदारों और लालची पूंजीपतियों से जर्मनी को मुक्त कराने में विल्हेम पीक ने स्पार्टकस लीग के नेता के रूप में एक महान् भूमिका अदा की। यह क्रान्ति उस युग की सामाजिक और राष्ट्रीय माँग थी। लेकिन वह माँग पूरी न हो सकी और देश को फ़ासिज्म और अकथनीय राष्ट्रीय संकट का सामना करना पड़ा। कुछ समाज और राष्ट्रद्रोही तत्वों की गद्दारी ने क्रान्ति को विफल कर दिया। विल्हेम पीक उस हत्या की साजिश से बाल-बाल बच निकले जिसमें कार्ल लीबक्नेख़्त और रोज़ा लग्ज़ेमबर्ग को अपनी जान गँवानी पड़ीं।

जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की जिस दिन से नींव पड़ी तभी से विल्हेम पीक उसका निरन्तर नेतृत्व करते रहे। मजदूरों के सच्चे नेता के रूप में आप सन् १९०६ में ही ब्रेमेन म्युनिस्पिल कौंसिल के सदस्य और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की ब्रेमेन शाखा के मंत्री हो चुके थे। बाद को कम्युनिस्ट पार्टी के नेता के रूप में भी आप बर्लिन नगर संसद, प्रश्चियन संसद, राज्य-परिषद और रीश्चटग् के सदस्य बने। विस्मार गणतंत्र के १४ वर्षों के शासन में नाज़ी शक्तियाँ बराबर सत्ता हथियाने की साजिशें करती रहीं। उनकी इस साजिश को नाकाम करने के लिए अर्न्सट थेलमन्न के नेतृत्व में जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य के रूप में विल्हेम पीक ने जर्मनी की मजदूर पार्टियों और ट्रेड यूनियनों में संयुक्त मोर्चा बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फ़ासिस्ट विरोधी शक्तियों को सुदृढ़ करने में ऐतिहासिक भूमिका अदा की। नाज़ी बर्बरता के भीषण अन्धकार में अन्सर्ट थेलमन्न के स्वर--"हिटलर के अर्थ हैं युद्ध"--सारे जर्मनी में गूंज उठे। रीचश्ट्ग अग्निकांड के बहत्तर घंटे पूर्व विल्हेम पीक ने बर्लिन में समस्त फ़ासिस्ट-विरोधी शक्तियों को एक गुट हो जाने का फिर एक बार आवाहन किया। अन्सर्ट थेलमन्न के गिरफ्तार हो जाने के बाद विल्हेम पीक जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष चुने गये और अपने नेता थेलमन्न के ही पदचिह्नों पर चलकर आपने भी हिटलर की तमाम विरोधी शक्तियों की एकता और शांति की लड़ाई आगे बढ़ायी। किन्तु हमारी जनता का यह दुर्भाग्य रहा कि मज़दूर वर्ग के नेताओं का सत्य असफल रहा और लूट तथा उपनिवेशों के प्यासे जर्मन साम्राज्य-वादियों का असत्य विजयी हो गया।

और द्वितीय महायुद्ध की आग लग गयी। जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के नेता के रूप में विल्हेल्म पीक ने फिर इस साम्राजी युद्ध के ख़िलाफ़ जेहाद बोल दिया जैसा कि वे पहले महायुद्ध के दौरान भी कर चुके थे और इसी जेहाद में उनका एक-एक पल बीतने लगा। चाहे सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के कार्यकर्त्ताओं के बीच हों, चाहे लेखकों और कलाकारों के बीच, और चाहे बाद को लड़ाई में पकड़े गये जर्मन क़ैदियों के बीच हों, विल्हेम पीक हर समय फ़ासिस्तों के विरुद्ध जेहाद में एक गुट होने के लिए सबका आवाहन करते रहे, हिटलरी कुशासन के विरुद्ध बग़ावत करने और जर्मनी को भीषण संकट से बचाने का आन्दोलन चलाते रहे; आक्रमणकारी युद्ध का षड़यन्त्र रचने वालों, शासन की गद्दी पर बैठे दानव और उसके नाज़ी कप्तानों के विरुद्ध जनता में जागरण का मंत्र फूंकते रहे। अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास करने वाले एक पक्के समाजवादी की भांति आप अपनी जनता और अपनी मातृभूमि के लिए अडिग भाव से लड़ते रहे। जर्मनी की स्त्रियों और पुरुषों से, खाइयों में पड़े सिपाहियों और लड़ाई के क़ैदियों से आप यही अपील करते रहे। आख़िर एक दिन वह भी आया जब अजेय सोवियत और मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने हिटलरी फ़ौजों को परास्त किया और मज़दूरों-किसानों का सदियों पुराना स्वप्न पूर्वी जर्मनी में साकार हुआ।

यूनाइटेड मार्क्सिस्ट-लेनिनिस्ट वर्कर्स पार्टी का जन्म मज़दूर, किसान और बुद्धिजीवी वर्ग की मुक्ति का संदेश लेकर आया। उसके जन्म के साथ जर्मन राष्ट्र के नवोदय की पुष्टि हुई। सन् १९४६ में जर्मनी के मज़दूर वर्ग में व्यापक एकता स्थापित हुई, इसका श्रेय विल्हेम पीक को ही है और उन्हें इस ऐतिहासिक एकता की प्रतिमा कहा जा सकता है।

जब पश्चिमी शक्तियों और उनके बोन स्थित गुर्गों ने पश्चिमी जर्मनी नामक एक अलग राज्य बना लिया तो उसके जवाब में जर्मन जनता ने भी अपना एक शांतिपूर्ण राज्य कायम किया और विल्हेम पीक जैसे महान् योद्धा, गहन अनुभवी और अडिग समाजवादी को जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रपति के रूप में चुना। राष्ट्रपति विल्हेम पीक का नाम और उनके कार्य एक नये और सुन्दरतर जर्मनी के उत्थान का प्रतीक बन गये--एक ऐसे जर्मनी का प्रतीक जिसने अपने को फ़ासिस्टों और फ़ौजियों, ठेकेदारों, पूंजीपतियों और सत्ता के लोभी दानवों से सदा-सदा के लिए मुक्त कर लिया है और जिसने सारी दुनिया की शांतिकामी जनता की मैत्री और सद्भावना प्राप्त कर ली है। योरप का वह एक ऐतिहासिक युग ही था जब विल्हेम पीक ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के विकास में चिरस्मरणीय भूमिका अदा की। समाजवाद की रचना में उन्होंने अपने जीवन का सबसे महान् स्वप्न साकार होते देख लिया। वे जर्मनी के वर्गचेतन मज़दूरों, समाजवादियों, क्रान्तिकारियों और देशभक्तों के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस सदी में साम्राज्यवाद के विरुद्ध जर्मनी में जितना कुछ संघर्ष हुआ है, वे उस सबके प्रतीक थे। नये जर्मनी के लिये जहाँ कहीं भी संघर्ष होता, वे अपने गहन ज्ञान, क्रान्तिकारी जोश, विवेकपूर्ण परामर्शों और प्रभावशाली क्रियाशीलताओं के साथ सदा मौजूद रहते। सत्गुण और सच्चाई, लम्बे जीवन से प्राप्त बुद्धिमत्ता और मानवता के महान् विचारों तथा जर्मनी के राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ललक--यह सब उस व्यक्ति में एक साथ समाहित थे। वह व्यक्तित्व जनता के बीच ही पुष्पित और पल्लवित हुआ था; उसमें जनता की अपूर्व आस्था छुपी थी और इसीलिए शांति और युद्ध की शक्तियों के बीच चल रहे राम-रावण युद्ध में शान्तिकामी जर्मन राज्य के साथ उस व्यक्तित्व का दर्जा स्वभावतः सबसे ऊँचा था।

आज उस जीवन का अन्त हो गया। वह एक ऐसा जीवन था जिसके रग-रग में यदि एक ओर संघर्षों, यातनाओं की कहानी छुपी थी तो दूसरी ओर उसमें शान और विजय के स्वर भी गूंजते रहते थे। उनके चल बसने से हमें गहरी वेदना पहुँची है लेकिन साथ ही हमें अपने इस सौभाग्य पर गर्व भी है कि विल्हेम पीक जैसा महान् व्यक्तित्व हमारे बीच रहा। उनका व्यक्तित्व, उनके विचार और उनके कार्य जर्मन इतिहास और अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन के अमर भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

बनकर रहेंगे। उनका आदर्श चिरस्थायी है और वह जनता को, विशेषतया तरुण पीढ़ी को, निरन्तर प्रेरणा देता रहेगा; क्योंकि तरुण पीढ़ी ने उन्हें सदा अपने पिता और मित्र की भांति प्यार दिया और उन्होंने इसके बदले तरुणों के समक्ष एक महान् क्रियाशील लड़ाकू जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया--एक ऐसे जीवन का आदर्श जिसे उनकी सादगी, इमान्दारी, परमार्थ और दृढ़ता अनोखी आभा प्रदान करते रहे। उनका जीवन शांति, समाजवाद और सोवियत मैत्री के हित में एक अद्भुत समर्पण था।

प्यारे मित्र और साथी विल्हेम पीक, जर्मन जनता आपको श्रद्धांजलि अर्पित करती है। हम आपके आभारी हैं। मजदूर वर्ग, समाजवाद और पूरे जर्मन राष्ट्र की सेवा में आपने अपने महान् जीवन का जिस प्रकार सदुपयोग किया उसके प्रति हम अपना चिर-आभार प्रस्तुत करते हैं और शपथ लेते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में जनता और मजदूरवर्ग की जो एकता स्थापित हो चुकी है हम सामाज्यवाद और सुधारवाद के ख़तरे से उसकी रक्षा करते रहेंगे। श्रमिक राष्ट्रपति के महान हाथों से मौत ने आकर जिस झंडे को अलग कर दिया है, हम करोड़ों की संख्या में उसे ऊँचा रखेंगे तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवाद की विजय और समस्त जर्मनी में शांति की विजय की मंजिल की ओर उसे आगे बढ़ाते रहेंगे।

जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी
वाल्टर उल्ब्रिस्त

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि परिषद
ओटो ग्रोटेवाल

जर्मन जनवादी गणतंत्र का पीपुल्स चैम्बर
डा० जोहान्स डीकमन

जनवादी जर्मनी का राष्ट्रीय मोर्चा
प्रो० डा० इरिख़ कारेन्स

शोक संवेदनाएँ

जर्मन राष्ट्र के महान कर्णधार, अद्वितीय राजनायक और मजदूर वर्ग के नेता राष्ट्रपति विल्हेम पीक के निधन-संवाद से जर्मन जनवादी गणतन्त्र के संसार-व्यापी मित्रों और हितैषियों में गहरी-संवेदना फैल गयी।

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, सुप्रीम सोवियत के अध्यक्ष मंडल और सोवियत मंत्रि-परिषद ने अपने शोक-संवाद में कहा :

"विल्हेम पीक एक क्रान्तिकारी और फ़ासिस्त-विरोधी थे। उन्होंने नाज़ी अत्याचारों पर विजय की शुभ घड़ी लाने के लिए सब कुछ कर दिखाया, क्योंकि उनके विचार से जर्मनी के शान्तिपूर्ण और जनवादी विकास की यही प्रमुख शर्त थी। सर्वहारा की अन्तर्राष्ट्रीयता में उनका अडिग विश्वास था। तमाम देशों की जनताओं में घनिष्ठ मैत्री क़ायम करने की दिशा में वे एक अथक योद्धा सिद्ध हुए थे और वे सोवियत संघ के एक सच्चे और निष्ठावान मित्र थे।"

सोवियत प्रधान मंत्री श्री निकिता क्रुश्चेव और सोवियत सरकार के दूसरे सदस्यों ने मास्को स्थित जर्मन जनवादी गणतन्त्र के दूतावास में जाकर शोक प्रकट किया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष माओ-त्सेतुंग और चीन सरकार के नेतागण पेकिंग स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के राजदूत से मिलकर अपनी संवेदना प्रकट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० सितम्बर को बर्लिन में दिवंगत राष्ट्रपति की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई जिस में रुमानिया, हंगरी, कोरिया, यूगोस्लाविया, सोवियत संघ, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, अल्बानिया, बुल्गेरिया, मंगोलिया, चीन और वियतनाम के प्रतिनिधि-मंडलों ने भाग लिया। इन प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व संबंधित देशों के राष्ट्रपतियों या प्रधानमंत्रियों ने किया।

भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने शोक-संवाद में कहा :

"हिज़ इक्सेलेंसी राष्ट्रपति विल्हेम पीक के निधन का समाचार सुनकर मुझे गहरी पीड़ा पहुँची। इस दुखद अवसर पर मैं आपके तथा दुखी परिवार के प्रति अपना हार्दिक शोक व्यक्त करता हूँ।....."

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकारी महामंत्री श्री ई० एम० एस० नम्बूद्रिपाद ने बर्लिन में आयोजित अन्त्येष्टि-क्रिया में भाग लिया।

संयुक्त अरब गणतंत्र के राष्ट्रपति नासिर ने अपने शोक-संवाद में कहा :

".....राष्ट्रपति के निधन से आपको जो गहरी क्षति पहुंची है उसके प्रति संयुक्त अरब गणतंत्र की जनता, सरकार और मैं अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।"

इराक़ गणतंत्र के राष्ट्रपति मुहम्मद नजीबुर्रबी, बर्मा के प्रधान मंत्री ऊ नू, कोलम्बिया के राष्ट्रपति अल्वर्टोलिराल, ट्यूनिसिया के राष्ट्रपति हबीब बोरगिबा, टोगो के प्रधान मंत्री ओलिम्पिओ, साइप्रस के राष्ट्रपति आर्चबिशप मैकारिओ तथा फ़िनलैंड के राष्ट्रपति केकोनेन ने अपने तथा अपने देश की ओर से शोक-संवाद भेजा।

कैम्बोलिया के राष्ट्रपति प्रिन्स नोरोडम सिंहानुक ने अपने शोक-संवाद में कहा :

".....राष्ट्रपति विल्हेम पीक हमारे देश के प्रति गहरी सहानुभूति और सद्भावना रखते थे। उनके निधन से जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और जनता को जो दुखद क्षति पहुंची है उसके प्रति मैं अपनी तथा अपनी सरकार की ओर से संवेदना प्रकट करता हूं।"

अल्जीरिया के प्रधानमंत्री फ़रहत अब्बास ने अपने शोक-संवाद में कहा :

".....इस दुखद घड़ी में अल्जीरिया की जनता जर्मन जनता के प्रति अपनी सहानुभूति भेजती है और चिरमैत्री का आश्वासन देती है.....।"

क्यूबा की क्रान्तिकारी सरकार ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के पास अपना शोक-संवाद भेजा और उनके एक प्रतिनिधि ने बर्लिन आकर राष्ट्रपति की अन्त्येष्टि में भाग लिया।

अनेक देशों के जनसंगठनों ने पत्रों और तार द्वारा विल्हेम पीक के परिवार, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी तथा राजनीतिक और सांस्कृतिक संगठनों के पास अपनी संवेदना भेजी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ौजी कप्तानों की क्या मंशा है

पश्चिमी जर्मनी के फ़ौजी अधिकारियों ने १४ अगस्त, सन १९६० को एक स्मृति पत्र जारी किया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सैनिक विशेषज्ञों और राजनीतिक नेताओं ने २४ अगस्त को एक टेलिविज़न भेंट में उस स्मृति पत्र की समीक्षा की और वे इस नतीजे पर पहुंचे कि पश्चिमी जर्मनी अपनी फ़ौजी तैयारी के दूसरे दौर में कदम डाल रहा है। पश्चिमी जर्मनी के उस फ़ौजी स्मृति पत्र में तीन चीजों पर ख़ास ज़ोर दिया गया है : १– फ़ौज में आम भर्ती; २– नाटो गुट के साथ और गहरा गठजोड़; ३– एटम हथियारों से फ़ौज को लैस करना।

उस स्मृति पत्र में कहा गया है कि फ़ौजी तैयारी के इस दूसरे दौर में सेना में अनिवार्य भरती के अलावा, "समूची जनता को अध्यात्मिक, नैतिक और भौतिक दृष्टियों से एक जुट करने की भी" ज़रुरत पड़ेगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम उप विदेश मन्त्री ओटोविन्ज़र अपनी टेलिविज़न भेंट में कहा : "उनका (प० जर्मनी के फौजी कप्तानों का) कहना है कि दोनों (जर्मन) राज्यों की तटस्थता और निरस्त्रीकरण महज़ एक ख़याली पुलाव है। जब कि असलीयत यह है कि यदि जर्मन जनता को अपने शांतिमय भविष्य का निर्माण करना है तो दोनों राज्यों की तटस्थता और निरस्त्रीकरण के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं रह जाता।"

पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन की जनता से अपील करते हुए पीपुल्स चैम्बर के उपाध्यक्ष हरमन्न मेतर्न ने कहा, "युद्ध ने हमारा विनाश करने में कोई कमी उठा नहीं रखी थी। उस ध्वंस पर हम सन १९४५ से ही एक नये संसार के सृजन में जी जान से जुटे हुए हैं। आप ने अब तक जो कुछ बनाया है उस पर नाज़ी कप्तानों की योजना फिर से पानी फेर दे– क्या आप इसे सहन कर सकते हैं! यह फ़ौजी योजना आपकी सुरक्षा, आपके आराम और आपके अमन-चैन को डस लेगी!"

जब से पश्चिमी जर्मनी के इन फ़ौजी अधिकारियों के इरादों का पता चला है, सारे योरुप के राजनीतिक क्षेत्रों और खुद नाटो क्षेत्रों में भी भयंकर आशंकाओं के बादल उमड़ने लगे हैं।

पेरिस के समाचार पत्र "ल मान्डे" ने इस पर टीका करते हुए लिखा कि, "अब यह सवाल (प.) जर्मनी की घरेलू नीति के घेरे से बाहर जा चुका है। उस स्मृति पत्र में जो फ़ौजी रूप-रेखा बनायी गयी है उस से यदि पश्चिमी जर्मनी के मित्र राष्ट्रों में भी घोर चिन्ता व्याप्त हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं।"

स्वेडन के बड़े ही प्रभावशाली पत्र "स्टाकहोम्स टिड्निगेन" का कहना है, "हाल के इस कदम से एक नये रोग का पता चलता है और वह यह कि अतलांतक सन्धि के सदस्यों में क्षेत्रों का जिस तरह बटवारा हुआ है, पश्चिमी जर्मनी के फ़ौजी कप्तान उस से संतुष्ट नहीं दिखायी पड़ते। वे केवल 'ढाल' बन कर रहना पसन्द नहीं करते, उनकी ख्वाहिश तो 'तलवार' बनने की है। दूसरे शब्दों में वे यह चाहते हैं कि एटम हथियार भी उनके हवाले कर दिये जायं।"

इस फ़ौजी दास्तावेज से खुद जर्मनी में व्यग्रता छा गयी है। फ्रेंकफ़र्ट (प. जर्मनी) से मध्यवर्गीय जनता के हितों के लिए लड़ने वाला एक पत्र निकलता है। उसने इस कदम की टीका करते हुए कहा :

"यह स्मृतिपत्र, इसकी बातें और इसे प्रकाशित करने के तरीके हमें जर्मन फ़ौजी कप्तानों की सबसे घृणित और नीचतम परम्पराओं की याद दिलाते हैं। जहाँ तक विदेश नीति का संबंध है, यह (स्मृति पत्र) अन्तर्राष्ट्रीय तनाव की आग में घी का काम करता है।... ये फौजी कप्तान वही गलतियां दुहराना चाहते हैं जिन्होंने हमारी जनता को एक ही सदी में दो-दो बार युद्ध की आग में झोंक दिया।"

बोन के विदेशी संवाददाता ने कहा : "फ़ौज के बड़े-बड़े अधिकारी उस स्मृति पत्र को सन् १९५८ से ही तैयार कर रहे थे, लेकिन अब तक जनता की प्रतिक्रिया के डर से उस का प्रकाशन न हो सका था क्योंकि फ़ौजी कप्तानों को इसकी आशंका थी कि जनता तुरन्त यह सोच

"एटमबम लेकर चलने वाले एटमबम के साथ ही मिट जायंगे", प० जर्मनी के प्रदर्शनकारी अपने पोस्टर पर यही नारा लेकर चल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठेगी कि हाई कमान उस दिन की तैयारी में लगा हुआ है जब हर आदमी को युद्ध की आग में झोंक दिया जाय और जो लोग लड़ाई से दूर रहना चाहेंगे उन्हें देशनिकाला दे दिया जायगा।"

फ़ौजी कप्तानों ने उस स्मृति पत्र को अब इस लिए प्रकाश में लाया है ताकि असैनिकीकरण और निरस्त्रीकरण के तमाम प्रस्तावों को असरदार ढंग से उलट सकें और सरकार को और भी कड़ा रुख़ अपनाने पर मजबूर कर सकें।

जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र और पूर्वी योरप के देशों का सवाल है, फ़ौजी कप्तानों के इस स्मृति पत्र ने उनके मन में आशंका ही बढ़ाई है और उनका विचार है कि अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए यह एक नया ख़तरा है।

दूसरे महायुद्ध में १२ घंटे की बमबारी के बाद जर्मन शहर में यही बच रहा था, यदि वही पागलपन फिर से दुहराया गया तो अब की बार क्या बच रहेगा ?

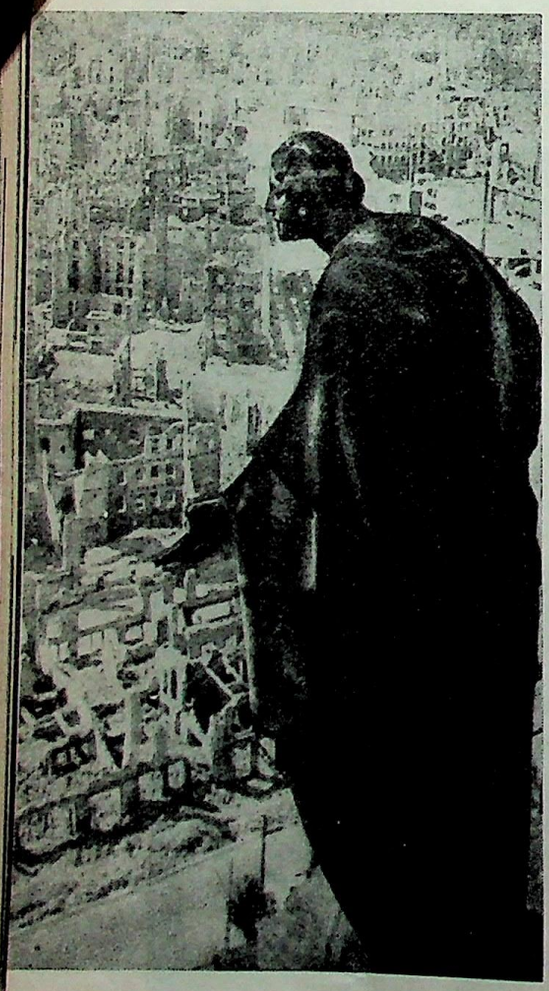

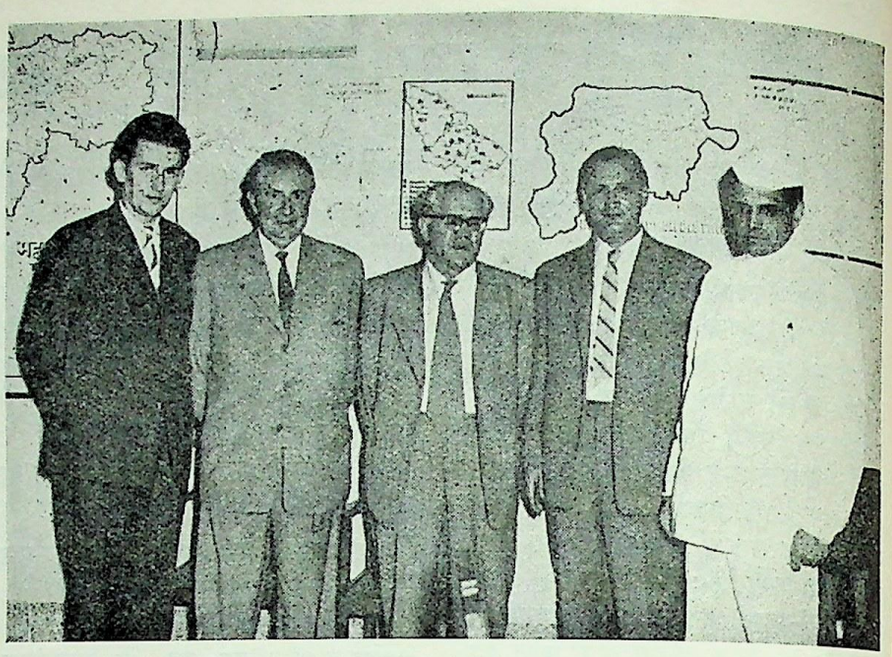

(दाँये से) महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री श्री एम० एल० शाह, मैक्स सेफ्रिन, जे० कोइंग और भारत स्थित ज० ज० गणतंत्र के व्यापार प्रतिनिधि श्री रेनआइज़न।

जमन जनवादी गणतंत्र के साथ हिन्देशिया और बर्मा के राजनायिक संबंध

जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक सरकारी शिष्टमंडल हिन्देशिया और बर्मा की दो सप्ताह की यात्रा के बाद २८ अगस्त १९६० को बर्लिन वापस लौटा। उस शिष्टमंडल को हिन्देशिया की सरकार ने अपनी स्वाधीनता की १५वीं वर्षगांठ पर आमंत्रित किया था। शिष्टमंडल में जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप प्रधान मंत्री श्री मैक्स सेफ्रिन और उप विदेश मंत्री श्री जोहान्स कोइंग भी थे। शिष्टमंडल के सदस्य १३ से २० अगस्त तक हिन्देशिया में ठहरे और हिन्देशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण, प्रधानमंत्री डा० जुआन्डा, विदेश मंत्री डा० सुबान्द्रिओ तथा अन्य नेताओं से वार्ता की।

इस वार्ता के फलस्वरूप, एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के विश्लेषण में दोनों पक्षों ने आम तौर से सहमति प्रकट की। दोनों पक्षों ने यह स्वीकार किया कि दुनियां में शांति और प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के आधार पर सभी देशों की स्वाधीनता, उनके स्वतन्त्र राष्ट्रीय विकास और क्षेत्रीय प्रतिष्ठा के अधिकार को स्वीकार किया जाय।

जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण और जनतांत्रिक हल के लिए ज० ज० गणतंत्र के शिष्टमंडल ने अपना मत व्यक्त किया और साथ ही यह आश्वासन दिया कि हिन्देशिया के पुनर्निर्माण में हमारा देश आर्थिक, टेकनिकल और वैज्ञानिक, हर प्रकार की सहायता करने के लिए तैयार है।

हिन्देशिया के बाद वह शिष्टमंडल बर्मा की सरकार के निमंत्रण पर २१ अगस्त को रंगून पहुंचा और एक सप्ताह वहां रहा। दोनों देशों के नेताओं के बीच अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर तथा समान हित के प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ। उस वार्ता में बर्मा के प्रधान मंत्री उ नू तथा मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

जकार्ता और रंगून में हुई वार्ताओं के फलस्वरूप यह समझौता हुआ कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ यह दोनों देश दौत्य संबंध स्थापित करेंगे, अर्थात् दोनों देशों की राजधानियों जकार्ता और रंगून में जर्मन जनवादी गणतंत्र के कान्सुलेट जनरल रहेंगे और इसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में हिन्देशिया और बर्मा के प्रतिनिधि रहेंगे। समझौते में यह भी तय हुआ कि इन प्रतिनिधियों को उनके पदों के योग्य सारे परम्परागत अधिकार प्राप्त होंगे। इस समझौते को शीघ्र ही क्रियान्वित भी कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

जर्मन जनवादी गणतंत्र का पीपुल्स चैम्बर

डा० डीकमन

पीपुल्स चैम्बर के अध्यक्ष

आज भी बहुत से लोगों में यह ग़लतफ़हमी फैली हुई है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी ही अकेली पार्टी है और उसी का एकछत्र राज्य है। हालांकि सच यह है कि हमारे देश में कई राजनीतिक दल और जन संगठन हैं जिन्हें काम करने की पूरी आज़ादी है। समाजवादी निर्माण की भावना और जर्मन जनता के राष्ट्रीय प्रश्नों को हल करने की इच्छा से प्रेरित होकर वे सभी राजनीतिक दल और जनसंगठन एकता के सूत्र में जरूर बँधे हुए हैं, उन्होंने फ़ासिज्म विरोधी मोर्चा ज़रूर बनाया है और इस प्रकार वे सभी मिलकर एक जनवादी संघ के रूप में ज़रूर काम करते हैं। इस संघ में पाँच राजनीतिक दल शामिल हैं और हर एक को समान प्रतिनिधित्व हासिल है। इस प्रकार किसी भी दल को बहुमत के ज़रिए हटाया नहीं जा सकता और छोटे बड़े राजनीतिक सवाल पर तब तक बहस जारी रहती है, जब तक सब एकराय नहीं हो जाते। सन् १९४५ में इस जनवादी संघ की स्थापना की गयी थी। इतने दिनों में जब-जब इस संघ की विभिन्न राजनीतिक इकाइयों के बीच मतभेद पैदा हुआ, हमेशा गंभीर विचार-विनिमय के बाद कोई न कोई सद्भावपूर्ण समझौते वाला रास्ता निकाला गया।

सन् १९४५ में जब इस जनवादी संघ की स्थापना हुई, तब उन सारे सवालों को अलग रख दिया गया, जिनपर आपस में मतभेद था और केवल उन्हीं को लिया गया जिनपर सभी इकाइयाँ सहमत थीं और जिनके हल में सभी को समान दिलचस्पी थी। इस प्रकार उन इकाइयों को आपस में बाँधने वाले अनेक ठोस और समान हित के विचार-सूत्र मिल गये। सबकी राय से देश का समाजवादी निर्माण शुरू हुआ और धीरे-धीरे आने वाले वर्षों में मतभेद की बातें हलकी पड़ती गयीं। आज भी कुछ मतभेद के चिह्न मिलेंगे। लेकिन उनका संबंध समाजवाद के महान निर्माण से नहीं है, इस लिए वे मतभेद संसद के अधिवेशनों में नहीं उठते, बल्कि उन मतभेदों का जहाँ उचित स्थान होता है वहीं, यानी संसद की विभिन्न कमेटियों और कमीशनों में उठाये जाते हैं। वहाँ उन मतभेदों पर खुलकर बहसें होती हैं, ईमानदारी और सद्भावना के साथ विचारों का आदान-प्रदान होता है और इस प्रकार सभी मिलकर संबंधित समस्या के उपयुक्त हल की कोशिश करते हैं।

क़ानून कैसे बनता है ?

अगर सरकार कोई ऐसे बिल का मसौदा पेश करना चाहती है जो आम जनता पर नहीं, बल्कि केवल उसके एक विभाग पर असर डालने वाला हो, तो संबंधित मंत्रालय को वह मसौदा तैयार करने का आदेश दिया जाता है। (मछली उद्योग के संबंध में एक इसी प्रकार का बिल हाल ही में पास हुआ है) यह भी ज़रूरी है कि वह मंत्रालय जनता के उस भाग से अपने मसौदे पर राय ले। उस राय का पूरा सम्मान करते हुए मसौदा तैयार किया जाता है और फिर प्रधान मंत्री के पास भेज दिया जाता है। प्रधान मंत्री पूरे मंत्रि-परिषद् के सामने उस मसौदे को रखता है। मंत्रि-परिषद् की स्वीकृति मिल जाने पर मसौदे को संसद के अध्यक्ष के पास भेज दिया जाता है। फिर यह निर्णय किया जाता है कि संसद में उस बिल पर दो वाचन ज़रूरी हैं अथवा एक ही वाचन में काम चल जायगा। यदि एक ही वाचन का निर्णय हुआ तो उसके बाद मसौदे को संबंधित संसदीय समिति के पास भेजा जाता है, उदाहरण के लिए मछली उद्योग संबंधी मसौदा संसद की कृषि तथा वन समिति को भेजा गया

पीपुल्स चैम्बर्स के अधिवेशन का चित्र

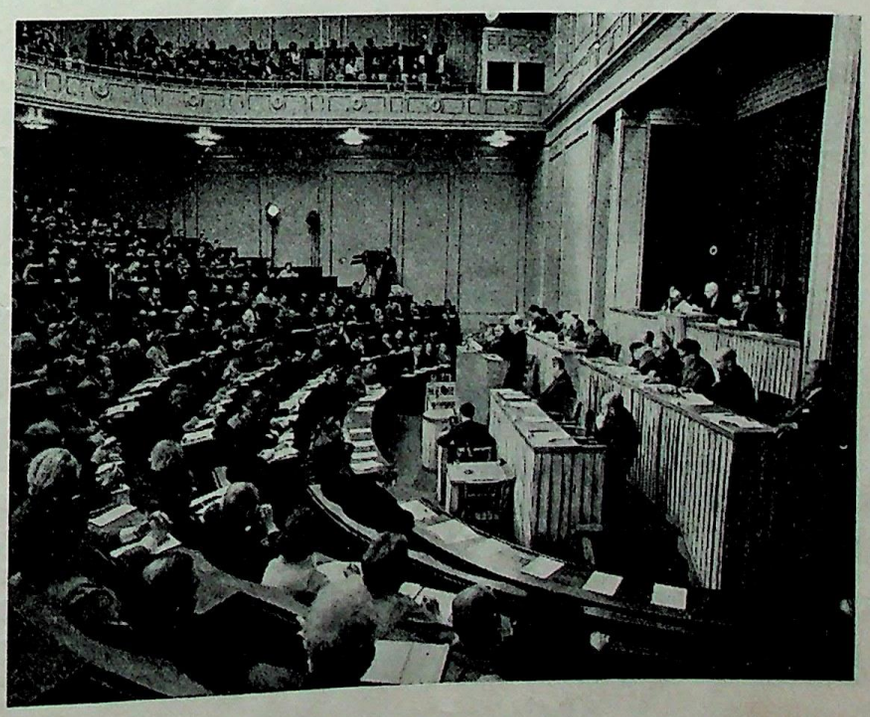

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। अब संबंधित समिति मसौदे का ध्यानपूर्वक अध्ययन करेगी और उसके हर पहलू पर विचार करेगी। इसके लिए मसौदे की कापी समिति के सदस्यों को पहले ही मिल जाती है, ताकि वे अपनी ज़रुरत के मुताबिक़ जानकारी भी हासिल करने का अवसर पा सकें। इस संबंध में यह बता देना चाहिए कि इन संसदीय समितियों में सभी राजनीतिक दलों को प्रतिनिधित्व मिलता है। अक्सर ये समितियाँ मसौदे में हेर-फेर का भी सुझाव देती हैं। यदि बिल पर दो वाचन होना है, तो सरकार पर यह उत्तरदायित्व होता है कि पहले वाचन में बिल की आवश्यकता सिद्ध करे। फ़िर वह संबंधित संसदीय समिति के पास भेज दिया जाता है।

जनता की राय ज़रूरी

लेकिन आम जनता को प्रभावित करने वाले बिल और ही ढंग से तैयार किये जाते हैं। ऐसे मसौदों को बड़े ही पुनीत महत्व का समझा जाता है इसीलिए उनकी तैयारी के बिलकुल नये तरीक़े निकाले गये हैं। उदाहरण के लिए स्थानीय निकायों, सात वर्षीय योजना या शिक्षा कानून जैसे बड़े प्रश्नों पर क़ानून बनाने से पहले आम जनता की ठोस राय ली जाती है। यह काम देशव्यापी पैमाने पर एक आन्दोलन के रूप में किया जाता है। सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी इस अभियान की अगुवाई करती है। इसका नतीजा यह होता है कि अपने हितों पर क़ानून बनते समय आम जनता असहाय तमाशबीन की तरह हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी रहती, बल्कि वह उसमें हाथ बँटाती है, सक्रिय भाग लेती है। शिक्षा-कानून की तैयारी में लगभग २५ लाख व्यक्तियों ने विचार-विनमिय के ज़रिए भाग लिया। सात वर्षीय योजना की बहस में वह संख्या और आगे बढ़ी। मज़दूरों, शिक्षकों और अभिभावकों ने अपनी राय पेश की। सबके सुझाव. सबकी इच्छाएँ सरकार के सामने रखी गयीं, जिनपर सरकार ने ध्यान रखते हुए मसौदा बनाया। वह मसौदा मंत्रिपरिषद् के सामने रखा गया, अगर उसकी स्वीकृति मिल गयी, तो उसे संसद के सामने पेश किया गया जहाँ संसदीय समितियों ने भी उस मसौदे पर गंभीर विचार किया।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

व्यक्तित्व की झांकी :
वाल्टर उल्ब्रिख़्त

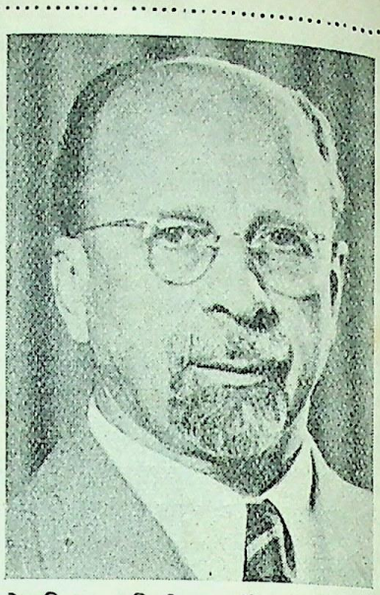

सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के प्रथम मंत्री और राज्य परिषद के अध्यक्ष

३० जून सन् १८९३ को लइपजिग के एक दर्जी-परिवार में वाल्टर उल्ब्रिख़्त का जन्म हुआ। आपने होश संभालने के बाद बढ़ई का काम सीखना शुरू किया। पन्द्रह साल की उम्र में ही लइपजिग के मेहनतकश नौजवानों के आन्दोलन में शामिल हो गए। आगे चलकर सन् १९१२ में बढ़ई मज़दूर यूनियन और जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य बने।

उन्हीं दिनों आपके मन में घूमने की लालसा जगी और बग़ैर किसी तैयारी के भ्रमण करने के लिए चल पड़े और जर्मनी के पास-पड़ोस के अनेक देशों का भ्रमण कर डाला। इसी बीच उन्हें इन देशों में चल रहे मज़दूर आन्दोलनों से भी परिचय प्राप्त होगया।

सन् १९१४ में प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ा। जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अनेक बड़े-बड़े नेताओं ने उस युद्ध का समर्थन शुरू कर दिया, लेकिन वाल्टर उल्ब्रिख़्त अपने नेताओं से सहमत न हो सके और आपने कहा कि युद्ध का समर्थन करना पार्टी के साथ गद्दारी करना है। आपने कार्ल लीबक्नेख़्त के लिखे हुए पर्चे और अपीलें जनता में बाँटी जिनमें इस युद्ध को साम्राजियों की साजिश कह कर उसकी निन्दा की गयी थी। यही वह अवसर था जब आप स्पार्टकस लीग में शामिल हुए। स्पार्टकस लीग के सदस्यों ने आगे चलकर कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

सन् १९१८ और १९ के सन्धिकाल में मजदूर वर्ग के हितों की अलमबरदार के रूप में जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुयी। वाल्टर उल्ब्रिख़्त भी उसके संस्थापकों में रहे। सन् १९२३ से ही आप कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य हैं। सैक्सन विधान सभा और जर्मन संसद के सदस्य के रूप में आप अपने मतदाताओं के हितों के लिए निरन्तर लड़ते रहे। मजदूरों के महान् नेता अनर्स्ट थेलमन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आपने जर्मनी में साम्राज्यवाद और नाज़ीवाद के ख़तरों के विरुद्ध घनघोर संघर्ष किया।

हिटलर के आतंकपूर्ण शासन ने उल्ब्रिख़्त को अपनी मातृ-भूमि छोड़ने को विवश कर दिया। लेकिन नाजीवाद के विरुद्ध उनका संघर्ष तब भी जारी रहा। सन् १९३९ में द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया। अपनी जान की बाजी लगाकर वे स्तालिनग्राद के मोर्चे पर गए और वहाँ जर्मन सैनिकों में सद्बुद्धि लाने का उत्तरदायित्व संभाला। लड़ाई खत्म होने के बाद वाल्टर उल्ब्रिख़्त जर्मनी वापस आए। यहां और ही नयी-नयी तथा कठिन जिम्मेदारियाँ आपका रास्ता देख रही थीं। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के आर्थिक पुनर्निमाण में आपकी प्रतिभा ने पूरा चमत्कार दिखाया। भूमि-सुधारों को लागू करने, नाज़ी युद्ध के अपराधियों और अन्य शोषकों की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करने तथा एक सुदृढ़ समाजवादी आर्थिक ढांचा खड़ा करने में वाल्टर उल्ब्रिख़्त की भूमिका अविस्मरणीय है। जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी-पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के प्रथम मन्त्री तथा उप-प्रधान मन्त्री के रूप में आप जर्मन जनवादी गणतन्त्र के महान् राजनायकों में से गिने जाते हैं। जर्मनी की एकता स्थापित करने में आप एक निर्णायक भूमिका अदा कर रहे हैं।

गत १२ सितम्बर को पीपुल्स चैम्बर के एक निर्णय के अनुसार आपको ज० ज० गणतंत्र की राज्य परिषद का अध्यक्ष चुना गया।

अपनी निस्वार्थ देशभक्ति और सेवाओं के बदले आप कई ऊंचे राज-पुरस्कार भी पा चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया जर्मन आपेरा

'बेचारा कोनार्ड'—राष्ट्रीय इतिहास की झांकी

डा० कार्ल इब्एनुल्फ़

शरद, शिशिर और वसन्त—ये हमारे यहाँ रंगमंच के दिन होते हैं। इन्हें हम रंगमंच का मौसम ही कहते हैं। यह मौसम अभी-अभी बीता है।

रंगमंच के इस पिछले मौसम में छोटे-छोटे आपेरा-घरों ने कुछ बहुत ही नयी चीज़ें पेश कीं। उनमें कुछ के कथानक इतिहास की घटनाओं पर आधारित थे और कुछ के देवी-देवताओं पर। लेकिन एक बात सब जगह पायी गयी। इन्हें देखने से ऐसा लगा कि नये आपेरा की आज जो भी तकनीकी या कलासंबंधी ज़रूरतें हैं, हमारे ये निर्देशक उन्हें भलीभांति समझते हैं और पूरा कर रहे हैं।

बर्लिन स्टेट आपेरा हाउस की जितनी शुहरत है उसी के अनुसार संगीत प्रेमियों ने आशाएँ भी लगा रखी थीं। **बेचारा कोनार्ड**—इसकी ओर लोगों की आँखें लगी थीं। और जब बर्लिन स्टेट आपेरा हाउस में इसे प्रदर्शित किया गया तो न सिर्फ़ संगीत प्रेमियों की आशाएँ ही पूरी हुईं, बल्कि समाचार-पत्रों ने भी उसे बहुत सराहा। **बेचारा कोनार्ड** का संगीत और नृत्य जीन कर्ट फ़ारेस्ट ने तैयार किया। फ़ारेस्ट बर्लिन के ही निवासी हैं। उनकी उमर ५० साल की है और वे अपने राजनीतिक गीतों, कोरसों, धुनों, और नृत्य-गीतों के लिए बड़े ही लोकप्रिय हो चुके हैं।

बेचारा कोनार्ड: इस आपेरा में जर्मन जनता के राष्ट्रीय इतिहास की एक क्रान्तिकारी घटना की झांकी मिलती है। जर्मनी का महान् कृषक विद्रोह तब शुरू नहीं हुआ था। उससे पहले यानी १६वीं सदी के प्रारम्भ में स्वार्विया के किसानों ने अपनी दासता से मुक्त होने के लिए सामन्ती क्रूरता के विरुद्ध विद्रोह किया था। इसी किसान विद्रोह को महान नाटककार फ्रेडरिख उल्फ़ ने आत्मसात किया। वे स्वार्विया की पहाड़ियों में जाकर रहे। वहाँ के ग़रीब लेकिन बहादुर किसानों की शानदार परम्पराओं को अपनी अनुभूति का अंग बनाया और **बेचारा कोनार्ड** नाटक लिखा। १९२३ में यह नाटक पूरा हुआ और तभी यह हमारे रंगमंच की एक महान विभूति भी बना।

इस नाटक का पूरा-पूरा महत्व एंगिल्स के इस कथन से समझा जा सकता है:

"आज इस बात की सबसे अधिक ज़रूरत है कि हम अपनी जनता को महान कृषक विद्रोह के बहादुर और मज़बूत चित्रों से परिचित करायें। तब से अब तक तीन सदियाँ गुज़र चुकीं लेकिन अब भी वह महान विद्रोह और हमारे आज के संघर्षों में कुछ ख़ास अन्तर नहीं, और हमारे आज के विरोधियों का भी स्वभाव आमतौर से पहले ही जैसा है।"

एंगिल्स ने यह शब्द पिछली सदी के मध्य में कहे थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि फ्रेडरिख उल्फ़ के उक्त नाटक को जर्मन जनता ने जिस प्रकार अपने संघर्षों का जीवित प्रदर्शन समझकर उसे अपने दिल में जगह दी, वही भावना आज भी जीवित है। और इसीलिए जब जीन कर्ट फ़ारेस्ट उस नाटक को आपेरा के रूप में प्रस्तुत करते हैं तब भी स्वागत की मात्रा उतनी ही देखने को मिलती है। आपेरा के रूप में प्रस्तुत करते समय फ़ारेस्ट केवल उस नाटक के कथनोपकथन को संक्षिप्त कर देते हैं अन्यथा उसकी भाषा—यहाँ तक कि दक्षिण जर्मन बोली—ज्यों की त्यों रहती है।

बेचारा कोनार्ड—यह एक गुप्त किसान संगठन का छद्म नाम भी था। उस संगठन के किसानों ने नाटक खेलने का निश्चय किया। लेकिन सामन्ती दमन से बचने के लिए उन्हें रंग-बिरंगे वेश बदलने पड़े। इसके लिए उन्होंने एक नाटक-मंडली भी तैयार की और एक बाज़ार में **बेवकूफ़ की अदालत** का प्रदर्शन किया। यह एक तीखा व्यंग था। इस नाटक में एक मोटे से पुजारी का मज़ाक उड़ाया जाता है। सामन्तों के दो बहादुर(१) सिपाही पकड़ कर लाये जाते हैं जिन्होंने डाके डाले हैं

ढोलक वाली लड़की—रेज़

कोंज की भूमिका में कर्ट रेहम

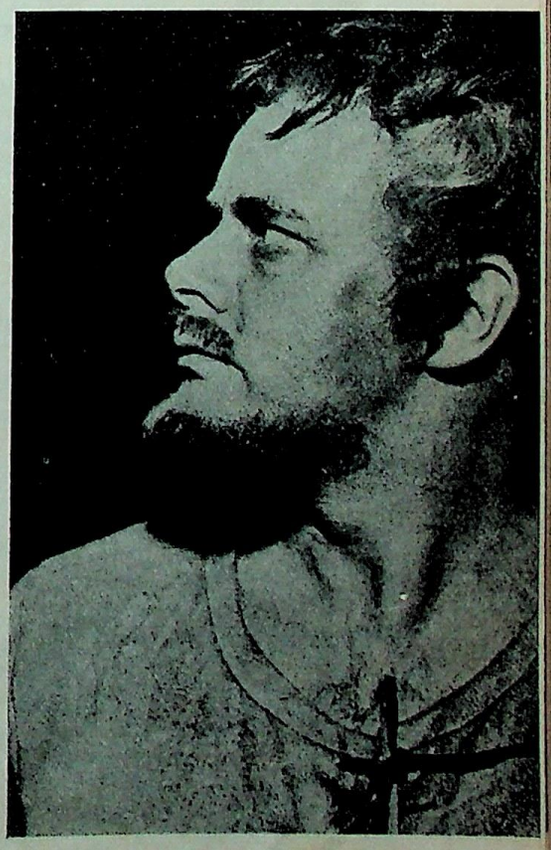

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोन्ज़ अपने ईमानदार साथियों के साथ पकड़ा जाता है और सबके सब पहियों के नीचे कुचल कर मार डाले जाते हैं। लेकिन मरते-मरते भी कोन्ज़ का माथा नीचा नहीं होता। वह कहता है : "किसान की मांग दबायी नहीं जा सकती, किसान फिर आयेगा और चुनौती देगा!"

फ्रेडरिख़ उल्फ़ ने यह दुःख भरी कहानी अपने नाटक के दस दृश्यों में कही है। इस नाटक में हर किसान चरित्र अपनी पूरी बहादुरी और अजेयता के साथ उभरा है, इसी प्रकार सामन्तों के चरित्र भी अपनी क्रूरता और दमन को भली भांति प्रदर्शित करते हैं।

इस नाटक के आपेरा में बदलने के बाद भी फ्रेडरिख़ उल्फ़ के नाटकीय गीत, अपनी ख़ास जगह बनाये रखते हैं। फ़ारेस्ट ने रूपान्तर करते समय इस आपेरा को गीतों का मुरब्बा होने से बचाकर अपने कौशल का ही परिचय दिया है। संगीत कहां तक और किस रूप में नाटकीयता की धार तेज़ करता है इसे भी फ़ारेस्ट अच्छी तरह समझते हैं। जहाँ संगीत की ज़रूरत नहीं है, वहाँ आरकेस्ट्रा बिलकुल ख़ामोश हो जाता है। दूसरे स्थलों पर वातावरण घटनाओं या चरित्रों को उनकी पूरी नाटकीयता के साथ पेश करने में फ़ारेस्ट का संगीत कभी रंगों में तेज़ी भरता है, और कभी भावनाओं में गहरायी लाता है। सिंफनी, कोरस और गीतों में यह संगीत बड़े ही लय के साथ खुलता है। आपेरा में कई 'संगीत दृश्य' भी प्रस्तुत किये गये हैं जिनमें कथनोपकथन भी है, किसी ख़ास स्वर में लयपूर्ण भाषण भी हैं, गीत भी हैं, मल्लयुद्ध भी है और भारी समूह-नृत्य भी हैं। इस अतुल संगीत में जर्मनी के पुराने लोक गीतों ने तो चार-चाँद ही लगा दिये हैं।

आपेरा के पाँचवें दृश्य में किसान विद्रोह फूटता है और यहीं हम उसकी चरम परिणति (क्लाइमेक्स) देखते हैं। इस दृश्य में डंका बजाती हुई तरुणियों के गीत और कोरस हैं, लट्ठधारी किसान के बेटों के नृत्य हैं, पादरी और कोन्ज़ और बेवकूफ़ों के मुंसिफ़ के गीत और कथाएं हैं और अन्त में सब कुछ एक महान क्रान्तिकारी गीत में बदल जाता है। फिर वातावरण में एक सम आता है और थुम नामक एक सिपाही को किसानों का नेता कोन्ज़ मधुर समझौता वार्ता करने लगता है—(थुम पहले नवाबों की ओर था जो अब किसानों की ओर आ चुका है और उनका मित्र बन गया है।)

आपेरा का क्लाइमेक्स एक पागल कर देने वाली अनुभूति बन कर रह जाती है। इतिहास के प्रति ऐसी वफ़ादारी को आपेरा के सजग ढांचे में ईमानदारी के साथ उतार देना जीन कर्ट फ़ारेस्ट का कमाल ही तो है। फ़ारेस्ट का तैयार किया हुआ यह आपेरा अपने समस्त संगीत, गीत, नृत्य, अभिनय और मुद्राओं के साथ फ्रेडरिख़ उल्फ़ के नाटक का सच्चे मानों में अकेला वारिस है।

इरिख़ अलेक्ज़ेन्डर विन्ड्स इस महान आपेरा के निर्माता हैं। हेनर हिल्स ने इसका सीनरियो लिखा है। किसानो के नेता की भूमिका में कर्ट रेम और नवाब की भूमिका में गायक और अभिनेता गेरहर्ड स्टोल्ज़ हैं। इस महान सफलता में आरकेस्ट्रा के प्रतिभाशाली संचालक हार्स्टस्टीन का भी योगदान कुछ कम नहीं।

बेवकूफ़ों की अदालत विद्रोहियों का रूप ले लेती है! बीच में कोंज़ वेश बदले खड़ा है।

CC-0. In P... Hari...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफ़ा फिल्म जगत

"ज़िंदगी शुरू हुई"

विभाजित जर्मनी में एक प्यार की कहानी

जर्मनी के बीच से एक रेखा गुज़रती है। यह दो दुनियाओं की सीमाएँ निर्धारित करती है। एक दुनिया है जर्मन जनवादी गणतंत्र की और दूसरी पश्चिमी जर्मनी की। पहली दुनिया से समाज का पुराना ढांचा जड़-मूल सहित ख़त्म कर दिया गया है। लेकिन उस सीमा रेखा की दूसरी ओर की दुनिया में अब भी पुराना समाज जीवित है। हिटलर तो चला गया लेकिन उसके फ़ौजी कप्तान, उसके सेठ-साहूकार और उसके पुरोहित अब भी बने हुए हैं।

वह सीमा केवल जर्मनी और बर्लिन को ही बांटती हो, ऐसा नहीं, वह तो एक दिल के भी दो टुकड़े कर देती है। इरिका और रोल्फ़ जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक छोटे से शहर में रहते हैं। अभी वे स्कूल जाते हैं और वे बहुत खुश हैं, हर वक्त हँसते रहते हैं और उनके पास किसी तरह की चिन्ता फटकने भी नहीं पाती।

और एक दिन ऐसा आता है जब स्कूल की कक्षा में इरिका की सीट खाली रह जाती है। इरिका के पिता एक डाक्टर हैं। उनका नाम डा. शेन्क है। वे डाक्टर तो हैं पर बहुत सारे मामलों में पुरानपंथी हैं। नयी दुनिया में वे कुछ रस नहीं ढूंढ़ पाते और जर्मन जनवादी गणतंत्र छोड़कर चले जाते हैं। दो मासूम और छोटे-छोटे दिल एक दूसरे से दूर हो जाते हैं। रोल्फ़ अपनी दोस्त इरिका को खो बैठता है। हालांकि वह इस क्षति को स्वीकार करने के लिए हर्गिज़ तैयार नहीं। लेकिन उसके पिता एक सख़्त आदमी हैं। वे एक स्कूल के हेडमास्टर हैं। पहले वह मज़दूर थे और उन्हें अपने जीवन के कई साल नाज़ी जेलों में काटने पड़े हैं। वह अपने साथ भी और अपने हित-मित्रों के साथ कोई नर्मी दिखाना नही जानते। वह इस मामले में भी सही रास्ता अपनाते हैं। लेकिन वे अपने बेटे की भावनाओं को समझने में पूरी तरह से असमर्थ रहते हैं।

अन्त में रोल्फ़ पश्चिमी बर्लिन का रास्ता पकड़ता है और अपनी इरिका से मिलता है। लेकिन यह क्या? उसकी इरिका इतना बदल चुकी है! पश्चिमी दुनिया की तितली बन चुकी है! रोल्फ़ की समझ में कुछ नहीं आता। लेकिन उसकी मुहब्बत उसे अपने निश्चय से हटने नहीं देती। वह इरिका को छोड़ नहीं सकता। लौट कर घर आता है। उसके पिता घूरती निगाहों से उसकी ओर देखते हैं। रोल्फ़ के मन में कई सवाल उठते हैं पर वह उनके जवाबों से कतराता रहता है। स्कूल का आख़िरी इम्तहान भी नहीं पास कर पाता और पढ़ाई छोड़ कर एक कारख़ाने में काम करने लगता है।

उधर डा. शेन्क के भी पैर पश्चिमी जर्मनी में जमने नहीं पाते। उनका मन खट्टा होने लगता है। इधर इरिका भी यह महसूस करने लगती है कि वह जिस दुनिया में रहती है वह अन्दर ही अन्दर से खोखली है, इन्सानियत से ख़ाली है। वहीं उसका एक दूर का रिश्तेदार रहता है। वह नौजवान है और कहने को तो पत्रकार है, लेकिन असल धंधा उसका आवारगी करना, ऊँच-नीच रास्तों से पैसे कमाना और एक सनकी की ज़िन्दगी बिताना है। इरिका उसके पीछे पागल हो जाती है। लेकिन किसी झक्की का क्या भरोसा? कुछ ही दिनों में इरिका उस पत्रकार से भी निराश हो जाती है। उसके बाप का दिल वैसे ही टूट चुका है। कोई और रास्ता न देखकर वे पश्चिमी जर्मनी की फ़ौज में डाक्टर की जगह पर काम करने लगते हैं और किसी फ़ौज के बैरक में

(शेष पृष्ठ २३ पर)

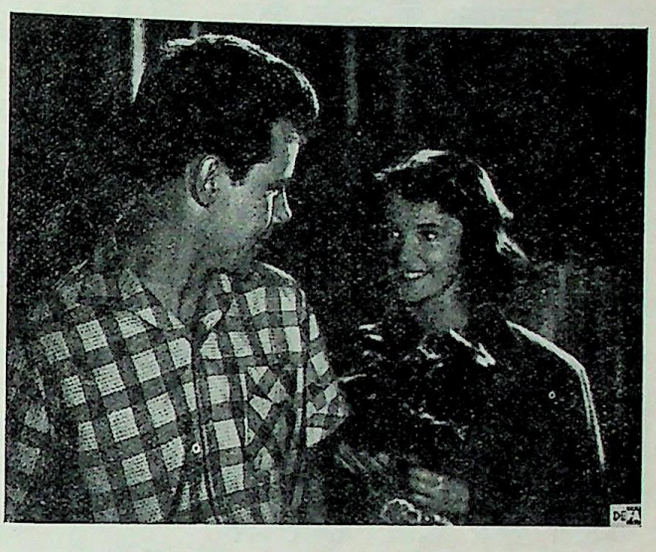

जर्मनी तो बंट गया, पर इन मासूम दिलों का बंटवारा कैसे हो? रोल्फ़ और इरिका की भूमिका में क्रमशः वेल्द्रे और अबेसर।

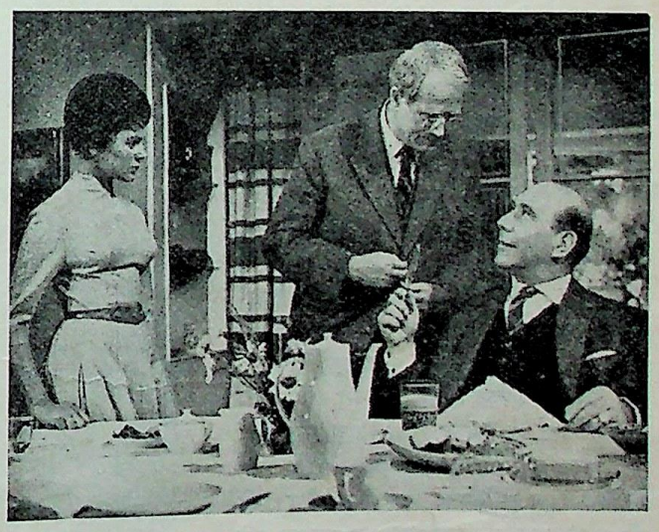

डा० शेंक और उनकी बेटी इरिका का मन खट्टा हो जाता है। रिश्तेदार के व्यवहार से।

ऐसी मुहब्बत का भी क्या भरोसा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अणु शक्ति और शांतिमय सृजन

पीटर निके

अणु शक्ति में महान् आशंकाएं छिपी हैं और महान संभावनाएं भी। इससे मानव का संहार भी हो सकता है और सृजन भी। संसार के कुछ देश अणुशक्ति का उपयोग केवल शांतिमय सृजन के लिए करना चाहते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र भी उनमें से एक है।

आज से पाँच साल पहले, दिसम्बर सन् १९५७ का वह दिन सचमुच एक ऐतिहासिक सृजन का पर्व था जब ड्रेस्डन के पास रोज़ेन्ड्राफ़ में २००० कीलोवाट का एक शोध-रिऐक्टर चालू हुआ। उस दिन हमारे देश ने अणु-युग में प्रवेश किया था—वह अणु-युग जो विनाश के काले बादल नहीं, बल्कि सृजन का अरुणोदय लायेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सन् १९५५ में सोवियत संघ से एक समझौता किया जिसके आधार पर सोवियत संघ ने दिल खोलकर हमारी सहायता की। उसने हमें एक रिऐक्टर दिया, एक साइक्लोट्रान दिया और इन्हें चलाने की ट्रेनिंग भी दी। रोज़ेन्ड्राफ़ में हमने अपना केन्द्रीय अणु-शोध संस्थान बनाया। इसके बारे में विशेषज्ञों का मत है कि वह कुशलता-पूर्वक आगे बढ़ रहा है और उसने दुनिया में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है।

आज हमारे वैज्ञानिक अणु विज्ञान के तीन क्षेत्रों में शोध कर रहे हैं: १, अणु सक्रियता का सदुपयोग; २, किरण रसायन शास्त्र (रे-केमिस्ट्री); ३, इलक्ट्रो शक्ति का उत्पादन।

अणु शक्ति की अनन्त विनाश-लीला का अनुमान हमें अणु-सक्रियता के भयानक प्रभाव से लग सकता है। लेकिन अणु सक्रियता का सदुपयोग भी है और उसके सदुपयोग का सुफल भी आश्चर्यजनक सीमा तक प्रभावशाली हो सकता है। प्रश्न सिर्फ़ उन हाथों की नैतिकता का है जो अणु-सक्रियता पैदा करते हैं। यदि उन हाथों में विनाश का पागलपन होगा तो वे अन्धाधुन्ध अणु परीक्षण करेंगे, उससे अणु सक्रियता पैदा होगी और निरीह मानवता दुख भोगेगी। लेकिन यदि उन हाथों में सृजन के दीप जल रहे होंगे तो वही अणु सक्रियता मानवता के रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने में सहायक बन सकती है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हाथ में सृजन के दीप हैं और उसने अणु सक्रियता का सदुपयोग अपने औद्योगिक क्षेत्र में शुरू कर दिया है। यहाँ एक ही उदाहरण काफ़ी होगा। कारख़ानों से पैदा हुई धातु की चीज़ों की मोटाई और उनकी अच्छाई-बुराई बग़ैर उन्हें छुए जाँची जा सकती है, अगर उनके भीतर कोई दरार है तो उसका भी पता लगाया जा सकता है।

अणु सक्रियता के सदुपयोग से कई वस्तुओं का रूप-रंग भी बदला जा सकता है। यह रसायनिक परिवर्तन किरण रसायन शास्त्र के अन्तर्गत आता है। मिसाल के लिए, प्लास्टिक की एक क़िस्म ऐसी होती है जो आमतौर से ११० अंश सेन्टीग्रेड तापमान पर गलने लगती है। लेकिन यदि उस पर अणु सक्रियता का रसायनिक प्रयोग कर दिया जाय तो ३०० अंश सेन्टीग्रेड में रख देने के बावजूद उस पर ताप-मान का कोई असर नहीं पड़ सकता। भारतीय किसानों को अच्छी तरह मालूम है कि वे अपने आलू की ढेरियाँ घरों में रखते हैं और बरसात के उतरते ही उनमें अँखुए लग जाते हैं। हमारा अणु शोध संस्थान अणु सक्रियता का सत्प्रयोग करके आलू में अँखुए लगने का भय दूर कर रहा है।

अणु सक्रियता का सदुपयोग प्राणि-शास्त्र और कृषिशास्त्र के लिए तो वरदान सिद्ध हो रहा है। इसकी वजह से उक्त क्षेत्रों में जाने कितने विकास की नयी-नयी संभावनाओं का जन्म हो रहा है।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

ड्रेस्डन के पास रोज़ेन्ड्राफ़ में अणु रिऐक्टर

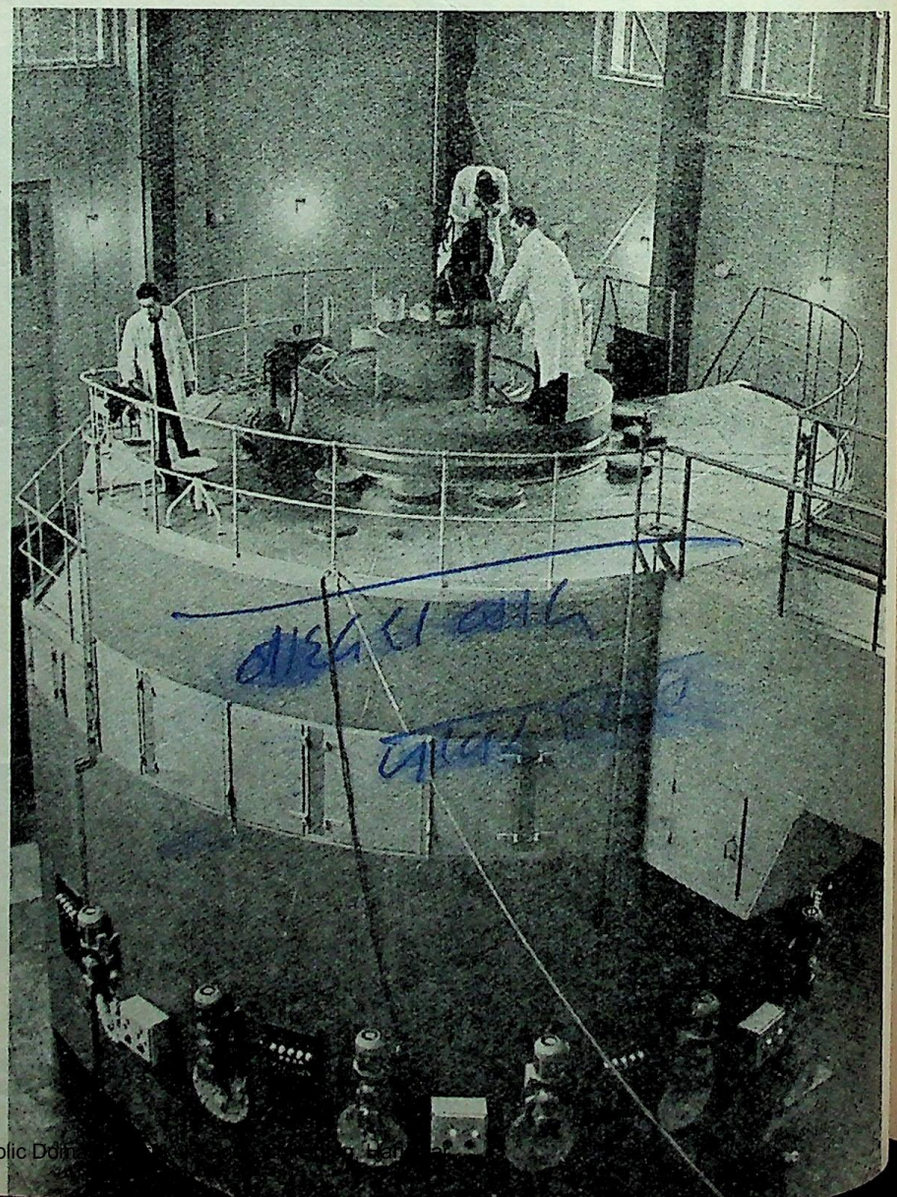

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आदमी की यह दुनिया' और ब्रेख़्त

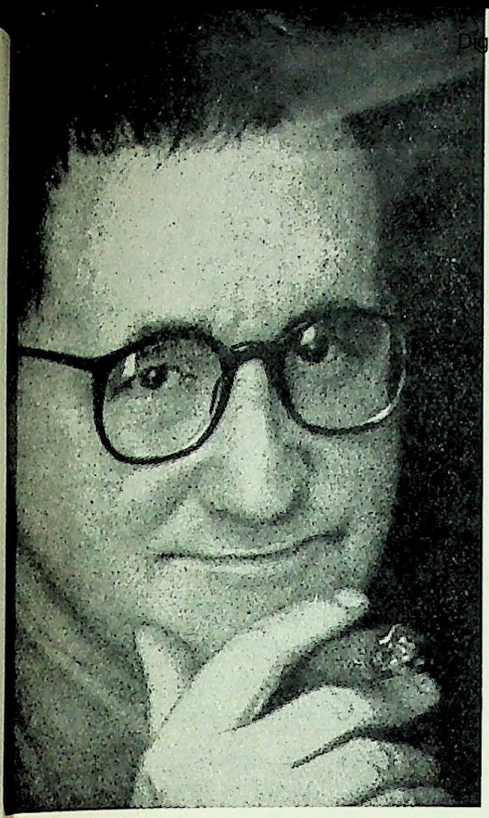

ब्रेख़्त

क्या रंगमंच पर आज की दुनिया की तस्वीर सचमुच ही उतारी जा सकती है ? ब्रेख़्त की मृत्यु से कुछ ही साल पहले उनसे यही सवाल किया गया था। और ब्रेख़्त ने कहा था, "आज की दुनिया का बखान आज के आदमी के सामने तभी किया जा सकता है जब इस दुनिया को एक बदलती हुई दुनिया समझा जाय।"

बर्टोल्ट ब्रेख़्त ने अपने तीस वर्ष के सृजनात्मक जीवन में जिस बात पर सबसे अधिक ज़ोर दिया वह थी..... "आदमी की यह दुनिया जैसी है उसे वैसी ही पेश किया जाय—यानी आदमी की दुनिया, आदमी के ज़रिए बनायी गयी दुनिया और आदमी के ही ज़रिए बदली जाने वाली दुनिया।"

और इस मंज़िल तक पहुँचने के लिए ब्रेख़्त ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सहारा लिया।

रंगमंच में—नाटकों और अभिनय में—द्वन्द्वात्मकता का सजग प्रयोग ब्रेख़्त की ही देन रही। सन् १९३४ में उन्होंने डेनमार्क के मज़दूर-अभिनेताओं को लिखा था :

"... इसलिए हम तुमसे माँग करते हैं कि तुम अपने को बदलो और आदमी की दुनिया जैसी है वैसी ही उसे पेश करो—यानी आदमी की बनायी हुई दुनिया और उसी के ज़रिए बदली जाने वाली दुनिया—क्योंकि तुम हमारे इस युग के अभिनेता हो और यह युग परिवर्तन का है, सम्पूर्ण प्रकृति और यहाँ तक कि मानव-प्रकृति पर भी महान विजय पाने का युग है।"

इर्विन स्ट्रिटमिटर का एक नाटक है 'कट्ज़ग्रेबेन'। उस नाटक के रिहर्सल के बाद ब्रेख़्त ने कहा था :

"रंगमंच से केवल यह अपेक्षा काफ़ी नहीं कि वह यथार्थ के प्रति एक अन्तरदृष्टि देकर उसकी अनुकरणीय तस्वीर पेश कर दे। बल्कि हमारे रंगमंच के सामने ज़िम्मेदारी यह है कि वह बोध की इच्छा पैदा करे और बदलते हुए यथार्थ की सुखद अनुभूति संजोकर सामने लाये। हमारे दर्शक को केवल यह देख कर संतोष नहीं कर लेना चाहिए कि प्रोमोथियस ज़ंजीरों से कैसे मुक्त हुआ, बल्कि उसे अपने अन्दर प्रोमेथियस को आज़ाद कराने की ख़ाहिश भी पैदा करना है। जब कोई वैज्ञानिक किसी नई खोज में सफल होता है तो उसकी आँखों में ख़ुशियों के चिराग़ जल उठते हैं, जब कोई विजेता अपनी जनता की हथकड़ियाँ काटकर उसे मुक्त करता है तो उसके रोम-रोम से एक अपूर्व आनन्द का स्रोत फूट पड़ता है। हमारे रंगमंच का फ़र्ज़ है कि वह अपने दर्शक के दिलों में उन तमाम ख़ुशियों के चिराग़ जलाये, आनन्द के वे तमाम स्रोत दर्शक के रोम-रोम में भर दे।"

ब्रेख़्त ने अपने नाटकों की व्याख्या करते समय रंगमंच—नाटक लेखन और अभिनय—के बारे में अपने विचार कई जगहों पर व्यक्त किये हैं। इस संबंध में उनके विचार 'डाइलेक्टिक्स इन द थियेटर' में संग्रहीत है।

कला संबंधी क्रियाकलापों को ब्रेख़्त सही मानों में राजनीतिक काम समझते थे। सन् १९५५ में पश्चिमी जर्मनी में एक रंगमंच सम्मेलन हुआ। जर्मन जनवादी गणतंत्र से ब्रेख़्त भी उसमें भाग लेने गये। सम्मेलन में उन्होंने कहा था :

"यदि आप मुझे यह कहते पायें कि दुनिया का वर्णन करना एक सामाजिक प्रश्न है तो आपको ताज्जुब नहीं करना चाहिए। यह मेरा कोई नया विचार नहीं। मैं इसे बहुत दिनों से मानता आया हूं। आज मैं एक ऐसे राज्य (जर्मन जनवादी गणतंत्र-सं०) में रहता हूं जहां समाज को बदलने की बड़ी-बड़ी कोशिशें हो रही हैं। उन कोशिशों के पीछे जो रास्ते और साधन अपनाएं जा रहे हैं, उनकी आप निन्दा कर सकते हैं—वैसे मेरी इच्छा यह रही है कि आप उनकी सच्ची तस्वीर देख पाते (केवल अपने अख़बारों के ज़रिए नहीं) एक नई दुनिया के इस ख़ास आदर्श की तस्वीर, फिर उन्हें मानना या ठुकराना तो आप के बस में है ही—लेकिन आप इस सच्चाई से इनकार नहीं कर सकते कि जिस राज्य में आजकल मैं रह रहा हूँ वहाँ दुनिया को और साथ ही आदमी के जीने के तरीक़ों के बदलने की कोशिश हो रही है। और यहाँ तो आप मुझसे सहमत होंगे ही कि आज दुनिया को बदलना ज़रूरी हो गया है।"

बर्टोल्ट ब्रेख़्त अपनी घोषणाओं, खुली चिट्ठियों और लेखों के ज़रिए आये दिन राजनीतिक सवालों पर अपने विचार प्रकट किया करते थे। हमारे इस युग के महान् ऐतिहासिक परिवर्तनों में उन्होंने अपने ही ढंग से अपनी भूमिका अदा की।

ब्रेख़्त की समाधि से आज भी किसी आवाहन का स्वर हमारे कानों में गूंजा करता है :

"यह देख कर ताज्जुब होता है कि आदमी अपनी पुरानी पीड़ाओं को इतनी जल्दी भुला देता है। वे पीड़ाएं दुबारा भी आसकती हैं—इसकी कल्पना-शक्ति तो उसमें और भी कम है। आदमी के इसी बुझे हुए बोध के ख़िलाफ़ हमें लड़ना है क्योंकि इस स्थिति का अन्तिम अध्याय मृत्यु है।

"मुझे वे तमाम लोग और उन लोगों की तमाम भीड़ें मुर्दों के ढेर जैसे लगती हैं जो पुरानी लड़ाइयाँ रोकने में—अपनी पीड़ाएं रोकने में—कुछ न कर सके और फिर जिनके सामने आगे भी वही आशंकाएं खड़ी हैं और जो उन्हें रोकने के लिए फिर भी कुछ नहीं कर पा रही हैं।

"लेकिन फिर भी, इस सब के बावजूद, कोई मुझे यह स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता कि विवेक के शत्रुओं का विरोध निरर्थक है। हालांकि यह बात हज़ारों बार दुहरायी जा चुकी है, फिर भी हम उसे बार-बार कहते हैं। हम अपनी चेतावनियाँ दुहराते हैं—चाहे वह धूल फाँकना ही क्यों न समझा जाय ! क्योंकि युद्ध से समूची मानवता को ख़तरा है—ऐसे युद्ध जिनके सामने पुरानी लड़ाइयाँ बच्चों के नाटक लगेंगे, और वे युद्ध मानवता का नाश करके ही रहेंगे यदि उन हाथों को अंग-भंग नहीं कर दिया गया जो ऐसे युद्ध की खुलेआम तैयारियां कर रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल-कूद भी एक जन-आन्दोलन है

मार्टिन क्रामर

इधर हाल में ज़र्मन जनवादी गणतंत्र में खेल-कूद एक जन-आन्दोलन का रूप ले चुका है। "हर आदमी हर कहीं हफ़्ते में एक दिन ज़रूर खेले", इस नारे ने आम जनता को मोह लिया है। मज़दूर, किसान, इंजीनियर, बूढ़े, जवान सभी खेलों में दिलचस्पी रखने के साथ-साथ सही मानों में खिलाड़ी भी बन गये हैं। पूरे देश में खेल संबंधी जो सुविधाएं सरकार और खेल की विभिन्न संस्थाओं की ओर से मिलती हैं उन्हें भला कैसे कोई छोड़े। हमारी जनता खेलों में कितनी दिलचस्पी लेती है इस पर नीचे दिया गया विवरण कुछ प्रकाश डालने के लिए काफ़ी होगा :

१९५९ में लइपज़िग में तृतीय जर्मन खेल-कूद मेला हुआ जिसमें ३६,००० खिलाड़ियों ने भाग लिया।

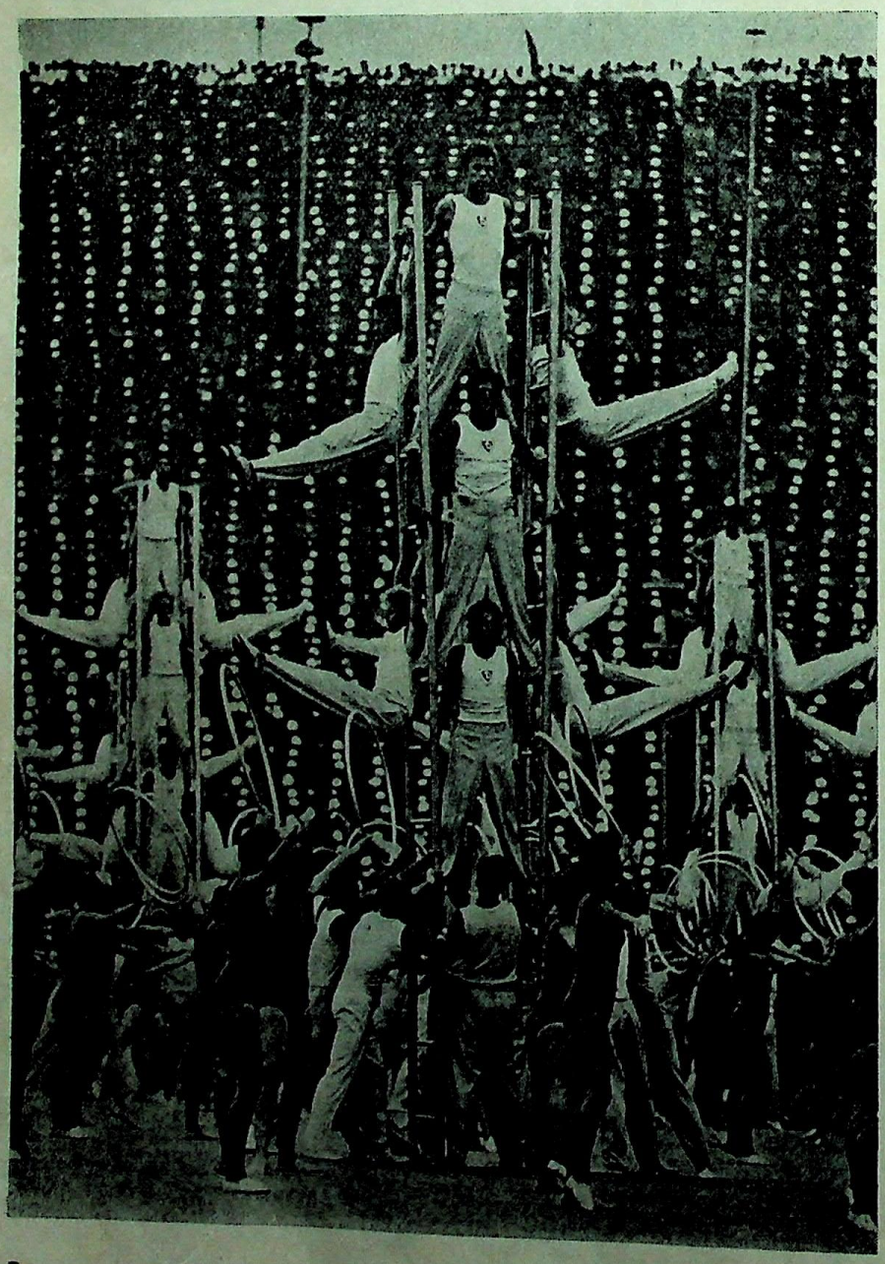

सन् १९५९ में ३५,९०,००० से भी अधिक संख्या में मेहनतकश लोगों ने खेलों में हिस्सा लिया। नगरों और गावों में ४,००० से भी अधिक लोग खेल की शिक्षा-दीक्षा देने के लिए तैनात हैं। १३ अगस्त, १९५९ को हमारे प्रथम राष्ट्रीय खेल समारोह का आयोजन हुआ। इसमें कुल १४ लाख व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। ४ अक्तूबर १९५९ को द्वितीय राष्ट्रीय खेल समारोह हुआ। इसमें २० लाख ने भाग लिया। १३ फरवरी, सन् ६० को तृतीय राष्ट्रीय खेल समारोह हुआ। इसमें मौसम खराब होने के बावजूद १४ लाख मेहनतकशों ने भाग लिया।

लोगों की शारीरिक बनावट में कोई विकार न पैदा हो, इसके लिए देश भर में ३१८७ ऐसी संस्थाएं हैं जहाँ प्रतिदिन २,६५,००० मज़दूर ५-१० मिनट कसरत करते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इस देशव्यापी कसरत अभियान से लोगों में काम करने की शक्ति बढ़ गई है। हमारे वैज्ञानिक, डाक्टर, और विद्यार्थी काफ़ी दिन से विभिन्न पेशों में काम करने वाले लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए अलग-अलग तरह के व्यायाम की खोज में लगे हैं। इस प्रकार उनकी मेहनत से कसरत के जो नये-नये ढंग निकलते जाते हैं वे अख़बारों और पत्रिकाओं द्वारा जनता तक बराबर पहुँचते रहते हैं।

हमारे देश की मेहनतकश जनता शारीरिक व्यायाम को सबसे अधिक चाहती है, क्योंकि इसके लिए विशेष साधनों की ज़रूरत नहीं और कोई भी स्थान उपयुक्त हो सकता है। दूसरा नम्बर फुटबाल का है, फिर बाउलिंग और हलकी कसरतों का नम्बर आता है।

साल में एक या दो बार हर संगठन की ओर से खेल-समारोह का आयोजन होता है। इसमें सभी कर्मचारी भाग ले सकते हैं, चाहे वे खेल-क्लब के मेम्बर हों या न हों।

येना में विश्वविख्यात ज़ीस कारखाना है। उसके खेल-समारोह में लगभग २८०० मज़दूरों ने भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाना और सोमालिया के खिलाड़ियों ने भी भाग लिया।

लिया। कारखाने की २६ फुटबाल टीमों ने चैम्पियनशिप जीतने की कोशिश की। इसमें मज़दूरों की बीवियों और बच्चों ने भी भाग लिये। समारोह का आयोजन कारखाने के विभिन्न विभागों और ट्रेड यूनियनों ने किया था।

विटरफ़ील्ड का इइलेक्ट्रो-केमिकल कारखाना सोशलिस्ट-ब्रिगेड का जन्म स्थान है। यही ब्रिगेड यहाँ के सामूहिक खेलों का भी जन्मदाता है। "हर आदमी हर कहीं हफ्ते में एक बार ज़रूर खेले", इस नारे को विटरफील्ड के सारे ब्रिगेडों ने अमली जामा पहनाया।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में सामूहिक खेलों की चलन कितनी आम है—इस तथ्य पर ये थोड़े से उदाहरण अच्छी रोशनी डालते हैं। ऐसा अनुमान है कि इस वर्ष लगभग २ करोड़ ५० लाख व्यक्ति नियमित खेलों में हिस्सा लेंगे और शारीरिक बनावट ठीक रखने के लिए १० लाख व्यक्ति हर रोज़ कसरत करेंगे। छुट्टियों में ट्रेड यूनियनों के अवकाशगृहों में खेल की बहुत सारी सुविधाएं सुलभ होंगी।

हमारे देश में मेहनतकश जनता को खेलों में आगे बढ़ने की अनेक संभावनाएँ हैं। अगर कोई मज़दूर अपने कारखाने के खेलों में आगे बढ़ गया तो उसके लिए लइपज़िग स्थित जर्मन व्यायाम अकादमी या विभिन्न स्पोर्ट-क्लबों के द्वार खुल जाते हैं। आज हमारे जितने भी बड़े बड़े खिलाड़ी हैं उनमें से कई पहले कारखानों या खेतों में काम करते थे। आज या तो वे खेल-अकादमी में पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं। इसके अलावा हमारी व्यायाम अकादमी में ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक है जो मज़दूर या किसान परिवारों से आये हैं। हमारे मशहूर खिलाड़ी सभी मज़दूरवर्ग के हैं।

मिसाल के लिए हेलमुट रेकनेगेल को ही लें। ओलम्पिक की ऊँची कूद का यह साहसी विजेता एक टूल फैक्ट्री में काम करता है। आजकल उसे बालवियरिंग कारखाने में ऊँची टेकनिकल ट्रेनिंग दी जा रही है। १५०० मीटर के इनडोर दौड़ का विश्वरिकार्ड क़ायम करने वाला सीज फ्रीड हरमन भी एक मज़दूर ही है। १०० मीटर की फ्री स्टाइल तैराकी में जर्मन रिकार्ड बनाने वाला क्रिस्टेल स्टेफ़िन एक बिजली के कारखाने में काम करता है। हमारे तीन मशहूर मुक्केबाज़ भी मज़दूर ही हैं।

(पृष्ठ १८ का शेष)

रोज़ेन्ड्राफ़ स्थित इस शोधसंस्थान का सबसे महत्वपूर्ण कार्य अणु शक्ति केन्द्र (एटमिक पावर स्टेशन) का संचालन है। यह स्टेशन बर्लिन के उत्तर में बन रहा है। इस अणु शक्ति केन्द्र के बन जाने पर हमारी बिजली-सप्लाई की बहुत बड़ी समस्या हल होगी। यह विद्युत शक्ति का एक नया स्रोत सिद्ध होगा।

(पृष्ठ १० का शेष)

जनहित के इन प्रश्नों पर पार्टीबाज़ी की नौबत ही न आये। संसद की विस्तृत बैठकों के पहले ही सवाल पर जब सही मानों में व्यापक जनवादी तरीक़े से लोग अपने मत व्यक्त कर चुके हैं तो पार्टीबाज़ी हो भी क्यों?

सदस्यों को वापस बुलाने का अधिकार

संसद की सदस्यता हमारे देश में कोई पेशा नहीं है। संसद का कोई भी सदस्य जनता का वोट हासिल कर लेने के बाद अपने पद का अनुचित लाभ नहीं उठा सकता। हमारे सदस्य अपने-अपने चुनाव क्षेत्रों में बराबर काम करते हैं। उसमें जो ख़र्च बैठता है, केवल उसी को पूरा करने के लिए उन्हें थोड़ा सा पैसा मिल जाता है। संसद के सारे सदस्य—चाहे वे महिलाएँ हों, पुरुष हों, बूढ़े या जवान हों, सभी अपनी-अपनी नौकरियों पर बने रहते हैं।

इसका सबसे अच्छा नतीजा यह होता है कि हर सदस्य अपने मतदाता से जीवित सम्पर्क बनाये रखता है। उसका यह बुनियादी कर्त्तव्य होता है कि वह अपने मतदाताओं को हर कानून से, उसके सारतत्व से, और उसके प्रभाव से परिचित कराता रहे।

हर सदस्य को जनता की आलोचनाएँ सुनने के लिए तैयार रहना पड़ता है, सही आलोचनाओं को स्वीकार करना पड़ता है।

सदस्य की ज़िम्मेदारी यहीं समाप्त नहीं होती। उसे अपने कामों की रिपोर्ट संसद के मंत्रालय या राष्ट्रीय मोर्चे को देनी पड़ती है। यदि उसकी रिपोर्ट से यह आभास हुआ कि अपने मतदाताओं से उसका सम्पर्क नाकाफ़ी है तो उसकी मदद की जाती है ताकि मतदाताओं के बीच उसके काम में सुधार और प्रगति हो। अगर कोई सदस्य ऐसा भी निकला जो अपने चुनाव-क्षेत्र के कामों से लगातार दूर भागता रहता है तो संसदीय चुनाव नियंत्रण कमेटी उसकी सदस्यता रद्द कर देगी। हमारे गणतंत्र की स्थापना के प्रारम्भिक दिनों में ऐसी कई घटनाएँ हो चुकी हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मतदाता को पूरा अधिकार है कि वह जिन्हें चुन कर भेजता है उनके कामों पर नज़र रखे और ज़रूरत पड़ने पर वापस भी बुला ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

फ़ौजी अफ़सरों ने शरण ली

पश्चिमी जर्मनी के दो फ़ौजी अफ़सरों ने गत जुलाई में जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर शरण ली। यहाँ आने के बाद उन दोनों अफ़सरों ने पश्चिमी जर्मनी की सैनिक योजनाओं को पर्दाफ़ाश करते हुये कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और मध्य योरप के अन्य देशों पर अचानक हमले की फ़ौजी साज़िश ही आजकल पश्चिमी जर्मनी का मुख्य सैनिक लक्ष्य है।

उन भागे हुये अफ़सरों में एक का नाम मेजर ब्रूनो विञ्ज़ा है जो पश्चिमी जर्मनी के दक्षिणी कमान का जनसम्पर्क अधिकारी था। दूसरे का नाम केप्टन अदुम वान लिंगवम है जो लेफ़्टिनेन्ट जनरल जासेफ़ कैम्हुबर का सहायक था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर शरण लेने के कारणों पर प्रकाश डालते हुये दोनों अफ़सरों ने बताया कि पश्चिमी जर्मनी में एक नये युद्ध की तैयारी हो रही है और हम उस युद्ध की तैयारी में हाथ बटाने के लिए राज़ी नहीं।

अफ्रीका के साथ मैत्री

जर्मन जनवादी गणतंत्र और अफ्रीका के बीच मैत्री को और मज़बूत करने के लिए यहाँ एक संगठन की स्थापना की गयी है। इस संगठन में हमारे देश की अनेक महान विभूतियाँ शामिल हैं।

इसी संबंध में बर्लिन रेडियो के युवक-विभाग ने १७ अगस्त को एक संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन से जो धन प्राप्त होगा उसकी मद से और दूसरे चन्दों से गिनी में एक स्कूल तथा घाना में एक मैत्री केन्द्र की स्थापना की जायगी।

नवजात अफ्रीकी राष्ट्रों को मान्यता

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल ने अपर वोल्टा, नाइजर, दहोमे और छड के प्रधान मंत्रियों के पास गत अगस्त में तार भेजकर उनकी नवजात स्वतंत्रता का स्वागत किया और उनकी राष्ट्रीय सफलताओं पर बधाई दी। तार में यह भी कहा गया कि इन सारे देशों को प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र के रूप में स्वीकार करते हुए जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार उन्हें मान्यता देती है।

साइप्रस को भी मान्यता

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने साइप्रस को भी एक प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र के रूप में स्वीकार करते हुए उसे मान्यता देने का निर्णय किया है। इस संबंध में हमारी सरकार ने साइप्रस गणतंत्र के राष्ट्रपति ने आर्चबिशप मेकारिओ को बधाई का सन्देश भेजा।

संयुक्त अरब गणतंत्र की सहायता

संयुक्त अरब गणतंत्र में जर्मन जनवादी गणतंत्र एक बिजली घर बना रहा था। वह अब बन कर तैयार हो गया है और जुलाई के अन्तिम सप्ताह में उसका उद्घाटन भी हो गया। नील नदी की घाटी में स्थापित यह बिजली घर संयुक्त अरब गणतंत्र का पहला बिजली घर है।

इसी प्रकार ज. ज. गणतंत्र के टेलिविज़न कारपोरेशन की सहायता से संयुक्त अरब गणतंत्र में एक टेलिविज़न केन्द्र भी अभी हाल में बन कर तैयार हुआ है। उसके संचालन की ट्रेनिंग भी ज. ज. गणतंत्र के ही विशेषज्ञ दे रहे हैं।

बर्मा के वयोवृद्ध लेखक का सम्मान

बर्मा के ८५ वर्षीय लेखक श्री थाकिन कोदेव मेंग को बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय की ओर से डाक्टर की अनौपचारिक उपाधि दी गयी। श्री मेंग एक महान् लेखक के अतिरिक्त अपने देश के स्वतंत्रता संग्राम के एक महान् योद्धा भी हैं।

दिल्ली में बाल-चित्र प्रतियोगिता

शंकर की अन्तर्राष्ट्रीय बाल चित्र प्रतियोगिता (१९५९), में जर्मन जनवादी गणतंत्र के लगभग २० बच्चों ने भाग लिया। बाद को अगस्त, १९६० में उन चित्रों की दिल्ली में प्रदर्शनी भी हुई। दर्शकों और समीक्षकों ने उन चित्रों की काफ़ी सराहना की। ज. ज. गणतंत्र को प्रतियोगिता में सात पुरस्कार भी मिले।

ब्रेख्त-मंच को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

पेरिस में आयोजित १९६० के अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच प्रतियोगिता

हिटलरी हमले की योजना। ज० ज० गणतंत्र को सैनिक घेरे में लाने की योजना पर भेजा ब्रुनो अपने प्रेस सम्मेलन में प्रकाश डाल रहे हैं।

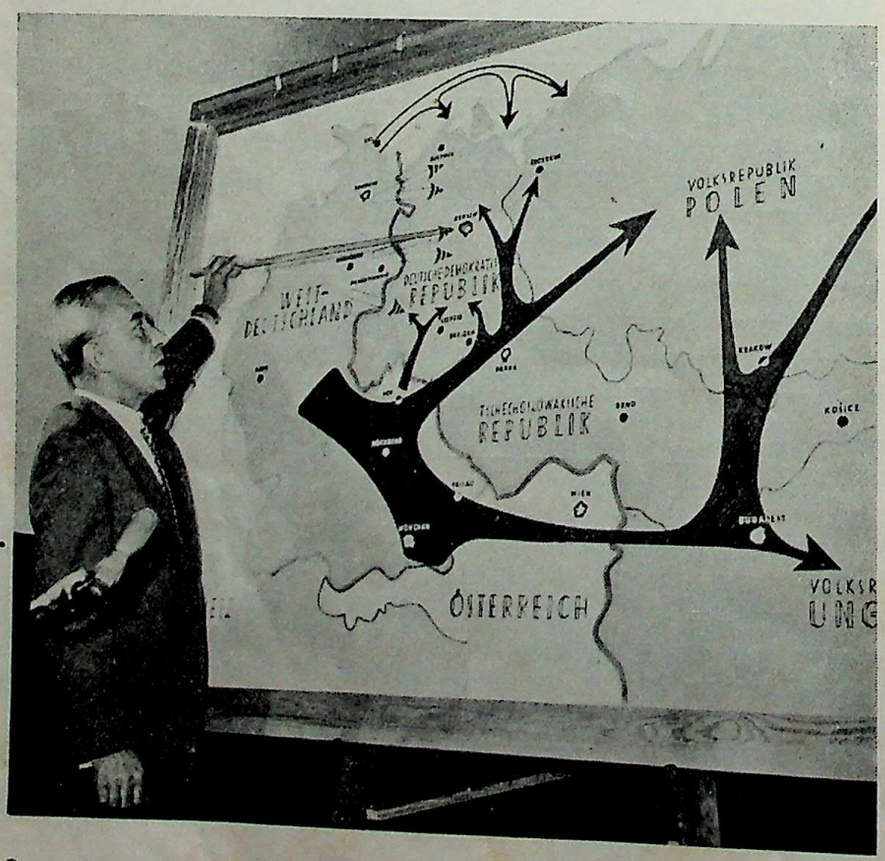

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बर्लिनर इन्सेम्बले' को प्रथम पुरस्कार मिला। 'बर्लिनर इन्सेम्बले' की स्थापना ब्रेख्त ने की थी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस सर्वोत्तम रंगमंच ने पेरिस में ब्रेख्त लिखित कई महान् नाटक प्रस्तुत किये।

पिछले साल की पेरिस प्रतियोगिता में भी हमारे देश को ही प्रथम पुरस्कार मिला था।

अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल संघ

अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल संघ ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के राष्ट्रीय भूगोल संघ को अपने पूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया है।

हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल संघ की दसवीं आम सभा स्टाकहोम में हुई जिसमें जर्मन विज्ञान अकादमी का भी एक प्रतिनिधिमंडल भाग लेने गया था। इस प्रतिनिधि मंडल के नेता अकादमी के सदस्य प्रो. डा. लेमन थे।

विश्व सायकिल चैम्पियनशिप

अन्तर्राष्ट्रीय सायकिल-चालक संघ (ज.ज. गणतंत्र) के तत्वावधान में गत अगस्त एक विश्व सायकिल चैम्पियनशिप का आयोजन हुआ जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो सायकिल-चालकों को विश्व चैम्पियनशिप मिली। रोड सायकिलिंग में बर्न्हार्ड इक्स्टीन ने और लम्बी सायकिल दौड़ में गेआर्ग स्टोल्जे ने नया विश्व रेकार्ड क़ायम किया।

(पृष्ठ १७ का शेष)

रहने लगते हैं। इरिका अकेली हो जाती है और प० जर्मनी की ज़िन्दगी उसके ऊपर पहाड़ बन कर टूट पड़ती है। वह रोल्फ़ को एक ख़त लिखती है--अपना आख़िरी ख़त! ख़ुदकशी का ख़त!!

लेकिन ज़िन्दगी की जड़ें मज़बूत होती हैं। अब तक रोल्फ़ और उसके बाप के बीच भी कोई तनाव बाक़ी न रह गया था। वह अस्पताल जाता है और इरिका से मिलता है और एक लम्बी सांस खींचकर कहता है, "ख़ैर, हमारी ज़िन्दगी तो अब शुरू हो रही है।" रोल्फ़ की लम्बी उँसास में एक सुनहरे भविष्य की ख़ुशबू होती है--दो दिलों के मिलने का विश्वास!

शुभेच्छाएँ

मुझे आपकी सूचना-पत्रिका नियमित ढंग से मिलती है। ....मेरे विचार से यह प्रकाशन जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की तस्वीर पेश करने की ओर एक सफल प्रयास है। आपकी नयी समाजव्यवस्था को अच्छी तरह समझने के लिए ज़रूरी है कि आपके देश के कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों में जो कुछ हो रहा है उसकी जानकारी हासिल की जाय। मैं आशा करती हूँ कि ऐसी जानकारी से जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत की मैत्री और सद्भावना में मज़बूती आयेगी। आपके इस प्रकाशन की सफलता के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ भेजती हूँ।

अरुणा आसफ़ अली
दिल्ली

जर्मन डिमोक्रेटिक रिपब्लिक की ओर से हिन्दी भाषा में प्रकाशित 'सूचना-पत्रिका' का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। उक्त पत्रिका के प्रकाशन से भारतीय जनता आपके देश की जनता के संबंध में निरन्तर जानकारी प्राप्त कर सकेगी। पत्रिका का पहला अंक बहुत पसन्द आया। मेरी बधाई और शुभकामनाएँ कृपया स्वीकार करें।

अमृत लाल नागर
लखनऊ

मैंने आपकी 'सूचना-पत्रिका' के दो अंक देखे। पत्रिका बड़ी ही सुरुचि सम्पन्न लगी और विषयवस्तु ऐसा कि हर तरह के पाठक उसमें दिलचस्पी ले सकें। इतने कम पृष्ठों में इतनी ढेर सी अच्छी सामग्री सजा कर पेश कर देना आश्चर्यजनक प्रयास है। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

अमृत राय
इलाहाबाद

धन्यवाद लें, मिली 'पत्रिका', जर्मन जनवादी गणतंत्र"--
करता रहे राष्ट्र की उन्नति, साधन रत रह सदा स्वतंत्र ।।
आज भाग्यशाली भारत है, उसे मिल रहे मित्र अनेक।
जिनमें मुख्य और गौरवमय, जर्मन जनता भी है एक ।।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा मंत्री, राष्ट्रभाषा समिति बर्धा

'सूचना-पत्रिका' के लिए बधाई। पत्रिका पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस सदुद्योग द्वारा दोनों देशों के मध्य सद्भावना-वर्द्धन और ज्ञान-अर्जन में बड़ी सहायता मिलेगी। सम्पादन बड़ी सुन्दरता और सुयोग्यता से हुआ है। इस सत्प्रयत्न के लिए हिन्दी जगत आपका आभारी रहेगा, क्योंकि आपने सूचना-प्रकाशन के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी को माध्यम अपनाया है। इस अनुग्रह के लिए मैं पुनः पुनः आपको धन्यवाद देता हूँ।

मिली 'सूचना-पत्रिका' धन्यवाद बहुबार, स्नेह और सद्भावना का सुन्दर आधार।
मिलें इसी विधि प्रेम से दोनों राष्ट्र महान्, एक दूसरे को सखा-मित्र-हितैषी जान ।।

हरिशंकर शर्मा, डी. लिट.
शंकर सदन, आगरा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'सूचना-पत्रिका' के दो अंक प्राप्त हुए। धन्यवाद। मनुष्य के दृष्टिकोण को संकीर्णता की सीमाओं से निकालकर उसे विशाल बनाने में ऐसी पत्रिकाएँ अत्यन्त सहायक सिद्ध होंगी। आपकी पत्रिका इस दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है। भारत से आपकी सरकार के जो अच्छे संबंध हैं उनपर भी इस पत्रिका द्वारा अच्छा प्रकाश पड़ता है।

पत्रिका की भाषा ने मुझपर एक विशेष प्रभाव डाला है। भाषा में लचक, प्रवाह, मिठास और मनोहरता है। 'मुहब्बत की उलझन'--एक रंगीन चित्र--इसका अच्छा उदाहरण है। मुझे विश्वास है कि आपकी पत्रिका भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के बीच में मैत्री भाव उत्पन्न करने में सतत् प्रयत्नशील रहेगी।

गुलाम रसूल
अध्यक्ष हिन्दी-उर्दू विभाग, अन्नमलाई विश्वविद्यालय, अन्नमलाई नगर (केरल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ५
१० अक्तूबर
१९६०

जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्यारह वर्ष
१९४९-१९६०
विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४४२६१, ४४२६२ केबल्स: हावदिन, नई दिल्ली

●

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन : ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ५, अंक १० २० अक्तूबर, १९६०

विशेषांक : जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्यारह वर्ष

यह अंक

	पृष्ठ
जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्यारह वर्ष	
एक अरब जनता हमारे साथ है	३
विदेश व्यापार प्रगति के पथ पर	४
हमारे व्यापारिक संबंधों की नींव गहरी है	६
लइपज़िग कृषि प्रदर्शनी	७
जर्मन जनवादी गणतंत्र के पत्रकारों की भारत-यात्रा	९
स्वर्णिम भविष्य की शोभा-यात्रा	१०
डेफ़ा फ़िल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार	१३
हमारे सायकिलबाज़	१२
आपकी जिज्ञासा	१७
भारत में ज. ज. ग. से रसायन-सामग्री का निर्यात	१८
जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें	१९
शुभेच्छाएँ	२१

मुख पृष्ठ

वाल्टर उल्ब्रिख्त (दायें) गत १२ सितम्बर को जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। दो महान विभूतियों का यह हंसता हुआ मिलन-चित्र दिवंगत राष्ट्रपति विल्हेल्म पीक के जीवन की अन्तिम स्मृतियों में से एक है।

अंतिम पृष्ठ

जर्मन जनवादी गणतंत्र के दिवंगत राष्ट्रपति विल्हेल्म पीक और प्रधान मन्त्री ओटो ग्रोटेवाल केवल हाथ नहीं मिला रहे, बल्कि वे जर्मन श्रमिकों की दो महान पार्टियों के मिलन का शिलान्यास कर रहे हैं। ये हाथ १९४६ की उस ऐतिहासिक घड़ी की याद दिलाते हैं जब सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी का जन्म हुआ।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्यारह वर्ष

जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अपने इस जीवन काल में उसने विश्व-शान्ति और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को सुदृढ़ आधार देने के लिए जो योगदान दिया, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने की दिशा में उसने जो भूमिका अदा की और शान्तिपूर्ण निर्माण में उसे जो सफलताएं मिलीं, इन सबके कारण आज वह एक ऊँची अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का भागीदार बन चुका है।

गत वर्ष अक्तूबर में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपने दूसरे दशक में प्रवेश किया। उसकी शान्तिप्रियता के साथ उसकी बढ़ती हुई राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक शक्ति ही है जिसने जर्मन सैनिकवाद का मार्ग अवरुद्ध कर रखा है और उसे 'पूर्व के विरुद्ध अभियान' से रोके हुए है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का ग्यारहवां वर्ष उसकी सात वर्षीय योजना का दूसरा वर्ष भी है। यह एक निर्णायक वर्ष है। इसमें वे आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ पूरी होने जा रही हैं जिनके आधार पर हम, पश्चिमी जर्मनी से, खाद्यान्न के मामले में, आगे बढ़ जाएंगे। सन् १९५८ में सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की पांचवीं कांग्रेस हुई थी। उसी वक्त ये फ़ैसले लिए गये थे। जर्मन जनवादी गणतंत्र इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने में पूंजीवाद और समाजवाद के बीच एक विश्वव्यापी शान्तिपूर्ण होड़ की प्रक्रिया देखता है और यही शान्तिपूर्ण होड़ अन्तर्राष्ट्रीय विकास का मार्ग निश्चित करेगी।

सन् १९६० के पहले छः महीनों में हमारे उपभोक्ताओं में १५० करोड़ मार्क का अतिरिक्त माल सप्लाई किया गया जिसमें ८८ करोड़ ५० लाख का अतिरिक्त औद्योगिक माल भी शामिल था। इसी छः महीने के अन्दर, पिछले वर्ष के पूर्वार्द्ध की तुलना में, औद्योगिक उत्पादन १० प्रतिशत बढ़ा और हर मज़दूर की उत्पादन-क्षमता में ९ प्रतिशत की वृद्धि हुई। बेबी-कारें ढाई गुनी तादाद में ज़्यादा बन कर तैयार हुईं और नये मकानों के निर्माण में १९ प्रतिशत की अतिरिक्त वृद्धि हुई।

कृषि क्षेत्र में भी महान् परिवर्तन हुए। इसी वर्ष वसन्त में कृषि सहकारी समितियों में किसानों के शामिल होने का आन्दोलन उत्तर से शुरू हुआ। यह शुरुआत रोस्टक जिले के कुछ गांवों से हुई और देखते-देखते सारे गणतंत्र में यह एक आन्दोलन के रूप में फैल गयी। सारे देश के किसानों ने समाजवादी खेती का लाभ समझ लिया और वे सहकारी समितियों में शामिल हो गये। आज सरकारी फ़ार्मों के अलावा हमारे देश में ९००० सहकारी समितियां हैं जो सारी भूमि पर खेती करती हैं। जनता की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए अनेक गांवों के सहकारी किसानों ने यह तय किया कि सरकारी योजना में संशोधन करके खेती की उपज का लक्ष्य बढ़ाया जाय। अब वे खेती के बढ़े हुए लक्ष्य को पूरा करने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहे हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा संस्थाएँ भी विकास की मंज़िलों से अछूती न रहीं। सबको उच्च शिक्षा देना समाजवाद का एक परम लक्ष्य है। उस लक्ष्य की रोशनी में हमारे देश ने एक नया शिक्षा क़ानून बनाया जिसके अनुसार सभी बच्चों की उच्च शिक्षा की गारंटी हो गयी। आने वाले दिनों में सारे देश में अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा लागू कर दी जायगी। शहरों और गांवों के प्रौढ़ों के लिए भी शिक्षा की नयी सम्भावनाएँ खुल गयी हैं। इस वर्ष हमारे देश में खेल-कूद के संसार में भी बड़ी-बड़ी घटनाएं देखने को मिली हैं। इसी वर्ष सायकिल दौड़ के विश्व चैम्पियनशि का समारोह हुआ जिसमें दूसरे देशों के खिलाड़ियों ने भी भाग लिया और हज़ारों दर्शकों ने प्रथम शान्तिपूर्ण जर्मन राज्य की प्रगति से परिचय प्राप्त किया।

आज पश्चिमी जर्मनी में ऐसे लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र को जर्मनी के भविष्य के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। इसीलिए पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों का हमारे देश में तांता लगा रहता है। हर महीने उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है और इस पर किसी को आश्चर्य भी नहीं करना चाहिए। सन् १९६० के पहले छः महीनों में ही २६,१३६ व्यक्तियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर शरण ली। कहने की ज़रूरत नहीं कि उन्हें हमारे देश में नये-नये घर, शान्तिमय ढंग से नौकरियां करने की सुविधाएं और सामाजिक सुरक्षा मिली।

जर्मन जनवादी गणतंत्र अपनी राष्ट्रीय समस्याओं के हल के लिए संघर्ष कर रहा है। उसे अपनी ग्यारहवीं वर्षगांठ के अवसर पर यह विश्वास प्रकट करते हुए खुशी होती है कि उसके इस संघर्ष में समूची समाजवादी दुनिया उसके साथ है और समस्त शान्तिकामी जनता का समर्थन प्राप्त है।

भारत के कृषि मंत्री डा० पंजाब राव देशमुख दिल्ली में ज. ज. ग. के उप-प्रधान मंत्री श्री हेनरिख़ राउ का स्वागत कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अरब जनता हमारे साथ है

पीटर लार्फ़

पश्चिमी जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी पश्चिमी जर्मनी में विरोधी दल का स्वांग रचती है। श्री हरबर्ट वेह्नर उसके एक बहुत ही प्रभावशाली दक्षिणपंथी नेता माने जाते हैं। पिछले दिनों जब उन्होंने डा. एडन्योर की विदेश नीति के समर्थन में ज़मीन-आसमान के कुलाबे भरे, तो खुद उन्हीं के दल—सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी—के आम कार्यकर्ताओं में बेचैनी छा गयी। श्री वेह्नर ने डा. एडन्योर के सामने केवल इसलिये घुटने नहीं टेके कि वे पश्चिमी जर्मनी की घरेलू नीति को सही मानते हैं, बल्कि उन्हें विदेश नीति भी बहुत अच्छी लगती है। उनकी इस विदेश-नीति के पीछे यह निराशा काम कर रही है कि "जर्मन जनवादी गणतंत्र को न तो सोवियत संघ से तोड़ा जा सकता है" और न ही उसे "अन्दर से कमज़ोर किया जा सकता है।"

जर्मन जनवादी गणतंत्र पश्चिमी जर्मनी के शासकों के हाथ की कठ-पुतली नहीं बन सकता। इसकी एक वजह तो यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र को सुदृढ़ आधार मिल चुका है, वह आर्थिक दृष्टि से एक सुदृढ़ राष्ट्र बन चुका है, उसकी जनता नैतिक और राजनैतिक दृष्टि से एकता के सूत्र में बँध चुकी है। और दूसरी वजह यह है कि समाजवादी दुनिया के साथ उसकी मैत्री अजेय है। जैसा कि श्री ख़ुश्चेव ने अपनी हाल की बर्लिन-यात्रा में कहा, जर्मन जनवादी गणतंत्र राष्ट्रों के समाजवादी परिवार का एक आदरणीय सदस्य है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की इस सुदृढ़ स्थिति का रहस्य यह है कि अन्य समाजवादी देशों की तरह ही यहाँ भा मज़दूर वर्ग और मेहनतकश जनता की पार्टी समाज की अगुवाई करती है और यहाँ भी उत्पादन के तरीक़े समाजवादी हैं। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने ग्यारह वर्षों के जीवन में राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक भूमिका अदा की है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ के बीच एक ख़ास तरह की दोस्ती के रिश्ते क़ायम हैं। इसकी वजह सिर्फ़ यह नहीं, कि जर्मन जनवादी गणतंत्र सोवियत संघ को समाजवादी खेमे का एक शक्तिशाली नेता मानता है बल्कि इसकी वजह इन ऐतिहासिक सच्चाइयों में भी छिपी हुई है कि सोवियत संघ ने जर्मनी को नाज़ीवाद से मुक्ति दिलायी, कि सोवियत संघ ने जर्मन भूमि पर एक समाजवादी राज्य के निर्माण का आधार प्रस्तुत किया और अनेक राजनैतिक और आर्थिक तरीक़ों से उस राज्य की मदद की।

रोस्तक बन्दरगाह में सोवियत इंजीनियर अपने जर्मन सहकारियों के साथ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दोनों देशों का आर्थिक सहयोग नितान्त मैत्रीपूर्ण और सफल रहा है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के आयात का एक बहुत बड़ा भाग सोवियत संघ की देन है और इसी तरह उसके निर्यात का भी बहुत बड़ा भाग सोवियत संघ में जाता है। यह तो सर्वविदित ही है कि जहाँ तक इन्जीनियरिंग, रसायन और इसी तरह के दूसरे उद्योगों का प्रश्न है, जर्मन जनवादी गणतंत्र का नाम सारी दुनिया में रोशन है। इसलिये भी इन दोनों देशों के परस्पर सहयोग में अद्भुत प्रेरणा मिलती रही है। इन दोनों देशों के बीच टैकनिकल और आर्थिक क्षेत्रों का सहयोग भी व्यापक है और समय के साथ उसमें दृढ़ता आती जा रही है और वह नयी-नयी दिशाओं में फैलता जा रहा है।

सोवियत संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र के सम्बन्धों के बारे में यहाँ जो कुछ कहा गया है वही अन्य देशों के साथ उसके सम्बन्धों के बारे में भी सच है। भौगोलिक स्थिति के कारण पोलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया के साथ हमारा सहयोग व्यापक पैमाने पर है।

समाजवाद की विजय के संघर्ष में जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता इस लिये भी पूर्णरूप से आश्वस्त है कि सोवियत संघ और समाजवादी खेमे के दूसरे सभी देशों की राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक शक्तियाँ हमारे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। सच तो यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और चेकोस्लोवाकिया समाजवादी खेमे की पश्चिमी सीमा पर एक अजेय दुर्ग की भांति अटल हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की पश्चिमी सीमा पर पश्चिमी जर्मनी एक ऐसा राज्य है, जिसे किसी भी तरह शान्तिप्रिय नहीं कहा जा सकता। वह सदा की ही भांति सैनिक शक्ति में विश्वास करता है और जर्मन जनवादी गणतंत्र को अपनी 'जेब' मे रख लेना चाहता है, लेकिन पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी शक्तियों से यह बात छुपी नहीं है कि वे (समाजवादी देश) जर्मन जनवादी गणतंत्र को अपना भाई समझते हैं और हमारी सीमाओं की ओर यदि किसी ने तिरछी नज़र से देखा तो सारे समाजवादी देश अपनी पूरी शक्ति से ऐसी नीति का विरोध करेंगे। ये सभी समाजवादी देश अपने कर्तव्य की यहीं इतिश्री नहीं समझते, बल्कि वे आगे बढ़कर पाप की जड़ पर ही चोट करते हैं। पाप की वह जड़ है योरप में शान्ति के लिये ख़तरा। इसी सिलसिले में सोवियत संघ का यह प्रस्ताव है कि दोनों जर्मन राज्यों के बीच एक शान्ति-सन्धि हो ताकि पश्चिमी बर्लिन की विषैली समस्या हल हो सके। इस प्रस्ताव को मान लेने से योरप में शान्ति की स्थापना सम्भव हो सकेगी। और हमारे देश को फिर से एक करने की दिशा में एक जनवादी आधार प्राप्त होगा। इसीलिये इस प्रस्ताव की इतनी बड़ी अहमियत है।

मई १९६० : बर्लिन में प्रधान मंत्री क्रुश्चेव का भव्य स्वागत

जर्मनी में शान्ति की स्थापना की समस्या जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्तित्व के साथ जुड़ी हुयी है, क्योंकि यदि एडन्योर की छत्रछाया में जर्मनी की एकता कायम हो गयी होती तो पोलैण्ड और दूसरे देशों के खिलाफ़ अब तक कभी का युद्ध छिड़ गया होता। इसलिये जर्मन जनवादी गणतंत्र को एक बलशाली राष्ट्र बनाने में हर तरह की सहायता देना समाजवादी देशों के लिये और भी आवश्यक हो गया है। और उस सहायता का मुख्य रूप पारस्परिक सम्बन्ध और वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेश व्यापार प्रगति के पथ पर

ए० ज़ीसवर्ग,

विदेश और आन्तरिक व्यापार मंत्रालय

हमारा देश औद्योगिक दृष्टि से बढ़ा हुआ है, लेकिन कच्चे माल के साधनों की कुछ कमी है। खाद्यान्न भी काफ़ी मात्रा में बाहर से मँगाना पड़ता है। इसका कारण यह है कि हमारी जनता के दिनों-दिन बढ़ते रहन-सहन के साथ उसकी माँगें भी बढ़ती जा रही हैं। कपास, काफ़ी, चाय, इत्यादि तो बाहर से ही मँगाना पड़ता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र कच्चे माल और खाद्यान्न के अलावा काफ़ी मात्रा में तैयार माल भी आयात करता है। सन् १९५९ में लगभग ४५,४०० मोटर साइकिलें, ३,६७,००,००० वर्गमीटर सूत ७५,१०० विभिन्न सूती कपड़े, २५,३६५ टन काग़ज और ३३,०७,००,००० सिग्रेटें मँगायी गयीं। इस आयात के बदले हमारे यहाँ से माल भेजा जाता है जो हमारे देश के ही उत्पादन होते हैं। हमारे निर्यात उद्योग में सबसे महत्वपूर्ण स्थान इंजीनियरिंग का है। हमारे इंजीनियरिंग का सामान सारी दुनिया में अपनी धाक बिठा चुके हैं और वे हमारे देश की मेहनतकश जनता के हुनर की गवाही देते हैं। हमारे दूसरे महत्वपूर्ण निर्यात में रसायन लिग्नाइट और पुटाश से बनी चीज़ें हैं। इस सिलसिले में १९५९ के निर्यात सम्बन्धी कुछ मिसालें काफ़ी होंगी: खाद्य उद्योग सम्बन्धी ३३,०५२ मशीनें, १,२२१ रोटरी मशीनें, २,१४९ मिलिंग मशीनें, ११७ इलैक्ट्रोमोटिब्ज़, २,४५,०० कैमरे, ७ अरब ७२ करोड़ यूनिट पैनिसिलिन, १,०२,२९२ टन नाइट्रोजन उर्वरक, ६३,००,००० टन लिग्नाइट द्रव्य, १०,००,००० टन शुद्ध पुटाश आदि।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की तेज़ी से आगे बढ़ती हुई औद्योगिक प्रगति और जनता के बढ़ते हुये रहन-सहन के साथ-साथ हमारा विदेश व्यापार भी दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। सन् १९६० के पहले छः महीनों में पिछले साल के छः महीनों की तुलना में विदेश व्यापार १० प्र० श० आगे बढ़ा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का केवल विदेश व्यापार ही नहीं बढ़ा, बल्कि विभिन्न देशों के साथ उसके अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी नये अध्याय जुड़े हैं। इस समय दुनिया को सौ से भी ज्यादा देशों से हमारा व्यापारिक सम्बन्ध है। समाजवादी देशों से हमारा सम्बन्ध काफ़ी गहरा है।

मोटर कारें स्वेडन-यात्रा की ओर

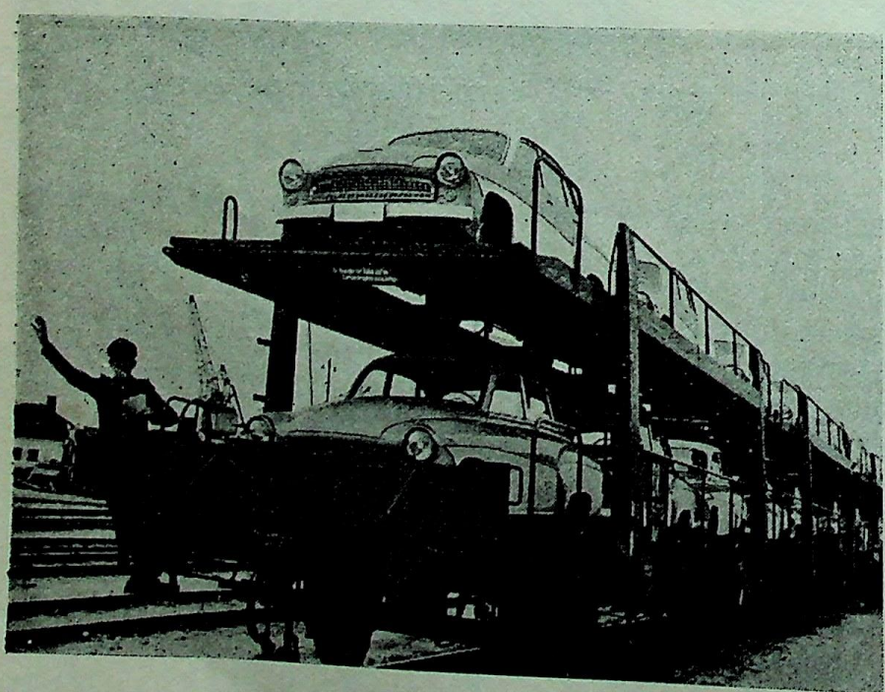

	ज०ज०ग० से समाजवादी देशोंको निर्यात प्र०श०	समाजवादी देशों से ज. ज. ग. को आयात प्र०श०
१९५०	६८.२	७५.९
१९५५	७३.६	७०.६
१९५९	७२.२	७४.९

इस प्रकार हम देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा समाजवादी देशों के साथ जुड़ा हुआ है। साथ ही ग़ैर-समाजवादी देशों से भी हमारे व्यापार में काफ़ी वृद्धि हुई है।

	समाजवादी देश		गैर समाजवादी देश	
१९५०	१००	१००	१००	१००
१९५५	३४०	२३२	२६२	३०४
१९५९	५९२	४१९	३७४	४४२

जिन देशों से हमारा व्यापारिक समझौता सरकारी स्तर पर हुआ है उनके साथ हमारे व्यापार में काफ़ी विस्तार हुआ है। इस विस्तार का एक प्रमाण भारत के साथ हमारे व्यापारिक सम्बन्ध हैं। इन दोनों देशों के बीच सरकारी स्तर पर पहला समझौता १९५४ में हुआ था तब से सन् १९५९ तक के व्यापारिक आदान-प्रदान की झांकी निम्नलिखित है:

(१००० रूबल में)

	कुल व्यापार	ज० ज० ग० से निर्यात	भारत से निर्यात
१९५३	३,०८३	३,०५४	२९
१९५५	१८,१६३	१२,८१६	५,३४७
१९५७	६०,५४४	२९,१९२	३१,३५२
१९५९	९४,२५४	५०,५४९	४३,७०५

सन् १९५५ से १९५९ के बीच जर्मन जनवादी गणतंत्र और अन्य ग़ैर समाजवादी देशों के बीच हुए व्यापार में २६.४ प्र० श० की वृद्धि हुई जबकि उसी अवधि में भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार में ४१८.९ प्र० श० की वृद्धि हुई। इसका सुफल यह रहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में अपना माल भेजने वालों की सूची में भारत १९वें नम्बर पर पहुंच गया, जबकि पहले उसका २८वां नम्बर था। उसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र से आयात करने वाले देशों में उसका स्थान २७वें नम्बर से बढ़कर १६वें नम्बर तक पहुंच गया। इससे यह बिल्कुल साफ़ हो जाता है कि भारत हमारा एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे व्यापारिक सम्बन्धों की नींव गहरी है

गुंटर अपेल

विदेश और आन्तरिक व्यापार मंत्रालय

गत कुछ वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारतीय गणतंत्र के बीच व्यापारिक सम्बन्धों में अनुकूल और पर्याप्त विकास देखने में आया है। दोनों देशों ने एक दूसरे से अधिकाधिक माल खरीदा है और इससे दोनों देशों को लाभ हुआ है।

इस सिलसिले में सबसे आकर्षक बात यह रही है कि दोनों देशों ने अपने व्यापारिक सम्बन्धों में परस्पर लाभ और एक-दूसरे के अधिकारों के सम्मान को सबसे ऊपर रखा है और यह तभी सम्भव हुआ जब दोनों ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त का अडिग भाव से पालन किया। सन् १९५३ में दोनों देशों के बीच केवल ३६ लाख रुपये का ही व्यापार हुआ था, जो आगे बढ़ते बढ़ते २ करोड़ ३० लाख रुपये तक पहुंचा और सन् १९५९ में उस व्यापार की सीमा ११ करोड़ २० लाख रुपये तक पहुंच गयी। और अब यह अनुभव किया जा रहा है कि चालू वर्ष में इन दोनों देशों के व्यापार में और भी वृद्धि होगी।

सन् १९५४ में दोनों देशों के बीच जो व्यापारिक समझौता हुआ था, दर-असल उसी ने यह आधार प्रस्तुत किया कि हमारे व्यापार में बराबर वृद्धि होती रहे।

हमारे व्यापारिक सम्बन्धों के विकास के पीछे दो महत्वपूर्ण कारण क्रियाशील रहे हैं। एक तो यह कि जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत के माल के लिये एक भरोसे का बाज़ार प्रस्तुत करता है, दूसरे यह कि औद्योगिक दृष्टि से एक बहुत ही आगे बढ़ा हुआ देश होने के कारण जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत को मशीनें, उर्वरक, रसायन पदार्थ और उन दूसरी तमाम चीज़ों की सप्लाई कर सकता है जिसकी भारत को बड़ी आवश्यकता है और उसकी पांच साला योजनाओं के लिए जो बहुत ही ज़रूरी हैं।

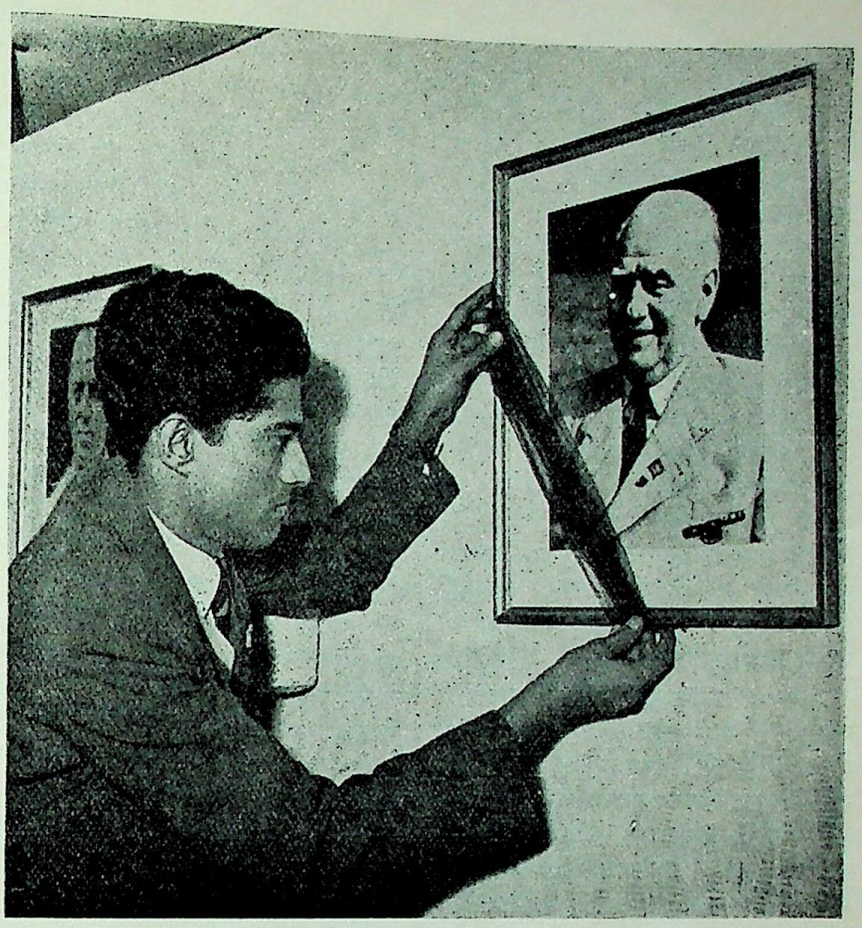

लाइपज़िक शरद मेले की प्रदर्शिनी में दिवंगत राष्ट्रपति विल्हेल्म पीक के प्रति भारतीय व्यापारियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

जर्मन जनवादी गणतंत्र और अन्य पूंजीवादी देशों की विदेश-व्यापार नीति में बड़ा अन्तर है। पूंजीवादी देश दूसरे देशों में केवल अपना माल सप्लाई करना जानते हैं, उन देशों से खरीद के नाम पर वे बहुत मुश्किल से सहमत होते हैं। ऐसी नीति का स्वाभाविक परिणाम दूसरे देशों के आर्थिक विकास के लिए हानिप्रद होता है।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सन् १९५६ में जो व्यापारिक समझौता हुआ था उसके अलावा भारतीय विकास की आवश्यकताओं को देखते हुए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने कुछ और व्यापारिक सुविधाएं रखी, जिनके अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र से भारत में जितना भी निर्यात हुआ, उसके बदले भारत से रुपया न लेकर सामान ही खरीद लिया गया। कहने की ज़रूरत नहीं, कि इस प्रकार की सुविधायें भारत की विकास-समस्याओं को सामने रखकर ही दी गयीं।

शुरू के कुछ सालों में हुये व्यापार से एक बात यह सामने आयी कि विदेश व्यापार के तेज़ी से आगे बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीक़ा सरकारी स्तर पर व्यापारिक समझौता होता है। इस प्रकार के समझौतों में राष्ट्रों के प्रति परस्पर सम्मान झलकता है, राष्ट्रों को अपनी आर्थिक समस्यायें हल करने में सहायता मिलती है और फिर लम्बी अवधि के व्यापारिक समझौते के आधार प्रस्तुत हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए १८ दिसम्बर, १९५९ को दोनों देशों के बीच लम्बी अवधि (१९६०-६२) के लिए एक समझौता हुआ है। इस समझौते में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र से उन्हीं चीज़ों का निर्यात किया जाय जिनकी भारत को विशेष आवश्यकता हो। मिसाल के लिए नाइट्रोजन, पुटेशियम उर्वरक और विश्व-विख्यात 'अगफ़ा ओल्फिन' कारखाने की फ़िल्में और फ़ोटो सामग्री का नाम लिया जा सकता है। हमारे देश के मशीन यन्त्रों, टैक्सटाइल मशीनों और प्रिंटिंग मशीनों का नाम भारत में काफी मशहूर है ही। इनके अलावा कागज़ और रेयन सूत का भी नाम लिया जा सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत से जो चीजें जाने वाली हैं उनमें कच्चा लोहा, मैंगनीज़, अबरक, काजू, कच्ची काफ़ी, चाय, मसाले, जूट और जूट के रेशे और चमड़ा शामिल हैं। भारत सरकार की इच्छानुसार बने-बनाये सामान की भी खरीद बढ़ती जा रही है। भारतीय हथकरघे का सामान लइपज़िग के मेले में काफ़ी लोकप्रिय हो चुका है। इसके अलावा भारतीय जूतों का भी बहुत बड़ी संख्या में निर्यात होगा।

इस प्रकार दोनों देशों के व्यापारिक सम्बन्धों में सन् १९६० एक बहुत ही मंगलमय वर्ष माना जायगा। फिर भी अभी काफी विस्तार की गुंजायश है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का आर्थिक ढांचा हर तरह की मन्दी और गिरावट से मुक्त है। इसीलिये इसके सुनियोजित विकास में भी कोई संदेह नहीं। भारत से जितना भी सामान जाता है, उसकी तुलना में हमारे यहाँ कई गुना मांग ज्यादा है और हमारी सात वर्षीय योजना उस सम्भावना को और भी आगे बढ़ा देती है। इस सिलसिले में दो-एक मिसालें दे देना काफ़ी होगा। हमारी इस योजना का लक्ष्य पूरा हो जाने पर हमारे यहाँ काफ़ी की खपत तिगुनी और फलों की खपत दुगुनी हो जायगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में खेती का जिस तरह से विकास हो रहा है, उससे साग-सब्ज़ी और पशुओं के लिये चारे की खपत में बहुत ही वृद्धि होगी। इससे हर तरह की खली के व्यापार को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। इसी प्रकार उद्योगों और खेती के उत्पादनों में हो रही वृद्धि से पैकिंग के लिये ज़रूरी सामान की मांग बढ़ती जा रही है। फलतः जूट के व्यापार का बहुत बड़ा अवसर मिलता है। सूत, चमड़ा, तेल आदि के व्यापार को भी बढ़ाया जा सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत का निर्यात आगे बढ़े, इसके लिये समुचित वातावरण बनाने में यह भी ज़रूरी है कि भारत की ओर से भी हमें उसी तरह के समान अवसर मिलें। निष्पक्ष भाव से यदि देखा जाय तो जर्मन जनवादी गणतंत्र औद्योगिक विकास में इतना आगे बढ़ चुका है कि वह भारतीय विकास योजनाओं में एक बहुत बड़े सहायक के रूप में काम आ सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत के आर्थिक विकास में हर तरह की सहायता के लिए तैयार है। वह अपनी चीजों के उत्पादन के लायसैन्स दे सकता है, टेकनिकल सूचनाएँ दे सकता है, अपने देश के बने पुर्जों को भारत में इकट्ठा करके मशीनें बनाने की अनुमति दे सकता है। इस तरह का सहयोग दोनों देशों के व्यापारिक सम्बन्धों को निकटतर लाने में सहायक होंगे। इस प्रकार के आर्थिक सहयोग का एक सुफल हमारे सामने आ भी चुका है, वह था तेल पेरने की मशीनें और टाइपराइटर बनाने का समझौता। इस दिशा में दोनों देशों के बीच आगे भी वार्ता जारी है। मिसाल के लिये हमारे देश से वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का एक प्रतिनिधिमंडल भारत आया था। उस प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण भारत में

(शेष पृष्ट ११ पर)

जर्मन जनवादी गणतंत्र का पुटाश उद्योग इन्हीं तरुणों का सृजन है।

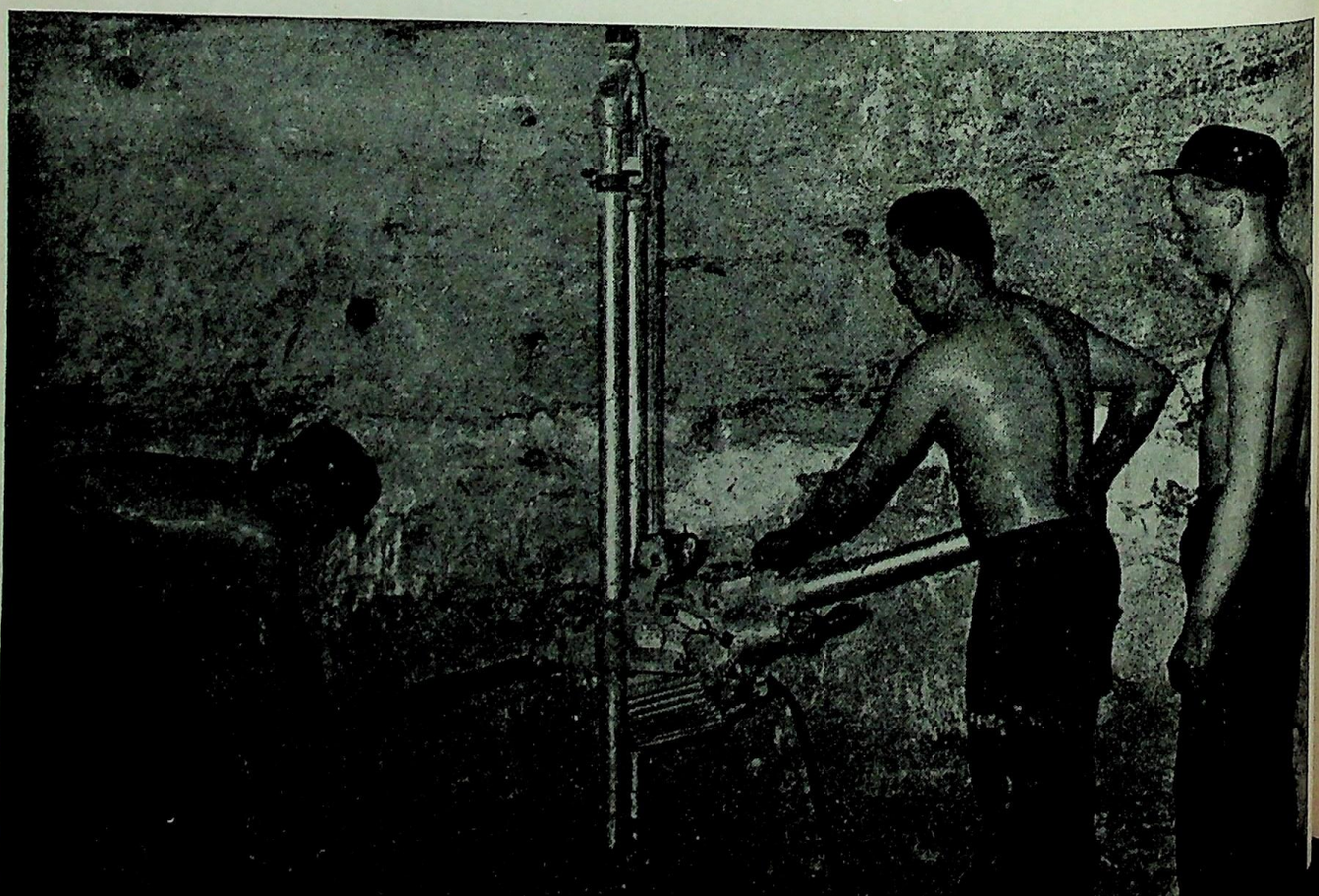

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लइपज़िग कृषि प्रदर्शिनी : किसानों का विश्वविद्यालय

डा० आ० बौमगार्टेन

लइपज़िग-मर्कलीबर्ग में इस वर्ष ८वीं कृषि प्रदर्शिनी का आयोजन हुआ, जिसमें १० लाख से भी ज़्यादा लोगों ने भाग लिया। जर्मन जनवादी गणतंत्र के वे किसान, जो सहकारी खेती करते हैं, इस प्रदर्शिनी को किसानों का विश्वविद्यालय कहकर पुकारते हैं क्योंकि इस प्रदर्शिनी में अनेक तरह के ऐसे अवसर भी आते हैं, जब सहकारी गाँव और खेती की समस्या पर हज़ारों अध्ययन मण्डलों का आयोजन होता है जिनमें किसान, सरकारी कर्मचारी, वैज्ञानिक, शिक्षक और छात्र एक साथ बैठकर खेती की उन समस्याओं का हल ढूंढ़ते हैं।

इस समय हमारे देश में सहकारी खेती को सुदृढ़ आधार देना सबसे बड़ी समस्या है। हमारे गाँव में सहकारी खेती के साथ-साथ बड़े पैमाने पर पशु-पालन को आगे बढ़ाने की समस्या हल की जा रही है।

इस प्रदर्शिनी में खेती से सम्बन्धित ऐसे पहलुओं पर ज्यादा ज़ोर दिया गया जिनमें पशुओं को अच्छी तरह से रखने और गाँव में सामाजिक-सांस्कृतिक और साहित्यिक क्रिया-कलापों के विकास का मार्ग प्रस्तुत करते हैं। यह प्रदर्शिनी एक तरह से सहकारी किसानों के अनुभवों का जीवित स्वरूप रही।

विभिन्न सहकारी समितियों के किसानों ने इसमें भाग लिया और उन्होंने यह अनुभव किया कि इस प्रदर्शिनी ने उनके सामने खेती और पशुपालन की प्रगति का मार्ग उज्जवल कर दिया। अब वे पुरानी ग़लतियाँ न दुहराकर सामूहिक अनुभवों का लाभ उठा सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। इस प्रदर्शिनी में केवल हमारे देश के ही किसानों ने दिलचस्पी दिखायी हो, ऐसा नहीं। विदेश से आये हुए किसानों ने भी बड़ी उत्सुकता से इसमें भाग लिया। पश्चिमी जर्मनी से आये हुए किसान हमारे सहकारी आन्दोलन की सफलताओं से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने देखा कि हमारी खेती बहुत आगे बढ़ गयी है और इस वर्ष फ़सल बड़ी अच्छी है। पश्चिमी जर्मनी के अख़बारों और रेडियो से हमारी सहकारी खेती की दुर्दशा का प्रचार किया जाता रहा है लेकिन जब उनके किसानों

(शेष पृष्ठ २० पर)

खेती की आधुनिकतम मशीनें जन जीवन को पुलकित कर देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नोइस डोइत्वलन्द' जर्मन जनवादी गणतंत्र का मुखपत्र है। हर साल बर्लिन में इसी से संबंधित मेला लगता है। पत्र की लोकप्रियता यह अपार जन-समूह है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के पत्रकारों की भारत-यात्रा

डा० जार्ज क्राउज़

जर्मन पत्रकार-संघ के अध्यक्ष

पिछले वसन्त में जर्मन जनवादी गणतंत्र के चार पत्रकारों का एक प्रतिनिधिमंडल भारत की यात्रा पर आया। उस प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व पत्रकार-संघ के अध्यक्ष और सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के मुख पत्र के उप-सम्पादक डा० जार्ज क्राउज़ कर रहे थे। उनके अलावा लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (जर्मनी) के प्रेस-प्रतिनिधि हर अल्ड्स, क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन के प्रेस-प्रतिनिधि हर री और जर्मन जनवादी रेडियो के हर जान भी थे।

इन पत्रकारों ने छः हफ्ते तक भारत की यात्रा की। छः हफ्ते किसी देश, और उसमें भी भारत जैसे विशाल देश, के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये कम ही समय होता है, इसी लिये बीच-बीच में उस प्रतिनिधि मण्डल को दो हिस्सों में बाट दिया जाता था ताकि अधिक से अधिक जगहों को देखा जा सके और लोगों से मिला जा सके। इस प्रकार हमने अनेक जगहें देखी, निर्माण केन्द्र देखे, और पंजाब से लेकर आसाम और उत्तर प्रदेश से लेकर केरल तक के गांवों का भ्रमण किया। भारत में हमने जो कुछ देखा और सुना, उसके बारे में हमने अपने संस्मरण अपने देश के अखबारों, पत्रिकाओं और रेडियो के माध्यम से अपने देशवासियों के सामने रखा। हमने अपने पत्रकार संघों और सम्पादकों से मिलकर भी भारत के बारे में बताया।

भारत में जगह जगह पर हमें जो प्यार मिला और जिस तरह हमारा हार्दिक स्वागत हुआ वह एक सुखद स्मृति है। पत्रकार की हैसियत से हम लोग अपने भारतीय सहयोगियों के साथ जान-पहचान और मैत्री बढ़ाने के लिये उत्सुक थे और इसमें उनसे हमें जो सहयोग मिला उसके हम आभारी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

अपने भारतीय सहयोगियों से हम जहाँ कहीं भी मिले, हमें एक मित्र जैसा व्यौहार मिला और हर जगह हमने एक परस्पर विश्वास का वातावरण पाया। पत्रकार लोग जितनी भी समस्याओं में दिलचस्पी रखते हैं हमने उन सब पर अपने मित्रों से बातें की। वह समस्यायें थीं : भारत और दोनों जर्मन राज्यों में पत्रकारिता की स्थिति, पत्रकारों की शिक्षा-दीक्षा और जीवन यापन के साधन और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति तथा जर्मनी से सम्बन्धित समस्यायें। अपनी भेंट और बातचीत में हमने देखा कि अनेक प्रश्नों पर भारतीय मित्रों की राय हमसे मिलती-जुलती है। सबसे बढ़कर हम इस बात पर सहमत होते देखे गये कि दुनिया में शान्ति की बहुत आवश्यकता है, देशों के बीच परस्पर सद्भाव ज़रूरी है और विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देशों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व होना चाहिए और भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के परस्पर सम्बन्धों को आदर्श मानकर उसकी रक्षा करनी चाहिए। हम पत्रकारों के बीच इस बात पर भी सहमति रही कि आणविक हथियारों की दौड़ की निन्दा करनी चाहिए, वह दौड़ समाप्त करनी चाहिए और पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवाद के ख़तरे को रोकना चाहिए। हम इस बात पर भी सहमत थे कि रंग-भेद की नीति समाप्त होनी चाहिए। अपनी बातचीत के बीच में यह देख कर सन्तोष हुआ कि भारत के प्रधान मंत्री नेहरू जी की शान्ति और राष्ट्रीय आजादी की भावना को भारतीय पत्रकार सही मानते हैं और उसका समर्थन करते हैं। इलाहाबाद में सहकारिता के आधार पर पहले समाचार पत्र का नेहरू जी ने जिस तरह स्वागत किया उससे हमें यह लगा कि प्रधान मंत्री और भारत के राष्ट्रीय नेता और प्रगतिशील पत्रकार-जगत के बीच बड़े ही सुन्दर सम्बन्ध पाये जाते हैं।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के पत्रकारों के बीच कितनी बड़ी सद्भावना मौजूद है इसकी मिसाल केवल इस बात से नहीं है कि हम लोग अनेक पत्रकार संघों, पत्रकार-क्लबों और सम्पादकीय विभागों द्वारा आमंत्रित किये गये, बल्कि इसका बड़ा प्रमाण यह है कि उसी समय पटना में भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ की हो रही सालाना कान्फ्रेंस में भी हम लोग बुलाये गये। हम लोगों को कलकत्ता विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग ने भी आमंत्रित किया, जहाँ हमसे अपने देश के समाचार-जगत पर रोशनी डालने के लिये कहा गया। अनेक भारतीय पत्रों ने बड़े ही मैत्रीपूर्ण ढंग से हमारी यात्रा और हमारी वार्ताओं के समाचार प्रकाशित किये। अपनी इस यात्रा के दौरान हमारी भेंट-मुलाकात सिर्फ़ पत्रकार साथियों तक ही सीमित न रही। पंजब की राजधानी चन्दीगढ़ में हमने मुख्य मंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरो और उनके सहयोगियों से वार्तायें कीं। सरदार कैरों ने हमारे प्रधान मंत्री ओटो ग्रोटेवाल और कृषि वैज्ञानिकों की भारत यात्रा की बड़े सद्भाव के साथ चर्चा की। उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक विशेषज्ञों से जीवित सम्पर्क क़ायम किया जाय। उन्होंने हमारे प्रधान मंत्री के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजीं।

पत्रकार सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिये जब हम पटना पहुंचे तो वहाँ भी हमें बिहार के मुख्य मंत्री और सरकार के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों से वार्तालाप करने का अवसर मिला। लखनऊ में भी हमारा हार्दिक स्वागत किया गया और नेलूर में भारत-जर्मन मैत्री संघ की ओर से हमारे सम्मान में एक समारोह आयोजित किया गया।

दक्षिण भारत में मद्रास की मोहक सुन्दरता और वहाँ के नागरिकों का प्रेम हमारे लिये एक सुखद्स्मृति है। वहाँ के विभिन्न क्लबों के अलावा विभिन्न पत्रकारों और आकाशवाणी के कलाकारों और मद्रास कोआपरेटिव प्रिंटिंग और पब्लिशिंग सोसायटी से हमारी भेंट हुई। जर्मन समस्या पर बार-बार हमसे सवाल किये जाते रहे और हमने यह देखा कि सभी लोगों की इच्छा यही है कि जर्मन समस्या का हल शान्तिमय पूर्ण ढंग से हो। हमें यही सद्भावना कोचीन, त्रिवेन्द्रम और दूसरी जगहों पर भी देखने को मिली।

भारतीय संस्कृति की महान् परम्पराओं के साक्षी वहाँ की मूर्तियाँ, मन्दिर और गुफायें हमने देखीं। हमने यह भी देखा कि भारतीय जनता अपने गुलामी के अवशेष मिटाकर प्रगति की ओर आगे बढ़ने में अपनी पूरी शक्ति लगा रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारतीय जनता को पिछले दमन और शोषण के चिह्न मिटाने के लिए अभी बहुत कोशिशें करना बाक़ी हैं, लेकिन फिर भी नये जनवादी भारत का भविष्य उज्जवल है। और हमने अपनी यात्रा में हर जगह भारतीय जनता को जर्मन जनवादी गणतंत्र की सद्भावनाओं से सूचित किया और कहा कि हमारी जनता भारत की सहायता के लिये हर तरह से तैयार है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

तथा टैकनिकल सहयोग ही है जिनसे हमें आर्थिक सम्बल मिलेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मेहनतकश जनता अपनी आर्थिक और राजनैतिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ रही है और उसे उन सारे देशों की जनता पर पूर्ण विश्वास है जिनके साथ वह बिरादराना रिश्ते से जुड़ी है। यही वह सारी दुनिया में फैली हुई एक अरब जनता है जिसे अपने साथ देखकर जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने को अजेय अनुभव करता है। यह महान् बिरादरी जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रभुसत्ता की वबसे बड़ी गारण्टी है जिसके रहते तमाम तरह की साज़िशें दफ़ना दी जायँगी और मध्य योरप में शान्ति की स्थापना होकर रहेगी। मध्य योरप में आज जो तनाव और कलह व्याप्त है वह सीमित होकर नहीं रह सकता और यह एक ऐसा विकट सत्य है जिस पर दुनिया के तमाम देशों को गम्भीरता से विचार करना है।

(पृष्ठ ८ का शेष)

खनिज पदार्थों की छानबीन की और अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को भेजी। आशा है कि यह क्रम भविष्य में आगे बढ़ता जायगा।

दोनों देशों के बीच चालू व्यापारिक समझौते के अन्तर्गत इस समय जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में सन् १९६१ में होने वाले क्रय-विक्रय के बारे में बातचीत चल रही है। इस बातचीत के नतीजों के बारे में किसी तरह की भविष्यवाणी की इच्छा के बग़ैर इतना कहा जा सकता है कि पहली बार में ही २० करोड़ रुपये से अधिक के माल का आदान प्रदान होगा। ज़ाहिर है कि इससे दोनों देशों की सरकारों और व्यापारियों को व्यापक और नियमित पैमाने पर आर्थिक सहयोग की सुविधायें प्राप्त होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

स्वर्णिम भविष्य की शोभा यात्रा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा में बाल्टिक सागर के तट सबसे पहले अपनी ओर बुलाने लगते हैं। वहाँ वनैमुन्दे का घाट है, जहाँ हर यात्री अपना पहला पड़ाव डालता है। यहाँ से प्रकृति अपने पूरे सौन्दर्य के साथ दिखायी पड़ती है। यात्री जब आगे बढ़ता है तो उसे रोस्तक का बन्दरगाह मिलता है। यह बाल्टिक तट पर एक बहुत बड़े आधुनिक बन्दरगाह का रूप ले रहा है। कुछ ही दिनों पहले इसका निर्माण शुरू हुआ था और आज यह दुनिया के बड़े-बड़े बन्दरगाहों में गिना जाने लगा है।

विशाल आधुनिक बन्दरगाह

मई सन् १९६० से हर रोज़ इस बन्दरगाह पर बड़े-बड़े जहाज मन्दगति से चलते नज़र आ रहे हैं। हर रोज़ १० हज़ार टन सामान यहाँ उतारा और चढ़ाया जा रहा है। इसी के बग़ल में एक दूसरी खाड़ी भी बनकर तैयार हो रही है जिसकी लम्बाई ३६० मीटर और चौड़ाई ६० मीटर है। इन दोनों जगहों पर इमारती सामानों से लदे बड़े-बड़े बैग़न लाये जा रहे हैं। १ हज़ार टन सामान प्रति जहाज़ प्रति घन्टा। यह इन बन्दरगाहों की क्षमता है। फिर यदि इनकी गणना दुनिया के सबसे बड़े बन्दरगाहों में होने लगे तो आश्चर्य ही क्या है।

यात्री जब यहाँ आता है तो उसकी नज़रों से यह बात ओझल नहीं हो पाती कि इस बन्दरगाह के निर्माण में सबसे आधुनिक कला का पुट दिया गया है। रोस्तक का यह बन्दरगाह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनने जा रहा है और जर्मनी की एकता के बाद भी हम्बर्ग, कील और ब्रेमेहहाफ़ेन के साथ इसकी महत्ता ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी। सन् १९६५ तक इस बन्दरगाह की क्षमता बढ़कर इतनी हो जायगी कि प्रतिवर्ष ७० लाख टन सामान की उतराई कर सकेगा।

अनुपम निर्माण

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के हवाई अड्डे से यात्री जब आगे बढ़ता है तो उसकी अगली मंज़िल स्प्री के जंगलों में पड़ती है। प्राकृतिक दृश्यों का यह एक विचित्र

लिगनाइट खान के इन यंत्रों पर खराब मौसमों का भी कोई असर नही पड़ता

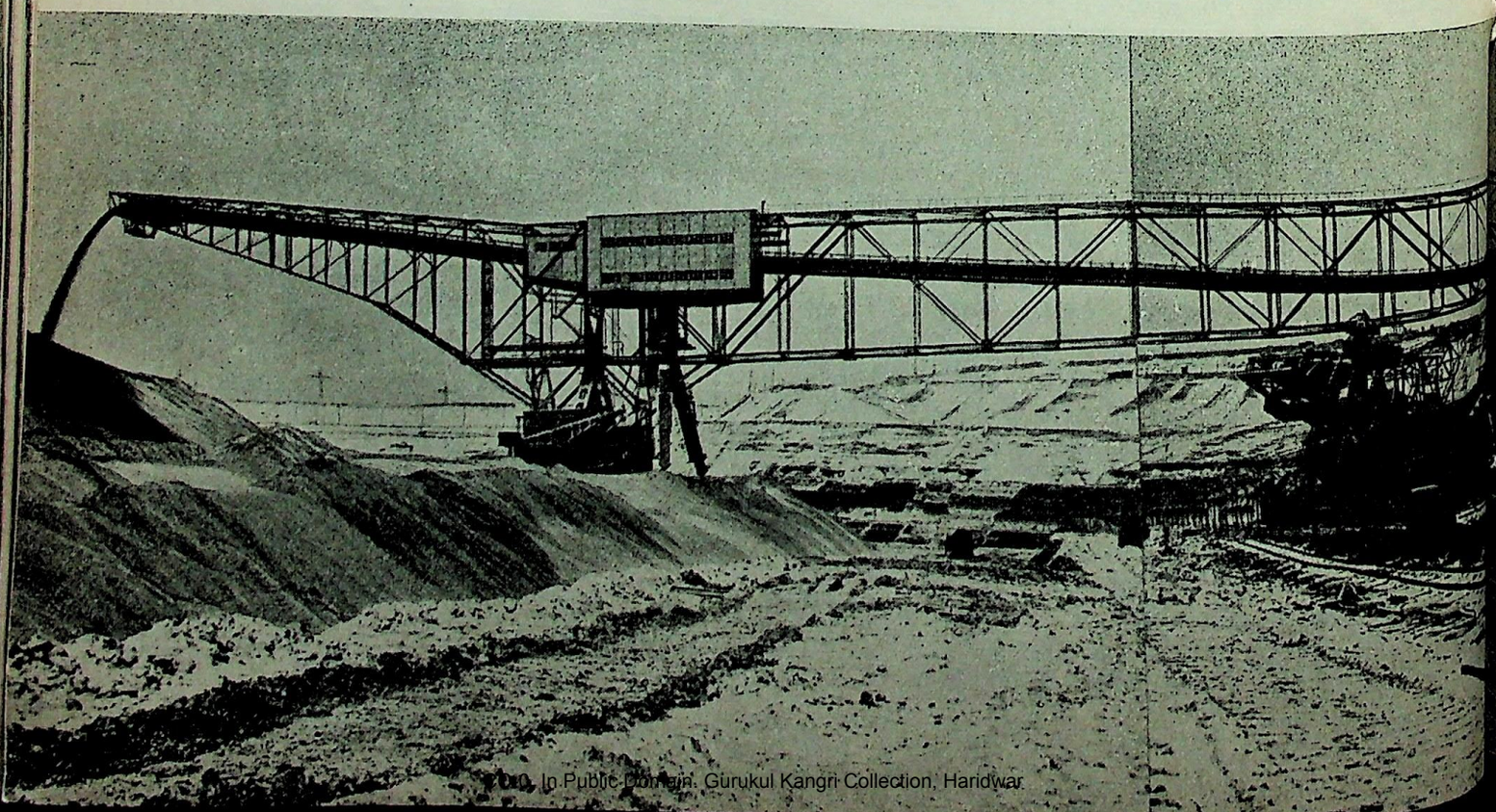

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोस्टक में तेल शोधक कारख़ाना

स्थान है। अनेक जलस्रोतों और गाँवों के बीच से होती हुई एक पहाड़ी सड़क आगे बढ़ती है। यात्री ने सपने में भी नहीं सोचा था कि दुनिया के चारों कोनों से अलग-थलग यह जगह जर्मन जनवादी गणतंत्र में बिजली पैदा करने का सबसे बड़ा केन्द्र बन जायगी। यात्री ने देखा कि स्प्री के जंगल अपनी सुन्दरता और आकर्षण को ज्यों-का-त्यों

समाजवादी नगर योजना की एक झांकी

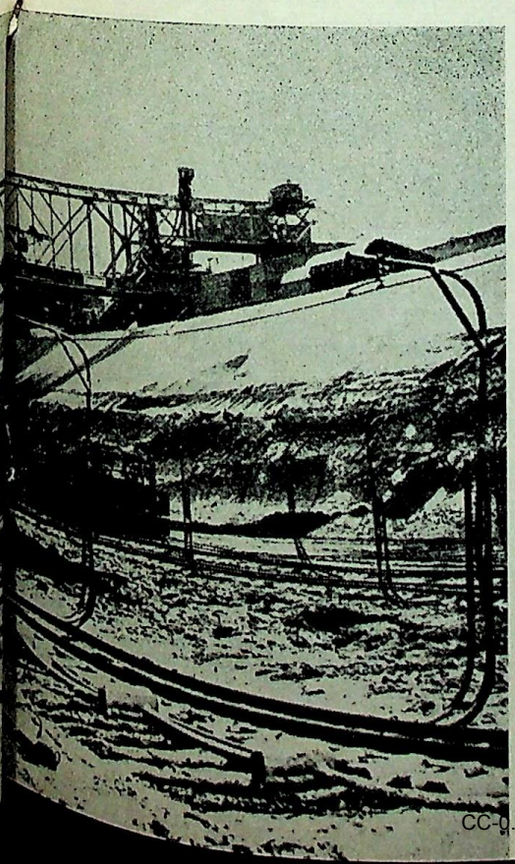

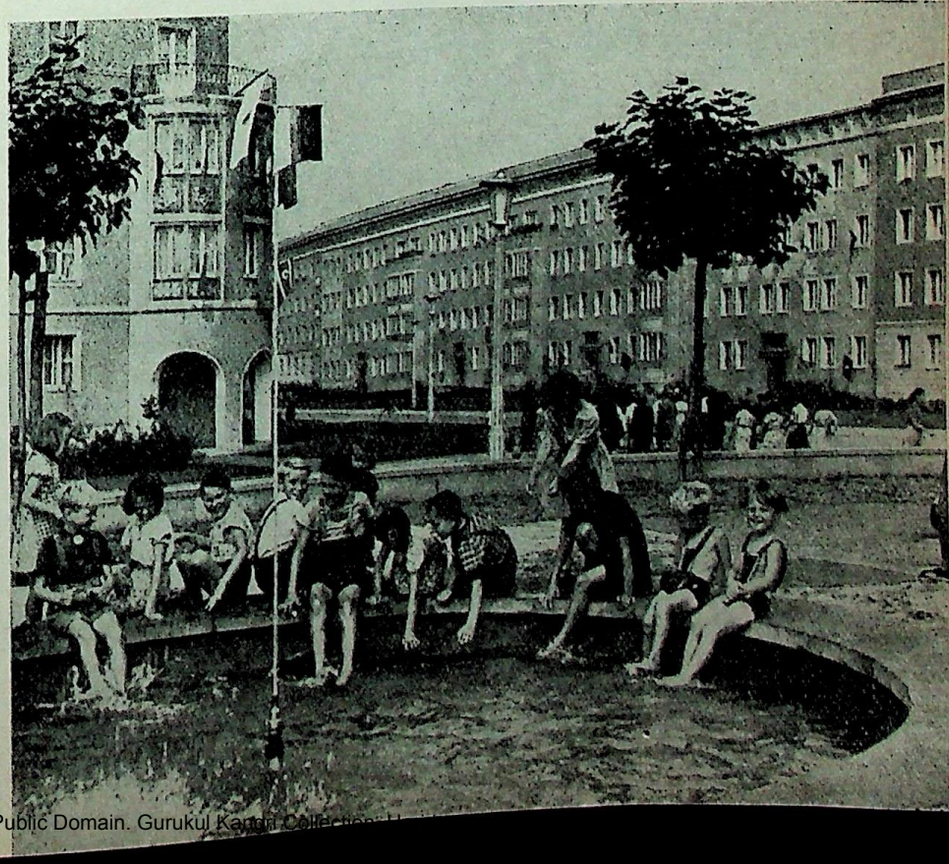

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

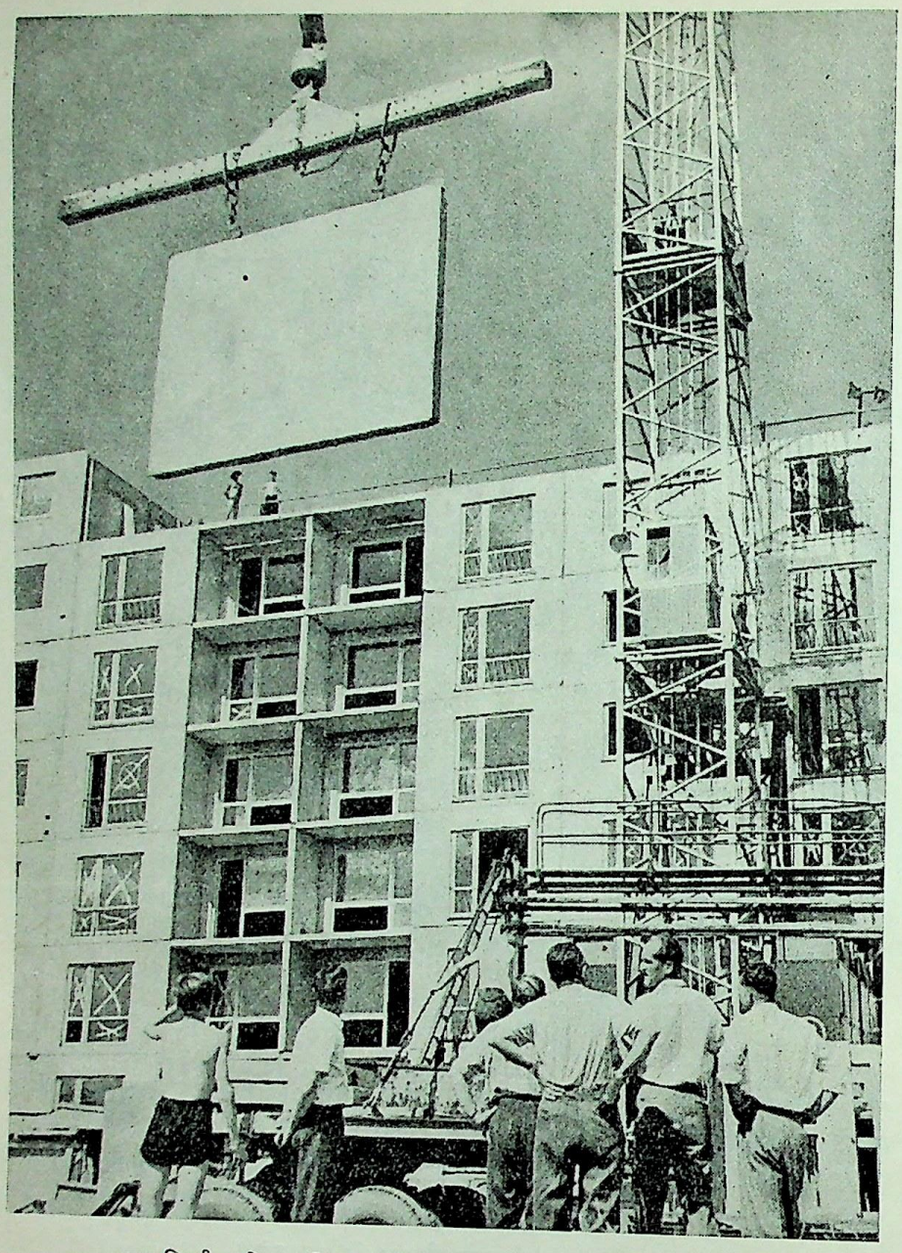

भवन-निर्माण के आधुनिक ढंग में विदेशी मेहमान भी दिलचस्पी लेते हैं

संजोये खड़े हैं, लेकिन उसकी दूसरी छोर पर शहरों के झुण्ड के झुण्ड उगते आ रहे हैं और बड़े-बड़े उद्योगों की सूचनाएँ दे रहे हैं। यहीं ल्युवेनाड का वह अनुपम बिजलीघर है, जिसकी क्षमता १३ सौ मैगावाट (१ मैगावाट बराबर १ हज़ार किलोवाट) है। यह बिजलीघर १९६३ में बनकर तैयार हो जायगा और दुनिया का सबसे बड़ा बिजलीघर कहलाने लगेगा। यहाँ से थोड़ी ही दूर आगे वेस्वाड में दूसरा बिजली घर बन रहा है जिसकी क्षमता १२ सौ मैगावाट होगी। जर्मन जनवादी गणतंत्र के वर्तमान क्षेत्रफल में समूचे बिजलीघरों की जितनी क्षमता सन् १९३६ में थी उन सबके बराबर केवल इन दो बिजलीघरों से शक्ति पैदा होगी।

"ब्लैक पम्प" : अनन्त गैस का स्रोत

ब्लैक पम्प आधुनिक विज्ञान का एक दूसरा चमत्कार है। यहाँ ७ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में सन् १९५६ से ही एक कारखाना बन रहा है। यह कारखाना किसी एक तरह के उत्पादन तक सीमित नहीं। इसका लक्ष्य अनेक दिशाओं को छूता है। अब तक यहाँ दो तरह के लक्ष्यों वाले कारखाने बन चुके हैं। एक है बिजली घर, जिसकी क्षमता २५० मेगावाट है और दूसरे की क्षमता ९ हज़ार टन है। दो और इसी तरह के कारखाने बन रहे हैं जिनमें १६ हज़ार मज़दूर काम कर रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरे केन्द्र का संचालन अणु-सक्रियता द्वारा होगा।

इस पूरे इलाक़े में निर्माण का एक ऐसा संगीत प्रवाहित हो रहा है कि यात्री के मन पर एक अमिट छाप पड़े बग़ैर नहीं रहती। इस महान औद्योगिक केन्द्र में काम करने वाले ४० हज़ार मज़दूरों के लिये आरामदेह मकानों का भी निर्माण जारी है।

यात्रा आगे बढ़ती है और अगला पड़ाव वहाँ होता है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र का पहला समाजवादी शहर है। उसकी दसवीं वर्षगांठ मनायी जा रही है और वहाँ यात्री का आतिथ्य-सत्कार होता है। वह समाजवादी शहर स्तालिनस्टड है जहाँ कुछ दिनों पहले झाड़-झंखाड़ और रेत के अलावा कुछ था ही नहीं।

इस्पात कारखानों की चिमनियों से ऊँची-ऊँची लपटें उठकर आसमान में लाली भर रही हैं। २५ हज़ार नर-नारी जीवन के उल्लास से खेल रहे हैं। स्तालिनस्टड नगर मनोहर दृश्यों, घनी हरियालियों और बड़े-बड़े पार्कों के बीच मुस्करा रहा है। मकानों की व्यवस्था आधुनिकतम भवन-योजना का परिचय दे रही है। ८ हज़ार बच्चे चहकते-खिलखिलाते फूलों की तरह इस शहर की शोभा बढ़ा रहे हैं। उनके खेलने की जगहें, उनके स्कूल, उनके किन्डरगार्टन, उनकी अपनी निधियाँ हैं।

नगर की चौड़ी सड़कों पर यात्री घूमता है। मनोहर सामानों से सजी दुकानों के सामने मन्त्रमुग्ध-सा खड़ा हो जाता है, रंगशालाओं, क्लबों और बड़े-बड़े स्टेडियम देखकर दंग रह जाता है। हर रोज़ यहाँ की ज़िन्दगी नये-नये रंग लेकर आती है और यात्री सोचता है कि नये समाजवादी जर्मनी के प्रतीक स्तालिनस्टड जैसे नगर ही तो हैं। दूसरी बात वह यह सोचता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के मज़दूर और किसान अपना भविष्य स्वयं गढ़ रहे हैं। वे अपनी ख़ुशियों का संसार अपने हाथों बना रहे हैं, फिर इसके अलावा पूरे जर्मनी—शांतिपूर्ण और जनवादी जर्मनी—के भावी जीवन का दूसरा रूप और हो ही क्या सकता है! यही वह रास्ता है जिससे आगे बढ़कर जर्मन जनता सच्चे मानों में अपनी महान राष्ट्रीयता, वैभव और अजेय-शांति के शिखर पर पहुँच सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्लोवी वेरी से केन्स तक :

डेफ़ा फ़िल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

गुस्ताव साल्फनर

१९६१ में डेफ़ा अपनी पन्द्रहवीं वर्षगांठ मनायेगा। आज से पन्द्रह साल पहले डेफ़ा ने एक चित्र प्रस्तुत किया था—"हत्यारे हमारे ही बीच हैं"। इस तस्वीर ने उन दिनों दुनिया में तहलका मचा दिया था। कहानी उल्फ़गैंग की लिखी हुई थी। किसी भी फ़िल्म उद्योग के लिये पन्द्रह साल कोई बहुत बड़ी अवधि नहीं होती। लेकिन डेफ़ा ने जिस पृष्ठभूमि में जर्मनी की स्वस्थ परम्पराओं को फिर से जीवित करने की कोशिश की वह अपने में एक महान् सफलता है। जीवन के तमाम क्षेत्रों की भांति ही नाज़ियों ने फ़िल्म-जगत में भी झूठ और कुत्सा की दूकान सजा रखी थी। डेफ़ा को वह सारा कीचड़ दूर करना पड़ा और आज पूरे सन्तोष के साथ यह कहा जा सकता है कि जर्मनी में एक शांतिमय और जनवादी समाज को आगे बढ़ने में डेफ़ा ने पूरा सम्बल दिया है। डेफ़ा ने अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी कीं। उसने ऐसी तस्वीरें बनायी जिनमें व्यक्त किये गये विचार और उनका कलात्मक अभिनय सारी दुनिया में सराहा गया। अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में डेफ़ा को मिले पुरस्कार इसके साक्षी हैं।

१९५०

प्रोफ़ेसर कर्ट मैत्ज़िक की फ़िल्म "देवताओं की सभा" को कार्लोवीवेरी के मेले में विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। फ़्रिट्ज ब्रुशब ने एक डाक्यूमेन्टरी फ़िल्म बनायी थी "घोड़े"। उनकी एक दूसरी रिपोतार्ज फ़िल्म थी "सदा तैयार हैं"। इन दोनों फ़िल्मों को सर्वोत्तम पुरस्कार मिले थे।

१९५१

कार्लोवीवेरी में इस साल जो मेला हुआ उसमें उल्फ़गैंग की तस्वीर "हिज मैजस्टी की प्रजा" दिखायी गयी। इसके उपलक्ष में उल्फ़गैंग को "सामाजिक प्रगति के लिये संघर्ष" का पुरस्कार मिला। "सोनिनब्रुक परिवार" फ़िल्म में जर्मन अभिनेताओं के बाबा इडुअर्ड को उनके सफलतम अभिनय के लिये पुरस्कृत किया गया। "ठण्डा दिल को" टेकनिकलर फ़िल्मों में सबसे अच्छा माना गया और "अगली मंज़िल" को सबसे अच्छी डाक्यूमेन्टरी के रूप में पुरस्कृत किया गया।

१९५२

मार्टन हैलवर्ग ने "अभागा गाँव" फ़िल्म बनायी जिसे कार्लोवीवेरी में शांति पुरस्कार मिला। "औरतों की किस्मत" के लिये स्लातन दूदौ पुरस्कृत किये गये। "दोस्ती की जीत", यह एक डाक्यूमेन्टरी है जिसेजर्मनी और सोवियत संघ के कलाकारों ने मिलकर बनाया था। इसे भी महान् शान्ति पुरस्कार मिला।

१९५३

"अभागा गाँव" विश्व शान्ति पुरस्कार से पुनः पुरस्कृत किया गया। बुखारेस्ट में विश्व युवक समारोह के अवसर पर "इम्तहान" और "हम अमन के लिये वफ़ादार हैं"—इन दोनों चित्रों को क्रमशः स्वर्ण और रजत पदक मिले।

१९५४

प्रोफ़ेसर कर्ट मेत्ज़िक की फ़िल्म "अर्न्सट थेलमन—अपने वर्ग का सपूत" बनकर तैयार हुई और कार्लोवीवेरी के फ़िल्म

'अनर्स्ट थेलमन्न-अपने वर्ग का सपूत' सैनिकवाद और साम्राजी युद्ध के खिलाफ़ जर्मनी के मज़दूरवर्ग के विद्रोह का प्रतीक है

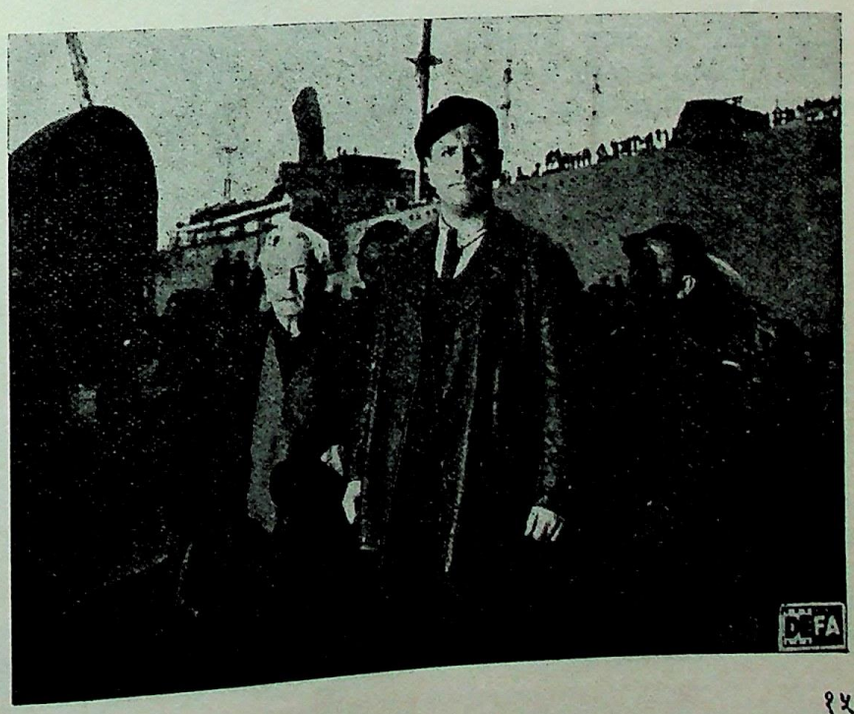

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

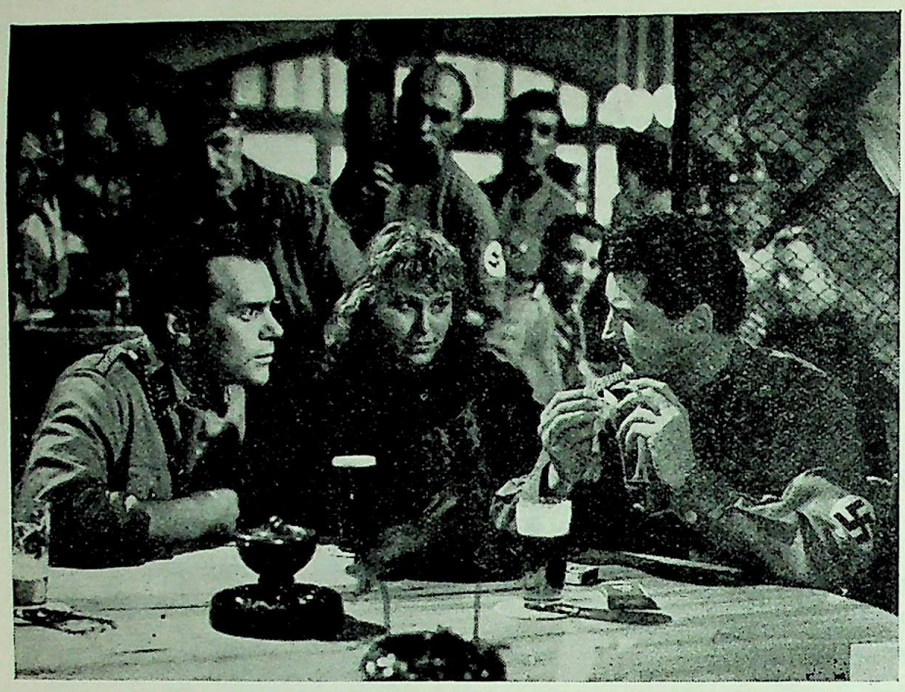

'लिसी का एक दृश्य

समारोह में दिखायी गयी। इसे शान्ति पुरस्कार मिला। चेकोस्लोवाकिया की शान्ति परिषद् ने "ख़तरनाक बेड़ा" को पुरस्कृत किया। "नदियों का गीत" बेहतर दुनिया के संघर्ष के लिये पुरस्कृत किया गया और "हिज़ मैजस्टी की प्रजा" इस वर्ष फिनलैण्ड में एक उपाधि का भागीदार बना।

१९५५

"रात से भी ज्यादा बलशाली" दूदो के इस चित्र में विलहैल्म कूच-हज को उनके सुन्दर अभिनय के लिये पुरस्कृत किया गया।

१९५६

गुन्टर हिमन इस वर्ष कार्लोवीवैरी के मेले में सबसे अच्छे अभिनेता घोषित किये गये। मान्टीविडिओ और एडिनवरा के फ़िल्म समारोह में उल्फगैंग का चित्र "लिटिल मस्क" उपाधि सेविभूषित किया गया। मनहोम में डाक्यूमेन्टरी फ़िल्म सप्ताह मनाया गया। उसमें "मेरा बच्चा" को आलोचकों का पुरस्कार मिला। इस वर्ष हमारी एक फ़िल्म दमिश्क में भी पुरस्कृत हुई है।

१९५७

कार्लोवीवैरी के मेले में हमारी फ़िल्म "लिशी" को तृतीय पुरस्कार मिला। मास्को में विश्व युवक मेले का छठवाँ समारोह हुआ जिसमें हमारी दो फ़िल्में पुरस्कृत हुईं। तीन-चार अन्य समारोहों में भी हमारी फ़िल्मों को सम्मान मिला।

१९५८

इस वर्ष कार्लोवीवैरी में हमारी एक डाक्यूमेन्टरी को प्रथम पुरस्कार मिला। और बेलग्रेड में आयोजित वैज्ञानिक और टेक्निकल फ़िल्म समारोह में हमारी फ़िल्म "सुपरसानिक" को रजत पदक मिला।

१९५९

डेफ़ा की फ़िल्म "सितारे" को निर्णायकों ने एक विशेष पुरस्कार दिया। "वह रात के सहारे उड़ते हैं"--इस फ़िल्म को कार्लोवीवैरी में तृतीय पुरस्कार मिला। वियना में आयोजित विश्व युवक मेले के सातवें समारोह में "सितारे" को स्वर्ण पदक मिला। मास्को फ़िल्म समारोह में मछुओं का "तराना" को सोवियत शान्ति कमेटी ने उपाधि दी। "सितारे" को एडिनवरा में भी प्रशंसा का प्रमाणपत्र मिला।

१९६०

"पंखों वाले लोग" के अभिनय में ईविन को कार्लोवीवैरी के समारोह में पुरस्कृत किया गया और फ्रान्स में "सितारे" को अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री का महान पुरस्कार मिला।

'सितारे' में बल्गारियन अभिनेता लिओ कोनफ्रान्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सायकिलबाज़ विश्व चैम्पियन हैं

गुन्थर टेस्के

योरप में शायद ही कोई साइकिल दौड़ का प्रेमी ऐसा हो जो साशेनरिंग और तेवे शुर-इन दो नामों से परिचित न हो। साशेनरिंग साइकिल दौड़ के दुर्गम मार्ग का नाम है और तेवे शुर खिलाड़ी है।

कुछ साल पहले सन् १९५४ में तेवे का खिलाड़ी जीवन शुरू हुआ। उस वक्त उसने जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि के रूप में पहली बार रोड साइकिलिंग के विश्व चैम्पियनशिप में भाग लिया। यह दौड़ पश्चिमी जर्मनी में आयोजित हुई थी जिसमें तेवे का छठवाँ स्थान रहा और तभी ग़ैर पेशेवर साइकिलबाजों में उसने अपनी जगह बनाली। सन् १९५५ में "प्राग, बर्लिन, वारसा" की दौड़ हुई जिसमें भारतीय साइकिलबाज़ों ने भी हिस्सा लिया था। इस "शान्ति दौड़" में तेवे शुर के हाथ बाज़ी लगी। और तब से इस नौजवान साइकिलबाज़ की प्रतिभा में किसी को भी सन्देह नहीं रह गया।

विश्व चैम्पियन वेरहार्ड इक्स्ट्रीन को गुस्ताव बधाई दे रहे हैं

सन् १९५८ में फ्रान्स में ग़ैर-पेशेवर साइकिलबाज़ों की दौड़ हुई जिसमें इस खिलाड़ी को फिर सबसे बड़ी ट्राफी का इनाम मिला। इस सफलता ने जर्मन साइकिलबाज़ों के लम्बे इतिहास में तेवे को सबसे ऊँचे स्थान पर बिठा दिया। सन् १९५९ ने तो तेवे के खिलाड़ी जीवन में उस समय चार चाँद ही लगा दिया जब उसने हालैण्ड में आयोजित दौड़ में एक बार फिर विश्व चैम्पियनशिप हासिल कर ली। रोड साइकिलिंग के इतिहास में तेवे वह पहला खिलाड़ी है जो लगातार दो वर्षों तक विश्व चैम्पियनशिप हासिल करता रहा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र वह पहला समाजवादी देश है जिसने विश्व साइकिलिंग चैम्पियनशिप का आयोजन किया। यह ऐसा आयोजन रहा जिसमें बहुत बड़ी संख्या में यानी ३४ देशों के साइकिलबाज़ों ने भाग लिया। भारतीय साइकिलबाज़ों ने भी इसमें भाग लिया था।

हमारे देश में साइकिलिंग को जो सफलता मिली है वह आकस्मिक नहीं है बल्कि उस सफलता में सरकार का बहुत बड़ा हाथ है। हमारी सरकार के सहयोग का ही यह सुफल है कि आज हमारे बीच तेवे शुर जैसा खिलाड़ी मौजूद है। उसके नाम से हमारे देश के नौजवानों की रगों में खून की रफ़्तार तेज़ हो जाती है।

यह बताते हुए हमें खुशी होती है कि अच्छे खिलाड़ियों की गिनती तेवे तक ही जाकर रुक नहीं जाती बल्कि वह संख्या आगे बढ़ती है। पिछले शान्ति साइकिल दौड़ में २१ वर्ष के नौजवान मनफ्रेड को ही लें। इस खिलाड़ी को उस दौड़ में चार स्टेजों तक बराबर सफलता मिलती रही। मनफ्रेड ने १६ साल की उमर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

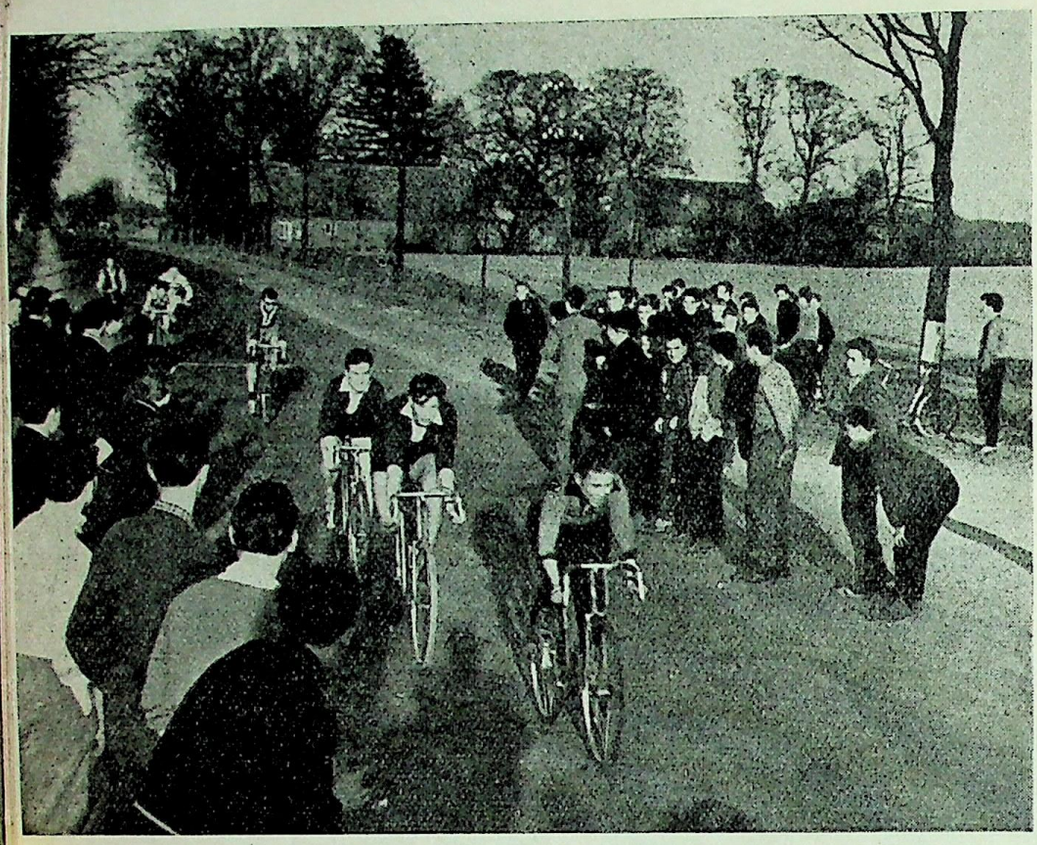

सायकिलबाज़ी शहरों और गावों—हर जगह लोकप्रिय है

साइकिलिंग शुरू की। १८वीं साल में उसने क्रास कन्ट्री रेस में लिया हिस्सा और अपने खिलाड़ी जीवन में उसे पहली बड़ी सफलता मिली। जब वह १९ साल का हुआ तो उसे मिस्र के भ्रमण के लिये चुना गया। इसी तरह और भी खिलाड़ियों के नाम लिये जा सकते हैं। कहना न होगा कि साइकिलिंग की इस प्रगति में जर्मन साइकिलिंग एसोसियेशन का भी बहुत बड़ा हाथ है।

आज स्थिति यह है कि ग़ैर पेशेवर साइकिलबाज़ों की दौड़ में हमारे खिलाड़ियों से पेश पाना किसी देश के लिये आसान नहीं है। ओलम्पिक खेल के चुनाव में हमारे साइकिलबाज़ों ने पश्चिमी जर्मनी के खिलाड़ियों को परास्त कर दिया। ओलम्पिक खेल के लिये पन्द्रह जर्मन खिलाड़ी चुने जाने वाले थे जिनमें हमारे देश के १२ खिलाड़ी चुने गये।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कुछ ही सालों के अन्दर जर्मन जनवादी गणतन्त्र के खिलाड़ियों ने साइकिलिंग में अपना प्रमुख स्थान बना लिया है।

आपकी जिज्ञासा :

प्रिय महोदय,

भारत से प्रकाशित होने वाले कुछ जर्मन पत्रों में इस आशय के अनेक समाचार पढ़ने को मिलते हैं कि पूर्वी जर्मनी से शरणार्थियों की बहुत बड़ी संख्या पश्चिमी जर्मनी में आ रही है। यह एक पेचीदा सवाल है जिसपर हम आपकी राय जानना चाहेंगे।

आपका
नारायण स्वामी
त्रिची।

पूर्वी जर्मनी से शरणार्थियों की अनन्त भीड़ पश्चिमी जर्मनी की ओर बढ़ी चली आ रही है। यह एक ऐसा विषय है जिसमें पश्चिमी जर्मनी के पत्रकारों को बड़ा मज़ा आता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र को छोड़कर आने वाले हर आदमी को यह पत्रकार न सिर्फ़ राजनैतिक शरणार्थी मान लेते हैं बल्कि उसे वे एक नहीं अनेक प गिन-गिन कर अपने अखबारों के कालम भरते हैं। लेकिन जब हवा दूसरी ओर से बहने लगती है तो वे उस तरफ़ से अपना मुंह फेर लेते हैं। वे बेचारे कुछ मज़बूर भी हैं क्योंकि उन्होंने यह देख लिया कि पश्चिमी जर्मनी के आर्थिक चमत्कार का जो ढिंढोरा अब तक वे पीटते रहे हैं वह कारागार नहीं साबित हुआ और अब पश्चिमी जर्मनी में ऐसे लोगों की तादाद बढ़ती जा रही है जो अपनी आँखें खोलकर अपना रास्ता तय करने की बात सोचने लगे हैं। ज़ाहिर है, इस नई तब्दीली से पश्चिमी जर्मनी के अधिकारियों और सम्पादकों की नींद हलराम हो जायेगी।

सन् १९६० के पहले छः महीनों में पश्चिमी जर्मनी से २६,१३६ शरणार्थी जर्मन जनवादी गणतंत्र में आये, जहाँ उन्हें नये घर और नया जीवन मिला। पश्चिमी जर्मनी को छोड़कर नये जीवन की तलाश करने के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। कुछ के सामने राजनैतिक कारण होंगे और कुछ के सामने आर्थिक। ऊपर शरणार्थियों की जो संख्या बताई गई है उसमें से ८५०० ऐसे नौजवान हैं जिनकी उमर १९ से लेकर २५ साल के अन्दर है। पश्चिमी जर्मनी की सरकार इन नौजवानों को फ़ौज में ज़बर्दस्ती भर्ती करना चाहती थी जिसके लिये ये नौजवान तैयार न थे और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में अपना नया घर बसाना बेहतर समझा।

यह दूसरी बात है कि पश्चिमी जर्मनी से आये हुए इन शरणार्थियों को सीमा पार करते समय वहाँ की पुलिस की ज्यादतियों का शिकार भी होना पड़ा। पश्चिमी जर्मनी से भाग कर आने की सज़ा जेल है। लेकिन ये सज़ाएँ भी इन नौजवानों को या और दूसरे शरणार्थियों को रोक न सकीं।

हमारा विचार है कि पश्चिमी जर्मनी के एकांगी प्रचार पर ऊपर दिया गया यह संक्षिप्त विवरण काफ़ी रोशनी डालता है। वैसे हम इस तरह के झूठे प्रचार को बहुत अहमियत भी नहीं देते। हम यह समझते हैं कि पश्चिमी जर्मनी में कुछ क्षेत्रों ने जिस तरह का शीत युद्ध छेड़ रखा है उसे तरह का शीत युद्ध छेड़ रखा है उसे भारत जैसे देश में फैलाना उचित नहीं। हम इस बात को सबसे अधिक महत्व देते हैं।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र से रसायन - सामग्री का निर्यात

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उद्योगों में रसायन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस उद्योग में २,३०,००० आदमी काम करते हैं। इस राष्ट्रीय उद्योग का उत्पादन पिछले कुछ सालों से निरन्तर बढ़ता ही रहा है।

रसायन के कुल उत्पादन में जर्मन जनवादी गणतंत्र का दुनिया में सातवाँ स्थान है। अमेरिका, सोवियत संघ, इंगलैंड, पश्चिमी जर्मनी, जापान और फ्रान्स का नाम क्रमशः पहले लिया जा सकता है। लेकिन यदि कुल उत्पादन का आबादी के अनुसार प्रति व्यक्ति हिसाब लगाकर देखा जाय तो हमें दूसरा स्थान मिलता है। इस हिसाब से केवल अमेरिका ही हमसे आगे रहता है।

जिस गति से हमारा उत्पादन बढ़ा है उसी गति से हमारी रसायन-सामग्री का निर्यात भी बढ़ा है। दुनिया का कोई भी ऐसा देश नहीं, जहाँ हमारी रसायन-सामग्री की खपत न होती हो। समाजवादी देशों के बाद अफ्रीका और एशिया के नव-विकसित देशों के साथ व्यापार संबंध बढ़ाना हम अपना महत्व-पूर्ण लक्ष्य समझते हैं। इसीलिए पिछले कुछ सालों मे हमारी रसायन सामग्री की भारत में भारी खपत हुई है :

१९५७— ५७,००,०००रु० की रसायन सामग्री
१९५८— ८१,६०,००० ,, ,,
१९५९—१,५१,९३,००० ,, ,,

रसायन-सामग्री के इस निर्यात में उर्वरक और कच्ची फ़िल्मों का सामान अधिक मात्रा में था।

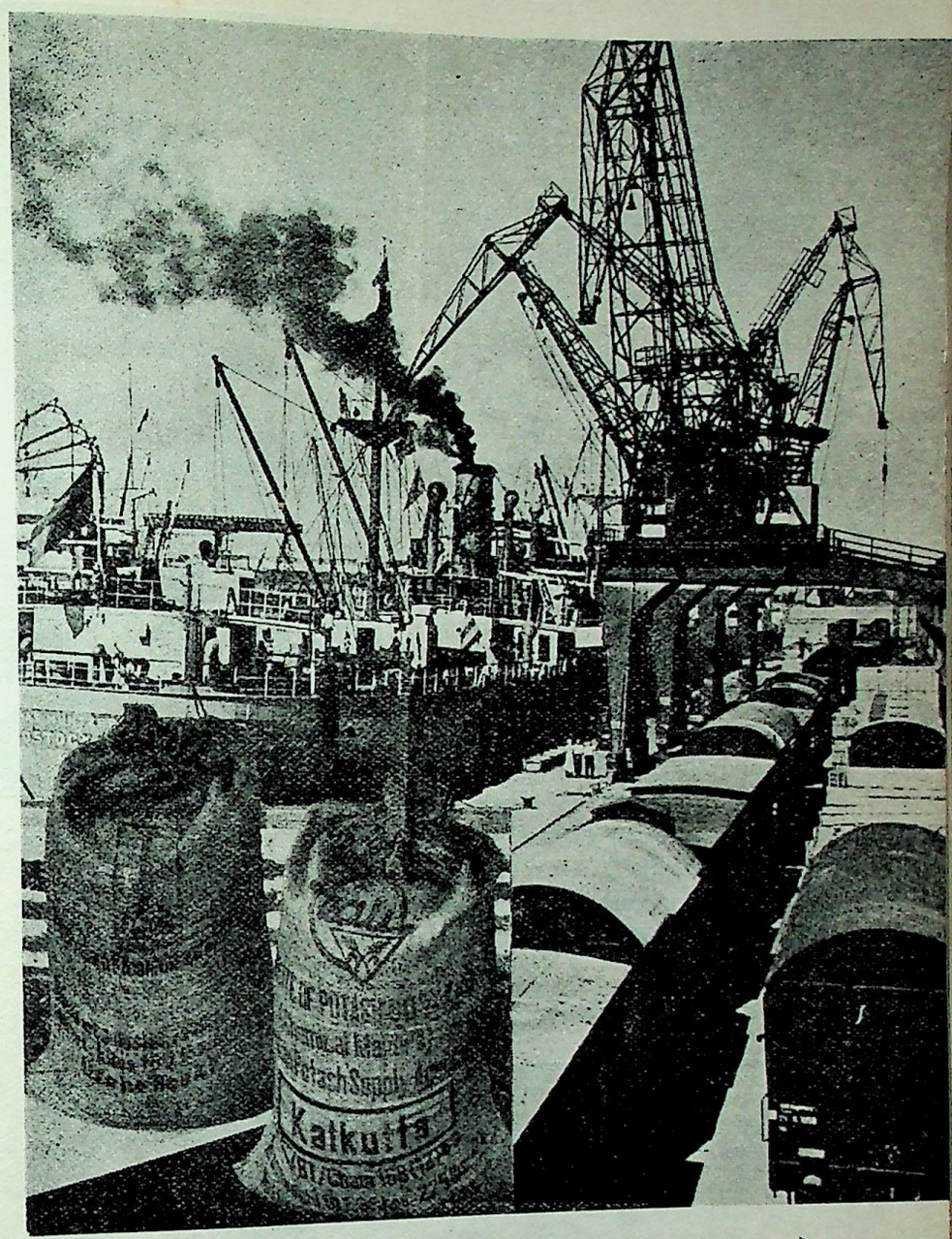

विस्मार बन्दरगाह से ही ज. ज. गणतंत्र का रसायन-माल दुनिया के कोने-कोने में जाता है

जर्मन जनवादी गणतंत्र से भारत में जो रसायन-सामग्री आती है उसका अधिकांश भारत के कपड़ा उद्योग और रंगाई उद्योग के इस्तेमाल में आता है और इस प्रकार भारत के परम्परागत उद्योगों का उत्पादन बढ़ाने में हम सहायक होते हैं। इसी बीच कास्टिक पोटाश और एसटिक एसिड का भी निर्यात काफ़ी बढ़ा है :

कास्टिक पोटाश—१९५७—५६ टन
१९५८—४०० ,,
१९५९—७८० ,,
एसटिक एसिड —१९५७— ५२ टन
१९५८—१४८ ,,
१९५९—२३५ ,,

रसारन उद्योग को और आगे बढ़ाने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने इधर जो कार्यक्रम तैयार किये हैं उनसे उत्पादन में और भी वृद्धि होने वाली है। फलतः उसका निर्यात भी तेजी से आगे बढ़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानों का विश्वविद्यालय

(पृष्ठ ९ का शेष)

ने खुद अपनी आंखों एक दूसरी ही तस्वीर देखी तो उन्हें अपने देश के प्रचार की असलियत का पता चला। उन किसानों ने हमारी खेती से अपनी हालत की तुलना की और उनमें से अनेक इस नतीजे पर पहुंचे कि उनका भी भविष्य इसी प्रकार की सहकारी खेती में छुपा है।

प्रदर्शिनी में सोवियत संघ, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया से भी यात्रियों के दल आये। पश्चिमी देशों से इस वर्ष आने वाले वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों मज़दूर नेताओं और पत्रकारों की संख्या ज़्यादा थी और उन सबकी एक ही राय थी कि खेती के मामले में जर्मन जनवादी गणतंत्र को अच्छी सफलता मिली है।

इस प्रदर्शिनी को देखने के बाद अमरीका से आये हुए श्री साइरस ईटन ने यह सुझाव दिया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के सहकारी किसानों और अमरीकी किसानों के अनुभवों का आदान-प्रदान आवश्यक है। ब्रिटिश संसद के बहुत सारे सदस्यों ने प्रदर्शिनी में भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया बताते हुए कहा कि यहाँ आकार हमें बेहतर जर्मनी को देखने का अवसर मिला।

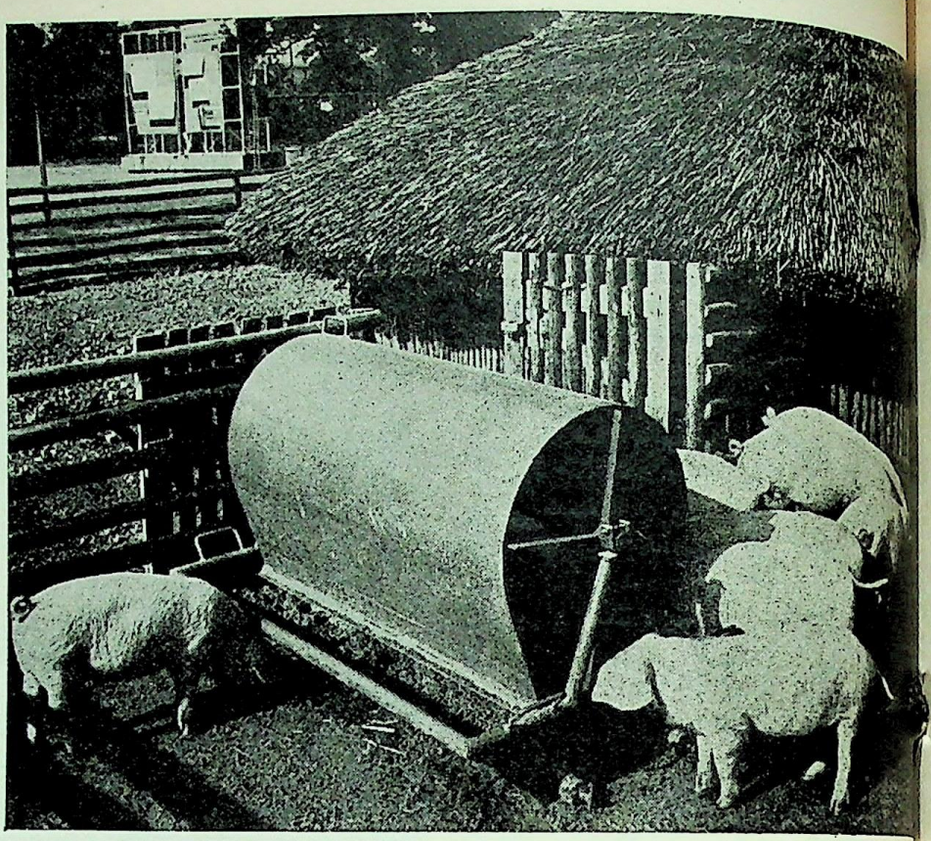

सुअर-पालन के आधुनिक तरीक़े

विदेश व्यापार मंत्री हेनरिख़ राउ को अंग्रेज नस्ल का बैल भेंट में मिल।

फ्रांस, हालैण्ड, डेनमार्क, इटली, यूनान, आस्ट्रेलिया, स्वेडेन, नार्वे, फ़िनलैण्ड, स्विटज़रलैण्ड, युगोस्लाविया, संयुक्त अरब गणतंत्र, अलजीरिया और गिनी से भी दर्शकों ने भाग लिया। क्यूबा जैसे दूर देश से भी क्यूबा सरकार के प्रतिनिधि आये और उन्होंने खेती की दिशा में हमारी सफलता को सराहा।

किसानों का यह विश्वविद्यालय अब एक स्थायी संस्था बन गया है। यहां एक साथ मिलकर हमारे किसान अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकते हैं और खेती के नये-नये साधनों की जानकारी हासिल कर सकते हैं।

प्रदर्शिनी में भाग लेने वाले दर्शकों को यह विश्वास हो गया है कि जो भी देश अपनी खेती की तरक़्क़ी करना चाहता है उसे शान्ति की सबसे अधिक आवश्यकता है। सहकारी किसानों ने प्रदर्शिनी से लौट कर नये जोश और नये साहस के साथ अपनी खेती की पैदावार बढ़ाने के लिये कोशिश शुरू कर दी है ताकि उनके जीवन में सुख-समृद्धि और आगे बढ़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

ज० ज० ग० के निरस्त्रीकरण प्रस्ताव का बर्मा द्वारा समर्थन

बर्मा के प्रधान मन्त्री उ नू के निजी सलाहकार और राजदूत उ ओहा ने हाल में अपने प्रधान मन्त्री की ओर से यह घोषणा की है कि बर्मा की सरकार ने निरस्त्रीकरण और जर्मनी की तटस्थता के सम्बन्ध में जर्मन जनवादी गणतंत्र के हाल के प्रस्तावों में दिलचस्पी दिखायी। बर्मा की सरकार व्यापक और पूर्ण निरस्त्रीकरण की उन तमाम कोशिशों का समर्थन करती है जो विश्व शान्ति और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व को मज़बूत बनाने में सहायक होते हैं। उ ओहा ने उक्त वक्तव्य हाल में जर्मन पत्रकारों के सामने रंगून में दिया। इस सम्मेलन में बर्मा के प्रधान मन्त्री भी मौजूद थे।

जर्मन पत्रकारों ने बर्मा शान्ति आन्दोलन के प्रमुख नेताओं से भी भेंट की जिनमें डा० सिन पो, उ थिन और पी मिन्ड के नाम उल्लेखनीय हैं। इन नेताओं ने तमाम शान्तिकामी जर्मन जनता के नाम एक सन्देश में कहा कि सैनिकवाद और नाज़ीवाद के विरुद्ध और शान्ति के लिये जर्मनी में जो संघर्ष चल रहा है बर्मा की जनता उसका पूर्ण समर्थन करती है। उन्होंने इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि शान्ति की रक्षा के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र पूरी कोशिश कर रहा है। जर्मन समस्या के शान्ति पूर्ण हल की जो लोग कामना करते हैं उन्हें चाहिए कि वे जर्मन जनवादी गणतंत्र को मान्यता दें।

* *

राज्य परिषद की स्थापना

जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर ने गत १२ सितम्बर को अपनी बैठक में कुछ संवैधानिक परिवर्तन किये और राज्य परिषद की स्थापना का कानून पास किया।

राज्य परिषद के अध्यक्ष-पद के लिए सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के प्रथम मंत्री श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त सर्वसम्मति से चुने गये।

हमारे राज्य के इस सर्वोच्च संगठन में अध्यक्ष के अतिरिक्त ६ उपाध्यक्ष हैं जिनमें प्रधान मंत्री श्री ओटो ग्रोटेवाल और पीपुल्स चेम्बर के अध्यक्ष डा. डीकमन भी हैं। राज्यपरिषद के कुल १६ सदस्य और एक मंत्री हैं।

राज्य परिषद के निर्माण संबंधी कानून में अन्य बातों के साथ निम्नलिखित पहलू पर भी प्रकाश डाला गया है: राज्य परिषद को अधिकार होगा कि वह अन्य राष्ट्रों के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र की हुई सन्धियों को जारी या रद कर सके; अन्य राष्ट्रों में स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के राजदूतों या प्रतिनिधियों को मनोनीत करे या वापस बुलाये; दूसरे राष्ट्रों के राजनायकों के प्रमाणपत्र या वापसी के पत्र स्वीकार करे। जनता में राज्य परिषद का प्रतिनिधित्व उसके अध्यक्ष या उपाध्यक्ष करेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में राज्य-परिषद के उपाध्यक्ष जर्मन जनवादी गणतंत्र के वैधानिक प्रतिनिधि माने जायेंगे।

* *

ज० ज० गणतंत्र का अन्य देशों के साथ सम्बन्ध—वाल्टर उल्ब्रिख्त का मत

अभी हाल में बर्लिन में उपस्थित राजनयिकों के स्वागत में एक समारोह का आयोजन हुआ जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त ने अपनी बातचीत के दौरान कहा कि हम ग़ैर समाजवादी देशों के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धों को बहुत अच्छा समझते हैं लेकिन अब आवश्यकता इस बात की आ गयी है कि हमारे देश के साथ वे देश समुचित सम्बन्ध क़ायम करे। जर्मनी में दो राज्यों के अस्तित्व को देखते हुए केवल पश्चिमी जर्मनी को मान्यता देना जाने-अनजाने सैनिकवाद और प्रतिहिंसा का समर्थन करना है। ऐसी स्थिति उन देशों की तटस्थता के विरुद्ध है और पश्चिमी जर्मनी इसे अपनी आक्रामक नीति का समर्थन समझता है और उसे बल मिलता है। पश्चिमी जर्मनी स्वयं को सारे जर्मनी का दावेदार समझता है और इस तरह वह दूसरे देशों को धमकी देता है और अनुचित लाभ उठाता है। मुख्य समस्या जर्मन जनवादी गणतंत्र को मान्यता देने की नहीं है बल्कि शान्ति क़ायम रखने की है। जिन देशों को अभी हाल में स्वाधीनता मिली है उनके साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र का राजनयिक सम्बन्ध एक विशेष महत्व की बात है। इसका अर्थ दुनिया में शान्तिकामी शक्तियों को मज़बूत करना है। पश्चिमी जर्मनी के साथ जो देश सैनिक गुटों में फँसे हुए हैं उन्हें भी जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ सम्बन्ध क़ायम करने के प्रश्न पर विचार करना चाहिए।

* *

गिनी के मेहमान

गिनी के राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन के महामंत्री श्री कमारा के नेतृत्व में एक ट्रेड यूनियन प्रतिनिधि मण्डल हमारे देश आया। हमारे देश के विभिन्न स्थानों के भ्रमण के बाद मेहमानों ने ज० ज० गणतंत्र के मज़दूर संघ के अध्यक्ष हर्बर्ट वार्न्क से मैत्रीपूर्ण वार्ता की। अफ्रीकी जनता की स्वाधीनता के लिए और साम्राज्यवाद के विरुद्ध मिलजुलकर संघर्ष चलाना चाहिए। इस बात पर हम सब सहमत थे। गिनी का यह प्रतिनिधिमण्डल हमारे देश में एक महीने तक भ्रमण करता रहा।

* *

हेनरिख़ राउ आमंत्रित

संयुक्त अरब गणतंत्र की सरकार ने ज० ज० गणतंत्र के विदेश और व्यापार के मंत्री श्री हेनरिख़ अन्तरिक राउ को आमन्त्रित किया है। यह निमंत्रण पत्र संयुक्त अरब गणतंत्र के विकास-मंत्री डा० मोहम्मद अबूनासिर ने स्वयं दिया। वे लइपज़िग शरद् मेले में भाग लेने आये थे। उस समय इन नेताओं के बीच दोनों देशों के सम्बन्धों को और व्यापक बनाने के प्रश्न पर भी विचार विमर्श हुआ।

* *

सेन्ट इरिक्स मेले में हमारी सफलताएं

स्टाकहोम के सेन्ट इरिक्स मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रदर्शिनी बड़ी कामयाब रही। लगभग ढाई लाख दर्शकों ने तीन सौ वर्ग मीटर में बने हमारे मण्डप का निरीक्षण किया जिसमें हमारी मशीनें विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज० ज० गणतंत्र और यूगोस्लेविया के व्यापार में वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र और यूगोस्लाविया के व्यापार में सन् १९५७-५८ के बीच चार गुनी वृद्धि हुई और इस साल उसमें सात गुनी वृद्धि की सम्भावना है। दोनों देशों के व्यापारिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए जैग्रेब मेले में हमारी प्रदर्शिनी के संचालक ने एक स्वागत समारोह में उक्त आशय का वक्तव्य दिया।

* *

ब्राज़ील के साथ व्यापार-वार्ता

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश और आन्तरिक व्यापार के उप-मंत्री श्री कर्ट एन्केलमन्ह ब्राज़ील गये हुए हैं। उनकी यात्रा का उद्देश्य इन दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्धों में विस्तार करना है। श्री कर्ट के साथ ब्राज़ील स्थित हमारे व्यापार प्रतिनिधि और अनेक विशेषज्ञ भी हैं।

* *

फ्रांस और प० जर्मनी से इस्पात की खरीद

फ्रान्स और पश्चिमी जर्मनी की फ़र्मों के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र ने एक समझौता किया है जिसके अनुसार उन फ़र्मों से इस्पात के बने हुए माल खरीदे जायँगे। कुछ दिनों पहले ब्रिटेन के साथ भी ऐसे ही समझौते हुए थे जिनके परिणाम काफी लाभप्रद रहे।

* *

हैनरिख राउ द्वारा फ़िनलैण्ड के औद्योगिक मेले का निरीक्षण

विदेश और आन्तरिक व्यापार मंत्री श्री हेनरिख राउ ने हाल में फ़िनलैण्ड के औद्योगिक मेले (हैलसिंकी) का निरीक्षण किया। उन्होंने इसके अलावा हैलसिंकी के जहाज़ कारखाने को भी देखा, जहाँ कारखाने के मालिकों और मज़दूरों ने उनका स्वागत किया। हैलसिंकी और बर्ना (ज० ज० ग०) के जहाज़ कारखानों में काम करने वालों को एक दूसरी जगह पर भेजा जाये इस सुझाव का वहाँ सभी ने स्वागत किया।

पीपुल्स चैम्बर में ब्रिटेन के संसद सदस्य

ब्रिटेनकी कामन्स सभा के सदस्य रिचर्ड डब्ल्यू मार्श, चार्ल्स टामस पैनिल, विलियम चार्ल्स और जैक मैक्लान हाल में हमारे देश आये। उन्होंने हमारे पीपुल्स चेम्बर की कार्रवाही देखी। वे हमारी स्वास्थ्य सेवाओं, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति से बड़े प्रभावित हुए।

* *

लइपज़िग मेले में व्यवसाय

इस वर्ष लइपज़िग मेले का व्यवसाय बहुत ही अच्छा रहा है। गत चार सितम्बर से ग्यारह सितम्बर तक हुए इस मेले में हमारे देश की विदेश व्यापार कम्पनियों ने २७३ करोड़ ५० लाख मार्क का सौदा किया। इसका मतलब यह हुआ कि पिछले साल की तुलना में इस बार व्यापार में २५ प्र० श० की वृद्धि हुई। समाजवादी देशों से १५५ करोड़ ८० लाख मार्क का सौदा हुआ।

लइपज़िग के इस मेले का महत्व उसमें आने वाले दर्शकों की संख्या से भी आँका जा सकता है। ७६ देशों से कुल २ लाख ६६ हज़ार दर्शकों ने इस मेले में भाग लिया। इनमें २५९३७ पश्चिमी जर्मनी से आये थे और १९२९ व्यक्ति पश्चिमी बर्लिन के रहने वाले थे। १४२०० दर्शक समाजवादी देशों से और ५८५९ व्यक्ति अन्य देशों से आये थे। इस मेले में भारतीय प्रदर्शिनी सबसे बड़ी रही और उन अफ्रीकी देशों ने भी इसमें बड़ी दिलचस्पी दिखाई जिन्हें अभी हाल में आज़ादी मिली है।

* *

ओलम्पिक विजेताओं का सम्मान

ओलम्पिक खेल में भाग लेने वाले हमारे खिलाड़ियों का हमारी राजधानी बर्लिन में लौटने पर भव्य स्वागत हुआ। अखिल जर्मन टीम को ओलम्पिक में १२ स्वर्ण पदक, १९ रजत और ११ ताम्र पदक मिले थे जिनमें हमारे खिलाड़ियों को क्रमशः ३ स्वर्ण, ९ रजत और ७ ताम्र पदक मिले।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्य-परिषद् के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रेख्त ने हमारे विजेता खिलाड़ियों को उच्च सम्मान से विभूषित किया।

* *

गैर-कानूनी हरकत

"पश्चिमी जर्मनी के अधिकारियों का पश्चिमी बर्लिन में आना और तनाव पैदा करने के अनेक तरीक़े अपनाना एक ऐसी नीति का नतीजा है जिससे बर्लिन की समस्या और उलझ जायेगी। पिछले कुछ दिनों से पश्चिमी बर्लिन के सैनिक अधिकारियों ने पश्चिमी बर्लिन में अपने विषैले प्रचार को भीषण बना रखा है।" यह वक्तव्य जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने उस समय दिया जब पश्चिमी जर्मनी के कार्यवाहक चांस्लर, गृह मंत्री और फ़ैडरल प्रेसीडेण्ट ने पश्चिमी बर्लिन का दौरा किया। इन व्यक्तियों ने यह दावा किया कि पश्चिमी बर्लिन पश्चिमी जर्मनी का हिस्सा है। उन लोगों ने पश्चिमी बर्लिन को एक ऐसे मंच के रूप में इस्तेमाल किया जहाँ से वे जर्मन जनवादी गणतंत्र और अन्य समाजवादी देशों के विरूद्ध ज़हर उगल सकें। उनकी इन हरकतों से साफ़ हो गया कि वे पश्चिमी बर्लिन में तनाव को और तेज़ करना चाहते हैं।

* *

बर्लिन इन्सेम्ब्ले को मुबारकबाद

जर्मनी के महान नाटककार ब्रेख्त की एक कृति का बर्लिन इन्सेम्ब्ले ने अभी हाल में पश्चिमी जर्मनी में अभिनय किया। इस नाटक में ब्रेख्त के कथनानुसार, इस बात की कोशिश की गयी है कि "महान् नरसंहारकों के लिये दुर्भाग्यवश जनता के दिल में कभी कभी श्रद्धा पैदा हो जाती है। इस नाटक का उद्देश्य उसी श्रद्धा को ख़त्म करना है।" इस नाटक के प्रदर्शन के बाद जर्मन जनवादी गणतंत्र के संस्कृति मंत्री ने बर्लिन इन्सेम्ब्ले को मुबारकबाद दिया और कहा कि इस साहसपूर्ण अभिनय से सैनिक अधिकारियों की कोशिशें नाकाम हुयी जो इस नाज़ीवाद विरोधी नाटक का विरोध कर रही है। पश्चिमी जर्मनी की यात्रा से पहले बर्लिन इन्सेम्ब्ले ने फ्रान्स में भी कई जगहों पर अपने नाटकों का अभिनय किया और फ्रान्सीसी दर्शकों ने उसकी सराहना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभेच्छाएं

हिन्दी में आपकी इस पत्रिका का और आपके प्रयास का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सामाजिक रहन-सहन और औद्योगिक उन्नति का वृत्तान्त जानने की लालसा हमारे देशवासियों में काफ़ी है। इस सूचना-पत्रिका से उन सभी को संतोष होगा। कृपया मेरी बधाई स्वीकार कीजिए।

रामनरेश त्रिपाठी
कोइरीपुर, जौनपुर

आपकी सूचना-पत्रिका का मई का अंक प्राप्त हुआ। इससे आपके देश के सम्बन्ध में बहुत सी बातें जानने को मिलती हैं और दोनों देशों में सौहार्द तथा प्रेम बढ़ाने वाले सुन्दर प्रसंग भी प्राप्त होते हैं। इस सुन्दर और उपयोगी प्रकाशन के लिए बधाई। शेष भगवत्कृपा।

हनुमान प्रसाद पोद्दार
सम्पादक 'कल्याण' गीता प्रेस, गोरखपुर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'सूचना-पत्रिका' देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। पत्रिका में जर्मनी की सामाजिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की जानकारी की सामग्री बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की जाती है। भारत की उगती प्रजा और छात्र गण इससे विशेष लाभान्वित हो सकेंगे और भारत तथा जर्मन राष्ट्र की सांस्कृतिक बन्धुता और सद्भावना बढ़ाने में यह पत्रिका विशेष उपयोगी सिद्ध होगी।

हिन्दी भाषा में ऐसी लाभकारी पत्रिका का प्रकाशन करके आपने भारतीय जन की बड़ी सेवा की है। इस सुन्दर उपक्रम के लिए आपका सप्रेम अभिनन्दन करता हूँ।

शंकरदेव विद्यालंकार, एम, ए.
उपाचार्य, महिला कालेज, पोरबंदर (सौराष्ट्र)

'सूचना-पत्रिका' का तीसरा अंक मिला। एतदर्थ धन्यवाद। हिन्दी में 'सूचना-पत्रिका' एक नया क़दम कहा जायगा। इससे अधिक लोगों को जर्मनी-विषयक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

सुशील कुमार
'आदिवासी' साप्ताहिक, रांची (बिहार)

वास्तव में 'सू० प्र०' एक उपयोगी प्रकाशन है। छपाई-सफ़ाई की दृष्टि से भी काफ़ी सुन्दर है। अगर आप 'सू० प्र०' के हर अंक में जर्मन साहित्य के लिए भी कम से कम दो पृष्ठ दे सकें तो पत्रिका की उपयोगिता और भी बढ़ेगी। अंत में इस स्तुत्य कार्य के लिए हमारी तरफ़ से शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

पी० एस०चन्द्रशेखर
सम्पादक 'भारत वाणी' धारवार

पूर्वी जर्मन गणराज्य के दिल्ली कार्यालय द्वारा प्रकाशित व्यापार पत्रिका के जुलाई और अगस्त के अंक प्राप्त हुए। पत्रिका आकर्षक और उपयोगी है। आपको इसके लिए बधाई।

रजनी कांत मिश्र
'स्वतंत्र भारत' लखनऊ

सामग्री के लिए तो क्या बधाई दूं, लेकिन भाषा लुत्फ़ की है।

प्रणवीर सक्सेना
'स्वतंत्र भारत' लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

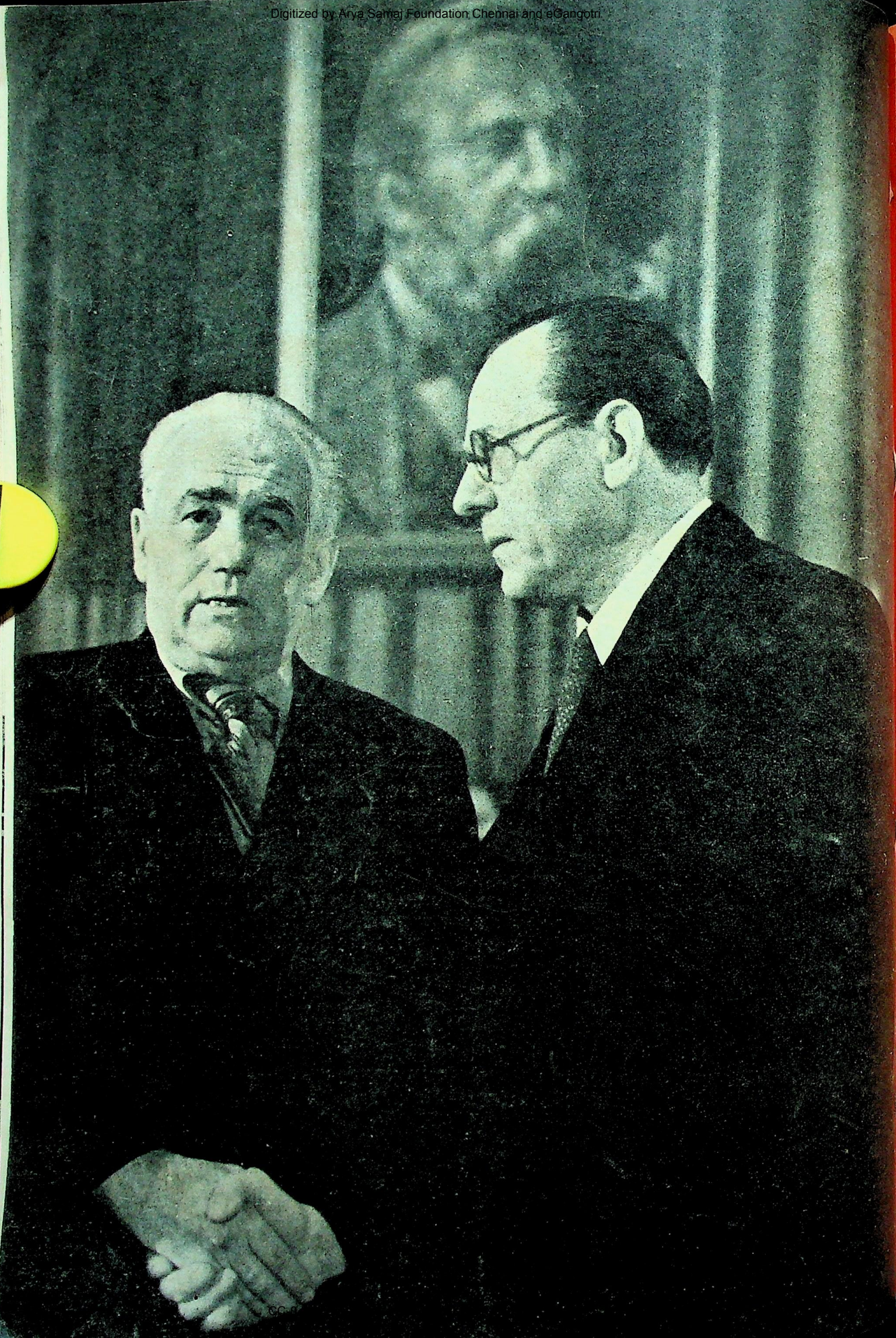

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

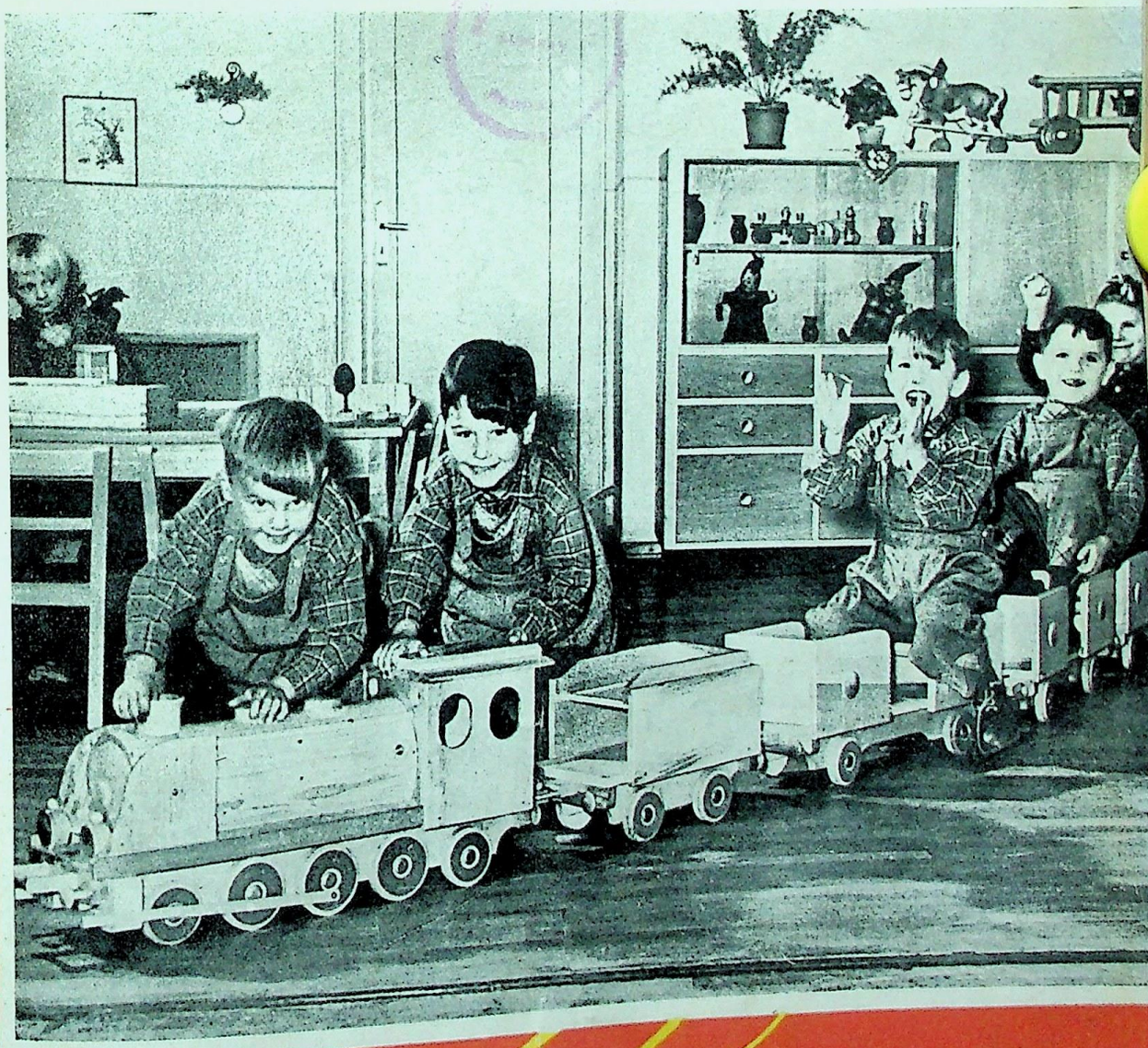

११ वर्ष ५
नवम्बर
१९६०

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएँ यहाँ से प्राप्त की जा सकती हैं :—

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२३, कर्ज़न रोड, नई दिल्ली

फोन : ४४२६१, ४४२६२ केबल्सः हावदिन, नई दिल्ली

•

शाखाएं :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन : २४५०५१, २४५०५२ केबल्सः हावदिन, बम्बई

•

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन : २३५५०४/५ केबल्सः कलहावदिन

•

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन : ६१३१४ केबल्सः हावजर्मन

वर्ष ५, अंक ११ ० नवम्बर, १९६०

यह अंक

१९५९ का बजट और निरस्त्रीकरण पृष्ठ
व्यक्तित्व की झांकी ३
गेरल्ड गेट्टिंग
जनवादी बर्लिन के द्वार खुले हैं ४
जनवाद के बढ़ते चरण ५
लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी और समाजवाद
उर्वरक—एक परम्परागत निर्यात ६
जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसान मिलजुल कर खेती करते हैं ८
"हमें बल मिलता है..." ११
जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन
योरप की व्यापारश्री : लइपज़िग १२
हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय, बर्लिन, की १५०वीं वर्षगांठ १५
दोस्ती के हाथों का स्वागत १७
डेफ़ा फ़िल्म जगत
गली नं० ८ : एक नया जासूसी चित्र एक नयी ज़िम्मेदारी के साथ १८
रोम अलम्पिक की सत्रह वर्षीया हिरोइन २०
जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें २१
आपकी जिज्ञासा २३
शुभेच्छाएं २३

मुख पृष्ठ

जर्मन जनवादी गणतंत्र के बच्चे इस देश की निधि हैं। उनकी चहकती हंसी इस देश का सुनहरा भविष्य है। सरकार उन्हें आँखों की पुतली समझकर पालती है।

अंतिम पृष्ठ

गायकराज पाल राब्सन जर्मन जनवादी गणतंत्र के परम मित्रों में से हैं! वे कई बार इस देश की जनता को अपनी कंठ-माधुरी पिला चुके हैं। अक्तूबर में बर्लिन ने सांस्कृतिक समारोह मनाया। आप उसी समारोह में भाग लेने आये थे। (चित्र में) बच्चे उनका स्वागत कर रहे हैं।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २३ कर्ज़न रोड, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और कैक्स्टन प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँकड़े बोलते हैं

१९५९ का बजट और निरस्त्रीकरण

हमारे देश की आमदनी का खास ज़रिया सरकारी उद्योग हैं। सन् १९५८ के बजट में कुल आमदनी का ५७.८ प्र० श० सरकारी उद्योगों की देन थी, जब कि १९५९ में वह बढ़कर ६१.१ प्र० श० हो गयी।

बजट की दूसरी आमदनी इस प्रकार थी :

आमदनी	१९५९	१९५८
सामाजिक बीमा योजना से	१४.३	१४.९
निजी उद्योगों पर लगे टैक्सों से	४.६	६.५
श्रमजीवियों और बुद्धिजीवियों से	४.४	४.२

सन् १९५८ में सरकारी उद्योगों से हासिल कुल आमदनी २३३ करोड़ मार्क थी। सन् १९५९ में वह बढ़कर २६७ करोड़ मार्क हो गयी। इस प्रकार १९५९ के लिए निर्धारित आमदनी का लक्ष्य १०१.२ प्र० श० तक पूरा हुआ।

बजट के खर्चों की मदें इस प्रकार रहीं :

	प्र० श० में	
	१९५९	१९५८
पूंजी लगी	१५.१	१४.३
सरकारी उद्योगों और म्युनिस्पिल खर्चों में	१३.६	१४.५
खेती के सुधार में	१५.१	१४.०
स्वास्थ्य समाज तथा संस्कृति के विकास में	४०.२	३८.६
सरकारी प्रशासन में	६.०	६.५
राष्ट्रीय सुरक्षा में	२.३	२.४

राष्ट्रीय आर्थिक ढांचे को और रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाने की दिशा में कितनी प्रगति हुई इसका प्रमाण १९५९ की

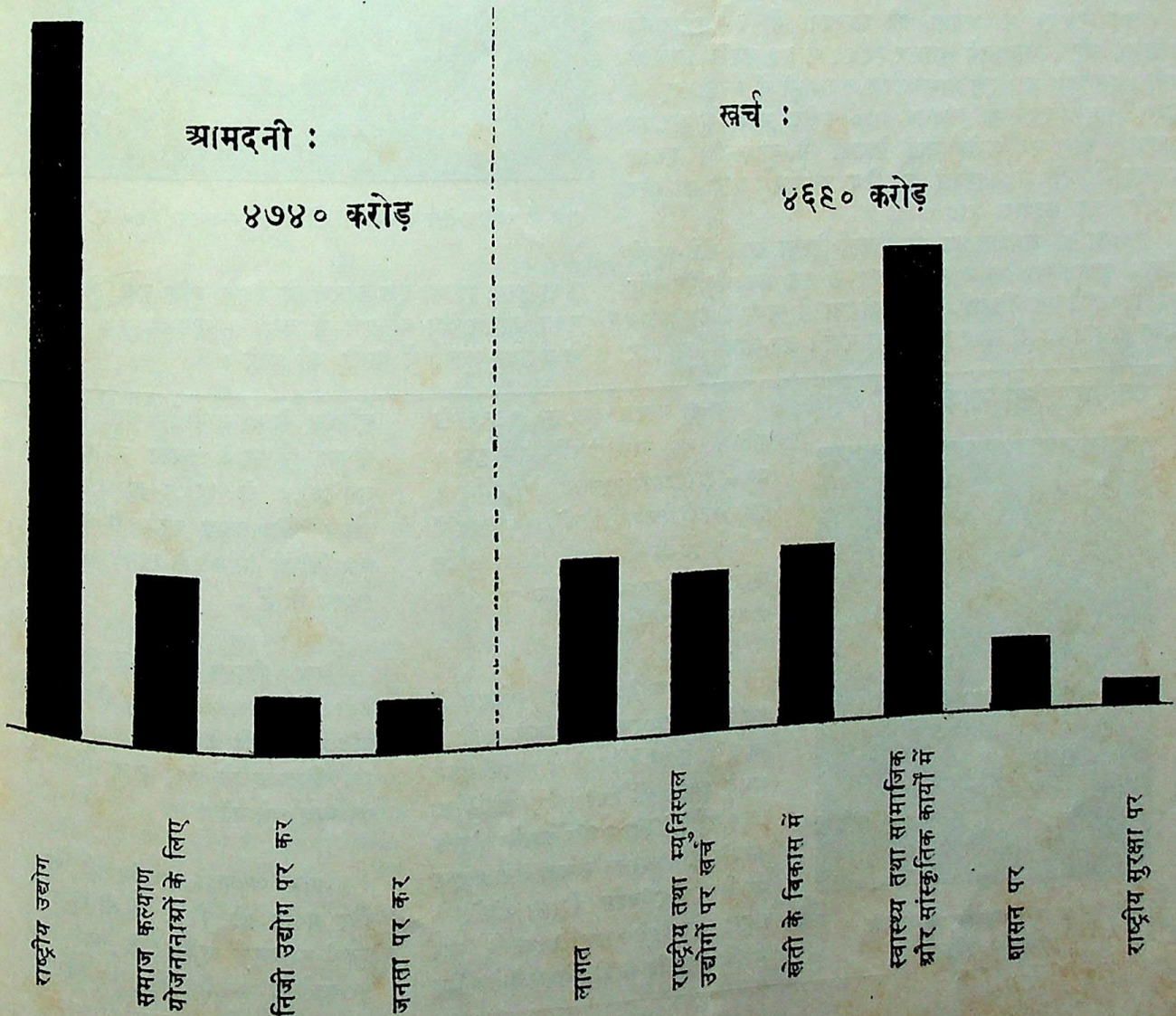

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी हुई खर्च की मदों से ही चल जाता है। सन् १९५८ की तुलना में इनमें काफ़ी वृद्धि हुई है।

सन् १९५८ में ५३ करोड़ की पूंजी लगी थी। सन् १९५९ में बढ़कर वह ६७ करोड़ मार्क हो गयी यानी १२६ प्र० श० की वृद्धि हुई। इसी प्रकार खेती पर सन् १९५८ में ५९ करोड़ मार्क खर्च किया गया था और १९५९ में वह खर्च बढ़कर ६६ करोड़ हो गया, यानी १११.९ प्र० श० की वृद्धि हुई।

स्वास्थ्य, समाज कल्याण तथा सांस्कृतिक कार्यों पर सन् १९५९ में १७७ करोड़ मार्क का खर्च हुआ। यह मद पिछले साल की अपेक्षा २२ करोड़ मार्क अधिक रही यानी १४ प्र० श० की वृद्धि हुई। ३१ दिसम्बर १९५९ तक ३४.६ करोड़ मार्क की ऋण-व्यवस्था की गयी। इसका भाव यह हुआ कि ५६ करोड़ मार्क का अतिरिक्त साधन उपलब्ध हुआ। अतिरिक्त साधनों में जनता की बचत वाली मदें शामिल हो गयीं जो निर्धारित लक्ष्य की सीमा पार कर गयी; समाजवादी उद्योगों की आमदनी भी निर्धारित लक्ष्य से बहुत आगे बढ़ी और इसका सुफल यह रहा कि मुनाफे का बजट बनकर तैयार हो गया। ऋण-व्यवस्था का उपयोग राष्ट्रीय अर्थतंत्र को मज़बूत करने तथा मकानों के निर्माण में किया गया। राष्ट्रीय उद्योगों में जो धन लगाया गया वह १९५९ की ऋण-व्यवस्था से जमा हुआ था और इस ऋण-व्यवस्था का पैसा १९५८ में हुए मुनाफे और बचत से बनकर तैयार हुआ। यह तो हुई अल्पकालिक ऋण-व्यवस्था की बात।

सन् १९५८ में जनता की आमदनी में ३२ करोड़ की वृद्धि हुई थी। वह आगे चलकर १९५९ में ५१ करोड़ मार्क हो गयी। इस वृद्धि का एक मात्र कारण तनख़ाहों में बढ़ती रही। केवल सन् १९५९ में लगभग ७० करोड़ मार्क के बराबर तनखाहों और २६ करोड़ मार्क पेन्शनों में वृद्धि हुई। इसका मतलब यह कि मेहनतकशों के बीच राष्ट्रीय आय का और अच्छी तरह बटवारा हुआ।

जनता की आमदनी का दो तिहाई हिस्सा खाने-पीने-पहनने में खर्च हुआ। पहले वर्ष की तुलना में इस मद में भी वृद्धि हुई। बाकी एक तिहाई, बचत योजना में गयी। इस प्रकार बचत योजना का भी लक्ष्य ऊपर पहुंच गया। जन-जीवन का स्तर ऊंचा हुआ, इसका एक कारण तो वेतन वृद्धि रही, लेकिन दूसरा मुख्य कारण रहा कीमतों में कमी। लगभग ३७ करोड़ मार्क के बराबर मूल्यों में कमी की गयी।

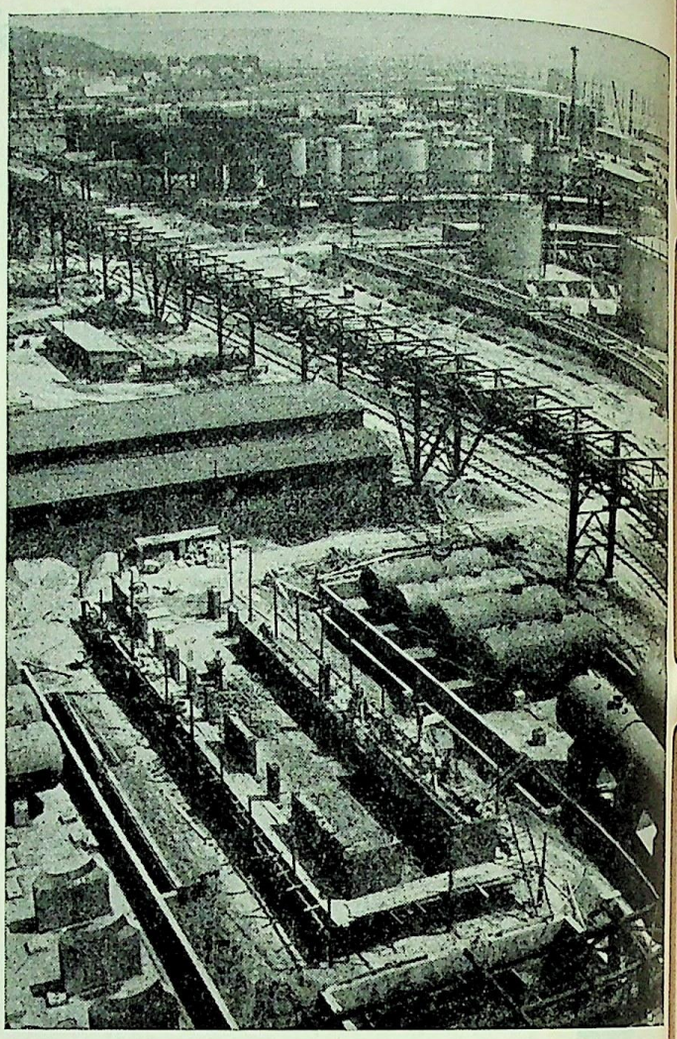

हाले में खनिज-तेल कारख़ाने की उत्पादन-क्षमता ३५० प्र. श. बढ़ी है

व्यक्तित्व की झांकी :

राज्य परिषद के उपाध्यक्ष
[गेरल्द गेट्टिंग]

आपका जन्म ९ जून, सन १९२३ को हाले में एक व्यापारी परिवार में हुआ। जर्मनी से हिटलरी कुशासन की समाप्ति के बाद आप क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन में शामिल हो गये और हाले स्थित मार्टिन लूथर विश्वविद्यालय में भाषा शास्त्र का अध्ययन शुरू किया।

क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन में प्रगतिशील विचारधारा को आगे बढ़ाने का का श्रेय गेरल्द गेट्टिंग को है। आपके लिये जर्मन जनता की एकता और शांति का लक्ष्य सर्वोपरि रहा। अतः आपने पीपुल्स कांग्रेस के आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया और जर्मन पीपुल्स कांग्रेस के सदस्य बन गये। सन १९४९ से आप ज० ज० गणतंत्र के क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन के महामन्त्री है। उसी वर्ष आप पीपुल्स चैम्बर के सदस्य भी चुने गये। सन १९५४ से १९५८ तक आप पीपुल्स चैम्बर के उपाध्यक्ष रहे। सन १९५६ से आप विदेशी मामले के स्थायी कमीशन के सदस्य भी हैं।

आप पीपुल्स चैम्बर में क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक दल के अध्यक्ष और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा समिति के उपाध्यक्ष भी हैं। गत १२ सितम्बर को आप राज्य परिषद के उपाध्यक्ष चुने गये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की एकता और प्रगति की दिशा में श्री गेट्टिंग को उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बदले अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तिपूर्ण यात्रियों के लिए :

जनवादी बर्लिन के द्वार खुले हैं

यह तो सर्वविदित ही है कि पश्चिमी जर्मनी की प्रतिक्रियावादी शक्तियां पश्चिम बर्लिन में जमा होकर प्रतिहिंसा और सैनिकवाद का वायुमण्डल तैयार करती हैं और शीतयुद्ध को तेज़ करती हैं। पश्चिमी बर्लिन के इस दुस्साहस को खत्म करने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र ने कुछ क़दम उठाये हैं। (स्मरण रहे कि बर्लिन पश्चिमी जर्मनी की सीमा रेखा से १०० मील दूर जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीचोबीच उसके हृदय के रूप में स्थित है) उन क़दमों को बोन सरकार और पश्चिमी जर्मनी के अख़बारों ने दुनिया के सामने तोड़-मरोड़ कर पेश करना शुरू कर दिया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध इस विष-वमन में सच्चाई नाम की कोई चीज़ नहीं है। इसी विषय पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री डा० लोथर बोल्ज़ ने गत सितम्बर को अपने भाषण में कहा :

"आज कल कुछ क्षेत्रों ने यह अफ़वाह उड़ा दी है कि पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों के लिए जनवादी बर्लिन का रास्ता बन्द कर दिया गया है। इस तरह की अफ़वाह घृणित कुप्रचार के अलावा और कुछ नहीं है। इसका उद्देश्य शीतयुद्ध को और तेज़ करना है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में प्रवेश करने के संबंध में उसी तरह के नियम हैं जैसे बोन में।"

गृह मंत्री के आदेश में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों का प्रवेश नियंत्रित रखा जायगा। जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक जब पश्चिमी जर्मनी में जाते हैं तो वहाँ की पुलिस उनकी भी जांच-पड़ताल करती है। लेकिन इन दोनों तरीक़ों में कुछ अन्तर है। ज० ज० गणतंत्र में जिस तरह का नियंत्रण है उसमें पश्चिमी जर्मनी के शांतिपूर्ण नागरिकों के प्रवेश पर कोई रोक थाम नहीं और न इसके लिए उन्हें जेल में ही डाला जाता है। हालांकि जर्मन जनवादी गणतंत्र इस बात की अनुमति ज़रूर नहीं देगा कि प्रतिहिंसक शक्तियां पश्चिमी जर्मनी से आ-आकर उसकी राजधानी को अपने सैनिकवाद का अखाड़ा बनायें। जहां तक शांतिपूर्ण नागरिकों का प्रश्न है—और उनकी संख्या पश्चिमी जर्मनी में भी काफ़ी है—ये क़दम उनके प्रवेश की शीघ्र अनुमति दिलाने में सहायक होंगे।

बर्लिन में चार राष्ट्रों की स्थिति की बात बार-बार उठायी जाती है। यह एक निराधार बकवास है। इस स्थिति का तभी तक अस्तित्व था जब तक मित्र राष्ट्रों की ओर से पोस्टडम समझौते के अनुसार जर्मनी से नाज़ीवाद और सैनिकवाद का ख़ात्मा करने और एक जनवादी वातावरण बनाने की कोशिश जारी थी। लेकिन पश्चिमी शक्तियों ने ऐसा न होने दिया। उन्होंने पोस्टडम समझौते को धूल में मिला दिया, अलग सिक्का चालू कर दिया और पश्चिमी जर्मनी की स्थापना करके जर्मनी के दो टुकड़े कर दिये। इस प्रकार चार राष्ट्रों की स्थिति को स्वयं पश्चिमी व्यक्तियों ने ही हवा में उड़ा दिया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि पश्चिमी शक्तियों ने पश्चिमी बर्लिन पर तीन राष्ट्रों के अधिकार की घोषणा कर डाली जिसमें तथाकथित चार राष्ट्रों की स्थिति का कोई ज़िक्र ही नहीं है।

बोन सरकार अस्तित्व में आयी। लेकिन वह इतने से संतुष्ट न रह सकी। उसने पेरिस सन्धि की; प० जर्मनी में सैनिकवाद का विष-बीज फ़िर से डालना प्रारम्भ किया और नाटो में शमिल हो गयी। इतना सब कुछ कर चुकने के बाद जब वह (बोन सरकार) चार राष्ट्रों की स्थिति का ज़िक्र अपने

(शेष पृष्ठ ७ पर)

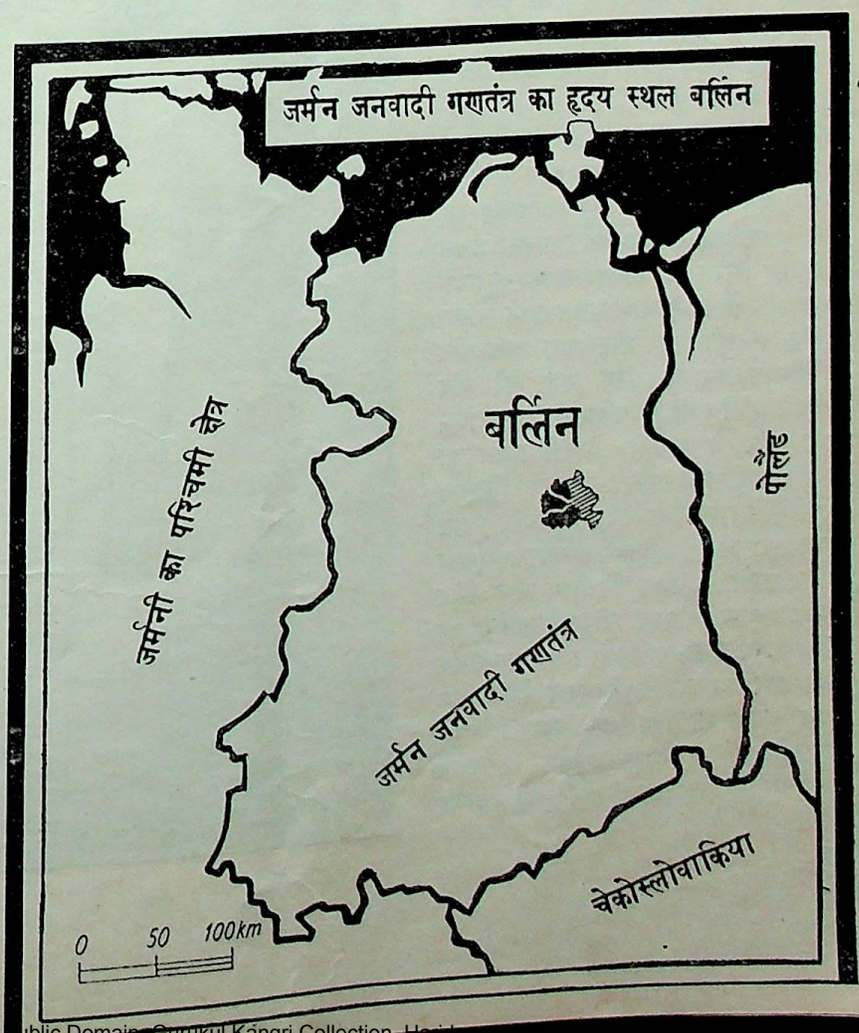

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी और समाजवाद

विली पीटर कौंज़ोक,
लिबर डेमोक्रेटिक दल के उपाध्यक्ष

जर्मन जनवादी गणतंत्र की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना जुलाई सन् १९४५ में हुई। इसके चरित्र की विशेषता फ़ासिज़्म का विरोध और जनवाद है। सन् १९३३ से पूर्व जो लोग अनेक पूंजीवादी दलों के सदस्य थे, वे सब इसमें शामिल हुए। इसके अलावा अनेक ऐसे लोग भी आये जो राजनीतिक दृष्टि से संगठित न थे। इस दल में मध्यमवर्ग के लोग भारी संख्या में शामिल हुए क्योंकि उन्होंने देखा कि यहां ही उनके हितों का प्रतिनिधित्व होता है। इस पार्टी ने अपने प्रारम्भिक दिनों में युद्ध से हुई क्षति को दूर करने और देश के आर्थिक ढांचे को ठीक करने की दिशा में अपनी पूरी शक्ति लगायी। साथ ही पूरी पार्टी की सैद्धान्तिक शिक्षा भी चलती रही।

युद्ध के बाद पहले कुछ वर्षों में देखा गया कि ऐसे तत्वों ने भी लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ अपना रिश्ता जोड़ा जो अपने विचारों में प्रगतिशील न थे। लेकिन पार्टी के विकास के साथ-साथ उसका सैद्धान्तिक पक्ष भी निखरने लगा। फलतः यदि एक ओर पार्टी के साथ अनेक लोगों के रिश्ते मज़बूत हुए तो दूसरी ओर कुछ लोग उससे अलग भी हुए। यह वह समय था जब युद्ध के अपराधियों की सम्पत्ति ज़ब्त होने लगी, भूमि सुधारों का दौर शुरू हुआ और सोवियत संघ के साथ मैत्री की नींव गहरी होने लगी। पश्चिमी मित्र राष्ट्रों की ओर से जर्मनी के विभाजन का इरादा ज्यों-ज्यों साफ़ होने लगा, लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के संस्थापक और पुराने जनवादी डा० विल्हेल्म क्विल्ज़ ने एकता और शांति के लिए विल्हेल्म पीक और ओटो नुश्क के साथ पीपुल्स कांग्रेस का जन आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन की देश भक्ति से लिबरल डेमोक्रेटिक दल बहुत ही प्रभावित हुआ। इसी आन्दोलन ने आगे बढ़कर जनवादी जर्मनी के राष्ट्रीय मोर्चे का रूप ले लिया जिसमें सभी वर्ग के तत्व शामिल होने लगे।

सन १९४५ से अब तक लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी की सात कान्फ्रेन्सें हो चुकी हैं। इन कान्फ्रेन्सों से यह सिद्ध हो चुका है कि पार्टी की प्रगतिशील विचारधारा समय की कसौटी पर खरी उतरी, पार्टी का हर सम्मेलन भविष्य के लिये प्रकाश बनता रहा।

समय के साथ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के अन्दर एकता की भावना अधिकाधिक सुदृढ़ होती रही और फ़ासिस्त-विरोधी खेमे के साथ उसके रिश्ते मज़बूत होते रहे। देश की प्रगति, शांति और जर्मनी की पुर्नएकता के संघर्ष में हम एक इकाई की तरह काम करते रहे और आज भी कर रहे हैं।

मेहनतकश जनता का परचम ऊंचा रखने वाली सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी ने सन् १९५२ में फ़ैसला किया कि अब समाजवाद के निर्माण की शुभ घड़ी

लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता और पीपुल्स चम्बर के अध्यक्ष डा० डीकमन अपनी भारत यात्रा के दौरान भारत के सुरक्षा मंत्री श्री कृष्णमेनन से मैत्रीपूर्ण वार्ता करते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ पहुंची है। इस अपील का लिबरल डेमोक्रैटिक पार्टी ने हृदय से स्वागत किया और सृजन के पथ पर सब के साथ आगे बढ़ी। सन् १९५३ में पार्टी का पांचवां सम्मेलन ड्रेसडन में हुआ। उस सम्मेलन में यह स्पष्ट हो गया कि देश की समूची मेहनतकश जनता का जो रास्ता है उसमें ही मध्यवर्ग का भी कल्याण निहित है।

इस सम्मेलन ने घोषणा करते हुए कहा कि जर्मन जनवादी गणतत्र की तमाम जनवादी शक्तियों का धर्म है कि वे अपनी पूरी शक्ति से एक नयी व्यवस्था और समाजवाद के पुनर्निर्माण में एकजुट हो जांय। उस सम्मेलन ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज दो ही रास्ते बच रहे हैं। एक है इजारेदार पूंजीवाद का, जिसका अन्त संकट, बचे-खुचे अस्तित्व का सर्वनाश, युद्धों के बार-बार ताण्डव—पूंजीवाद के इजारेदारों ने ही जर्मन जनता को दो-दो बार युद्ध की भयानक आग में झोंक दिया—में ही दिखायी पड़ेगा। दूसरा रास्ता ले जाता है एक नयी समाज-व्यवस्था की ओर, समाजवाद की ओर। जर्मनी का मध्य वर्ग अच्छी तरह समझ चुका है कि इजारेदार पूंजीपतियों के साथ रहकर उसका भला नहीं हो सकता। इसीलिए आज वह उन शक्तियों के साथ खड़ा है जो नये समाज की रचना में लगी हुई हैं।

लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के ६ठे सम्मेलन में (१९५५) "राष्ट्रीय उत्तरादायित्व" नामक थीसिस स्वीकृत हुई। उसमे कहा गया :

"मज़दूर वर्ग हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति है। उसके साथ सारे जनवादियों का सहयोग एक ऐसे सुदृढ़ राज्य की स्थापना को संभव बना सकता है जिसमें समूची जनता के सुखद भविष्य की गारन्टी हो।

मध्य वर्ग के नर-नारी अपनी समूची शक्ति और प्रेरणा से समाजवादी निर्माण में जुट जांय—इसके लिये संतुलित विधि विधान बनाने का उत्तरदायित्व लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी ने अपने ऊपर लिया। इस सम्बन्ध में इस पार्टी ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के समक्ष अनेक सुझाव रखे जो आगे चल कर महत्वपूर्ण कानूनों और आदेशों की आधारशिला बनी।

सन १९५७ में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी का सातवाँ सम्मेलन हुआ जो पार्टी की जागरूकता की मंजिल में मील का पत्थर साबित हुआ। अब हमारे सदस्यों को केवल "मैं" ही नहीं, बल्कि "हम" की अनुभूति भी होने लगी। इस सातवें सम्मेलन ने सिद्ध कर दिया कि मध्य वर्गीय जनता ने समाजवाद को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक समझदारी के आधार पर अपनाया है। अब उसमें इस बात की पूरी-पूरी चेतना व्याप्त हो गई कि समाजवाद की रचना में उसका योगदान एक पुनीत कर्त्तव्य है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

नयी घोषणा

पक्ष में करती है तो जर्मनी की इमान्दार जनता के हृदय में क्षोभ पैदा होता है और वह इस कुटिलता की निन्दा करती है।

बोन पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक की राजधानी है। अडन्योर सरकार ने अभी हाल ही में कहा है कि यह राजधानी अस्थायी नहीं। इससे क्या यह नहीं सिद्ध होता कि पश्चिमी जर्मनी के प्रतिहिंसक संगठनों को पश्चिमी बर्लिन की ओर से अपने क़दम खींच लेने चाहिए क्योंकि वहां उनकी हर कारवाई ग़ैरक़ानूनी है और शांति भंग करती है।

दोनों जर्मन राज्यों के बीच आने-जाने के संबंध में जो नियमावली थी उसमें ८ सितम्बर को कुछ संशोधन किया गया है। पहली नियमावली २१ सितम्बर, सन् १९५३ की है। उसके दूसरे पैरा में जो संशोधन किया गया है वह इस प्रकार है :

पैरा १

१. जर्मन फ़ेडरल रिपब्लिक के नागरिकों को जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन (जनवादी बर्लिन) में प्रवेश के समय चौकियों पर अनुमति-पत्र पेश करना पड़ेगा।

२. जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन (जनवादी बर्लिन) में प्रवेश के लिए पश्चिमी जर्मनी के नागरिक स्वयं या जनवादी बर्लिन स्थित किसी नागरिक या संस्था द्वारा अनुमति-पत्र के लिए निवेदन कर सकते हैं।

३. प्रार्थना-पत्र जर्मन जन पुलिस के संबंधित अधिकारियों के पास भेजे जाने चाहिए।

४. एक निश्चित अवधि के भीतर, जो तीन माह से अधिक न हो, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन (जनवादी बर्लिन) में प्रवेश के लिए एक बार के अलावा भी अनुमति मिल सकती है।

५. ३ सितम्बर सन् १९५६ को उक्त नियमावली में जो बातें जोड़ी गयी थीं उन पर इस संशोधन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पैरा २

१४ वर्ष की आयु तक के बच्चों को अपने अभिभावकों के साथ यात्रा करने की अनुमति दी जायगी।

पैरा ३

यह घोषणा ९ सितम्बर १९६० से लागू होती है।

बर्लिन, ८ सितम्बर, १९६०। गृह मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्वरक---एक परम्परागत निर्यात

एम० क्लीन

दुनिया में जितने देशों का नाम उर्वरक पैदा करने और उसका निर्यात करने की दिशा में मशहूर है उनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र का नाम एक तरह से सबसे ऊपर है क्योंकि उर्वरक के उत्पादन में इसका दुनिया में तीसरा नम्बर है लेकिन निर्यात करने वाले देशों में उसका नम्बर पहला है। सन् १९५८ में यहां १६ लाख ५० हज़ार टन शुद्ध पुटाश पैदा हुआ और वर्तमान सात वर्षीय योजना के लक्ष्यों के अनुसार सन् १९६५ में उसका उत्पादन २० लाख २० हज़ार टन हो जायेगा।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र केवल पुटाश उर्वरक के निर्यात में ही मशहूर है। इस देश का रसायन उद्योग इतना आगे बढ़ा हुआ है कि बहुत अच्छे क़िस्म का नाइट्रोजन उर्वरक पैदा करने में भी वह अपना सानी नहीं रखना। कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारा रसायन उद्योग भी पिछले महायुद्ध के ध्वंस के बाद नये सिरे से उठकर खड़ा हुआ है। हमारी सात वर्षीय योजना सन् १९६५ में पूरी हो रही है। तब तक नाइट्रोजन उर्वरक का उत्पादन ४ लाख टन हो जायेगा जिसमें २१ प्र० श० नाइट्रोजन होगा।

शुद्ध पुटाश का अनुमानित निर्यात (हज़ार टन में)

देश	१९५५-५६	१९५६-५७	१९५७-५८	१९५९-६०
ज० ज० ग०	९८८	९६३	९८०	१,०००
पश्चिमी जर्मनी	७२५	६८२	६७०	७००
फ्रांस	५६४	६००	६४१	७००
अमरीका	२००	२००	२६०	४००

मर्कर्स में 'अन्सर्ट थेलमन' नामक पोटाश का कारख़ाना

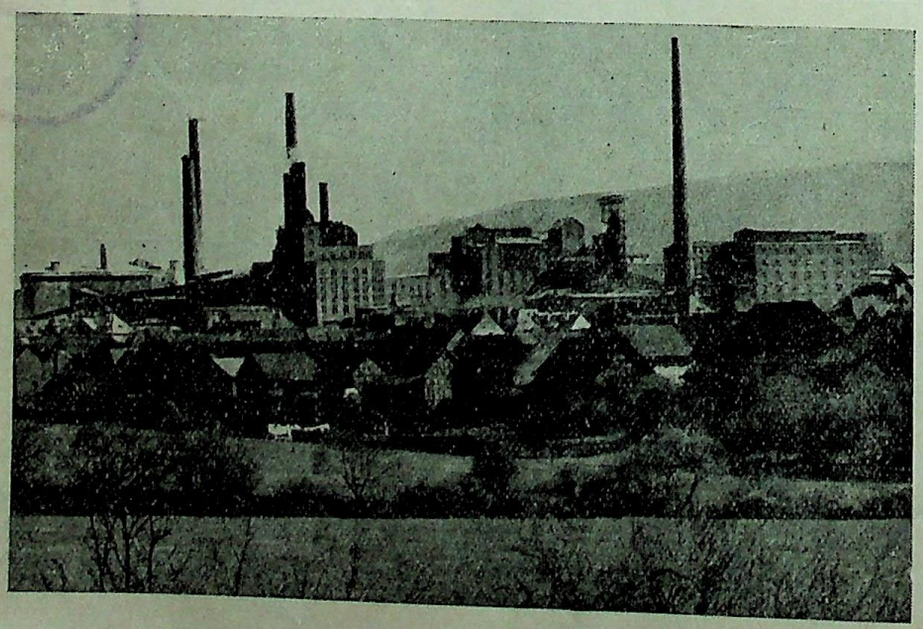

हमारे देश में पिछले सौ-डेढ़-सौ सालों से खेती में पुटाश उर्वरक का प्रयोग हो रहा है। सन् १८५८ की बात है, स्टसफ़र्ट में नमक की चट्टानों की खोज हो रही थी (स्टसफ़र्ट जर्मन जनवादी गणतन्त्र में स्थित है) उसी खोज के सिलसिले में अचानक कड़ुवे नमक का पता लग गया। तब तक यह किसी को नहीं मालूम था कि ऐसे नमक का क्या उपयोग हो सकता है। कड़ुवे नमक की चट्टानें एक-पर-एक जमती रहीं और कुछ दिनों बाद ही यह पता चल सका कि इसका उपयोग उर्वरक में हो सकता है। इस नयी खोज का सारा श्रेय जर्मनी के प्रसिद्ध रसायन शास्त्री जस्टस वान लइबिग को है। इस खोज के बाद इस कड़ुवे नमक की मांग इतनी बढ़ गयी कि सन् १८६० और १८७० के बीच स्टसफ़र्ट के आस-पास ३४ कारखाने बनकर खड़े हो गये।

प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त तक पुटाश उर्वरक पैदा करने में जर्मनी की इजारेदारी रही। सन् १९१८ से १९४० के अन्दर उसकी यह इजारेदारी खत्म हो गयी क्योंकि इस समय तक फ्रांस, अमेरिका और स्पेन भी इस दिशा में आगे आ गए थे।

नाज़ीवाद की पराजय के बाद हमने पुटाश उद्योग को फिर से खड़ा करने का काम सबसे महत्वपूर्ण समझा। आज हमारे देश में इस तरह के कारखानों का एक जाल सा बिछ गया है। हमारे आधुनिक कल कारखानों के साथ हमारी वर्षों पुरानी परम्परायें सोने में सुहागा का काम कर रही हैं। फलतः हमारा उत्पादन आशातीत स्तर तक पहुंच चुका है।

हमारे उर्वरक की खपत जिन-जिन देशों में होती है उनके अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे उर्वरक अपनी उपयोगिता में बेजोड़ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसान मिल जुलकर खेती करते हैं

कार्ल श्रोयडर,

कृषि वैज्ञानिक, कृषि प्रदर्शिनी, लइपज़िग

पिछले साल नई दिल्ली में विश्व कृषि प्रदर्शनी हुई थी उसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भी भाग लिया था। भारतीय जनता ने हमारी प्रदर्शिनी का जिस तरह से स्वागत किया हमारे लिये वह एक मधुर याद बनकर रह गयी है। उस प्रदर्शिनी में हमें अपनी आर्थिक सफलताओं और खेती की उन्नति को भारतीय जनता के सामने रखने का अवसर मिला था। हमारे मण्डप में इंजीनियरिंग के सामानों, "शीशे की गाय" और दूसरी औद्योगिक चीज़ों के अलावा खेती से सम्बन्धित मशीनें भी थीं। सहकारी खेती की उपज का भी प्रदर्शन किया गया था। इस सहकारी खेती में सन् १९५२ से किसानों ने मिलकर काम करना शुरू किया। फलस्वरूप पैदावार बढ़ी। काम आसान हुआ और आमदनी ज़्यादा होने लगी। यही नहीं, इस सहकारी खेती के पास इमारतों, पशुओं, मशीनों तथा शिक्षा, खेल और मनोरंजन के साधनों के रूप में १६० लाख मार्क की पूंजी भी तैयार हो गयी। सहकारी खेती के जितने सदस्य हैं वे नये मकानों में रहने लगे, उनके पास कारें और टेलीविज़न भी हो गये।

हमारे देश नें खेती के सम्बन्ध में जो नीति अपनायी, उसके नतीजों को देखकर किसानों की बहुत बड़ी संख्या उसकी तरफ़ खिंचने लगी। जिन दिनों विश्व कृषि मेला चल रहा था, हमारे देश के लगभग ४५ प्रतिशत किसानों ने निजी खेती छोड़ कर सहकारी ढंग से काम करना शुरू कर दिया था। उसके बाद ज्यों-ज्यों सहकारी खेती का दायरा बढ़ता गया देश में आर्थिक प्रगति भी आगे बढ़ती गयी और बिक्री वाली उपज में हर साल दस प्रतिशत की वृद्धि होने लगी।

इन सफलताओं ने किसानों के सामने यह बात साफ़ कर दी कि सहकारी खेती में शामिल होने का मतलब है रहन-सहन में सुधार, उपज में वृद्धि और शहरों के लिये अधिकाधिक अनाज। फलत: गांव की जनता अपने आप सहकारी खेती में शामिल होने लगी। यही वजह है कि सन् १९५९ के खात्मे और सन् १९६० के शुरू में जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी किसान खेती की सहकारी व्यवस्था में शामिल हो गये। सन् १९४५ में भूमि सुधार कानून बनाया गया था और सन् १९६० में ही सारा देश इस नतीजे पर पहुंच गया कि हमारा भविष्य छोटी-छोटी जोतों में नहीं, बल्कि बड़े पैमाने की सहकारी खेती में ही है।

हमारी खेती के इस विकास में पश्चिमी जर्मनी के किसानों की स्थिति भी कुछ हद तक सहायक हुई है। वैसे तो वहां भी बड़े-बड़े फ़ार्म बनाकर खेती करने का क्रम चालू हुआ है। लेकिन अन्तर यह है कि वहां इस क्रम में पूंजीवादी तरीका अपनाया गया है। अर्थात् इस पूंजीवादी होड़में छोटे और बिचले किसान पीछे रह जाते हैं। उन्हें अपनी ज़मीनें सस्ते दामों पर बेचने के लिये मजबूर हो जाना पड़ता है और बाद को वे या तो उन्हीं फ़ार्मों में मज़दूरी करने लगते हैं या बेकारी के आलम में शहरों की ओर निकल जाते हैं। कहने की ज़रूरत नहीं कि पश्चिमी जर्मनी में ऐसे किसानों की संख्या बहुत बढ़ गयी है लेकिन उनकी दुर्दशा पर वहां सरकार की ओर से पर्दा डालने की कोशिश की जा रही है। किसानों को भ्रम में रखने के लिये वहां यह प्रचार किया जाता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में सहकारी खेती का जो आन्दोलन चल रहा है, उसके पीछे ज़ोर दबाव से काम लिया जाता है। लेकिन इस तरह के प्रचार की असलियत इसी से खुल जाती है कि हमारे देश में जब से सहकारी खेती शुरू हुई, हमारी उपज बहुत बढ़ गई है और हमने इस दिशा में दुनियां भर में रेकर्ड कायम कर

हाथ धोने का भी सलीक़ा होता है! गांव-गांव में बने इन किन्डरगार्टनस का आज से पहले कोई सपना भी देख सकता था?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है। खेती की समस्या को थोड़ा-बहुत भी जो समझता होगा वह यह मानेगा कि पैदावार बढ़ाने के लिये उत्साह सद्भावना और विशेष ज्ञान ज़रूरी हैं और यह चीज़ें आदमी के ऊर थोपी नहीं जा सकतीं। ज़ोर जबर्दस्ती का आरोप पश्चिमी देशों का दिमाग़ी फ़ितूर है जो समय के साथ मिट जायेगा। विश्व कृषि मेले के अवसर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय विवाद-गोष्ठी का आयोजन हुआ था गसमें भाग लेते हुये प्रधान मन्त्री नेहरू जी ने ठीक ही कहा था, "अब तक हमने यही देखा है कि इतिहास ने हमेशा तथ्यों की पुष्टि ही की है, तथ्यों का अपना ही वज़न होता है।" हमारी सहकारी खेती का आन्दोलन ऐसा ही एक ऐतिहासिक तथ्य है जिसमें समूची जनता के बेहतर जीवन की गारंटी मिल रही है।

हमारी यह सरकारी समितियां अभी निर्माण की बेला में हैं इसीलिये उन्हें बे-सहारा नहीं छोड़ा गया है। हमारी सरकार सहकारी खेती को हर सम्भव मदद देती है। विस्मर के ग्रामीण क्षेत्र में सन् १९६० के लिये एक भवन निर्माण योजना तैयार की गयी है जिसमें ८६ लाख मार्क की पूंजी लगेगी। इस योजना में हमारी सरकार ७४ लाख मार्क का क़र्ज़ देगी। सरकारी सहायता का यह एक उदाहरण है। सहकारी किसानों की ट्रेनिंग, पशुपालन की ट्रेनिंग और दूसरे साधनों को मुहैया करने में भी सरकार मदद देती है।

हमारे सहकारी किसान लइपज़िग की कृषि प्रदर्शिनी में अपनी उपज का प्रदर्शन भी करते हैं। इस साल वह प्रदर्शिनी ४ जून से १७ जुलाई तक चली जिसमें कई समाजवादी देशों ने भी भाग लिया था। प्रदर्शिनी के प्रबन्धकों को यह देख-कर खुशी हुई कि भारत से भी कई दर्शक आये। विश्व कृषि मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रदर्शिनी देखने के बाद 'सेवा ग्राग' के प्रधान सम्पादक श्री जी० पी० जैन ने लिखा था, "मैं आशा करता हूं कि मुझे जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा का शीघ्र ही अवसर मिलेगा ताकि वहां की स्थिति से मैं अपने पाठकों को परिचित करा सकूं।"

हमें भी भारत की कृषि व्यवस्था को देखने का अवसर मिला। बम्बई की दूध कालोनी और लखनऊ की वोटेनिकल संस्था में जो प्रयोग किये जा रहे हैं उनसे हम भी प्रभावित हुए। हमारी यह सदा इच्छा रही है कि हमारे दोनों देशों के बीच विशेषज्ञों का आदान-प्रदान होता रहे ताकि हमें एक दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाने का अवसर मिले।

भूल सुधार

सूचना पत्रिका के अंक ९, पृष्ठ ८ पर दायीं ओर प्रकाशित चित्र के शीर्षक में महाराष्ट्र के स्वास्थ्यमन्त्री का नाम श्री एम० एल० शाह के स्थान पर श्री जे० एच० तलयार खाँ होना चाहिए था। इसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सहकारी खेती में शामिल हो जाने के बाद किसानों को फुर्सत भी मिलने लगी है। अब वे खेल कूद और सांस्कृतिक कामों में भी हिस्सा ले सकते हैं।

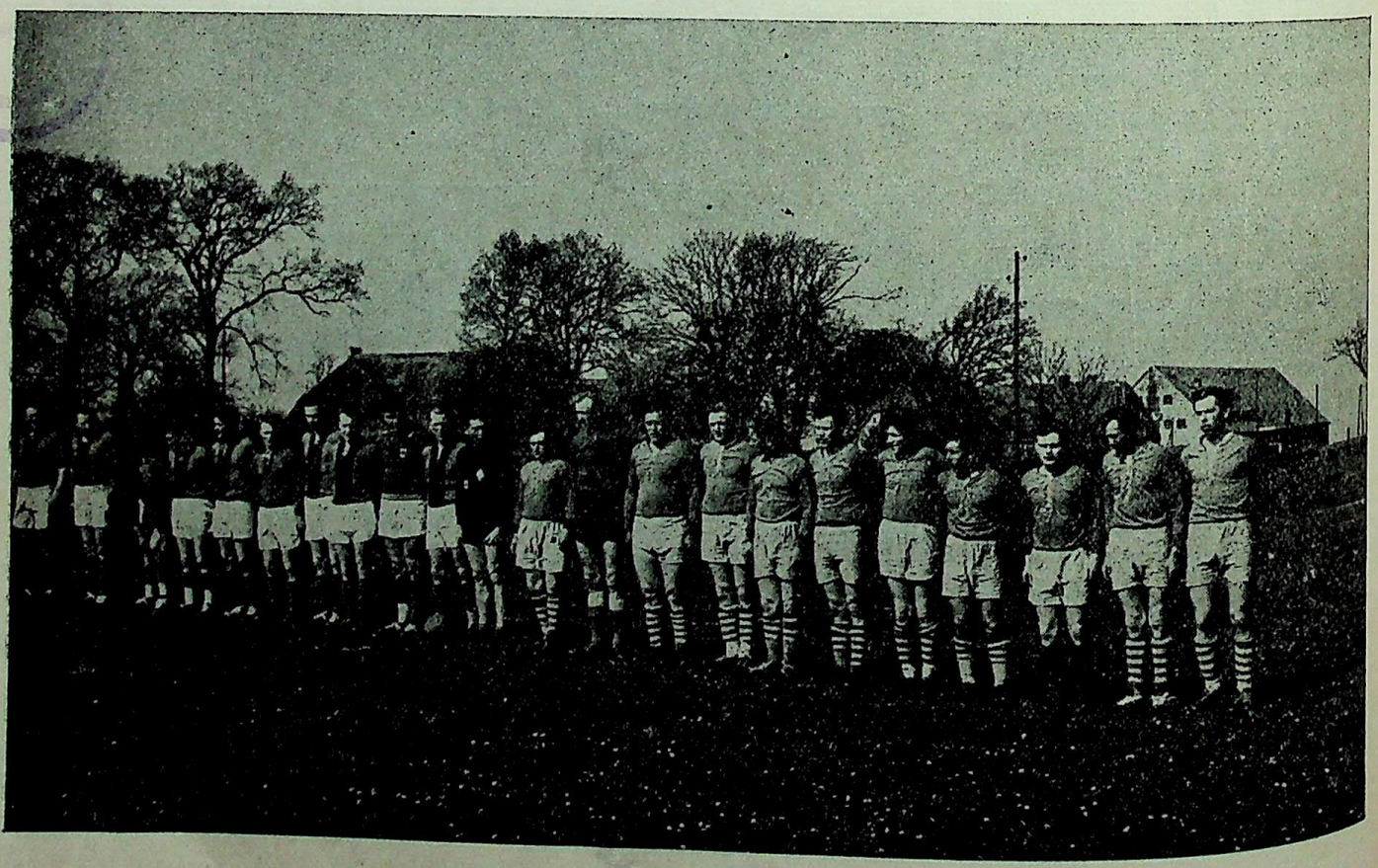

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीकी-एशियाई छात्रों की यात्रा

"हमें बल मिलता है ..."

भारत, हिन्देशिया, ज़ंजोवार, गिनी, घाना, तोगो और कांगों के उंचास छात्रों ने, जो आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र में अध्ययन कर रहे हैं, गत अगस्त में एक हफ्ते का कार्यक्रम बनाकर देश का भ्रमण किया। इस भ्रमण में उन्होंने अन्य स्थानों के अलावा भारी मशीनों का कारखाना देखा, बिस्मर का जहाज़ी कारखाना देखा, रौस्तक का बन्दरगाह देखा और कृषि सहकारी समितियों का निरीक्षण किया।

इस भ्रमण का आयोजन विदेशों से सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने वाले संघ ने किया था।

भ्रमण समाप्त करने के बाद अफ्रीका और एशिया के इन नवयुवकों ने एक अनौपचारिक गोष्ठी में समाजवादी जर्मनी की सफलताओं की प्रशंसा करते हुए इस आयोजन के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

भारतीय छात्र गोविन्द राव ने कहा कि इस भ्रमण से हमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता से निकटतर होने, उसकी स्थिति की जानकारी हासिल करने और खुलकर विचारों का आदान-प्रदान करने का अवसर मिला। हिन्देशिया के छात्र तिस्ना जमेना ने अपने तथा अपने सहपाठियों की ओर से आभार प्रदर्शित करते हुए कहा, "यह यात्रा बड़ी ही दिलचस्प और शिक्षाप्रद रही। हम जहां कहीं भी गये, हमें स्नेह और आदर मिला। हमारा विश्वास है कि हमारे दोनों देशों की मैत्री और मज़बूत होगी।" तोगो के छात्रों ने अफ्रीकी राष्ट्रों के प्रति जर्मन जनवादी गणतंत्र की सद्भावना का उल्लेख किया और विश्व मैत्री, शांति और समाजवाद के चिरजीवी होने की कामना प्रकट की।

भारतीय छात्र मुरली ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वविद्यालयों के उच्च शिक्षा-स्तर की सराहना की। आप इलैक्ट्रो-टेकनीक का अध्ययन कर रहे हैं और दो साल में आपको डाक्टर की उपाधि मिल जाने की आशा है। श्री मुरली इस देश में शिक्षा और उत्पादन के बीच निकट का संबंध देख कर बहुत प्रभावित हुए। आपने कहा, "मैं मशीन-इंजीनियर बनने वाला हूं। इसलिए मेरी सबसे अधिक दिलचस्पी मशीनें बनाने वाले सरकारी कारखानों में थी। लेकिन कृषि सहकारी समितियों की प्रगति से भी मैं कुछ कम प्रभावित नहीं हुआ।" श्री मुरली ने बताया कि भारत वर्ष के गांवों में भी सहकारी समितियों की ओर लोग तेज़ी से झुक रहे हैं। इसलिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की मिसाल हमारे लिए बहुत ही महत्व रखती है। पश्चिमी जर्मनी के अखबारों द्वारा किए गये प्रचार का ज़िक्र करते हुए श्री मुरली ने कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में रहते साल भर होने को आया। लेकिन मुझे तो न कहीं अनाज की कमी दिखायी पड़ी और न भुखमरी।

गिनी के नेबी मूसा जर्मन भाषा सीख रहे हैं। आगे चलकर आप इंजिनियरिंग का अध्ययन शुरू करेंगे ताकि अपने शिशु राष्ट्र के विकास में सहायक हो सकें। श्री मूसा ने बताया, "जर्मन जनवादी गणतंत्र में हमें पढ़ने की जो सुविधा मिली है, वह हमारे देश के लिए एक बड़ी सहायता है क्योंकि अफ्रीका के नवजात राष्ट्रों को विशेषज्ञों की सख्त ज़रूरत है। इस समय गिनी के लगभग ४३ छात्र लइपज़िग में टेक्निकल विषयों और डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मुझे आशा है कि भविष्य में इन छात्रों की संख्या और आगे बढ़ेगी, जिनमें महिलाएं भी होंगी ताकि वे स्वयं अपनी आंखों देख सकें कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में महिलाओं की टेकनिकल शिक्षा के लिए कितनी बड़ी संभावना है।

कांगो की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्री मूसा ने कहा, "कांगो की समस्या तमाम अफ्रीकी जनता की अपनी समस्या है। मुझे विश्वास है कि साम्राजी आक्रमणकारियों को देश से निकालने में कांगो की जनता निश्चय ही सफल होगी। अफ्रीका की जनता स्वाधीन होने के बाद ही अपने अपरिमित साधनों का सदुपयोग कर सकेगी।

मेग्डेबुर्ग में 'कार्ल लीबनेख्त' कारखाना है। यहां से जहाजों के लिए डीज़ल इंजन विदेशों को बहुत बड़ी संख्या में भेजे जाते हैं। आठ सिलेंडर के एक इंजन का टेस्ट हो रहा है।

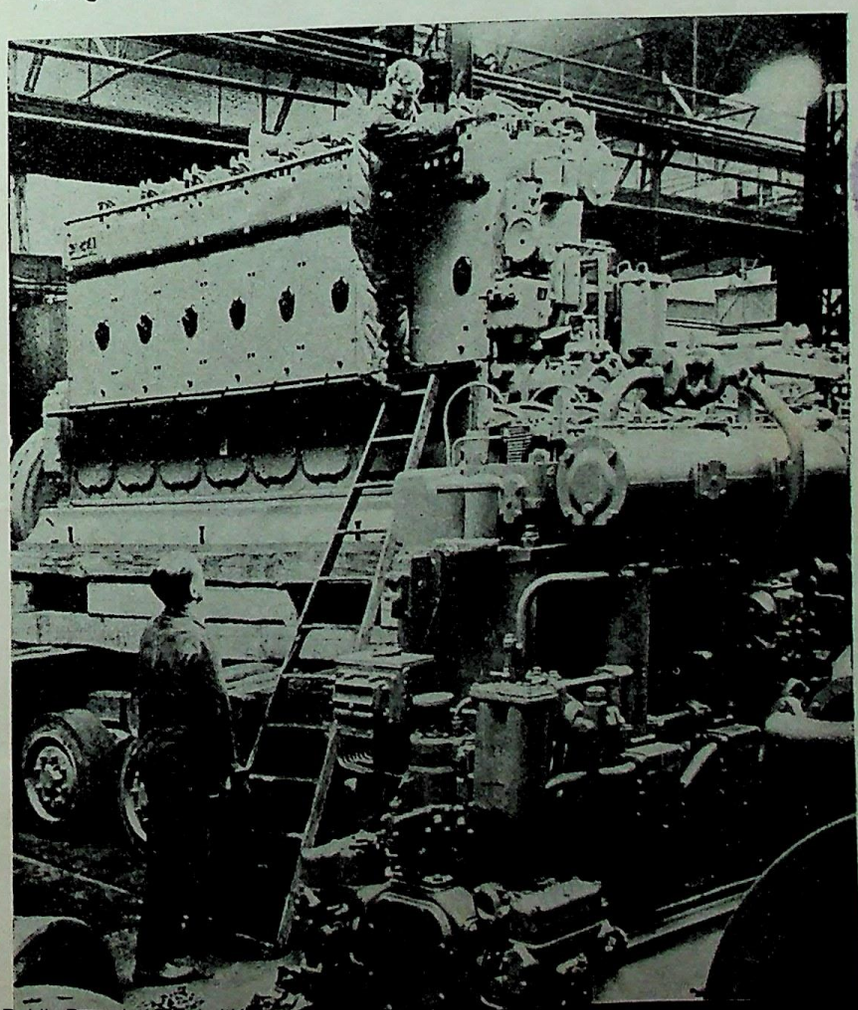

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

योरप की व्यापारश्री : लइपज़िग

सन् १९६० । लइपज़िग का शरद मेला । एक राजनीतिक और आर्थिक उपलब्धि । लोगों ने कहा कि राष्ट्रों के बीच कभी-कभी खाई बन जाती है । व्यापार उसे पाट कर समतल बना देता है । बनावटी दीवारें ढह जाती हैं । शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को सुदृढ़ आधार मिल जाता है ।

लइपज़िग का शरद मेला आठ दिन के लिए ही था । मगर इतने ही दिनों में ७६ देशों से २६६,००० लोगों का संगम हुआ । ४७ देशों ने अपने सामानों की प्रदर्शिनी की । ६८५३ मंडप रचे गये । इन ढाई लाख लोगों ने राजनीति पर बातें की, संस्कृति और साहित्य के चर्चे किये, आर्थिक समस्याओं की गुत्थियों पर रोशनी डाली । लेकिन उन्हें न तो किसी विषय पर बात करते समय कोई झिझक हुई और न कोई संकोच । अलबत्ता एक बात पर सब एक राय ज़रूर थे कि दुनियां की हर समस्या का हल—चाहे वह रजनीतिक हो, आर्थिक हो, या व्यापारिक—सदभावना और समझदारी से ही मुमकिन है । लइपज़िग की यही सबसे बड़ी देन रही ।

और जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश और अन्तर्जर्मन व्यापार के मन्त्री हेनरिख राउ ने भी तो शरद मेले का उद्घाटन करते समय यही कहा था कि देशों की विभिन्न समाज-व्यवस्थाओं के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व क़ायम रहे, इसके लिए उनमें सहज आर्थिक और व्यवसायी संबंधों की बहुत बड़ी भूमिका है ।

इस शरद मेले की व्यापारिक उपलब्धियों ने यह सिद्ध कर दिया कि

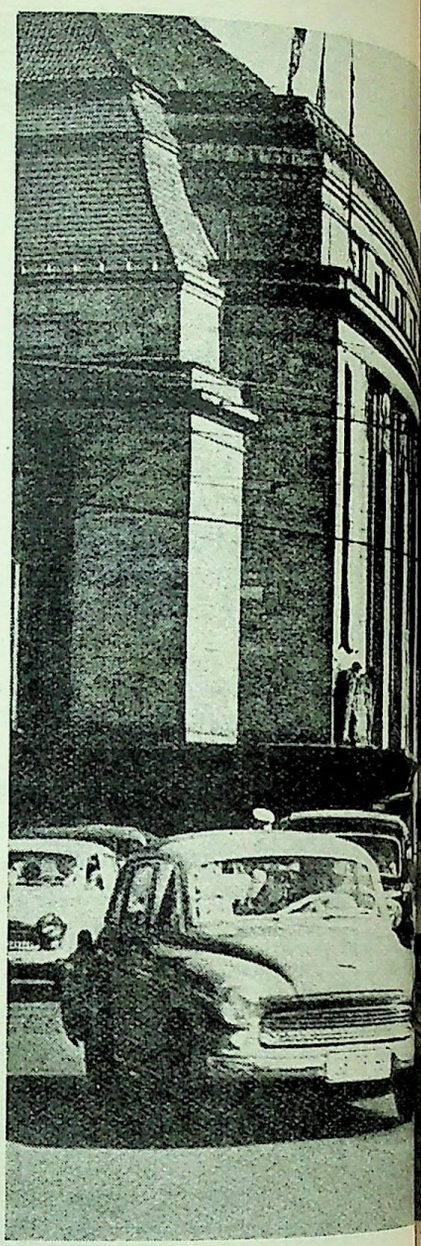

ये ऊनी कपड़े भी राष्ट्रीय उद्योग की ही देन हैं

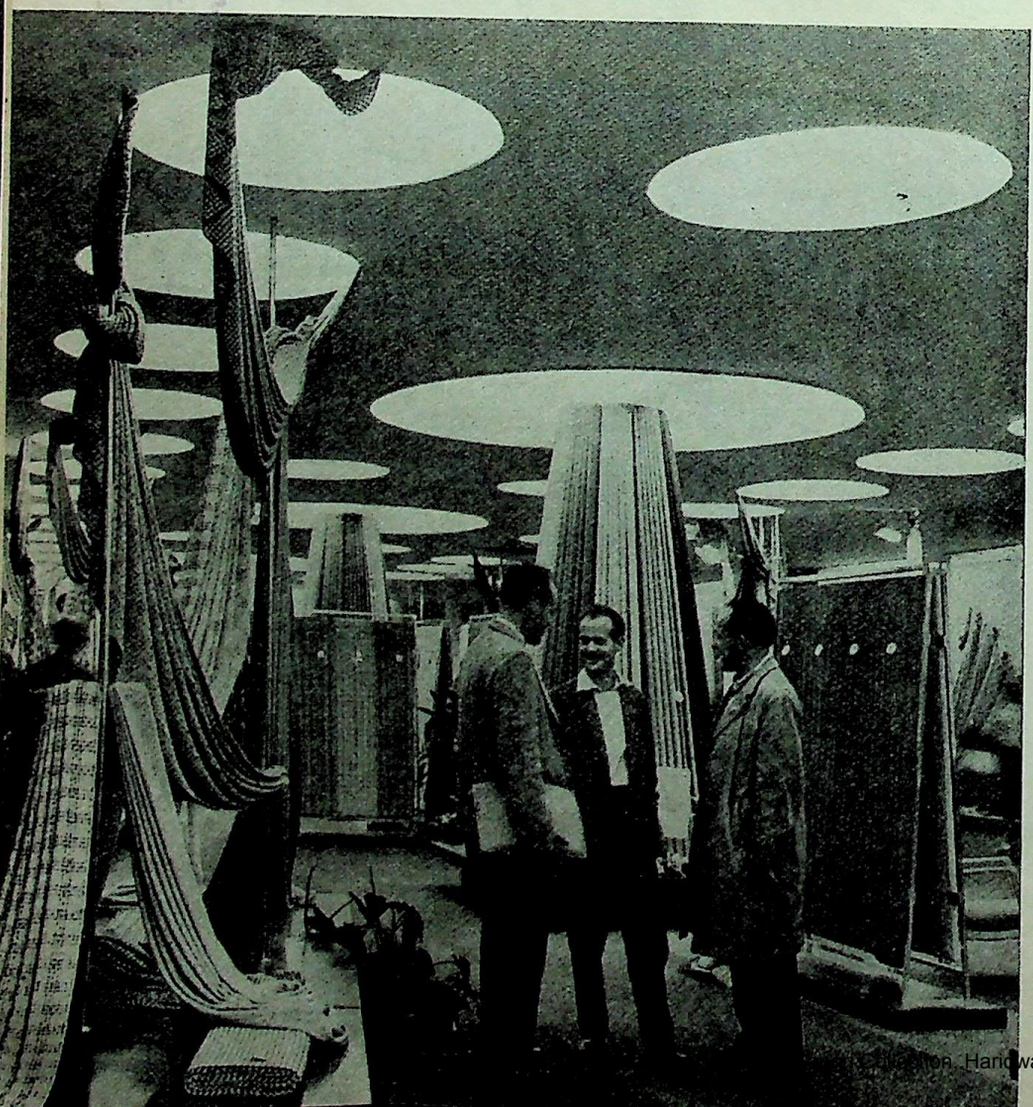

लइपज़िग

१९६० क

उपभोग्य चीज़ों के व्यापार में भी लइपज़िग पूर्व-पश्चिम का एक प्रमुख केन्द्र बन चुका है । सोवियत संघ, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और हंगरी के ७१ व्यापारिक कारपोरेशनों ने हलके औद्योगिक माल के आयात-निर्यात का सुझाव रक्खा । साथ ही जर्मन जनवादी गणतंत्र की ५००० निर्यात संस्थाओं ने भी व्यापारिक समझौते किये ।

Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

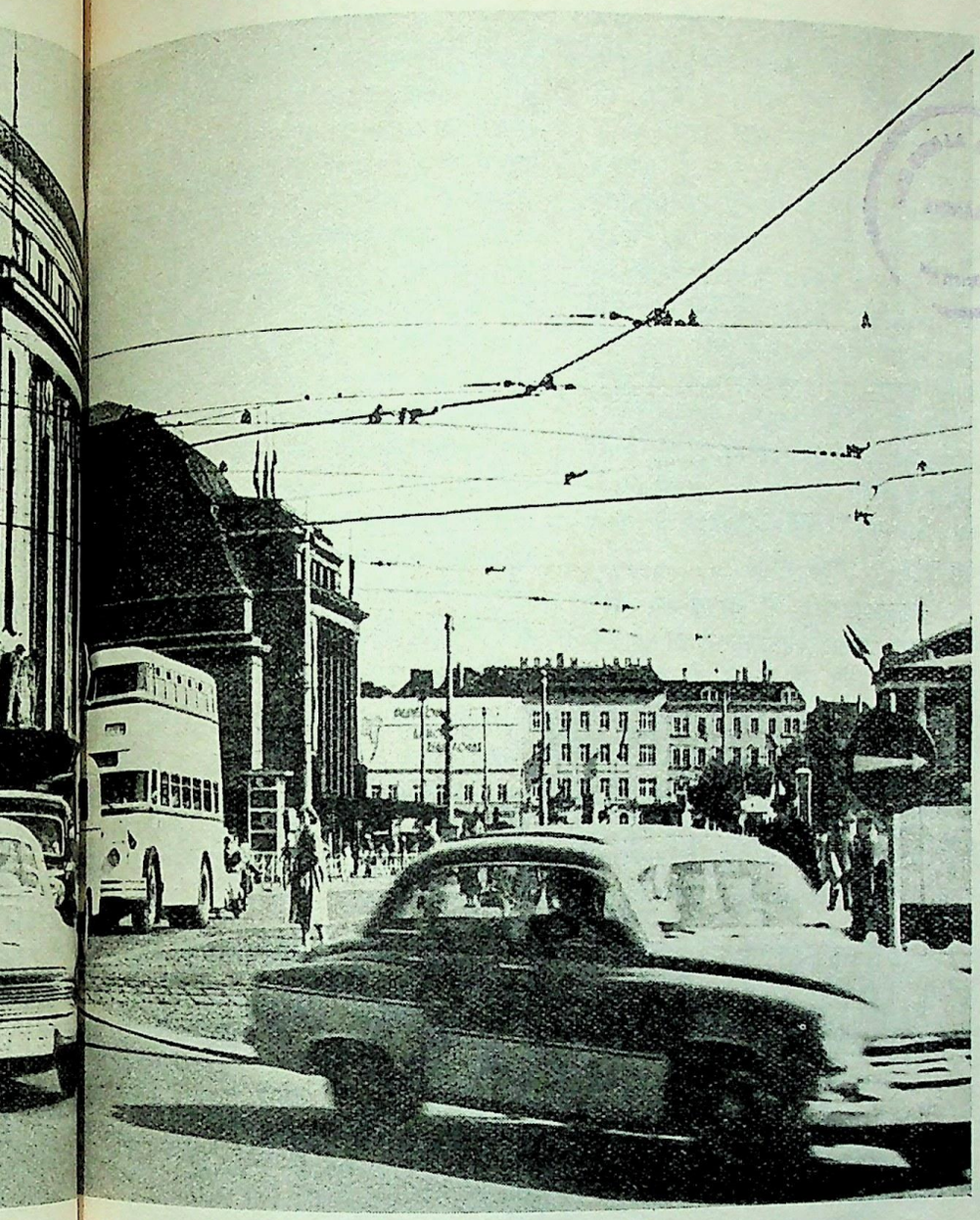

इपजिग स्टेशन रात-दिन यात्रियों से भरा रहता है

मेला : एक महान उपलब्धि

ग़ैर-सोशलिस्ट देशों के साथ तिजारत बढ़ी

इस मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने कुल २ अरब ७३ करोड़ ५० लाख मार्क की तिजारत की जिसमें १ अरब, १७ करोड़ ७० लाख मार्क की तिजारत ग़ैर-सोशलिस्ट देशों के साथ हुई । इस प्रकार हम पश्चिमी देशों के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार बन गये हैं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि इस वर्ष पश्चिमी देशों से हमारे यहां ५,८५९ यात्री आये। यह संख्या पिछले साल की तुलना में ५६७ अधिक है।

इस वर्ष पहले कुछ महीनों में ग़ैर-सोशलिस्ट देशों के साथ हमारे व्यापार की जो प्रगति रही, इस मेले ने उसे चरम सीमा तक पहुंचा दिया । सन् १९६० के प्रथम सात महीनों में पिछले वर्ष की उसी अवधि की तुलना में हमारे निर्यात और आयात की मात्रा २९ प्र० श० आगे बढ़ी है। गिनी, भारत और इराक़ के साथ हमारे व्यापार में क्रमशः १८३ प्र० श०, ६५ प्र०श० और ५४ प्र०श० की वृद्धि हुई। इस वृद्धि ने किन्हीं दो देशों के व्यापारिक संबंधों का रेकर्ड कायम किया है । संयुक्त अरब गणतंत्र, हिन्देशिया, लेबनान, मोरक्को और ब्राज़ील के साथ भी हमारे व्यापार में पिछले वर्ष की अपेक्षा महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है । ये सुफल हमारे व्यापार मंत्री श्री राउ की भावना की पुष्टि करते हैं । मेले का उद्घाटन करते हुए श्री राउ ने कहा था, "...जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार अपने व्यापार का यह मुख्य अंग मानती है कि विदेशों के साथ उसके तिजारती रिश्ते बढ़ें । वह इस पर बहुत ज़ोर देती है ।"

नवजात राष्ट्रों के साथ औद्योगिक सहयोग

हमारे व्यापार की एक प्रमुख विशेषता यह है कि हम उन देशों को अनेक तरीक़ों से सहायता देना गर्व का विषय समझते हैं जो अपनी स्वाधीनताओं को सुरक्षित रखकर उन्हें मज़बूत बनाने के में संघर्षरत हैं । ऐसे देशों को हम उत्पादन के लाइसेंस और तकनीकी

लाइपजिग मेले में भाँति-भाँति के बर्तनों की छवि देखने ही लायक थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनाएं देते हैं और पुर्ज़े जोड़ कर मशीनें बनाने में उनकी हर तरह से सहायता करते हैं। मिसाल के लिये हमने संयुक्त अरब गणतंत्र में टाइपराइटर तैयार करने की अनुमति दी है। औद्योगिक दृष्टि से जो देश पिछड़े हुए हैं वहां हमारी उपभोग्य वस्तुओं की बड़ी मांग है। इस साल मोरक्को, बर्मा, गिनी, घाना, हिन्देशिया, इराक, लेबनान और सूडान में हमारे देश से कम्बल, मच्छरदानी, ऊनी-सूती कपड़े आदि काफ़ी मात्रा में गये हैं। इसके अलावा चीनी मिट्टी के बर्तन, साबुन, वाद्ययंत्र आदि भी भेजे गये हैं।

भारत की सबसे बड़ी प्रदर्शिनी

लइपज़िग के इस शरद मेले में भारत की प्रदर्शिनी सबसे बड़ी थी। उसका मंडप ३५६० वर्ग-फुट में फैला हुआ था। लगभग ३० फ़र्मों द्वारा लाये गये मिल और कुटीर उद्योग के कपड़े—ऊनी, सूती और सिल्क—गलीचे, जूट की बनी चीज़ों को मेले में आये ढाई लाख लोगों ने बहुत ही सराहा। लेकिन सबसे बड़ा लाभ अनेक व्यापारिक समझौतों के रूप में हुआ। भारतीय प्रदर्शिनी के नेता श्री राजनारायण ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार संघ के अध्यक्ष से लम्बी वार्ता की और लइपज़िग मेले में भाग लेने से उन्हें जिस संतोष का अनुभव हुआ उसे भी व्यक्त किया। श्री राजनारायण ने कहा कि अगले वर्ष नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शिनी होने वाली है उसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों का आगमन भारतवासियों के लिये प्रसन्नता की बात होगी।

लइपज़िग मेले में भारत की ओर से जिन लोगों ने भाग लिया उनके सामने यह बात भी स्पष्ट हो गयी कि इस तरह के व्यापारिक मेले तिजारती रिश्तों को बढ़ाने में ही सहायक नहीं होते, बल्कि इनसे एक दूसरे देश की सामाजिक व्यवस्था और रहन-सहन की जानकारी हासिल करने में भी मदद मिल सकती है। नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शिनी और विश्व कृषि मेले का आयोजन हुआ था। लाखों भारतवासियों को इस बात का अवसर मिला कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की औद्योगिक उन्नति से परिचय प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार लइपज़िग में भारतीय प्रदर्शिनी को देख कर जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों को इस बात का अवसर मिला कि वे भारत की सदियों पुरानी कला से परिचय प्राप्त कर सकें, भारतीय कलाकारों और कारीगरों के कौशल से परिचय प्राप्त कर सकें और आज़ादी के बाद भारत ने जो प्रगति की है उस पर संतोष प्रकट करसकें।

लाइपजिग मेले की प्रदर्शिनी में बने भारतीय मंडप का विभिन्न देशों के राजनेता निरीक्षण कर रहे हैं। इन में जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार मंत्री हेनारिख राउ, हंगरी की मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष विली स्टाफ और प्रधान मंत्री डा० फ़ेरेन्क म्युनिश तथा सोवियत गणतंत्र की मंत्रीपरिषद के उपाध्यक्ष आई. स्ट्रुवेव के नाम उल्लेखनीय हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय, बर्लिन, की १५०वीं वर्षगांठ

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय के लगभग १८,००० व्यक्ति आजकल दो महत्वपूर्ण वार्षिकोत्सवों की तैयारी में लगे हुए हैं। उन नें एक तो विश्वविद्यालय की १५० वीं वर्षगांठ है और दूसरी विश्व विद्यालय के अस्पताल के शिलान्यास की २५० वीं वर्षगांठ।

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय की स्थापना सन् १८१० में हुई और यहीं नैपोलियन के विदेशी शासन के विरुद्ध देश भक्ति का जन्म हुआ, स्वाधीनता आन्दोलन की लपट पैदा हुई।

बर्लिन के इस विद्या मन्दिर के जन्मदाता जर्मनी के महान सपूत, भाषाशास्त्री, राजनेता और मानवतावादी विल्हेल्मवान हुम्बोल्ड थे। श्री हुम्बोल्ड का यह स्वप्न था कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा और शोध का अनुपम सामंजस्य प्रस्तुत करे, महान देश भक्तों और उदारचेता वैज्ञानिकों का एक ऐसा संगम बने जहां यदि एक ओर जर्मन जनता की राष्ट्रीय महानता पल्लवित और पुष्पित हो तो, वहीं दूसरी ओर दूसरे देशों की स्वाधीनता और सांस्कृतिक उपलब्धियों के प्रति गहरा सम्मान जगे।

हुम्बोल्ड का यह स्वप्न साकार हुआ। विश्वविद्यालय को आपके अलावा अलेकजेन्डर वान हुम्बोल्ड, जोहान गातलीबी फ़िश्त आदि महान विचारकों वैज्ञानिकों और शिक्षकों जैसी प्रतिभाओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

जर्मन जनता के महान सपूतों और वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापकों कार्ल मार्क्स (१८३६-१८४१) और फ्रेडरिक एंगिल्स ने यहीं से मैट्रिक पास किया था। उन दिनों प्रशा के एक राजा के नाम पर इसे फ्रेडरिक विल्हेल्म विश्वविद्यालय कहकर पुकारते थे।

सन् १८४८ की जनवादी क्रान्ति की असफलता के बाद तमाम प्रगतिशील विचारकों और प्रतिभाशाली तत्वों को विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। प्रतिक्रियाशील दर्शन का बोलबाला हो चला। प्रगतिशील विचारों की हत्या होने लगी। लेकिन समाज की धारा इन बन्धनों से भला कैसे रुकती! समाज की उत्पादन शक्तियों ने बाहें फैलायीं। बर्लिन विश्वविद्यालय के विद्वानों ने उन बाहों को सहारा दिया खासतौर से प्राकृतिक विज्ञान की दिशा में ऐसी सफलताएं अर्जित की गयीं जिनका महत्व सारी दुनिया ने स्वीकार किया। इसी अवधि में यहां के कई विद्वानों को नोबुल पुरस्कार मिले।

१९१८ की नवम्बर क्रान्ति के बाद विश्वविद्यालय की प्रतिभा फिर से चमकी। समाजवाद के प्रेमियों की फिर शक्ति बढ़ी। वामपंथी विचारधारा सम्मान की दृष्टि से देखी जाने लगी। इन शक्तियों ने शिक्षा, शोध और अध्ययन को प्रगतिशील रूप देने के लिए संघर्ष किया।

हिटलरी शासनकाल में यहां के बुद्धिजीवियों ने नाज़ीवाद के विरुद्ध संघर्ष

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय के सामने उसके संस्थापक विल्हेम वान हुम्बोल्ड का स्मारक

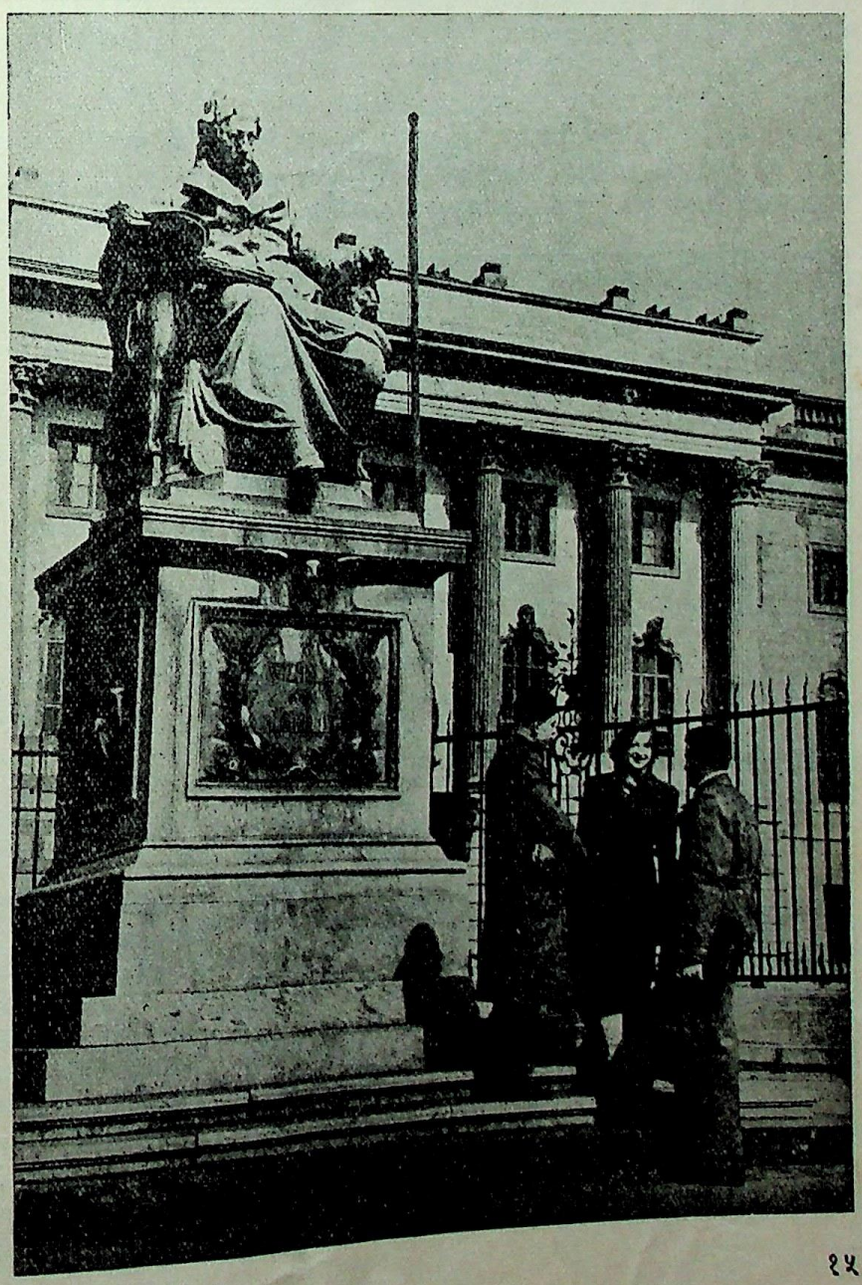

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। फ़ासिस्त तानाशाही में प्रगतिशील बुद्धिजीवी बहुत ख़तरनाक समझा जाता है। इसकी मिसाल हमें हिटलर के शासन से मिलती है। मार्च १९३७ तक २३४ वैज्ञानिकों को नाज़ियों ने देश निकाला दे दिया था।

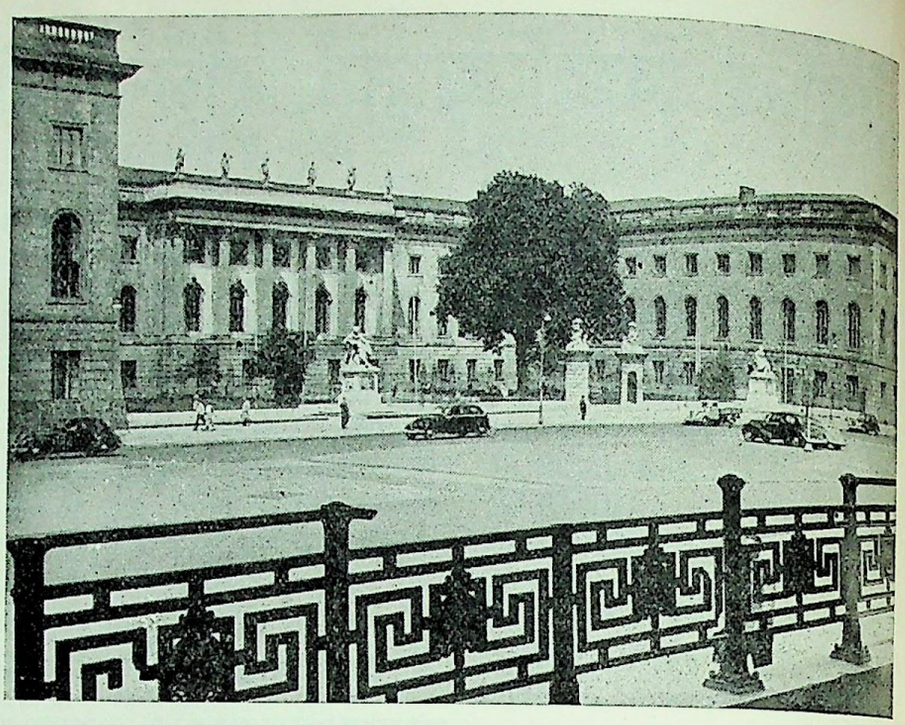

विश्वविद्यालय का मुख्य द्वार

सन् १९४५ में फासिज्म की हार हुई और बर्लिन विश्वविद्यालय के सामने नयी संभावनाओं का द्वार खुल गया। सोवियत संघ और मित्र राष्ट्रों की विजय के बाद विज्ञान की जनवादी प्रगति का भी रास्ता खुला। मज़दूर-वर्ग और उसकी पार्टी के नेतृत्व में जिस पुनर्निर्माण का व्रत जारी हुआ उससे विश्वविद्यालय में भी व्यापक परिवर्तन हुये। और तभी इसके आध्यात्मिक संस्थापक श्री हुम्बोल्ड का नाम विश्वविद्यालय के साथ जोड़ा गया। उसके दरवाज़े तमाम तरह की प्रतिभाओं के लिये खुल गये। सच्चे मानों में प्रगतिशील मानवता और जीवन्त जनवाद की नयी चेतना पुनः बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुई। आज इसमें ११ विभागों और १३३ प्रशिक्षण केन्द्रों में ९,००० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सात वर्षीय योजना काल में छात्रों की संख्या और बढ़ेगी।

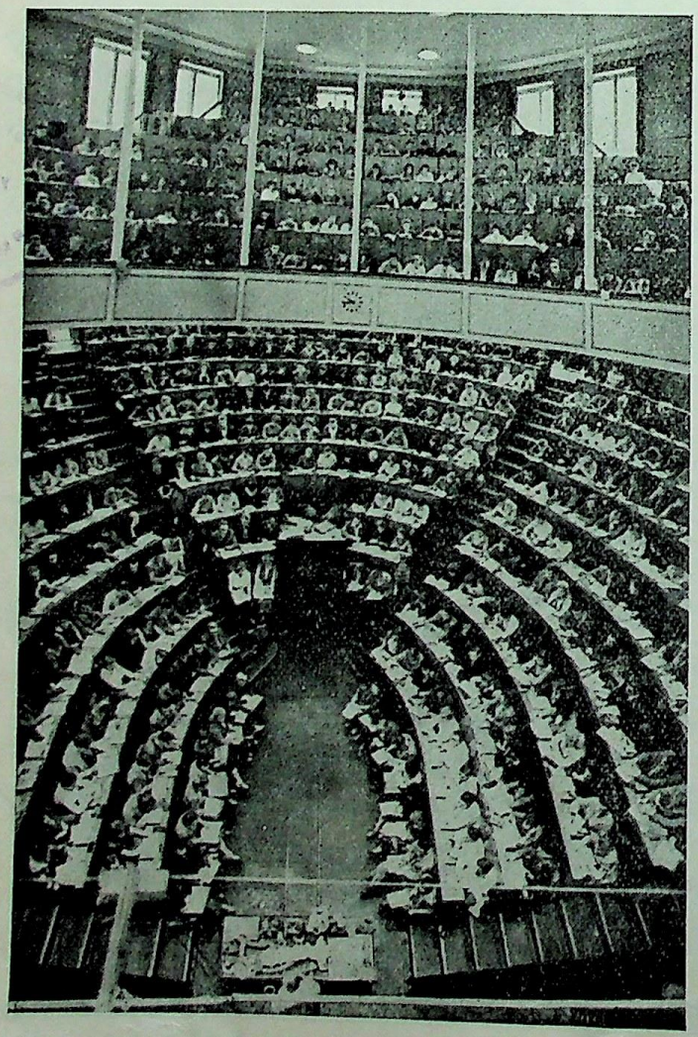

हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय, बर्लिन के आनोटामी विभाग का आडिटोरियम हाल में बनकर तैयार हुआ है, इसमें ६०० छात्र बैठ सकते हैं

आज इस विश्वविद्यालय के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सिद्धांत और अमल को एक सूत्रमें बांधने का है, विश्वविद्यालय की शिक्षा और समाजवादी उद्योग तथा कृषि के लक्ष्यों में एकरूपता लाने का है। उद्योग और कृषि की प्रगति से संबंधित आधुनिक शोधकार्यों और उनका प्रशिक्षण विश्वविद्यालय के सबसे प्रमुख लक्ष्यों में से है। इस दिशा में अनेक ऐसी भी वैज्ञानिक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं जिनके हल के लिए किसानों, सहकारी समितियों और उद्योगों के टैकनिकल विशेषज्ञों का भी सहयोग प्राप्त किया जाता है।

अवकाश की घड़ियों में यहां के छात्र खेल-कूद और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेते हैं। विश्वविद्यालय के गीत नृत्य मंडल के १२० छात्र सक्रिय सदस्य हैं। दूसरे अनेक छात्र रंगमंच में दिलचस्पी लेते हैं। छुट्टियों में छात्रों द्वारा किसानों और मज़दूरों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस प्रकार के कार्य क्रम देश के कोने-कोने तक सांस्कृतिक क्रिया-कलापों के विस्तार में सहायक होते हैं।

बर्लिन के इस हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय की स्थापना जर्मनी के राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ी हुई है। आज, १५० वर्ष बाद, हम पुनः उसी लक्ष्य का संधान कर रहे हैं। आज हमारी समूची वैज्ञानिक प्रगति का लक्ष्य पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवाद को रोकना और एक ऐसे जर्मनी का पुनर्जन्म कराना है जिसकी समूची जनता एकसूत्र में बंधी हो और जहां एक शांतिप्रिय जनवादी राज्य की प्राण-प्रतिष्ठा हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्ती के हाथों का स्वागत

(जर्मन जनवादी गणतंत्र से एक पत्र)

'पूर्वी जर्मनी का जीवन कैसा है ?' जर्मन जनवादी गणतन्त्र से जब मैं अपने देश छुट्टियां बिताने के लिये लौटा तो हर आदमी ने मुझसे यही सवाल किया। अलग-अलग आदमियों के सवालों का जवाब देना मुश्किल होता है इसलिए मैंने यही मुनासिब समझा किआफ्की पत्रिका द्वारा जनवादी जर्मन गणतन्त्र में भारतीय छात्रों की स्थिति के बारे में अपने देशवासियों को परिचित कराऊं।

पहले मैं पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी में पढ़न वाले छात्रों की स्थिति की तुलना आपके सामने प्रस्तुत करूंगा ताकि बात और साफ़ हो जाय।

पश्चिमी जर्मनी

यहां के हर छात्र को ट्यूशन फ़ीस के रूप में हर महीने १५० मार्क देना पड़ता है। एक कमरे के लिये ५० से ७० मार्क महीने में लगता है। खाने पर १५० मार्क से कम नहीं पड़ता क्योंकि पश्चिमी जर्मनी में खाने की चीज़ें काफ़ी नहीं हैं। कालेज तक बस या ट्रेन से जाने में ३५ फ़ेनिंग लगता है। इस प्रकार हर छात्र को बस या ट्रेन का किराया २० मार्क हर महीने पड़ जाता है। इसके अलावा उसे किताबों, कपड़ों और दूसरी ज़रूरी चीज़ों में खर्च करना पड़ता है। बीमार पड़ जाने पर उसे डाक्टर का बिल अदा करना पड़ता है। वह अपनी छुट्टियाँ भी कहीं बाहर जा कर नहीं मना सकता क्योंकि एक पखवारे के अवकाश में ही उसे तीन सौ मार्क खर्च बैठ जायेंगे।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र

लेकिन पूर्वी जर्मनी की हालत उससे भिन्न है। हर जर्मन छात्र को १८० मार्क से लेकर ३०० मार्क तक की छात्र-वृत्ति हर महीने मिलती है। विदेशी छात्रों को २७० मार्क से लेकर ४५० मार्क तक मिलते हैं। फिर न तो कोई ट्यूशन फ़ीस ली जाती है और न प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों के लिये ही कुछ फीस लगती है। होस्टल का किराया १० मार्क प्रति माह पड़ता है। पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों को किताबों और कपड़ों के लिये हर साल ६०० मार्क मिलते हैं। छात्रों को उनके होस्टलों में ९० मार्क प्रतिमाह पर खाना मिल जाता है। आने-जाने के लिये साढ़े सात मार्क हर महीने लगता है, जिसमें वे दिन में जितनी बार और जिस भी ट्रेन से चाहें, अपने शहर में घूम सकते हैं। दवाओं की व्यवस्था मुफ्त है। गर्मी की छुट्टियों में स्वास्थ्य-गृहों और सागर के तट पर रहने की व्यवस्था की गयी है जिनमें १४ दिन तक कोई भी छात्र आनन्दपूर्वक रह सकता है। इसके लिये उसे केवल ४५ मार्क देने पड़ते हैं जिनमें उसके रहने और खाने की सारी व्यवस्था भी हो जाती है। छुट्टियां बिताने के लिये इन साधनों का सुन्दर आयोजन फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन फ़ेडरेशन की ओर से किया गया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र मेंआने वाले हर विदेशी छात्र को पहले साल लइपज़िग में रहना पड़ता है ताकि उसे जर्मन भाषा का ज्ञान कराया जा सके। देश की स्थिति, रहन-सहन और रीति रिवाज से परिचित कराने के लिये इन छात्रों के भ्रमणकी भी व्यवस्था की जाती है। लइपज़िग में कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय है जिसमें उसका एक विभाग है विदेशी छात्र संस्थान। यह संस्थान अपने में एक छोटी-मोटी दुनिया है। यहा सभी तरह की समाज व्यवस्थाओं के छात्र एक साथ रहते हैं, मसलन कम्युनिस्ट देशों, पूंजीवादी देशों और उपनिवेशी गुलामी से मुक्त होने वाले नव जात देशों के छात्र एक साथ उठते-बैठते, खाते-पीते और खेलते नज़र आयेंगे।

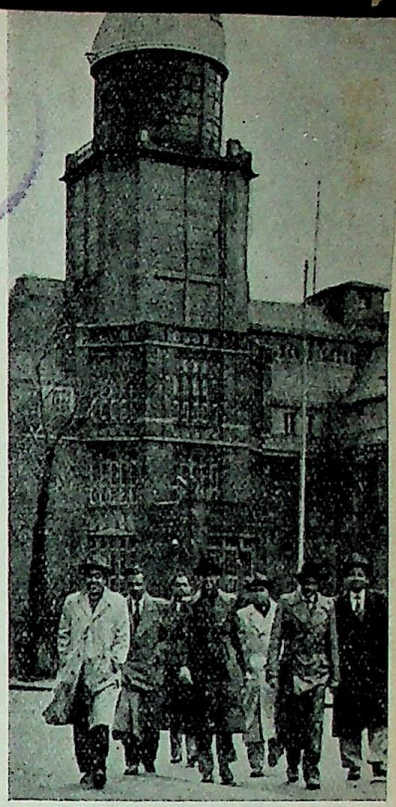

यह ड्रेसडन का टेकनिकल विश्वविद्यालय है

जर्मन जनवादी गणतंत्र में अध्ययन करने वाले विदेशी छात्रों के रहने के लिये होस्टलों की बड़ी सुन्दर व्यवस्था है। हर विदेशी छात्र के साथ एक जर्मन छात्र रख दिया जाता है जो उसकी पढ़ाई-लिखाई में भी मदद करता है। हर विश्व-विद्यालय में छात्रों के क्लब होते हैं जहां मनोरंजन के काफ़ी साधन मिलते हैं। इनके अलावा बहुत सारे ऐसे क्लब हैं जहां अभिनय करना, गाना, बजाना, मोटर चलाना सिखाया जाता है। इसके लिये भी कोई फ़ीस नहीं लगती। अण्डर ग्रैजुएट्स के लिये खेल-कूद अनिवार्य विषय है।

इस देश में भारतीय छात्रों को विशेष आदर और सम्मान मिलता है। जहां कहीं भी भारतीय छात्रों की जर्मन जनता से मुलाकात हो जाती है उनसे पहला सवाल यही किया जाता है कि क्या आप उस देश से आ रहे हैं जिसके नेता नेहरू जी हैं ? इसका जवाब सुनते ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोग खुशी से नाच उठते हैं और आदर सत्कार से भारतीयों को मोहित कर लेते हैं। एक बार मैं एक ऐसे कारखाने में पहुंचा जहां का सामान भारत में निर्यात किया जाता है। यहां के एक जर्मन मज़दूर ने बड़े गर्व के साथ मुझसे कहा, देखिये "यह जो बाल-बियरिंग हम बना रहे हैं वह भारत में भेजा जायेगा ताकि आपका उद्योग विकसित हो और आपकी ४० करोड़ जनता खुशहाल हो सके।"

पिछले युद्धों के विकराल क्षणों ने जर्मनीवासियों को बहुत पीड़ित किया है। वे हमारी मैत्री के लिये सदा हाथ फैलाये रहते हैं। मैं भारतवासियों की ओर से यह कह सकता हूं कि दोस्ती के इन हाथों का हमने सदा से स्वागत किया है और आज भी स्वागत करते हैं।

विजय बत्रा

टेकनिकल विश्वविद्यालय ड्रेसडन

जर्मन जनवादी गणतंत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफ़ा फ़िल्म जगत

गली नं० ८ : एक नया जासूसी चित्र एक नयी ज़िम्मेदारी के साथ

डेफ़ा की प्रतिभाओं ने जासूसी तस्वीरें भी बनाई हैं। लेकिन उन में पुरानी ऊब नहीं, बल्कि एक नयापन है, एक नयी दिशा है।

समाजवादी समाज में जासूसी तस्वीरों की अपनी एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। दर्शक अपने रवैये में तब्दीली लाने पर मजबूर हो, लोगों के साथ अपने रिश्ते की खामियाँ दूर करे और और समाज के एक सदस्य के नाते अपने कर्तव्यों के प्रति लगन दिखाने की प्रेरणा हासिल करे--जासूसी तस्वीरों का ऐसा ही कुछ लक्ष्य होना चाहिए। जासूसी तस्वीरों में अगर अपराध हो जाने के बाद केवल अपराधियों की खोज और गिरफ्तारी तक ही उनका लक्ष्य सीमित रहा तो वह कोई बात न हुई। उनमें तो अपराध रोकने की क्षमता होनी चाहिए।

साइलरगास्से नं० ८ : यह एक जासूसी तस्वीर है। रोस्तक में साइलरगास्से नं० ८ नाम की एक गली है। उसी गली के एक मकान में बीस साल की एक युवती की लाश मिलती है। लाश के पास उसी कमरे में पानी से भरा एक गिलास और कुछ गोलियाँ पड़ी हैं जिनसे खुदकुशी का अंदेशा होता है। लेकिन वहीं पास में एक चम्मच भी पड़ा है जिसका मुआइना करने पर उसमें संखिया के धब्बे मिलते हैं और पोस्टमार्टम से तय होता है कि लड़की का क़त्ल हुआ है! उस

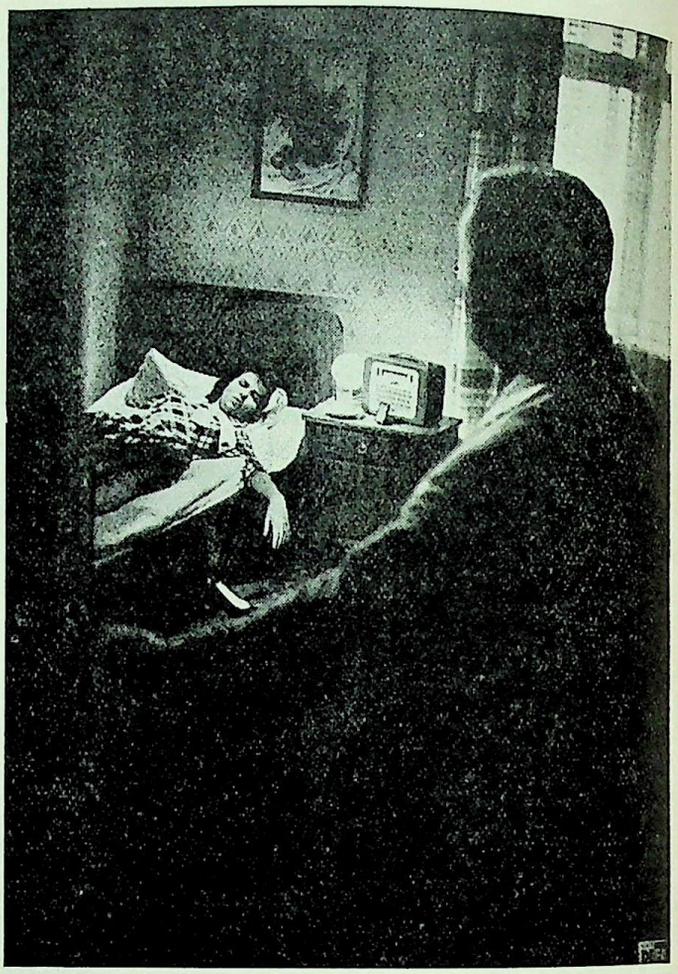

२. लड़की मरी पड़ी है . . . . खुदकशी है या क़त्ल ?

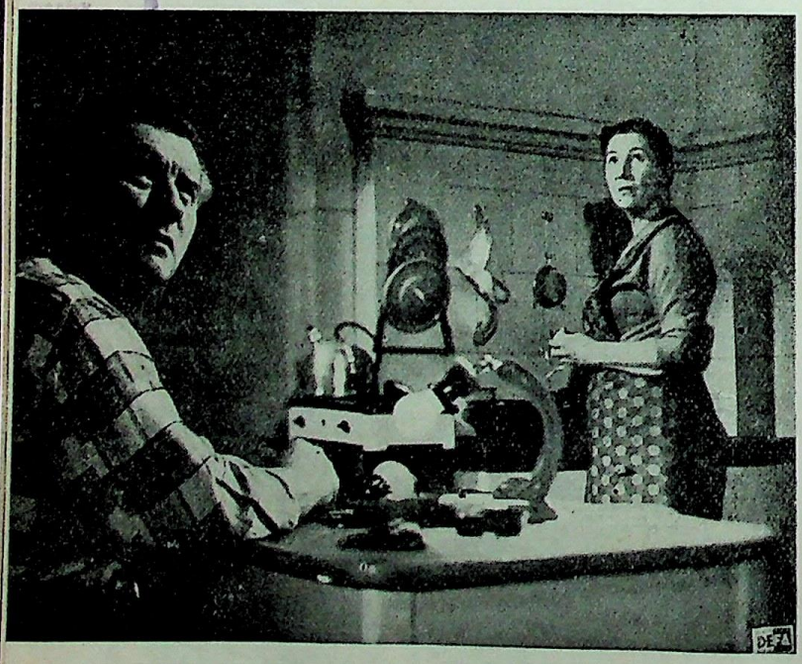

१. "कोठे पर सोयी उस लड़की के साथ कुछ गड़बड़ हुई है"

पुलिस इंस्पेक्टर शिरडिंग ने जाँच शुरू की और . . . . उसका शुबहा अपने ही बेटे पर गया
३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की के घर के पास ही शिरडिंग भी रहता है। शिरडिंग मशहूर जासूस है। उसे ही इस रहस्य का पता लगाना है।

जहर कहाँ से चला ? शायद उस अस्पताल से, जहाँ शिरडिंग का लड़का पीटर अपनी छुट्टियों में काम कर रहा है। पीटर डाक्टरी पढ़ता है। लड़की के कमरे में एक किताब भी मिलती है। उस पर पीटर का नाम लिखा है। शिरडिंग अपने बेटे पीटर से इन तथ्यों की चर्चा करता है और अपना शुबहा बताता है। इस पर बाप-बेटे में झड़प हो जाती है और पीटर अपने एक दोस्त वर्नर हालगस्त के यहाँ चुपचाप चला जाता है।

जाँच जोरों से चल रही है। लड़की के बहुत से जानपहचान वाले भी हैं। जासूसों के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि क़त्ल की उस रात में लड़की के साथ कौन था ?

इस तस्वीर का सिनेरियो लिखने में गुन्टर और जोशिम कुनर्ट को काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जासूस एक भीषण मानसिक द्वन्द में पड़ा है क्योंकि उसके सामने दो-दो फ़र्ज़ उठ खड़े होते हैं। उसे अपराध का पता लगाना है जिसमें वह किसी तरह की भावना का शिकार नहीं बन सकता। दूसरी ओर उसके अन्दर एक बाप का दिल भी है। दो फ़र्ज़ों की टक्कर होती है लेकिन सिनेरियो लिखने वालों ने इसका ख़ूबी के साथ निर्वाह किया है। उन्होंने उस मुहल्ले के भी कई लोगों को जाँच के दौरान चित्रित किया। तस्वीर एक ऐसे मुहल्ले के चारो ओर घूमती है जिसमें रहने वाले मध्यवर्ग के लोग हैं। इससे तस्वीर का यथार्थ और भी चमक उठा है। मुहल्ले वालों के आपसी रिश्तों की पेचीदगियाँ और जासूस बाप और अपराधी बेटे के रिश्ते की गुत्थियाँ इस तस्वीर की जान बन जाती हैं। जासूसी तस्वीरों में अक्सर इंसान के दिल की धड़कन नहीं सुनने में आती। पर यह तस्वीर एक अपवाद बनकर सामने आयी है।

अन्त में क़ातिल का सुराग़ मिलता है। जासूस के बेटे की दोस्ती वर्नर हलगस्त से है। वर्नर हलगस्त यूनिवर्सिटी में पढ़ता है। वह अपने एक प्रोफ़ेसर की लड़की से शादी करने की तैयारी में है क्योंकि उसे उम्मीद है कि इस रिश्ते से वह अपने इम्तहान में अच्छे नम्बरों से पास हो जायगा। उसने मन ही मन यह भी तय कर लिया है कि शादी और इम्तहान में कामयाबी हासिल कर लेने के बाद वह पश्चिमी जर्मनी चला जायगा और वहीं नौकरी ढूंढेगा। इसीलिए वह प्यार की हत्या कर बैठता है।

रात के अंधेरे में जिस लड़की का क़त्ल किया गया था, वह वर्नर की प्रेमिका थी। उसके पेट में एक नया इंसान भी आ चुका था। लेकिन वर्नर हेलगस्त ने न तो अपने प्यार की परवाह की, न उस लड़की की और न ही उस नये इंसान की।

साइलरगास्से नं० ८ : एक यथार्थवादी जासूसी तस्वीर है। इसीलिए घिसी-पिटी जासूसी तस्वीरों से अलग ही उसका अपना आकर्षण है। समाजवादी समाज में अपराधों की जड़ें कैसे सूख जाती हैं—यह तस्वीर उस सवाल का जवाब है।

डाइरेक्टर जोशिम कुनर्ट को कैमरे ने आशातीत सहायता पहुंचायी। हर चेहरा, चेहरों की हर रेखा बोलती सी दिखायी पड़ती है।

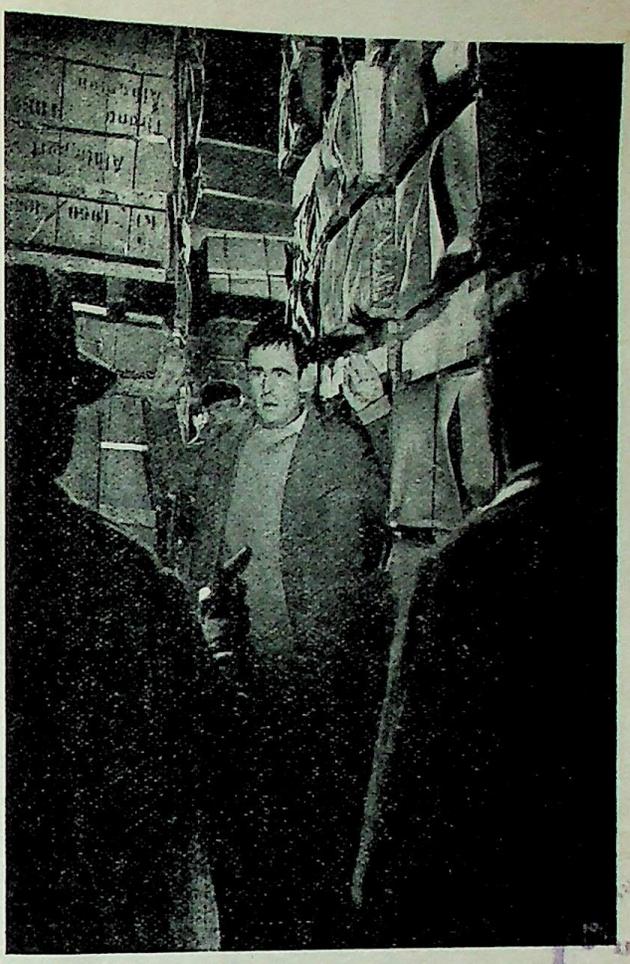

४ शिरडिंग को शायद कोई और सबूत मिला

मार्टिन फ्लोशिंगर, मंजा बेहरेन्स, डीटर पर्लविट्ज़, अलबर्ट गार्बे आदि अभिनेताओं की टीम ऐसे जीवन्त चित्र के लिए सर्वथा योग्य है—यह भी सिद्ध हो गया।

५ डेनमार्क के एक जहाज से भागता हुआ हत्यारा पकड़ा गया

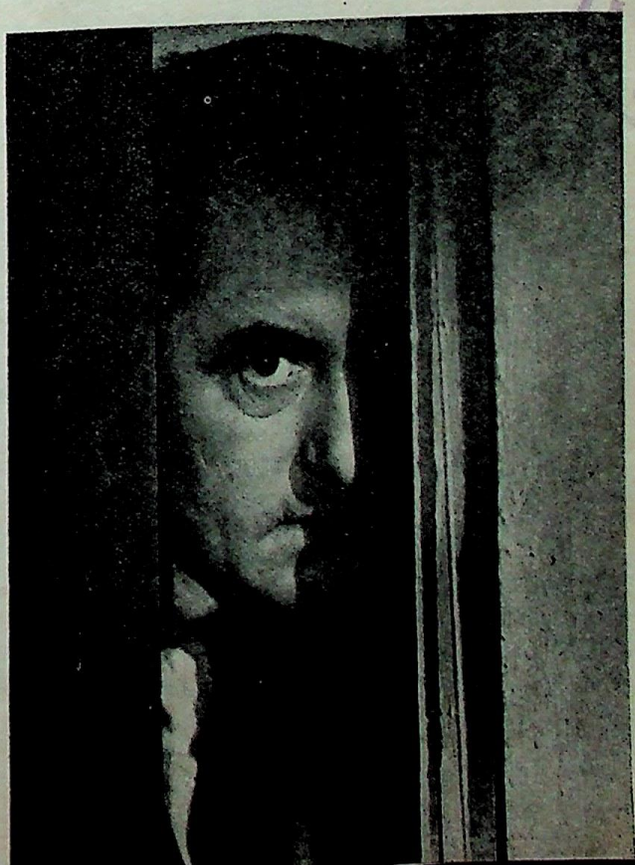

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

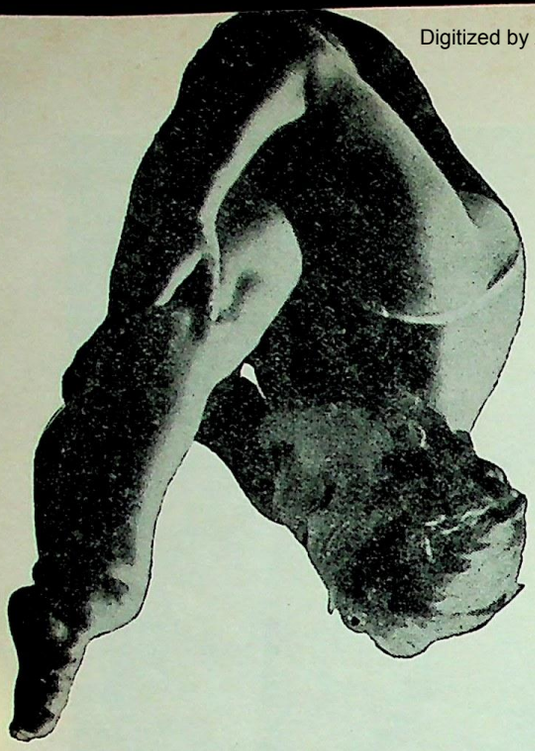

गोता लगाते समय क्रेमर की यह भी एक मुद्रा है ...

→

इस खूबसूरत और शर्मीली लड़की की उम्र महज़ १७ साल है...रोम ओलम्पिक में दो-दो स्वर्ण पदक जीत कर उसने एक नया रिकार्ड कायम किया है ... सड़क साइकिलिंग में लगातार तीन सालों तक विश्व चैम्पियनशिप जीतने वाले जी. ए. शुर के साथ नाचती हुई यही वह लड़की है जिसका नाम इनगर्ड क्रेमर है...

रोम ओलम्पिक की सत्रह वर्षीया हिरोइन

जिस दिन रोम में ओलम्पिक ग़ोताखोरों का सम्मान किया जा रहा था, एक १७ वर्षीया लड़की को सबसे ऊंचे मंच पर खड़ा किया गया। अब तक इस लड़की का नाम लोगों को मालूम भी न था। लेकिन जब उसका नाम सामने आया तो इस रूप में कि उस दिन दुनिया के सारे अखबारों ने अपने पहले पृष्ठ पर उसकी तस्वीर छापी। जर्मन जनवादी गणतंत्र की यह लड़की ड्रेसडन के गर्ल्स स्कूल में पढ़ती है। इसकी उम्र मुश्किल से १७ साल है और इसका नाम इनग्रिड क्रेमर है। दुनिया के अख़बारों में यह खबर छपने के दो-तीन दिनों के अन्दर ही क्रेमर का नाम दुनिया भर के ओलम्पिक प्रेमियों की ज़बान पर चढ़ गया क्योंकि उसी बीच उसने १० मीटर स्प्रिंग बोर्ड की ग़ोताखोरी में भी स्वर्ण पदक जीत लिया। क्रेमर के लिये वे सबसे खुशी के दिन थे। वे क्षण उसकी लगन, मेहनत और निष्ठा के स्वर्णिम पुरस्कार थे। वे क्षण तो बीत गये, लेकिन इस बेचारी खूबसूरत और शर्मीली लड़की को अभी तक कैमरों की चकाचौंध और पत्रकारों की भेंट से मुक्ति नहीं मिली है। एलबे नदी की सुकुमार हवाओं में पलकर बड़ी हुई यह लड़की आज भी दुनिया भर के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

वैसे तो इस ओलम्पिक में बहुतों ने अपने-अपने चमत्कार दिखलाये, लेकिन क्रेमर की उपलब्धियाँ सर्वोपरि हैं। सन १९२० से लम्बी या छोटी ग़ोताखोरी में सिर्फ अमरीकी महिलाओं का नाम विजेताओं में आता रहा है। यह पहला मौक़ा है जब एक दूसरे देश की लड़की ने इन दोनों तरह की होड़ में जीत कर स्वर्ण पदक हासिल किये और उस पर भी कमाल यह कि उसके स्कोर तक आज तक कोई भी महिला तैराक पहुंच ही न सकी थी।

"इनग्रिड क्रेमर का नाम चाहे हम अमरीकियों के लिये कुछ विशेष महत्व न रखता हो फिर भी हम इतना कह सकते हैं कि वह इन दोनों कामयाबियों के लिये सर्वथा अनुकूल है।" यह शब्द एक प्रसिद्ध अमरीकी खिलाड़ी के हैं। यह सच है कि इस अमरीकी खिलाड़ी का कथन बड़ी अहमियत रखता है, लेकिन क्रेमर के बारे में सिर्फ़ इतना ही काफी नहीं है। इस लड़की का खिलाड़ी जीवन सफलताओं की एक लड़ी है। डाइविंग कमीशन (बेलजियम) के अध्यक्ष ने क्रेमर का कौशल देख कर यह भविष्य वाणी की थी कि, "यह लड़की रोम में सोने का तमगा ज़रूर पायेगी।

क्रेमर को भी अपनी क्षमता में विश्वास तो था लेकिन ओलम्पिक स्वर्ण पदक का सपना देखने की हिम्मत वह नहीं कर सकती थी, फिर भी उसने अपनी तैयारी में कोई कमी न की। उसने गोते लगाने का अभ्यास शुरू किया और उसके गोतों का औसत हर रोज़ १५० होता। ओलम्पिक के दिन पास आ रहे थे। क्रेमर के मित्रों और हितैषी पत्रकारों में काफी बेचैनी थी लेकिन क्रेमर को सभी लोग शान्त देखकर ताज्जुब करते थे। शायद उसके इस धीरज का कारण उसकी क्षमतायें ही थीं।

हर चीज की शुरूआत मुश्किल होती है। लेकिन क्रेमर ने मुश्किलों के सामने झुकने का नाम नहीं लिया। शुरू में लोगों ने उसे निरुत्साहित भी किया लेकिन उसी बीच एक दूसरे तैराक ने क्रेमर की पीठ पर हाथ रखा। उसके प्यार ने क्रेमर को आत्मविश्वास दिया और एक साल बाद, जब उसकी उम्र १४ की थी, क्रेमर ने जर्मन चैम्पियनशिप की पहली टायटिल जीत ली। यहीं से एक के बाद दूसरी सफलताएं क्रेमर के गले में विजय-माल पहनाने लगीं।

और ओलम्पिक ने तो उसके खिलाड़ी जीवन में चार चांद ही लगा दिया। क्रेमर को दो स्वर्ण पदक मिले। ड्रेसडन की यह लड़की ओलम्पिक की हिरोइन बन गई। सारी दुनियाँ के हजारों खिलाड़ियों और दर्शकों की आँखें सराहना के फूल बरसाने लगीं। क्रेमर अपनी सहजता के लिये मशहूर हो गई।

गत ओलम्पिक में जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो और खिलाड़ियों उल्फगैंग बेहरेन्ट और हेल्गा हास ने भी स्वर्ण पदक जीते। क्रेमर और ये दो खिलाड़ी आज हमारे देश में खेल-कूद के प्रतीक बन गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

घाना के संसदीय प्रतिनिधिमंडल का आगमन

घाना का संसदीय प्रतिनिधिमंडल गत सितम्बर में जर्मन जनवादी गणतंत्र आया। उसका नेतृत्व वोल्टा क्षेत्र के कमिश्नर एफ० वाई० आसरे कर रहे थे। पीपुल्स चैम्बर के उपाध्यक्ष हेनरिख़ होमन्न और अन्य सदस्यों ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया।

घाना से आये मेहमानों ने अपने प्रधानमंत्री का बधाई संदेश सुनाया और कहा :

"हम जिस किसी भी देश में गये, हमने वहाँ जर्मन जनवादी गणतंत्र की बनी हुई चीज़ें देखीं। हमारे दोनों देशों की जनता में दोस्ती बढ़े हमारे राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध मज़बूत हों—यही हमारा लक्ष्य है और हम अपने लक्ष्य में सफल होना चाहते हैं।" (ए. डी. एन.)

कनाडा के शांति योद्धा का आगमन

डा० जेम्स इन्डीकट शांति आन्दोलन के एक विश्वविख्यात योद्धा हैं। आप विश्व शांति परिषद् के उपाध्यक्ष भी हैं। अभी हाल में आप ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन के महामंत्री गेरल्ड गेटिंग से भेंट की और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर मैत्रीपूर्ण वार्ता की।

'मेरी यात्रा एक महान अनुभूति रही'—सिडनी गार्डन

सिडनी गार्डन कनाडा के एक सुप्रसिद्ध लेखक हैं। आपकी पुस्तक 'तीन महाद्वीपों के डाक्टर' अभी हाल में प्रकाशित हुई है। वे पिछले महीने जब जर्मन जनवादी गणतंत्र आये तो यहाँ 'पुस्तक सप्ताह' मनाया जा रहा था। इसी सिलसिले में उन्हें अपनी नयी पुस्तक पर भी बोलने को कहा गया। सिडनी गार्डन ने कहा :

"इस किताब की तैयारी के सिलसिले में मुझे पूंजीवादी देशों के डाक्टरों के जीवन के बारे में काफ़ी मसाला जमा करना पड़ा। मुझे उनके जीवन से गहरा परिचय मिला। इस लिये मैं अब पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि : एक डाक्टर को अपनी महान जिम्मेदारियाँ पूरी करने के लिए जिन परिस्थियों की आवश्यकता है, जर्मन जनवादी गणतंत्र में वह सबकी सब सुलभ हैं। . . . अब यहाँ स्वास्थ्य का मोल-भाव नहीं किया जाता, बल्कि वह अब हर आदमी का अधिकार है। . . . एक विदेशी के नाते मेरा कहना है कि ज. ज. गणतंत्र में डाक्टरों की ज़िन्दगी मिसाल बन सकती है। काश मैं भी एक डाक्टर ही होता!"

अपनी बात के दौरान श्री गार्डन ने आगे कहा, "बीस-पचीस साल पहले ऐसा विश्वास होने लगा था कि फ़ासिज़्म ने जैसे यहाँ कोई अजेय दुर्ग खड़ा कर दिया है। १९४५ में वह तथाकथित दुर्ग ढह गया और धुंआ उगलते मलवे के अलावा और कुछ हाथ न लगा। आज जरूर जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने समाजवाद का दुर्ग बना कर खड़ा कर दिया है जिसे देखकर मुझमें एक महान अनुभूति का उदय हो रहा है।"

ब्रिटिश लेबर एम. पी. ड्रेसडन में

ब्रिटिश लेबर पार्टी के एम. पी. सर्व श्री लिवेलिन विलियमस, जान मारिस और इफ़ार डेविस ने ड्रेसडन प्रान्त की यात्रा की। पीपुल्स चैम्बर की अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क समिति ने आप लोगों को निमन्त्रित किया था। इन लोगों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधधानी बर्लिन की भी यात्रा की। (ए. डी. एन.)

जापान के मज़दूर नेता की आभार-यात्रा

जापान मज़दूर संघ के महामंत्री अकिरा ज्वे दुनिया के सफ़र पर निकले हैं। चीन, सोवियत संघ, चेकोस्लोवाकिया, बेल्जियम, फ्रान्स और इटली के अलावा आप जर्मन जनवादी गणतंत्र की भी यात्रा करेंगे। जापान में पिछले दिनों जापान-अमेरिकी सुरक्षा सन्धि के विरुद्ध एक जन आंदोलन का तूफ़ान उठा था। इस जन आन्दोलन का जिन-जिन देशों की जनता ने अपना समर्थन दिया उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए श्री अकिरा यह यात्रा कर रहे हैं।

वैज्ञानिक का चमत्कार

दिल में सूई भी लगायी जाय और दर्द भी न हो—अभी तक यह एक असम्भव सी बात थी। लेकिन आज

लइपज़िग में नवनिर्मित आपेरा भवन का एक दृश्य

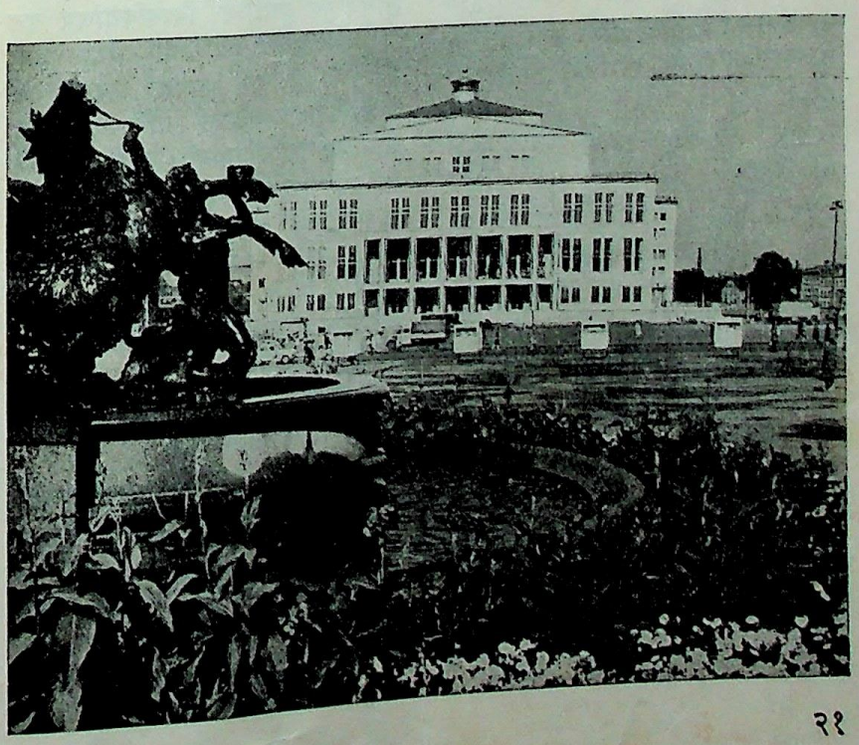

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाली के शुभअवसर पर गांधी मैदान, दिल्ली में आयोजित प्रदर्शनी में जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से भी एक मंडप लगाया गया था

वह सम्भव हो गयी । और जब इस खोज का अभी हाल में रहस्योद्घाटन हुआ तो डाक्टरों की दुनिया में एक हलचल पैदा हो गयी ।

लन्दन में मेडिकल इलैक्ट्रानिक्स की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस का तीसरा सम्मेलन चल रहा था । दुनिया भर के डाक्टर भाग ले रहे थे । तभी जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रो० वान अडेन ने अपना निबन्ध पढ़ा । वह खोजपूर्ण निबन्ध इसी विषय पर था ।

उस निबन्ध का सार यह था कि इस नयी प्रणाली से दिल में सूई लगाते समय न तो दिल में दर्द उठेगा और न उसकी प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा ही पैदा होगी ।

पूरा निबन्ध सुन चुकने के बाद वहाँ एकत्र प्रतिभाओं नें सन्तोष की सांस ली । उस सन्तोष में पूरी मानवता का सन्तोष छुपा हुआ था । मानवता के हृदय की पीड़ा कुछ कम हुई ।

दिवाली का तोहफ़ा और "लाल नदी-नीले पहाड़"

मित्र के सुख में आनंदित होना मैत्री का शुभ संकेत है । दिवाली भारत के ऐसे ही आन्दित क्षणों का उद्घाटन है । सारा देश खुशी से उजागर हो चला था । उसकी राजधानी दिल्ली का तो कहना ही क्या । नव वधू का श्रृंगार शायद ऐसा ही होता हो । भारत के सच्चे मित्र के रूप में जर्मन जनवादी गणतंत्र के दिल्ली स्थित व्यापारिक प्रतिनिधि ने दिवाली मेले में भाग लिया । वह मेला दिल्ली के जनसंकुल चांदनी चौक में आयोजित किया गया था । ज० ज० गणतंत्र ने अपने सुन्दर मण्डप में खिलौने, गुड़ियां, बच्चों के कपड़े, चीनी मिट्टी के बर्तन, नक्काशीदार शीशों के सामान, बिजली से चलने वाली बच्चों की ट्रेन आदि प्रदर्शित किये । किताबों का भी एक स्टाल लगाया गया था जिसमें नेहरू जी की "मेरी कहानी" का जर्मन अनुवाद और भारत संबंधी अनेक सचित्र पुस्तकें थीं । मण्डप के सामने एक बड़ा सा नक्शा लटक रहा था जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन बड़े ही आकर्षक ढंग से दिखाई गयी थी । दर्शकों की नज़र जब उस नक्शे पर पड़ती तो वे यही सवाल करते कि जब बर्लिन पश्चिमी जर्मनी की सीमा से २०० मील दूर जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीचोबीच उसके हृदय की तरह स्थित है तो उस पर पश्चिमी जर्मनी किस मुंह से अपना दावा करता है ?

दिवाली प्रकाश का प्रतीक है । प्रकाश मैत्री का सहचर है । जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भारत को दिवाली का तोहफ़ा भेंट करने के लिए "लाल नदी-नीले पहाड़" पुस्तक का प्रकाशन किया है । यह पुस्तक जर्मन भाषा में है । आसाम के प्राकृतिक दृश्यों को पुस्तक के १०५ चित्रों ने मूर्त कर दिया है जिनमें २२ चित्र रंगीन हैं । आसामी जीवन के अध्ययन के लिए सूबर्ट और शिंडला भारत आये थे । यह पुस्तक उनकी भारत संबंधी सुखद स्मृतियों का प्रतिबिम्ब है ।

गणित परिगोष्ठी

बर्लिन का हुम्बोल्ड विश्वविद्यालय इस वर्ष अपनी १५० वीं वर्षगांठ मना रहा है । इस अवसर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गणित परिगोष्ठी का आयोजन किया जायगा । इसमें दुनिया के बड़े-बड़े गणितज्ञों के भाग लेने की आशा है । अब तक जिन देशों की प्रतिभाओं के भाग लेने की सूचना मिल चुकी है उनके नाम हैं : सोवियत संघ, अमेरिका, बुलगारिया, चैकोस्लोवाकिया, इंगलैंड, फ्रांस, यूनान, इटली, यूगोस्लाविया, नार्वे, आस्ट्रिया, पोलैण्ड, हंगरी, पश्चिमी जर्मनी ।

कपोल कल्पना और लकीर के फ़कीर

"यह बात बिलकुल समझ में आने वाली है कि यदि जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीचो-बीच (प. बर्लिन को) खुफियागीरी और कुप्रचार का अड्डा बनाया जायगा तो वह इसे क़तई बर्दाश्त नहीं करेगा ।" यह टीका फ्रान्स के एक पूंजीवादी अखबार "फ्रांस आवज़र्वर" की है ।

उस पत्र की टीका में आगे कहा गया है, "बर्लिन में चार शक्तियों की उपस्थिति लकीर पीटने की भांति है । बर्लिन संबंधी किसी समझौते में यह नहीं कहा गया है कि पश्चिमी सेनाएं (प. बर्लिन के मेयर) श्री ब्रान्ड को कम्युनिस्ट हमले से बचाने को बाध्य हैं । पश्चिमी कप्तानों के मुंह से यह विरोध सुनने में तो आता है कि चार राष्ट्रों के समझौते का उल्लंघन हो रहा है, लेकिन वे (प. जर्मनी की) उन हरकतों को बड़ी आसानी से छुपा जाते हैं जिनकी वजह से (जर्मन जनवादी गणतंत्र को) ऐसे क़दम उठाने पड़े हैं ।"

यही टीका इतनी दो टूक है कि इस पर और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं ।

खेल में ठकुरई

अभी-अभी सड़क सायकिलिंग की प्रतियोगिता होने वाली थी । जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक विश्व-चैम्पियन भाग लेने गया । एडन्योर की पुलिस ने उस खिलाड़ी को ज़बर्दस्ती खेल के मैदान से निकाल दिया । स्टेडियम में उपस्थित २०,००० दर्शकों की भीड़ हैरान होकर रह गयी ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ११ वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिल्ली स्थित अशोका होटल में गत ७ अक्तूबर को आयोजित एक समारोह में भारत सरकार के वैदेशिक मामलों की उप मंत्रिणी श्रीमती लक्ष्मी मेनन भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापारिक प्रतिनिधि श्री ई० रेनाइज़न से हाथ मिला रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी जिज्ञासा

प्रिय महोदय,

आज-कल हमें अपने समाचार पत्रों से यह ज्ञात हो रहा है कि पश्चिमी जर्मनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र में जो व्यापारिक समझौता था उसे पश्चिमी जर्मनी भंग करने जा रहा है। हो सकता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र को यह बात पसन्द न हो। लेकिन क्या यह सच है कि पश्चिमी जर्मनी के इस फ़ैसले के जवाब में पूर्वी जर्मनी के अधिकारी कुछ ऐसा क़दम उठा रहे हैं जिसमें पश्चिमी बर्लिन की जल-व्यवस्था और रेल यातायात ठप्प हो जायेंगे? हमारे समाचार पत्रों न इस आशय के भी समाचार प्रकाशित किये हैं।

आपका

एस० के० मुखर्जी, कलकत्ता

जर्मन फ़ेडरल रिपब्लिक शीत युद्ध को बढ़ाने की कोशिश में और राजनीतिक दबाव डालने के लिए उक्त व्यापारिक समझौतों को भंग कर रहा है। इस व्यापारिक समझौते के अन्दर यह तय हुआ था कि दोनों राज्यों के अनुकूल सम्बन्धों के अन्तर्गत माल का खरीद-फरोख्त भी होगा और कई दूसरी तरह की सुविधायें भी प्राप्त होंगी। मिसाल के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र से पश्चिमी बर्लिन को पानी की सप्लाई होती रही है और दोनों राज्यों की रेलवे का इस्तेमाल माल ढोने और आने-जाने में होता रहा है। यह सुविधायें तभी तक सम्भव रह सकती हैं जब तक उनकी कीमत मिलने की गारन्टी बनी रहे। अब जबकि पश्चिमी जर्मनी व्यापारिक समझौते को तोड़ रहा हो, दोनों जर्मन राज्यों के बीच रेलवे यातायात और दूसरी सुविधाओं के मार्ग में बाधा उपस्थित हो जायेगी। इसका मतलब यह हुआ कि व्यापारिक समझौते को तोड़ने के बाद उसके जितने भी परिणाम निकलेंगे उनकी ज़िम्मेदारी पश्चिमी जर्मनी पर होगी। जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने अपनी तरफ़ से व्यापारिक समझौतों को नहीं तोड़ा है बल्कि वह तो दोनों राज्यों के बीच व्यापारिक सम्बन्धों को और आगे बढ़ाने की दिशा में बातचीत करने के लिए तैयार है। लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र न तो किसी तरह के राजनैतिक दबाव के सामने झुक सकता है और न ही वह किसी की मनमाना शर्तें ही स्वीकार कर सकता है।

बोन सरकार व्यापारिक मामले को राजनीतिक दाव-पेच में उलझा कर यह एक नई चाल चल रही है। पश्चिमी जर्मनी की सरकार पश्चिम बर्लिन पर अपनी प्रभुसत्ता लादना चाहती है और उसे पश्चिमी जर्मनी का एक हिस्सा बनाना चाहती है, हलांकि अगर नक्शे पर नज़र दौड़ायी जाये तो इस बात में किसी तरह का सन्देह नहीं रह जाता कि समूचा बर्लिन जर्मन जनवादी गणतन्त्र केबीचोबीच स्थित है और उसके चारों तरफ़ ज० ज० ग० के ही क्षेत्र फैले हुए हैं। पश्चिमी जर्मनी की सरकार कोई ऐसा अन्तराष्ट्रीय समझौता भी नहीं बता सकती जिसमें पश्चिमी बर्लिन को पश्चिमी जर्मनी का हिस्सा कहा गया हो। ज़ाहिर है कि ऐसी स्थिति में इन भौगोलिक और कानूनी तथ्यों को बौन सरकार की राजनैतिक चालें मिटा नहीं सकतीं।

—सम्पादक

शुभेच्छाएं

आपकी सूचना-पत्रिका के अंक नियमित रूप से मुझे मिल रहे हैं और मैं उनको रुचि से पढ़ता भी हूं। कृपया मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिएगा। हिन्दी में इतनी स्वच्छ, सुन्दर और उपयोगी-पत्रिका निकालने के लिए आपको बधाई। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के द्वारा हिन्दी भाषी आपके देश की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रगति से भिज्ञ हो सकेंगे। आज के संसार में देशों को पारस्परिक ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। आपके देश की प्रगति भारत के लिए बड़ी भारी प्रेरणा होगी। भौतिक प्रगति में निश्चय ही आपके जैसे योरोपीय देश बहुत आगे हैं। भारतवर्ष दूसरों से सीखने, ग्रहण करने को सदा तत्पर रहता है। सधन्यवाद,

डा० हरिबंशराय बच्चन,
विदेश मंत्रालय, नयी दिल्ली

आपकी भेजी सूचना-पत्रिका मिली। बहुत आभारी हूं। पत्रिका बहुत उपयोगी है। मैं इसका स्वागत करता हूं। बहुत अच्छी छपी है।

वृन्दावनलाल वर्मा
मयूर प्रकाशन, झांसी

मुझे आपकी सूचना-पत्रिका के सितम्बर और अक्तूबर के दो अंक मिले। मैं स्वीकार करता हूं कि इनसे आपके राष्ट्र के संबंध में मेरी जानकारी थोड़ी बढ़ी, और बड़ी बात यह कि और अधिक जानकारी पाने की रुचि पैदा हुई। विशेष रूप से मैं उस स्मृति-पत्र का उल्लेख करना चाहता हूं जो अक्तूबर अंक के साथ परिशिष्ट के रूप में संलग्न है। निस्संदेह उससे विश्वास हुआ कि आप वस्तुतः शान्तिकामी जनगण के प्रतिनिधि हैं और इसलिए मेरे जैसे शिक्षकों द्वारा प्रणाम्य भी। मैं शुभकामना करता हूँ कि आप अपने महदनुष्ठान में कृतकार्य हों। सधन्यवाद,

नागेश्वर लाल
हिन्दी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची, बिहार

.. आपकी सूचना-पत्रिका मुझे बराबर मिल रही है, एतदर्थ अनुग्रहीत हूँ। 'जर्मन जनवादी गणतंत्र' और 'भारत लोकतंत्र' में आपके प्रयत्न से गठबंधन दृढ़ हो, यही मेरी हार्दिक कामना है। संपादन प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है।

(डा०) विश्वनाथ
एम० ए० डी० फ़िल० शांतिनिकेतन (प० बंगाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७।४।६१

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

४ वर्ष ६
अप्रैल
१९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३२४८० केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ६, अंक ४ २० अप्रैल, १९६१

यह अंक

पृष्ठ

एक महान् जीवन ३
लइपज़िक का वसन्त मेला ४
आफ़िस मशीनों का निर्यात ४
दलदल में युवकों का मेला ५
व्यक्तित्व की झांकी
फ्रीदारिख़ एबर्त ५
जनवाद के बढ़ते चरण
महिला एम. पी. अपने काम पर ७
जर्मन फ़ैशन इन्स्टीच्यूट ८
. . . और फिर गांव-क्लब की वह शाम ९
वर्नों का जहाज़ी कारख़ाना ११
जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन
हार्त्स की पहाड़ियां १२
भारतीय विद्याओं के केन्द्र १४
'डायमन्ड' सायकिल—विजेताओं का अस्त्र १६
डेफ़ा फ़िल्म जगत
पांच खाली कारतूसें १८
जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें १९
आपकी जिज्ञासा १९
वीर लरनेन् दोइच
पाठ चार २१

मुख पृष्ठ

तांबाखान के मज़दूर सन् १९६० का लक्ष्य १७ दिन पहले ही पूरा करके खुशियां मना रहे हैं।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, ४७ राजेन्द्र नगर मार्केट, नयी दिल्ली-५ द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक महान जीवन

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपप्रधान मंत्री और विदेश तथा अन्तर्जर्मन व्यापार के मंत्री हाइनरिख़ राउ ने २३ मार्च, १९६१ को सदा के लिए अपनी आंखें मूंद लीं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सोशलिस्ट यूनियन पार्टी की केन्द्रीय कमेटी, राज्य-परिषद, मंत्रि-परिषद, पीपुल्स चेम्बर तथा राष्ट्रीय मोर्चा परिषद ने इस क्षति से शोकाभिभूत होकर एक शोक प्रस्ताव में कहा है कि हाइनरिख़ राउ जैसे लोकप्रिय और लोक-प्रतिष्ठित नेता के आकस्मिक निधन से जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता को महान क्षति पहुंची है।

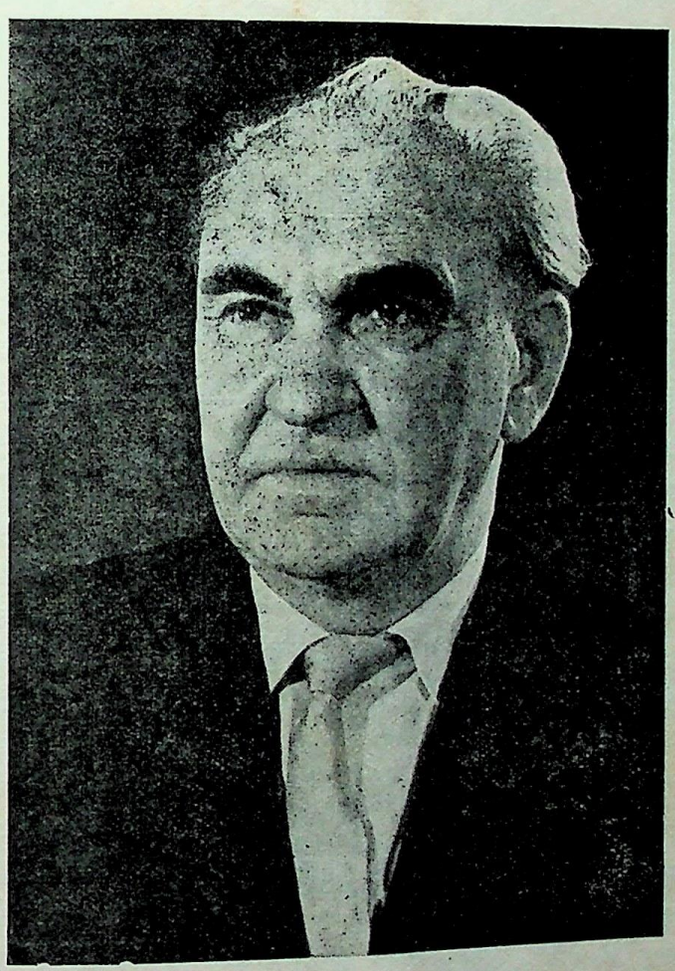

हाइनरिख़ राउ

हाइनरिख़ राउ अपनी तरुणाई से ही जर्मन मज़दूर वर्ग के आन्दोलन के साथ जुड़े हुए थे। जर्मनी को सैनिकवादियों और फ़ासिस्त तानाशाहों से मुक्ति दिलाकर एक नयी और बेहतर समाज व्यवस्था लाने की दिशा में वे आजीवन अडिग भाव से संघर्षरत रहे। नाज़ीयुग में हाइनरिख़ राउ हिटलरी कुशासन के विरुद्ध छुप कर संघर्ष चलाते रहे। बाद को हिटलर के गेस्टापों ने उन्हें गिरफ़तार किया और अकथनीय प्रताड़ना दी। नाज़ियों के जाल से छुटकारा पाकर आप अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड में शामिल हो गये जो उस समय स्पेन में फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ लड़ रहा था। आप उस ब्रिगेड के कप्तान रहे। आगे चल कर आप फ्रांस में फिर गिरफ़तार कर लिये गये और फ़ासिस्त जर्मनी भेज दिये गये जहां उन्हें कन्सेन्टेशन कैम्प में डाल दिया गया। वहां से वे युद्ध की समाप्ति के बाद ही मुक्त हुए।

नये जर्मनी के निर्माण-संघर्ष में हाइनरिख़ राउ हमेशा अगली पंक्ति में रहे। १९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद आपको योजना-मंत्री बनाया गया, १९५२ में उप प्रधान मंत्री, साल भर बाद मशीन निर्माण मंत्री और सन् १९५४ में विदेश और अन्तर्व्यापार मंत्री। इस प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र के वैदेशिक और आन्तरिक व्यापार के विकास के साथ आपका नाम अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। निकट और मध्यपूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नवजात राष्ट्रों के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र व्यापक पैमाने पर व्यापार करें —— इस दिशा में आपने विशेष ध्यान दिया। और इस प्रकार इन देशों में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रति श्रद्धा और सद्भाव के सृजन में आपने अतुलनीय भूमिका अदा की। लइपज़िक मेले ने जिस प्रकार पूर्व-पश्चिम व्यापार के एक महान केन्द्र के रूप में विकास किया है और जिस प्रकार वह राष्ट्रों के बीच व्यापार-संबंधों की वृद्धि और शांति-सद्भाव बढ़ाने में अवर्णनीय योगदान कर रहा है उसके पीछे भी हाइनरिख़ राउ की महती प्रेरणा ही रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लइपज़िक का वसन्त मेला

सन् १९६१ के लइपज़िक वसन्त मेले की चर्चा न सिर्फ़ लइपज़िक के ही बल्कि दुनियाभर के तमाम मेलों के इतिहास में सबसे बड़ी घटना के रूप में की जायगी। ९० देशों से ६२९५०० दर्शक और ४७१ करोड़ ८० लाख मार्क की तिजारत किसी एक मेले के लिए अभूतपूर्व बात है। लइपज़िक का यह वसन्त मेला ५ मार्च से १४ मार्च तक लगा रहा।

इस मेले में ५१ देशों ने अपने-अपने यहां की बनी चीज़ों का प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर प्रदर्शित सामानों की ९ हज़ार क़िस्में देखने को मिलीं। इन में सभी देश थे — .समाजवादी और ग़ैर समाजवादी और हर तरह की चीजें थीं। पूरे-पूरे कल-कारख़ानों से लेकर आधुनिकतम फ़ैशनों तक वह तमाम चीजें थीं जिनकी कल्पना भी संभव न हो। लेकिन यह केवल इसी पहलू के नाते विश्वव्यापी महत्व का मान लिया गया हो — ऐसी बात नहीं। बल्कि यहां लाखों लोग आये, बातें की, दोस्तियां कीं, व्यापार किया, व्यापार की बातें कीं, गले मिले और इस प्रकार दुनिया का तनाव कम करने का एक नया और सशक्त स्रोत फूटा। इस दिशा में भी लइपज़िक का यह मेला मील का एक नया पत्थर सिद्ध हुआ।

मेले ने यह भी सिद्ध कर दिया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र व्यापार के लिए ख़ूबसूरत जगह है। पूंजीवादी देशों ने यहां से ७८ करोड़ १० लाख की चीज़ें मंगाने और ४७ करोड़ १० लाख की चीजें भेजने का समझौता किया। इनमें पश्चिमी जर्मनी का भी कुछ हिस्सा रहा।

समाजवादी देशों से और भी बड़े पैमाने पर व्यापार हुआ। उनसे २५९ करोड़ ८० लाख मार्क के आयात का समझौता हुआ।

इस प्रकार कुल मिलाकर जर्मन जनवादी गणतंत्र के निर्यात-समझौते में १०·२ प्रतिशत और आयात-समझौते में १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मेले में भाग लेने वाले अन्य देशों ने सौदा नहीं किया। उनकी भी दुकानें खूब चलीं। इन्हीं दस दिनों में उन्होंने भी करोड़ों का बिज़नेस किया। सोवियत संघ, चैकोस्लोवाकिया, पोलैंड और हंगरी से ग़ैर-समाजवादी देशों से खूब व्यापार किये।

इस वसन्त मेले ने बहुत से औद्योगिक उत्पादन के मामले में जर्मन जनवादी गणतंत्र को विश्व-स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया जिससे उसके माल की साख भी बढ़ी और उसकी साजवादी प्रगती, अडिग राजनैतिक एकता और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का असंदिग्ध प्रमाण मिला।

लइपज़िक का यह वसन्त मेला केवल एक महान व्यावसायिक प्रदर्शनी ही न था, बल्कि यह पूरे योरप के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक आयोजन भी रहा। मेले में दुनिया के ५०० चोटी के पत्रकार जमा थे। भारत, संयुक्त अरब गणतंत्र, क्यूबा, ब्राज़ील, बर्मा, घाना और हिन्देशिया से सरकारी प्रतिनिधिमंडल आये थे। ब्रिटेन के एम. पी. थे, फ्रान्स के व्यापारिक प्रतिनिधि थे, अनेक अर्थशास्त्री और राजनीतिक थे। और इन व्यक्तित्वों का परस्पर विचार-विमर्श देशों के बीच सद्भावना और आर्थिक-सांस्कृतिक सहयोग को आगे बढ़ाने में प्रेरणा-स्रोत बना।

संक्षेप में यह मेला समाजवादी दुनिया के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और नैतिक अजेयता का एक महान अग्रदूत सिद्ध हुआ।

आफ़िस मशीनों का निर्यात

आफ़िस मशीनों का निर्यात जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार का एक प्रमुख भाग है। हमारे इस निर्यात का दुनिया में पांचवां स्थान है।

हमारी ये आफ़िस मशीनें दुनिया भर में पायी जाती हैं और हर कहीं लोग उनकी प्रशंसा ही करते रहते हैं। इसीलिए हर साल हमारे खरीदारों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आजकल ८० देशों में इनका निर्यात हो रहा है।

सन् १९५६ की अपेक्षा इन आफ़िस मशीनों का निर्यात सन् १९५९ में १५८ प्रतिशत बढ़ गया।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश-व्यापार-नीति उसकी शांतिपूर्ण नीति का एक अभिन्न अंग है। इसकी अभिव्यक्ति भी हर देश के साथ हमारे व्यापारिक संबंधों में हो रही हैं। हमारे व्यापार-संबंधों का आधार शांतिमय सहअस्तित्व है। आर्थिक रूप से कम विकसित देशों के साथ हम अपने संबंधों को विशेष अहमियत देते हैं। इसलिए हम ऐसे देशों को वही माल, वही मशीनें और वही टेकनिकल सहायताएं भेजते हैं जिनकी उनके औद्योगिक विकास में सबसे अधिक ज़रूरत होती है और इसके बदले हम वहां से उनकी इच्छानुसार उनके माल मंगाते हैं।

इधर हमारी आफ़िस-मशीनों का निर्यात इन देशों में बहुत बढ़ा है जो

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलदल में युवकों की सेना

हाइंत्स हाफ़मन

साठवें सेकंड की प्रतीक्षा है . . . खाई के किनारे सिर्फ़ कुछ रेखायें दीख पड़ रही हैं। अपने सफेद टोपों में लड़के-लड़कियां गुड्डों की तरह मालूम हो रहे हैं। वे अपनी घड़ियों की ओर देखते हैं। अब सिर्फ़ ४५ सेकंड रह गये हैं, सिर्फ़ ०—१५—३ . . .

एक विस्फोट के साथ समूचा दलदल कांप उठता। बालू, कीचड़ और घासों के चिथड़े ऊंचाई तक उछलते हैं। एक क्षण के लिए यह सब आसमान में लटका हुआ सा दिखायी पड़ता है और फिर धराशायी हो जाता है। ऊसर के चार युवक रेंग कर खाई से बाहर जाते हैं और विस्फोट वाली जगह पर रुकते है। उनके सामने ६० मीटर लम्बा एक गड्ढा है। वहां ऐसे अनेक गड्ढे हैं। झाड़ियों और चरागाहों से भरे उस पूरे २७५,००० एकड़ भू भाग का दलदल और कीचड़ इन्हीं गड्ढों से निकालना और फिर उसे खेती के लायक बनाना है।

इस २७५,००० एकड़ भूमि में अब तक जंगली जानवर विचरा करते थे। लेकिन अब यहां सजल चरागाहें उगानी हैं ताकि जल्द ही यह बर्लिन के लिए दूध का एक अजस्र स्रोत बन जाय।

झाड़ियां, बलुई ज़मीनों और दस-पन्द्रह गांवों के साथ यह इलाक़ा जैसे ३५ लाख की आबादी वाले बर्लिन शहर के दरवाज़े पर खड़ा है।

लेकिन केवल यह छोटा सा वर्णन इस दलदली दुनिया की ग़रीबी का हाल नहीं बता सकता। दिन भर चरते रहने के बाद भी शाम को यहां से गायें भूखी ही लौटती थीं। रात दिन पसीना बहाने के बाद भी यहां के किसान दो जून की रोटी नहीं जुटा सकते थे। बहुत पहले यहां, जर्मनी के बीचों-बीच, घास का एक बड़ा मैदान था। जहां तक भी आंखें जातीं, एक पीली चादर फैली नज़र आती थी। जर्मनी के पुराने शासकों ने इस ऊसर-बंजर पर एक पाई भी नहीं खर्च किया क्योंकि उन्हें इसमें कोई 'भविष्य' नहीं दिखाई पड़ता था।

लेकिन मज़दूरों और किसानों की सरकार का कुछ और ही रवैया होता है। यहां सिर्फ इतना करना पड़ा कि इस पूरे दलदली भू भाग से कीचड़ पानी बहाकर उसे सुखा देना था। फिर उपजाऊपन तो अपने-आप आ गयी। आज हमें इस दलदल की गोद में एक विशाल भविष्य दिखाई दे रहा है। अब तक यह एक ऐसे खज़ाने की तरह था जिसका उपयोग नहीं हो रहा था।

व्यक्तित्व की झांकी:

फ्रीदरिख़ एबर्त

राज्यपरिषद के सदस्य और बर्लिन के लार्ड मेयर

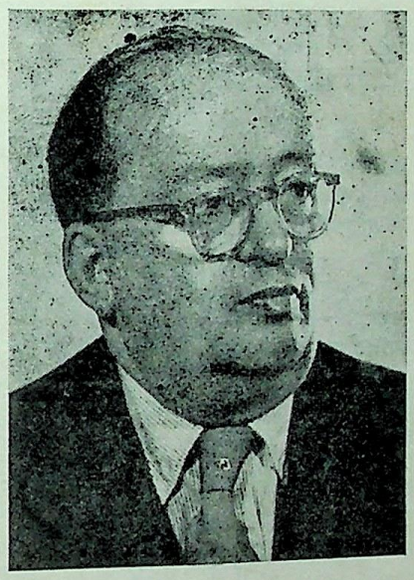

फ्रीदरिख़ एबर्त का जन्म १२ सितम्बर १८९४ को ब्रेमेन में हुआ। आपने छपाई का काम सीखा और १८ वर्ष की ही उम्र में जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य के रूप में मज़दूर आन्दोलन में शामिल हो गये। पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में क्रान्तिकारी दौर शुरू हुआ। जर्मन मज़दूरों ने सशस्त्र संघर्ष (१९१९-१९३३) प्रारम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप जर्मनी से राज्यतंत्र का ख़ात्मा हो गया। इस सशस्त्र संघर्ष में फ्रीदरिख़ एबर्त ने सक्रिय भाग लिया। इसी बीच बर्लिन से और बर्लिन के आस-पास से प्रकाशित होने वाले सोशल-डेमोक्रेटिक पत्रों में आप सम्पादक के रूप में भी काम करते रहे हैं। सन् १९२८ में आप जर्मन लोक सभा में निर्वाचित हुए और १९३३ तक उसके सदस्य रहे। सन् १९३३ में जब फ़ासिस्तों की प्रभुता क़ायम हो गयी तो फ्रीदरिख़ एबर्त को कन्सेन्ट्रेशन कैम्प में डाल दिया गया जहां उन्हें कई सालों तक यातना सहनी पड़ी। वहां से मुक्त होने के बाद नाज़ी क्रूरताओं के बीच उनका फ़ासिस्त विरोधी संघर्ष जारी रहा।

फ्रीदरिख़ एबर्त मज़दूर वर्ग के हितों के अडिग समर्थक रहे। उन्होंने जर्मनी में नाज़ी-कुशासन के विषाक्त परिवेश से सही सबक लिया। उन्हें इसमें कोई संदेह न रह गया था कि जर्मनी के मज़दूर वर्ग में फूट ने ही हिटलर को जन्म दिया। अतः उन्होंने जर्मनी की दोनों मज़दूर-पार्टियों—सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी—में एकता कराने की दिशा में अपनी सारी शक्ति लगा दी। उनका यह प्रयास सन् १९४६ में उस समय सफल हुआ जब बर्लिन समेत जर्मन जनवादी गणतंत्र में उक्त दोनों पार्टियों का विलयन होकर जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी का निर्माण हुआ। सन् १९४८ तक आप ब्रेन्देनबुर्ग में सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के अध्यक्ष रहे। सन् १९४८ में आप बर्लिन के लार्ड मेयर के महत्वपूर्ण पद पर चुने गये। इस पद पर रहते हुए आपने बर्लिन के दोनों हिस्सों को एक-दूसरे के निकट लाने में अनेक प्रयास किये। आप गत १० वर्षों से पीपुल्स चैम्बर के सदस्य और उपाध्यक्ष भी हैं। आप सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की पोलिट ब्यूरो के सदस्य हैं। सितम्बर सन् ६० में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के निर्माण के बाद आप उसके भी सदस्य चुने गये।

आपकी बहुविध सेवाओं के उपलक्ष्य में सरकार ने "कार्ल मार्क्स आर्डर", 'देशभक्त,' 'नाज़ी विरोधी' और 'श्रमिक वीर' की उपाधियों से आपको विभूषित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्लिन बहुत बड़ा शहर है। उसे टनों गोशत, मक्खन और दूध रोज़ चाहिए। आज उसके लिए यह चीज़ें १०० मील दूर मेकलेनबुर्ग से लायी जाती हैं।

अतः यह स्वाभाविक ही था कि इस दलदली दुनिया को सात साला योजना के खास कामों में गिना जाता। सितम्बर सन् १९५८ में इसे युवकों की दुग्ध-योजना के रूप में पुकारा जाने लगा।

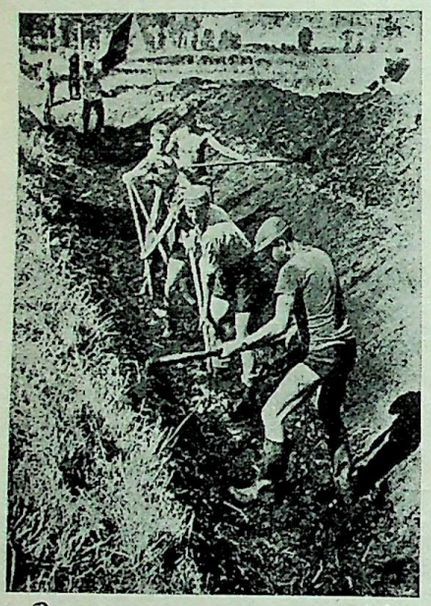

यह छात्रों की श्रमदानी टुकड़ी है

इस योजना के लिए नियुक्त दस्ते का अगुवा २८ वर्षीय इली शाक नामक युवक है। यह योजना के शुरू से ही यहां काम करता रहा है उसका घर पौत्सदम के पास एक छोटे से गांव में है। सूरज और हवा ने उसके चेहरे और हाथों को सिझा दिया है।

इली ने एक बार कहा, "२५००० एकड़ ज़मीन मुर्गी का चारा नहीं! लेकिन हमारे कुछ दोस्तों को इस तरह के काम का अनुभव है। वे हमें रास्ता बता रहे हैं। और हमें अपनी सफलता में कोई संदेह नहीं।

और इस दलदली दुनिया में पिछले दो सालों से सचमुच २० हज़ार युवक काम करने आ चुके। इनमें १७ से २७ साल के बीच लड़के, लड़कियाँ, मज़दूर, छात्र, इंजीनियर सहकारी किसान सभी शामिल हैं। उनके फावड़ों ने १८० मील की खाई खोद डाली। इनसे ५०,००० एकड़ की दलदल सुखायी जा सकेगी।

आइए, अब हम दुइलन गांव चलें। आज वहां के किसानों के चेहरों पर खुशी है। इस साल वे हर ढाई एकड़ पर ७०० कीलोग्राम चारा काट कर जमा करने में सफल रहे जबकि दुग्ध योजना वाले युवकों के आने से पहले २०० किलोग्राम भी मुमकिन न था। दूसरे आज के चारे में ताकत भी ज़्यादा है। आज हर गाय का दूध ४० प्रतिशत अधिक हो गया है।

लेकिन दलदल के युवकों को अपनी प्रगति पर संतोष न था। "दो सालों में केवल ३७५ मील खाई? हमें कुछ नये तरीक़े अपनाने होंगे, तभी हमारा काम तेज़ी से आगे बढ़ सकता है," उनका कहना था।

फिर तो 'नया तरीका' एक नारा ही बन गया। तब तक इस दलदली दुनिया में नये तरीक़ों की बात कल्पनातीत रही। लेकिन युवकों में खोज की भी कितनी प्रतिभा होती है। वे इंजीनियरों और टेकनीकल मज़दूरों के साथ विस्फोट के नये-नये तरीक़े इजाद करने लगे और इस प्रकार अपनी क्षमता में ११६ प्रतिशत की वृद्धि कर ली। दूसरे इन तरीक़ों से काम का खर्च भी कम हुआ।

अन्त में युवकों की मेहनत का फल सामने आया। सन् ६० के मध्य में उन्हें सही तरीका मालूम हो गया। यह तरीका उन्हीं विस्फोट का था जिसका ज़िक्र शुरू में किया गया है। यह एक ऐसा विस्फोट रहा जिससे ३.५ मीटर चौड़ी और १.५ मीटर गहरी खाई एक ही बार में उड़ायी जा सकती है। "यहां तक कि हम लोग भी ताज्जुब में पड़ गये," उली ने कहा, "पहले की अपेक्षा हमारा खर्च एक चौथाई हो गया। हमारी मशीन ३,००० मीटर खाई खोदती है जिसमें पहले १८० आदमी लगा करते थे।"

इस प्रकार दलदल सूखने लगा। चरागाहें उगने लगीं और ढोरों को सरस घास मिलने लगी। लेकिन गायों को दुहना तो पड़ेगा ही क्योंकि अभी तक कोई ऐसा तरीका नहीं निकल सका है जिससे वे अपने-आप दूध दे दिया करें। इसलिए नौजवानों ने आधुनिक ढंग पर गोशालायें बनायीं। ६ मील लम्बी पक्की सड़क भी बना डाली ताकि दूध ढोने वाली लारियों की यात्रा आसान हो जाय।

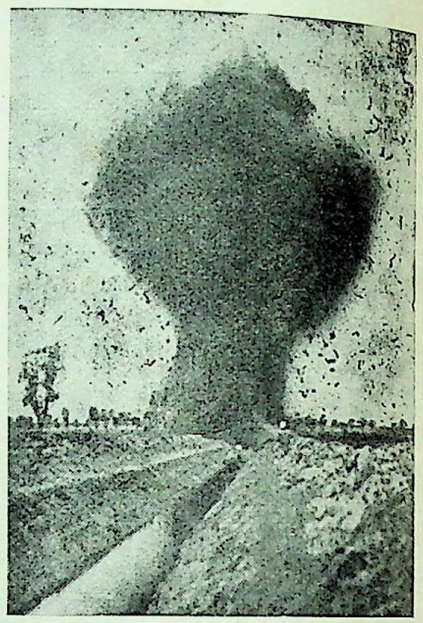

विस्फोट, बालू, कीचड़ और घास का लोंदा

और यह निर्माण ऐसे ही आगे बढ़ता गया।

कल इतवार है। इन नौजवानों की छुट्टी है। वे पिंग-पॉग खेलेंगे, टेलिविज़न देखेंगे, पढ़ेंगे, घूमेंगे। उन्हें इतवार का बुरी तरह से इन्तज़ार है।

उली ने मुझे कुछ आँकड़े दिये—महज़ आँकड़े। लेकिन उन आँकड़ों के पीछे इन युवक-नायकों की कहानी थी। महज़ दो साल में उन्होंने ७१,००० घंटे फ़सल-कटाई में ५५,००० घंटे दूसरे श्रमदान में काम किया। कहना न होगा कि काम के ये घंटे उनके नियमित काम से अलग हैं। पारेन गांव के बाहर दो किसान खड़े हैं। एक बूढ़ा और दूसरा नौजवान। बूढ़े का चेहरा झुर्रियों का घोंसला बना हुआ है। वह कहता है," वे हमारे दलदल को लहलहाता बगीचा बनाये डाल रहे हैं। अब तो घास के इस मैदान का मतलब होगा अधिक गोश्त, अधिक दूध और अधिक मक्खन। मैंने तो ऐसा सपने में भी नहीं सोचा था।" बूढ़े के स्वर में खुशी के साथ-साथ श्रद्धा भी है, तरुण पीढ़ी के लिए श्रद्धा . . . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

महिला एम. पी. अपने काम पर

हरबर्त थामस

बर्लिन के टेलीफ़ोन कारख़ाने में जाते ही एक चीज़ सबसे उभर कर सामने आती है और वह है एक महिला की चर्चा। कारख़ाने में लोग 'हमारी एर्ना' कह कर उसके बारे में बातें करते हैं, वैसे उसका नाम है एर्ना केदाओ। वह जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर यानी लोक-सभा की सदस्य हैं।

श्रीमती एर्ना सन् १९५२ से उसी कारख़ाने में काम कर रही हैं। यह कारख़ाना भी सरकारी क्षेत्र में है। जिस दिन से श्रीमती एर्ना ने काम शुरु किया, उसके सहकर्मियों ने देखा की एर्ना अपनी ड्यूटी के साथ-साथ तमाम मज़दूरों के हितों का भी ख़्याल रखती हैं।

इस लिए सन् १९५४ में जब पीपुल्स-चैम्बर का चुनाव शुरु हुआ तो इस कारख़ाने के सामने अपने प्रतिनिधि के चुनाव की समस्या मुश्किल न लगी। एर्ना पीपुल्स चैम्बर की सदस्य चुन ली गयीं। पीपुल्स चैम्बर के ४४६ सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या ११४ है।

श्रीमती एर्ना के एम. पी. बन जाने के बाद मज़दूरों की ओर से सबसे अधिक

श्रीमती एर्ना एम. पी.

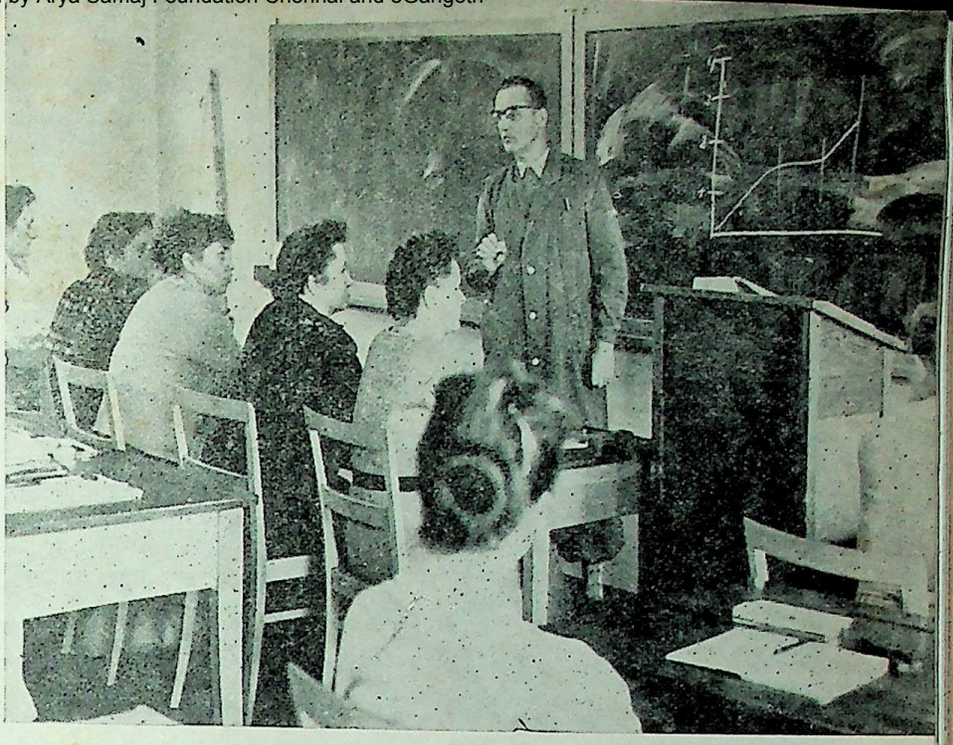

कारख़ाने में महिला श्रमिकों की योग्यता बढ़ाने के लिए विशेष कक्षाओं के प्रबन्ध का भी श्रेय उनकी एम. पी. श्रीमती एर्ना को ही है

तकाज़ा निवास-समस्या को लेकर किया जाता है। हालांकि मकानों की समस्या निवास-आयोग की ज़िम्मेदारी होती है। लेकिन श्रीमती एर्ना ने जहां कहीं लाल फ़ीते की वजह से काम में ढिलाई देखी, वे तुरन्त दख़ल देती हैं। उनका एक साथी मज़दूर बर्लिन के पड़ौस में रहता था। उसके मकान-मालिक ने मकान खाली करने की नोटिस दी और कहा कि अब मकान की उसे ही ज़रूरत है। निवास-आयोग ने मामला निपटाने के लिए ज़िला-परिषद से अनुरोध किया। लेकिन कई हफ़्ते बीत गए और कुछ न हुआ। श्रीमती एर्ना ने सीधे उस इलाक़े के मेयर को लिखा और कुछ ही घन्टों में मामला तय हो गया, मज़दूर को मकान में बसे रहने की अनुमति मिल गयी।

दूसरी मिसाल सुनिये। गीसेला थुल्के एक दूसरी मज़दूर है। वह अपने एम. पी. के पास आकर बोली : "मैं अपना बच्चा अस्पताल से तो ले आयी, मगर किन्डर गार्टेन वाले उसे भर्ती नहीं करते क्योंकि वह अभी बहुत छोटा है। अब मेरे सामने घर पर बैठने के अलावा और कोई चारा नहीं। ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए ?" श्रीमती एर्ना ने पहला काम तो यह किया कि अपनी सहयोगी को कुछ भत्ता दिलवाया। फिर सोचने लगी कि क्या हमारा फ़र्ज़ पूरा हो गया ? क्या अनेक दूसरी माताओं की यही स्थिति नहीं होगी ? श्रीमती एर्ना ने ख़ूब सोच-विचार कर पीपुल्स चैम्बर के सामने एक प्रस्ताव रखा कि विधवाओं और ऐसी काम-काजी माताओं को, जो अपने घर में अकेली हों, और जिनके बीमार बच्चों की देख-भाल ज़रूरी हो, सरकार की ओर से आर्थिक सहायता दी जाय। यह प्रस्ताव स्वास्थ्य मंत्रालय को भेज दिया गया।

और कुछ ही हफ़्ते बाद स्वास्थ्य-मंत्रालय ने इस संबंध में एक आज्ञा प्रसारित करके देश भर की उन तमाम माताओं के लिए आर्थिक सहायता की स्वीकृति दे दी जो उक्त स्थिति में हों। देश की काम-काजी माताओं की ख़ुशी की सीमा न रही।

इससे हम यह भी देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की श्रमजीवी जनता न सिर्फ़ कानूनों के अमल में हिस्सा लेती है, बल्कि उनके बनाने में भी अपनी भूमिका अदा करती है।

हमारे देश के एम. पी. लोगों का एक महत्वपूर्ण काम यह है कि वे सरकार के कानूनों को जनता तक पहुंचायें। एर्ना एक क़दम आगे ही दिखाई पड़ती है।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन फ़ैशन इन्स्टीच्यूट

एलीश्मित, संचालिका

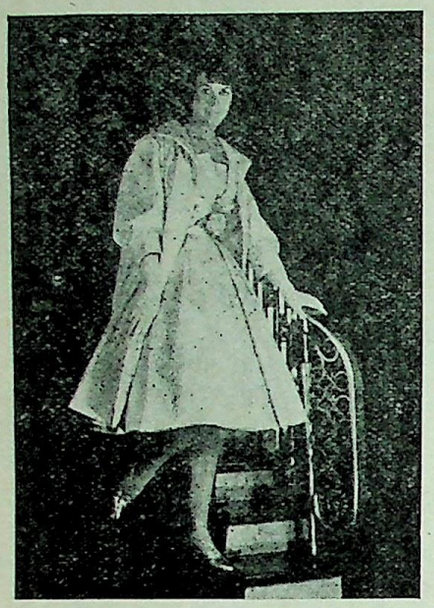

इस पोशाक में शामें और भी सुहानी हो जाती हैं

बर्लिन के ठीक बीचोबीच वह कोने वाली दूकान अपने दायें-बायें की पड़ौसी दूकानों से कुछ ख़ास अलग नहीं। बस फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि उसके अन्दर की सजावट शानदार है। बर्लिन-वासियों की मसरूफ़ियत किसे नहीं मालूम, लेकिन इस कौनेवाली दूकान पर आते ही उनकी मसरूफ़ियत जैसे घट जाती हो और वे अपने क़दम आहिस्ता करते हुए एक छोटा सा बोर्ड पढ़ने लगते हैं: जर्मन फ़ैशन इन्स्टीच्यूट।

दूकान में घुसने से पहले हर किसी को वहां एक विशेष और निश्चित महौल की उम्मीद हो जाती है और घुसने के बाद वह देखता है कि उसे नाउम्मीद नहीं होना पड़ा। वहां तरुणियों से उसकी भेंट होती है जिनके हाथों में या तो चित्रों की पुस्तिका होगी, या किसी कपड़े पर कढ़ाई कर रही होगी या कोई बहुत ही खूबसूरत हैट ढूंढ़ रही होंगी, या ऐसी ही कोई और चीज़। कोई दुबली सी लड़की किसी को पोशाक पहना रही होगी, कोई मोहकता बिखराती हुई घूम-घूम कर किसी न किसी से हंस-बोल रही होगी और उन्हीं के बीच कोई फ़ोटो-ग्राफ़र अपने कैमरे का फ़ोकस साधे किसी आधुनिकतम माडेल की तलाश कर रहा होगा।

फ़ैशन का यह कौना पिछले आठ सालों से इसी तरह हंस-बोल रहा है। हर जगह उसकी चर्चा है। दूर और पास, हर कहीं फ़ैशन की दुनिया में उसका नाम है। इसके कर्मचारी दुनिया भर में लम्बी-लम्बी यात्राएं कर चुके हैं और उनकी चीज़ें किस आतुरता और इज्ज़त के साथ विदेशों में सराही गयीं—इसकी बहुतेरी दास्तानें उनकी जबान पर हैं। हेलासिंकी हो या बेलग्रेड, नील के आंचल में काहिरा सो या राइन और एल्बे के आंचलों में कोलोन और हम्बुर्ग,

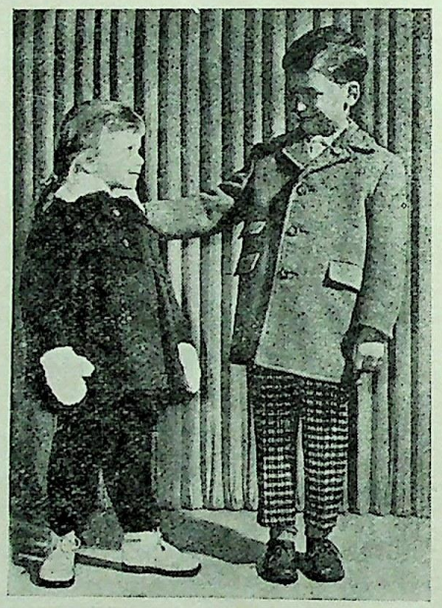

हम भी अच्छे कपड़े पहनना जानते हैं

मास्कोवासी हों या नयी-नयी पोशाकों के पीछे पागल पोलैंडवासी, हर कहीं इस जर्मन फ़ैशन इन्स्टीच्यूट ने लोगों की आखों में खुशी पैदा की है, लोगों को अपनी पोशाकों से संवारा है, हुस्न बख़्शा है।

हालांकि बुनियादी तौर से सच बात यही है कि इसका काम नये-नये फ़ैशन बनाकर अपने उगते हुए गणतंत्र की सौन्दर्यप्रियता की भूख शांत करे क्योंकि यह सौन्दर्य-प्रियता हमारी आशावादिता की, हमारे आत्मविश्वास की और हमारी भौतिक तथा सांस्कृतिक समृद्धि की अभिव्यक्ति है।

एक सौन्दर्य, एक लय, एक आभा और एक अमिट नवीनता—और इन सबको एक आनन्द में ढाल देना—यही फ़ैशन की डिज़ाइनें बनाने वाले इन कर्मचारियों को सिखाया गया है। वसन्त, ग्रीष्म और जाड़ा—ये तीनों ऋतुएं अलग-अलग रंगों और शैलियों की भूखी होती हैं। क्या बच्चा, क्या औरत और क्या मर्द, सभी मौसम की इस मांग से परिचित होते हैं। इसीलिए, यह फ़ैशन इन्स्टीच्यूट भी साल में तीन बार अपने रूप का जादू दिखाता है। हर बार नये और अनुकूल रंगों की नयी पोशाकें, नये जूते, नये झौले और नयी हैटें।

लेकिन इसी के साथ एक बात यह भी है कि हर नया फ़ैशन इतने चुपके से सौन्दर्यप्रेमियों के आस-पास आकर छा जाता है कि कभी किसी को झटका नहीं लगता। हम फ़ैशन को सौन्दर्य चेतना और सुरुचि के सोद्देश्य और निरन्तर विकास के रूप में देखते हैं। नये फ़ैशन नयी (और बढ़ी हुई) क़ीमतों का नाम नहीं।

लेखिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही हमारा यह इन्स्टीच्यूट नये-नये फ़ैशनों पर भी अपनी नज़र रखता है, गहरायी के साथ उनका अध्ययन करता है और उसके फ़ैशन विशेषज्ञ पेरिस और फ्लोरेंस के फ़ैशन-केन्द्रों में घूमा करते हैं। पिछले कुछ सालों के तजुर्बे से यह साबित हो चुका है कि हमारे फ़ैशनों की दुनिया में अपनी एक अलग सी जगह बन चुकी है। हम आंख मुंदकर फ्रान्स या इटली की नक़ल करने को तैयार नहीं। बस हम वहीं तक उन्हें अपनाने के लिए तैयार रहते हैं जहां तक उनसे हमारी शिष्टता और सौन्दर्यचेतना का मेल बैठता हो।

सात समाजवादी देशों की हर साल एक अन्तर्राष्ट्रीय फ़ैशन कांग्रेस की जाती है। जर्मन फ़ैशन इन्स्टीच्यूट हर साल इस घटना को सुन्दरतम अवसर के रूप में स्वीकार करता है। इस साल इस कांग्रेस का १२ वां अधिवेशन जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में होने जा रहा है। हमारे फ़ैशन इन्स्टीच्यूट के लोग खुशी से फूले नही समा रहे हैं। उनकी उंगलियां जाने क्या-क्या नया बनाकर पेश करने के लिए विकल हो रही हैं। फ़ैशन की दुनिया में ऐसी कांग्रेस अपने ढंग की अजीबी-ग़रीब घटना है क्योंकि इसमें सब कुछ सब के लिए खुला है, कहीं कोई छिपाव नहीं, कहीं कोई नफ़े-नुक़सान की बात नहीं। बस अपने-अपने देशों के लिए दूसरों के अनुभवों का परस्पर उपयोग——यही एक लक्ष्य रहता है।

इस प्रकार अनेक फ़ैशन संबंधी विचारों का संगम होता है और जर्मन फ़शन इन्स्टीच्यूट उन्हें अपनी परम्पराओं के अनुकूल एक लय में ढालता है जिसके संकेत पर इस क्षेत्र की तमाम व्यवसायी फ़र्में आगे बढ़ती हैं। वे इन्स्टीच्यूट के सुझावों पर अमल करना गौरव की बात मानती है। वस्त्र-उद्योग भी फ़ैशन इन्स्टीच्यूट से सम्पर्क बनाये रखता है। यही नहीं, बल्कि खरीद-बिक्री के एजेन्ट, प्रचार विशेषज्ञ इस इन्स्टीच्यूट के सहयोग को बहुत ज़रूरी समझते हैं।

फ़ैशन को जिसने अपना पेशा बना लिया है वह कलेन्डर में बताये गये मौसमों के साथ नहीं चलता। उसे तो आगे-आगे चलना पड़ता है। सर्दियों की पग-चाप सुनाई भी नहीं पड़ी कि वहां वसन्त (गर्मियों) की कल्पना साकार होने लगती है। और जब वसन्त की महक से भरी हुई पोशाकें सड़कों पर चलने फिरने लगती हैं तो फ़ैशन बनाने वाले हाथ शरद (जाड़ों) के स्वागत की तैयारियां करने लगते हैं।

नयी ऋतुओं के साथ नये फ़ैशनों का श्रीगणेश उस कोने वाली खूबसूरत लड़की में जादू भर देते हैं, उसकी मुस्कुराहटों में अजब रंग घुलने लगता है, उसके हाथों हुस्न के माडेल संवरने लगते है...

.....और फिर गांव-क्लब की वह शाम

बारबरा न्युहाउस

आज से तेरह साल पहले की बात है। वह शरद की एक भीगती हुई शाम थी। कमरों में ठंड और धुंधलका फैला हुआ था। एदरश्तेद में खेतिहर मज़दूरों की झोपड़ियों में उन नवागन्तुकों को कुछ दिन के लिए बसाया गया था। एक किसान की बीवी——हेदविग वेसिंग——ने आलू के शोरबे को ज़रा से झटके से पी लिया ताकि उसके शौहर की खामोशी टूटे और वह उसे देख ले। शौहर अपनी चिन्ताओं में डूबा हुआ था।

शौहर का नाम शायद पोल्दीवेसिंग था। उसने अपनी बीबी से कहा कि तुम्हें इस तरह खाना शोभा नहीं देता। इस पर बीवी ने जवाब दिया, "इस मामले में मैं तुम से कुछ अलग सोचती हूं। मेरा ख्याल है कि कभी-कभी तो हम मिल लिया करें और ज़रा सा अच्छा खाना खालें, छोटी-मोटी दावतें करलें, कुछ गा लें, कुछ नाच लें और कुछ खुश हो लें। महज़ काम ही काम से आदमी कहां तक ज़िन्दा रहे!"

शौहर ने निराशा में अपना सर हिलाया: "तुम्हें अपने बारे में कुछ ग़लतफ़हमी है क्या? जाड़े की फ़सल अभी तक तैयार नहीं हुई, हमें घर बनाने के लिए लकड़ी का जुगाड़ करना है। ऐसे में दावत की भी तुमने खूब कही। देखती नहीं, लोग थके हुए हैं, भूखे हैं और हर किसी पर शुबहा करने लगे हैं। लड़ाई और लड़ाई के नतीजे——"

"हां, हां, इसीलिए तो मैं कह रही हूं बिलकुल इसीलिए, हमें किसानों को जमा करना चाहिए, मैं औरतों से बातें करूंगी।"

वह सन् १९४७ की पहली सर्दियां थीं जब अदरश्तेद की वह शाम एक सांस्कृतिक शाम कही जा सकती थी।

बूढ़ों की दोस्त और सलाहकार—तरुणों की रहबर—गांव-क्लब की अध्यक्षा—झुर्रियों वाली श्रीमती हेदविग वेसिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवान दिलों के जोड़े नाच रहे हैं . . . ये भी क्लब के मेम्बर हैं

हर किसान औरत अपने साथ लकड़ी के कुछ टुकड़े और एक-एक कंदील लेकर आयी, ताकि उस जगह को गरम और रोशन रखा जा सके। उन दिनों गांवों की बिजली अक्सर खराब हो जाया करती थी। किसान महिलएं एक जमीन्दार की पुरानी हवेली में जमा हुईं। जमीन्दार उसे छोड़कर जा चुका था। किसान औरतों के लिए उस कोठी में घुसने का यह पहला मौका था। इसलिए धूल से भरी फ़र्श पर चलते समय उनके पांव एक ही साथ बड़े सतर्क और शर्मीले हो रहे थे। यह बात आज से तेरह साल पहले की है।

और आज तेरह साल बाद अदरश्तेद गांव का क्लब उसी पुरानी हवेली में बैठता है। पूरा गांव सहकारी बन गया है। श्रीमती हेदविग वेसिंग सहकारी समिति की अध्यक्ष हैं। हवेली ही गांव का संस्कृति भवन है। हवेली की धूल और सीलन ख़त्म हो चुकी है और वह रोशनी और खुशहाली से जगमगाती है। सारे गांव के लोग शामों को यहां जमा होकर गाते और नाचते हैं।

शुरू-शुरू में गांव के इस क्लब के सामने अनेक समस्याएं थीं। क्लासिकल संगीत किसान औरतों के पल्ले कैसे पड़ेगा? क्यों न लाइट म्युज़िक ही चलाया जाय? क्लब का मंत्री सहकारी समिति का लाइब्रेरियन है। उसे घर-घर जाकर अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की ख़बर देनी पड़ती थी। लेकिन कुछ ही दिनों में किसानों को क्लब में आने की आदत पड़ गयी। वे हर तरह के संगीत में आनन्द भी लेने लगे। उनकी वह तमाम पुरानी सांस्कृतिक थाती उनके पास वापस आने लगी जिससे वे सदियों से महरूम थे।

पिछले साल क्लब ने दूसरी बार गांव में मेला लगाया। नामी-गरामी लेखकों को बुलाकर साहित्यिक संध्या मनायी गयी, विविध कार्यक्रम हुए, नाटक हुआ, फ़िल्में दिखायी गयीं, खेल-कूद हुआ, गैर पेशेवर फोटोग्राफरों में होड़ लगी, फुटबाल मैच हुआ और एक विशाल नृत्य समारोह किया गया।

कहना न होगा कि इस समारोह में खुशियों का सोता गांव वालों की उन सफलताओं से फूट कर आ रहा था जिसे वे योजना की पूर्ति के साथ अर्जित कर चुके थे। खेतों में मशीनें, दूध दुहने की मशीनें, चारा खिलाने के आधुनिक तरीके, गांव वालों की अच्छी तन्दुरुस्ती, अच्छे और साफ-सुथरे घर और जाने क्या-क्या———।

आज फिर क्लब की सारी खिड़कियों से रोशनी फूटने लगी है। गांव की सड़कें गीतों से गूंजने लगी हैं—जैसे यह सब कुछ वसन्त के स्वागत की तैयारी में हो रहा है। इसी वसन्त में जर्मन जनवादी गणतंत्र को अपने गांवों में पूर्ण सहकारिता की पहली वर्षगांठ मनानी है।

हेदविग वेसिंग के एकाध बालों में सफ़ेदी घुसने लगी है। चेहरे और हाथों की झुर्रियां उसके जीवन की मेहनत और दुख की गाथा सुना रही हैं। उसका शौहर चल बसा। उसकी लड़की एक सहकारी किसान से बंध चुकी है। उसका खूबसूरत और साफ़-सुथरा घर सूना-सूना हो गया। लेकिन उसकी जिन्दगी में अब काम और काम की खुशी आ चुकी है। दिन में वह गांव वालों के साथ खेतों में काम करती रहती है। शाम को क्लब में वह गाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्नो का जहाज़ी कारख़ाना: कल, आज और कल

हंस योख़ेन फ़ैन्द्रे

मेरी गिनती उन बुज़ुर्गों में नहीं हो सकती जिन्होंने ३ मई, १९४५ को वार्नेमुन्दे के ध्वंस में जर्मनी के सबसे आधुनिक जहाज़ी कारख़ाने की बुनियाद रखी थी। मैं तो उन लोगों में से हूं जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के कोने-कोने से आकर उस कारख़ाने में पुरानी पीढ़ी से जहाज़ बनाने का हुनर सीख रहे हैं। मैं यहां सन् १९४९ में आया। मेरे साथ अनेक मोची, दर्ज़ी और ऐसे ही दूसरे कामगार भी यही हुनर सीखने आये थे।

काम सीखने वालों का हमारा यह ब्रिगेड सन् १९४८ में बना था। अब वह भंग हो गया क्योंकि उसमें से हमारे चार साथी उसी कारख़ाने के इंजीनियर बन गये, एक टेकनीशियन बन गया, एक फौरमैन बन गया, एरिख और कार्ल जलसेना की अफ़सरी पा गये, और मुझे सन् १९५५ में पत्रकारिता के लिए भेज दिया गया। मेरे दोस्तों ने कहा, "तुम्हें रोस्तक के अख़बार में जाकर काम करना चाहिए क्योंकि वहां ऐसे लोग बैठे हुए हैं जिन्हें जहाज़-निर्माण की समस्या पर कुछ अधिक नहीं मालूम और इसीलिए वे अपने अख़बार में अक्सर ग़लतियां करते रहते है।" ख़ैर, आज मैं एक पत्रकार हूं, लेकिन जब भी मैं अपने पुराने दोस्तों से मिलने जाता हूं, तो वहां जहाज़ी दुनिया की ही बातें करता हूं——उसके भूत, वर्तमान और भावी दुनिया की।

१८ अगस्त सन् १९४५ को २८ आदमियों की एक टुकड़ी तैयार हुई। उन दिनों जहाज़ बनाने का कोई सवाल नहीं उठता था क्योंकि तब तो समस्या थी पुराने कारख़ाने के ध्वंस और मलबे को कैसे साफ़ किया जाय। लेकिन १९४६-४७ तक काफ़ी परिवर्तन हो चुका था। तब तक सोवियत संघ की ओर से मछली मारने वाली १८ नयी नावें बनाने के लिए १०० कर्मचारी तैनात किये गये। हममें से बहुतों को अपनी अपरेन्टिसशिप बहुत कठिन लगी। उन सौ में से केवल पांच या छः ऐसे थे जो जहाज़ बनाने के हुनर से वाकिफ़ थे। फिर भी नावें बनकर तैयार हुई। उसी साल सोवियत संघ ने बाल्टिक सागर के पेट से कई लड़ाकू जहाज़ बाहर निकाले। लड़ाई के ज़माने में वे डुबो दिये गये थे। ऐसे कुल १६ जहाज़ बाहर निकाले गये जिन्हें तिजारती के रूप में फिर बनाकर खड़ा किया गया। इन जहाज़ों की क्षमता १,२०,००० टन माल ढोने की थी। उसके बाद जहाज़ी कारख़ाने का निर्माण शुरू हुआ।

सन् १९५१ में पहला प्रशिक्षण जहाज़ बनकर खड़ा हुआ। इसे अपने तत्कालीन राष्ट्रपति के नाम पर 'विल्हेल्मपीक' कह कर पुकारा गया। १३ अक्तूबर सन् १९५४ को हमारा पहला तिजारती जहाज़ बनकर तैयार हुआ। इसकी क्षमता १०,००० टन की है। इसे शांति-पोत कहते हैं। १ मई सन् १९५७ को पहली बार शांति-पोत समुन्दर की लहरों पर उतरा।

इस शांति-पोत के बनाने में हमें तीन साल लगे। लेकिन इसी सिलसिले में हमारा दसवाँ जहाज़ केवल १८ महीने में बनकर तैयार हो गया। ज़ाहिर है यह सफलता हमारे प्रशिक्षण की सफल प्रगति का ही फल है। १९५४ में यहां टेकनिकल स्कूलों के केवल ८७ ग्रेज्यूएट थे। १९५८ में वह संख्या ३१८ तक पहुंच गयी और १९६५ में ७८० हो जायगी। आज यहां ८०० मजदूरों और इंजीनियरों के हाथों में 'सर्वोत्तम' के बिल्ले लगे हुए हैं! पुराने इंजीनियरों और मिस्त्रियों में अनेक ऐसे हैं जिन्हें सरकार द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। सन् १९५६ में हमें जहाज़ बनाने के लिए सोवियत संघ से आर्डर मिला अब तक हम सोवियत संघ के लिए कोयला और लोहा ढोने वाले १६ जहाज़ बना चुके हैं।

'सर्वोत्तम' कामगारों के उदाहरण से प्रेरित होकर कारख़ाने के सारे मज़दूरों ने १९५८ से ऐसे जहाज़ों के निर्माण का व्रत लिया जो अपने में बेमिसाल हों। १९५८ की गर्मियों में सोवियत संघ के लिए २२,००० टन वाले जहाज़ का निर्माण शुरू हुआ।

आज इस जहाज़ी कारख़ाने के समूचे मज़दूर नये टेकनीक की योजना पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। जहाज़ निर्माण का एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर है। वहां तक पहुंचने के लिए वैज्ञानिक और टेकनिकल प्रगति का भरपूर उपयोग करना होगा। जहां तक जहाज़ों का ढांचा बनाने का सवाल है, यहां के मिस्त्री अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच चुके हैं। सन् १९६५ में हमें हर दृष्टि में विश्वस्तर छू लेना है। यह लक्ष्य कुछ आसान तो नहीं लेकिन हमारी निरन्तर प्रगति हमें पूरा विश्वास दिलाती है। सात-साला योजना के अन्तर्गत यानी सन् ६५ तक इस कारख़ाने को ६५ जहाज़ बनाने हैं। तब तक इसका नाम दुनिया के जहाज़ी कारख़ानों की चोटी पर गिना जाने लगेगा।

१० वर्ष पहले वर्नो का नाम किसे मालूम था? आज उसके जहाज़ सारे समुन्दरों में तैरते नज़र आ रहे हैं।

हम उन बुज़ुर्गों के सामने माथा झुकाते हैं, जिन्होंने ३ मई सन् १९४५ को यहां का मलबा हटाना शुरू किया था।

वर्नो के जहाज़ी कारख़ाने का एक दृश्य

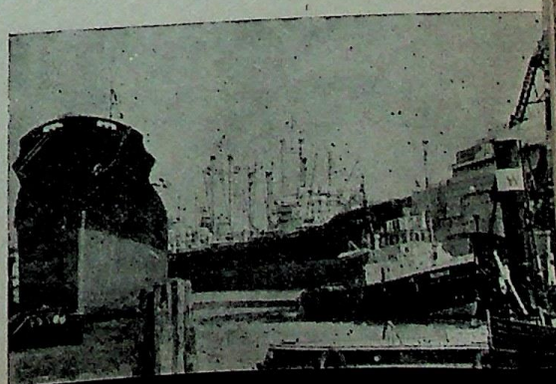

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

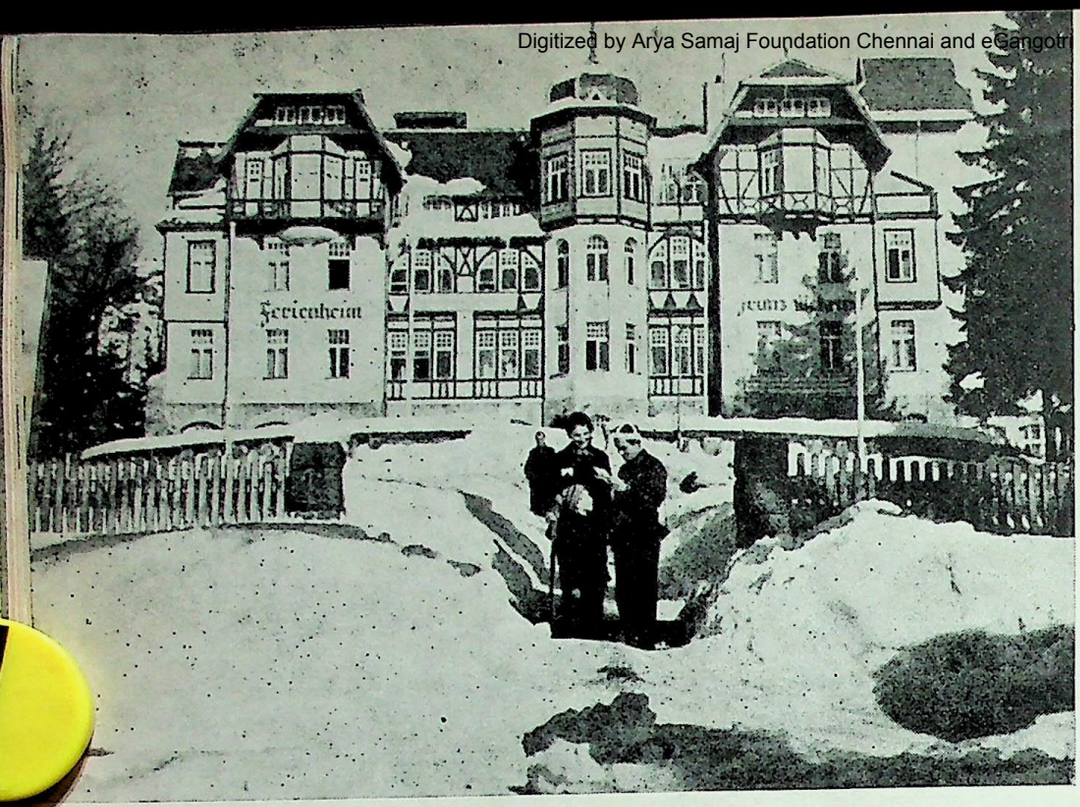

हार्त्स की पहाड़ियों में बर्फ़ की टोपियां पहने ये आरामगाहें

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

हार्त्स

जर्मनी के उत्तरी मैदानों से जर्मन जनवादी गणतंत्र के दक्षिण-पश्चिम की ओर यात्रा करते समय हार्त्स की पहाड़ियां मिलती हैं। इन पहाड़ियों का अपना तिलस्मि और अपनी कहानी है। ब्रोबेन यहां की सबसे ऊंची चोटी है—११४२ मीटर ऊंची। इसे पूरे जर्मनी की धुरी कहा जा सकता है। यहीं से, हार्त्स पहाड़ियों को पार करती हुयी वह मनहूस सीमा रेखा जाती है जो हमारी मातृ-भूमि को दो टुकड़ों में बांटती है। यह चोटी सदा ही बर्फ़ की टोपी पहने रहती है। पहला आदमी जो इस चोटी तक पहुंचा था, वह भूगोल का एक विद्वान था। उसका नाम था तिलमान स्तोल्ज़। यह घटना १५६२ की है। उन दिनों उसकी यह बहादुरी सबकी ज़बान पर थी। और तभी से हार्त्स की पहाड़ियों पर यात्रियों का जो तांता शुरू हुआ, वह आज तक रुका नहीं। आज तो सर्दियों में भी उधर की ओर जाने वाली सड़कें और रेलें यात्रियों से भरी रहती हैं। जाड़ों में इस पहाड़ी दुनियां का हुस्न कुछ और ही हो जाता है।

एक ज़माना वह भी था जब जर्मनी के दो महान कवि हार्त्स के आंचलों में घूमने जाया करते थे। वे महान आत्मायें थीं गेटे और हाइने। गेटे की कविताओं में हार्त्स का सौन्दर्य और उसका जादू-भरा तिलस्मि मुखर हो उठा है। गेटे की अमर कृति फ़ाउस्त (प्रथम भाग) के माध्यम से हार्त्स की पहाड़ियों ने विश्व साहित्य में प्रवेश किया। हाइने पर तो इन पहाड़ियों का ऐसा जादू था कि उसने 'हार्त्स की यात्रा' नाम से एक पुस्तक ही तैयार कर दी जो आज सामाजिक-आलोचनात्मक पत्रकारिता का सर्वोत्तम उदाहरण बन गयी है।

सामन्ती युग से तंत्र-मंत्र का हर जगह प्रसार था। इन्हीं पहाड़ियों के पास एक संग्रहालय है जो तंत्र-मंत्र के उस युग का प्रतिरूप उपस्थित करता है और सामन्ती वैभव की याद दिलाता है।

ब्रोकेन पहाड़ी के माथे पर लगभग सौ चोटियां हैं और पांवों में अनेक नदी-नालों की पैजनी। यहीं से बोदे नदी भी बहती है जिसके तट पर अल्पाइन के जंगलों में अनेक मनमोहक आरामगाहें खड़ी हैं। इनमें शायद सबसे मशहूर आरामगाह शीरके में है जो सन् १९१० से ही यात्रियों का आकर्षण बनी हुई है। आज यहां अनेक होटल और स्वास्थ्य-गृह बन गये हैं जिनका श्रेय फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन फ़ेडरेशन को है। इन होटलों और आराम-घरों की हर खिड़की से

यह टाउन हाल १५ [illegible]र्मण का मे[illegible]

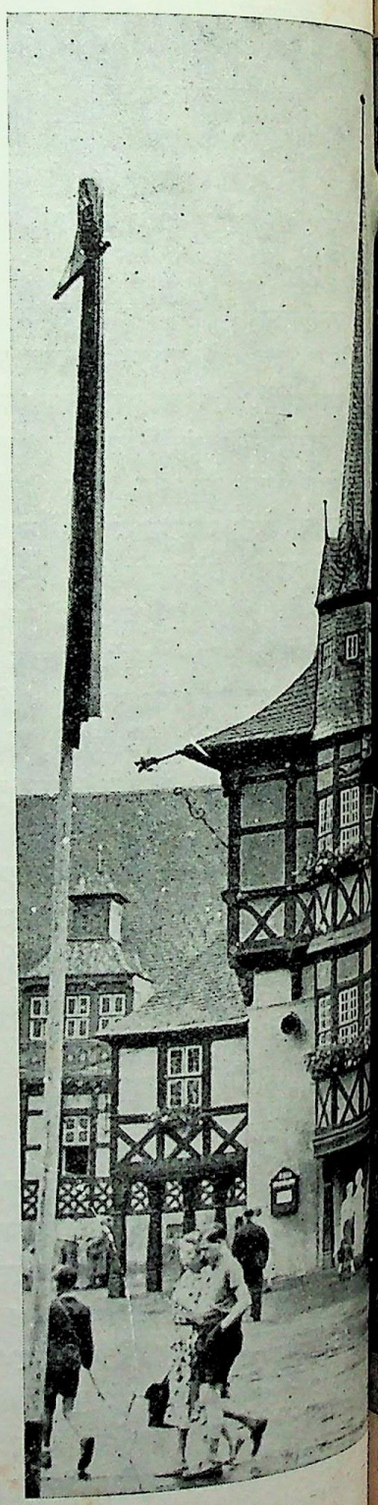

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्त्स पहाड़ियां

ब्रोकेन के सौन्दर्य का दर्शन होता रहता है। आजकल यहां की आरामगाहें खिलाड़ियों के मिलने के खास अड्डे बन गये हैं।

शीरके से थोड़ी दूर पर सरों के जंगलों में एलेन्द का आराम-गृह हैं। यहां कुल मिलाकर पांच सेनिटोरियम हैं। हार्त्स पहाड़ियों की हवा में कितनी शांति और स्वस्थ बनाने का कैसा जादू है—यहां बैठकर उसका पता लगाया जा सकता है।

यहीं पास में सोर्ज़े नामक एक पुराना गांव है। यह फ़ाउन्ड्री मज़दूरों और कच्चे लोहे का काम करने वाले लोगों का गांव था। आज यहां लकड़ी का उद्योग खूब-खूब फल-फूल रहा है।

यहीं रयूबलेन्द का संयुक्त हार्त्स चूना उद्योग है जो बूना कारखाने के साथ मिलकर उत्पादन करता है। रयूबलेन्द में कई मशहूर गुफ़ायें हैं। ये गुफ़ायें हज़ारों सालों से बहते हुए पानी में मिले चूने से बनती रहीं। गुफ़ाओं की छतों पर पानी की बूंदें सूखती रहीं और खरिया की पर्तें जमती रहीं। ये पर्तें समय के साथ बड़े-बड़े त्रिकोण बनाकर उगती रहीं। यहां के पानी में कुछ ऐसे तत्व मिलते हैं कि वह खरिया अनेक रंगों को जन्म देती रहती हैं।

मैदान तक पहुंचने के पहले बोदे नदी थाले के समीप पहाड़ों के बीच से होकर गुज़रती है। यह छोटी सी पहाड़ी नदी इस स्थान पर आते ही उग्रता और शक्ति की देवी बन जाती है। किनारों को देखने से ऐसा लगता है कि बोदे नदी मज़बूत से मज़बूत पहाड़ियों को भी तोड़ सकती है। इसी शक्ति को क़ाबू में करके उससे बिजली बनाने के लिए बोदे पर बांध बनाया गया है।

हैक्सेन्तोज़प्लात्स जादूगरों की नृत्य स्थली कहा जाता है। यह पहाड़ी एक ऐसी बालकनी की तरह है जहां से समूची प्रकृति के दर्शन किये जा सकते हैं। और यहां से थोड़ी दूर आगे जाने पर पहाड़ियों का एकाएक अन्त हो जाता है और एक विशाल मैदान का आंचल फैल जाता है।

थाले के पास हार्त्स का पहाड़ी रंगमंच है। यह जर्मनी का शायद सबसे बड़ा खुला रंगमंच है। वहां दो हज़ार दर्शक बैठ सकते हैं। प्रकृति की ऐसी भव्य गोद में बैठकर संगीत सुनने, अभिनय तथा नृत्य देखने के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र के कोने-कोने से लोग यहां पहुंचते हैं। प्रकृति की गोद में संगीत की स्वरलहरियाँ जादू बन जाती हैं और अभिनय या नृत्य की मुद्राओं में अजीब विस्तार और गहराई भर उठती है।

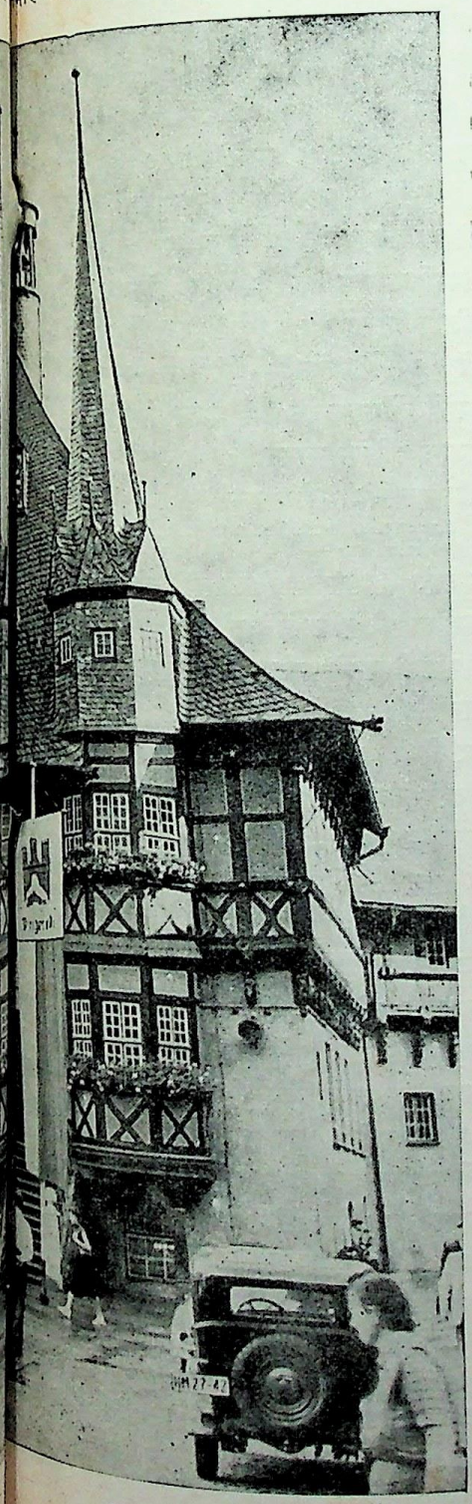

बोदे की घाटी का वन-वैभव बच्चों तक को खींच लाता है

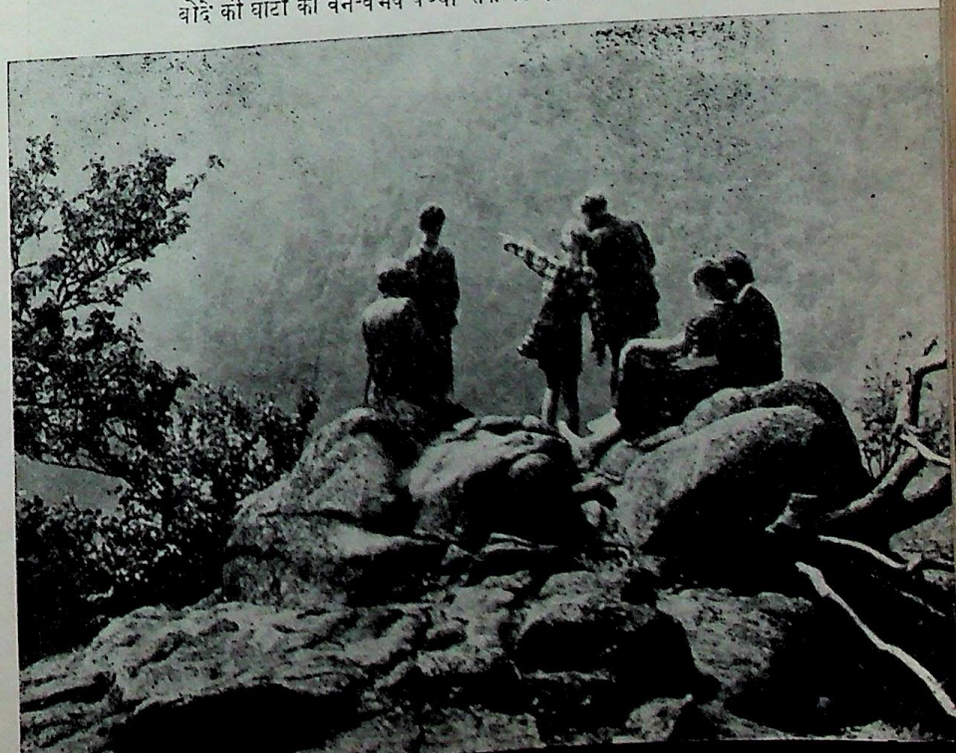

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विद्याओं के केन्द्र

प्रो. एच. मोदे

(इस लेख को जर्मन जनवादी गणतंत्र में 'भारतीय विद्याओं के केन्द्र' का अन्तिम भाग समझना चाहिए। पहले दो अंश सूचना पत्रिका के अंक दो और तीन में प्रकाशित हो चुके हैं।)

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारतीय विद्याओं के अध्ययन-क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका यहां के पुस्तकालयों और संग्रहालयों की है। ऐसी संस्थाओं के संचालक हमेशा से सक्रिय विद्वान हुआ किये हैं। लेकिन यहां भी हमें युद्ध और देश-विभाजन की दुर्भाग्यपूर्ण चर्चा के लिए विवश होना पड़ रहा है क्योंकि इन दोनों दुखद घटनाओं से इन संस्थाओं को बड़ी क्षति पहुंची। जर्मनी के कुछ बहुत ही विख्यात पुस्तकालयों का बंदर-बाट हो गया। यहां तक कि बर्लिन स्थित जर्मन स्टेट लाइब्रेरी का अधिकांश पश्चिमी जर्मनी के चंगुल में पड़ा हुआ है। फिर भी यह जर्मनी का सबसे समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें अनेक मूल्यवान पांडुलिपियां भी हैं।

यही बात लइपज़िक पुस्तकालय के बारे में भी कही जा सकती है। यहां विश्वविद्यालय और एक विशाल प्रकाशन गृह है। इसलिए यहां प्राच्य विषयों पर शोध की विशाल संभावनाएं हैं। लेकिन इस क्षेत्र में हाले का पुस्तकालय सबसे बड़ा और सबसे विशिष्ट है। इसका संचालन स्वयं जर्मन प्राच्य संघ की ओर से होता है। यहीं एक दूसरा पुस्तकालय भी है जिसमें केवल दक्षिण भारत के साहित्य और संस्कृति संबंधी पुस्तकें हैं। यह पुस्तकालय भी बहुत पुराना है। यहां इसे एक पुराना प्रोटेस्टैन्ट मिशन चलाता है। १७०५ में एक विद्वान दक्षिण भारत में अध्ययन के लिए भेजा गया था जिसने एक तमिल व्याकरण की रचना की। १७१५ में वह रचना जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई। हाले प्रोटेस्टैन्ट सम्प्रदाय का केन्द्र रहा है। उच्चशिक्षा के क्षेत्र में भी इसने अपनी कुछ परम्पराओं को जीवित रखा है। खासतौर से हाले विश्वविद्यालय के धार्मिक विभाग में दक्षिण भारत की भाषायें पढ़ायी जाती थीं। पुराने विद्वानों में शोमेरस का नाम काफ़ी लोग जानते हैं। आजकल प्रो. ए. लेमान दक्षिण भारत की भाषाएं पढ़ाते और तत्संबंधी खोज करते हैं।

प्रोटेस्टैन्ट मिशनरियों ने दक्षिण भारत के बारे में जो कुछ लिखा है उसे लोग आशंका की दृष्टि से देखते हैं। इस संबंध में अंग्रेज़ी पढ़ने वाले लोग कुछ विशेष जानते भी नहीं। लेकिन यहां यह उल्लेख कर दिया जाय कि जिस जर्मन मिशनरी ने तमिल व्याकरण की रचना की वह भारतीय संस्कृति का एक गंभीर अध्येता था। उसे तमिल साहित्य, धर्म और दर्शन की अच्छी जानकारी थी। लेकिन जब उसने अपने देश (जर्मनी) में अपनी पुस्तक प्रकाशित करनी चाही तो उससे कहा गया कि तुम्हें तो भारत इसलिए भेजा गया था कि तुम हिन्दुस्तानियों को ईसाई बनाओ। तुम तो उल्टे योरप में मूर्ति पूजा फैलाना चाहते हो। उस पादरी का नाम बारतोलमेयोस त्सीगेनबल्क था। उसके सृजन का असली मूल्य हाल में समझा जा सका है।

हमारे पाठकों की दिलचस्पी यह जानने में भी होगी कि आधुनिक प्राच्य-विद्यावाद का इतिहास लिखने वालों ने दो जर्मन विद्वानों के बारे में चुप्पी साध

अनुसूया, शकुन्तला और प्रियंवदा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली थी। उनका नाम था अतनासियस क्रिशर और हाइनरिख रोथ। दोनों भारतीय विद्याओं के अध्येता थे। सन् १६६७ में क्रिशर ने अम्सतर्दम में ब्राह्मणवाद पर एक ग्रंथ प्रकाशित किया। इस ग्रंथ में देवनागरी लिपि के पांच प्लेट भी छापे गये थे। क्रिशर को भारत जाने का कभी सौभाग्य नहीं मिला था। लेकिन उनके मित्र राथ उन दिनों आगरा में रहते थे। उन्होंने १६४६ से १६५० तक आगरे में रहकर संस्कृत का अध्ययन किया था। क्रिशर को अपने इन्हीं मित्र से देवनागरी की ये प्लेटें और उनके संबंध में जानकारी हासिल हुई थी। किशर ने यह भी उल्लेख किया है कि उनके मित्र राथ ने एक संस्कृत व्याकरण तैयार किया था। लेकिन दुर्भाग्यवश न तो वह प्रकाशित ही हो सका और न उसकी पांडुलिपि ही आज सुलभ रही। इस प्रकार क्रिशर के अनुसार संस्कृत व्याकरण पर काम करने वाले योरोपीय विद्वानों में राथ महोदय का नाम सबसे पुराना कहा जा सकता है।

सत्रहवीं सदी और अठारहवीं सदी के प्रारम्भ की इन चर्चाओं के बाद हम सीधे आधुनिक युग में प्रवेश करना चाहते हैं। युद्ध और उसके बाद के कुछ वर्षों तक जर्मन पुस्तकालयों में विदेशी प्रकाशनों का प्रवेश एक तरह से बिलकुल असंभव सा था। इसलिए इस अभाव की पूर्ति ज़रूरी हो गयी। पश्चिमी जर्मनी को तो उपहारों और दान के रूप में ढेरों पुस्तकें मिल गयीं। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र को इस दिशा में अपने ढंग से प्रयास करना पड़ा। हमारी सरकार की संस्कृति को बढ़ावा देने की नीति ने यहां बड़ी मदद की और हमारे पुस्तकालय अपने को समृद्ध करने के संघर्ष में काफ़ी हद तक सफल रहे।

युद्ध से जर्मन संग्रहालयों की तरह ही पुस्तकालयों को भी क्षति पहुंची थी। बर्लिन संग्रहालय इस क्षेत्र में सबका अग्रज कहा जाता है और उसी को सबसे अधिक विनाश का सामना करना पड़ा। यहां तक कि उसके अनेक बहुमूल्य संग्रह हमेशा के लिए खो गये। युद्ध के अन्तिम दिनों में जब सोवियत सेना बर्लिन में घुसी तो उसने इन सांस्कृतिक निधियों की रक्षा का भार संभाला जो बाद में जर्मन जनवादी गणतंत्र को अक्षुण रूप से लौटा दिये गये। सोवियत संघ में प्राचीन सांस्कृतिक निधियों के प्रति कितनी उदारता, श्रद्धा और विवेक है इसका उदाहरण बर्लिन और ड्रेसडन के वे कक्ष हैं जो एक बार फिर अपने कला-संग्रहों से सुसज्जित हो गये हैं।

लेकिन जैसे हमारे अन्य संग्रहों का विभाजन हो गया, उसी प्रकार दुर्भाग्यवश भारतीय पक्ष भी बंट गया। युद्ध से पूर्व अधिकांश भारतीय मूर्तिकलायें और चित्र कलायें एक ही संग्रहालय में थीं। बर्लिन पर बमबारी शुरू होने के बाद उन्हें एक ऐसी ईमारतों में रख दिया गया जो आज नगर के पश्चिमी क्षेत्र में पड़ गयी हैं। उनमें से कुछ हिस्सा तो इतनी चलाकी से छुपाया गया था कि अमरीकी लेखकों ने उन्हें गायब ही समझ लिया। उनका कुछ हिस्सा पश्चिमी बर्लिन में जमा है और अधिकांश जनवादी बर्लिन के उसी पुराने स्टेट संग्रहालय में सुरक्षित है। इनमें भारत के मुस्लिम युग के चित्र और अन्य कला कृतियां अधिक संख्या में हैं।

बर्लिन की ही तरह लइपज़िक में भी एक विशाल संग्रहालय था। लेकिन युद्ध ने उसे भी ध्वंस कर दिया! केवल उसका एक भाग बचाया जा सका। हाले में प्राच्य संस्कृति से संबंधित पहले से कोई संग्रहालय न था। इधर हमारे पुरातत्व संस्थान ने एक संग्रहालय खड़ा करके इस कमी को पूरा किया है। इसमें अध्ययन संबंधी सामग्री ही अधिक है।

मैं यहां हाले स्थित प्राच्य पुरातत्व विभाग के बारे में कुछ कहने की अनुमति चाहूंगा। यह बिलकुल नयी संस्था है और हाले के शास्त्रीय पुरातत्व अध्ययन की पृष्ठभूमि से उत्पन्न होकर आज बहुत विकसित हो चली है। आज जर्मन पुरातत्व तीन क्षेत्रों का संगम है—पूर्वेतिहासिक या योरपीय पुरातत्व, शास्त्रीय या यूनानी और रोमन पुरातत्व (इसमें कला कृतियों का स्थान प्रमुख है) और अब सबसे आधुनिक है प्राच्य पुरातत्व जिसका संबंध प्राच्य अध्ययन से है।

हाले पुरातन विद्यापीठ रहा है। यह प्राचीन योरपीय इतिहास, भाषाशास्त्र, पुरातत्व और प्राच्य विद्याओं के अध्ययन का केन्द्र रहा है, इसलिए इस नये विषय के लिए यही सबसे उपयुक्त स्थान माना गया और १९४८ में मुझे यह भार सौंपा गया कि यहां प्राच्य पुरातत्व के अध्ययन के लिए एक संस्थान की नींव डालूं। धीरे-धीरे यहां निकट पूर्व, मिस्र, भारत और चीन के पुरातत्व का विधिवत शिक्षण प्रारम्भ हो चला है और हाल ही में भारत, मेसोपोटामिया और मिस्र के पुरातत्व पर खोज भी शुरू कर दी गयी है। एक तरुण शोध-छात्र 'भारतीय शिलालेखों' पर शोधकार्य कर रहा है, दूसरे दो शोध-छात्र भारतीय भाषाओं और पुरातत्व के अध्ययन के सुंग-आन्ध्र मूर्तिकला और आधुनिक भारतीय चित्रकला में थीसिस तैयार कर कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त ये सभी लोग मिलकर छात्रों के लिये प्राच्य पुरातत्व पर एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं। हमारे इन प्रयासों के एक सुफल में आप सबकी दिलचस्पी होगी। गत वर्ष हमारे विद्वानों ने मिलकर एक पुरातत्व मानचित्र प्रकाशित किया है जिसमें भूमध्य सागर से लेकर प्रशान्त महासागर के बीच आने वाले देश शामिल हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारतीय विद्याओं के अध्ययन के इस संक्षिप्त सर्वेक्षण को समाप्त करने से पूर्व रवि ठाकुर की शतवार्षिकी के सिलसिले में चल रही तैयारियों का उल्लेख करना चाहता हूं। इस प्रसंग में रवि ठाकुर के चार संग्रह जर्मन भाषा में प्रकाशित होंगे साथ ही उनकी रूसी चिठ्ठी का जर्मन संस्करण भी छपेगा। उनकी कहानियों का एक संग्रह छपेगा। अनेक जर्मन विद्वानों द्वारा लिखित उनकी कृतियों का एक समीक्षा ग्रंथ छपेगा, कार्ल मार्क्सश्तद 'रंगमंच' 'डाकबाबू' का अभिनय प्रस्तुत करेगा। रेडियो द्वारा रवीन्द्र संगीत और उनके चित्रों की प्रदर्शिनी का आयोजन होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'डायमन्ड' सायकिल-विजेताओं का अस्त्र

अदि क्लिमान्स्कौस्की

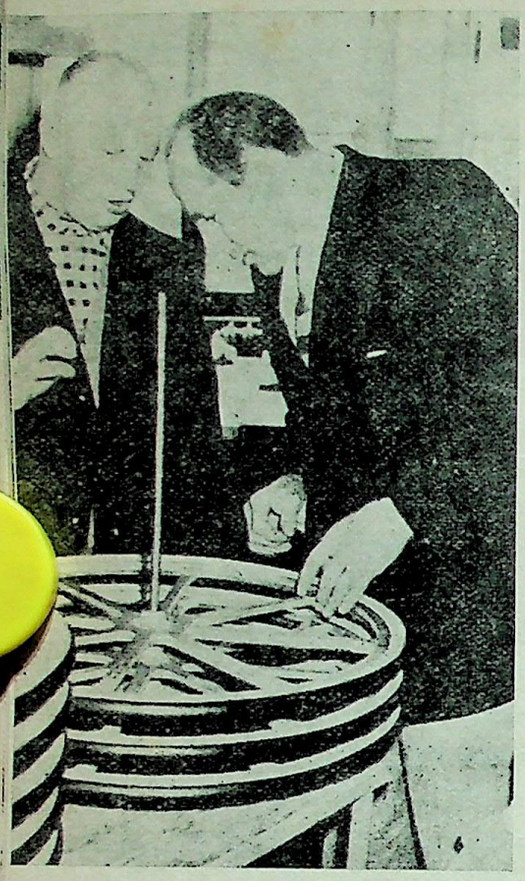

चेकोस्लोवाकिया के भूतपूर्व विश्व-चैम्पियन एमिल (दायें) 'क्वालिटी' कारखाने में

हर साल सायकिल दौड़ होती है। देश-विदेश हर जगह सड़कों पर लोग क़तारें बांधे विजेताओं की प्रगति देखते रहते हैं। लोगों के माथे पर विजय के तिलक लगते हैं, उनके नाम सोने के अक्षरों में छापे जाते हैं।

लेकिन शायद कुछ ही लोग ऐसे मिलें जो इस पूरे दौर में विजेता के सामर्थ्य के अलावा भी किसी दूसरी चीज़ की याद करते हों। उन्हें उस समय यह याद नहीं रहता कि उन विजयों में सायकिलों का भी कुछ हाथ है।

"सड़क सायकिल दौड़ का फ़ैसला तब तक नहीं होता जब तक दौड़ने वाले अन्तिम रेखा पार न कर लें। खुदा न करे उसी बीच सायकिल कहीं किसी तरह का धोखा दे जाय और और सारी जीत हार में बदल कर रह जाय!"

यह जुमला गुस्ताव अदौल्फ़ शुर का है। गुस्ताव सायकिलबाज़ी में दो बार विश्व चैम्पियन और दो बार शांति सायकिल दौड़ के चैम्पियन रह चुके हैं। उन्होंने मुझ से कहा: "हमारी हार-जीत हमारी सवारी पर भी निर्भर करती है।"

हिटलर और उसके नाज़ी पराजित हो तो गये थे, लेकिन उनके पीछे देश में गरीबी और दुख, ध्वंस और नाश के अलावा कुछ बचा न था। उस समय मलबा हटाकर शहरों और कारखानों को खड़ा करना और रोटी मुहैया करना सबसे ज़रूरी काम था।

वह सब कुछ हुआ और बाद को धीरे-धीरे राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन भी पनपने लगा। खेल-कूद भी पनपा।

लेकिन सायकिलबाज़ी का संगठन कुछ मुश्किल था। इसके लिए सायकिलें ज़रूरी थीं। फिर तो खंडहरों, गिरे-पड़े गोदामों और मलबों में से सायकिलों के पुर्ज़े ढूंढे जाने लगे। कहीं चेन मिले, कहीं टायर, कहीं ब्रेक, कहीं हैंडिल। फिर उन्हें जोड़ा गया और दौड़ शुरू हुई।

सन् १९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना ने इस काम को और आसान कर दिया।

सन् १९५२ में कार्ल मार्क्स नगर में मज़दूरों, इंजीनियरों और टेकनीशियनों ने १९५२ में सायकिल उद्योग को फिर से ज़िन्दा किया। दौड़ के लिए सायकिलें एक विशेष विभाग में बनने लगीं। 'डायमन्ड' सायकिल बनी और १९५४ में उसने पहला बड़ा इम्तहान पास किया—उसने जर्मन जनवादी गणतंत्र की भ्रमण-प्रतियोगिता में भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अपनी पुरानी सायकिलें ले-लेकर बर्लिन आये और वहां उनके बदले उन्हें 'डायमन्ड' दी गयी। और तब उनकी प्रतियोगिता शुरू हुई। कहने की जरूरत नहीं इस दौड़ में 'डायमन्ड' का एक पेंच भी ढीला न हुआ।

और तब से हमारे सायकिलबाज़ों के लिए 'डायमन्ड' अनिवार्य बन गयी। स्वदेश और विदेश हर जगह की प्रतियोगिताओं में तब से वे इसी का इस्तेमाल करते हैं। इसके टायर थुरिंगिया के कारखाने में बनते हैं।

इसी 'डायमन्ड' पर चढ़कर गुस्ताव ने १९५५ और १९५९ में शांति सायकिल दौड़ जीती, १९५८ और १९५९ में विश्व चैम्पियन हुआ। इसी पर चढ़कर एरिख हेगेन १९६० के शांति सायकिल भ्रमण में विजयी हुआ।

खुद गुस्ताव का कहना है, "पहले हमें बाहर से सायकिलें मंगानी पड़ती थीं। और इन मकेनिक साहब—विन्कलर—के बगैर भी किसी दौड़ की कल्पना नहीं की जा सकती

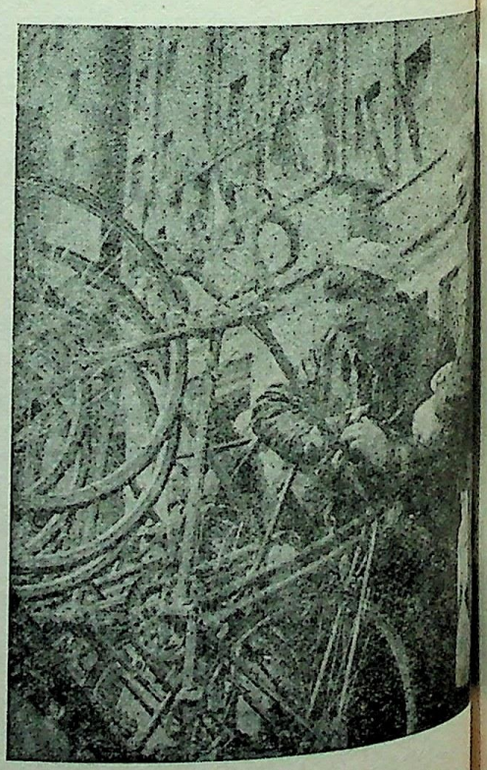

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अब हमारे पास दौड़ के लिए खुद अपनी सायकिलें हैं। फ्रान्स और हालैंड में आयोजित विश्व चैम्पियनशिप पाने के बाद लोग मुझसे पूछने लगे कि 'डायमन्ड' कहां से खरीदी जा सकती है। "हमारे मज़दूरों और इंजीनियरों ने हमारी विजयों की नींव डाली है। हमें उन पर गर्व है।"

हमारी सायकिल टीम के साथ एक साहब और रहते हैं एरिख विन्कलर। आप हर उस प्रतियोगिता में देखे जाते हैं जहां हमारे सायकिलबाज़ भाग ले रहे हों। विन्कलर साहब चीफ़ मैकनिक हैं। आपकी उपस्थिति हमारी टीमों में एक अजब आत्मबल भरती रहती है। कभी आप भी सायकिलबाज़ थे। सन् ६० की शांति सायकिल दौड़ के बाद हमारी उनसे मुलाक़ात हुई। अपनी सायकिलों की चर्चा शुरू हुई। आपने कहा :

"सड़कों पर होने वाली हर दौड़ में सायकिलें कुछ खराब हो जाती हैं। लेकिन हमारी 'डायमन्ड' इसका अपवाद है। हमारे 'क्वालिटी' टायर भी लम्बे-लम्बे इम्तहान पास कर चुके हैं। अगर कभी उनमें पंचर हुआ तो उसकी वजह रास्ते में पड़े शीशे के टुकड़े या कांटियां थे। लेकिन फ्रान्सीसी, बेल्जियम या अन्य टीमों में ज़्यादा पंचर हुए थे। यहां तक कि हमने उन टीमों को भी अपने टायर सप्लाई किये। . . ."

वर्नर शिफ़नर "खेल-कूद के सम्मानित चैम्पियन" हैं। आप को कई सरकारी पदक भी मिल चुके हैं। आजकल आप हमारी नेशनल टीम को ट्रेनिंग दे रहे हैं। आपका विचार हैं :

"पिछले सालों हमने सचमुच बहुत प्रगति की है। ट्रेनिंग के नये क़ायदे बहुत कामयाब साबित हुए हैं। हमारे कारखानों ने अपने उत्पादन को अन्यतम बनाने के लिए बहुत कुछ किया है। आज हम इस दिशा में विदेशी मुद्रा तो बचा ही रहे हैं, साथ ही 'डायमन्ड' और 'क्वालिटी' का निर्यात भी करते हैं। यहां तक कि पश्चिमी जर्मनी में ३६ दूकानें ऐसी हैं जहां हमारा माल बेचा जाता है। विजयों का श्रेय खिलाड़ियों की चतुराई और पैरों की तेज़ी को ही नहीं, सायकिलों की क्षमता को भी है। २०० कीलोमीटर खत्म करते-करते अगर सायकिल जवाब दे जाय तो क्या हो। सारी आशा पर पानी ही तो फिरेगा। सायकिलबाज़ को चाहिए कि वह अपनी चीज़ को खूब ठोंक-बजाकर देख ले . . . और फिर पैडिल पर क़दम रखे . . ."

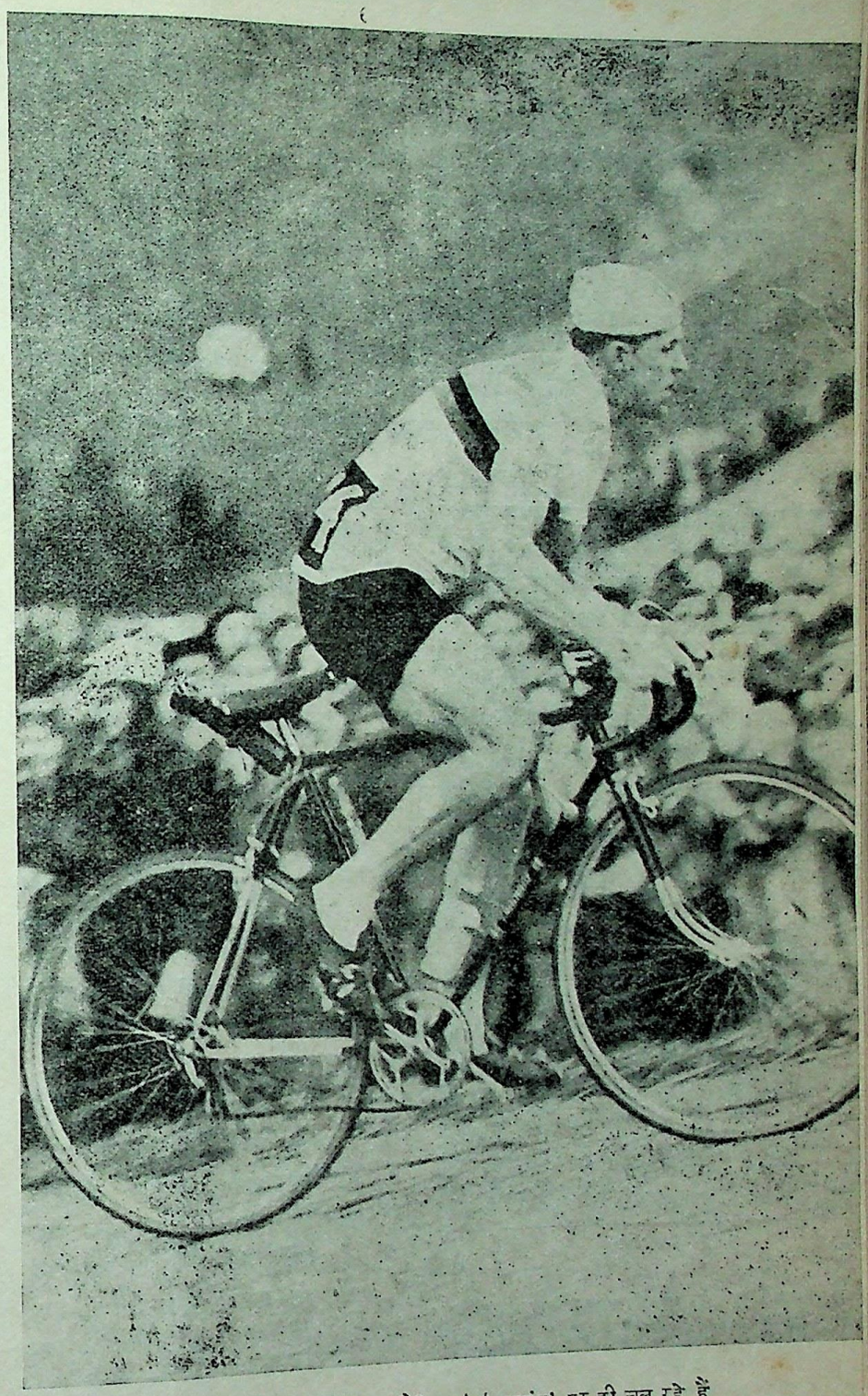

गुस्तोव अदोल्फ शुर (दो बार के विश्व-चैम्पियन) 'डायमंड' पर ही चल रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफ़ा फ़िल्म जगत :

"पांच ख़ाली कारतूसें"

★ स्पेन – १९३६। स्पेन की आज़ादी इटली, जर्मनी और स्वयं स्पेन के फ़ासिस्तों के पैरों तले रौंदी जा रही है। दूसरी तरफ़ दुनियाभर की जनता बेचैन हो उठती है। स्पेन की जनता भी बेचैन है। सब मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड बनाते हैं और स्पेन की रक्षा करते हैं।

★ कप्तान विटिंग (नायक) सरल हृदय का आदमी है। पर उसमें विजय की ऐसी आशा है जिसे बुझाया नहीं जा सकता। उसके साथ पांच योद्धा भी हैं---एक स्पेनवासी, एक जर्मन, एक पोलैंडवासी, एक फ्रान्सीसी और एक बुलगारियन। दुर्भाग्यवश ये लोग अपनी टुकड़ी से कटकर अलग हो जाते हैं।

★ ख़तरनाक घावों के बीच कप्तान विटिंग के दिमाग में महज़ एक चिन्ता है और वह यह कि उसके कमान के पांचों आदमी कैसे हैं। अगर उन्हें अपनी टुकड़ी से जाकर मिलना है जो दुश्मन की कतार फोड़कर ही जाना होगा, और इसके लिए उन पांचों को एक साथ ही जाना होगा।

★ कप्तान का आख़िरी कमान उन पांचों को एक सूत्र में बांध देता है। हर एक अपनी कारतूस की खाली पुड़ियों में कमान का एक-एक टुकड़ा रख लेता है। सारे टुकड़ों को मिलाकर पढ़ने पर पूरा कमान बनता है। अपने थके-हारे शरीर का बोझ लादे वे आगे बढ़ते हैं। उनके कंठ सूख रहे हैं। पानी की एक बूंद भी दुर्लभ है क्योंकि पानी वाले स्थानों पर फ़ासिस्तों का क़ब्ज़ा है।

★ पांचों सिपाहियों में जीने की इच्छा अपने अन्तिम छोर पर पहुंच चुकी है। बस वह कमान के टुकड़े हैं जो उन्हें ज़िन्दा रहने की हिम्मत और शक्ति दे रहे हैं। उनमें से एक का दम उखड़ जाता है। लेकिन बाकी चारों अपनी टुकड़ी के पड़ाव पर पहुंच कर ही दम लेते हैं। कमान के टुकड़े जोड़कर पढ़े जाते हैं : एक साथ--खड़े रहो--और तुम--ज़िन्दा रहोगे।"

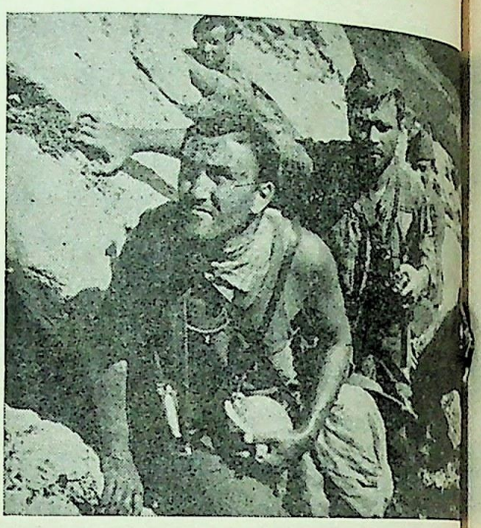

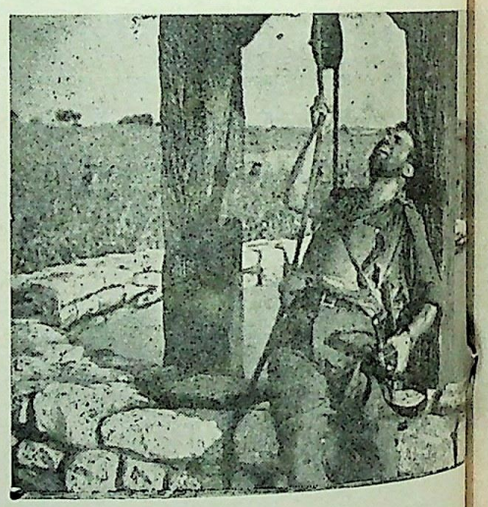

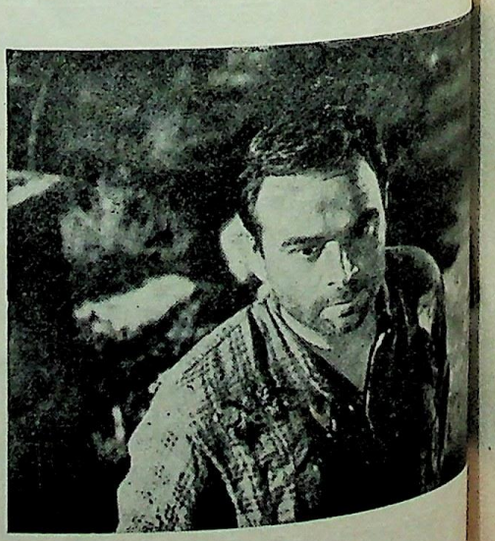

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

हाइनरिख़ मन घर वापस आये

महान जर्मन लेखक हाइनरिख़ मन की अन्तिम इच्छा थी कि उनकी अस्थियां बर्लिन में सुरक्षित की जांय और गत २७ मार्च को उनकी ९० वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनकी इस इच्छा की पूर्ति भी हो गयी।

हाइनरिख़ मन की मृत्यु १९५० में कैलीफ़ोर्निया नगर (अमरीका) में हुई। उनकी इस इच्छा की सूचना उनकी बेटी ने जर्मन जनवादी गणतंत्र को दी जो आजकल प्राग में रहती हैं। आपने एक भेंट में कहा : आपके गणतंत्र में मेरे पिता एक नये और न्यायपूर्ण जर्मनी का दर्शन पाते थे। उनकी इच्छा थी कि वे अपने जीवन के अन्तिम दिन यहीं बितायें। हाइनरिख मन ने १२ मार्च १९५० को अपनी मृत्यु के कुछ ही क्षण पूर्व जर्मनी के इस प्रथम शांतिमय राज्य की स्थापना का स्वागत किया था और यहां वापस आने की भी इच्छा प्रकट की थी। आप को इस बात से विशेष रूप से संतोष था कि इस जर्मनी में उस नाज़ीवाद का लेशमात्र भी बाक़ी नहीं रहा जिसने उनके जैसे हज़ारों शांतिप्रिय नागरिकों को अपनी मातृभूमि छोड़ने पर मजबूर कर दिया था।

जर्मन लेखक की बेटी ने खुशी का इज़हार करते हुए कहा कि मेरे दिवंगत पिता की अस्थियां जर्मन जनवादी गणतंत्र में भले लोगों के हाथों में हैं।

खेल की दुनिया में घुटाला

हाल में बर्फ़ हाकी विश्वचैम्पियनशिप का आयोजन स्विटज़रलैंड में हुआ। यहां पश्चिमी जर्मनी की टीम ने अपने नाम के साथ एक और घुटाला जोड़ लिया। पश्चिमी जर्मनी के विदेश मंत्रालय ने अपनी टीम को फ़रमान देकर जर्मन जनवादी गणतंत्र की टीम के साथ खेलने से मना कर दिया। जर्मन जनवादी गणतंत्र की टीम अमरीका को ६ : ५ से हरा चुकी थी और सभी क्षेत्रों

आपकी जिज्ञासा :

प्रिय भाई,

आपके देश में बच्चों की शिक्षा और उनके मनोरंजन की समस्याएं कैसे हल की जाती हैं? कृपया शिशु-साहित्य पर भी प्रकाश डालें। शिशु-कल्याण योजनाओं की क्या स्थिति है?

आपका

केशव कुमार शर्मा
नोहरगढ़ रोड, जयपुर,
राजस्थान।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में ६ से १६ वर्ष की आयु के तमाम बच्चों की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है। इनमें ७५ प्रतिशत बच्चों को किताबें भी मुफ्त दी जाती हैं। उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में अधिकांश छात्रों को २५ से लेकर ६० मार्क तक की मासिक छात्र-वृत्तियां दी जाती हैं।

हमारे देश के स्कूलों की तमाम इमारतें मजबूत और आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं। एक कक्षा में औसतन २६ छात्र बैठते हैं। सारे देश में शिक्षा एक स्तर की है। गांवों के स्कूल भी इसके अपवाद नहीं। १९४५ के बाद विशेष रूप से गांवों के स्कूलों में बहुत सुधार हुआ है। सन् १९४५ से पहले ४११४ ऐसे स्कूल थे जहां सभी कक्षाएं एक ही कमरे में लगा करती थीं। आज वह स्थिति पिछले दिनों की याद बन कर रह गयी है।

सन् १९५९ में देश भर के स्कूलों में बहुधंधी शिक्षा का प्रारम्भ किया गया। इसके मुख्य-मुख्य विषय इस प्रकार हैं :

१. छात्रों और मजदूरों में सम्पर्क, पढ़ाई के साथ-साथ काम,

२. उत्पादन प्रक्रिया और उसके संचालन का सामान्य ज्ञान (हफ्ते में एक बार स्कूली बच्चे कारखानों या कृषि-समितियों में जाकर विभिन्न विषयों की जानकारी हासिल करते हैं)

३. प्रकृति-विज्ञान के बुनियादी नियम,

४. साधारण मशीनों और प्रचलित नाप-जोख के बाट के संचालन की जानकारी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बच्चों के लिए मनोरंजन की अनेक सुविधाएं हैं। सारे स्कूलों में पायोनियर संगठन या बच्चों के क्लब हैं जिनमें ६ से १४ वर्ष की आयु के ६० प्रतिशत बच्चे सदस्य होते हैं। इनमें उनके मनोरंजन के लिए अभिनय, नाच, गाना, खेल-कूद और फ़िल्मों का आयोजन होता रहता है। साथ ही बच्चों के प्रिय विषय जैसे हवाई जहाज़, जहाज़ और दूसरी चीज़ों के खिलौने बनाने की भी शिशुसुलभ शिक्षा दी जाती है। विभिन्न शहरों में ९२ शिशु-प्रासाद और ३९ शिशु-भ्रमण केन्द्र पाये जाते हैं। फिर स्कूल के बाद बच्चों की देख-भाल करने के लिए अनेक क्लब हैं जहां अनुभवी और कुशल शिक्षकों की देख-रेख में ये बच्चे स्कूलों में दिये गये पाठ आदि तैयार करते और अपने मन-पसंद की चीज़ें बनाते-खेलते हैं।

जब स्कूलों में छुट्टियां हो जाती हैं तो सभी बच्चों को घूमने, सुन्दर-सुन्दर जगहें देखने और ऐतिहासिक स्थानों से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है। छुट्टियों में खेल-कूद का भी प्रबन्ध रहता है। और इन सारे मनोरंजनों का खर्च सरकार स्वयं उठाती है। इसके लिए हर साल साढ़े ६ करोड़ मार्क का अनुदान मंजूर होता है। इसके अलावा राष्ट्रीय उद्योगों की ओर से भी छुट्टियों के लिए होस्टल और शिविर चलाये जाते हैं। देश के अनेक नगरों में बच्चों के अपने रंगमंच हैं। उनके अपने प्रकाशनगृह हैं जिनमें चित्रों के अलबम से लेकर परीकथाएं, साहसिक, वैज्ञानिक, अन्तरिक्ष यात्रा आदि की कहानियां प्रकाशित की जाती हैं।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यही अनुमान लगाया जा रहा था कि पश्चिमी जर्मनी की टीम भी पराजित होकर रहेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय बर्फ़ हाकी टीम ने पश्चिमी जर्मन को ऐसा क़दम उठाने से मना भी किया और कहा कि अगर वह जनवादी गणतंत्र के झंडारोहण और उसके राष्ट्र-गान के समय स्टेडियम छोड़कर चली जायगी तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय लीग से निष्कासित कर दिया जायगा।

पश्चिमी जर्मन की टीम के न खेलने से ज. ज. गणतंत्र की टीम को दो पाइंट और ५ : ० गोल से विजयी घोषित कर दिया गया। इस प्रकार हमारी टीम विश्वचैम्पियनशिप में पांचवें स्थान पर पहुंच गयी।

पश्चिमी जर्मनी की टीम के इस दुर्व्यवहार से खिन्न होकर अन्तर्राष्ट्रीय बर्फ़ हाकी लीग के उपाध्यक्ष राबर्ट लेवेल (कनाडा) ने कहा कि ऐसी हरकतें खेल की दुनिया के लिए एक शर्मनाक घटना है।

युवकों के लिए ६ करोड़ ७० लाख पुस्तकें

हमारे 'न्यूज़ लेवेन' प्रकाशन गृह की स्थापना आज से १५ साल पहले हुई। तब से आज तक इसने १४११ पुस्तकों की ६ करोड़ ७० लाख २० हज़ार प्रतियां प्रकाशित कीं। यह 'फ्री जर्मन यूथ' संघ का प्रकाशन गृह है। अपनी १५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर यहां से दो महत्व-पूर्ण कृतियों का प्रकाशन हुआ हैं। "क्योंकि हम जवान हैं," में तरुण पीढ़ी के लेखकों की कहानियां, कवितायें, उपन्यासों के अंश और रिपोर्ताज़ संग्रहीत हैं। दूसरे प्रकाशन "मुक्त युवक—नया जीवन" में युवक संघ के समाजवादी विकास का लेखा-जोखा किया गया है।

जर्मन-अफ्रीकी संघ

गत मार्च के मध्य में 'जर्मन-अफ्रीकी संघ' नामक एक संगठन की बर्लिन में स्थापना हुई है। इस अवसर पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अलावा दस अफ्रीकी देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। संघ के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष प्रो० मार्कोव ने कहा :

"जर्मन जनवादी गणतंत्र ही एक मात्र ऐसा जर्मन राज्य है जो अफ्रीकी जनता के स्वातंत्र्य-संग्राम का निरन्तर और निस्वार्थभाव से समर्थन करता रहा है और आगे भी करता रहेगा।"

अफ्रीका की सहायता

ड्रेसडन सूबे में अफ्रीका की सहायता के लिए हाल में ५२,००० मार्क चन्दे के रूप में जमा हुआ। इस धन से अफ्रीकी राज्यों के लिए समाचार पत्रों की स्थापना की जायगी। ड्रेसडन के कारखाने ने दो टाइपराइटर भी भेजे हैं।

(ए. डी. एन.)

हमारे दोनों देशों के बीच मैत्री-संबंध और भी मज़बूत होंगे।"

ब्रिटिश एम. पी. व्यापारिक समझौते के पक्ष में

ब्रिटेन में लार्ड सभा के सदस्य लार्ड बूथबाई ने कहा, "मैं श्री उल्ब्रिख्त से सहमत हूं। यहां दो जर्मन राज्यस्थित हैं। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे सबको स्वीकार करना पड़ेगा।" बूथबाई लइपज़िक के मेले में भाग लेने आये थे। आपने ब्रिटेन और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच अच्छे संबंध कायम होने के पक्ष में बातें करते हुए कहा कि "मैं लइपज़िक में एक राजनीतिक के रूप में आया हूं। हम चाहते हैं कि हमारे दोनों देशों में व्यापार संबंध बढ़े। हमें लम्बी अवधि के लिए समझौते करने चाहिए। हमारी इच्छा है कि दोनों सरकारों में व्यापरिक समझौता हो।"

(ए. डी. एन.)

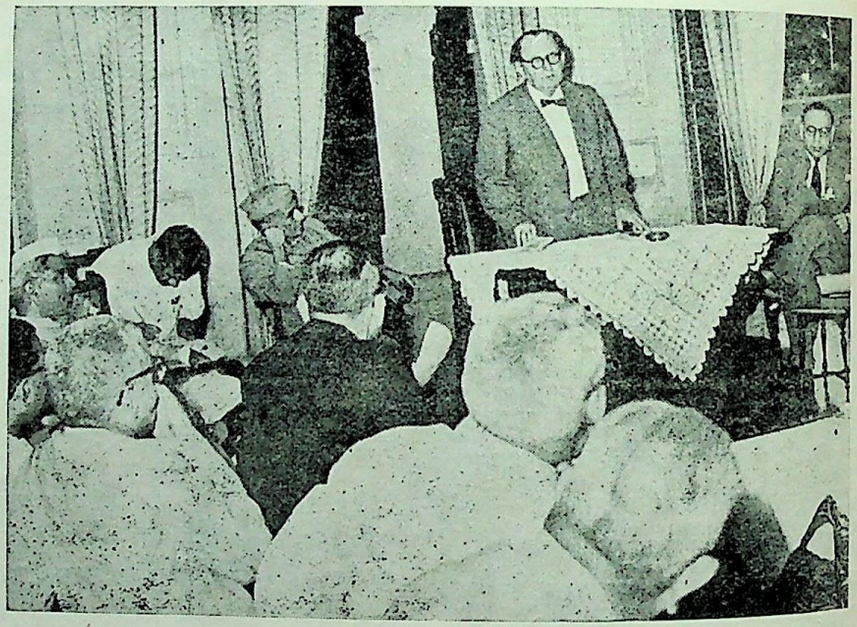

लइपज़िक विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग में डीन प्रो. बुत्सिस्लास्की इलाहाबाद के पत्रकारों की सभा में भाषण दे रहे हैं। अपनी भारत यात्रा में बम्बई, मद्रास, हैदराबाद कलकत्ता, लखनऊ, इलाहाबाद और दिल्ली घूमने के बाद आप पंजाब सरकार के अतिथि के रूप में चंडीगढ़ भी गये थे।

कांगो के प्रतिनिधि लइपज़िक में

कांगो की वैधानिक सरकार के तीन प्रतिनिधियों ने १९६१ के लइपज़िक मेले में भाग लिया। इनमें कांगो के विदेश व्यापार मंत्रालय के राज्य सचिव भी थे। उन्होंने कहा, "जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा से हमें बड़ा सुख मिला। हमें लइपज़िक मेले में भी बड़ी दिलचस्पी है। हम आशा करते हैं कि

खेती की उपज बढ़ी

जर्मन जनवादी गणतंत्र में मोटे जानवरों का उत्पादन गत वर्ष सन् १९५९ की अपेक्षा १० प्रतिशत बढ़ा। यह सूचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीस्त्रो में आयोजित उस सम्मेलन में मिली जहां सहकारी खेती के ६०० प्रतिनिधि और राजकीय अधिकारी जमा होकर चारे की वृद्धि की समस्या पर विचार-विमर्श कर रहे थे। सूचना के अनुसार पशुधन ४.८ प्रतिशत, सूअर ३.५ प्रतिशत, तेलहन १२.७ प्रतिशत, आलू ११.३ प्रतिशत बढ़ा। कुलमिलाकर १९५७ की अपेक्षा इस वर्ष खाद्य उत्पादन में ६.५ की वृद्धि हुई।

७० देशों में सूती कपड़ों का निर्यात

हमारे सूती उद्योग में विदेशी ग्राहकों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। गत दो वर्षों में इसका निर्यात ४० प्रतिशत बढ़ा। लइपज़िक मेले में इस आशय की घोषणा करते हुए सूती उद्योग प्रतिनिधि ने यह भी बताया कि आज हम ७० से भी अधिक देशों में अपना सूती माल भेजते हैं। इन देशों में हिन्देशिया, इराक़ और उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीकी देश भी शामिल है।

(ए.डी.एन.)

★ हिन्देशिया के दो पत्रकारों ने लइपज़िक स्थित हथकरघा सहकारी संघ का निरीक्षण किया। उन्हें संघ की गति-विधियों से परिचित कराया गया।

(ए.डी.एन.)

★ हुम्बोल्ड विश्वविद्यलय में 'लैटिन अमरीका' नामक एक अध्ययन गोष्ठी की स्थापना की गयी है जिसके तत्वावधान में छात्रों को उन देशों के इतिहास और साहित्य के अलावा भाषा के अध्ययन का भी अवसर मिलेगा।

(ए.डी.एन.)

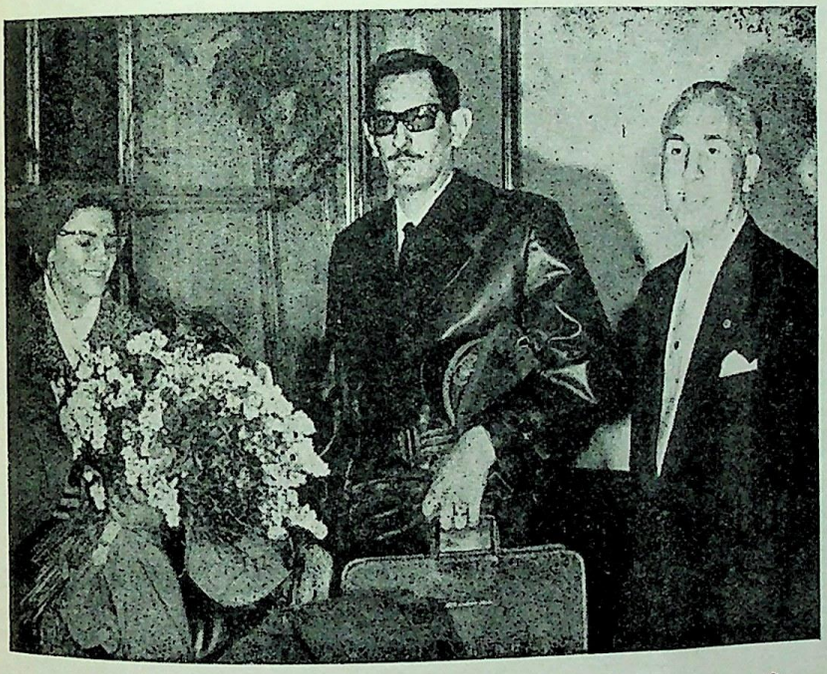

क्यूबा के यातायात मंत्री कैमाचो (बीच में) ने अपने सरकारी प्रतिनिधि मंडलका नेतृत्व करते हुए इस वर्ष लइपज़िक मेले में भाग लिया

★ गत वर्ष जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से विदेशों में १३ मेले और २ औद्योगिक प्रदर्शिनियों का आयोजन किया गया। इन्हें संबंधित देशों से कुल १ करोड़ २५ लाख आदमियों ने देखा।

(ए.डी.एन.)

यह कीचड़ किसने उछाला ?

अनेक पाठकों और मित्रों की जिज्ञासा शांत करने के उद्देश्य से हम यह बताना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि "इंडिया विथ एंड विदाउट वंडर" का प्रकाशन जर्मन जनवादी गणतंत्र में नहीं, पश्चिमी जर्मनी में हुआ है। सच तो यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में एसी पुस्तकों का प्रकाशन ग़ैरक़ानूनी है जिनमें किसी भी तरह से रंग-भेद की गंध आती हो। उक्त पुस्तक के प्रकाशन से हमारे देश की जनता और अख़बारों में क्षोभ पैदा हुआ है और हमने उसकी निन्दा की है

★ रोस्तक विश्वविद्यालय के बोटेनिकल गार्डन की ओर से दुनिया भर की ३०० संस्थाओं से संबंध स्थापित किया जा चुका है और उन्हें हर साल बीज के १२,००० पार्सेल भेजे जाते हैं।

(ए.डी.एन.)

★ १९६१ में ९३५४ नये फ्लैट बर्लिन में बनकर तैयार हो जांयगे। इनमें दुकाने, स्कूल, धुलाईघर तथा दूसरी सुविधाएं होंगी। इनमें २ करोड़ ८० लाख मार्क व्यय किया जायगा।

(ए.एन.डी.)

★ जनवादी बर्लिन के विभिन्न किन्डर-गार्टेनों में सन् ६० में १६, ८४४ बच्चों की जगह थीं। एक साल की उम्र के बच्चों का १७.८ प्रतिशत क्रेचेज़ में रहा तथा पूर्व-पाठशाला-आयु के बच्चों का ४५.फ प्रतिशत किन्डरगार्टेन में। पश्चिमी बर्लिन में यह औसत क्रमशः ५ प्रतिशत और २७ प्रतिशत रहा।

(एन.डी)

★ सन् १९६० में ५९ की अपेक्षा बर्लिन वासियों ने १९ करोड़ २ लाख मार्क का अधिक माल ख़रीदा। इनमें अधिकांश भाग रैफ्रीजरेटर, टेलीविज़न और रेडियो पर खर्च हुआ।

(एन.डी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर लरनेन दोइच WIR LERNEN DEUTSCH हम जर्मन सीखते हैं

लेक्स्योन फ़ीर Lektion Vier पाठ चार

इन लइपज़िक इस्त इन्तरनेशनेल मेस्से In Leipzig Ist Internationale Messe लइपज़िक में अन्तर्राष्ट्रीय मेला है

हेर बोस इस्त काउफ़मन एर कोम्त आउस इन्दियन उन्द मोयख़्ते दि मेस्से बेज़ुखेन
Herr Bose ist Kaufmann. Er kommt aus Indien und möchte die Messe besuchen.
श्री बोस (एक) व्यवसायी हैं। वह भारत से आते हैं, और मेला देखना चाहेंगे।

एर फ्राक्त आइनेन हेरन "बित्ते इन्थशुलदिगेन ज़ी, वो इस्त दि तेख़निशे मेस्से ?"
Er fragt einen Herrn: "Bitte entschuldigen Sie, wo ist die Technische Messe ?"
वह एक सज्जन से पूछते हैं "कृपया क्षमा करें, टेकनिकल मेला कहां (लगा) है ?"

देर हेर अन्थवोर्तेथ: "फ़ारेन ज़ी मिथ देम बुस ओदर मिथ देर श्त्रासेनबान लीन्य (नोयन)."
Der Herr antwortet: "Fahren Sie mit dem Bus oder mit der Strassenbahn Linie 9 (neun)".
वह सज्जन जवाब देते हैं: "बस से चले जाइये, या ९ (नौ) लाइन की ट्राम से।"

एस इस्त १० (त्सेन) ऊर हेर बोस हत ४ (फ़ीर) श्तुन्देन त्साइत
Es ist 10 (zehn) Uhr. Herr Bose hat 4 (vier) Stunden Zeit,
यह १० बजे हैं। श्री बोस के पास ४ घंटे का समय है,

देन एर हत एर्स्त उम फ़ीर्त्सेन ऊर द्राइत्सिक आइने फ़ेरअपरेदुंग मिथ आइनेम गेशेफ़्तसफ्रोइन्द
denn er hat erst um 14·30 Uhr eine Verabredung mit einem Geschäftsfreund.
क्योंकि उन्होंने २·३० बजे एक व्यवसायी मित्र से मिलने का समय रखा है,

एर बेज़िख़्तीख़्त दि मेस्सेहाल्ल त्स्वल्फ़ उन्द श्प्रिख़्त हीर त्स्वांत्सिक मीनुतेन मिथ आइनेम दोइचेन आउस श्तेलर
Er besichtigt die Messehalle 12 (zwölf) und spricht hier 20 (zwanzig) Minuten mit einem deutschen Aussteller.
वह बारह बजे मेलाभवन देखते हैं और २० मिनट तक एक जर्मन प्रदर्शक से बातें करते हैं।

दन बेज़ूख़्त एर देन इन्दिशेन पविल्यां फ़ीले बेज़ूख़ेर उन्द गेशेफ़्तस् लोइते जिन्द दोत
Dann besucht er den indischen Pavillon. Viele Besucher und Geschäftsleute sind dort.
तब भारतीय मंडप का निरीक्षण करते हैं। वहां अनेक दर्शक और व्यवसायी हैं।

हेर बोस गेत उम द्राइत्सेन ऊर एसेन
Herr Bose geht um 13 (dreizehn) Uhr essen.
श्री बोस एक बजे खाना खाने जाते हैं।

इस पाठ में आये नये शब्द

नये शब्दों का क्रम पाठ के अनुसार ही दिया जा रहा है। अंकित शब्दों के लिए व्याकरण देखिये।

international	इन्तरनेशनल	अन्तर्राष्ट्रीय
der Kaufmann	देर काउफ़मन	व्यवसायी
die Kaufleute	दि काउफ़लेन्ते	व्यवसायी का बहुवचन
aus	आउस	(यहां) से
Indien	इन्दियन	भारत
indisch	इन्दिश	भारतीय (विशेषण)
der Inder	देर इन्देर	भारतीय (संज्ञा)
besuchen	बेज़ुखेन	देखना
entschuldigen	इन्थशुलदिगेन	क्षमा करें
wo (2)	वो	कहां
technisch	तेख़निश	टेकनिकल
antworten	अन्थवोर्तेन	जवाब देना
fahren (1)	फ़ारेन	जाना (किसी प्रकार की गाड़ी से,
gehen	गेन	जाना (पैदल)
der Bus (3)	देर बुस	बस (मोटर)
die Strassenbahn (3)	श्त्रासेनबान	ट्राम
die Linie	दि लीन्य	लाइन
er hat (2)	एर हत	वह रखता है
die Zeit	दि त्साइत	समय
denn	देन	क्योंकि
14·30 Uhr (4)	फ़ीर्त्सेन ऊर द्राइत्सिक	चौदह बजकर तीस मिनट (ढाई बजे)
die Verabredung	दि फ़ोरअपरेदुंग	मिलने का निश्चय
der Geschäftsfreund	देर गेशेफ़्तस फ्रोइन्द	व्यवसायी मित्र
sprechen	श्प्रिशेन	बात करना
hier	हीर	यहां
die Minute	दि मिनुते	मिनट
der Aussteller	आउस श्तेलर	प्रदर्शनीवाला (प्रदर्शक)
besichtigen	बेज़ूख़्ताइगेन	देखना, अवलोकना निरीक्षण करना
Pavillon	पविल्यां	मंडप
essen (9)	एसेन	भोजन करना, खाना

व्याकरण

१. जैसा कि पहले ही (पाठ एक में) बताया जा चुका है, कुछ क्रियाओं के स्वर अन्य पुरुष एक वचन के साथ बदल जाते हैं:

a—ä

ich verlasse	इख़ फ़ेरलस्से	er verlässt	एर फ़ेरलास्त
ich fahre	इख़ फ़ारे	er fährt	एर फ़ार्त

e—i

ich spreche	इख़ श्प्रख़े	er spricht	एर श्प्रिख़्त
ich treffe	इख़ त्रेफ़े	er trifft	एर त्रिफ़्त
ich gebe	इख़ गेबे	er gibt	एर गिब्त
ich sehe	इख़ से	er sieht	एर सीत
ich esse	इख़ एस्से	er isst	एर इस्त

au—äu

ich laufe	इख़ लउफ़े	er läuft	एर लाउफ़्त

आगे चल कर हम इस प्रसंग में आने वाले कुछ अपवाद जैसे laufen, äu की चर्चा करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Herr Bose hat Zeit." "Wo ist die Messe?"

२. नीचे हम 'to have' और 'to be' के वर्तमान कालिक प्रयोग दे रहे हैं।

ich habe Zeit	मैं समय रखता हूं, मेरे पास समय है
er hat	वह खाता है
sie hat	वह खाती है
es hat	यह रखता है
wir haben	हम रखते हैं
sie haben	वे रखते हैं
Haben Sie?	क्या आप रखते हैं?

to be

ich bin Inder	मैं भारतीय हूं
er ist aus Bombay	वह बम्बई से (के) हैं
sie ist aus Bombay	वह बम्बई से (की) हैं
es ist aus Bombay	यह बम्बई से (का) है
wir sind im Hotel	वह होटल में है
Sind Sie hier?	क्या आप यहां हैं

३. "....mit dem Bus oder mit der Strasenbahn"

'mit' चिन्ह के लिए नीचे लिखी संज्ञाएं सम्प्रदान कारक (चतुर्थ विभक्ति) के रूप में होनी चाहिए।

der Bus (—कर्त्ता कारक, पुलिंग)
(mit) dem Bus (—सम्प्रदान, पुलिंग)
die Strassenbahn (कर्त्ता कारक, स्त्रीलिंग)
(mit) der Strassenbahn (—सम्प्रदान, स्त्रीलिंग)

कृपया इन वाक्यों को याद करें :

Ich fahre mit dem Bus, mit dem Zug (सभी पुलिंग)

Fahren Sie mit der Strassenbahn oder mit der Taxe? (सभी स्त्री लिंग)

Sie fahren mit dem Auto, mit dem Schiff (सभी नपुसंक लिंग)

पृष्ठ ४ का शेष

इस बात का सबूत है कि हमारे उद्योगों का यह पहलू एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मिसाल के लिए संयुक्त अरब गणतंत्र में हमारा निर्यात दुगुना हुआ है और इराक़ में बीस गुना बढ़ा है।

इस सिलसिले में यह जानना आवश्यक है कि भारत के साथ उत्पादन समझौते की दिशा में जिस चीज़ का हमने लाइसेंस दिया है, वह आफ़िस मशीनें ही हैं। इस समझौते के अनुसार भारत को टाइप-राइटर बनाने का लाइसेंस दिया गया है जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से ज़रूरी मदद दी जायगी।

हमारी मशीनें अपने ढंग की बेजोड़ हैं इसकी मिसाल हमारा अरबी टाइप-राइटर है जो समस्त अरबी भाषी जगत पर छाया हुआ है। संयुक्त अरब गणतंत्र में जितने टाइपराइटर बाहर से मंगाये गये उनका ८० प्रतिशत जर्मन जनवादी गणतंत्र का है।

पश्चिमी जर्मनी के लगभग सभी सेविंग बैंकों और दूसरे बैंकों में हमारी जोड़ने की मशीनें इस्तेमाल की जाती हैं। हालैंड के डाक विभाग में हमारी ही मशीनें हैं। फ्रान्स की सरकार का टेन्डर भी हमको ही मिला है। यूनान के सामाजिक बीमा योजना के टेन्डर हमने हासिल किये हैं जिसमें जोड़ने की मशीनें ख़रीदी जायगी। हमारी बुकिंग मशीनें फ्रान्स के रेल विभाग में, पोलैंड के सरकारी बैंकों में तथा पश्चिमी जर्मनी और आस्ट्रिया के बैंकों में इस्तेमाल की जाती हैं।

इसके अलावा हम पेरिस, हेनोवर, मिलन, कोपेनहेगन, दमिश्क, बग़दाद, ज़गरेब और पोज़नान आदि के अन्तर्राष्ट्रीय मेलों में भी इन मशीनों के साथ भाग लेते हैं। साथ ही हम इनके लिए विशेष प्रदर्शिनियों का भी संगठन करते हैं। जैसे इसी साल ओसलो, ब्राजील, अर्जन्टाइना और मेक्सिको की प्रदर्शिनियां।

सन् ६० की तुलना में हम अपनी आफ़िस मशीनों का निर्यात सन् १९६५ में २०५ प्रतिशत तक बढ़ाना चाहते हैं।

पृष्ठ ७ का शेष

क़ानूनों और आदेशों के बनाने में भी योगदान करती है।

कारख़ाने की लक्ष्य-पूर्ति में कुछ दिनों तक एक बाधा खड़ी रही। लोग बड़ी संख्या में बीमार होते रहे। लेकिन इस बीमारी की क्या वजह हो सकती थी? एर्ना को अपने सहयोगियों से कुछ बड़े ही मूल्यवान संकेत मिले। कोई ताज्जुब नहीं की कारख़ाने में हाथ धोने के पानी में कुछ गड़बड़ हो और शायद इसीलिए इतने लोगों को गठिया पकड़ रहा हो! श्रीमती एर्ना ने पानी की जांच कराई, उसमें जरूर गड़बड़ मिली जिसे तुरन्त दूर करा दिया गया। गठिया के बीमारों की संख्या कम होने लगी और कारख़ाने का लक्ष्य तेज़ी से पूरा होने लगा।

कुछ संख्याएं

eins	आइन्स	एक
zwei	त्स्वाइ	दो
drei	द्राइ	तीन
vier	फ़ीर	चार
fünf	फ़ुइन्फ़	पांच
sechs	ज़ेक्स	छ
sieben	ज़ीबेन	सात
acht	अख़्त	आठ
neun	नोइन	नौ
zehn	त्सेन	दस
elf	एल्फ़	ग्यारह
zwöl	त्स्वल्फ़	बारह
dreizehn	द्राइ त्सेन	तेरह
vierzehn	फ़ीर त्सेन	चौदह
fünfzehn	फ़ुइन्फ़ त्सेन	पन्द्रह
sechzehn	ज़ेख़ त्सेन	सोलह
siebzehn	ज़िप त्सेन	सत्रह
achtzehn	अख़्त त्सेन	अठ्ठारह
neunzehn	नोइन त्सेन	उन्नीस
zwanzig	त्स्वान त्सिक	बीस
dreissig	ड्राइत्सिक	तीस
vierzig	फ़ीरत्सिक	चलीस
fünfzig	फ़ुइन्फ़त्सिक	पचास
sechzig	ज़ेख़त्सिक	साठ

श्रीमती एर्ना पीपुल्स चैम्बर की बैठकों के बाद उस कारख़ाने में उसी तरह अपने काम पर जुट जाती हैं जैसे वहां के अन्य मज़दूर। अपने काम के ही दौरान में वे मज़दूरों की भलाई की बातें सोचती रहती हैं। इस काम से उन्हें कभी थकावट नहीं महसूस होती। और शायद इसीलिए उनकी सदस्यता में सारे मज़दूरों की अडिग आस्था भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश और आन्तरिक व्यापार मंत्री श्री हाइनरिख राउ ने अपने निधन से एक सप्ताह पूर्व लइपज़िक के वसन्त मेले का निरीक्षण किया। चित्र के बीच आप पश्चिमी जर्मनी के मंडप में खड़े दिखायी दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INFORMATION BULLETIN

PUBLISHED BY
THE TRADE REPRESENTATION
OF THE

GERMAN DEMOCRATIC REPUBLIC

4 VOL 6.
APRIL
1961

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In all questions relating to trade with the GDR as well as to economic and cultural life in Germany you may obtain information from:

THE
Trade Representation of the GERMAN DEMOCRATIC REPUBLIC

22/39 Kautilya Marg, New Delhi
Post Box 320
Phones: 32480, 31041. Cables: HAVDIN, New Delhi

●

Branch Offices:

Mistry Bhawan, 122, Dinshaw Wacha Road, Bombay

Phone: 245051/2 Cables: HAVDIN, Bombay

●

Faraday House, P-17, Mission Row Extension, Calcutta

Phone: 235504/5 Cables: CALHAVDIN

●

4, Valliamal Road, Vepery, Madras

Phone: 61314 Cables: HAVGERMAN

Vol. 6, No. 4 April 10, 1961

CONTENTS

	PAGE
A Life Devoted To The People	3
1961 Leipzig Spring Fair—World's Biggest	4
GDR Export of Office Machines	4
Our Portrait	
Friedrich Ebert	5
Pioneers in Rhin-Luch	5
Working Democracy	
A GDR M.P. at Her Workplace	7
The German Fashion Institute	8
.....and in the Evening to the Village Club	9
The Warnow-Shipyard	
Yesterday-Today-Tomorrow	11
Have A Look Around in the GDR	
The Harz Mountains	12-13
Centres of Indology in the GDR	
University Activities	14
Sports	
DIAMANT Cycles Help Win Victories	16
Wir Lernen Deutsch	
Lesson 4	18
News From DEFA Filmland	
"Five Cartridge-Cases"	19
Our Letterbox	20
News From GDR	20

FRONT COVER PAGE

Copper Miners are rightly happy about their achievement: they fulfilled their 1960 annual plan 17 work-days ahead of schedule

Any news or articles given in this bulletin may be published without permission. Press clippings are appreciated.

Published by the Trade Representation of the German Democratic Republic, 22/39 Kautilya Marg, New Delhi, and printed by the United India Press, 47, Rajinder Nagar Market, New Delhi-5.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A LIFE DEVOTED TO THE PEOPLE

Heinrich Rau, Deputy Prime Minister and Minister for Foreign and Inner-German Trade of the German Democratic Republic, closed his eyes for ever on 23rd March, 1961. Grieved and with profound sorrow, the Central Committee of the Socialist Unity Party, the Council of State, the Council of Ministers, the People's Chamber of the German Democratic Republic and the Council of the National Front of Democratic Germany announced, in an obituary, the severe loss sustained by the GDR people through the sudden demise of the greatly respected Minister Heinrich Rau.

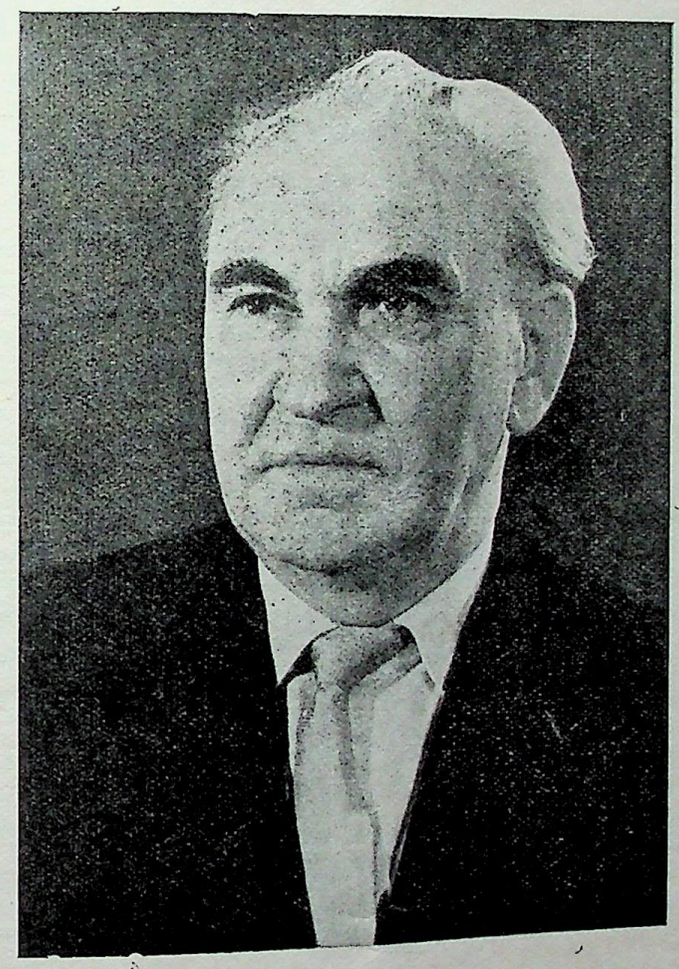

Heinrich Rau

Associated with the German working class movement from his early youth, Heinrich Rau never tired of working and fighting for a new and better Germany, free from militarist and fascist dictators. During the fascist era in Germany Heinrich Rau worked underground against the Hitler regime on account of which he was arrested and tortured by Hitler's Gestapo. Having escaped the prangs of the Nazis, Heinrich Rau joined the international brigades which fought against fascism in Spain, where he became Brigade Commander. Later, in France, he was again arrested and extradited to fascist Germany where he was put into concentration camp. Only at the end of the war he saw freedom again.

Heinrich Rau has always stood in the forefront of building a new Germany. After the foundation of the German Democratic Republic in 1949 he became Minister of Planning, in 1952 Heinrich Rau became Deputy Prime Minister, a year later Minister for Machine Building and since 1955 he had been the Minister of Foreign and Inner-German Trade. Thus his name is inseparably linked with the development of foreign trade of the German Democratic Republic. He devoted particular attention to develop extensive trade relations of the GDR with the young national states of the Near and Middle East, Asia, Africa and Latin America. By doing so he has rendered an outstanding contribution towards gaining high respect and consideration for the German Democratic Republic in those countries. It is, last but not least, to a great extent thanks to Heinrich Rau's care and farsighted guidance, that the Leipzig Fair has become the most significant centre of East-West trade, and is fulfilling the great mission of peace and promotion of trade among the nations.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1961 LEIPZIG SPRING FAIR—WORLD'S BIGGEST

The 1961 Leipzig Spring Fair, the biggest fair not only in the history of Leipzig itself but in the history of all world fairs, recorded the participation of 629,200 visitors from 90 countries and a total turnover of foreign trade of the GDR to the tune of 471 crore 80 lakh Marks, which is an increase of 11.5 p.c. compared to 1960. The Spring Fair started on March 5 and ended on March 14.

Nine thousand exhibits from fifty one countries of the world—socialist and non-socialist—presenting everything within the reach of one's imagination, i.e. from complete industrial plants to most modern fashion tit-bits, can simply be described as a milestone of not only of grandest universal character of the Fair but also a milestone in furthering the implementation of the principles of peaceful co-existence and the relaxation of international tension through new and strong impulses for a rapprochement emanated from this huge conglomeration of people hankering for peace and prosperity through trade and not through war.

Export contracts of the GDR with capitalist countries amounted to 78 crore, 10 lakh Marks and import contracts to 47 crore 10 lakh Marks. With West Germany GDR had a trade turnover of 34.4 crore Marks.

And the export contracts of the GDR with socialist countries amounted to 259 crore 80 lakh Marks and import contracts to the tune of 47 crore 10 lakh Marks.

In totality, the export contracts of the GDR registered an increase of 10.2 p.c. and import contracts an increase of 15 p.c.

But this does not mean that the foreign participants did not fare well. They also did a roaring business during these ten days. Transactions among foreign exhibitors increased considerably, particularly by the Soviet Union, Czechoslovakia, Poland and Hungary with non-socialist countries.

This Spring Fair, apart from putting the GDR at par with world level in connection with various industrial products and highly developed machine-tools resulting in a great increase of prestige and demand of her products especially automatic machines, chemicals, textiles, china ware and toys, also presented the real picture of the GDR with its dauntless economic growth on socialist lines, unshakable political consolidation and ever-growing international prestige.

The 1961 Leipzig Spring Fair was not only a great commercial exhibition, it was also a great political and cultural event in Europe. There were in all 500 journalists of the world. It took a special pleasure in welcoming the participants of the 14th session of the Council for Mutual Economic Aid. Government delegations from numerous other countries such as India, UAR, Cuba, Brazil, Burma, Ghana and Indonesia visited the fair. In addition there were numerous prominent personalities, among them being MPs from Britain; French Trade Counsellor and ministers from Cuba, Indonesia, Ghana and Yemen. The presence in Leipzig of so many prominent economists and politicians enabled fruitful talks on political, economic and cultural problems which can contribute towards promoting understanding among nations.

... In short the Leipzig Spring Fair was one more proof of growing strength of the socialist camp—economic, political, cultural and moral.

GDR EXPORT OF OFFICE MACHINES

The export of office machines holds a significant position in the foreign trade of the German Democratic Republic. It ranks fifth in the world.

All over the world the well-known top products of our office machine industry enjoy a very high reputation. An ever increasing number of countries buy these products. At present our office machines are exported to 80 countries.

Altogether the export of office machines rose to 158 per cent in 1959 as compared to 1956.

The foreign trade policy of the GDR is an inseparable part of her peaceful foreign policy. This is expressed in our trade relations with all countries. The trade relations of the GDR with the non-socialist countries are based on the principles of peaceful co-existence. Particular attention is paid to the relations with the economically less developed countries. In this respect the interest of the GDR in importing goods directly from the countries of origin is in accordance with that of the said countries who wish to obtain economic aid by deliveries of machines as well as technical aid in the development of their own national industry.

The remarkable increase of the export of office machines to these countries shows that this industrial branch plays a considerable role. Thus, for instance, the export to the UAR was doubled, while that to Iraq even rose by the twenty-fold.

In this connection it is interesting that the office machine branch was the first to conclude a licence production contract with India. The contract envisages the construction of typewriters in India with the necessary help rendered by the GDR. The sale of our machines in other countries is supported by an excellent and extensive network of agents.

Our office machines are of an outstanding quality and meet all requirements. This is proved by the fact that the office machines from the GDR are used in all branches of economic life. Here are but a few examples:

Our Arabic typewriters enjoy great demand in the whole Arabic speaking region thanks to their good quality and excellent type. Thus 80 p.c. of all typewriters imported by the UAR are bought from the GDR. All government tenders of the UAR for ministries, including the army, post and railways, were competed and won by us. Our accounting machines are used in almost all savings banks and banks of Western Germany. In Holland they are particularly widespread in the postal administration. In France we won the tender for the post ministry with our accounting machines "ASTRA" and in Greece the tender for the social insurance scheme with our accounting machine "Supermetall". Our booking machines are being used successfully in the French railways, the Polish state bank, in banks of West Germany, in the Austrian Laenderbank.

The demand for the products of the office machine industry of the GDR becomes evident again and again in the steadily growing number of visitors at our stalls of the Leipzig spring and autumn fairs. Besides Leipzig we participate in all important international fairs, e.g. in the S.I.C.O.B. in Paris, in the International Fair in Paris, in the fairs of Hanover, Milan, Copenhagen, Damascus, Bagdad, Zagreb, Poznan etc.

Moreover we often organise special exhibitions, as this year in Oslo, Brazil, Argentina and Mexico.

Our aim is to increase the export of office machines to 205 p.c. in 1965 as compared to 1960.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Pioneers In Rhin-Luch

275,000 Acres Land Drained by GDR Youth

By HEINZ HOFFMANN

Sixty seconds to go.... Only the lenses of the spy glasses remain visible above the edge of the trench. With their white helmets and wadded suits the boys and girls resemble astronauts rather than waste-land pioneers. They look at their watches. Forty-five seconds to go—20—15—3....

The explosion rumbles through the moor. A mushroom of sand, moor and torn grass patches is blown up. For a moment it stands there, visible for many miles, then it falls to the ground. The four waste-land pioneers crawl out of the trench and run to the spot where the explosion took place. They are faced by a ditch, a new 60 metre long section, a very small part of the large network of ditches which is to drain 275,000 acres land, meadows and pastures, rendering them thus fit for cultivation.

275,000 acres where formerly only wild animals roamed, will be turned into juicy pastures from where a permanent stream of milk will flow towards Berlin in the near future.

This region consisting of meadows, sandy soil, ten or fifteen villages, is located right before the gates of the three and a half million city of Berlin and is called the Rhin-Luch.

"Luch" is one of the German words for moor. If you look it up in a dictionary you will find: "Luch is a bog, a lowland in a transitional stage between swamp and moor proper." But this does not tell anything about the poverty of such land which is always wet and from where the cows come back hungry after having grazed all day long; it does not tell of the poverty of the farmers living there, who were so poor that often they were not able to afford more than just bread. Here we formerly had a steppe, right in the middle of Germany. As far as the eye could see there was nothing but yellow, parched grass with only some crippled willows and bushes here and there. The former German government, the government of the junkers, did not spend a single penny for this bog "without a future".

But the workers' and peasants' state had a different attitude. All that had to be done was to drain this land in order to make it fertile and cultivable for the benefits of all. This moor, this bog, has a great future in store. Rhin-Luch resembled a treasury the location of which was known. Should it never be utilised?

Berlin, this great metropolis, has a huge stomach which needs meat and butter and milk, which is even today being brought from Mecklenburg villages, over 100 miles away.

Thus the Rhin-Luch was declared one of the main projects of the Seven Year Plan. In September 1958 it became the "Milk Vein Project of Youth".

At Paaren there is a house where the hunting guests invited by its

OUR PORTRAIT

FRIEDRICH EBERT

Member of the Council of State of GDR and Lord Mayor of Berlin

Friedrich Ebert was born on 12th September, 1894 in Bremen. Having learnt the trade of a printer, he joined the trade union movement and the Social-Democratic Party of Germany at the age of eighteen. In the years 1918 to 1923 Friedrich Ebert took an active part in the struggles which ended monarchy in Germany. From 1919 till 1933, he worked as editor and chief editor of social-democratic papers in and around Berlin. In 1928, Friedrich Ebert was elected into the German Reichstag (Parliament) and was its member until 1933. When in 1933 the fascists usurped power, Friedrich Ebert was thrown into concentration camp for several years. After his release, the upright anti-fascist continued his activity under the difficult conditions of Nazi terror.

Friedrich Ebert, convinced that the split in the German working class movement had facilitated Hitler's coming to power, employed all his energies into bringing about the unity of the Social-Democratic Party and the Communist Party. This came true in 1946 when the two parties were merged to form the Socialist Unity Party of Germany. Till 1948, he held the post of chairman of the Socialist Unity Party in the Brandenburg Province. Ever since 1948 Friedrich Ebert has held the important position of Lord Mayor of Berlin. In this capacity he has made numerous efforts for bringing the two parts of this split city closer to each other. Moreover Friedrich Ebert can look back on over 10 years of being a member and Vice-President of the People's Chamber (Parliament) of the GDR. He is a member of the Political Bureau of the Socialist Unity Party and the President of the German City and Village Parliament. Since September, 1960 he has been a member of the GDR Council of State.

For his meritorious services for the consolidation of the German Democratic Republic, Friedrich Ebert was honoured with high distinctions by the State, such as the "Karl Marx Order," the "Patriotic Order in Gold," the "Medal for Fighters against Fascism," the honorary title of "Hero of Labour."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

former owner, Mr. Siemens, used to amuse themselves. Today it has become the headquarters of the Rhin-Luch project. It houses a large map occupying half a wall on which the Milk Vein Project is shown in pink, criss-crossed by hundreds of fine veins. They show the drainage ditches already dug and those which still remain to be dug.

The general staff assigned to this important task is headed by Ulli Schlaak, a 28-year old "veteran"

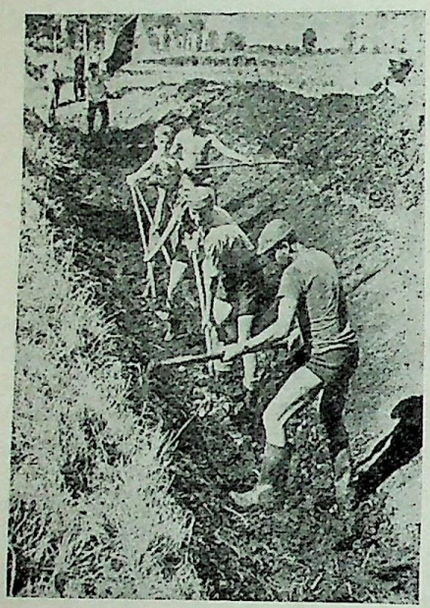

Young men have made the Rhin-Luch project their own. These students went there for a fortnight's voluntary work.

who has worked on the project ever since its inception. He comes from a little village near Potsdam. Sun and wind have tanned his hands and face.

"Two hundred and seventy-five thousand acres isn't chicken feed", said Ulli, "but we have friends who gained experience in draining the Wische—a similar bog. They now show us how to do it. And we sure shall do it, no doubt about that!"

During the past two years the erstwhile forlorn moor saw almost 20,000 young people, boys and girls of 17 to 27 years of age, workers and students, young engineers and co-operative farmers. They dug over 180 miles of ditches, shovelful by shovelful at the beginning. These ditches were to drain 50,000 acres of meadows. They conveyed the water to the main drainage channels where it was dammed up.

Let us look at the village of Doelln, for example. There the farmers have gay and happy faces today. Many an additional load of hay were they able to store in their barns. Last summer they harvested 700 kilograms of hay per hectare (2.5 acres) from their meadows. Before the boys from the "Milk Vein Project" came, it was not quite 200 kilograms. "Besides, the hay today has a higher nutrition value", the Doelln farmers say. They ought to know. "It contains more albumin. Our cows now yield 40 per cent more milk."

However, the bog pioneers were not satisfied with the speed of their work. Only 375 miles of ditches in two years, that was not sufficient. "We must find new techniques to speed up our work". they said.

The slogan 'New Technique' caught the minds at once. Till then modern technique had been rare in the moor. But the inventive spirit of the young people around Ulli Schlaak know no limits. By then these young people had long ago formed socialist teams with the workers and engineers of the Brandenburg Tractor Works. So they began to use hitherto almost unknown explosion techniques and were able to increase productivity by 116 per cent from the very beginning.

While formerly the cost per metre of shovel-dug ditch amounted to 9.40 marks, it dropped to only 4.60 marks. But it was still necessary to finish the ditch by hand.

Finally the diligence of the brigade was rewarded. About the middle of 1960 they found the right method. This was a colossal ditch digger able to finish the whole profile of a 3.50 metre wide and 1.50 metre deep ditch in one operation.

"Even we were astonished by this machine", said Ulli Schlaak. "With the explosion technique each metre of ditch costs four marks and sixty. In future it will not cost more than one mark. And still more, our machine digs 3,000 metres of ditches per day and replaces 180 persons."

And so the cattle got new pastures full of fresh, juicy grass. But they must be milked, there is still no way of teaching the cows to deliver their milk by themselves. So the moor pioneers built five modern cattle combinates in the centre of the Rhin-Luch, with open air stables for 512 cows each, equipped with fully automatic milking equipment. They did even more: they built 6 miles of paved roads in order to allow the heavy milk lorries to approach the dairies from where they transport milk to Berlin. They built pumps to supply the stables with water.

Then they went on building and building and building. . . .

Tomorrow is Sunday. It's a holiday for the young men and women working in the bog. They will play ping-pong, look at the television and read—many of them have qualified themselves as team leaders, master craftsmen and professional workers. They will roam about. They are looking forward to that day.

Ulli Schlaak gave me some figures. Just figures, but behind them are the real heroes of our day. In only two years these marvellous boys and girls have put in 71,000 hours of voluntary harvesting work and 55,000 hours of other voluntary work—in addition to their regular jobs, of course.

The explosion ! A mushroom made of sand, moor and torn patches of grass is blown up ! This new method has raised productivity by 116 p.c.

Two farmers are standing at the entrance of Paaren village. An old man, his face all wrinkled, and a young man. "They are turning our moor into a blooming garden", says the old man. There is pleasure and respect in his voice, "More milk, more butter and more meat from our steppe. I would have never dreamt of that before."

"Yeah, before . . . ." answers the young one.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WORKING DEMOCRACY

A GDR M. P. at Her Workplace

By HERBERT THOMAS

Any visitor to the Berlin Telecommunications Works would not fail to note that Erna Kadow is the most talked of woman on the premises of that huge nationally owned enterprise. The fact that most of the workers and employees call her 'our Erna', shows that they regard her as the true representative of their interests in the People's Chamber, the Parliament of the German Demoratic Republic, of which she is a member.

Mrs. Erna Kadow has been working at the Telecommunications Works ever since 1952. From the first day she has distinguished herself by her unselfish consideration of the big and small interests of her fellow-workers. She did not rest before the matter in question was brought to a successful end.

When the Telecommunications Works had to nominate their candidates for the 1954 election to the People's Chamber, the choice was not difficult. Thus Erna Kadow became a member of the People's Chamber of the German Democratic Republic, one of the 114 women out of 466 members who have been considered worthy by the people to look after their interests.

A great deal of the wishes communicated to the M.P. by the workers concerns housing affairs. True, housing concerns the Housing Commission, but Erna Kadow has always intervened immediately where red-tape was at work or when housing affairs were put off unnecessarily. One fellow-worker who lived in a Berlin suburb had been given notice by the landlord who said he needed the flat himself. The housing commission of the works right away pleaded with the District Council to settle the affair justly. Several weeks passed, however, without any response. Erna Kadow intervened resolutely and addressed the Mayor of that suburb. Within a few hours the affair was settled and her colleague remained in her flat.

Mrs. Erna Kadow, M.P.

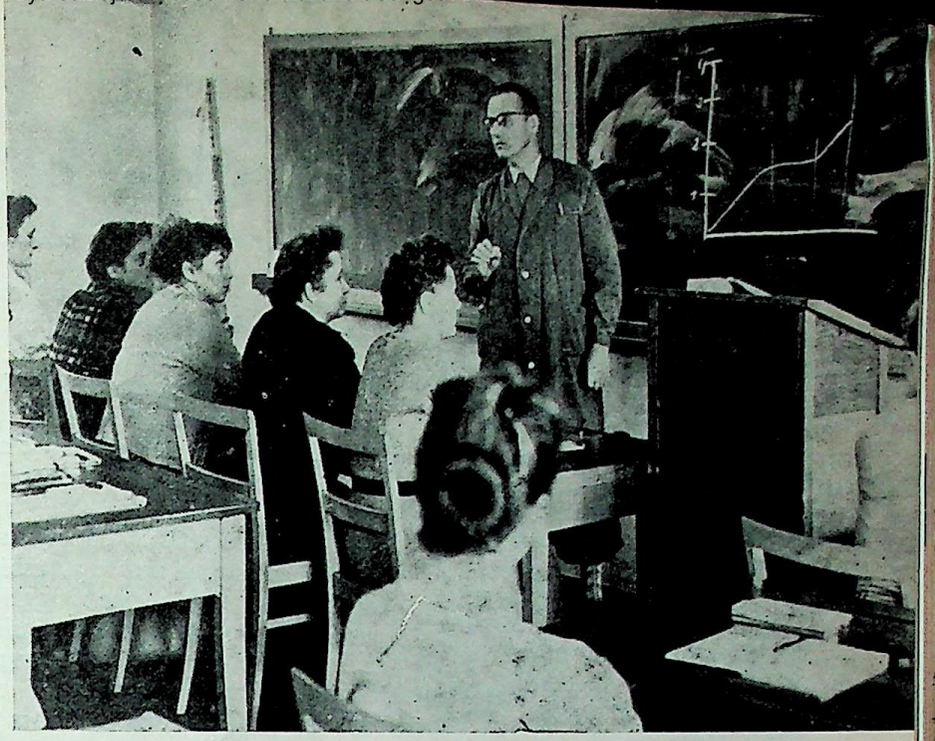

Erna Kadow also saw to it that special courses for the further qualification of women were introduced in her works

Here is another example: Gisela Thulke working in the department of cathode production, came to her M.P. saying: "I have been able to take my child home from the hospital. But the kindergarten does not admit it because it is still a carrier. I have no other choice but to stay at home. What am I to do?" First thing Erna Kadow did was to get her colleague a temporary extra allowance. But should it remain at this? Were not many mothers in a similar position undeservedly, she was asked. Erna Kadow gave a serious thought to this. Next she submitted the proposal to the People's Chamber that financial aid be given by the state to widowed and single working mothers whose children need their care in case of sickness. This proposal was forwarded to the Ministry of Health.

Great was the joy of working mothers all over the GDR when a few weeks later the Ministry of Health issued a "Regulation on Material Help for Widowed and Single Working Mothers in Case of Illness of Their Children". Thus the working population of the GDR takes a share in legislation already and not only in the implementation of laws.

It is an important task of M.P.s in the GDR to explain the laws and decrees of the People's Chamber and the Government to the people. Erna Kadow, moreover, takes trouble also to co-opt the voters in the realization of laws and decrees.

The high percentage of illness was a temporary obstacle for the continual fulfilment of the works' plan. 'What may be the reason for this?' Erna Kadow asked herself. She got valuable hints from her colleagues. One colleague from the department of piston washing said, e.g. "Small wonder that so many colleagues of our department have rheumatism when the water for washing the pistons has only one degree C." Erna Kadow made a thorough investigation. She saw to it that suitable thermometers were procured to check the temperature of the water and raise and keep it at 18 degrees C. The result was that the cases of rheumatism diminished and the plan was realized.

Thus Erna Kadow has indefatigably seen to the welfare of the workers and, working side by side with them, she enjoys the confidence the working people have in her as their 'deputy' to the People's Chamber.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The German Fashion Institute

By ELLI SCHMIDT, DIRECTRESS

In evening dress from Plauen Laces with elegant cloak

Right in the centre of Berlin, in Brunnenstrasse, one comes upon a large corner-house which scarcely differs from its neighbours on the right, the left and vis-a-vis, but for its splendidly decorated show-windows. The everbusy Berliner will slow down his pace and read on a small plate: German Fashion Institute.

The visitor who enters expects a certain atmosphere from the very first, and he is not disappointed. He meets young ladies, sketch-book in hand, draping a piece of cloth or selecting the most beautiful hat, a glittering piece of jewelry or a bag suiting the model. Slender mannequins are striding along gracefully, chatting and laughing merrily, among them the photographer, ready to shoot the latest models with his camera.

The métier of those who are working here seems to be playfully easy. They number up to 220, mostly women, of course. How deceptive appearances may be is proved when the outsider brings order into his confused impressions and systematically inquires for the tasks and methods of the Fashion Institute. It has existed eight years now, and one can no longer deny the fact: it is much spoken of, its name has won respect and reputation in the world of fashion far beyond the borders of the Republic. The workers of the German Fashion Institute can report on long travels and the hearty applause of the international public today. With their fashion they could bring joy to many people, be it in Helsinki or Belgrade, on the banks of the Nile, in Cairo, or on the banks of the Rhine, and the Elbe, in Cologne and Hamburg, or to the Moscovites and the high-spirited Poles.

It is of course the primary task of the Institute to create a fashion for the population of our rising Republic which reflects the optimism and the self-confidence of the population and bears witness of the material and cultural richness of the country.

Pleasure in beauty, harmony, talent and an inexhaustible fancy

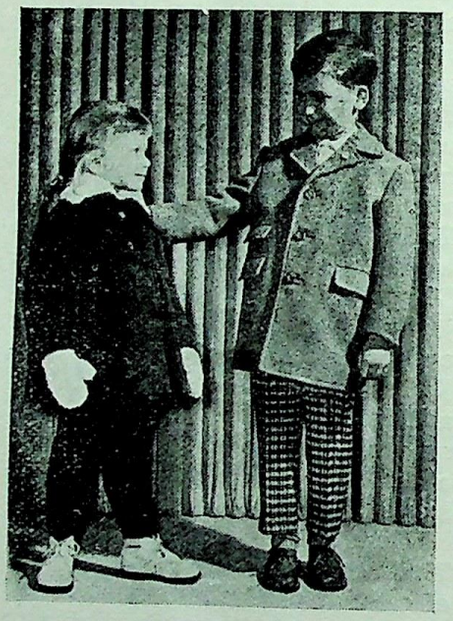

We, too, want to be pretty !

are united in the workers of the designing department who have been educated at trade or special schools. Their work serves the development of new designs of fabrics and fashionable colours. Twice a year they represent new collections of the ladies', men's, youth and children's clothing and the fashion in hosiery, shoes, bags and hats for the spring/summer and autumn/winter seasons. A true spell of fashion proceeds from these proposals every season, and everybody —ladies as well as men—is willingly charmed by it.

However, one sort of fashion does not hunt the other, indeed, the change of fashion takes place almost inconspicuously, step by step, according to the logical aspects of a purposive continuous development of esthetic beauty and taste. Not models for extravagant individual customers at still more extravagant prices are created here. Collections are drawn up giving inspirations to the textile, clothing and leather industries of the GDR which stand out for their variety, quality and elegance.

This does not mean, however, that the German Fashion Institute is blind to the international trends of fashion. On the contrary, the fashionable novelties of the international centres of fashion are being studied very intensively. Our creators of fashion attend the haute couture shows in Paris and Florence, they look around in the leading houses. In the last few years it has been confirmed there that their own line of fashion which, in model sketches, is ready at the time of these study tours, can hold its own on the international scale. After all, nothing from France or Italy is being accepted or copied without reserve. Only a few distinct trends which correspond to the general conceptions of decency and taste, can enrich the seasonable collections of the Institute.

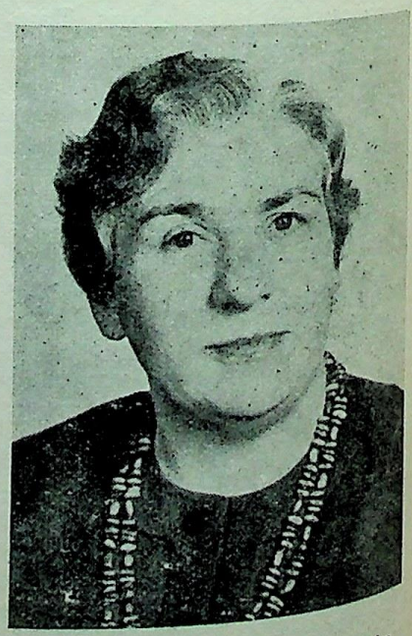

Frau Elli Schmidt, Directress of the German Fashion Institute

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The biggest and most beautiful event for the staff of the German Fashion Institute is the International Congress of Fashion which unites seven socialist countries in cordial friendship every year. For many weeks already industrious hands in the Brunnenstrasse have been busy with joy and eagerness to take the preparatory measures for the Twelfth Congress of Fashion. It will take place in the capital of the GDR, Berlin, this year. These traditional meetings are unique in the world of fashion, without closed doors, without strictly guarded secrets, without being a matter of money. They mean an inestimable advantage for all participating countries, a chance to learn and improve one's own fashion.

Thus many ideas are being combined and tuned in to a perfect mosaic of fashion in the German Fashion Institute. Responsible representatives of industry, trade and the public deliberate the line and fashion and adopt it. More than one thousand factories alone from the ready-to-wear clothes industry, are consulting the Institute and accept its suggestions as binding before they begin to work. The staff of the Institute co-operate with purchasing agents, sales people and publicity experts, and inform the population about topical questions of fashion through fashion shows, films, television, radio and the press.

He who has chosen fashion as his profession does not live in the season indicated by the calendar. He is in advance of time. When autumn tempests are blowing and winter is approaching, the models of the impending spring/summer season are conceived in the minds and on the pages of the sketch-books of the creators of fashion, and when we see fragrant, light summer dresses in the streets of the city, the industrious hands of the creators of fashion and dress-makers are going to realize the creative ideas for an autumn/winter collection. When the eagerly expected day of the premiere of a new collection of fashion has come, charming mannequins are striding over the stage with an amiable smile and the perfect models are meeting with hearty applause—which of the outsiders knows, while watching the enchanting view, about the troubles of everyday life in the large house in the centre of Berlin?

...and in the Evening to the Village Club

By BARBARA NEUHAUS

It was a rainy autumn evening thirteen years ago—the wind whistled over the fields of the Bernburg region, and it was cold and dusky in the rooms of the new settlers of Aderstedt who were temporarily accommodated or living in the cottages of agricultural labourers. On such an evening the peasant woman Hedwig Wessig very pensively spooned up her potato soup, so that even her husband, who was absorbed in troubles of his own, noticed it.

"You know what, Poldi," she answered his question why she did not eat as she should, "I think we should get together once in a while and have a little feast, sing some songs and dance a little, simply be merry. One cannot live by work alone."

Poldi Wessig shook his head in dismay: "Who do you think you are? The winter corn is not yet in the ground, we must cut wood and build houses. What an idea, having a feast! People are tired, hungry and distrustful. The war and its results....."

"Precisely because of that," Hedwig said. "We must bring the peasants together; I shall talk to the women."

For the first cultural evening at Aderstedt in winter 1947, every peasant woman brought along a billet of wood, a briquet and a candle stump so that it should be warm and bright, for the electric current often failed at that time. They met in the manor abandoned by the landowner and were very cautious and shy in treading the dusty parquet.

Eleven years later, the village club of the fully co-operative village of Aderstedt, whose chairman is Mrs. Hedwig Wessig, is housed in the same old manor, the present house of culture, where the peasants and their wives met for the first time thirteen years ago. The dust and the duffy smell have long been ousted and replaced by light and merry doings, for here almost the entire village population pursue their hobbies, sing, read and dance in the evenings.

The management board of the village club began with a big risk, with festive days of classical music, so-called "difficult music", as the peasants said who believed that it would mean nothing for them.

Mrs. Hedwig Wessig, Chairman of the Aderstedt Village Club. Her face and hands are wrinkled by the work and sorrows of her life. A friend and adviser to the old—ideal to the young.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Young folks are singing....and dancing in the Aderstedt Village Club

Popular music—yes, but an oratorio by Handel?

The secretary of the village club. Herr Paulick, a book-keeper of the agricultural production co-operative "Victory of Socialism", had to attend to many things in those days.

"Listen, Otto, we are arranging for an introduction into classical music. I am sure you will come with your wife, won't you?" "Don't forget to invite your neighbours." Thus and similarly Herr Paulick addressed every visitor, while the choir was exercising, the chairwoman deliberating on a concert with the regional orchestra, the mayor considering extra allowances with the village council, and the village painter renovating the hall free of cost.

For three days afterwards, the cultural hall of Aderstedt was overcrowded during all events and there was a pin-drop-silence, so deep was the devotion with which young and old peasants listened to and understood music which had appeared too difficult for them because they had been deprived of it for centuries by the former rulers.

Last year, the club carried through the village festival for the second time. The programme included literary evenings of the friends of books with well-known writers, a festive programme of the club's ensemble, a theatre performance, a film matinee, tournament riding, competition of the amateur photographers, soccer matches and a grand ball.

The overture, however, was not music, but the rustling of the harvester combine and the clatter of the potato combine. Even the oldest grandmas and grandpas appeared for harvesting the onions and binding the herbs, the milkers introduced modern methods of feeding so as to increase the yields, the gardeners grew 7.5 extra acres with spinage, and the women looking after the piglets took special care of the health of each individual animal.

"Curtain up for the 1960 Village Festival when the state plan has been fulfilled in all items in due time, and every brigade has realised its pledges." Thus it had been decided by the local National Front committee, the village council and the management board of the village club. And thus it was done. Conscious and proud of their achievement the Aderstedt people celebrated their festival in a big way.

Now there is always light in all the windows of the club. The songs are resounding in the village street, for the club is preparing for spring: the first anniversary of fully co-operative life in the GDR countryside is to be properly observed.

The first white strands are drawing through the hair of the co-operative peasant Hedwig Wessig, face and hands are wrinkled by the work and sorrows of a whole lifetime. Poldi, her husband has died, her daughter married a co-operative peasant long ago, her son studies veterinary medicine. Her beautiful clean house has become empty and calm, her life, however, is filled with work and joy: in daytime she works in the field in the community of the tillage brigade, and the evening belongs to the village club in the choir of which she is singing, too.

Hedwig Wessig has learnt to talk about art and literature, to discuss the socialist cultural revolution in the village at university conferences and to imbue many people with a distinct aim. With all this she has preserved the ability to become enthusiastic and inspire others, so that the grown-ups consider her a friend and comrade, the youth an ideal.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Warnow—Shipyard Yesterday—Today—Tomorrow

By HANS-JOCHEN VANDREY, ROSTOCK

I am not one of those old boys who marched through the provisional gate of the former boat building works Kröger in Warnemünde, then a field of ruins, on May 3, 1945, to help lay the foundation-stone for one of the most up-to-date shipbuilding works of Germany. I belong to that generation which came to Warnemünde from all corners of the German Democratic Republic to learn the craft of ship building from the old generation. I began to learn at the Warnow Shipyard in 1949, together with shoemakers, tailors and bakers.

Our training brigade, as it came into being in 1949, does no longer exist today. Four of our young colleagues have turned engineers at the shipyard, one works as a technologist, the fifth turned foreman of the drawing department, Erich and Karl are now officers of the People's Navy, two of our boys are leading the best brigades of the shipyard, and I was sent to the newspaper by the team in 1955. "You must work as an editor of the district paper in Rostock," my friends told me. "There people are sitting who do not know much yet about shipbuilding and, therefore, often make mistakes in their paper." Thus I became an editor, and if today I pay a visit to my old friends, we talk shop eagerly, about the past, the present and the future.

Apprenticeship

The crew mustered 28 men on August 18, 1945. Ship building was out of the question then. First the terrain of the shipyard had to be cleared of debris. The great change came in the years 1946/47. The over loo employees received the first order from the Soviet Union to build 18 new fishing cutters. For many of us it has been a hard apprenticeship. Only five or six of the loo men were ship-builders. The fishing cutters were built, nevertheless.

That year the Soviet Union salved many men-of-war which had been sunk to the ground of the Baltic Sea. 16 ships with 120,000 tons were brought to the shipyard by the Soviet people to have them reconstructed as merchantmen.

It was the "Sovyetski Soyus" with 22,000 g.r.t. which was completely reconstructed. However, not only reconstructed ships left the shipyard that year. Hall after hall grew up from the ground.

In 1951 our shipyard transferred the training vessel "Wilhelm Pieck" to our then President of State. On October 13, 1954, the first 10,000 tonner for our Republic was laid down. On May 1, 1957, this ship, the "Frieden" (Peace), started for her trial run.

For the first 10,000 tonner the ship builders needed almost three years as compared to only 18 months for the tenth ship of this series. This success did not come of itself, meanwhile many workers had qualified as good ship builders. In 1954 the shipyard had 87 graduates of technical schools. In 1958 there were 318, and in 1965 there will be 780. Today over 800 workers and engineers wear the badge of best worker. There are many workers of the old brigades among those wearing high decorations of the State, such as the chief welding engineer Ulrich Plötz, Lothar März, brigadier Otto Rehse, and the director of the shipyard Gerhard Zimmermann, who began as a worker at the shipyard. In 1956 new export orders of the Soviet Union were added to the 10,000 ton freighters we built for our own merchant fleet. Up to now 16 coal ore freighters have been built for the Soviet Union. The automatic welders also contributed toward the fact that the ship builders of the shipyard have won world-wide reputation with their products. The ships are automatically welded by 40 to 50 per cent.

The Masterpiece

Inspired by the performances of the activists and the best brigades, the whole crew of the shipyard prepared for accomplishing their masterpiece from 1958.

In summer 1958, the reconstruction of the passenger liner "Yuri Dolgoruki" of 22,000 g.r.t. to a floating blubber factory for the Soviet Union was begun. On June 30, 1960, the modern swimming factory which processes 60 whales daily could be delivered. This upward development of the Warnow-Shipyard in Warnemünde is also proved by the following statistics:

Year	total production (in tdw)	per capita performance (in marks per worker)
1946	619	7,034
1950	45,839	12,253
1954	115,535	21,467
1958	189,546	43,684

In building ship bodies the workers have already reached the international top, it is true, but the equipment of the ships still costs too much time. However, the tasks which must be solved by 1965, do not allow for any loss of speed. 54 ships must be built at the Warnow Shipyard until 1965, within the Seven Year Plan, among others motor freighters of 10,000, 11,000 and 12,000 tdw, coal ore freighters of 7,000 and 9,500 tdw. etc. The first ship of the new series of coal ore freighters has been laid down already. In 1965, the shipyard will be at the top of ship building in the world with its performances. Who knew our Shipyard ten years ago? Today ships from its production can be found on all oceans. We owe this to men who then, on May 3, 1945, began to remove the débris in Warnemünde.

View of the Warnow Shipyard of Warnemuende

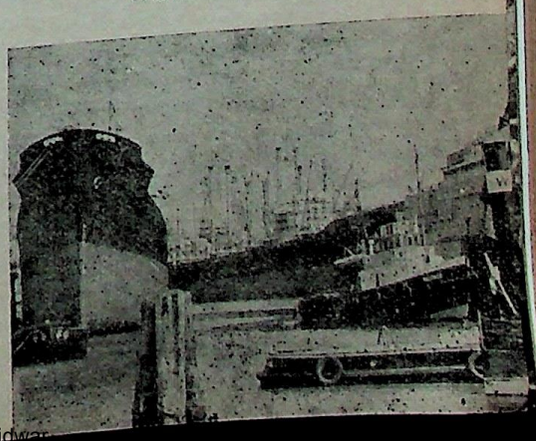

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

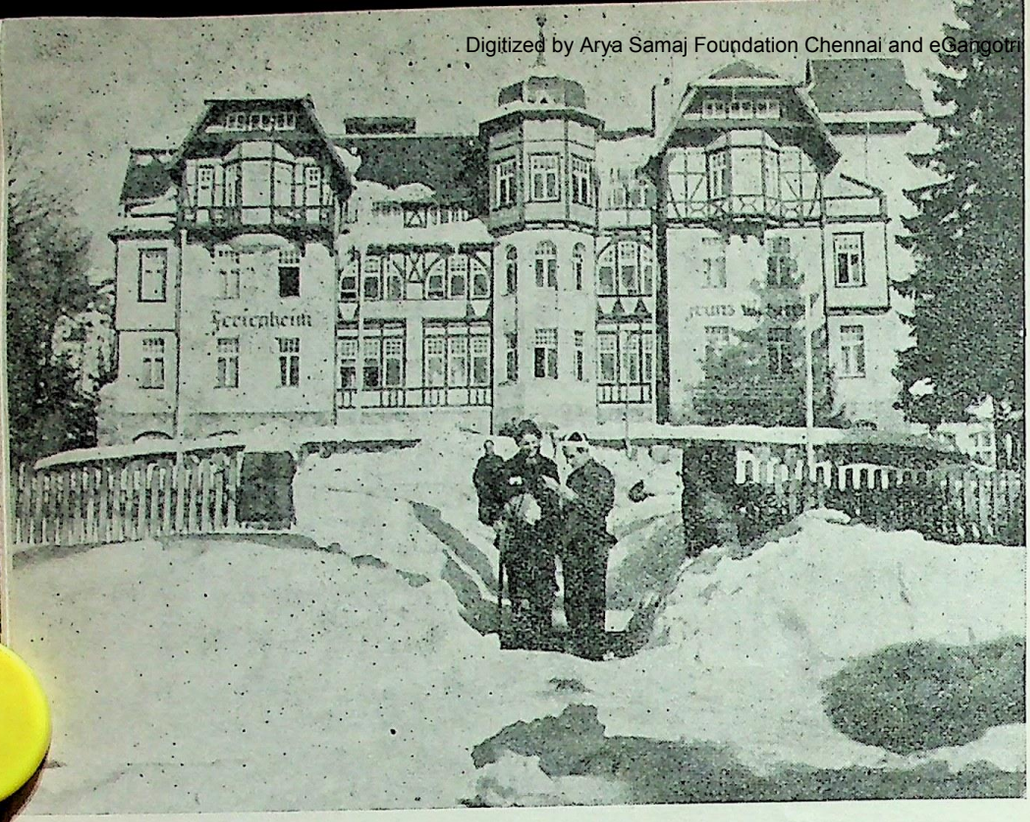

Snow-clad holiday hostel in the Harz Mountains

HAVE A LOOK AROUND IN THE G

The Ha

Travelling from the North German plains towards the South-West of the German Democratic Republic, one will come to the legendary Harz Mountains. The Brocken, the highest peak—1,142 metres—of this region, might very well be considered a geographical centre of the whole of Germany. Here, right across the Harz Mountains runs that unfortunate frontier which divides our country into two. The first man to climb up to the snow-covered summit of mount "Broccus" was the geographer Tilemann Stoltz in 1562. His braveness was then very much celebrated. Since then the flow of tourists to the Harz has never stopped. Today not only in summer, but also during the winter a large network of roads, railways and bus lines leads up to these mountains, thus revealing the beauty of this mountain world to many in our Republic who seek recreation.

Two famous German poets used to walk in the Harz Mountains: Goethe and Heine. Goethe included both the landscape of the Harz and legends about it in his poetical work, and watched all he saw on his roaming expeditions through the Harz with the eyes of a geologist and natural scientist. With the witches' Sabbath in "Faust" (part one) by Goethe the Harz made its entrance into world literature. Heine, too, combined with the "Harzreise" (journey through the Harz) a literary report which even today is looked upon as one of the best examples of socio-critical journalism.

Witches—small wirefigures with coloured wool wound round them and fuzzy wigs—just souvenirs—remind the visitors of the crimes which were committed in the superstitious middle ages right at the foot of the Brocken. The collections of the Feudal Museum in the castle of Wernigerode contain many things which remind the onlooker of the rack, the stake and the trials for witchcraft which were brought about by the church and approved of by the feudal aristocracy during the time of inquisition.

The visitor must not expect, however, a witches' Sabbath on the Brocken, but a wonderful view of almost a hundred mountain peaks whose clearly visible bluish-green silhouettes emerge from the haze of the valleys.

A number of rivers and brooks have their source at the foot of the Brocken. The river Bode leads us past a number of the Harz's well-known resorts right up to the most bizarre almost alpine parts of the mountains. Probably the most famous of these resorts of the Harz is Schierke, a very distinguished place since 1910. Today Schierke has many hotels and a number of holiday homes of the Free German Trade Union Federation. It stretches right along the valley and from almost each window the Brocken can be seen. Schierke has won a special reputation as a meeting-place for sportsmen. On a slope which is especially well suited for slalom-races, skiing-competitions and championships are held every year.

The 15th Century Town h is one o examples of timbered ho tainous

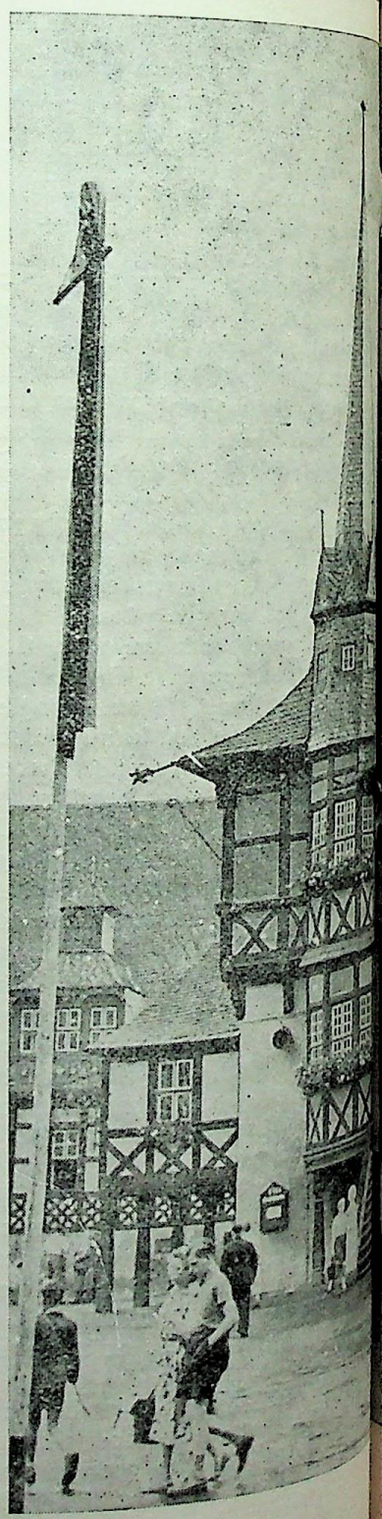

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

N THE C

Hountains

s a meet-
n a slope
uited for
petitions
ld every

Not far from Schierke, right in the middle of high fir trees lies the mountain health resort of Elend. In the 5 sanatoriums of Elend and in the Harz-village of Sorge the visitor can enjoy the peace and the healing power of the Harz Mountain air. The Harz-village of Sorge used to be a village of foundry workers, and iron-ore used to be dug up there. Today the minerals found in the Upper Harz are becoming less important when compared with the nearby copper mines of Mansfeld. The Harz has also a flourishing timber-industry.

ry Town H
bered hou

is one of the most beautiful
ntainous regions in Germany

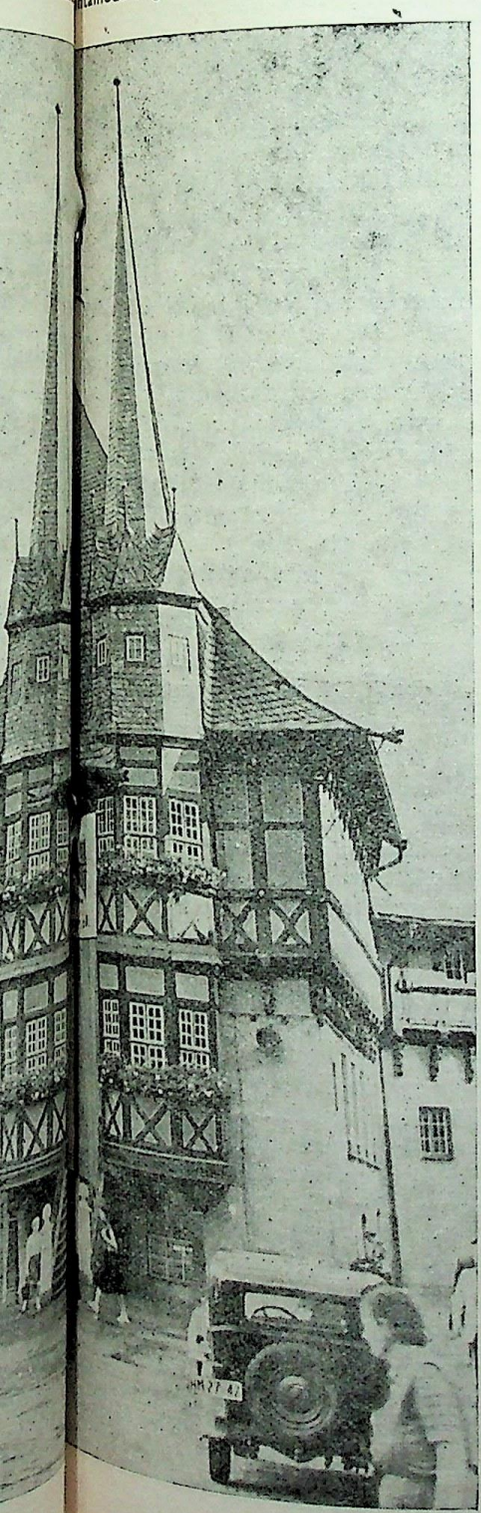

The United Harz Lime Industries of Rübeland co-operate closely with the Bunaworks, which make burned lime into acethylene, carbide, igelite and synthetic rubber. Rübeland has also the famous stalactite caves of the Harz. Water containing carbondioxide which oozed into the lime-rock formed, by disintegrating the lime in the course of thousands of years, the caves of the Harz. Waterdrops evaporating on the ceilings of the caves left many traces of chalk behind. These grew in due course into cones or better into stalactites. Due to certain mineral components the stalactites shimmer in all colours. The slim stalactites grow hanging down from the ceilings of the caves while the plumpish and fat ones grow upwards from the cavefloor. In this way a multitude of different shapes was formed in the caves of Rübeland.

Before entering the plain the river Bode drills its way through the rocks near Thale. The small mountain river gives an impression of great strength when foaming past the naked rocks of the Bode basin. The cavities and the smooth edges of the basin prove that the waters of the Bode might even be able to break through granite. To stop both the waters of the Bode and the floods caused by it a large barrage was built across the valley, which is in turn of great importance for the water supply of the central German industrial area.

The view from the Hexentanzplatz (witches' dancing place) which stands out like a rocky balcony overlooking the valley discloses a landscape of real alpine beauty. A little farther the Harz Mountains come to a sudden end. A wide plain now opens before one's eyes.

Near Thale one comes across the mountain theatre of the Harz, the largest open-air stage of Germany. The theatre seats two thousand. To hear poetry in this steep semi-circular auditorium right in front of the live scenery of the Harz, visitors from all parts of the German Democratic Republic undertake probably the most strenuous walk which leads to any theatre in the world, climbing four hundred and twenty-five metres. Many a production of both operas and dramatic plays became an exquisite experience in this theatre, because the atmosphere created by the natural surroundings enhances and intensifies the dramatic interpretation of the actor.

Children marvel at the wild-romantic beauty of the Bode River Valley from the Hexentanzplatz

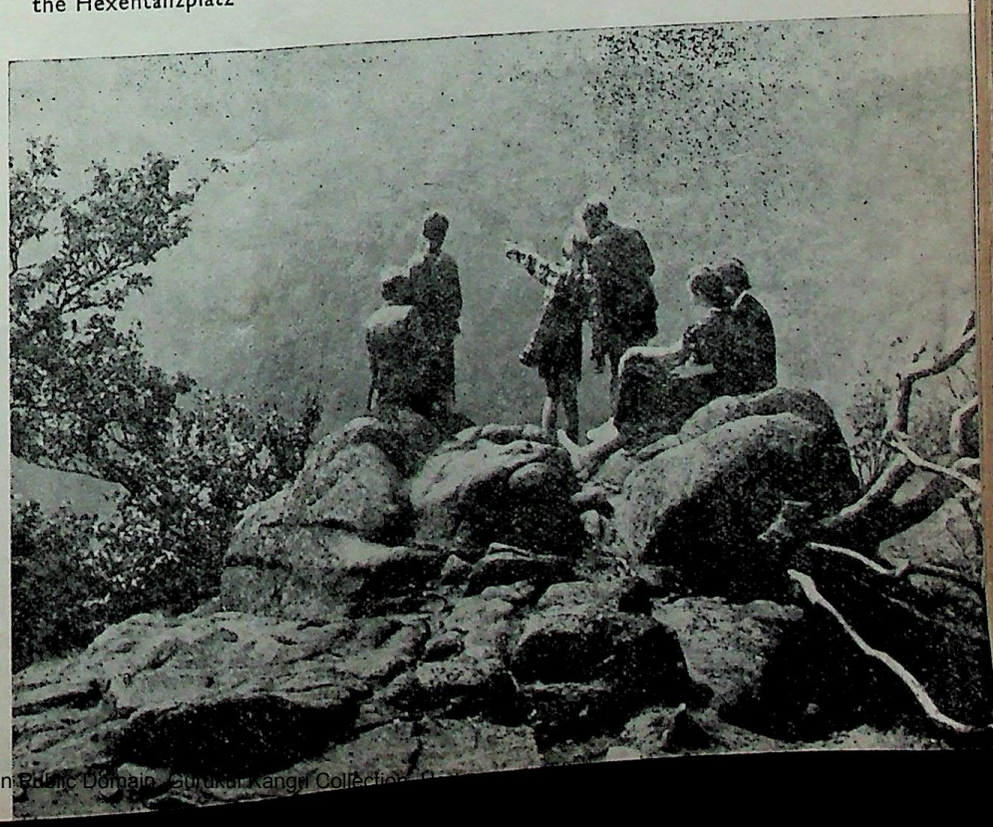

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CENTRES OF INDOLOGY IN THE GDR

UNIVERSITY ACTIVITIES

By DR. H. MODE

(Continuation)

The Academy publications of the GDR are not limited to the research of GDR scholars, but are open to scholars from the whole of Germany. In the field of publications, German orientalists in the GDR have an important task to fulfil. Closely associated with Soviet research, some of the Russian publications are translated, others summarized and referred to in journals. Thus in 1959, the Academy published a book on the economic and social development of India, Soviet researches in Indian history, Vol. I. But also the oriental studies of our East European neighbours, Hungarian, Polish and Czechoslovakian books are translated and published. Within a short period, a Hungarian book on Indian Art by Bactray, is going to be published in a German translation. I may mention also, that after the war, the school-books, specially the history books had to be thoroughly revised, to purify them from all the falsifications of national, social and racial slander. The change in attitude towards the former 'colonial countries' led to the introduction of new chapters in our elementary history books, in particular on the history of India and China, thus influencing the outlook of the new generation. We have to remember in this context, that the classical German education was entirely based on the fundamental study of Greek and Latin languages and Mediterranean civilization, considered to be the only root of later European cultural developments. By introducing equal estimations of the ancient culture of East and South East Asia, the Grecocentric position of the most influential of German educationists was considerably weakened, and though this traditional opinion is still present, a more balanced and truly historical approach was introduced.

Anusuya, Shakuntala and Priyamvada

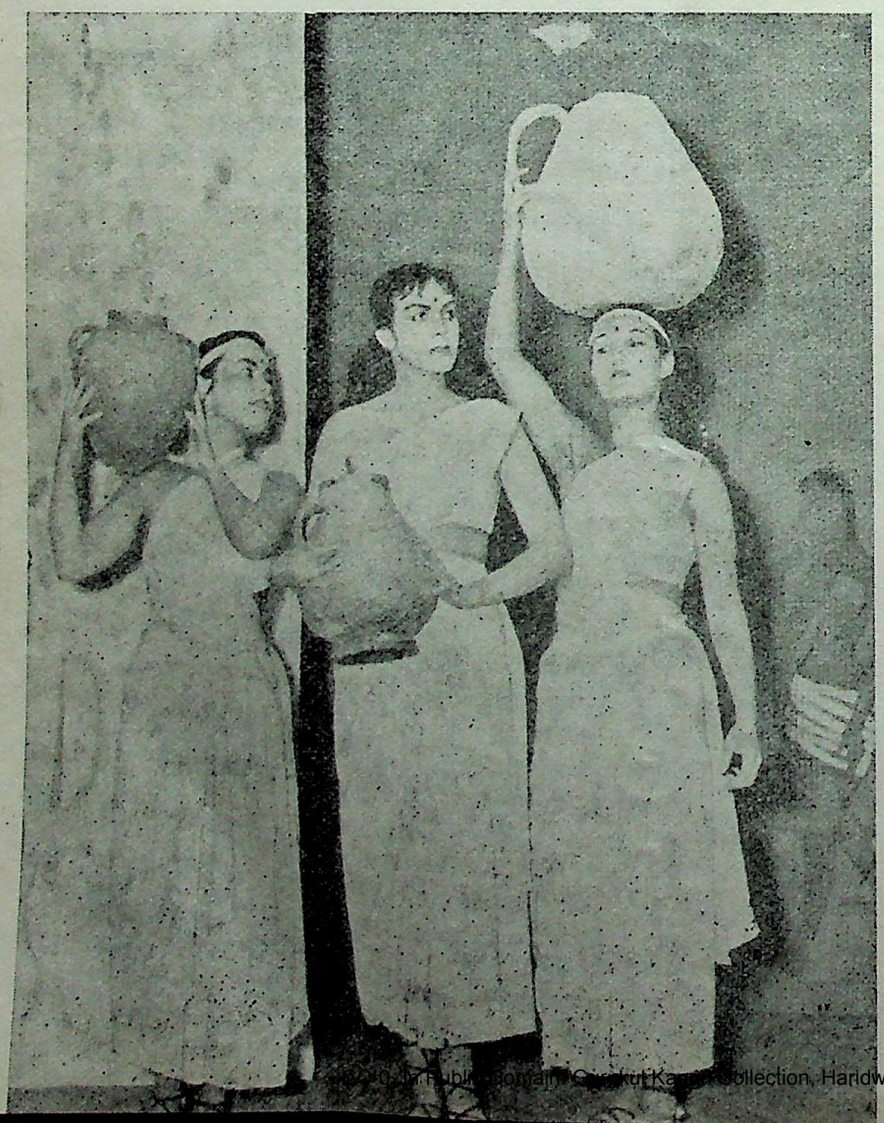

Libraries and Museums

An important role in the Indological studies in the GDR has to be ascribed to libraries and museums. Directors of such institutions have from early days been amongst the most active scholars. Unfortunately, again, the war and the partition of Germany have caused much damage to these institutions. Some of the famous German libraries were wantonly split up and even now large parts of the former possessions of the German State Library in Berlin are deliberately withheld in West Germany. Yet the Berlin State Library is one of the best equipped libraries in Germany, harbouring valuable manuscripts. The same can be said about the Leipzig library, which, owing to the University as well as to the activity of the town as a book publishing centre, offers good possibilities for oriental research. The best and most specialised library, however, is to be found in Halle, in the "Bibliothek der Deutschen Morgenländischen Gesellschaft" (Library of the German Oriental Society). Besides this library, there is a second collection in this town in the so-called "Franckesche Stiftungen", which is of special use to the student of South Indian culture and languages. The "Franckesche Stiftungen" an old protestant mission centre, has kept its old library and archives, and I may remind you that from here Bartholomaeus Ziegenbalg was sent to Trancebar in 1705, and published a grammar of the Tamil languages, the "Grammatica Damulica" in 1715. Halle, a centre of protestant theology, has kept alive some of these traditions in the field of university studies. Particularly in the theological faculty South Indian languages were taught. Schomerus is, for instance, one of the older and better known scholars. At present Prof. A. Lehmann continues this work, lecturing on South Indian languages and pub-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

lishing books on the subject.

Nothing much has been published in the English-speaking world about these South Indian studies, connected with the protestant mission in South India, and as there is a general scepticism about missionary publications, it may be added, that Bartholomaeus Ziegenbalg, in particular, was one of the serious students of Indian culture, who possessed a good knowledge of Tamil literature, religion and philosophy. But when he tried first to publish his observations at home, he was told that he was sent to convert the Indians to Christendom and not to propagate heathendom in Europe. The true importance of his work has only recently been discovered.

It may be interesting for my readers to know that historiographers of modern orientalism have also kept silent in the case of two other German scholars. In an article, published in the University Zeitschrift, Prof. Dr. Richard Hauschild wrote on the significance of the two German Roman-Catholic padres and professors, Athanasius Kircher and Heinrich Roth. In 1667 Athanasius Kircher published in Amsterdam the "Cina Illustrata" which contains a chapter "de literis Brachmanum." Kircher, who had never been in India, published five plates with illustrations of the Devanagari alphabet, based on information which he had received from his friend Heinrich Roth, then living in Agra, and learnt Sanskrit in the years from 1646 to 1650. Kircher mentioned that Heinrich Roth had written a Sanskrit grammar, which was unfortunately not published and which is now lost. This makes Roth the first European to write a Sanskrit grammar, before 1664, the date Kircher wrote.

After this short excursion into the 17th and early 18th centuries, let us come back to present day studies. During the war and the first post-war years hardly any foreign books reached the German libraries, and thus it became necessary to fill in these gaps. Whereas the west of Germany received gifts and donations in large numbers, libraries in the German Democratic Republic had to struggle on their own, and it goes entirely to the credit of the non-militaristic and pro-cultural policy of our Government, that the struggle to keep libraries in a good working order has been fairly successful.

German museums suffered as much by the war as libraries. Especially Berlin, the museum centre, suffered heavy damage and a considerable part of its valuable collections is irretrievably lost. But many of these treasures were rescued by the Soviet Army during the last days of the war and have been returned to the Government of the German Democratic Republic. The great galleries in Berlin and Dresden bear testimony to this generous act of true friendship and devotion to cultural treasures of the past. The buildings had suffered as well, but they have been reconstructed. Like other museum materials, unfortunately the Indian collections have been divided. In pre-war Berlin, most of the Indian sculptures and paintings were kept in the Voelkerkunde-Museum (Ethnological Museum) and when Berlin was haunted by the bomb raids, they were stored in buildings which are now situated in the western sector of the city. Some of the treasures were hidden so well that even American authors, publishing pictures of them, thought them lost. Now part of these materials have been reassembled in West Berlin, whereas the bulk of the collections of the Islamic period, miniatures and textiles, are in the old State Museum in Democratic Berlin.

Just as Berlin, Leipzig has a well-known museum of ethnology, but this had been thoroughly destroyed during the war and only part of its collections are now on view. In Halle, there has never been a museum of oriental antiquities, but our Institute of Archaeology has tried to supplement its good collection of classical antiquities with materials from oriental civilizations, though mostly for study purposes.

Here I may be permitted to say a few words about our Institute of Oriental Archaeology in Halle. It is an entirely new institution and has grown out of and far beyond its old background of merely classical archaeological studies. As you may be aware, archaeology in Germany is represented by three disciplines: prehistoric or European archaeology, classical or Greek and Roman archaeology, mostly arts, and now the latest oriental archaeology, connected with oriental studies.

In Halle, the great traditions of all these fields of learning, early European history, classical linguistics and archaeology and oriental studies, created a suitable ground for this new subject, and in 1948, I was given the chance of laying the foundations for an institute devoted to oriental archaeological studies. Near Eastern and Egyptian, Indian and Chinese archaeology have, from a slow beginning, by now been firmly established as teaching subjects, and recently research work has been started in the fields of Indian, Mesopotamian and Egyptian archaeology. There is a team of twelve young scholars engaged as research workers, assistants, post-graduates and lecturers, as well as good technical arrangements in a photolaboratory. The practical training is done in cooperation with the prehistorians, by excavation as well as museum work. Of the young scholars, occupied with Indian studies, one, with a thorough European prehistoric training, has taken up a thesis on Indian palaeoliths, the other two, studying Indian languages and archaeology, are now preparing their doctorates in the field of Sungs-Andhra sculpture or modern Indian art respectively. Besides this individual work, all are taking part in the general layout and preparation of a students handbook of oriental archaeology. You may be interested in a first result of these efforts, a general archaeological map of the countries between the Mediterranean and the Pacific Ocean, published early this year.

Before I close my short survey of Indological studies in the GDR, I may mention that extensive preparations have been made in our country to celebrate the birth centenary of Rabindranath Tagore. Four volumes, selected works, will appear in the Volk und Welt Publishing House, an edition of the Letters from Russia in the Reclam Publishing House. Selected stories, especially for children, will be published by the Alfred Holz Verlag, and a general volume by several authors published by the German League of Culture, the organisation of cultural workers. The Karl Marx Stadt Theatre is preparing to stage "The Post Master." The State Radio Committee is arranging for musical performances and an exhibition of paintings.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"DIAMANT" CYCLES HELP WIN VICTORIES

By ADI KLIMANSCHOWSKY

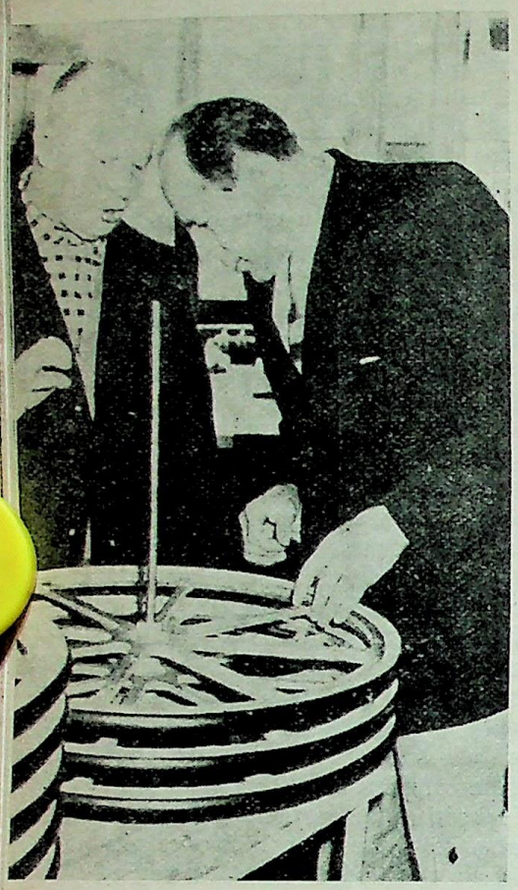

Emil Zapotek—ex-World champion of Czechoslovakia (right) at the "Kowalit" Works at Waltershausen.

Year after year cyclists race along the roads of all continents to win sports laurels. Well-known names head the lists of honour, champions of outstanding events. Their names are cast in golden letters in the chronicles of cycle sport.

Victories are, however, not won by sport talents alone. Often the quality and reliability of materials have a great share in obtaining victory.

"A road cycle race is never decided until the cyclist touches the finishing line. An almost sure victory of a race can come to nought due to a crash or just a minor defect. Instead of winning, the cyclist comes among the 'also rans' or is even eliminated."

This I was told by Gustav Adolf Schur, twice world champion and twice champion of the Peace Cycle Race; sport fans all over the world call him "Taeve". He added: "The material at our disposal is also decisive for success or failure."

Starting From Scratch.....

When Hitler and his fascists were defeated they left nothing but suffering and misery, ruins and destruction. In those days nobody had a mind for sports. It was more important to remove the rubble, to reconstruct factories and towns, to procure the daily bread for everybody.

The political, economic and cultural life gradually came back to normal, and sports and physical culture, too, progressed step by step. It was comparatively easy to start from scratch in the fields of athletics, swimming and some other branches of sports. But things were much harder for cyclists.

In cellars and attics and even from among ruins they looked for chassis, wheels, tyres, brakes and other spare parts still good enough to be used. After much painstaking labour they assembled these parts and started to ride.

The formation of the German Democratic Republic in 1949 was also the first step on the ladder of sports, the basis for step-by-step progress.

In the city of Karl Marx Stadt workers, engineers and technicians started to revive the bicycle industry in 1952. In a special department plans were made to develop racing cycles—and the plans became reality. "Diamant" racing cycles stood the first big test at the GDR tour in 1954.

Carrying their own handle-bars and saddles, participants from all districts of the GDR travelled to Berlin. Here they received not only cycles, chassis, tyres and other necessary parts, but also a large crate containing spare-parts and accessories and complete spare cycles for the race. That was unique in the long history of lap races. Not one chassis broke and only a few tyres or other parts became defective. The bicycles stood the test with top marks.

.....To Gain World Recognition

Ever since those eventful days GDR road cyclists at all races both at home and abroad use only "Diamant" racing cycles and "Kowalit" tyres made at Waltershausen in Thuringia.

With these cycles and tyres Gustav Adolf Schur won the Peace Cycle races in 1955 and 1959 and became world champion in 1958 and 1959. With them Erich Hagen won the 1960 Peace Cycle Tour. And racing for the rainbow jersey on the Sachsenring at Hohenstein-Ernstthal in 1960 both Bernhard Eckstein and "Taeve" used these reliable products made by the nationally owned industry.

Let "Taeve" talk about it himself: "Formerly we had to use im-

Hardly a race without chief mechanic Erich Winkler—the "good spirit" of the G. D. R. National Team (on the left)

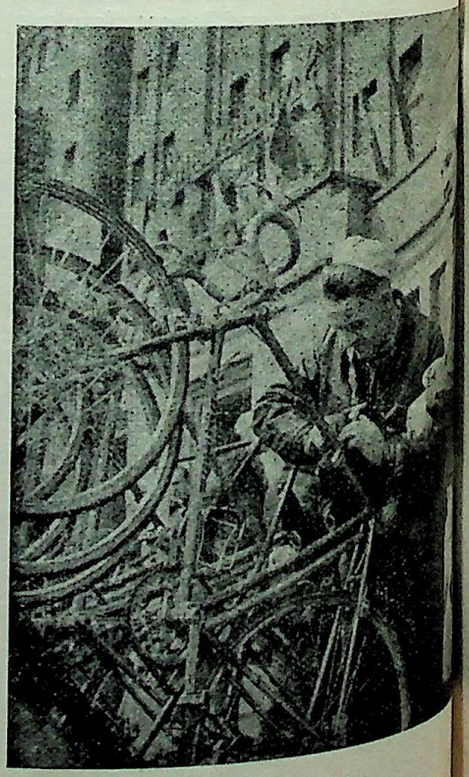

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ported material; but those days are past. Now we have racing cycles of our own and they have well stood the test at numerous competitions. In Western countries, especially after I had become world champion at Reims (France) and Zandvoort (Holland), I was asked where "Diamant" cycles could be bought. Our workers and engineers have laid the foundation for our victories, and of this we are naturally proud."

Expert Opinions.....

There is hardly any great race in which Erich Winkler, chief mechanic of the GDR team, has not participated. He was the "good spirit" of the GDR collective at all great tours, at the world championships and at the Olympic Games. Once he was an active cyclist himself. The practical experiences he gained are of benefit to him today. After the 1960 Peace Cycle Race we talked to him about GDR bicycles.

"At every lap race defects do occur. That always happens at road races. During a mass crash a fork or a pipe are sure to break. Our "Diamant" has stood the test again. Despite greatest strains we discovered no defects. Our "Kowalit" tyres, too, have shown once again that they need fear no rivals. The only punctures were due to glass or nails. The French, Belgian and other teams had more punctures. Before the finish we even had to wire to Waltershausen. our factory, because the Belgians and the Dutch insisted on riding on "Kowalit" tyres. We can be justly proud of the achievements by our industry, for the successful races were due, to a great extent, to these reliable quality products....."

Werner Schiffner, "Honoured Champion of Sports" and holder of other official awards, is well-known, too, as the trainer of the GDR national team. Here is what he thinks:

"We have certainly caught up in recent years. New methods of training have resulted in visible successes. The nationally owned factories have spent as much energy and responsibility to improve their products. Today we not only save foreign exchange, we even export "Diamant" bicycles and "Kowalit" tyres to other countries. Even in West Germany 36 shops sell GDR products. Triumphs on wheels are achieved not only with the brains and legs of active sportsmen, the material they use is just as decisive. What good is it to a first class cyclist if he heads for the finish all on his own on a 200 kilometre stretch, only to have an irreparable defect three kilometres before the finish? Off goes his dream of victory. Even in lap races, where changes of material are permitted, valuable seconds or minutes get lost with every change. A cyclist must be able to rely on his material, and as far as GDR products are concerned he certainly can rely on them....."

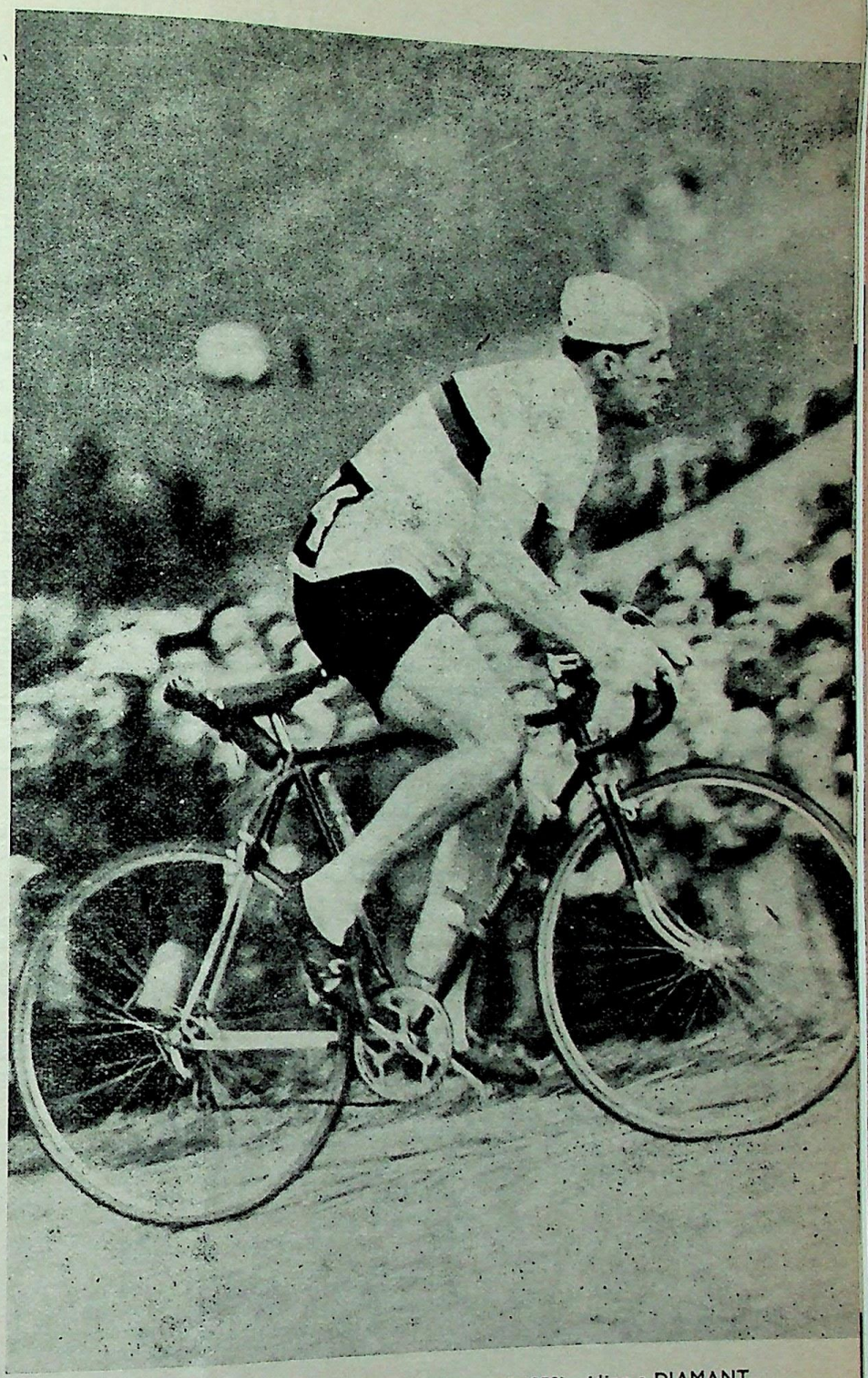

Gustav Adolf Schur—twice World Champion (1958 and 1959), riding a DIAMANT Cycle made in the GDR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH
WE LEARN GERMAN

Lektion Vier—Lesson Four

IN LEIPZIG IST INTERNATIONALE MESSE
IN LEIPZIG (THERE) IS INTERNATIONAL FAIR

Herr Bose ist Kaufmann. Er kommt aus Indien und möchte die Messe besuchen. Er fragt einen Herrn
Mr. Bose is (a) businessman He comes from India and would like the fair to visit. He asks a gentleman

"Bitte entschuldigen Sie, wo ist die Technische Messe?" Der Herr antwortet:
"Please excuse, where is the Technical Fair?" The gentleman answers:

"Fahren Sie mit dem Bus oder mit der Strassenbahn Linie 9 (neun)." Es ist 10 (zehn) Uhr.
"Go with (by) the bus or with the tram line 9 (nine)." It is 10 (ten) o'clock.

Herr Bose hat 4 (vier) Stunden Zeit, denn er hat erst um 14.30 Uhr eine Verabredung mit einem Geschäftsfreund.
Mr. Bose has 4 (four) hours time, because he has only at 2.30 p.m. an appointment with a business friend.

Er besichtigt die Messehalle 12 (zwölf) und spricht hier 20 (zwanzig) Minuten mit einem deutschen Aussteller.
He visits the fair hall 12 (twelve) and speaks here (for) 20 (twenty) minutes with a German exhibitor.

Dann besucht er den indischen Messestand. Viele Besucher und Geschäftsleute sind dort.
Then visits he the Indian fair stand. Many visitors and business people are there.

Herr Bose geht um 13 (dreizehn) Uhr essen.
Mr. Bose goes at one o'clock p.m. to eat.

VOCABULARY

New words are given in the same order as they appear in the text. If it is mentioned please refer to the grammar section.

international [intər-natsio'na:l]	international
der Kaufmann (plural : die Kaufleute [—loytə])	business man
aus	(here:) from
Indien ['indiən]	India
indisch ['Indish]	Indian (adjective—in German with small letter!)
der Inder ['indər]	the Indian (noun)
besuchen [bə'zu:xən]	to visit
entschuldigen [ent'shuldigən]	to excuse (form given in the text is imperative polite form)
wo (2) [vo:]	where
technisch ['teçnish]	technical
antworten ['antvortən]	to answer
fahren(1) ['fa:rən]	to go (by vehicle!)
gehen ['ge:hən]	to go (on foot!)
der Bus (3) ["u" like in "pull"]	the bus
die Strass enbahn (3) ['shtra:sənba:n]	the tram
die Linie [li:niə]	the line
er hat (2)	
die Zeit [tsait]	the time
denn	because
14. 30 Uhr(4)['fi:rtse:n u:r draisiç]	
die Verabredung [fər'apre:dunk]	the appointment
der (Geschäfts) freund [froynt]	the friend
sprechen ['shpreçən]	to speak, to talk
hier [hi:r]	opposite from "there" (dort)
die Minute [mi:'nutə]	the minute
englisch ['english]	note the [e] like in "enter"
der Aussteller ['aus-shtelər]	the exhibitor
besichtigen [bə'ziçtigən]	to visit, to inspect, to view
der Messestand ['mesə-shtant]	fair stand, stall, booth
essen (1) ['esən]	to eat

GRAMMAR

(1) As already mentioned (Lesson 1) certain verbs change their stressed vowels in 3rd person singular; e. g.

a — ä
ich verlasse—er verlässt
ich fahre —er fährt
e — i
ich spreche—er spricht
wir sprechen—sie sprechen
ich treffe—er trifft
ich gebe—er (es) gibt
ich sehe—er sieht
ich esse—er isst
au—äu
ich laufe—er läuft

In future we shall mention these exceptions in the vocabulary, e.g. laufen/äu

(2) "Herr B. hat Zeit." "Wo ist die Messe?"

We give below the present tense of the verbs "to have" and "to be"

ich	habe	Zeit	(I have time)
er	hat	Zeit	(he has time)
sie	hat	Zeit	(she has time)
es	hat	Zeit	(it has time)
wir	haben	Zeit	(we have time)
sie	haben	Zeit	(they have time)
Haben Sie		Zeit ?	(have you time?)
ich	bin	Inder	(I am)
er	ist	aus Bombay	(he is)
sie	ist		(she is)
es	ist		(it is)
wir	sind	im Hotel	(we are)
sie	sind	in Leipzig	(they are)
Sind Sie		hier ?	(Are you here?)

(3) "....mit dem Bus oder mit der Strassenbahn."
The preposition "mit" requires always the dative case the following noun.
der Bus (—nom masc) (mit) dem Bus (—dat masc)
die Strassenbahn (—nom fem) (mit) der Strassenbahn (—dat fem)
Please learn :
Ich fahre mit dem Bus, mit dem Zug (all masc.)
Fahren Sie mit der Strassenbahn oder mit der Taxe? (all fem.)
Sie fahren mit dem Auto, mit dem Schiff. (all neutr.)

SOME CARDINAL NUMBERS

eins	[ains]	one
zwei	[tsvai]	two
drei	[drai]	three
vier	(fi:r)	four
fünf	(fynf)	five
sechs	(zeks)	six
sieben	(zi:bən)	seven
acht	(axt)	eight
neun	(noyn)	nine
zehn	(tse:n)	ten
elf	(elf)	eleven
zwölf	(tsvœlf)	twelve
dreizehn	('draitse:n)	thirteen
vierzehn	('fi:rtsə:n)	fourteen
fünfzehn	('fynftse:n)	fifteen
sechzehn	('zeçtse:n)	sixteen
siebzehn	('zi:ptse:n)	seventeen
achtzehn	('axttse:n)	eighteen
neunzehn	('noyntse:n)	nineteen
zwanzig	('tsvantsiç)	twenty
dreissig	('draisiç)	thirty
vierzig	('fi:rtsiç)	forty
fünfzig	('fynftsiç)	fifty
sechzig	('zeçtsiç)	sixty

It is 5·30 p.m.
Es ist siebzehnUhr dreissig (17. 30 Uhr)

PRONUNCIATION AND SPELLING

The two words "we come" have each one syllable. "We" is a so-called "open syllable" because it ends with a vowel; "come" is a so-called "closed syllable" because it ends with a consonant. Open syllables are long! E.g. "wo" [vo:]; "sagen" [za : gən]; Furthermore you speak a long syllable or long vowel respectively, if there is "h" after the vowel, e.g. "Uhr" [u : r]; "wohnen" [vo : nən] if there is "e" after "i", e. g. "sieben" [zi : bən], sie [zi:] Don't confuse "ie" [i :] and "ei" [ai]! "nein" [nain], "zeigen" [tsaigən] "die" [di :], "viele" [fi : lə]. You speak short vowel, if the vowel is followed by double consonant: "bitte", "essen", "dann".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

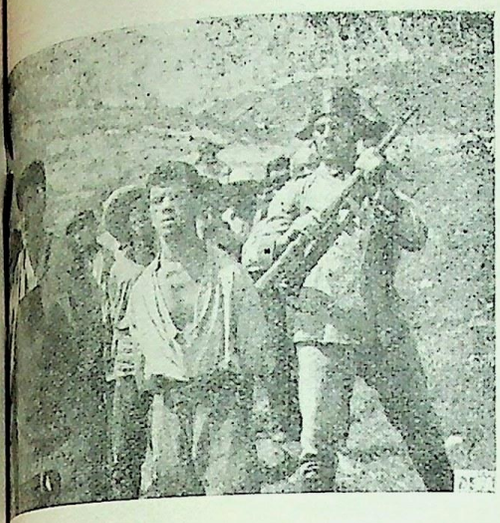

NEWS FROM DEFA FILMLAND

"FIVE CARTRIDGE-CASES"

A Film on the fight against fascism in Spain 1936. Script by Walter Gorrisch, himself a fighter in Spain, who has depicted in an artistic form what many of his comrades-in-arms experienced then. Produced by a team of young artists, it represents one of the best creations of DEFA Film Company.

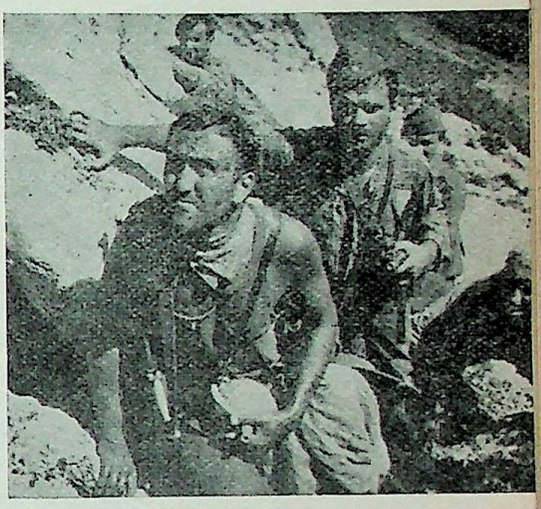

* Spain 1936. Spanish freedom and democracy are threatened by Spanish, Italian and German fascists. Peaceloving workers and peasants are arrested, tortured, executed. From all over the world people rush to Spain to join the International Brigades who, together with the Spanish people, defend the Spanish Republic.

* Commander Witting is a hero without pathos, a simple man filled with an inflexible will to win. He commands a group of five: a Spaniard, a German, a Pole, a Frenchman and a Bulgarian, who are cut off from their own battalion.

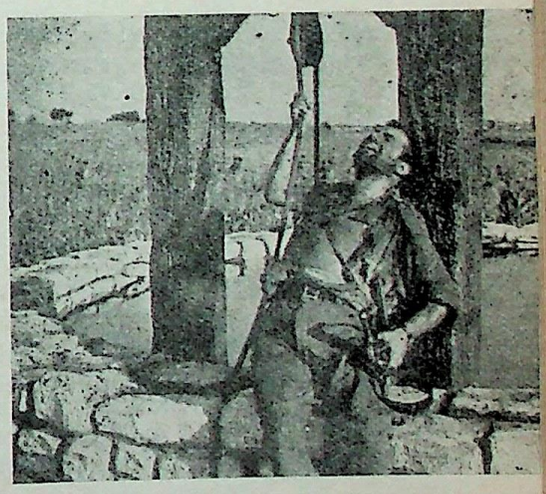

* Deadly wounded, Witting's only thoughts are on the men he has been entrusted with. They must get through the enemy lines if they want to join their comrades again. They can reach their goal only jointly, for single they would perish.

* His last order chains these five courageous fighters together. Each one of them has concealed a part of an important message in an empty cartridge-case. The text can only be composed of all the five parts.

They drag their exhausted bodies forward. Their throats are parched, for all the water places are occupied by the fascists.

* Their will to live is at an end, only the order gives them the courage and strength to go on. One of them gives up, but the others reach the headquarters of their battalion and learn the message: "Stay—together—, and you—will —live!"

* With this order the commander had given them the strength to get through, to live—he had led them still beyond his death.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NEWS FROM GDR

No Slander Against Other Countries in GDR

As we have been asked by many people, we feel obliged to declare that the notorious book "India With and Without Wonders" has been published in West Germany and not in the German Democratic Republic. As a matter of fact, publications of books which display racial discrimination of any kind is prohibited and punishable by law in the GDR. The publication of the book in question, has aroused widespread protests and indignant condemnation among the people and in the press of our country.

GDR Textile Exhibition in Rangoon

A textile Exhibition of the German Democratic Republic, opened in Rangoon in February by U Thwin, Minister of Trade of the Union of Burma, was seen by 45,000 visitors by the middle of March.

GDR Ski Ace Wins Jump Over 100 meters

Helmut Recknagel, Gold Medal Winner of Squaw Valley and winner of the international four jump tournaments, has recently also won the ski jumping event over 100 metres with 132 and 127 metre jumps and 461.3 points. Second became the Austrian Leopolter with 447.5 points.

GDR—USSR Trade Rises by 13 p.c.

A protocol on mutual goods deliveries between the USSR and the GDR for 1961 was signed recently. The volume of trade will amount to 1.900 million new Roubles. which means an increase by 13 per cent.

67 Million Books for Youth in GDR

Since its foundation nearly 15 years ago, the "Neues Leben" publishing house of the GDR has published 1,411 titles with a total edition of 67.12 million copies. The foundation of the "Free German Youth" organisation on March 7, 1946 was soon followed by the birth of its own publishing house, "Neues Leben." On the 15th anniversary of the youth organisation

OUR LETTER BOX

Sir.

How your country manages children's education and solves the problem of their entertainment. Throw light on children's literature. What about children's welfare?

Yours (.....)
Keshawa Kumar Sharma,
Nohargarh Road, Jaipur.
Rajasthan.

In the German Democratic Republic attendance of schools is compulsory for all children between the ages of 6 and 16.

Education is entirely free and 75 per cent of children are provided schoolbooks free of charge. In higher secondary schools a large number of children receive educational grants from 25 to 60 marks monthly.

Schools are housed in solid, modern buildings and there are 26 children in one classroom on the average. The standard of education is uniform in all schools throughout the GDR, including rural schools. Since 1945 great improvements have been made particularly in the countryside. For instance, whereas in 1945 there were 4,114 schools were children of all ages were taught together in a single classroom, there were only 23 such schools left in 1957, and meanwhile they have completely vanished.

In 1959 polytechnical education was introduced at all schools in the GDR. The chief object of polytechnical education is

1. Contact between schoolchildren and workers, the inclusion of productive work in the educational process;
2. Knowledge of the general running and organisation of the productive process (children go to factories or agricultural enterprises once a week where they are instructed on various subjects);
3. A good basic knowledge of the natural sciences;
4. The- acquisition of elementary skill in handling simple tools and the most commonly used measuring instruments.

Children in the GDR have many-sided possibilities of entertainment. The Pioneers organisation, which includes 60 per cent of all schoolchildren from 6 to 14 years, has centres and clubs at all schools carrying on interesting and instructive activities such as amateur theatre, dancing and singing, sports, reading, film shows, amateur construction of planes, ships and such like. Besides there are 92 central Pioneer Houses and 39 Young Tourist Centres for children in the GDR. Moreover, there exist a great number of after-school clubs where children are being looked after by trained personnel and, having done their home lessons, can pursue their various hobbies. In the holidays all children have the chance of attending holiday camps, going on tours where they come to know the most beautiful spots and historical and cultural memorials of the GDR. They may join in games and excursions which are free of cost. The State contributes about 65 million marks to this holiday scheme every year. This sum does not include that provided by nationally-owned factories which have their own children's holiday hostels and camps. Many towns in the GDR have children's theatres. Children have their own publishing house, called "Kinderbuch-Verlag" whose publications range from picture and painting books via fairy tales to healthy adventure stories and books about technology, space flight etc., for the bigger ones.

The Editor

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Neues Leben" has published two new interesting works. "For we are Young" which contains reports, stories, poems and excerpts from novels by young authors, and "Free Youth—New Life" dealing with the development of the socialist "Free German Youth" organisation.

Congolese Delegation in Leipzig

A three-man delegation of the legitimate government of the Congo visited the 1961 Leipzig Spring Fair. Delegation included Mr. Kiwewa, State Secretary in the Ministry of Foreign Trade, Mr. Tshitenzi, Attachè to the UN Delegation and Mr. Bayubasire, member of the Congo's diplomatic mission in Cairo. "It is a great joy for us to visit the GDR. We are greatly interested in the Leipzig Fair and hope that the friendly relations between our two countries will be further strengthened. . . . We know that in the German Democratic Republic we have a good friend at our side." (ND)

Lord Boothby for Official Trade Agreement with GDR

"I agree with Mr. Ulbricht. There are two German states. That is a fact which one has to accept," Lord Boothby, Member of the British House of Lords, said shortly before his departure for London to a correspondent of "Neues Deutschland" in Leipzig. Lord Boothby who was staying in the German Democratic Republic for the second time, spoke in favour of a gradual normalisation of relations between Great Britain and the GDR. "I came to Leipzig in the first place as a politician," he declared. "We want to improve above all trade between both the countries. We want an official trade agreement between the governments." (ADN)

Solidarity Account for Africa Grows

Material and money donations amounting to over 52,000 Marks were collected in the Dresden county of the German Democratic Republic for the national democratic states of Africa. The donations are meant for building up an independent press in these states. The Dresden "Typoart" typewriter works has handed over two typewriters and a complete spare keyboard to the Africa Solidarity Committee of the Union of German Journalists in the GDR.

In the Leipzig county the collection results in the framework of the Africa solidarity campaign amounts to approximately 39,000 Marks. The Karl Marx Stadt county organisation of the Union of German Journalists wants to contribute 30,000 Marks towards the equipment of a printing shop in Africa.

Solidarity accounts in support of an independent press in Africa exist in all 14 counties of the GDR and the capital, Berlin. The two months solidarity action will last till March 31. (ADN)

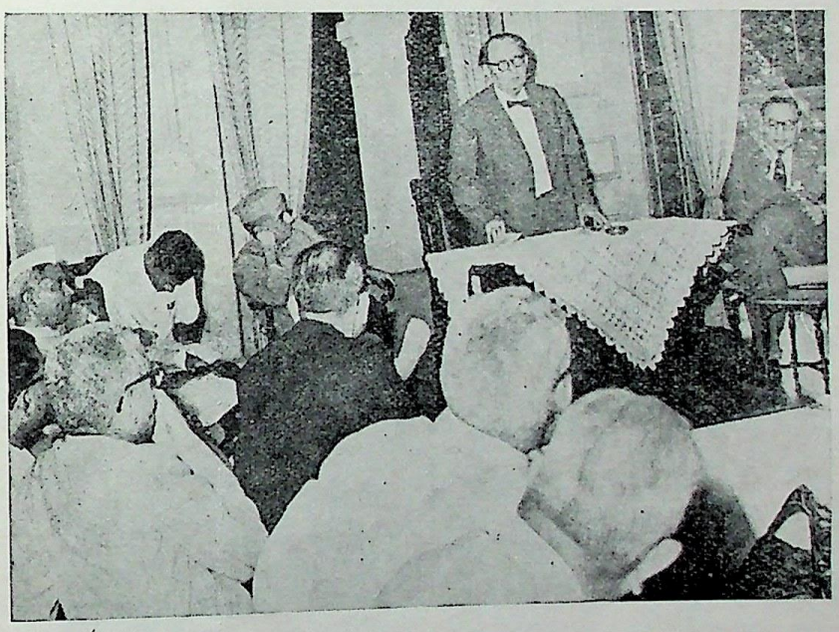

Professor Budzislavski, Dean of the Department of Journalism of the Leipzig University, G.D.R. addressing a meeting of journalists in Allahabad. Following visits to Bombay, Madras, Hyderabad, Calcutta, Allahabad, Lucknow and Delhi, Prof. Budzislavski was a state guest in Punjab. The Chief Minister Sardar Pratap Singh Kairon, at a reception organised in honour of Prof. Budzislavski on 22nd March, thanked him for his visit and asked him to convey his personal best wishes to the G.D.R. people for their further prosperity and success in national construction.

German Lufthansa Helps Agriculture

As every year since 1957 the German Lufthansa, the German Democratic Republic's airline, will support GDR agriculture this year too. It will employ most modern technical means in insect and weed combating, and fertilizing. For this purpose bases for these flights were set up in various towns.

Whilst in 1957 approximately 20,000 hectares of arable land were cultivated by planes they were 167,950 hectares last year. This is to be raised to 1,000,000 hectares by 1965. (ADN)

GDR Delegation to Cypriot Peasants Congress

A delegation of the German Democratic Republic's peasants organisation "Association of Mutual Peasants Aid" (V.D.G.B.) left Berlin for Nicosia in March on the invitation of the Central Association of Cypriot Peasants. (ADN)

Agricultural Production Up in GDR

Production of fattened animals in the German Democratic Republic rose by 10.5% last year as compared to 1959. For the first time production of fattened animals amounted to over 1,000,000 tons. This was announced at a conference of co-operative peasants, state functionaries and agronomists held in the GDR recently.

Cattle livestocks rose by 4.8%, pigs by 3.5%. There was also a remarkable increase in crop production: Cereals by 12.7%, potatoes by 17.3% and sugar beets

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

by 50%. Altogether food production in the GDR was raised by about 6.5% last year as compared to 1959. (ADN)

Trial Voyage of 2nd GDR Holiday Ship

The first GDR built holiday ship, "Fritz Heckert," has left Wismar port for a fortnight trial voyage. The "Fritz Heckert" is the world's first passenger ship driven by gas turbines. She can develop a speed of 19 knots per hour.

The 141 metre long and 7,400 gross register ton holiday ship will start her maiden voyage with 400 passengers on board on 1st May this year. The GDR working people donated hitherto approximately 29.5 million Marks for the construction of the ship.

The first GDR holiday ship, "Voelkerfreundschaft" (Friendship Among the Peoples) has been sailing on the Mediterranean and Baltic Seas for one year already. She was bought from Sweden. The money for the purchase was raised by the workers through additional exports. (ADN.)

7,700 Refugees from W. Germany

During the first two months of 1961, more than 7,700 refugees from West Germany have asked asylum in the German Democratic Republic. They included 1,774 skilled workers, 419 peasants and agricultural labourers, as well as 2,629 young people between the ages of 19 and 25 years. (ADN)

GDR Exports Textiles to Over Seventy Countries

"The interest of foreign customers in products of the GDR's textile industry is growing every year. Export of textiles rose by nearly 40% during the last two years alone," it was announced by a representative of the GDR's textile export enterprise at the Leipzig Spring Fair. Today the GDR was exporting to over 70 countries all over the world, including Indonesia, Iraq and North and West African countries. (ADN.)

Indonesian Journalists Visited GDR Handicraft Cooperative

The Indonesian journalists Bachtiar and Soljono Djanadi visited the handicraft production cooperative "Elektro Akkustik" in Leipzig recently. They were informed in detail on problems of the wages for the cooperative members, the joining and credit possibilities.

The formation of cooperatives is strictly voluntary. Master craftsmen, journeymen and workers become members of the cooperative on an equal footing. They are thus better able to apply their skills and experience. They receive—besides their monthly wages—their shares of the profits at the end of the year.

Another advantage of working together in the cooperative is that modern technical methods give a greater return, as a result of which productivity increases.

Cooperatives are allowed long-term credits at 4.5% for financing the purchase of capital equipment, such as machines, tools and other installations. Interest charges on short-term credits are fixed at 2%. (ADN)

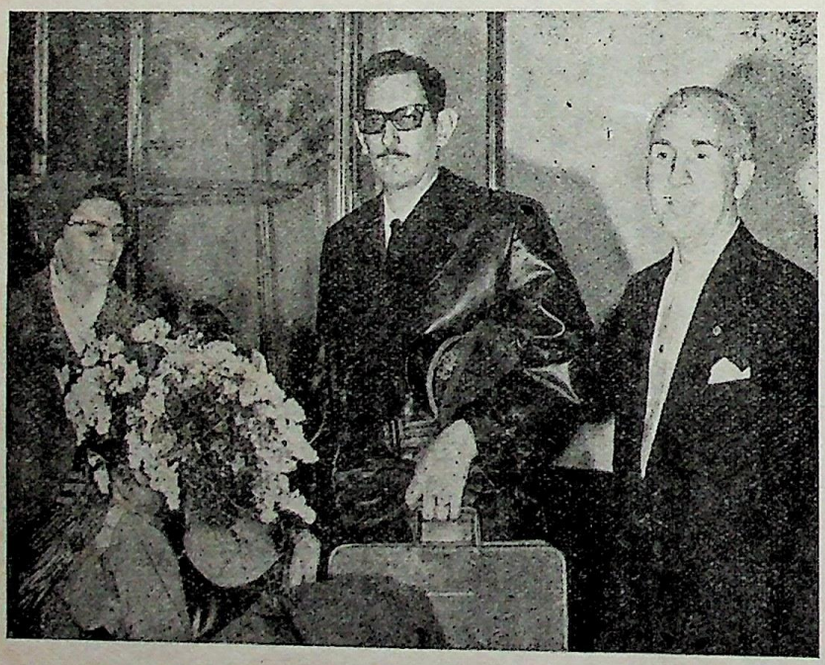

Commander Camacho (centre), Minister for Transport of the Republic of Cuba, headed the Government delegation of his country to the 1961 Leipzig Spring Fair, which ended on March 14.

A Work Circle "Latin America".....

.....was constituted at Berlin's Humboldt University in March. It is to give the students the possibility to study, next to the Spanish language, also problems of literature and history of Latin America. (ADN.)

13 Fairs and 2 Industrial Exhibitions.....

.....were organised by the German Democratic Republic abroad last year. They were visited by over 12.5 million citizens in the countries concerned. (ADN.)

The First GDR-built Tropic Fishing Vessel.....

.....was launched in the Rostock Neptun shipyard. She is destined for fishing in tropical waters. (ADN.)

Contacts with 300 Institutions.....

.....all over the world has the Botanical Garden of Rostock's University. It is sending 12,000 seed parcels to many European and oversea countries as part of international exchange annually. (ADN.)

150 Persons were Rescued.....

.....by a new special ambulance used since September last year by Berlin's rescue service. It enables blood transfusions and operations right on the spot of the accident. (ADN.)

9,354 New Flats.....

.....will be built in Democratic Berlin in 1961. The new quarters

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

will have shops, schools, laundries and other facilities. Altogether 28 million marks will be invested in these institutions. (ND.)

Kindergartens in Democratic Berlin.....

.....accommodated 16,844 children in 1960. 17.8 per cent of all children up to the age of one were in creches while 45.8 per cent of pre-school-children went to kindergartens. In West Berlin the corresponding figures were 5 per cent or 27 per cent, respectively. (ND.)

190.2 Million Marks Worth of Goods.....

.....more were bought by Berliners in 1960 than 1959. Out of these 148.1 million marks were used for the purchase of industrial goods, such as refrigerators, TV-sets, radios, etc. (ND.)

GDR Agricultural Show in Cairo

The German Democratic Republic participates in the International Agricultural Exhibition in Cairo which opened on 21st March. The 2,000 square metre pavilion includes a true-to-life model of the agricultural cooperative farm of Mestlin, showing the development of that village since 1945.

German-African Society Founded in GDR

The "German-African Society in the GDR" was founded in the middle of March in Berlin. Besides outstanding figures of public life of the GDR, representatives of 10 African countries were present at the founding conference. Speaking about the aims and objects of the Society, Prof. Markov, Chairman of the Society, said: "The GDR is the only German State which has and will consistently and unconditionally support the African Peoples in their struggle for independence." The Presidium of the Society includes 70 prominent personalities of the GDR.

Heinrich Mann Returns Home

According to the last will of Heinrich Mann, the great German writer who died in 1950 in the United States, the urn with his mortal remains was transferred to Berlin from California and buried on March 27, his 90th birthday.

His will was made known to the Government of the German Democratic Republic by Mrs. Leonie Askenazy-Mann, Heinrich Mann's daughter who is now living in Prague. Interviewed by the GDR News Agency, she said: "Your Republic, the German Democratic Republic, was for my father the new Germany of Justice, which he highly appreciated and in which he wished to live." Her father had most warmly welcomed the foundation of the first German State of Peace and prior to his demise on March 12, 1950, he had only talked of his return to this Germany. "I have several times been here in the GDR and I feel it is a great security for the future that there are no fascists who drove thousands of us out of Germany, back in leading positions. On the contrary: I know many personalities in high positions who together with us fought against fascism in those days. I am happy that the bequest of my father is in good hands in the GDR.

Yehudi Menuhin, famous American violinist, was the most eagerly awaited foreign artist of the concert audience during the recent Leipzig Spring Fair, This was his first appearance in Leipzig after a period of 20 years. Many who had not got tickets, demanded to be let in to listen in standing, which was granted. The concert was entirely devoted to Beethoven and was conducted by the well-known conductor of the Leipzig Gewandhaus Orchestra, Prof. Franz Konvitschny.

Unprecedented Scandal in Sports World

A scandal which is unprecedented in the history of sports is all the West German team had to add to its 'credit' during the Ice Hockey World Championships, held in Switzerland recently. On the strictest order of the West German Foreign Ministry the West German team was forbidden to appear for the match with the team of the German Democratic Republic. The GDR team had previously beaten the US team 6 : 5 and was expected to defeat the West German team as well.

The International Ice Hockey League had asked the West German team to honour the GDR team, in case they won, according to international rules. If they would leave the stadium without waiting for the GDR flag to be hoisted and its national anthem to be played, the West German League could reckon with their expulsion from the International League.

The announcement made by the President of the West German Sports League and National Olympia Committee, Willi Daume, who had been previously instructed by Bonn's Foreign Minister Von Brentano and had come to Geneva for the sole purpose of announcing this order, aroused the indignation of all present in the stadium.

Robert Lebel, Vice President of the International Ice Hockey League from Canada, emphasised: "This whole affair is extremely regrettable and shameful for our sport.....I regret this decision of the leadership of the West German team very much."

As a result of the non-appearance of the West German team, the GDR team was granted two points and 5 : 0 goals. The GDR team became fifth in the World Championships.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Heinrich Rau, Deputy Prime Minister and Minister of Foreign and Inner-German Trade of the GDR (centre), seen at the West German stall at the 1961 Leipzig Spring Fair, a week before his demise. Sitting: Walter Ulbricht, Chairman of the Council of State.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25/9/61

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

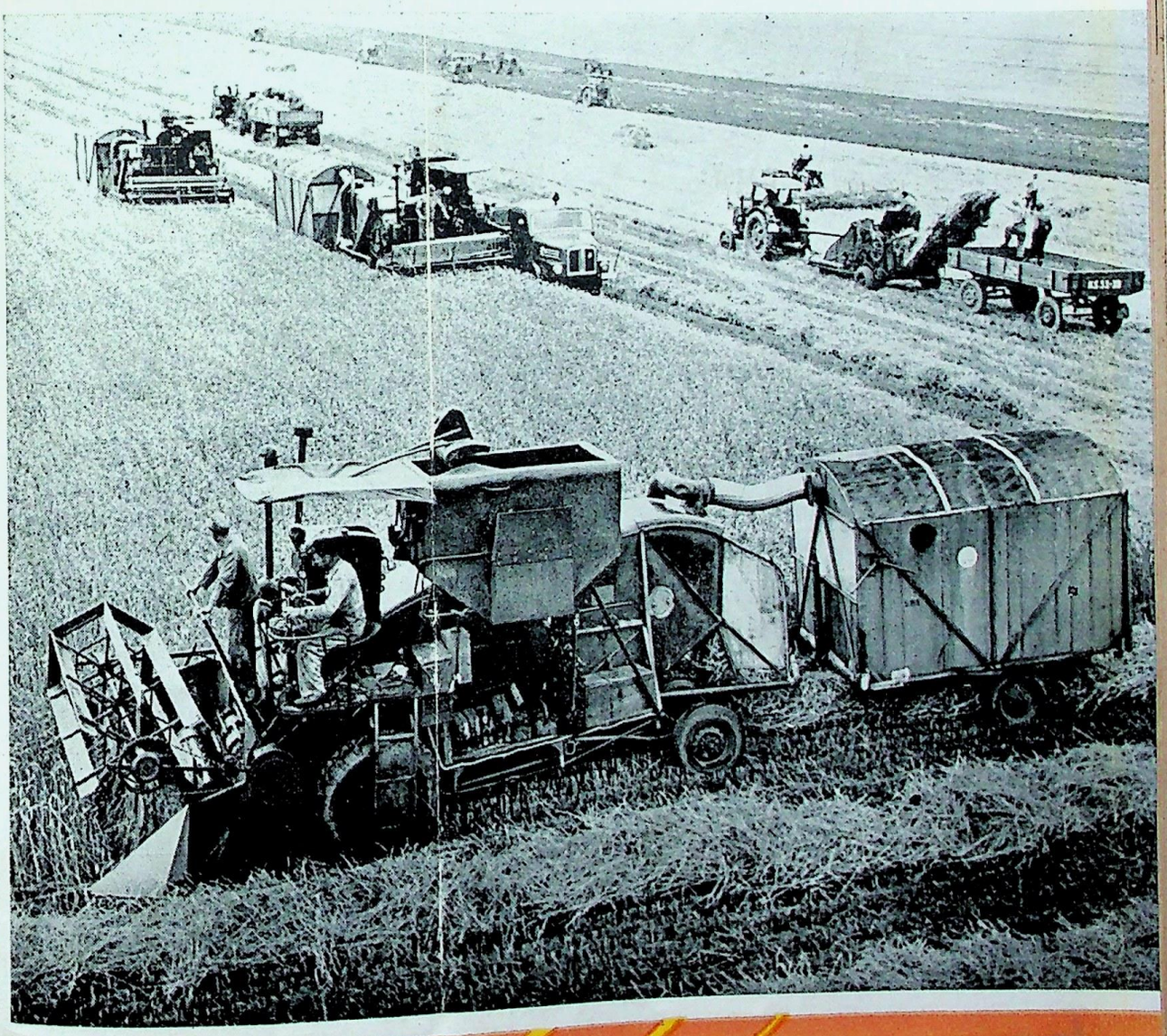

९ वर्ष ६
सितम्बर
१९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६,३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन, १२२, दिनशा
वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस, पी-१७, मिशन
रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ६, अंक ९ २० सितम्बर, १९६१

यह अंक

पृष्ठ

सबसे अंधकारपूर्ण दिन ३

व्यक्तित्व की झांकी
प्रो. कुर्त हागर ५

जनवाद के बढ़ते चरण
योग्यता बढ़ाने का अधिकार ७
आटा मिल ८
सीमेंट कारख़ाना ९
एक वैज्ञानिक की यात्रा १०

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन
एक और स्विटज़रलैंड—एक और नन्दनवन १२
बर्लिन चैम्बर की भारत यात्रा १४
एदुअर्ड फ़ान विन्टरस्ताइन १५
दस हज़ार मुर्गियों का फ़ार्म १६

डेफ़ा फ़िल्म जगत
ज. ज. ग. में रेल-व्यवस्था १७

वीर लरनेन् दोइच
पाठ नौ २०

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें २१

मुख पृष्ठ :

खेतों में फ़सल-कटाई का मौसम। मशीनों से सहकारी फ़ार्मों का काम आसान हो गया है।

अन्तिम पृष्ठ :

सितम्बर के साथ ज. ज. ग. में स्कूलों का नया शिक्षा-सत्र भी शुरू होता है। स्कूल में प्रवेश के दिन बच्चों को मिठाइयां, खिलौने और स्कूली पोशाकें दी जाती हैं।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, ४७ राजेन्द्र नगर मार्केट, नयी दिल्ली-५ द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे अंधकारपूर्ण दिन...

गत २४ अगस्त को पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन के अखबारों ने इसी तरह की सुर्खियां दीं। उनकी इस निराशा का कारण क्या था? जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि-परिषद ने १३ अगस्त को एक निर्णय लिया जिसमें निम्नलिखित अंश भी था:

"योरप में शांति की रक्षा के लिए, जर्मन जनवादी गणतंत्र की रक्षा के लिए और समाजवादी शिविर की रक्षा के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र की सीमाओं पर जिनमें वृहत्तर बर्लिन के पश्चिमी क्षेत्रों की सीमाएं भी शामिल हैं, ऐसे नियंत्रण लागू किये जांयगे जो कि हर प्रभुसत्ता-सम्पन्न राष्ट्र के लिए स्वाभाविक कहे जा सकते हैं।

पश्चिमी पत्रकारों ने अपनी निराशा के जो तर्क प्रस्तुत किये वे कुछ इस प्रकार थे: ये क़दम चार राष्ट्रों के समझौतों उलंघन है, इन क़दमों के अलावा पूर्वी जर्मनी के पतन को किसी और ढंग से रोकना असंभव था, यह क़दम व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर कुठाराघात है।

आइए, ज़रा हम जर्मन जनवादी गणतंत्र के इन उलंघनों पर एक नज़र डालें और हां ऐसा करते समय हम केवल तथ्यों तक ही अपने को सीमित रखेंगे। चार राष्ट्रों के समझौते का उलंघन १४ नवम्बर १९४४ को (यानी तब तक युद्ध चल ही रहा था) सोवियत संघ, अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस की अस्थाई सरकारों ने एक समझौता किया। समझौते की ७वीं धारा इस प्रकार है:

"वृहत्तर बर्लिन क्षेत्र के प्रशासन के संयुक्त नियंत्रण के लिए एक परस्पर आश्रित अधिकारतंत्र (रूसी: कमेंडातुरा) की स्थापना की जायेगी जिसमें चारों शक्तियों के एक-एक सेनापति शामिल किये जायेंगे और जिन्हें उनके उच्च सेनापति मनोनीत करेंगे।"

धारा १० में कहा गया:

"मित्र राष्ट्रों का उपर्युक्त संगठन जो जर्मनी के नियंत्रण और प्रशासन का ज़िम्मेदार है, जर्मनी के आत्मसमर्पण के तुरन्त बाद कार्यरत हो जायगा और तब तक अपना काम जारी रखेगा जब तक बिना शर्त आत्मसमर्पण की मुख्य-मुख्य शर्तों को जर्मनी पूरा न करे।"

इस समझौते में जो व्यवस्था निश्चित हुई उसे चारों सरकारों ने ५ जून, १९४५ के समझौते में फिर पुष्ट किया। इसमें वे क़ानूनी आधार प्रस्तुत किये गए जिनके अनुसार जर्मनी और वृहत्तर बर्लिन के प्रशासन के नियंत्रण को असली जामा पहनाया गया। लेकिन ब्रिटिश कमान्डर ने सोवियत कमांडर को १८ जून १९४८ को एक पत्र लिखा, "...इस लिए मैंने तय किया है कि मुद्रा सुधार की योजना में ब्रिटिश-अधिकृत क्षेत्र को भी शामिल करने का निर्णय कर लिया है। मुद्रा-सुधार योजना रविवार २० जून को पश्चिमी क्षेत्रों में लागू होगी। उन सुधारों से संबंधित निर्णय की प्रतिलिपि आपको पहले ही मिल जायगी। इस निर्णय से बर्लिन का ब्रिटिश क्षेत्र प्रभावित नहीं होगा।" दो दिन बाद २० जून को सोवियत मार्शल सौकौलोव्स्की ने जनरल क्लेटा वर्टसन और कोयनिग को अपने पत्र में लिखा:

"पश्चिमी जर्मनी में एक अलग मुद्रा-सुधार से संबंधित आपने अपने निर्णय से सूचित किया। वह सुधार अब तक लागू भी हो चुका होगा।... आपके इस क़दम को मैं कानूनी नहीं मान सकता, क्योंकि इसका फल जर्मनी में नियंत्रण के व्यवस्था संबंधी समझौतों को फाड़ कर फेंक देने में ही लक्षित होता है। मैं यह कहने के लिए विवश हूं कि इन हरकतों की पूरी ज़िम्मेदारी अमरीकी ब्रिटिश और फ्रांसीसी अधिकारियों पर होगी। साथ ही यह जानकर मुझे खुशी हुई कि पश्चिमी क्षेत्रों में हुआ मुद्रा-सुधार बर्लिन के अमरीकी, ब्रिटिश और फ्रांसीसी क्षेत्रों में लागू नहीं किया जायगा।"

डा. एलबर्त श्वाइत्सेर एक महान विद्वान, प्रतिष्ठित डाक्टर और पश्चिमी अफ्रीका के लम्बारने नामक स्थान पर वन-चिकित्सालय के संस्थापक हैं। हाल ही में आपने विनाशकारी अस्त्रों के प्रयोग के विरुद्ध तीन भाषण दिये जो ओस्लो रेडियो से प्रसारित किये गये। डा. स्वाइत्सेर ने ज. ज. गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष के नाम निम्नलिखित पत्र लिखा:

प्रिय अध्यक्ष महोदय,

२० जुलाई, १९६१ के अपने कृपा-पत्र के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए। आपके पत्र से मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप शांति-संबंधी मेरे विचारों को सही मानते हैं और जीवन की पवित्रता के बारे में मेरी भावनाओं का आदर करते है।

आपकी शांति योजना और उसे अमल में लाने की पद्धति के विषय में मुझे आप की भावनाओं को जानने का अवसर मिला और मैं सचमुच गद्गद हो गया। मेरी कामना है कि शांति के लिए प्रयत्न करने वाले तमाम लोग शांति को साकार होते देख सकें और संसार को यह अनुभव हो सके कि शांति के अभाव में मानवता ख़तरे में पड़ चुकी है।

समस्त शुभकामनाओं के साथ,

आपका

अलबर्त श्वाइत्सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पत्र की पूर्ण अवहेलना करते हुए पश्चिमी सैनिक प्रशासक ने पांच दिन बाद यानी २३ जून, १९४८ को एक और फ़ैसला कर लिया कि पश्चिमी जर्मनी की मुद्रा बर्लिन के पश्चिमी क्षेत्रों में भी लागू कर दी जायगी। जर्मनी के विभाजन की दिशा में यह एक निर्णायक क़दम था और जिसके बाद ऐसे क़दमों का एक सिलसिला ही चल पड़ा। १९४९ के सितम्बर में तीनों पश्चिमी क्षेत्रों को मिलाकर पश्चिमी जर्मनी की सरकार बना दी गई। कहने की जरूरत नहीं कि जर्मनी में एक दूसरे राज्य यानी जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना का निर्णय पश्चिमी जर्मनी बनने के बाद ही लिया गया।

अब एक सवाल किया जा सकता है : चार राष्ट्रों की स्थिति सचमुच किसने भंग की ? जर्मन जनवादी गणतंत्र ने या और किसी ने ? हमारा विचार है कि जर्मनी को फिर से एक करने और पश्चिमी जर्मनी को एटमिक हथियारों से हाथ खींचने से संबंधित जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सौ से भी अधिक प्रस्ताव किये हैं और वे सब के सब चार राष्ट्रों के समझौते के सौ फ़ी सदी अनुकूल कहे जायेंगे।

फिर पूर्वी जर्मनी में कम्युनिस्ट व्यवस्था के पतन की बड़ी-बड़ी बातें की जाती हैं। इस पर भी थोड़े से तथ्य काफ़ी रोशनी डालेंगे। आज से १५ साल पहले जर्मनी का वह क्षेत्र जहां आज जर्मन जनवादी गणतंत्र स्थित है, "तालुकदारों का इलाका—पूर्वी-एल्बिया" कह कर पुकारा जाता था। इसका असली मतलब यह हुआ कि इस क्षेत्र का खास धन्धा खेती था और उद्योग उन क्षेत्रों में थे जहां आज पश्चिमी जर्मनी बसा हुआ है। लेकिन इस सब के बावजूद जर्मन जनवादी गणतंत्र औद्योगिक मामलों में योरप का पांचवा देश माना जाता है और अगर कुल पैदावार को देखें तो इसका दर्जा दुनिया में सातवां पड़ता है। सन् १९५५ में जर्मन जनवादी गणतंत्र का कुल उत्पादन ४४८० करोड़ मार्क के बराबर था और १९६० में वह बढ़कर ७१३० करोड़ मार्क हो गया। यह सब कुछ हासिल करना कोई खिलवाड़ न था। इसके लिए पूरे देश ने कठिन श्रम किया है। ऐसा नहीं कि आज सारी मुश्किलें हल हो चली हों, फिर भी प्रगति में कहीं अवरोध नहीं है। और इतना याद रखना चाहिए कि जर्मन जनवादी गणतंत्र आर्थिक दृष्टि से उतना कमज़ोर नहीं जितना लोग उसे देखना चाहते हैं।

फिर पूर्वी जर्मनी की राजनीतिक दुर्बलता ? इसका एक माकूल जवाब तो गत १३ अगस्त का वह क़दम है जिसे जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने उठाया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर ने इस क़दम से संबंधित बिल ११ अगस्त को पास किया और उस पर अमल करने के लिए सरकार को अधिकार दे दिया। उसके दो दिन बाद वे क़दम उठाये गये। इसके मानी यह कि ११० कीलोमीटर की सीमारेखा पर नियंत्रण करना था और इसका यह भी मतलब था कि इस काम के लिए १०,००० व्यक्तियों को हिदायतें देनी थीं। इनमें संसद के ४६६ सदस्य भी थे। उनके अलावा सेना और पुलिस के लोग, कारखानों के जत्थे और सशस्त्र गार्ड और बड़ी संख्या में रेलवे के लोग भी शामिल थे। लेकिन इन तमाम लोगों ने अपनी सरकार पर भरोसा किया, इन कदमों को सही माना और समर्थन किया। इसीलिए पश्चिमी बर्लिन के अधिकारियों ने रविवार की सुबह जब सारी सीमारेखा पर नियंत्रण की व्यवस्था देखी तो हैरान रह गये, पश्चिमी बर्लिन के वे अस्सी अड्डे जो दिन-रात खुफ़ियागीरी के अलावा और कुछ करते ही नहीं, अपनी नादानी पर सर पीट कर रह गये।

सरकार की घोषणा प्रकाशित हुई और जर्मन जनवादी गणतंत्र के मज़दूर वर्ग ने न सिर्फ़ उनका समर्थन किया, बल्कि पत्रों द्वारा इस बात पर संतोष प्रकट किया और इस पर ज़ोर दिया कि ऐसा क़दम तो बहुत पहले ही उठाना चाहिए था। कारखाने के मज़दूरों ने कहा कि इस क़दम के लिए हम तो बहुत पहले से ही मांग करते आ रहे थे।

पश्चिमी बर्लिन से हो रही तोड़-फोड़ की कार्यवाइयों के प्रति जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार अब तक इतना धीरज क्यों दिखाती रही ? इसका एकमात्र उत्तर यह है कि वह उन तमाम समस्याओं पर पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के अधिकारियों से बात-चीत करना चाहती थी। लेकिन पिछले १२ सालों में इस सिलसिले में जितने प्रस्ताव पेश किये गये उन्हें या तो ठुकरा दिया गया अथवा उन पर ग़ौर ही न किया गया। और इस प्रकार यह आशा कि पश्चिमी जर्मनी इन समस्याओं के शांतिपूर्ण और उचित हल के लिए तैयार है, पूर्णतया धराशायी हो गयी। फलतः जर्मन जनवादी गणतंत्र को आत्म-रक्षा की चिन्ता में ऐसा क़दम उठाने के लिये विवश होना पड़ा।

पश्चिमी जर्मनी तथा दुनिया के अन्य देशों के समाचारपत्र पाठकों को यह बताया जा रहा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के बेचारे नागरिकों के हाथ से यह सुविधा भी छिन गयी कि वे पूर्वी जर्मनी की व्यवस्था के प्रति अपनी अनिच्छा प्रकट कर सकें और पश्चिम की ओर भाग सकें। अतः राजनीतित शरणार्थियों की इस समस्या पर भी विचार कर लें। श्री जान मेन्दर ने बर्लिन आकर इस समस्या का अध्ययन किता और 'न्यूस्टेट्समैन' के १८ अगस्त १९६१ वाले अंक में लिखा :

"उनमें शायद १० फ़ीसदी तो राजनीतिक शरणार्थी हैं... और इनमें से अधिकांश ने राजनीति से (भागकर) शरण ली है।" फिर बाकी ९० फ़ीसदी शरणार्थियों के बारे में क्या सच है ?

"८० फ़ीसदी शरणार्थियों के हंसमुख चेहरे और उनके भारी-भारी लबादे (पश्चिमी बर्लिन के एक शिविर में) किसी भी तरह मुसीबतज़दा लोगों के सबूत न थे।...वहां मानसिक रोगियों की संख्या ज़रूर देखने में आयीं...घर से भागी हुई लड़कीं,...लइपज़िक का कोई लड़का जिसकी प्रेमिका किसी झंझट में पड़ गयी...दिमाग़ी फ़ितूर वाले लोग...बस इसी तरह के लोगों का आना-जाना...दो राजनीतिक और सैद्धान्तिक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झांकी :

प्रो. हागर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्तर उल्ब्रिख्त के विशेष दूत की हैसियत से प्रो. कुर्त हागर गत १६ अगस्त, १९६१ को दिल्ली आये। उसी दिन उन्होंने भारत के कार्यवाहक राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन से, और १८ अगस्त को प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से भेंट की। प्रो. हागर ने विदेश मंत्रालय के वैदेशिक सचिव श्री एम. जे. देसाई से भी वार्ता की।

प्रो. हागर जर्मन जनवादी गणतंत्र के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों में गिने जाते हैं। उन्होंने शांति के लिए और साम्राज्यवादी युद्धों के विरुद्ध संघर्ष में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है।

२४ जुलाई, १९१२ को जर्मनी के दक्षिणी भाग में एक मजदूर परिवार में उनका जन्म हुआ। स्नातगर्त में उन्होंने शिक्षा पायी और पत्रकारिता को अपना पेशा चुना। १९३० में वे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। १९३३ में जब जर्मनी पर फ़ासिस्तों की हुकूमत क़ायम हुई तो वे ग़ैर क़ानूनी ढंग से फासिस्त-विरोधी आन्दोलन में शामिल हो गये। इसी अपराध में गिरफ़तार हुए और कन्सेन्ट्रेशन कैम्प में डाल दिये गये जहां १९३७ तक उन्हें यातनाएं भुगतनी पड़ीं। १९३७ में वे कन्सेन्ट्रेशन कैम्प से भागने में सफल हुए और स्पेन जाकर इन्टरनेशनल ब्रिगेड के साथ फ़ासिस्तों के खिलाफ़ लड़ने लगे। नाज़ी अदालत ने उन पर मुक़दमा चलाया

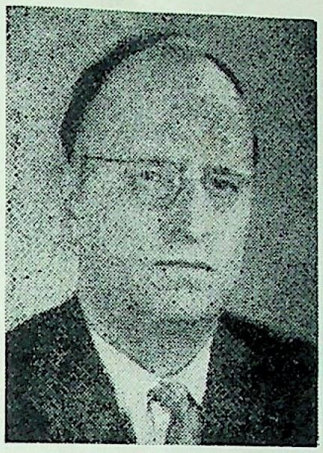

और उनकी अनुपस्थिति में उनके विरुद्ध सज़ा की घोषणा की। कुछ दिन बाद वे ब्रिटेन के फ़ासिस्त-विरोधी आन्दोलन में शामिल हो गये। १९४६ में वे जर्मनी वापस आये और सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी में शामिल हो गये। सन् १९४९ में उन्हें हुम्बोल्द विश्वविद्यालय, बर्लिन में दर्शन के प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त किया गया। सन् १९५४ में वे सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केंद्रीय कमेटी के सदस्य चुने गये और १९५८ में उसकी उच्चतम कमेटी पोलिट ब्यूरो के उम्मीदवार सदस्य बनाये गये। आप पीपुल्स चेम्बर के सदस्य हैं, संसदीय शिक्षा समिति के अध्यक्ष हैं, और शोध परिषद के सदस्य हैं।

अपने विभिन्न राजनीतिक उत्तरदायित्वों के बावजूद प्रो. हागर ने अपना दर्शन संबंधी अध्ययन कभी बन्द न किया। प्राचीन और आधुनिक दर्शन शास्त्र के संबंध में उनके सिद्धान्तों का व्यापक पैमाने पर अध्ययन किया जाता है और पश्चिमी जर्मनी, इंगलैंड, फ्रान्स और अमरीका में प्रचलित नये दर्शनशास्त्र का उनके द्वारा किया गया विश्लेषण बड़े ध्यान से पढ़ा जाता है। इन देशों के छात्रों और बुद्धिजीवियों में प्रो. हागर की बड़ी प्रतिष्ठा है। आप उच्चस्तर की दर्शन, राजनीति और इतिहास संबंधी पत्रिकाओं में बराबर लेख लिखते रहते हैं। "आज की बौद्धिक स्थिति" नामक उनकी पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है जिसमें मुख्यतया आज के दर्शनशास्त्र में वैज्ञानिकों और विद्वानों के दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रो. हागर आज की बदलती हुई दुनिया में एक नयी मानवतावादी विचारसरणि और नैतिक भावभूमि के पोषक हैं।

१८ अगस्त, १९६० को जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेष दूत के रूप में प्रो. कुर्त हागर और उपविदेशमंत्री डा. पाल वान्देल ने नेहरु जी से उन्हीं के निवास स्थान पर भेंट की। चित्र में (बांये से दांये) उप-व्यापार प्रतिनिधि श्री हरबर्त फ़िशर, डा. वान्देल, व्यापार प्रतिनिधि श्री इ. रेनाइज़न तथा प्रधान मंत्री के बगल में भारत के वैदेशिक मामले के सचिव श्री एम. जे. देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिविरों के बीच इसी तरह के गैरराजनीतिक लोगों का आना-जाना और हां, पागलों और मुजरिमों के भी वहां दीदार हुए...

'न्यू स्टेट्समैन' में श्री मेन्दर की छान-बीन किसी तरह से भी कम्युनिस्ट प्रचार नहीं कहा जा सकता, बल्कि मेन्दर साहब तो अपनी तथ्यपरता के लिए मशहूर हैं।

यहां हम यह भी जोड़ दें कि पश्चिमी बर्लिन में तोड़-फोड़ के वे अस्सी अड्डे जिनके हाथों से १३ अगस्त की उस सुबह को तोते ही उड़ गये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोगों को भागने के लिए उकसाने में बड़े सक्रिय रहे हैं। उनकी सारी कोशिशें डाक्टरों, वैज्ञानिक, टेकनीशियनों और कुशल मज़दूरों पर होती रहीं। इन लोगों को पश्चिम की ओर भगा कर जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक विकास में बाधा डालना और जनता में सरकार के प्रति अविश्वास और असंतोष फैलाना था। वे इन कोशिशों में हर तरह के तरीके अपनाते—लोगों को ऊंची-ऊंची तनखाओं के वादे से लेकर मज़े की जिन्दगी बिताने की लालच, डर और यहां तक कि बल पूर्वक भगा लेजाने तक के हरबे। ये अड्डे सूचना दफ़्तरों, सलाहकार समितियों, मुक्तिकामी संघों, मुफ़्त वकील संघों, अमरीकी रेडियो और जाने क्या-क्या भोले नामों के पर्दे में चलते हैं। ये अड्डे पिछले महीनों में शरणार्थियों की संख्या 'बढ़ाने' की पूरी योजना ही चालू कर दी थी। इससे भी यही सिद्ध होता है कि पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वालों की कहानी में कितना जाल बट्टा भरा हुआ है।

कुछ लोग ऐसे हैं जो पूर्वी बर्लिन या जर्मन जनवादी गणतं में रहते हैं और काम पश्चिमी बर्लिन में करते हैं। पिछले दिनों पश्चिमी अखबारों ने इन लोगों पर भी हमदर्दी दिखायी। ये लोग ऐसे थे जिन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता के लिये आज तक एक भी पुर्जा नहीं बनाया लेकिन उस जनता की बनाई तमाम सुविधाओं का मज़े में उपयोग करते आ रहे थे। सस्ते दामों पर टेलिविजन, सस्ता मकान किराया और और सस्ती बिजली। फिर वहां हज़ारों ऐसे इमारती मज़दूर हैं जिन्होंने पूर्वी जर्मनी के निर्माण में एक ईंट भी नहीं रखी है, (अगर मकाम बनाये भी तो पश्चिमी बर्लिन में) लेकिन स्वयं पूर्वी बर्लिन के खूबसूरत मकानों में रहते रहे हैं। १८ अगस्त के 'न्यू स्टेट्समैन' का कहना है.....पूरब में मकान किरायों पर नियंत्रण है और औसत ५० मार्क पड़ता है जबकि पश्चिम में वैसे हीं मकानों का किराया २०० से लेकर ३०० मार्क प्रति माह देना पड़ता है।"

पश्चिम बर्लिन सीमा पर उठाये गये नियंत्रण संबंधी क़दमों के बारे में बर्लिन के इमारती मज़दूर बात-चीत कर रहे हैं

पश्चिमी बर्लिन का प्रशासन ऐसे बंधुओं के प्रति बड़ी उदारता भी दिखाता रहा है। उसने इनके लिए सिक्के बदलने के अड्डे खुलवा दिये थे जहां पश्चिम के एक मार्क के बदले पूरब के चार या पांच मार्क दिये जांय। स्मरणीय है कि सिक्कों का यह रेट किसी आर्थिक उसूल पर नहीं। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी में यही सिक्के बराबर मूल्य के माने जाते हैं।

१९५४ से अब तक सात लाख शरणार्थी पश्चिमी जर्मनी से पूर्वी जर्मनी आ चुके हैं। चित्र में वह तरुण हैं जो उन कप्तानों की फ़ौजों में भर्ती नहीं होंगे जिन्होंने दूसरी लड़ाई में उनके बाप-दादों को युद्ध की आग में झोंका था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारसा सन्धि राष्ट्रों की घोषणा

कई वर्षों से वारसा सन्धि से संबंधित राष्ट्रों की कोशिश रही है कि जर्मनी के साथ शांति सन्धि हो जाय। लेकिन पश्चिमी शक्तियों ने अब तक इस समस्या को वार्ता द्वारा हल करने की दिशा में कोई रुझान नहीं दिखाया। अलबत्ता, कुछ नाटो देशों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र पर आक्रमण करने की योजना ज़रूर प्रकाशित की है।

शांति सन्धि के अभाव में आक्रामक शक्तियां पश्चिमी जर्मनी को सैनिकवाद का अखाड़ा बनाकर उसे अस्त्रों से लैस करके वहां की सेना को तेज़ी से मज़बूत करती जा रही हैं। पश्चिमी जर्मनी के प्रतिहिंसकों की बराबर एक ही मांग रही है और वह यह कि एटमबम और दूसरे सर्वनाशी अस्त्र उनके हवाले कर दिये जायं। पश्चिमी जर्मनी को हथियारबन्द करने की इस प्रक्रिया में पश्चिमी सरकारों का पूरा-पूरा हाथ है और इसीलिए वे उस महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समझौते को तोड़ने की मुजरिम हैं जिसमें जर्मन सैनिकवाद के खात्मे और उसके पुनर्जन्म को असंभव बना देने का आधार प्रस्तुत किया गया था।

पश्चिम बर्लिन की स्थिति को सामान्य बनाने की आवश्यकता को पश्चिमी शक्तियां न सिर्फ़ नज़रअन्दाज़ ही करती रही हैं, बल्कि उसे वे जर्मन जनवादी गणतंत्र और अन्य समाजवादी देशों के विरुद्ध तोड़-फोड़ के एक भारी अड्डे के रूप में विकसित करती रही हैं। सारी दुनिया में कोई ऐसी जगह नहीं जहां पश्चिम बर्लिन से बढ़कर विदेशी जासूसों और तोड़ फोड़ के अड्डे हों और जहां उन्हें इतनी छूट हो। इन अड्डों से तरह-तरह के दलाल जर्मन जनवादी गणतंत्र भेजे जाते हैं और वहां वे तोड़ फोड़ की कोशिश करते हैं, खुफ़ियों की भर्ती करने और विद्रोह संगठित करने की कोशिश करते हैं।

पश्चिमी जर्मनी के शासकदल और नाटो देशों के जासूसी अड्डे पश्चिम बर्लिन की सीमा पर निर्मित यातायात व्यवस्था का दुरुपयोग जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक ढांचे को उखाड़ने में करते हैं। पश्चिमी जर्मनी के सरकारी विभागों और हथियारबन्दीवाले संगठनों की ओर से धोखा-धड़ी, भ्रष्टाचार, चकमे की कार्रवाइयां बराबर चलती रहती हैं जिससे जर्मन जनवादी गणतंत्र से कुछ लोग पश्चिमी जर्मनी की ओर खिंचते भी रहते हैं। उन्हें पश्चिमी जर्मनी की सशस्त्र सेनाओं में भर्ती कर दिया जाता है, उन्हें खुफ़ियागिरी में लगा कर फिर जर्मन जनवादी गणतंत्र भेज दिया जाता है ताकि वे समाजवादी शिविर के अन्य देशों के विरुद्ध साजिशें करते रहें। इन कार्रवाइयों के लिए खास खास मदें बनायी जाती हैं। पश्चिमी जर्मनी के चांसलर एडन्योर ने हाल ही में नाटो से अपील की है कि इस विशेष मद को और बढ़ाया जाय। खास बात एक यह देखने में आयी है कि जिस दिन से सोवियत संघ, जर्मन जनवादी गणतंत्र और अन्य समाजवादी देशों ने जर्मनी के साथ अविलम्ब शांति-समझौता करने का प्रस्ताव किया है, तभी से पश्चिम बर्लिन में तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां बढ़ गयी हैं। ऐसी कार्रवाइयों से न सिर्फ़ जर्मन जनवादी गणतंत्र को ही क्षति पहुंचती है, बल्कि अन्य समाजवादी देशों के हितों पर भी आघात होता है। पश्चिमी जर्मनी की प्रतिक्रियावादी शक्तियों और उनके नाटो मित्रों के आक्रामक इरादों को ध्यान में रखते हुए वारसा सन्धि राष्ट्र ऐसे क़दम उठाने के लिए विवश हैं जिनसे उनकी और विशेषतया जर्मन जनवादी गणतंत्र की सुरक्षा निश्चित हो सके।

वारसा सन्धि राष्ट्रों की सरकारें जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर और सरकार और समस्त मेहनतकश जनता से ऐसे क़दम उठाने की अपील करना चाहती हैं जिनसे समाजवादी देशों के विरुद्ध तोड़ फोड़ की कार्रवाइयां रोकी जा सकें, पश्चिम बर्लिन के चारों ओर तथा पूर्व और पश्चिम बर्लिन की सीमा रेखा पर भी भरोसे की चौकियां और असरदार नियंत्रण लगाये जायं। इन क़दमों से पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के यातायात संबंधी नियमों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

वारसा सन्धि राष्ट्रों की सरकारों को इस बात का पूरा-पूरा ध्यान है कि इस तरह के सुरक्षात्मक क़दम से जनता को कुछ असुविधा ज़रूर होगी। लेकिन वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए इन क़दमों की सारी जिम्मेदारी पश्चिमी शक्तियों और विशेषतया पश्चिमी जर्मन सरकार पर होगी। पिछले दिनों पश्चिम बर्लिन की सीमाएं इस आशा में खुली रहीं कि पश्चिमी शक्तियां जर्मन जनवादी गणतंत्र की सद्भावना का दुरुपयोग नहीं करेंगी। लेकिन जर्मनी और बर्लिन की जनता के हितों को ठुकरा कर पश्चिम बर्लिन की खुली सीमा का तोड़ फोड़ के कामों में घृणित पैमाने पर दुरुपयोग होता रहा। अतः पश्चिम बर्लिन सीमा की मौजूदा अस्वाभाविक स्थिति को शक्तिशाली चौकी और नियंत्रण के सहारे खत्म करना ज़रूरी हो गया है।

साथ ही वारसा सन्धि राष्ट्रों की सरकारों का विचार है कि जैसे ही जर्मनी के साथ शांति सन्धि हो जाय और इस समस्या का हल निकल आये, इन चौकियों और नियंत्रण-व्यवस्थाओं को तुरन्त हटा लिया जाय।

[संक्षिप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद के निर्णय

शांति बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि पश्चिम जर्मनी में प्रतिहिंसकों और सैनिकवादियों की हरकतों पर रोक लगे, और जर्मन शांति सन्धि पर हस्ताक्षर करके शांति अर्जित करने तथा एक शांतिकामी, साम्राज्य-विरोधी और तटस्थ जर्मनी के पुनर्जन्म का मार्ग प्रशस्त हो। बोन हुकूमत का यह विचार कि द्वितीय महायुद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है, सैनिकवादी कार्रवाईयों को भड़काने और गृह-युद्ध के बहाने ढूंढने के समान है। साम्यवाद-विरोधी चेहरे के भीतर यह साम्राज्यवादी नीति है और यह पिछले दिनों के फ़सिस्त जर्मनी के हमलावार इरादों की ही दूसरी तस्वीर है।

पश्चिमी जर्मनी के प्रतिहिंसक और सैनिकवादी जर्मन समस्या पर सोवियत संघ और वारसा सन्धि राष्ट्रों की शांति-पूर्ण नीति का दुरुपयोग इसलिए कर रहे हैं कि वे किसी तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा अन्य समाजवादी देशों को क्षति पहुंचाने में सफल हो सकें और इसके लिए वे लोगों को देश छोड़ने तथा तोड़-फोड़ कराने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इन्हीं कारणों से तथा योरप की शांति, जर्मन जनवादी गणतंत्र और पूरे समाजवादी शिविर की सुरक्षा के लिए निर्मित वारसा सन्धि के राष्ट्रों की राजनीतिक सलाहकार समिति के निर्णयों के आधार पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि-परिषद निम्नलिखित कदम उठाती है :

नियंत्रण के ऐसे तरीके जो हर प्रभुसत्तासम्पन्न राज्य लागू करता है, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सीमाओं पर लागू किये जायंगे। इनमें वृहत्तर बर्लिन के पश्चिमी क्षेत्र की भी सीमाएं शामिल होंगी। इस क़दम का उद्देश्य है पश्चिम बर्लिन के प्रतिहिंसकों तथा सैनिकवादियों की शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों को समाप्त करना। तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां रोकने के लिए पश्चिम बर्लिन की सीमा पर भरोसे की चौकियां लगायी जा रही हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक इन सीमाओं को तभी पार कर सकते हैं जब उनके पास विशेष अनुमति-पत्र हों। सीमा पार करने के लिए ऐसे अनुमति-पत्र की आवश्यकता तब तक रहेगी, जब तक पश्चिम बर्लिन एक असैनिक, तटस्थ और स्वतंत्र नगर के रूप में परिवर्तित न हो जाय। पश्चिम बर्लिन के शांतिपूर्ण नागरिकों को जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी (जनवादी बर्लिन) में आने की अनुमति रहेगी, सिर्फ़ उन्हें पश्चिम बर्लिन का परिचय-पत्र दिखाना पड़ेगा। जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में विदेशियों के प्रवेश पर इन आदेशों का कोई असर नहीं पड़ेगा।

पश्चिम बर्लिन के नागरिकों को विदेश जाते हुए जर्मन जनवादी गणतंत्र की सीमा पार करते समय जिन नियमों का पालन करना पड़ता था उनमें कोई तब्दीली नहीं की गयी है।

इस आदेश से जर्मन जनवादी गणतंत्र से होकर पश्चिम बर्लिन और पश्चिमी जर्मनी के बीच माल के यातायात में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

यह क़दम शांति बनाये रखने, जर्मन जनवादी गणतंत्र और विशेषतः उसकी राजधानी की रक्षा तथा अन्य समाजवादी राज्यों की सुरक्षा की गारंटी के लिए उठाया गया है और यह तब तक कायम रहेगा जब तक जर्मन शांति सन्धि पर हस्ताक्षर न हो जाय।

बर्लिन, १२ अगस्त १९६१

वाल्तर उल्ब्रिख़्त का टेलिविज़न भाषण

१३ अगस्त, १९६१ को जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने बर्लिन की तनावपूर्ण स्थिति में सुधार लाने के लिए एक फ़ैसला किया जिसके अनुसार अनेक सुरक्षात्मक क़दम उठाये गये। जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष ने इस फ़ैसले को जनता के सामने स्पष्ट करने के लिए १८ अगस्त १९६१ को रेडियो और टेलिविज़न पर भाषण दिया :

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिकों तथा पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के मित्रो !

हमारे पीछे घटनाओं का एक लम्बा सिलसिला है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के मज़दूर और उनके साथ तमाम ईमानदार मेहनतकश जनता के सर से आज एक बोझ उतर गया, अब वह आराम की सांस ले सकते हैं। पश्चिम बर्लिन और बोन में आदमियों की तिजारत चलती रही है। उससे आप लोग ऊब चुके थे। फ़ौजियों की भीड़ें जिस तरह आपको बेवकूफ़ बनाती और लूटती रही हैं उसे आप भुगत चुके हैं। उनके विरुद्ध आपका क्रोध उचित है। लेकिन बोन के फ़ौजियों ने हमारे धीरज को हमारी कमज़ोरी समझकर ग़लती की। और आज उस ग़लती से उनका दिमाग़ चकरा उठा है।

आप जानते हैं कि बरसों से हम कहते आ रहे हैं कि तमाम सवालों को शांतिपूर्वक बातचीत और समझौतों से हल कर लिया जायं। हमने इस तरह के सैकड़ों सुझाव दिये और बोन हुकूमत सबको ठुकराती रही। बोन हुकूमत की क्या योजनायें थीं ? वह ऐसी हालत पैदा कर देना चाहती थी कि उसे पश्चिमी जर्मनी के चुनावों के बाद जर्मन जनवादी गणतंत्र पर खुलकर हमला करने का बहाना मिल जाय, गृह-युद्ध भड़क उठे।

ज. ज. ग. के बहुतेरे नागरिकों ने हमसे पूछा कि हमने इतनी देर क्यों लगायी। ऐसे ज़रूरी क़दम पहले ही क्यों न उठाये गये। मैं बहुत साफ़ ढंग से कहना चाहता हूं कि एक समय था जब हम सद्भावना की हर संभावना का इस्तेमाल कर लेना चाहते थे, इसके लिए हम कोई तरीक़ा उठा नहीं रखना चाहते थे। हमने बोन हुकूमत की जंगी तैयारियों का भी खूब-खूब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्दाफ़ाश किया। मैंने बोन चांसलर एडन्योर को लिखा और चेतावनी भी दी। हमने सीधे पश्चिमी जर्मनी के मजदूरों से अपील की और वहां क्या हो रहा है, उन्हें बताया। हमने पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों से अपील की ताकि वे अपने देश में चल रहे हालात से बेखबर न रहें।

मैंने जनवरी, १९६० में एक दस्तावेज़ का पर्दाफ़ाश किया था—घिनौना और बदनाम दस्तावेज़-एम सी ७०। दुनिया ने उसमें पढ़ा कि पश्चिमी जर्मनी किस तरह एटमबमों से लैस होने की तैयारी कर रहा है, क्या-क्या इरादे कर चुका है। बोन हुकूमत ने कहा कि उसके पास ऐसी कोई योजना नहीं। लेकिन उसी बीच उसके युद्धमंत्री स्त्राउस ने सरकारी तौर पर एलान किया कि एम सी ७० की बातें जल्द ही अमली शकल में आ जायंगी। और अमली शकल यही कि हिटलरी कप्तानों के कमान में बोन की सेनाओं को एटमबम सौंपे जांय। इस योजना का गुप्त नम्बर एम सी ९६ है। एडन्योर और स्त्राउस अब तो खुलेआम एटमबमों की बातें कर रहे हैं। पिछले दिनों वे भगवान की क़समें खा-खा कर कहते थे कि उनका ऐसा कोई इरादा नहीं।

लेकिन मैं यह भी बता दूं कि एडन्योर और स्त्राउस द्वारा जर्मन जनवादी गणतंत्र पर क़ब्ज़ा करने की योजनाएं कोई नयी नहीं। आज ऐसे लोगों की कमी नहीं जिन्हें अच्छी तरह याद है कि ठीक इसी तरह हिटलर ने भी चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड पर आक्रमण की तैयारियां की थीं। उन दिनों भी रेडियो और नाज़ी अखबारों में दिन-रात बेचारे शरणार्थियों की खबरें छपती थीं—कैसे कोई बुढ़िया गोद में बच्चा लिए कांटेदार तार कूदकर राइख-अपने घर-पहुंच गयी, कैसे हिटलर उस जनता को 'आज़ादी' दिलाने के लिए बेताब है। फिर पेशेवर कुप्रचारकों का गैंग होता था जो आत्मनिर्णय के अधिकार के राग अलापा करते थे—जर्मन साम्राज्यवाद के शब्दकोष में आत्मनिर्णय का अर्थ यह था कि नाज़ी किस देश को हज़म करना चाहते हैं। आज ठीक उसी ढंग से, और सच तो यह है कि ठीक उन्हीं सुर्खियों में, पश्चिमी जर्मनी का सैनिकवादी प्रेस सन् ६१ में जर्मन जनवादी गणतंत्र को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है।

फलतः जर्मनी में और दूसरे देशों में भी अधिकाधिक लोग इस नतीजे पर पहुंच गये कि आमतौर से शांति की बातें करते रहने से काम नहीं चलेगा। अब ज़रूरी यह हो गया है कि पश्चिम बर्लिन में जो आग सुलगायी जा रही है उसे समय रहते ही बुझा दी जाय। और यह काम सबसे पहले हमारा है। हमने इसे पूरा भी किया। और अब पश्चिम बर्लिन और बोन के कट्टर से कट्टर राजनीतिक नेता भी यह महसूस करने लगे हैं कि पश्चिम बर्लिन की साज़िशें रोक दी गयीं और अब उन्हें फिर से चालू करने की कोई गुंजायश नहीं। और अब अनेक पूंजीवादी देशों में भी लोग यह महसूस करने लगे हैं कि पश्चिम बर्लिन सारी दुनिया की शांति के लिए कितने बड़े खतरे की जगह थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि खुद नाटो के अनेक देश हमारे इस क़दम से खुश हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में अभी कुछ दिनों तक ऐसे लोग दिखायी पड़ सकते हैं जिन पर पश्चिम बर्लिन के कुत्सित वातावरण का प्रभाव बना रहे। हमें यह कहने में कोई झिझक नहीं उन लोगों को भ्रष्ट कर दिया गया है। मसलन बहुतेरे नौजवान इमानदारी से काम करना भूल गये हैं। बहुतों ने तो पिछले कई सालों में एक दिन का भी काम नहीं किया है। हमें ऐसे लोगों की मदद करनी है ताकि वे अपनी खोई हुई ईमानदारी फिर से वापस पा सकें, काम-काज करने की आदत डाल सकें। इसमें उन्हीं का हित है।

बहुत से नागरिकों ने प्रश्न किया है कि हमारे सुरक्षात्मक क़दमों के साथ क्या टैंकों की भी कोई ज़रूरत थी? किसी में कोइ ग़लतफहमी न हो, इसलिए मैं ज़ोर देकर कहना चाहता हूं कि टैंकों की ज़रूरत थी। इससे जर्मन जनवादी गणतंत्र की सुरक्षा और शांति का काम तेज़ी से और आसानी से पूरा हो गया। खतरे की घंटी बजाने वालों को इस तरह बहुत आसानी से रोक दिया गया। यह क़दम उठाने के सिलसिले में जो कुछ हुआ वह पश्चिम बर्लिन के रॉक-एन्ड-रॉल वाले नाच से बहुत कम है।

और अब पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के राजनीतिक नेता मानव भावनाओं को तोड़ने मरोड़ने में जुट गये हैं: मैं तो यही समझता हूं कि मानवतावादियों का पहला फ़र्ज शांति हासिल करना, लड़ाई रोकना और इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर संभव उपाय करना है। लड़ाई की तैयारी करते समय हिटलर और गोबेल्स ने भी मानव-भावनाओं को तोड़ मरोड़कर पेश किया था और ऐसा करते हुए उन्होंने किसी भी तरह की नैतिकता को पास तक नहीं फटकने दिया था। उन्होंने चेकोस्लोवाकिया के साथ बालत्कार किया, उन्होंने आस्ट्रिया और पोलैंड पर हमले किये, और इन सारे कामों में उनका मानवतावाद ही झलकता था! मानवता के प्यार में ही लाखों आदमियों को जानवर मानकर गैस चैम्बरों में झोंक दिया गया था। जर्मन सैनिकवादियों ने खालिस मानव प्रेम के वशीभूत हो कर एक के बाद दूसरे देश को हड़पना शुरु कर दिया था और आज भी ये मानवता के दोस्त वही बातें दुहरा रहे हैं। वे जर्मन जनवादी गणतंत्र को सिर्फ़ इसलिए हड़पना चाहते हैं ताकि वहां के नागरिकों को शोषण से बचा सकें! फिर वे क्यों न हम पर हमला करें—शुद्ध मानव भावना से प्रेरित हमला! श्री एडन्योर और उनके सैनिकवादी चेले कांटेदार तारों के बारे में बहुत शोर करते सुने जाते हैं लेकिन वे यह नहीं चाहते हैं कि जनता को पुराने-बहुत पुराने भी नहीं—तथ्य याद रहें। हालांकि लोगों को अच्छी तरह याद है कि बर्लिन को, जर्मनी को टुकड़े-टुकड़े करनेवाले वही और उनके दोस्त अमरीकी साम्राजी हैं। उन्होंने यही नहीं, पश्चिमी जर्मनी को जर्मन राष्ट्र के अंग से काटकर अलग कर दिया और अमरीका का गुलाम बना दिया। जर्मनी के दिल पर कांटेदार तार तभी बिछ चुके थे और बिछाने वाले वही लोग थे।

हमारे सुरक्षात्मक क़दमों से जिन पश्चिम बर्लिनवासियों को बुरा लगा है, मेरी दरख्वास्त है कि वे अपने प्रतिहिंसकों और सैनिक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादियों की लगाम जरा कसे रहें। अगर वे इस काम में सफल हो जायं तो ज. ज. ग. की सीमाओं पर कांटेदार तारों की कोई जरूरत न रहेगी।

बहुत से लोगों का यह कहना है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने जो सुरक्षात्मक क़दम उठाये हैं उससे हम पश्चिमी जर्मनी के अपने भाई-बहनों से अलग हो गये। बात कुछ हद तक ठीक भी है। स्वयं हम भी पश्चिमी जर्मनी के साथ निकट सम्पर्क चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे पश्चिमी जर्मनी के भाइयों और बहनों ने अपने घर पर सैनिकों को और नाज़ियों को अड्डा लगाने की अनुमति दे रखी है: हुकूमत में घुसकर बैठ जाने की अनुमति दे रखी है; उन्हें ऐसी स्थिति तक पहुंचने की अनुमति दे रखी है कि वे तीसरी लड़ाई की तैयारी करने लगे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो फिर युद्धमंत्री स्त्राउस नाटो को एटम बम खरीदने के लिए पैसे क्योंकर देते हैं? इसके लिए उन्हें करोड़ों मार्क मिलता कहां से है? आखिर हमारे पश्चिमी जर्मनी के भाई-बहन अपने पैसे अपने देश को बर्बाद करने वालों को क्यों सौंपते हैं? हम यहां यह भी साफ़ कर दें, कि पश्चिमी जर्मनी के लोग आंशिक रूप से ही हमारे भाई-बहन हैं। क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, जर्मन और जर्मन में फ़र्क होता है। पश्चमी जर्मनी के मज़दूर हमारे वर्ग के हैं, हमारे भाई हैं। वहां के किसान जो शांतिपूर्वक खेती करना चाहते हैं, हमारे भाई और मित्र हैं। यही बात वहां के बुद्धिजीवियों के लिए भी सच है जो आणविक शस्त्रीकरण का विरोध करते हैं। हम उन्हें अच्छे लोग समझते हैं और उनका आदर करते हैं और हमें पूरा भरोसा है कि हमारी उनकी खूब निभेगी, हम बड़े मज़े में साथ-साथ रह सकते हैं।

लेकिन जैसा कि हम देख चुके हैं, वहां कुछ दूसरे जर्मन भी हैं जो राष्ट्र के शत्रु हैं, जो मानव जाति के शत्रु हैं। वे हैं सैनिकवादी, जरायमपेशा नाज़ी जिनमें पश्चाताप का कोई चिन्ह नहीं, और जिन्होंने अपने मानव-विरोधी काम आज भी नहीं छोड़े है-उनमें बड़े-बड़े इजारेदार पूंजीपतियों का भी नाम लिया जा सकता है जिन्होंने जर्मन जनता के दुर्भाग्य से अकूत मुनाफ़े कमाये और अब जर्मनी के विभाजन से जिनका मुनाफ़ा कुछ कम हो चला है। ये लोग और इनके ज़रखरीद गुलाम जनता के शत्रु हैं। और हमें इसका बड़ा दुख है ऐसे कि लोग पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन में बहुतों को पथभ्रष्ट करने में सफल हो गये।

कहने की ज़रूरत नहीं कि पश्चिमी जर्मनी में ऐसे लोगों को भाई-बहन कहना पागलपन के अलावा और कुछ नहीं। ऐसे लोग भाई-बहन का चोग़ा पहनकर हमारे बीच खुशी-खुशी घुस आयेंगे और हमें धोखा देंगे। एकता और आज़ादी की लम्बी-चौड़ी बातें बनाना फ़िज़ूल है। सवाल तो पहला यह है कि एकता की परिभाषा साफ़ कर दी जाय। किसकी आज़ादी की बात की जाती है। हमें सैनिकवादियों के शासन के साथ एकता को नहीं करनी है, हमें १९१४ फिर से नहीं लाना है। हम नाटो की हुकूमत के साथ एकता नहीं करना चाहते, हम हमला करने की आज़ादी, हमलावारों और जंगबाज़ों को आज़ादी नहीं देंगे। आज़ादी तो हम शांतिप्रेमियों के लिए, सुशील जर्मन जनता के लिए चाहते हैं। हम तो तमाम जर्मन जनता के लिऐ ऐसी आज़ादी चाहते हैं जो उन्हें हमलावारों और सैनिकवादियों के चंगुल से छुड़ा सके। हमें समाजवाद बनाने की, तमाम ईमानदार लोगों के लिए शांति और खुशहाली की ज़िन्दगी बसर करने की आज़ादी चाहिए।

तीनों पश्चिमी राष्ट्र हिटलर-विरोधी संयुक्त मोर्चे के समझौतों का ज़िक्र करते हैं। लेकिन याल्टा और पोत्सदम समझौतों की आत्मा को तो सबसे पहले उन्होंने ही कुचल डाला। उन समझौतों की मूल आत्मा थी जर्मनी से सैनिकवाद और नाज़ीवाद का पूरी तरह से सफ़ाया इसी तरह बर्लिन के बारे में भी उन समझौतों का ज़िक्र होता हैं। लेकिन वह तो अब छाया नृत्य बनकर रह गया है क्योंकि पश्चिमी ताक़तों ने यहां भी आगे बढ़कर समझौते को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। इस लिए अब उन्हें १२ सितम्बर, १९४४ के प्रोटोकोल की याद भूल जानी चाहिए जिसमें जर्मनी के साथ-साथ बर्लिन के भी प्रशासन के लिए समझौता हुआ था, और जिस में बर्लिन को अलग से अधिकृत क्षेत्र नहीं माना गया था। याल्टा और पोत्सदम समझौतों पर लाखों इंसानों के खून की मुहर लगी थी लेकिन पश्चिमी शक्तियों ने उस पवित्र मुहर की कोई परवाह न की और पश्चिमी जर्मनी को नाटो में शामिल करके उसे हथियारों से लैस कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों का नियम है कि यदि किसी समझौते का आधारभूत सिद्धान्त ठुकरा दिया जाय तो उसकी छोटी मोटी शर्तें कहीं नहीं टिक पातीं, इस बात को स्वयं पश्चिमी शक्तियां अमल में मान चुकी हैं। वे पश्चिमी बर्लिन के लिये तीन शक्तियों का प्रशासन बनाकर चार शक्तियों वाले समझौते को पहले ही ठुकरा चुकी हैं।

पश्चिमी शक्तियों को न्यूयार्क और पैरिस के समझौतों (१९४९) की चर्चा बहुत भली लगती है। लेकिन इन समझौतों में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार कोई नये अधिकार नहीं पैदा होते। अव्वल तो यह है कि उनमें पहले वाले समझौते को ही पूरा करने का निश्चय था, और दूसरे उन्हें भी ठुकराने का अपराध स्वयं पश्चिमी शक्तियों पर है। पेरिस समझौते में कहा गया था कि चारों शक्तियां जर्मनी की उस आर्थिक और राज्य-नीतिक इकाई को फिर से रूप देने की कोशिश करें जो जर्मनी के कई क्षेत्रों में बट जाने से बिखर गई है। इस कर्त्तव्य-पालन को भी पश्चिमी शक्तियों ने उस समय विघ्न में डाल दिया जब उसी साल ७ सितम्बर को पश्चिमी जर्मनी की अलग से स्थापना कर डाली। फिर उन्हें पैरिस समझौते की दुहाई का क्या अधिकार है?

आज किसी से यह बात छुपी नहीं है कि पिछले हफ़्तों की घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि जर्मन जनता की शांति बहुत हद तक जर्मन जनवादी गणतंत्र की दृढ़ता और आर्थिक शक्ति पर आधारित है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

योग्यता बढ़ाने का अधिकार

काम करने वाले को आगे प्रशिक्षण प्राप्त करने का भी अधिकार होना चाहिए। जर्मन जनवादी गणतंत्र में जो नया श्रम क़ानून पास हुआ है उसमें मज़दूर वर्ग के इस अधिकार की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। स्मरणीय है कि इस आम क़ानून पर उसके पास होने से पूर्व ७० लाख नागरिकों, मज़दूरों और बुद्धिजीवियों ने विचार-विमर्श किया।

"हाई स्कूल तक के प्रशिक्षण और उच्चतर तकनीकी वैज्ञानिक योग्यता के द्वार समस्त मज़दूर वर्ग के लिए खुले हुए हैं। उन्हें अपनी प्रतिभा और सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए हर सुयोग उपलब्ध होंगे। प्रशिक्षण के एकरूप समाजवादी वयवस्था ने समस्त मेहनतकश जनता को कालेजों और विश्वविद्यालयों से ग्रेज्यूएट बनने का अधिकार दे रखा है।"

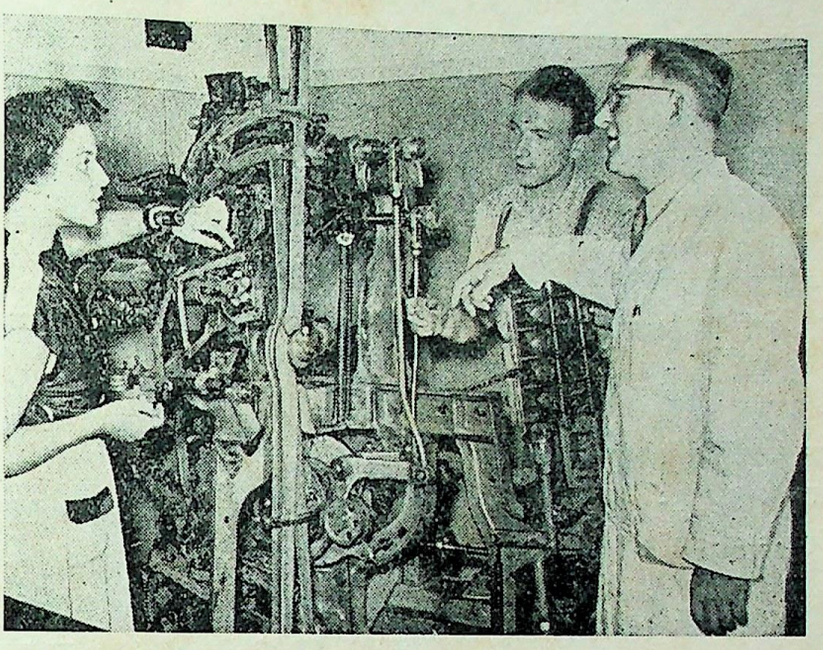

भावी धंधों के बारे में अभी से तैयारी, छात्र-छात्राओं को हर तरह की मशीनों की जानकारी करायी जा रही है

मज़दूरों की योग्यता बढ़े— इसके साधन केवल कालेज और विश्वविद्यालय तक ही सीमित नहीं। उनकी पढ़ाई-लिखाई की समुचित व्यवस्था कारखानों या कृषि-संस्थाओं में भी सुलभ है। प्रशिक्षण के लाभ से पुराने मज़दूर को भी वंचित नहीं होना पड़ता।

कारखाने के स्कूल में फ़िज़िक्स पढ़ाया जा रहा है

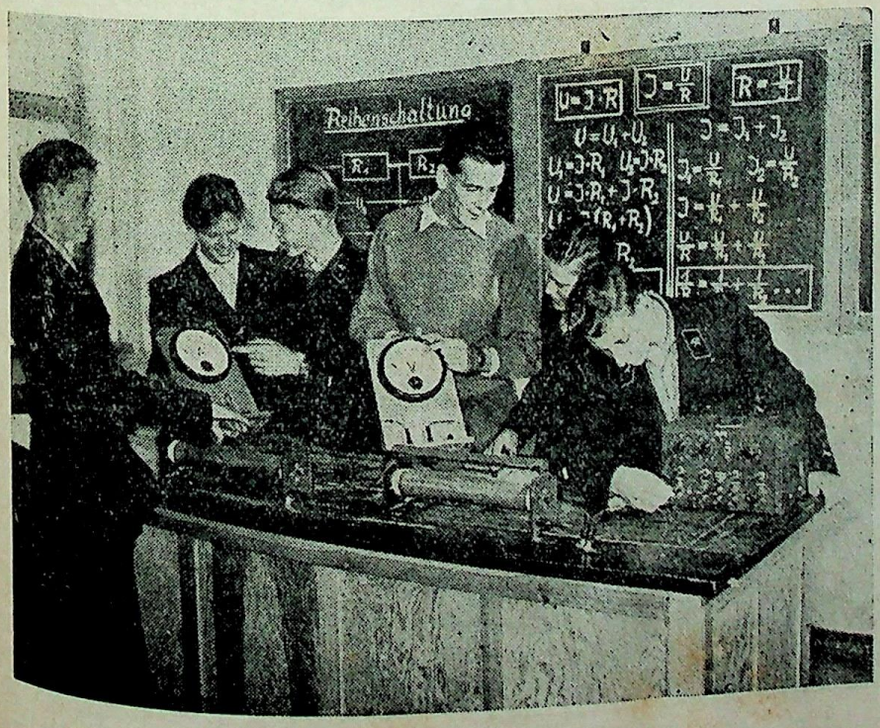

कारखानों में नियमित कक्षाएं चलती हैं जिनका संचालन वहीं की कमेटियां करती हैं। ऐसी कमेटियों की कुल संख्या एक हज़ार है। इन कक्षाओं में लगभग १० लाख मज़दूर शामिल होते हैं। उन्हें पढ़ाने के लिए सुयोग्य अध्यापकों का प्रबन्ध रहता है। ये कक्षाएं शाम को चलती हैं। इनमें जर्मन साहित्य, गणित, इतिहास आदि पढ़ाया जाता है। विज्ञान और कला-संबंधी समस्याओं से भी मज़दूरों को परिचित कराने का प्रयास किया जाता है।

नये बहुविध स्कूलों में शिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद सभी मज़दूरों (स्त्री-पुरुष) को ऊंचे प्रशिक्षण का अवसर मिलने लगता है। इसके बाद वे सीधे विश्वविद्यालय में भर्ती हो सकते हैं।

स्कूलों से उत्तीर्ण होकर हज़ारों लड़के-लड़कियां हर साल उद्योग या कृषि के क्षेत्र में प्रशिक्षण पाते हैं। इस प्रशिक्षण की अवधि दो से तीन साल तक

(शेष पृष्ठ १९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आटा मिल

अनाज कूटने या पीसने के विशेषत: पूरे-पूरे कारखाने या एक-दो मशीनें भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार संगठन द्वारा सप्लाई किये जाते हैं। इन चक्कियों की क्षमता इस बात से निश्चित की जाती है कि २४ घंटों में कितना गेहूं पीसा गया। हमारे यहां निम्नलिखित पैमाने और आकार की चक्कियां बनती हैं :

२४ घंटों में, १५ टन, ३० टन, ५० टन, ७५ टन, १०० टन, १५० टन और ३०० टन।

अब तक निम्नलिखित देशों को इतनी सप्लाई हो चुकी हैं :

मिस्र —२ मिलें जिनकी क्षमता ५० टन की है, १ मिल जिसकी क्षमता १०० टन की है;

तुर्की —२ मिलें जिनकी क्षमता ५० टन की है,

पोलैंड—१ मिल जिसकी क्षमता ३०० टन की है,

भारत की निम्नलिखित कम्पनियों में हमारी चक्कियां हैं :

१. कृष्णा फ्लावर मिल, बंगलौर, क्षमता ५० टन,

२. एलगिन फ्लावर मिल, बंगलौर, क्षमता ५० टन;

३. सेन्चुरी फ्लावर मिल, मद्रास, क्षमता १०० टन,

४. यूनाइटेड रोलर फ्लावर मिल, क्षमता ५० टन,

५. नारायण फ्लावर मिल, मद्रास, क्षमता ५० टन,

६. भारत फ्लावर मिल, सिराना, क्षमता ५० टन।

इनके अलावा अलग-अलग मशीनें भी अनेक स्थानों पर लगी हुई हैं।

कुछ और नये समझौते हुए हैं जिनके आधार पर १९६२ तक १०० टन की क्षमता वाला एक मिल और ५० टन की क्षमता वाली दो मिलों की सप्लाई करना है।

गेहूं पीसने में दो प्रक्रियायें हैं—गेहूं की सफ़ाई, फिर उसकी पिसाई। दोनों काम उसी मशीन से होते हैं। फिर आटे की विभिन्न श्रेणियां भी इन चक्कियों से तैयार की जाती हैं, जैसे मैदा और साधारण आटा।

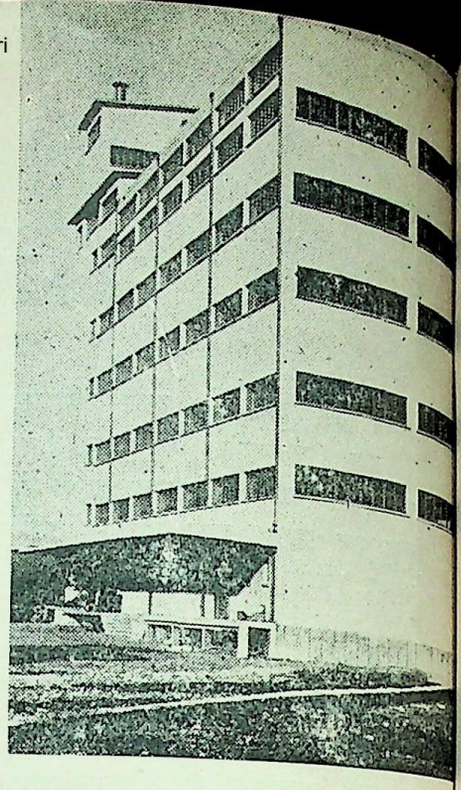

तुर्की में ज. ज. गणतंत्र द्वारा सप्लाई की गयी मिल इसी इमारत में लगायी गयी है

आटा-चक्की को अगर कई मंजिला इमारत में लगाया जाय तो बेहतर है क्योंकि ऐसी इमारत में अनाज की सफ़ाई से लेकर आटा या मैदा को बोरों में भरने तक का सारा काम साथ-साथ होता चलता है। इन चक्कियों का संचालन काफ़ी मेकनाइज़्ड है। अतः इनमें आदमी कम लगते हैं।

इन मशीनों के बारे में अन्य विवरण निम्नलिखित स्थानों से मिल सकता है :

जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार दूतावास, ब्रांच आफिस, बम्बई,

और हमारी एजेन्सियां :

१. गुडअर्थ एजेन्सीज प्रा. लि. सुदर्शनकोर्ट १६ अजमेरी गेट एक्सटेन्शन पो. बा. ४३ नयी दिल्ली

२. एस. के. राम एंड कं. पो. बा. ५९१ बंगलौर—२

३. बियानी एंड सन्स प्रा. लि. १३७, कैनिंग स्ट्रीट कलकता—१

डबल-रोल वाली चक्की

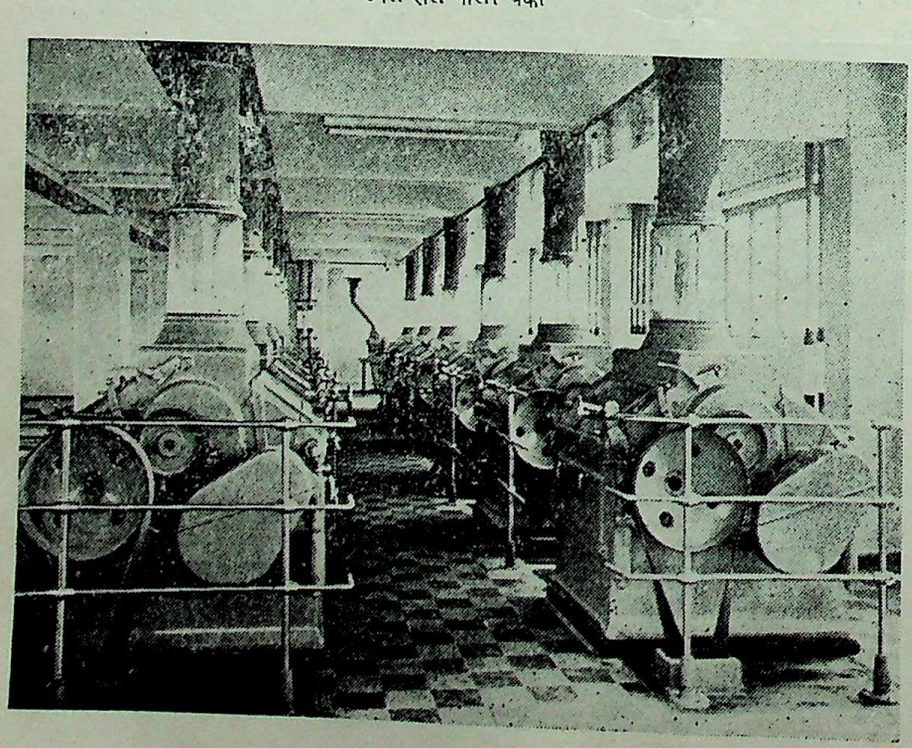

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज. ज. गणतंत्र और बर्मा में सहयोग :

सीमेंट कारख़ाना

मन्फ्रेड न्युमन

बहुत पहले इमारतों में पकाया हुआ चूना इस्तेमाल होता था। सन् १८४४ में पहली बार जानसन नामक अंग्रेज ने पोर्टलैंड सीमेन्ट बनाई और फिर उस सीमेन्ट ने तो दुनिया ही फ़तह कर ली। आज के आर्थिक जीवन में सीमेन्ट का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आज सीमेन्ट का उपयोग न सिर्फ़ इमारतों, सड़कों, कारख़ानों, बन्दरगाहों और नहरों आदि के निर्माण में उपयोगी है, बल्कि उद्योग की विभिन्न शाखाओं में वह कच्चे माल की तरह भी इस्तेमाल होता है। कोई देश औद्योगिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से कितना आगे बढ़ चुका है इसका अनुमान वहां सीमेन्ट की खपत से भी लगाया जा सकता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में सीमेन्ट के उत्पादन-वृद्धि का ब्योरा इस प्रकार रहा है :

	१९५०	१९५५	१९५८	१९५९
हज़ार टन में	१४१२	२९७१	३५५९	४२०५

सन् १९६५ की उत्पादन - क्षमता ८,०००,००० टन तक पहुंच जायगी। १९३७ में बर्मा का पहला सीमेन्ट कारख़ाना १८० टन उत्पादन-क्षमता के साथ चालू हुआ। लेकिन बर्मा की कुल आवश्यकता का आधा भाग इससे पूरा होगा। अतः राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बर्मा सरकार ने अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को प्राप्त करने का पहला लक्ष्य बनाया इस कार्यक्रम में सीमेंन्ट उद्योग भी शामिल था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में डी. आई. ए. नामक एजेन्सी का हर ओर बड़ा नाम है। अतः बर्मा सरकार ने उस एजेन्सी को ऐसी मशीनों का आर्डर दिया जिनकी सहायता से खड़े किये गये कारख़ाने में ६०० टन सीमेन्ट प्रतिदिन बन सके। इस एजेन्सी ने बी. ई. बी को मशीनें सप्लाई करने का काम सौंपा। पहली मार्च १९६० तक सर्वेक्षण आदि का काम पूरा हो गया और कल-पुर्ज़ों का जोड़-बांध शुरू हुआ। अब तक उनका अधिकांश तैयार भी हो चुका है। इस काम की सफलता में अगर एक ओर जर्मन जनवादी गणतंत्र के उन विशेषज्ञों का योग है जो अपना ज्ञान मुक्त हृदय से अपने बर्मी सहयोगियों का देते रहे हैं तो दूसरी ओर उन बर्मी मिस्त्रियों की भी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता जो अपने सहयोग और भाईचारे के लिए आदर्श माने जा सकते हैं। बर्मा के मिस्त्रियों में कुछ लोग बिजली वाली स्विचबोर्डों, नाप-तोल की मशीनों आदि को फिट करने के लिए नियुक्त किये गये हैं। उन्हें इन कामों की सविस्तार ट्रेनिंग दी जा चुकी है और अब वे स्वतः काम करने में सक्षम हो चुके हैं।

फिर जितने भी लोग कारख़ाने को खड़ा करने में लगे हुए हैं वे सब जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेषज्ञों के साथ १५ दिन में एक बार बैठकर प्रगति का लेखा-जोखा करते हैं।

बर्मा में सीमेन्ट-कारख़ाना खड़ा करने के सिलसिले में हमने ऊपर जो कुछ कहा है उसका निष्कर्ष यह है कि कारख़ाने से संबंधित सारे लोगों में एक सद्भावपूर्ण और मुक्त वातावरण पाया जाता है और हरएक में काम को जल्दी से ख़तम करने की भावना पायी जाती है।

यह कारख़ाना बर्मा के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध होगा। इससे न सिर्फ़ विदेश मुद्रा की बचत होगी, बल्कि बर्मा के पास कुशल मिस्त्रियों का एक दल तैयार हो जायगा जो अन्य उद्योगों में सहायक होगा।

सीमेन्ट उद्योग के मामले में जर्मन जनवादी गणतंत्र सर्वाधिक विकसित देश है। इस उद्योग की परम्परा ५० वर्ष से भी अधिक पुरानी है। इससे संबंधित उसकी टेकनालाजी अत्याधुनिक है। उस के एक ही कारख़ाने का दैनिक उत्पादन २५०० टन है। यह औसत अभी तक किसी भी देश में नहीं देखा गया। और यही इसका सबूत है कि सीमेन्ट कारख़ाने के लिए उसकी मशीनें बेजोड़ हैं। आजकल मेग्देबुर्ग में एक ऐसा सीमेन्ट-कारख़ाना बन रहा है जिसका पूरा संचालन आटोमेटिक विधि पर होगा। ऐसा कारख़ाना भी संसार के लिए एक नयी वस्तु है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक दूसरे स्थान कोज़विक में एक और सीमेंट कारख़ाना १२ करोड़ मार्क की लागत से बन रहा है जिसमें ३००,००० टन सीमेंट प्रतिवर्ष पैदा किया जायगा। कार्सड्रोफ़ में एक और पूर्ण स्वचालित कारख़ाना है जिस की उत्पादन-क्षमता ६६,००० टन सीमेन्ट प्रतिवर्ष है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के पास बड़े ऊंचे और सुयोग्य टेकनीशियनों और इंजिनियरों का एक दल है जो ग्राहकों की इच्छानुसार उनके देश में जाकर उद्योग संबंधी अध्ययन करते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने अति विकसित उद्योग की पृष्ठ भूमि में नवजात राष्ट्रों की सहायता के लिए हर समय प्रस्तुत रहता है। बर्मा में बन रहे सीमेन्ट कारख़ाने में जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्टाफ़ ने जो सहयोग-भावना प्रदर्शित की हैं उसका आधार समानता और परस्पर हितों का सम्मान ही रहा है। यही आधार जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश नीति की विशेषताएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वैज्ञानिक की यात्रा

डा. पी. एस. गिल

पदार्थ विज्ञान के प्रोफ़ेसर और गुलमर्ग शोध संस्थान के संचालक

जर्मन विज्ञान अकादमी, बर्लिन के निमंत्रण पर मैं जर्मन जनवादी गणतंत्र गया और गत १७ मार्च से १४ अप्रैल तक वहां रहा। हवाई अड्डे पर संस्था के संचालक डा. एरिख़ थिलो और अकादमी के कुछ अन्य अधिकारियों ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। डा. एरिख़ बम्बई में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए भारत आ चुके हैं। हवाई अड्डे से मुझे अकादमी के गेस्ट-हाउस ले जाया गया जो श्प्री नदी के सामने बना हुआ है। वहां खाने पर मेरी भेंट प्रो. डा. गेरहर्द फान्ज़ेलाउ से हुई। उन्होंने अपने जिओमैग्नेटिज़्म संस्थान में भाषण देने के लिए मुझे आमंत्रित किया। आप पोत्सदम से वहां इसीलिए आये थे। जर्मन जनवादी गणतंत्र में मेरे ठहरने से संबंधित सारा कार्यक्रम मेरी इच्छानुसार बनाकर तैयार किया गया। इस कार्यक्रम के पीछे मेरी भावना यह थी कि मैं अपने इस लघु प्रवास का अधिक से अधिक सदुपयोग करूं। मेरे निवास और मेरे घूमने-फिरने का बड़ा ही सुखद प्रबन्ध किया गया। अकादमी की ओर से जो आदर और प्रेम मुझे मिला, मैं उसका हृदय से आभारी हूं।

अपनी पहुंच के दुसरे दिन सुबह मुझे डा. वर्नर हार्त्के से मिलने का सौभाग्य मिला। डा. हार्त्के विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष हैं और एक महान संस्कृति की प्रतिमूर्ति हैं। मिलते ही वे अपनी भारत-यात्रा के संस्मरण सुनाने लगे और इस पर दुख प्रकट करने लगे कि उन्हें भारत-दर्शन के लिए पर्याप्त समय न मिल सका था।

जर्मन जनबादी गणतंत्र में मैं चार सप्ताह रहा। और इस बीच मुझे बहुत कुछ देखने का अवसर मिला। मैंने गावों के सुन्दर और रमणीक दृश्य देखे, अकादमी के तत्वावधान में चल रहे अनुसंधान कार्यों का निरीक्षण किया, लइपज़िक, हाले और येना विश्वविद्यालयों में पदार्थ-विज्ञान पर चल रहे कार्यों का अवलोकन किया, इन संस्थानों के दर्शन के सिलसिले में मुझे उत्तर में कुइलिग्ज़बोर्न से दक्षिण में वाइमर तक जाने का सुअवसर मिला। मुझे जर्मन जनवादी गणतंत्र के लगभग सभी बड़े-बड़े नगरों जैसे: बर्लिन, रोस्तोक, लइपज़िक, येना, हाले और ड्रेसडन को देखने का सौभाग्य मिला।

प्राचीन जर्मन परम्परा के अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र के संस्थान चाहे वे अकादमी के अन्तर्गत हों या विश्वविद्यालयों के, अधिकांशतः ऐसे वैज्ञानिकों से संबंद्ध है जिनका उस विषय में प्रवेश माना गया है। आमतौर से यह कहा जा सकता है कि कुछ बड़े-बड़ों को छोड़कर बाकी सारे संस्थानों में छः से दस की संस्था में वैज्ञानिक काम करते हैं और हर संस्थान में उन वैज्ञानिकों के साथ मोटे तौर से ३० शोध-कार्यकर्ता होते हैं जो विभिन्न तरीकों से वैज्ञानिकों की सहायता करते हैं। ऐसी वैज्ञानिक इकाइयां आत्मनिर्भर होती हैं। उनके काम करने का वातावरण बड़ा ही

थरिंगियन पहाड़ियों में, अक्तूबर १९६० को एक नयी वेधशाला का उद्घाटन किया गया। सरकार ने इसका निर्माण करके विज्ञान अकादमी को सौंप दिया। इसकी विशेषता इसका २ मीटर - रिफ़्लेक्टर टेलिस्कोप है जो दुनियां का सबसे शक्तिशाली टेलिस्कोप माना जाता है।

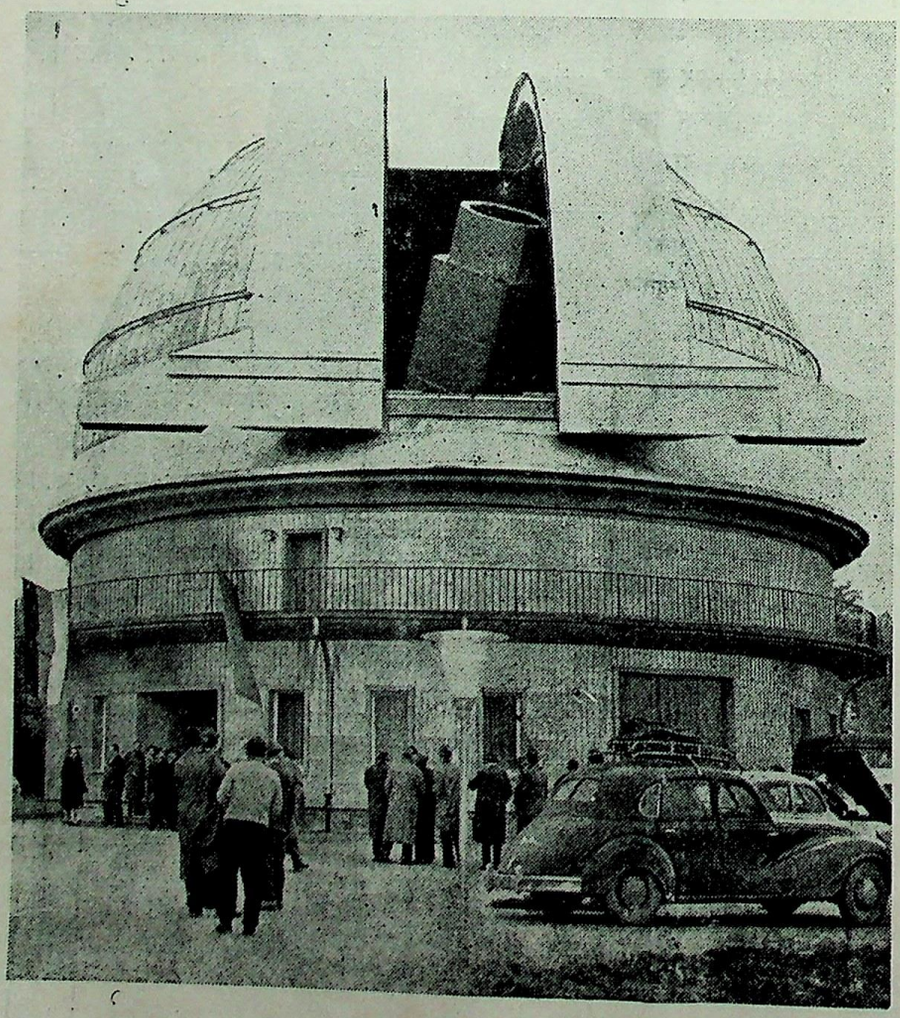

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणादायक होता है। इसलिए उनके कार्य का सुफल भी देखने में आता है। ये संस्थान देश की योजना-अवधि की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्वयं अपना कार्यक्रम निश्चित करते हैं। अकादमी उनका खर्च उठाती है लेकिन इससे उनकी स्वतंत्रता में रत्ती भर की भी बाधा नहीं पड़ती। वे अपना कार्यक्रम पूरा करने के लिए पूर्णरूपेण स्वतंत्र हैं।

इन संस्थानों के संचालक अधिकतर विश्वविद्यालयों के शिक्षक होते हैं। उनमें से कुछ तो अनेक विश्वविद्यालयों में भाषण देते हैं और इस प्रकार शिक्षण और शोध में परस्पर वांछित सहयोग प्राप्त होता रहता है। विश्वविद्यालयों और इन संस्थाओं के वैज्ञानिकों के बीच इस प्रकार के निकट सम्पर्क और सहयोग से विज्ञान की प्रगति में बड़ी सहायता मिली है। संस्थाओं के संचालक अपने-अपने विषय के अधिकारी वैज्ञानिक होते हैं, जिन्हें ठोस अनुसंधान का श्रेय प्राप्त हो चुका हैं। उनके सहयोगी और अन्य विद्वान उनका बड़ा ही आदर करते हैं। संस्थानों की प्रयोगशालाएं आधुनिकतम साधनों और यंत्रों से सुसज्जित है।

अपनी यात्रा में एक बात से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। मैंने यह देखा कि हर संस्थान या विश्वविद्यालय का वैज्ञानिक दूसरों के कार्यों की प्रशंसा कर रहा है, यहां तक कि यहां के लोग पश्चिमी जर्मनी के वैज्ञानिकों के शोध-कार्यों का उल्लेख उतने ही गर्व के साथ करते पाये गये। अनेक संस्थानों में मैंने यह देखा कि वहां के लोग भारत में हमसे मिलकर ऐसी संस्थाओं पर शोध-कार्य करने के लिए बड़े इच्छुक हैं जिनके लिए विश्वव्यापी अध्ययन की आवश्यकता है। भारतीय वैज्ञानिकों के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र में बड़ी सद्भावना है।

पोत्सदम में मैंने जिओमेगनेटिक संस्थान, जिओडेटिक संस्थान, ऐस्ट्रो-फ़िजिकल वेधशाला और आइस्टीन टावर के निरीक्षण किये। जिओमेगनेटिक संस्थान में मुझे गुलमर्ग और अलीगढ़ की प्रयोगशालाओं में हो रहे कामों के बारे में एक भाषण देना था। बाद को मुझे मालूम हुआ कि वहां के सभी संस्थान हमारी इन प्रयोगशालाओं की गतिविधि से परिचित हैं।

मीसदोर्फ में न्यूक्लियर फ़िजिक्स को भी देखा और उसकी उपलब्धियों से बहुत प्रभावित हुआ। नेमेक वेधशाला भी देखी। वहां चुम्बक विधि से नाप की प्रक्रिया पर जो काम पो रहा है, अति प्रशंसनीय है। इसका संचालन डा. श्मिद करते हैं। वहीं पास ही में एक और प्रयोगशाला है जहां सोलर रेडियो एस्ट्रो-नामी पर काम हो रहा है।

इसी बीच ईस्टर की छुट्टियां पड़ीं और मैं बाल्टिक तट पर बने एक आरामगाह में कुछ दिन के लिए चला गया। यह आरामगाह बुद्धिजीवियों के लिए बनायी गयी है। वहां से मैंने इनोस्फोरिक शोध संस्थान का निरीक्षण किया और उस दौरान में काज़िमक रे मेज़रमेन्ट के परिणामों पर प्रो. लाउतर से विचार-विमर्श किया।

प्रो. लाउतर के घर मेरी भेंट एक बड़े ही सुशील व्यक्ति डा. बाउख से हुई। आप से मालूम हुआ कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में दवाएं और उपचार मुफ्त है।

बर्लिन में फ़िजिकल टेकनिकल-संस्थान के संचालक प्रो. डा. रोबेर्त रोम्पे से मिला। यहां फोटोग्राफ़ी विज्ञान पर बहुत ही दिलचस्प शोधकार्य चल रहा है।

येना के समीप त्यूतेनबुर्ग में मैंने नवनिर्मित एस्ट्रानामिकल वेधशाला देखी जिसमें दो मीटर रिफ्लेक्टर टेलिस्कोप है।

लइपज़िक में मुझे प्रो. डा. हेत्स से मिलने का सौभाग्य मिला। आप अपनी प्रयोगशाला में कनडक्टर्स पर शोध कर रहे हैं। आपको भारत की वैज्ञानिक प्रगति में बड़ी दिलचस्पी है। आपने अपनी भारत-यात्रा की बड़ी ही सुखद स्मृतियां सुनायीं।

हाले में मैंने प्रो. मैस्सैरश्मिद की प्रयोगशाला देखी जहां कास्मिक रश्मियों पर काम हो रहा है। वाइमर स्थित गेटे भवन का भी दर्शन किया और वाइमर के पास ही बुखेनवाल्द का संग्रहालय और स्मारक देखा जहां नाज़ियों ने अपना

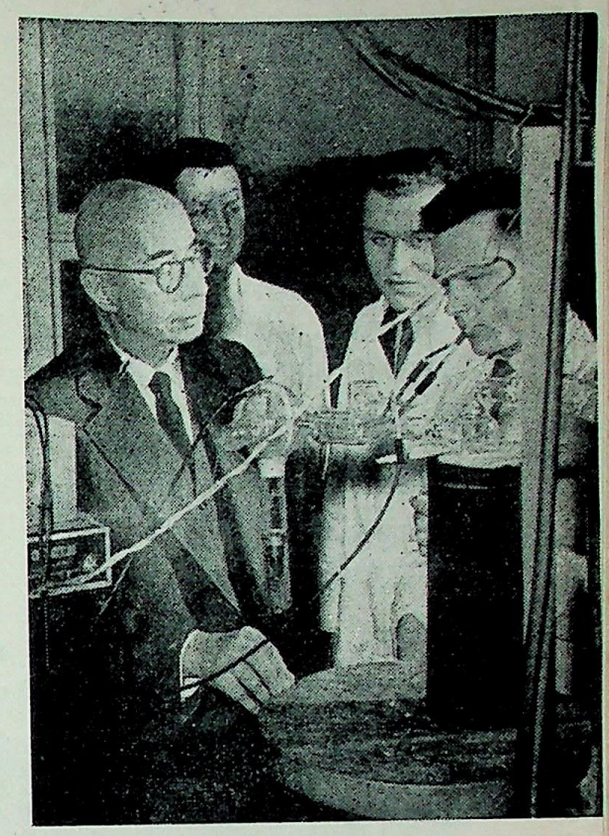

लइपज़िक विश्वविद्यालय के फ़िज़िकल इन्स्टीच्यूट में प्रो. हेर्त्स कुछ छात्रों के साथ एक प्रयोग का अवलोकन कर रहे हैं।

एक भीषण कन्सेन्ट्रेशन कैम्प बनाया था।

ड्रेसडन के पास रोज़ेंद्रोफ़ में न्यूक्लियर शोध संस्थान को देखने गया। वहां के शोध कार्यकर्ता अपनी समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए बड़े इच्छुक दिखायी पड़े।

बर्लिन से प्रस्थान के एक दिन पूर्व विज्ञान अकादमी के महामंत्री प्रो. डा. रेनाकेर के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र की विज्ञान अकादमी और भारत के नेशनल इन्स्टीच्यूट आफ़ साइन्सेस के बीच सहयोग के प्रश्न पर बातचीत की, और अन्त में हमने इन दोनों वैज्ञानिक संगठनों के बीच घनिष्ठ सहयोग के लिए एक समझौता किया। नेशनल इन्स्टीच्यूट की कौंसिल ने मैसूर में १६ मई १९६१ को अपनी बैठक उस समझौते को मंजूर भी कर लिया है।

मुझे आशा है कि हमारे दोनों देशों के बीच ऐसी मैत्रीपूर्ण यात्राएं बराबर होती रहेंगी और दोनों के हित साधन में योग-दान करती रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दिग्दर्शन :

एक और स्विटज़रलैंड—एक और नन्दनवन

हरवर्त ए. रुडोल्फ़

ड्रेसडन की सड़कों पर घूमते हुए किसी भी पर्वतारोही या भ्रमणार्थी से अगर आप उसके गन्तव्य के बारे में पूछें तो उसका जवाब होगा, 'स्विटज़रलैंड'। लेकिन अगर उसके इस जवाब से आप यह नतीजा निकालें कि वह हफ्ते का आखिरी दिन बिताने के लिए आल्प्स की पहाड़ियों में डेवोस या सेंट गेलेन जा रहा है तो यह आपकी भूल होगी : उस का स्विटज़रलैंड वहीं कहीं पास में ही है– एल्वे के किनारे, ट्रेन से सिर्फ़ एक घंटे का सफ़र। यह वही जगह है जहां एल्वे नदी जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रवेश करती है। इससे पहले वह चेक नदी कहलाती है। भूगोल के पंडित इस इलाके को एल्वे की पहाड़ियां कहते है। नक़्शे पर भी यही नाम मिलेगा। लेकिन पिछले १६० सालों से लोग इसे 'सैक्सन

सदियों गुज़रती रहीं, पहाड़ियां बनती रहीं और एल्वे भी अपना रास्ता बनाती रही

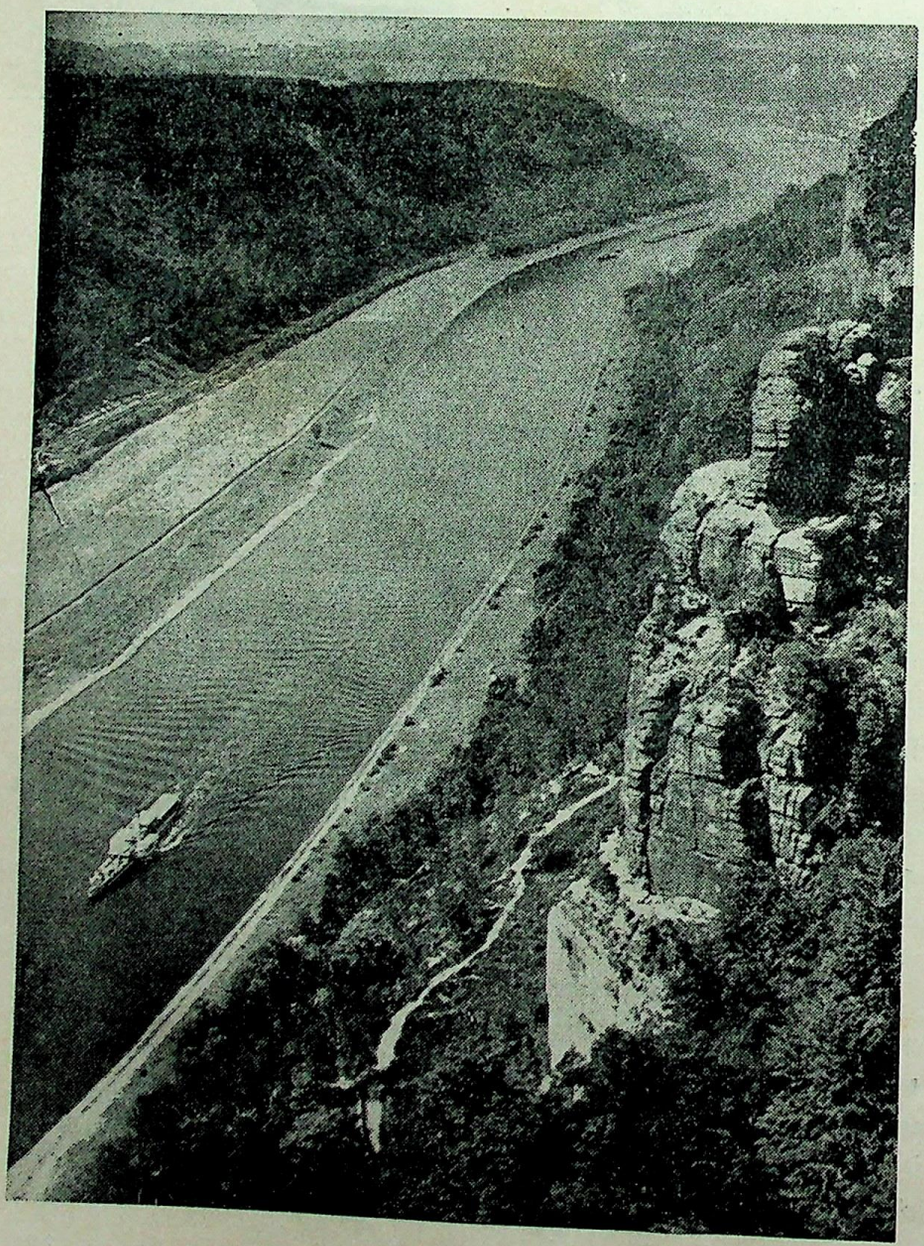

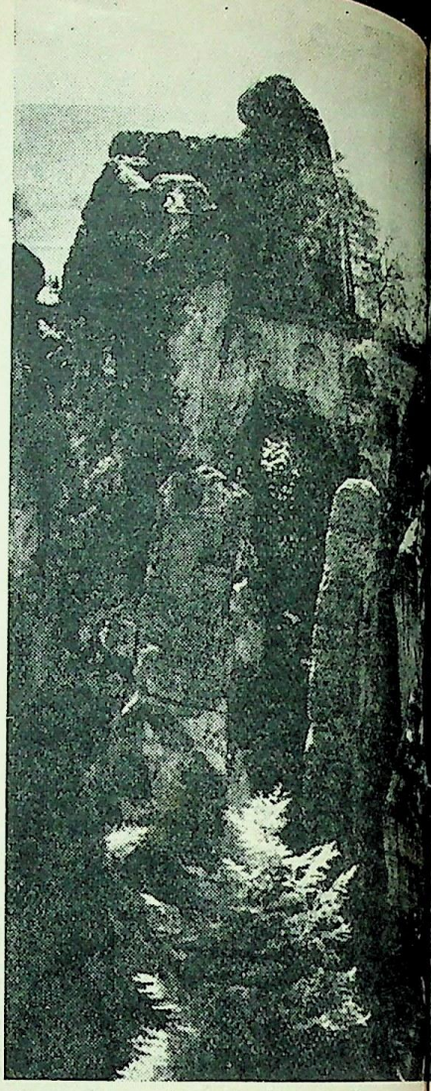

पहाड़ियों के ये गुच्छे अपनी विशेष

स्विटज़रलैंड' कह कर पुकारते आये हैं क्योंकि लोगों ने उस क्षेत्र में एक ऐसी मनोहरता और सुन्दरता की खोज की जो कलाकारों, लेखकों और प्रकृति से प्रेम करने वालों का लक्ष्य बन सकती थी। इस पर्वत-प्रदेश को जर्मन जनवादी गणतंत्र का सब से सुन्दर क्षेत्र कहना कोई अतिरंजना नहीं।

ये पहाड़ियां आसमान को छूने की कोशिश नहीं करतीं। न तो उनकी चोटियां बर्फ से ही ढकी रहती हैं। उनकी ऊंचाई ५०० मीटर से अधिक नहीं। लेकिन ऊंचाई की यह कमी उस समय भूल जाती है जब आप उस अकल्पनीय प्रकृति-सौन्दर्य के बीच खड़े हो जांय। आप देखेंगे कि आपके दोनों ओर सीधे आसमान को छूती हुई सी दीवारों की तरह पहाड़ियां खड़ी हैं जो आस-पास की हर चीज़ को बौना बना कर रख देती हैं। उन पहाड़ियों की ऊंचाई की कमी की भावना उस समय तो बिलकुल ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

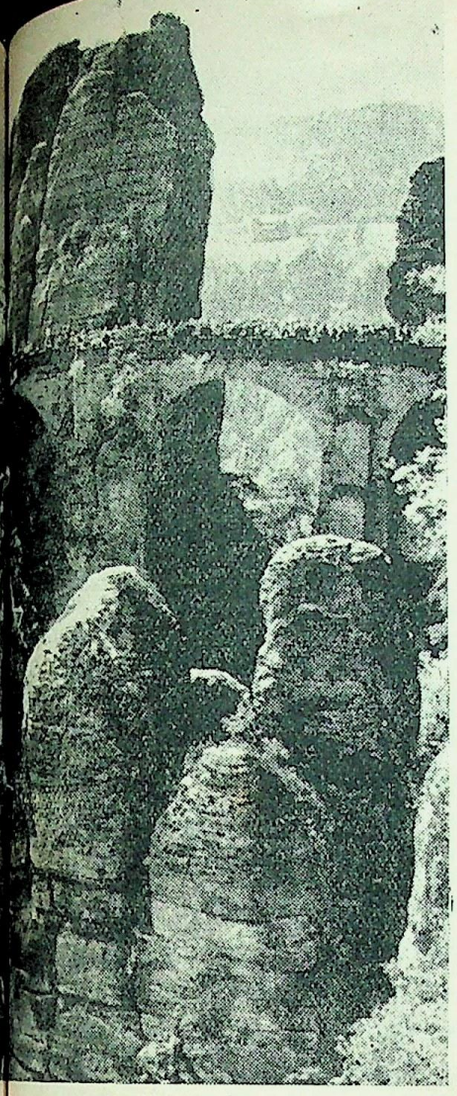

...ों के ये गुण अपनी विशेषताएं हैं

नहीं रह जाती, जब आप उनमें से किसी पहाड़ी दीवार पर खड़े हो जांय ! वहां से खड़े होकर नीचे पाताल भेदी गहराइयों की ओर नज़र डालने का साहस भी विरले में ही होगा। उन पहाड़ी दीवारों पर खड़े होकर अगर चारों ओर नज़र फेरी जाय तो चारों तरफ़ एक ऐसा स्वप्नलोक फैला दिखायी पड़ेगा जिसमें नीले गुम्बद, अनन्नास के काले जंगलों से ढकी गहरी ढलवानें और एल्बे नदी की पातालभेदी घाटी जादू डालते दिखायी पड़ेंगे। सारा प्रदेश प्रकृति का उन्माद सा लगता है। लेकिन प्रकृति के इस उन्माद को आकार पाने में लाखों बरस लगे हैं। लाखों बरस पहले किसी समुद्र ने यहां अपरिमित रेत के टीले जमा किये। फिर वह समुद्र लोप हुआ और पृथ्वी की यह तह टूटने-फूटने लगी। इस प्रक्रिया में भी लाखों बरस लगे। इस प्रक्रिया को जारी रखने में आगे चलकर हवा और पानी, सूरज और बर्फ ने क़दम उठाये। जैसे कोई उन्मादी मूर्तिकार सदियों तक अपनी छीनी चलाता रहा हो . . .

इस प्रकृति-लोक की विशेषताएं वहां के निवासियों की भाग्य-लिपि भी तैयार करती रहीं। एक दिन था जब यहां सामन्तों का बोलबाला था। वे वहां के शासक थे, आपस में लड़ते रहते थे, और व्यापारियों को लूटते रहते थे। फलतः इस क्षेत्र का विकास न हुआ और सामन्तों को छोड़कर बाकी लोग ग़रीबी में रहा करते थे। इन ग़रीबों का भाग्य उस समय भी नहीं पलटा जब सैक्सनी का राज्य अस्तित्व में आया। राजाओं के लिए यह इलाका एक अच्छे शिकारगाह के अलावा और कुछ न रहा। यहां के सुन्दर और मज़बूत पत्थरों से उन्होंने ड्रेसडन में अपने राजप्रासाद ज़रूर खड़े किये जिसके लिए सदियों तक मज़ूरों का खून बहता रहा। सैक्सनी के एक शासक ने इन्हीं पहाड़ियों पर एक किला बनवाया जो बाद को जेल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया और जो जर्मनी के अनेक महान व्यक्तियों की अपनी कोठरियों में सड़ाता रहा।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

यह चट्टान और उसके सामने फैला हुआ प्रकृति का यह आंचल !

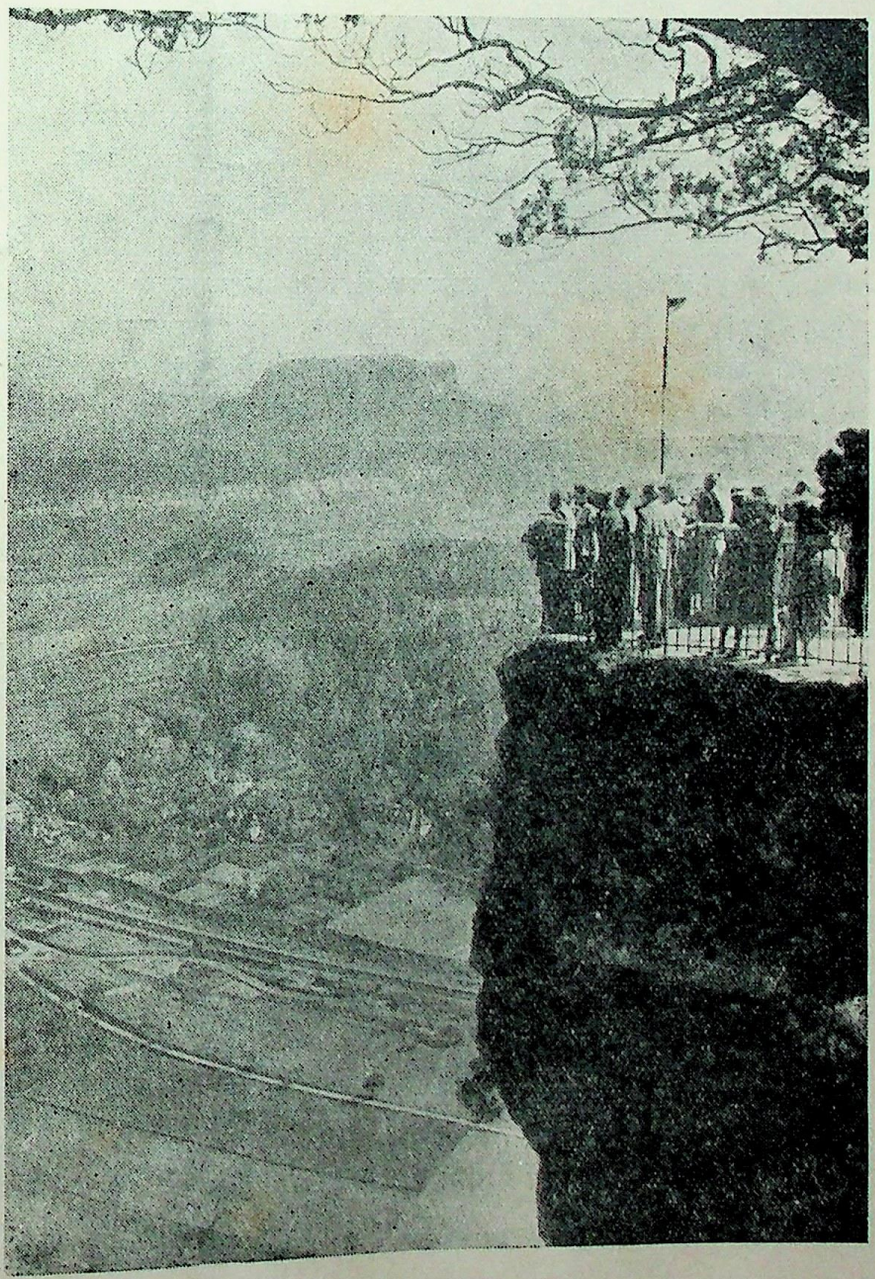

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्लिन चैम्बर की भारत यात्रा

नये और सच्चे मित्र का दर्शन

हरमन ल्हाल, बर्लिन चैम्बर क्वार्टेट

किसी कलाकार के लिए वह अवसर बड़ी ही सुखद अनुभूति का होता है जब वह अपने देश की किसी महान कला को किसी दूसरे देश के सामने पेश करता है, ऐसे अवसर पर वह केवल 'अतिथि कलाकार' ही नहीं रहता बल्कि साथ ही वह अपने देश के उच्चतम आदर्शों का मूर्तिकार बन जाता है, वह मैत्री-भाव को गहरा बनाने लगता है।

अपनी हाल की भारत-यात्रा के दौरान हमें भी ऐसे ही अवसरों से दो-चार होना पड़ा था। बर्लिन चेम्बर क्वोर्टेट ने बाख की फ़्यूग कला के साथ भारत की यात्रा की। उल्फ़ गंग अंसेल (वायलिन), विली ब्राइस (वायोला), हरमन ल्हाल (टेनर वायलिन) और गुइन्तर सेनेवाल्द (वायोलोनासिली) चार कलाकारों ने जर्मनी की इस महानतम संगीत-निधि की झांकी भारत में प्रस्तुत करने की कोशिश की।

इस यात्रा में क्या सबसे महत्वपूर्ण था, यह चुनना कठिन है। सुखद घटनायें, सुखद मुलाकातें, सुखद स्मृतियां भारत की जनता और भारत की प्रकृति-कल्याणी, भारत की कला और उसका जीवन, भवन-कलायें और सड़कों की शोभा, यह सब कुछ इतने रंगों से सराबोर। और फिर एक के बाद एक उन रंगों का तेजी से बदलते जाना। फिर कैसे उन्हें ठीक जगह पर सजाया जाय।

हमारी भारत-यात्रा १ फरवरी को प्रारम्भ हुई। इससे पहले हम मास्को-ताशकन्द होते हुए दिल्ली पहुंचे थे—पामीर और हिमालय की ऊंचाइयों को लांघते हुए। फिर दिल्ली से अलीगढ़, लखनऊ, कानपुर, कलकत्ता, बंगलोर, हैदराबाद, मद्रास और बम्बई। ३ मार्च को बम्बई से अलविदा!

भारत की इस यात्रा के सिलसिले में बात करते समय हमें शानदार पेड़ों और फूलों और ऐसे-ऐसे जानवरों की, जिन्हें अपने देश में केवल अजायबघरों में देख सकते हैं, और हरियालियों से भरे जनसंकुल नगरों की बातें करनी चाहिए। हमें ताज महल, महाबलिपुरम, एलफैन्टा और अजन्ता की बातें करनी चाहिएं जहां भारत की अनन्त सांस्कृतिक निधियां खड़ी हैं। इनकी चर्चा का लोभ संवरण करना मुश्किल है। लेकिन फिर भी हम पहले भारत के लोगों की याद करेंगे।

भारत के लोगों ने कैसी महान संस्कृति का महल खड़ा किया था। हज़ारों बरस पुराना वह महल। और आज फिर वे नये सृजन में जुटे हैं। भिलाई और राउरकेला में उनका भविष्य रूप ले रहा है। भारतीय जनता की उम्र बहुत लम्बी है, फिर भी बहुत नयी है। हमने उसका किशोर, उसका आल्हादमय किशोर, हर कहीं देखा – गांवों में काठ की कुर्सियों पर बैठे, हाथ में पेन्सिलें पकड़े, अपनी मातृभाषा का पहला अक्षर पढ़ते हुए बाल छात्रों के रूप में, वैज्ञानिकों और विश्व-विद्यालय के छात्रों के रूप में, नये कारखानों की नींव डालते हुए मज़दूरों के रूप में, कलाकारों, पत्रकारों, रिक्शाचालकों, इंजिनियरों के रूप में और परती खेतों को पुराने हलों से तोड़ते किसानों और मालियों के रूप में।

हमने वहां के एक-एक हाथों में सौ-सौ हाथों की विकलता देखी, एक-एक कानों में सौ-सौ कानों की जिज्ञासा सुनी। हम ने अपने संगीत-कार्यक्रमों में भारतीय जनता को बुद्धिमान और अनुभूतिशील दर्शक और श्रोता के रूप में पाकर यह विश्वास किया कि उनमें ज्ञान की प्यास है, कला की भूख है।

बाख और भारत, 'फ्यूग' की कला और भारतीय संगीत, क्या इनमें कोई व्यवधान नहीं? भारतीय जनता की

(शेष पृष्ठ १९ पर)

बर्लिन चैम्बर क्वार्टेट (उल्फ़गंगअंसेल—वायालिन, विली ब्राइस वायोला, हरमनल्हाल—टेनर वायालिन, गुइन्तर सेनेवाल्द—वायोलोनासिली) नयी दिल्ली में एक संगीत प्रस्तुत करता हुआ

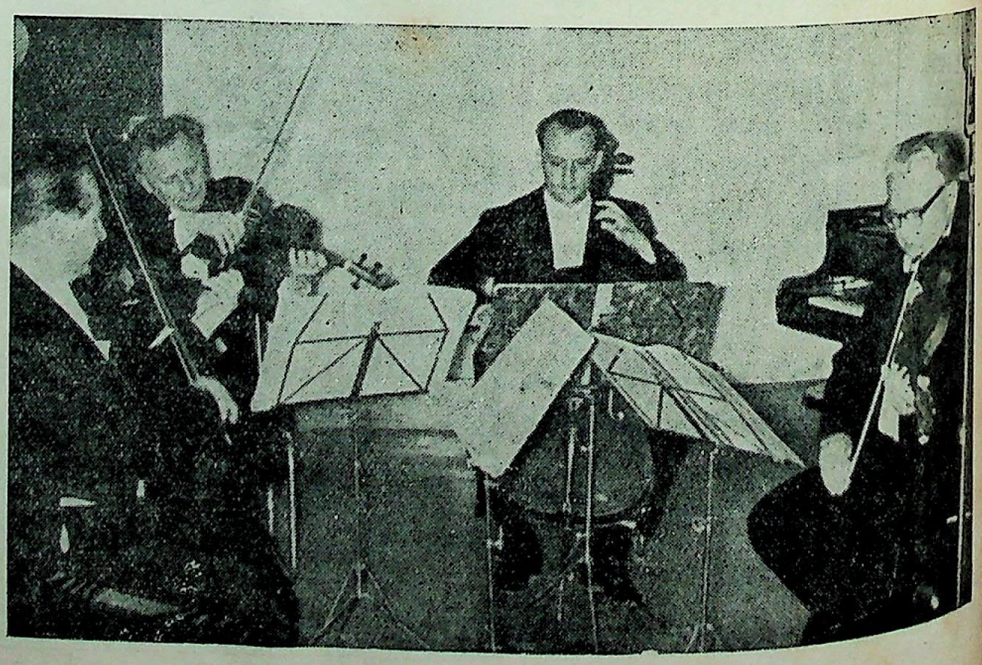

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

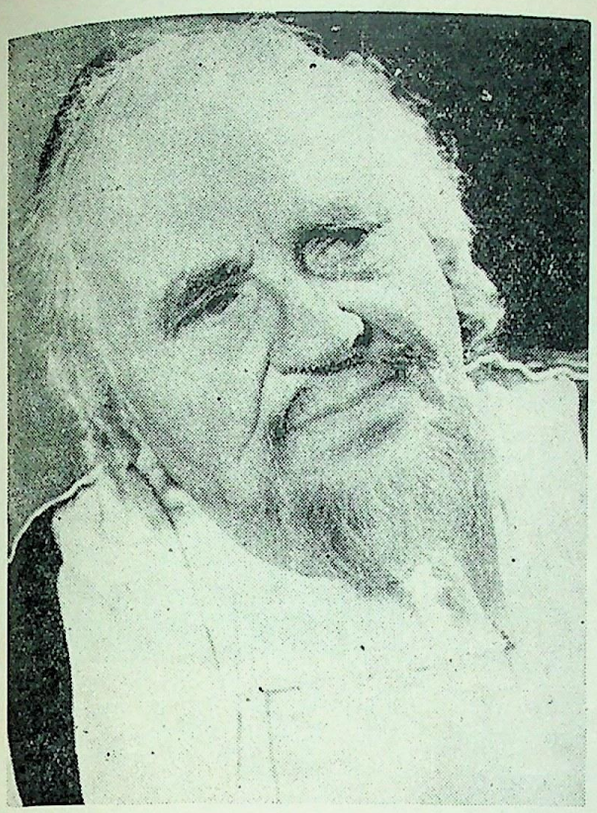

महान अभिनेता अपनी परमप्रिय बुद्धिमान नाथन की भूमिका में

एदुअर्त फ़ान विन्तर स्ताइन

(१८७१-१९६१)

विभिन्न रंगमंचों, सामाजिक संस्थाओं, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा अन्य देशों के अनेक मित्रों ने एदुअर्त फ़ान विन्तरस्ताइन का ९०वां जन्मदिवस मनाने का निर्णय लिया। विन्तरस्ताइन अपनी पीढ़ी के जर्मन अभिनेताओं में अग्रणी माने जाते हैं।

जन्मोत्सव की शाम को लेज़िग का 'बुद्धिमान नाथन' खेला जाने वाला था। उसकी महान् भूमिका में विन्तरस्ताइन स्वयं उतरना चाहते थे और इसके लिए वे अपनी रोग-शैय्या से उठकर आना चाहते थे। लेकिन वे ऐसा न कर सके। मृत्यु ने उन्हें हमसे छीन लिया और उन लोगों पर अवसाद की एक गहरी छाया पड़ गयी जो उस दिन इस महान् अभिनेता के सम्मान में अपनी फूल-मालाएं चढ़ाने वाले थे। विन्तरस्ताइन जर्मनी की परम्परा में कुछ गन्यमान विभूतियों में से थे। २२ जुलाई, १९६१ का वह दिन एक शोक दिवस बन गया और १ अगस्त को उनके जन्मदिवस की सारी तैयारियां शोक-संवेदनाओं में बदल गयीं।

विन्तरस्ताइन उस समय अपने शैशव में ही थे जबलेज़िग के एक गीत ने उनमें एक अभिनेता को जन्म दे दिया। वैसे अभिनय कला उनकी घुट्टी में भी थी। उनकी मां स्वयं एक कुशल अभिनेत्री थीं और पित एक रंगमंच के प्रतिष्ठित निर्देशक और निर्माता। २४ वर्ष की आयु में विन्तरस्ताइन को लेज़िग के ही एक नाटक में पहली भूमिका मिली। और तब से अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक पूरे सत्तर वर्ष जर्मन रंगमंचों पर उतरते रहे। अन्तिम दिनों में उन्होंने एकाध फ़िल्मों में भी काम किया। विन्तरस्ताइन को जर्मनी के क्लासिक नाटकों (गेटे के फ़ाउस्त जैसे) की महानतम भूमिकाओं में उतरने का सौभाग्य बराबर मिलता रहा और उन्होंने नयी पीढ़ी के सामने अभिनय का मानदंड प्रस्तुत कर दिखाया। जर्मनी के प्रकृतिवादी और यथार्थवादी नाटकों ने जर्मन रंगमंच में जितने सुधार या क्रान्तियां कीं उन सबसे विन्तरस्ताइन का एक अभिनेता के रूप में निकट का सम्पर्क रहा है। गेबार्त हाउप्रमन, गोर्की या अन्य आधुनिक नाटककारों के जब भी कोई नाटक अभिनीत हुए, विन्तरस्ताइन हमेशा उनकी प्रमुख भूमिकाओं में उतरते रहे। फिर भी शालीनता उनकी प्रकृति का प्रधान गुण

(शेष पृष्ठ १८ पर)

सुन्दरतर के सहारे...

"तुम्हारे जैसा आदमी
जन्म की घटनाओं के सहारे
जीवित नहीं रह सकता
अमर रह सकता है
तो सिर्फ़ विवेक, निर्णय, सुन्दरतर
के चयन केसहारे।"

यह शब्द सुल्तान सलादीन के हैं, जिसे वह नाथन से बातें करते समय कहता है। यही शब्द मेरे तरुणकाल से ही मेरे निर्णयों और कार्यों की अन्तप्रेरणा रहे हैं—चाहे वे निर्णय या कार्य किसी भी दिशा में—दर्शन, समाज, राजनीति या कला की दिशा में रहे हों। फिर भी लेज़िग्स के 'जन्म' में 'शिक्षा' को जोड़ना चाहता हूं। मेरी शिक्षा उस समय शुरु हुई जब १८७०-७१ के युद्ध को समाप्त हुए १० वर्ष हो चुके थे और तब तक जर्मन साम्राज्य नयी शक्ति के साथ बढ़ने लगा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन दिनों हमारे स्कूलों में किस तरह की 'देश-भक्ति' पढ़ाई जाती थी। और मुझे अब भी याद है कि वह 'देशभक्ति की भावना किस प्रकार कपूर की तरह उड़ने लगी थी और उसके स्थान पर अर्धचेतन अवस्था में ही सही, ऐसे विचारों ने जन्म लेना शुरु कर दिया था जिनका चरित्र शुरु-शुरु में सामाजिक था। और धीरे-धीरे दिमाग़ की परिपक्कवता के साथ उनका चरित्र समाजवादी होने लगा। उस अनुभव से मैंने यह सीखा कि पाठ्य पुस्तकें चेतना का रूप देने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करती है।

मैंने अपनी आंखों तीन-तीन कैसरों को देखा है। मेंने पहले महायुद्ध का अनुभव किया है, फिर १९२० वाले खोखले जर्मन प्रजातंत्र को देखा है, फिर मैंने नाज़िवाद के बारह भयानक साल और जर्मन राइख़ के पतन को देखा है। इन भीषण अनुभवों के बाद अन्ततः मैं आज खुलकर सांस ले सकता हूं। और अपने स्वतंत्र निर्णय से मैंने नये प्रगतिशील धारा को ग्रहण किया हैं। मुझे अपने को जर्मन जनवादी गणतंत्र का नागरिक कहलाने में गर्व का अनुभव होता है :

"विवेक, निर्णय और सुन्दरतम
चयन के सहारे।"

एदुअर्त फ़ान विन्तरस्ताइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस हज़ार मुर्गियों का फ़ार्म

रोज़ सुबह सबेरे दस हज़ार सफ़ेद मुर्गियां ज़ोरों की कुकुड़ूं कूं के साथ हिल्दे बुइये और अन्नेमारी कोइलर का स्वागत करतीं हैं। यह दोनों महिलायें बेज़ेनलाउबीनेन सहकारी फ़ार्म में काम करती हैं। यह फ़ार्म जर्मन जनवादी गणतंत्र के दक्षिण एक गांव में बना है।

दस हज़ार मुर्गियाँ और केवल दो औरतें? आप का सवाल दुरुस्त है। लेकिन श्रीमती बोइमे इसके जवाब में कुछ और ही दिलचस्प बातें बतायेंगी। मुर्गी-पालन का यह नमूना सोवियत संघ से लिया गया है और वहां एक औरत की निगरानी में १२,००० मुर्गियां रखी जाती हैं। लेकिन कैसे? वहां सब कुछ मशीन से होता है, चारा खिलाना, पानी देना, सफ़ाई करना और अंडे बटोरना—यानी सभी कुछ। यह व्यवस्था मुर्गियों में अंडे देने की क्षमता को कई गुना बढ़ा देती है।

चारा खिलाने के लिये तीन नांद, पानी की एक नहर, जिसमें रात-दिन साफ़ पानी बहता रहता है, और अंडे देने की जगहें। उनके पीछे ८० सेन्टीमीटर ऊंची खत्तियां जहां मुर्गियों के दरबे होते हैं। इन दरबों से मुर्गियां अपने खाने, पीने और अंडे देने की जगहों पर आसानी से पहुंच सकती हैं। दरबों के दूसरी ओर ३५ सेन्टीमीटर गहरी धूल और बुरादा से भरी हुई एक लम्बी पट्टी फैली है। इस धूल की पट्टी में ऐसा पाउडर मिला रहता है जिससे मुर्गियों में छूत की बीमारी नहीं फैल सकती।

चारा खिलाने के बाद पानी खोल दिया जाता है और नांद, दरबे और दूसरी जगहें साफ़ हो जाती हैं। और अब वह क्रम शुरू होता है जिसका हम इन्तज़ार कर रहे थे—अंडे बटोरने का काम। सारे अंडे एक बाइसिकिल जैसी गाड़ी में जमा किये जाते हैं। श्रीमती कोइलर उस गाड़ी पर बैठ जाती हैं और साइकिल की तरह उसका पैडल चलाने लगती हैं। यह गाड़ी एक पटरी पर चलती है। बस गाड़ी आगे बढ़ती रहती है और कोइलर हाथ बढ़ा-बढ़ाकर अंडे गाड़ी के साथ लगे एक डब्बे में रखती जाती हैं। थोड़ी देर बाद उन्हें पेटियों में बन्द करके राजकीय व्यापार निगम को रवाना कर दिया जाता है।

दस हज़ार मुर्गियों को स्वस्थ रखना एक बुनियादी महत्व की समस्या है। जब भी कोई मुर्गी बीमार सी लगी, उसे, तुरन्त अलग कर दिया जाता है और उसकी निगरानी शुरू हो जाती है। दस हज़ार मुर्गियों में कौन बीमार है, कौन नहीं, इसका भी पता लगाना एक बड़ा काम है। इस काम को सरल बनाने के लिए हज़ार—हज़ार का जत्था बांट दिया जाता है।

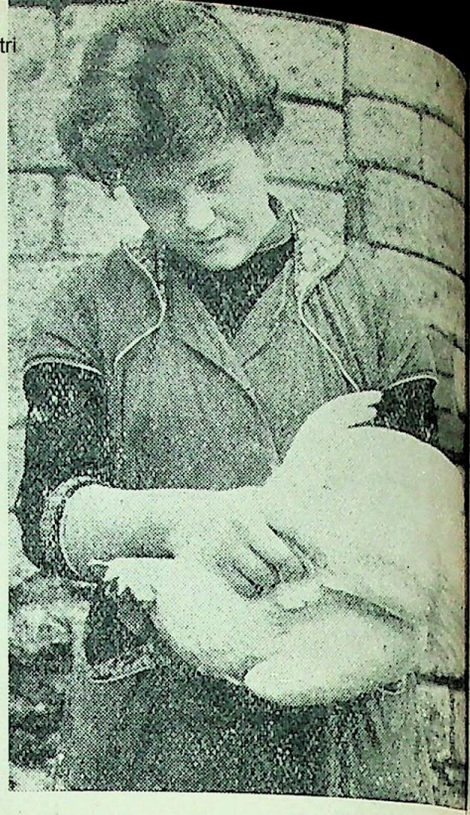

अन्नेमारी के कोमल किन्तु दृढ़ हाथ अपने पखेरू का रोग-निदान कर रहे हैं।

लिजिए, कोइलर अंडे जमा करने का काम पूरा कर चुकीं। और अब वे श्रीमती बोइमे की मदद में जुट गयीं। श्रीमती बोइमे हर मुर्गी के अंडों का हिसाब रखती हैं। ताकि साल भर बाद यह पता लग सके कि किस मुर्गी ने कितने अंडे दिये। इसी से मुर्गियों की उपयोगिता निश्चित की जाती है। आमतौर से साल भर अंडे चुकने के बाद पुरानी मुर्गियों की जगह नयी मुर्गियां रख ली जाती हैं, उन्हें साल भर से ज़्यादा रखना लाभप्रद नहीं होता।

अन्त में दरबों की सफ़ाई शुरू की जाती है। दोनों महिलायें फ़ार्म में रोज़ ६ से साढ़े १० बजे तक और फिर डेढ़ से पांच बजे तक रहती हैं। लेकिन जैसे ही उनका काम मशीनों के ज़रिये होने लगेगा, उनके काम के घंटे कम हो जायंगे।

इस फ़ार्म की तरह ही हमारे गणतंत्र के दूसरे गांवों में भी मुर्गी पालन होता है। अपने अनुभवों से हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ऐसे फ़ार्म बहुत ही लाभप्रद होते हैं।

दस हज़ार मुर्गियां, उनका शोर, उनकी चहल-पहल क्या जीवन की एक दिलचस्प तस्वीर नहीं?

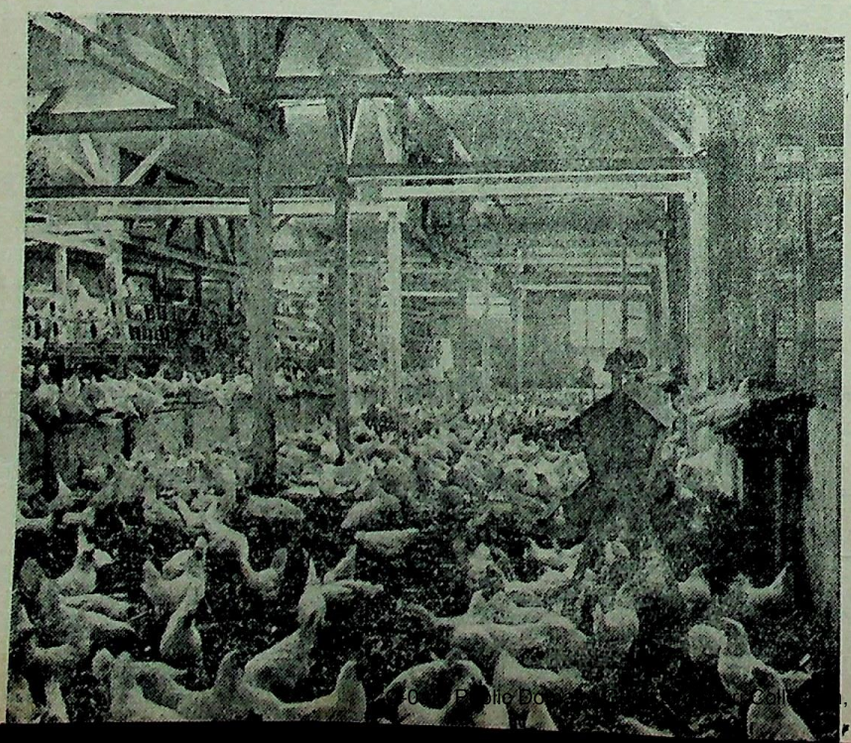

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में रेल-व्यवस्था

हंस रेफ़ेल्द, बर्लिन

सात दिसम्बर, सन् १८३५ को पहली बार जर्मनी में रेल का पहिया चला। नूरेम्बुर्ग और फ़ुइर्थ के बीच ६ कीलोमीटर की दूरी है। यह दूरी पहली बार आग और धुंआं छोड़ते हुए एक दैत्य ने तय की। उस दिन को बीते आज सवा सौ बरस हो गये। और आज जर्मन रेलें हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। हमारे उद्योगों का उत्पादन, उनके लिए कच्चे माल, कोयले और उससे संबंधित तमाम चीज़ों के लाने-लेजाने की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

वैसे हमारे यहां मोटर, हवाई जहाज और पानी के जहाज से भी माल ढोने की व्यवस्था बहुत आगे बढ़ चुकी है, पर हमारी रेलों पर आज भी माल यातायात का ८० फ़ीसदी निर्भर करता है। और हमारी रेलों की यह भूमिका भविष्य में भी उतनी ही महत्वपूर्ण बनी रहेगी क्योंकि लम्बी दूरी, अधिक माल और सस्ते किराये की दृष्टि से रेलें बेजोड़ हैं।

फिर यात्रा की दिशा में भी रेलों से बढ़कर दूसरा कोई सुविधाजनक साधन नहीं। मिसाल के लिए लिऊना हमारे रसायन उद्योग का एक केन्द्र है। कारखाने की हर पाली में लगभग ९००० मज़दूरों को हमारी सवारी गाड़ियां २२ मिनट में उनके घर छोड़ जाती हैं। बर्लिन एक महानगरी है। यहां की बिजली से चलने वाली गाड़ियां हर रोज़ एक लाख से भी अधिक यात्रियों का मसला हल करती हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में रेलों का जाल १६,००० कीलोमीटर में फैला हुआ है। हर महत्वपूर्ण नगर और गांव में रेलवे स्टेशन बने हुए हैं। फिर उनकी उपशाखायें हैं जो हजारों छोटे-छोटे गांवों को जोड़ती हैं।

हमारे देश में रेल उद्योग राष्ट्र की सम्पत्ति है।

हमारा देश योरप के बीचोबीच स्थित है। इसलिए हमारी रेलें योरप के अनेक देशों का माल पूरे साल भर ढोती रहती हैं। हमारी रेलें स्कैन्डिनेवियन देशों को दक्षिण और दक्षिणपूर्व योरप के देशों को जोड़ती हैं। और इस प्रकार साल भर हमारी रेलों से इन तमाम देशों के बीच माल का यातायात चलता रहता है।

रेलों की इस महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए सरकार ने निश्चय किया है कि सात-साला योजना के अन्तर्गत माल-गाड़ियों की क्षमता १९६५ तक २४ फ़ीसदी बढ़ा दी जाय। बिजली और डीज़ल से चलने वाले इंजनों की क्षमता भाप से चलने वाले इंजनों की तुलना में तिगुनी होती है। इसलिए हमने भाप से चलने वाले इंजनों का इस्तेमाल अपनी रेलों में बन्द कर दिया है।

आमतौर से मध्यवर्ती औद्योगिक क्षेत्रों में रेलें बिजली से चलायी जाती है। बाक़ी लाइनों पर आधुनिक ढंग के डीज़ल इंजन चलते हैं जिनकी साधारण रफ़्तार

गाड़ियों की सफ़ाई का नया साधन जिससे तीन ट्रेनों की एक साथ धुलाई हो सकती है

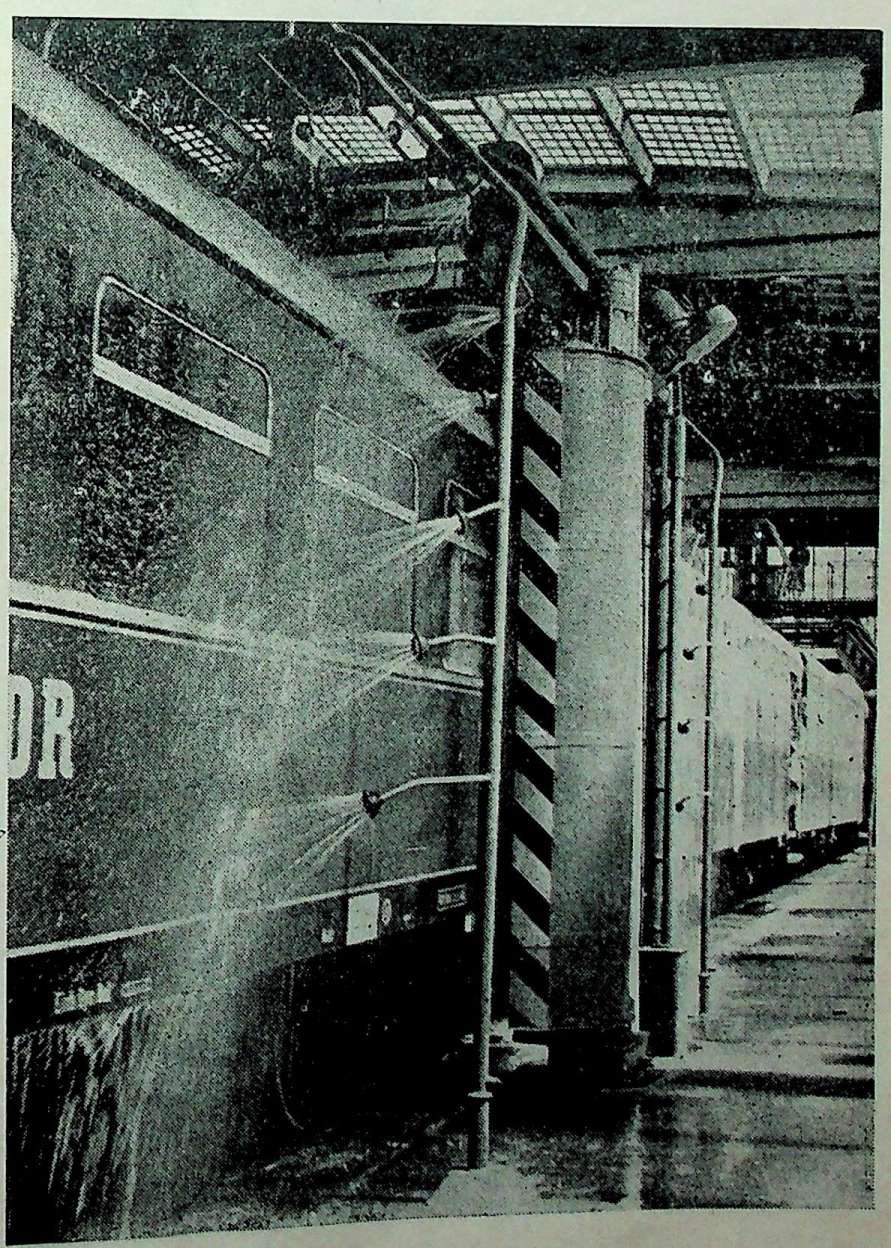

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२२ कीलोमीटर फ़ी घंटा है। इससे तेज़ रफ़्तार के लिए अनेक सुरक्षात्मक तरीक़ों की खोज चल रही है। कुछ महीनों पहले बर्लिन में ही इसका प्रयोग भी शुरू हुआ है जिसमें टेलीविज़न और बेतार के तार से रेलों का यातायात संचालित किया जा रहा है और जिसके फलस्वरूप स्थिति में काफ़ी सुधार भी नज़र आया है।

इसके अलावा मालगाड़ियों में भारी सामान की उतराई-चढ़ाई की समस्या को भी मशीनों से हल करने की कोशिश हो रही है। अब तक इस काम में आदमी लगते थे। अब इसमें मशीनों की सहायता ली जायगी। गाड़ियों की धुलाई सफाई भी स्वचालित विधि से होने लगी है।

सवारी गाड़ियों में हम छोटी दूरियों के लिए दो मंजिले डब्बे को बेहतर समझते हैं ऐसे डब्बे हमारे देश में ही बनते हैं और उनका उपयोग भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

सवारी गाड़ियों में यात्रियों के लिए हर तरह के नाश्ते का प्रबन्ध रहता है। कुछ लाइनों में सिनेमा की भी व्यवस्था हैं। रेल-यात्राओं का सुखमय होना भी तो उतना ही ज़रूरी है।

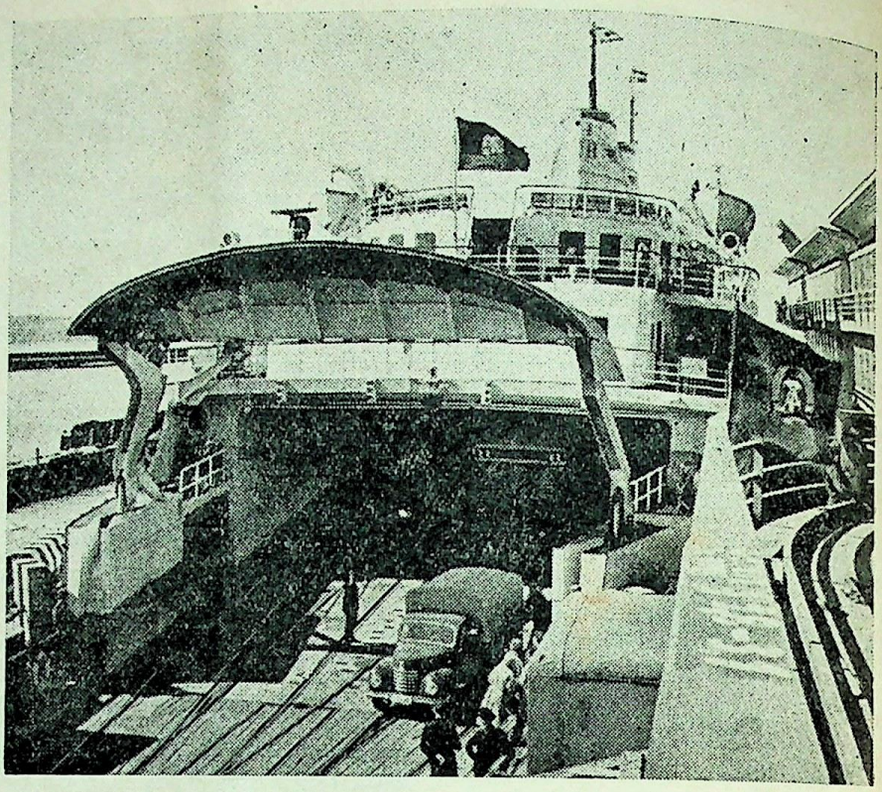

यह ट्रेनें स्वेडन ले जायी जा रही हैं, 'सासनित्ज़' जहाज़ उन्हें ढोकर ले जा रहा है

एदुअर्त फ़ान विन्तर स्ताइन

(पृष्ठ १५ का शेष)

बना रहा। उन्होंने कभी किसी नाटक के नायक बनने की कोशिश नहीं की। उनके स्पर्श से साधारण भूमिकायें भी महान लगने लगतीं।

सन् १९४५ के बाद विन्तरस्ताइन लेज़िंग के नाटकों के साथ आ गये। लेज़िंग (१७२९–१७८१) जर्मनी के क्लासिक नाटककार थे जिनके नाटकों में सहिष्णुता और मानवीयता विन्तरस्ताइन के आदर्श बिन्दु बन गये। 'बुद्धिमान नाथन' जर्मन साहित्य के महानतम नाटकों में से गिना जाता है। उसकी प्रमुख भूमिका में विन्तरस्ताइन लगभग ४०० बार उतरे होंगे। 'नाथन' एक बुद्धिमान और उदार यहूदी है। वह मानवीय प्रतिष्ठा की चरम परिणति है। जर्मनी के तमाम क्लासिक साहित्य का मूलभूत संदेश रहा है कि मानव जाति के समस्त वर्णों और विश्वासों में कोई छोटा-बड़ा नहीं। वह अपनी अनेकताओं के साथ मानवीय संबंधों की एकता, चेतना के उच्चतम शिखरों तक पहुंचने वाली मानवीय प्रगति और समस्त सुन्दरताओं के लिए प्रयास करने का अधिकार रखती है। वह बुद्धिमान और उदारचेता यहूदी 'नाथन' इसी संदेश का प्रतीक है।

और यही वह भूमिका है जिसमें वह वयोवृद्ध अभिनेता लाखों जर्मनीवासियों की स्मृति में जीवित रहेगा और मानवता के उच्च आदर्शों की रक्षा में खड़े लोगों को उसकी स्मृति से प्रेरित करती रहेगी।

दोमंज़िला सवारी ट्रेनें ज.ज.ग. में आम हो चला है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...एक और नन्दनवन

(पृष्ठ १३ का शेष)

सदियों तक यहां के निवासियों के पास खाने के साधनों के नाम पर जंगलों के फल और एल्वे का पानी, छोटे-छोटे खेत और पत्थर काटने की बेगारनुमा मज़दूरी के अलावा कुछ न था। लेकिन आज स्थिति कुछ और है। द्रेसडन के पास ही पिर्ना एक कस्बा है। इसे उस पहाड़ी क्षेत्र का मुख्य द्वार कह सकते हैं। आज यहां रेयन का एक बहुत बड़ा कारख़ाना है। सेवित्स एक और छोटा सा कस्बा है। वह नकली फूलों के लिए संसार भर में मशहूर हो चुका है। सारे देश की तरह यहां के किसानों ने भी सहकारी समितियां बना रखी हैं। आज वे खेतों की जुताई नये-नये साधनों से करते हैं। उनकी आमदनी के और भी ज़रिए निकल आये हैं।

एल्वे की पहाड़ियां आज मज़दूरों का स्विट्ज़रलैंड हैं, अवकाशप्रेमियों का नन्दनवन है। इस सैक्सन स्विटज़रलैंड में आज फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन की ओर से ९०,००० मजदूरों की आराइश का इन्तज़ाम है। सारे जर्मन जनवादी गणतंत्र से लोग यहां आते हैं – पूरे-पूरे परिवारों के साथ। आमतौर से वे एक पखवारा यहां बिताते हैं। आरामदेह कमरे, खूबसूरत होटल, बढ़िया खाना, बीमारों के लिए दवा-दारू की सुन्दर व्यवस्था, घूमने-फिरने के लिए प्रकृति का मखमली आंगन। और खर्च केवल ३० मार्क, औसत माहवारी आमदनी का केवल १६ वां हिस्सा।

मिसाल के लिए 'अन्तोनिन त्सापोतोकी' आरामगाह को लें। पहले यहां एक खानगी होटल था। आज इसे फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन ने इतने बड़े आरामगाह में परिवर्तित और परिवर्धित कर दिया है कि अवकाश के मौसमों में यहां ५ हज़ार लोग ठहर सकते हैं। यह जगह पिकनिक के अनेक रमणीक स्थानों से घिरी हुई है। पास ही खुला रंगमंच भी है। यहां की एक और जगह उल्लेखनीय है जो लड़ाई के पहले यूथ होस्टल था। नाज़ियों ने उसे कन्सेन्ट्रेशन कैम्प बना दिया था, आज जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने उसे फिर यूथ होस्टल का रूप दे दिया है।

१९३० में रविठाकुर जर्मनी आये तो एक दिन के लिए यहां भी ठहरे थे और उस समय उनका निवास मोहेन्स्ताइन प्रासाद में था।

...योग्यता बढ़ाने का अधिकार

(पृष्ठ ७ का शेष)

होती है। इस बीच उन्हें वेतन भी मिलता है। इस बीच वे लोग अपरेन्टिस कहलाते हैं। उनका प्रशिक्षण कुशल श्रमिक-परीक्षा के बाद समाप्त होता है। अपरेन्टिस-काल में हाई स्कूल की परीक्षा देने की भी सुविधा रहती है। इसके लिए उन्हीं प्रशिक्षण-स्कूलों में विशेष कक्षाएं चलायी जाती हैं। प्रशिक्षण की अवधि में ही लोगों को पता चल जाता है कि वे किस उद्योग या संस्थान में काम करने जा रहे हैं।

इस पूरी प्रशिक्षण-व्यवस्था के लिए सरकार काफ़ी धन व्यय करती है। हमारा सात वर्षीय योजना ने कई महान् लक्ष्य निर्धारित किये हैं। कारख़ानों को क्रमशः पूर्ण स्वचालन की ओर ले जाने का लक्ष्य निश्चित किया गया है। इसके लिए मज़दूरों में पहले से कहीं अधिक तकनीकी योग्यता दरकार है। इसीलिए आज हमारे देश के हर नागरिक का यह सामाजिक दायित्व हो गया है कि वह विकसित प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध तमाम सुविधाओं का सदुपयोग करे।

लेकिन विकसित प्रशिक्षण और योग्यता को कानूनों से अनिवार्य नहीं बनाया जा सकता। ऐसा कदम व्यक्ति स्वातंत्र्य के सभी सिद्धान्तों के विरुद्ध होगा। जर्मन जनवादी गणतन्त्र में इस पहलू पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अतः नये श्रम क़ानून द्वारा प्रदत्त उन भव्य अधिकारों और स्वतंत्रताओं का प्रश्न अनिवार्यता का नहीं, बल्कि विश्वास का प्रश्न है।

...मित्र का दर्शन

(पृष्ठ १४ का शेष)

क्या प्रतिक्रिया रही? उन्होंने इसे समझा भी? जब हम अपने देश आये तो हमसे यही सवाल किये गये और उनका उत्तर देते हुए बड़ी ख़ुशी हो रही थी। हमने इनका उत्तर 'हां' में दिया।

हमारी भाषाएं एक नहीं। लेकिन बाख़ संगीत और भारतीय संगीत की भाषाएं (विशेषतः रविठाकुर के गीत-संगीत) एक ही हैं। दोनों में एक ही मानवप्रेम की गहराई है। एक ही घनत्व है। वे हमारे नोट नहीं समझते थे, हम उनके रागों से अपरिचित थे।

लेकिन बाख़ की 'फ़्यूग' कला और भारतीय संगीत ने वह पुल बनाकर खड़ा कर दिया जहां केवल एक मित्र ही दूसरे मित्र से मिल सकता है।

हमारे हर समारोह में, हर विश्वविद्यालय, अकादमी और स्कूल में, जहां-जहां हमारे भाषण हुए और संगीत आयोजन हुआ, श्रोताओं की दिलचस्पी और उत्साह शुरू-शुरू में हमें आश्चर्य में डालते रहे। हमने बराबर एक आश्चर्यजनक सुख का अनुभव किया।

और इस सबका श्रेय उन तमाम प्रोफेसरों, शिक्षकों रेडियो के अधिकारियों और संगीत के कार्यकर्त्ताओं को है जिन्होंने हमें भारतीय संगीत का रस लेने के योग्य बनने का अवसर दिया।

हमारे इन मित्रों ने धीरज और कौशल के साथ अपने संगीत की समस्याओं से हमें अवगत कराया और हमने इस मैत्री-पूर्ण उपहार को माथे से लगाया और जर्मन जनवादी गणतंत्र में संगीत के विकास की उनसे चर्चा की।

विभिन्न नगरों में हमारे संगीत कार्यक्रम हुए। उन सबकी विस्तार से चर्चा करना यहां असंभव है।

हमारे कार्यक्रमों के अवसर पर वैज्ञानिक सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के अनेक व्यक्तियों ने भाषण दिये और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के प्रति आभार प्रकट किया कि उसने बर्लिन चेम्बर को यहां भेजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH — हम जर्मन सीखते हैं

Lektion IX—पाठ नौ

IN EINEM BETRIEB — एक कारखाने में

1. Herr Müller fragt Herrn Bose : Möchten Sie heute einen bekannten Betrieb besichtigen ?" 2. "Ja, gern !"3. Der Betrieb liegt im Norden der Stadt Leipzig und heisst VEB VTA Bleichert. 4. Herr Bose antwortet : "Diesen Betrieb kennt man auch in Indien gut. Die TISCO Jamshedpur hat z.B. eine Seilbahn von diesem Betrieb." 5. Am Eingang des Betriebes begrüsst der Direktor beide Herren. 6. Er geht mit ihnen durch die Fabrik und erzählt ihnen von den kulturellen und sozialen Einrichtungen des Betriebes. 7. Herr Bose fragt : "Darf ich das Kulturhaus und die Poliklinik sehen ?" 8. "Natürlich, sehr gern !" Der Direktor erklärt dem Gast : "Im Klubhaus zeigt man oft Filme, und einmal im Monat ist eine Theateraufführung. Am Nachmittag sind hier auch Veranstaltungen für die Kinder der Arbeiter. Alle Veranstaltungen sind kostenlos." 9. Danach besichtigen die Herren die neue Betriebspoliklinik 10. Hier arbeiten Chirurgen, Internisten und Dentisten. 11. Sie haben schöne Behandlungsräume mit allen modernen medizinischen Geräten. 12. Die Behandlung und die Medizin sind kostenlos.

१. श्री मुइलर श्री बोस से पूछते हैं : "क्या आज आप किसी सुप्रसिद्ध कारख़ाने को देखना चाहते हैं ?" २. "हां, खुशी से ।" ३. कारख़ाना लइपज़िक नगर के उत्तर में स्थापित है और "वी ई बी, वी टी ए ब्लाइख़ेर्त" कहलाता है । ४. श्री बोस उत्तर देते हैं : "यह कारख़ाना भारत में भी सुप्रसिद्ध है । मसलन मेसर्स टिस्को, जमशेदपुर, ने इस कारख़ाने से रोपवे लिया ।" ५. कारख़ाने के दरवाज़े पर संचालक श्री बोस का स्वागत करता है । ६. वह उन लोगों के साथ कारख़ाने में घूमता है और कारख़ाने की सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं के बारे में बताता है । ७. श्री बोस पूछते हैं, "क्या मैं क्लब और कारख़ाने का अस्पताल देख सकता हूँ ?" ८. "हां खुशी से", संचालक अतिथियों से कहता है : "क्लब में अक्सर फ़िल्में दिखायी जाती हैं और महीने में एकबार नाटक अभिनीत होता है । दोपहर के बाद मज़दूर बच्चों के लिए आयोजन और प्रदर्शन भी होते हैं । ये सारे मनोरंजन निःशुल्क हैं । ९. इसके बाद वे सज्जन कारख़ाने का नया अस्पताल देखने जाते हैं । १०. यहां सर्जन (शरीर के) अन्दरूनी (अंगों) के विशेषज्ञ और दांत के डाक्टर काम करते हैं । ११. उनके पास सुन्दर और आधुनिक औषधि-यंत्रों के साथ रोगियों को देखने के कमरे हैं । १२. उपचार और दवाएं निःशुल्क हैं ।

व्याकरण

क्रियाविशेषण

जर्मन भाषा में तीन तरह के क्रियाविशेषण हैं :

१. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(अ) क्रियाविशेषण पद में संज्ञा भी शामिल हो सकती है जिसके साथ चतुर्थी विभक्ति होगी । इसमें प्रश्नवाचक शब्द 'कहां' (wo ?) होता है ।

Der Betrieb liegt im Norden.	Wo liegt der Betrieb ? (Dative)
Diesen Betrieb kennt man auch in Indien.	Wo kennt man auch diesen Betrieb ? (Dative)
Am Eingang des Betriebes begrüsst der Direktor beide Herren. Im Klubhaus zeigt man Filme.	Wo begrüsst der Direktor beide Herren ? (Dative) Wo zeigt man Filme? (Dative)

(ब) . . . . . या द्वितीया विभक्ति के साथ संज्ञा हो सकती है । इसमें प्रश्नवाचक शब्द 'कहां को' (wohin?) है । होता है ।

Beide Herren gehen in ein Cafe.	Wohin gehen beide Herren? (Accusative)
Herr Bose geht in die Oper.	Wohin geht Herr Bose? (Accusative)

(स) . . . . . या क्रियाविशेषण जैसे hier, dort, da आदि अकेले हो सकते हैं । इसमें प्रश्नवाचक शब्द 'कहां' (wo?) होता है ।

Hier arbeiten Chirurgen, Internisten und Dentisten.	Wo arbeiten Chirurgen, Internisten und Dentisten?
Er sieht die Arbeiter dort.	Wo sieht er die Arbeiter?

२. समयवाचक क्रियाविशेषण

(अ) क्रियाविशेषण पद के साथ संज्ञा हो सकता है, जिसमें चतुर्थी विभक्ति हो । प्रश्नवाचक शब्द होगा 'कब' (wann?)

Am Nachmittag sind hier auch Veranstaltungen für die Kinder.	Wann sind hier auch Veranstaltungen für die Kinder? (Dative)
Einmal im Monat ist eine Theateraufführung.	Wann ist eine Theateraufführung? (Dative)

(ब) . . . . . या केवल क्रियाविशेषण जैसे heute, jetzt, täglich, niemals, bald आदि हों । प्रश्नवाचक शब्द होगा 'कब' (wann?)

Im Klubhaus zeigt man täglich Filme.	Wann zeigt mannim Klubhaus Filme?
Heute ist eine Theateraufführung.	Wann ist eine Theateraufführung?

३. भाववाचक क्रियाविशेषण

इसमें केवल क्रियाविशेषण पद जैसे gut, schön, schlecht, freundlich आदि होंगे । प्रश्नवाचक शब्द होगा 'कैसे' (wie?)

Diesen Betrieb kennt man auch in Indien gut.	Wie kennt man diesen Betrieb in Indien?
Der Direktor begrüsst beide Herren sehr freundlich.	Wie begrüsst der Direktor beide Herren?
Der Direktor erklärt dem Gast ausführlich die Einrichtungen.	Wie erklärt der Direktor? dem Gast die Einrichtungen

अभ्यास

(अ) समयवाचक और भाववाचक क्रियाविशेषणों के प्रयोग से इन प्रश्नों का वाक्य बनाइए :

Wann fährt er in die Stadt ?	(heute)
Wann kommen sie in den Betrieb ?	(jetzt)
Wann geht er in das Theater ?	(am Abend)
Wann lernen sie ?	(täglich)
Wie spricht der Direktor ?	(ausführlich)
Wie arbeitet die Maschine ?	(gut)
Wie lernt er Deutsch ?	(schnell)
Wie begrüsst er die Herren ?	(sehr freundlich)

b) Antworten Sie auf die Fragen !

Wo spielen die Kinder ?	(auf der Wiese)
Wo arbeitet er ?	(in dem Betrieb)
Wohin gehen sie heute ?	(in die Stadt)

der Betrieb (e)	देर बेत्रीप (बे)	कारख़ाना
gern	गेरन	खुशी से
liegen (of places)	लीगेन	स्थापित होना
der Norden	देर नोर्देन	उत्तर (दिशा)
VEB [fau e : be :] (der volkseigene Betrieb)	देर फ़ौक्साइगेने बेत्रीप	राष्ट्रीय कारख़ाना
VTA [fau: te: a:] (Verlade und Transportmaschinen)	फ़ेलोदे उन्द त्रांस्पोर्त माशीनेन	लादने और परिवहन यंत्र
kennen	केनेन	जानना
die Seilbahn (en)	दि ज़ाइलबान	रोप-वे
der Eingang (" e)	देर आइनगंग (आइनगेंगे)	प्रवेशद्वार
begrüssen	बेग्रुइस्सेन	स्वागत करना
der Direktor (en)	देर दारेक्तोर (रेन)	संचालक
durch (A)	दुर्ख़	द्वारा, से

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ख़बरें

शांति सन्धि और साइरस इटन

'नुइज़दोइचलंद' नामक समाचार पत्र ने क्लीवलेंड (अमरीका) के प्रमुख उद्योगपति साइरस इटन के पास निम्नलिखित प्रश्न भेजा :

'जर्मनी के साथ शांति सन्धि और पश्चिमी बर्लिन में स्थिति को सामान्य बनाने के संबंध में आपका क्या विचार है ?"

श्री इटन ने उत्तर दिया :

"जर्मन समस्या और निरस्त्रीकरण दो ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो संसार के समस्त राजनायकों की चिन्ता के विषय बने हुए हैं। यदि इसके अपवाद हैं तो केवल वे इने-गिने सनकी लोग जो समझौते के बदले संकट को तरजीह देते हैं। अन्यथा संसार के सभी लोग जर्मनी के साथ शांति सन्धि और निरस्त्रीकरण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रस्तावित शांति सन्धि की दिशा में पहला आवश्यक कदम यह है कि अमरीका और उसके मित्र राष्ट्र जर्मन जनवादी गणतंत्र को मान्यता दें। इसी के साथ अमरीका को यह भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि पूर्वी योरुप के समाजवादी देशों में जिस तरह की सरकारें हों, उनकी जैसी आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाएं हैं, वे मिटायी नहीं जा सकतीं और पश्चिम की कोई भी प्रचार-शक्ति इस स्थिति को बदल नहीं सकती।

"मैं नहीं समझता कि पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी की एकता संभव है। मुझे आशा है कि इन दोनों राज्यों में परस्पर समझौते की भावना पैदा होगी और वे ही बर्लिन की समस्या का कोई हल ढूंढेंगे।

"एक पूंजीपति की हैसियत से, एक ऐसे व्यक्ति की हैसियत से जिसे साम्यवाद को यथार्थवादी दृष्टि से देखने का और योरुप के समाजवादी देशों के राजनेताओं से मिलने का अवसर मिला है, मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि पूर्व और पश्चिम में परस्पर मैत्री और लाभदायक व्यापार संबंध कायम हो सकते हैं।"

घाना के राष्ट्रपति बर्लिन में

घाना गणतंत्र के राष्ट्रपति डा. नुक्रूमा एक अगस्त को जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन पधारे। उनके साथ घाना के यातायात और परिवहन मंत्री क्रोबो इदुसाइ और राज्य मंत्री त्वाइया एदामिफ़िओ भी थे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपमंत्री हाइनरिख होमन ने हवाई अड्डे पर अतिथियों का स्वागत किया। राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्तर उल्ब्रिख्त की ओर से हाइनरिख होमन ने अफ्रीकी अतिथियों के स्वागत में एक छोटा सा भाषण भी किया। घाना के राष्ट्रपति ने हार्दिक स्वागत के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया।

बाद को राष्ट्रपति नुक्रुमा बर्लिन शहर की ओर चले। राष्ट्रपति बर्लिन के हुम्बोल्द विश्वविद्यालय के अतिथि थे। विश्वविद्यालय की ओर से उसके आर्थिक विभाग ने नुक्रुमा को औपचारिक डाक्टरेट की उपाधि दी। अर्थ विभाग के डीन प्रोफेसर कार्ल फ़िशर ने डाक्टर नुक्रुमा की सराहना करते हुए कहा कि वे अफ्रीकी जनता के स्वाधीनता-संग्राम के मार्ग-प्रदर्शकों में से हैं। उपाधि देते समय जो दस्तावेज़ भेंट किया गया उसमें घाना की आर्थिक स्वाधीनता को सुदृढ़ करने में,

(पृष्ठ २० का शेष)

freundlich	फ्रोइन्दलिख़	कृपया
das Interesse (n)	दस इन्तेरेंस्से (स्सेन)	दिलचस्पी
kulturell	कुल्तुरेल	सांस्कृतिक
sozial	ज़ोत्सिअल	सामाजिक
die Einrichtung (en)	दि आइनरिख़तुंग (गेन)	संस्था
dasKulturhaus (" er)	दस कुल्तूर हाउस	क्लबघर
die Poliklinik (en)	दि पोलीक्लिनीक	कारख़ाने का अस्पताल
natürlich	नातुर्लिख़	स्वभावतः
oft	ओफ़्त	अक्सर
einmal	आइनमल	एक बार
die Theateraufführung(en)	दि थेआतेर आउफ़ फ़ुइरुंग	नाटक-अभिनय
der Nachmittag (e)	देर नाख़ मिताग	अपराह्न, दोपहर के बाद
die Veranstaltung (en)	दि फ़ेरनेश्तालतुंग	समारोह, सभा, आयोजन
das Kind (er)	दस किन्द (देर)	बच्चा
kostenlos	कोस्तेनलोश	निःशुल्क, मुफ़्त
der Chirurg (en)	देर ख़िरुर्ग (गेन)	सर्जन, (डाक्टर)
der Internist (en)	देर इन्तेरनिस्त (तेन)	शरीर-विशेषज्ञ
der Dentist (en)	देर देन्तिस्त (तेन)	दांत-विशेषज्ञ
die Behandlung (—en)	दि बेहान्दलुंग	उपचार
der Behandlungsraum ("e)	देर बेहान्दलुंग्सराउम	मरीज़ देखने का कमरा
modern	मोदेर्न	आधुनिक
medizinisch	मेदित्सीनिश	औषधिसंबंधी
das Gerät (e)	दस गेरैत (ए)	यंत्र
die Medizin	दि मेदित्सीन	दवा, औषधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति की भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि वह संसार की दलित जनता के लिए एक आदर्श कहा जा सकता है। डा. नुक्रुमा ने अपने संक्षिप्त भाषण में इस सम्मान के प्रति अपना आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उन तमाम लोगों के प्रति सम्मान-प्रदर्शन है जो अफ्रीकी एकता और स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं।

बाद को जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद ने घाना के राष्ट्रपति के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया। उप-प्रधान मंत्री बुनो लुइशनर ने राष्ट्रपति को आश्वासन देते हुए कहा कि हमारा देश घाना के साथ है और समस्त अफ्रीकी जनता के स्वाधीनता-संग्राम में, उपनिवेशवाद के अन्तिम रूप से खात्मे, साम्राज्यवाद के अन्त और अफ्रीका की राजनीतिक एकता के संघर्ष में जर्मन जनवादी गणतंत्र सच्चे मित्र के रूप में उनके साथ है।

राष्ट्रपति घाना ने कहा कि घाना शांति पूर्ण वातावरण और देशों के बीच व्यापारिक संबंधों के विकास का समर्थक है।

शत्रुओं के लिए पैसा नहीं

'दिवेल्त' (पश्चिमी जर्मनी) ७ जुलाई १९६१

घाना के राष्ट्रपति डा० नुक्रूमा ने एक सरकारी विज्ञप्ति में जर्मनी और बर्लिन से संबंधित सोवियत प्रस्तावों के समर्थन में अपने विचार प्रकट किये।

नुक्रूमा का विचार निन्दनीय है। लेकिन पश्चिम जर्मन सरकार नुक्रुमा को अपने विचारों में परिवर्तन करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती क्योंकि घाना एक प्रभुसत्तासम्पन्न-सरकार है और राष्ट्रपति अपने देश की जातियों का संचालन करते हैं।

लेकिन क्या नुक्रुमा के ये विचार, जो मास्को के दावों का समर्थन करते हैं और जर्मनी के दावों का विरोध करते हैं, स्वयं घाना के लिए लाभदायक हैं—यह एक दूसरा प्रश्न है। घाना को भी अन्य अविकसित देशों की ही भांति अपनी आर्थिक प्रगति के लिए पश्चिमी देशों से, और विशेषतया पश्चिमी जर्मनी से धन की आशा है और नुक्रुमा जो रुख अपना रहे हैं उससे उपर्युक्त आशा के पूरा होने की संभावना धुंधली ही पड़ती है...

पश्चिमी जर्मनी निश्चय ही घाना की नीतियों को रूप देने का दावा नहीं करता। लेकिन पश्चिमी जर्मनी इस अधिकार की मांग जरूर करता है कि वह अपनी आर्थिक सहायता जिस तरह चाहे, दे। अगर वह सबसे पहले अपने मित्रों की ओर नज़र डाले तो इसमें किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। अब जब नुक्रुमा हमारे विरुद्ध रुख अपना चुके हैं तो अगर घाना को हमसे निराश होना पड़े तो अक्रा में किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। शायद किसी में भी यह दावा करने का साहस न हो कि कोई सरकार अपने शत्रुओं की सहायता के लिए भी बाध्य है।

ट्यूनीशिया का आभार-प्रदर्शन

फ्रान्सीसी आक्रमण के विरुद्ध ट्यूनीशिया के संघर्ष में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने जिस एकता का प्रदर्शन किया उसके प्रति ट्यूनीशिया ने आभार प्रकट किया।

इस सिलसिले में राष्ट्रपति हबीब बोर्गीबा के आदेश पर उनकी सरकार के एक प्रतिनिधि को एक तार भेजा गया:

"ट्यूनीशिया के अध्यक्ष महामहिम बोर्गीबा ने मुझे निर्देश दिया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने ट्यूनीशिया के हाल के स्वतंत्रता-संग्राम में जिस एकता और मैत्री का परिचय दिया है उसके बदले में उनकी ओर से, ट्यूनीशिया की सरकार और जनता की ओर से जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और जनता के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करूं। हमारे न्यायोचित संघर्ष में जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने जो समर्थन किया है उससे उपनिवेशवाद के विरुद्ध हमारी शक्ति में निश्चय ही वृद्धि हुई है।"

उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष में तरुणों का समर्थन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की तरुण पीढ़ी अफ्रीकी, एशिया और लैटिन अमरीका के उपनिवेशवाद-विरोधी शानदार संघर्ष का पूरी सहानुभूति और निष्ठा के साथ समर्थन कर रही है। यह

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेष दूत प्रो. हागर (बायें से तीसरे) के सम्मान में दिल्ली स्थित व्यापार दूतावास ने एक स्वागत समारोह का आयोजन किया। १८ अगस्त को उस अवसर पर अशोका होटल में विभिन्न राजनायकों और भारत सरकार के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त रक्षामंत्री श्री कृष्ण मेनन भी उपस्थित थे

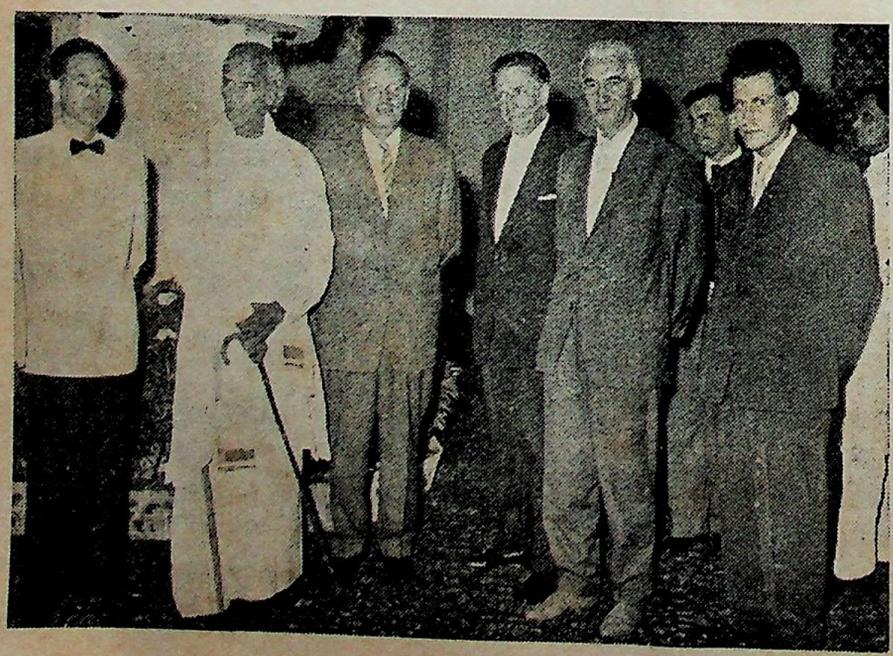

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना जर्मन जनवादी गणतंत्र के नौजवान संघ की केन्द्रीयपरिषद के मंत्री बर्नर लेम्बर्त्स ने दी और कहा कि गत तीन वर्षों में २४ अफ्रीकी-एशियाई देशों के छात्रों को जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए ३७० वृत्तियां दी गयीं। इसके अतिरिक्त अक्रा (घाना) और कौनक्री (गिनी) में क्रमशः मैत्री-केन्द्र और तरुण-विद्यालय की स्थापना भी जर्मन जनवादी गणतंत्र के नौजवान संघ की ओर से की जा रही है।

पश्चिमी जर्मनी का बहुमत आणविक शस्त्रीकरण के विरुद्ध

पश्चिमी जर्मनी के राईन सूबे (वेस्ट फालिया) में एक ग़ैर सरकारी मत संग्रह के अनुसार ६३ फ़ीसदी जनता ने बोन हुकूमत की अणु शस्त्रीकरण नीति का विरोध किया। यह मत-संग्रह युद्ध विरोधी संघ ने आयोजित किया जिसका विषय था, "क्या आप पश्चिमी जर्मनी में आणविक शस्त्रीकरण के पक्ष में हैं?" यह मत-संग्रह २७ से ३० जुलाई तक चला। बहुमत ने उक्त प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में दिया। केवल ९ फ़ीसदी व्यक्तियों ने आणविक शस्त्रीकरण का समर्थन किया। २८ फ़ीसदी अनुपस्थित रहे।

प. जर्मनी के कारख़ानों में दुर्घटनाएं

प. जर्मनी के समाचार पत्र 'न्यू राइन ज़ाइतुँग' ने २६ जुलाई १९६१ के अंक में एक समाचार प्रकाशित किया है:

"फेडरल रिपब्लिक के कारख़ानों में हर रोज़ दुर्घटनाओं के कारण मरने वालों की संख्या का औसत १३ व्यक्तियों का है। केवल पिछले एक वर्ष में ४७०० मज़दूरों को रोटी कमाने के नाम पर अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

"पिछले साल हमारे कारख़ानों में हुई दुर्घटनाओं और बीमारियों का औसत दुनिया भर में एक रिकार्ड क़ायम कर चुका है। कुल २३, ५८,५०० व्यक्ति दुर्घटना के शिकार हुए जोकि सन् १९५९ की तुलना में १,८३,५०० अधिक है।

अगस्त में ज. ज. ग. के पायोनियर आन्दोलन का चौथा समारोह एरफ़ुर्त में हुआ। देश भर से आये हुए किशोर प्रतिनिधियों ने खेल-कूद और दूसरी सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया। ब्रिटेन, स्कैन्डिनेविया, हालैंड और १५ दूसरे देशों से मेहमान भी आये थे।

हिरोशिमा के अतिथि विदा

हिरोशिमा और नागासाकी के दो अतिथि जर्मन जनवादी गणतंत्र में अपना उपचार समाप्त करके स्वदेश रवाना हो गये। मियुकी हिनरा और सुमितेस तानिगुची जापान पर गिराये गये एटम बमों के शिकार हुए थे। इनके उपचार का प्रबन्ध जर्मन जनवादी गणतंत्र के मजदूर संघ ने किया। एक समझौते के अनुसार आशा की जाती है कि जापान से कुछ और ऐसे ही लोग उपचार के लिए जर्मन जनवादी गणतंत्र आयेंगे।

ज. ज. ग. में ६ लाख नये फ़्लैट

गत कुछ वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र में ६ लाख नये फ़्लैट बने जिनमें ८० हज़ार पिछले साल ही बनकर तैयार हुये। दूसरी विशेषता यह रही कि किरायों में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं हुई। पश्चिमी जर्मनी में मकानों का किराया औसत ५० फ़ीसदी अधिक है।

गत महायुद्ध में जितने मकान ध्वस्त हुये थे उनकी अपेक्षा आज ३० हज़ार और नये फ़्लैट बन गये हैं। फिर भी १९५८ में ५,७०,००० नये फ़्लैट की ज़रूरत थी क्योंकि पुराने मकानों की जगह नये मकान बनाने हैं और दूसरे अबादी भी बढ़ रही है।

ज. ज. गणतंत्र और यूगोस्लाविया के संबंध

जर्मन जनवादी गणतंत्र और यूगोस्लाविया के बीच हाल में एक समझौता हुआ है जिसके अनुसार टेकनीकल और वैज्ञानिक सहयोग के काम शुरू किये जायंगे। समझौते में विशेषतया इंजिनियरिंग, इलेक्टरो-इंजिनियरिंग, रसायन-उद्योग और धातु-उद्योग की दिशा में सहयोग किया जायगा।

राष्ट्रीय आय में वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय आमदनी १९५९ में ७०४ हज़ार लाख मार्क थी जो कि गत वर्ष ७३६ हज़ार लाख मार्क तक पहुंच गई। ये आंकड़े १९६०-६१ के यिअर-बुक में दिये गए थे।

अन्य व्यौरों के अनुसार यह प्रमाणित हुआ कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक जीवन में हर कहीं संतुलन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
२५-३-६२

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी

३ वर्ष ७
मार्च
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ३ २० मार्च, १९६२

यह अंक

पृष्ठ

शांति-सन्धि के लिये एक दशक से निरन्तर प्रयास ३

व्यक्तित्व की झांकी
वाल्देमार श्मित ५

जनवाद के बढ़ते चरण
सप्तवर्षीय योजना और बर्लिन ६
हम धमकियों में नहीं आते ७
चीनी मिट्टी का सामान ८
ज. ज. ग. : क़ानून और यथार्थ की दृष्टि में ९
क्लारा ज़ेटकिन : नारी संघर्ष की मूर्ति १०
नयी जर्मन नारी का प्रतीक १२
"... बादाम के भीतर छुपी हुई एक दुनिया ..." १४
एक गांव की कहानी १५
कवि की पारदर्शी आंखों में बर्लिन १६

डेफ़ा फ़िल्म जगत
समस्या और समाधान १८

वोर लरनेन दोइच
पाठ पंद्रह १९

ज़र्मनी की ख़बरें २२

मुख पृष्ठ :

भविष्य उज्ज्वल है ! . . . . फिर क्यों न जी भरकर हंसे यह किसान युवती !

अन्तिम पृष्ठ :

बर्लिन के सौंदर्य की अभिन्न सहचारी, श्प्री नदी . . . . !

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक बिल्डिंग, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति-सन्धि के लिये एक दशक से निरन्तर प्रयास

दस वर्ष पहले, १३ फरवरी के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने पहली बार यह प्रस्ताव सामने रखा कि एक शांति संधि द्वारा दूसरे विश्व-युद्ध के अवशेषों को खत्म करना चाहिये। सोवियत संघ की सरकार ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और इसको अमल में लाने के लिये १० मार्च, सन् १९५२ को शांति संधि का पहला दस्तावेज तैयार किया। यह प्रस्ताव दिन प्रति दिन दुनिया में लोकप्रिय होने लगा। समाजवादी देशों के अलावा कई दूसरी सरकारों ने भी इस पहल का अनुमोदन किया। बहरहाल, शांति संधि की इस मांग में, ज. ज. ग. सब से आगे रहा, क्योंकि यहां की सरकार यह जानती है कि शांति-संधि न केवल ज. ज. ग. के लिये ही जरूरी है, बल्कि यूरोप और दुनिया की शांति की सुरक्षा भी इस सन्धि से जुड़ी हुई है।

१३ फरवरी का दिन एक भयंकर दिन है ज. ज. ग. के इतिहास में। सन् १९४५ में, इस दिन, हमारा एक अत्यन्त सुन्दर नगर बरबाद हुआ। यह बदक़िस्मत नगर था ड्रेसदन, जो एल्बे नदी के तट पर खड़ा था और जो संस्कृति तथा कला का एक महान केन्द्र था! केवल एक रात में यहाँ (बमबरी से) ३५,००० लोग मौत का ग्रास बन गये और सौन्दर्य का स्थान खण्डहरों ने ले लिया। इसलिए ज. ज. ग. की सरकार द्वारा प्रस्तावित शांति-सन्धि के लिए, इससे बढ़कर और कोई शुभ दिन नहीं। ज. ज. ग. का कोई भी निवासी १३ फरवरी, १९४५ की वह भयानक रात कभी भूल नहीं सकता। उसकी एकमात्र कामना यही है कि वह काली रात कभी लौट कर न आये—न ड्रेसदन, और न ही जर्मनी के किसी अन्य नगर के लिए! दुनिया के लिए भी नहीं।—लेकिन इस शुभ इच्छा के फली-भूत होने के लिए एक ही रास्ता है, वह यह कि दोनों जर्मन राज्यों के बीच शांतिसंधि हो!

इस संधि के लिए अब तक, पश्चिमी जर्मनी की सरकार से कई बार बात चीत चलाने के प्रयत्न किये गये। लेकिन दुर्भाग्य से जर्मन फेडरल रिपब्लिक (प. जर्मनी) में कई ऐसे तत्व और शक्तियाँ हैं जो ड्रेसदन की उस काली रात और जर्मनी की तबाही के बारे में ग़लत तरीक़ों से सोचते हैं। वे सिर्फ़ इस बात का रोना रोते हैं कि जंग में उनकी शिकस्त हुई और जर्मनी के शहरों पर बम गिरे। उनको इस बात का कोई दुख या चिन्ता नहीं कि वारसा जैसे अन्य देशों के शहर जर्मन बमों से नष्ट भ्रष्ट हुए! ये तत्व आज भी सैनिकशक्ति से दूसरे देशों और ख़ासकर ज. ज. ग. पर अधिकार करने का ख़्वाब देख रहे हैं।

'प्रशियनवाद' एक कुख्यात तथा घृणित शब्द है जिससे सारा संसार परिचित है और जो परम्परागत जर्मन आक्रामकता का प्रतीक है। लेकिन प्रशिया, यानी पुराना जर्मनी अब मौजूद नहीं। उसके स्थान पर अब दो जर्मन राज्य नमूदार हुये हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की बुनियाद ही पड़ी है जर्मनी की परम्परागत आक्रामकता तथा सैनिकवाद के विरोध और शांति तथा जनवाद की परम्पराओं पर! ये स्वस्थ जनवादी परम्परायें भी पुरानी जर्मनी में मौजूद थीं जिनके भव्य प्रतीक थे गेटे और बिथोव्न जैसे महान लेखक तथा संगीत कार और मार्क्स और एंगेल्स जैसे महान दार्शनिक तथा विचारक। शांति तथा जनवादी परम्पराओं की पोषक ज. ज. ग.

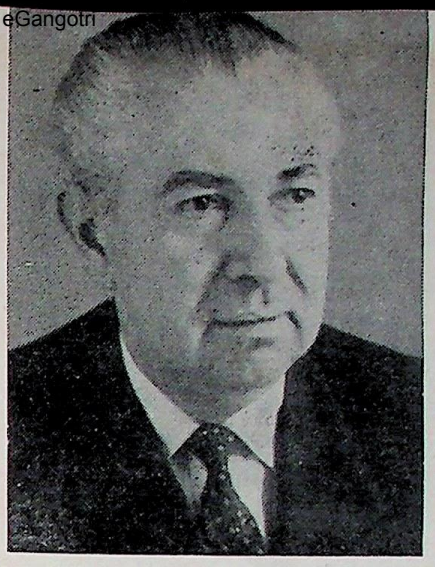

अलविदा, श्री रेनाइज़ेन!

भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-प्रतिनिधि श्री एरिक रेनाइज़ेन, २३ फरवरी १९६२ को भारत से विदा हुये।

श्री रेनाइज़न, १९०७ में बर्लिन में पैदा हुये। आपने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया, लेकिन वित्त से संबंधित विषयों में आपकी विशेष रुचि थी। जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश तथा अन्दरूनी व्यापार मन्त्रालय में आप कई उच्च पदों पर आसीन रहे हैं। श्री रेनाइज़ेन सन् १९५८ में वर्तमान पद पर नियुक्त हुये।

श्री रेनाइज़ेन की नियुक्ति के बाद, पहले ही वर्ष में, भारत और ज. ज. ग. के बीच सन्तुलित व्यापार की स्थापना हुई। भारत में आप चार वर्षों तक उल्लिखित पद पर रहे और इस अवधि में हमारे दो देशों के बीच व्यापार का परिमाण ३ करोड़ और १० लाख रुपयों तक पहुंच गया। श्री रेनाइज़ेन के समय में ही हमारे दो देशों के बीच औद्योगिक सहयोग का शुभारंभ हुआ। ज. ज. ग. के इस सहयोग से भारतवर्ष ने कई नये औद्योगिक क्षेत्रों में पदार्पण किया है।

व्यापारिक संबंधों के अलावा, भारत और ज. ज. ग. के बीच कई मूल्यवान सांस्कृतिक रिश्ते भी जुड़ गये हैं! अनेक भारतीय विद्यार्थी उच्च शिक्षा पाने और प्रशिक्षण के लिये ज. ज. ग. के विश्वविद्यालयों तथा कारखानों में पढ़ने के लिये गये हैं। श्री रेनाइज़ेन को इस बात की बहुत खुशी है कि भारतीय जनता ज. ज. ग. की प्रगति और विकास में काफ़ी रुचि रखती है। साथ ही भारतवासियों को जर्मन समस्या समझने का भी अच्छा अवसर मिला है।

श्री रेनाइज़न ने इस विश्वास के साथ भारत से विदा ली कि भारतवर्ष और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच जो व्यापारिक, सांस्कृतिक तथा अन्य संबंध जुड़ गये हैं उनको दृढ़ बनाने और विस्तार देने की नीव मजबूत हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सरकार का यह अटल निश्चय है कि वह प. जर्मनी के उन तत्वों और शक्तियों के ऐसे तमाम प्रयत्नों तथा कामों को हर कीमत पर रोकेगी जिनसे दुनिया तीसरे युद्ध का आहार बने ! ज. ज. ग. इस दृढ़ संकल्प को अपना ऐतिहासिक कर्तव्य समझता है।

जर्मन फेडरल रिपब्लिक की हकूमत के दिल में यह बात बुरी तरह खटकती है कि वह जर्मन जनवादी गणतंत्र पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकती। उसकी क्रोधाग्नि इसलिये और भी भड़क उठती है क्योंकि ज. ज. ग. की सरकार उसके युद्ध पोषक इरादों तथा योजनाओं के सफल होने में बहुत बड़ी रुकावट है। इसलिये वक़्त बेवक़्त, ज. ज. ग. के विरुद्ध घिनौवना प्रचार और उस पर ओछे हमले करती रहती है। यही कारण है कि वह शांति संधि से संबंधित जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रत्येक प्रस्ताव को भी ठुकरा देती है। सच तो यह है कि जर्मन फेडरल रिपब्लिक के शासक शांतिसंधि चाहते ही नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि जर्मनी की वर्तमान अनस्थिरता में ही उनके ख़तरनाक इरादे तथा गंदी योजनायें पनप सकती हैं। जर्मनी का प्रथम शांति प्रिय राज्य, ज. ज. ग. उसकी इन योजनाओं को अमली रूप लेने में बाधक है। इसलिये इसका अस्तित्व भी उसको असह्य है।

इन दुर्भावनाओं तथा कुविचारों के फलस्वरूप पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने ज. ज. ग. के ख़िलाफ तोड़ फोड़ तथा ऐसी ही उत्तेजनात्मक सरगर्मियां बहुत तेज़ कर दीं हैं। लेकिन १३ अगस्त सन् १९६१ के दिन—अर्थात् शांतिसंधि से संबंधित ज. ज. ग- के प्रथम प्रस्ताव की दसवीं वर्षगाठ के ठीक छः महीने पहले —प. जर्मनी की इन उत्तेजनात्मक कारवाइयों को समाप्त कर दिया गया (उस दिन जनवादी बर्लिन के गिर्द, कंक्रीट की दीवार खड़ी कर दी गई)। यदि ज. ज. ग. की सरकार ऐसा न करती तो ऐसा द्वन्द्व छिड़ने का ख़तरा था जो विश्वयुद्ध का रूप भी धारण कर सकता था। ज. ज. ग. ने एक बार फिर संयम तथा नियंत्रण का प्रमाण दिया और इस तरह झगड़े को फैलने से रोका।

१३ अगस्त, सन् ६१ के पहले और बाद की घटनाओं ने उन लोगों को नंगा कर दिया है जो शांति को भंग करना चाहते हैं। इस संदर्भ में इस घटना का स्मरण दिलाना ज़रूरी है कि प. जर्मनी के युद्ध-लोलुप तत्वों ने जनवादी बर्लिन के एक रेलवे-स्टेशन के नीचे एक सुरंग खोदी थी जिससे हज़ारों लोगों की जान ख़तरे में पड़ गयी थी। (विवरण के लिये नीचे का चित्र देखें—सं.) यह नई घटना पश्चिम बर्लिन की समस्या के फ़ौरी हल और शांतिसंधि की आवश्यकता को सिद्ध करती है। नहीं तो ऐसे प्रयत्नों का अन्त होना तो दूर रहा, प. जर्मनी तोड़ फोड़ के इन कामों को और भी तेज़ करेगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार जहां अपने बचाव के लिए हर क़दम उठायेगी, वहां वह अन्य देशों के साथ सह-अस्तित्व और सद्भावना की अपनी नीति का पूरा पालन करेगी और शांति संबंधी अपने प्रयत्नों को जारी रखेगी। ज. ज. ग. के लिये यह सौभाग्य और हर्ष की बात है कि इसके उच्च पदों पर ऐसे लोग आसीन हैं जिन्होंने युद्ध, साम्राज्यवाद, फासिस्तवाद और उपनिवेशवाद के ख़िलाफ निरन्तर लड़ा है और शांति, समाजवाद, उपनिवेशों के मुक्ति-संघर्ष

(शेष पृष्ठ ११ पर)

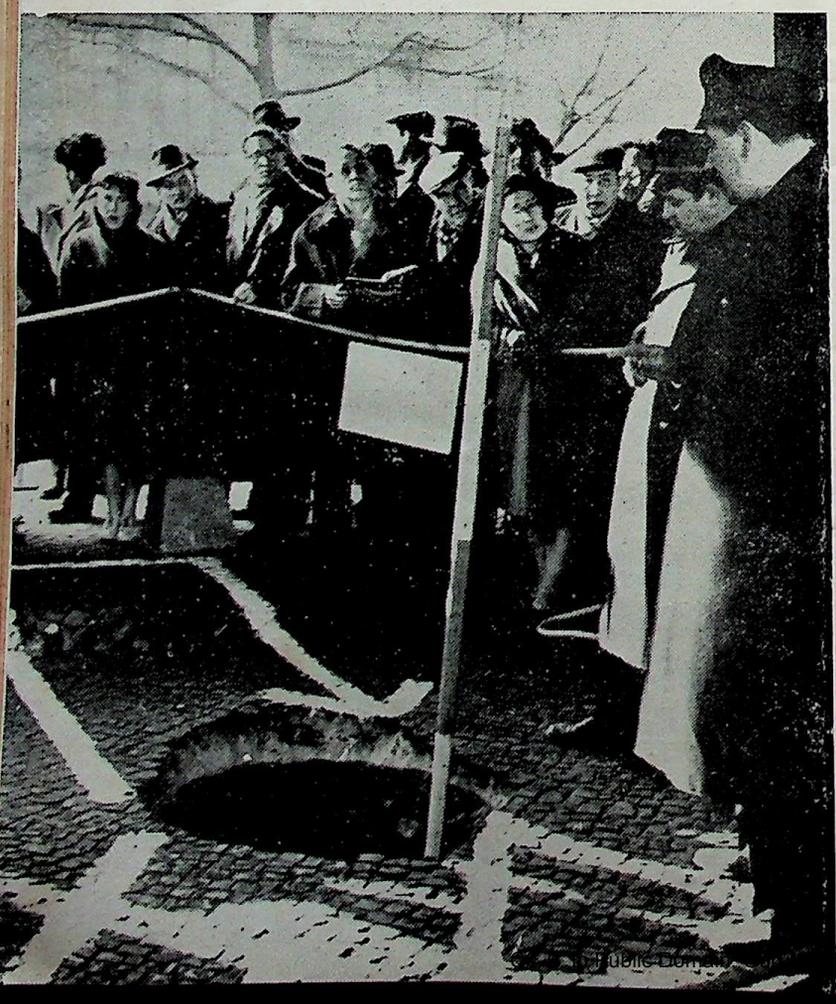

तोड़ फोड़, जासूसी और नई उत्तेजनायें

पहली फरवरी को जर्मन तथा विदेशी पत्रकारों को उन नये ख़तरों और उत्तेजनाओं से अवगत कराया गया जो पश्चिम बर्लिन से ज.ज.ग. के खिलाफ आरंभ कर दी गयी हैं।

हाल ही में एक ऐसी सुरंग का पता चला है जो जनवादी बर्लिन के एक रेलवे स्टेशन के नीचे खोदी गई थी। इस सुरंग से, पश्चिमी जर्मनी से, जासूस तथा तोड़-फोड़ करने वाले व्यक्तियों को दाखिल करने की योजना थी। लेकिन प. बर्लिन जासूसों और तोड़-फोड़करने वालों की बदकिस्मती से इस सुरंग का एक भाग अन्दर धंस गया और ज.ज.ग. के रेल-प्रशासन ने, जो बर्लिन के दोनों भागों की रेलों का प्रबंध करता है, फ़ौरन इस चोर उत्तेजना का भांडा फ़ोड़ दिया।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झांकी :

वाल्देमार श्मित

बर्लिन के लार्ड मेयर के स्थायी सहायक

वाल्देमार श्मित, जनवादी बर्लिन के लार्ड मेयर के स्थायी सहायक हैं। आजकल आप जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के नगर निगम के एक प्रतिनिधि-मंडल के साथ भारत का दौरा कर रहे हैं। स्थायी सहायक के पद पर आप सन् १९५३ से आसीन हैं और इस हैसियत से आपने यूरोप, एशिया और अफ्रीका के अनेक मेहमानों का स्वागत किया है।

१४ वर्ष की आयु में श्री श्मित जर्मन धातु मज़दूर संघ में शामिल हुए। वर्तमान शताब्दी के तृतीय दशक के अन्तिम वर्षों में आपने बढ़ते हुए नाज़ीवाद के ख़िलाफ संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। हिटलर के राजसत्ता हथियाने के बाद, श्री श्मित को फ़ासिस्तों के क्रूर और आतंकपूर्ण शासन के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के लिए गुप्त और गैरक़ानूनी जीवन में प्रवेश करना पड़ा। सन् १९३५ में गेस्टापो द्वारा आप पकड़े गये और सन् १९३६ में १२ वर्ष की कड़ी सज़ा मिली। साथ ही आपको १० वर्षों तक नागरिक अधिकारों से भी वंचित किया गया। अन्त में विजयी सोवियत सेना द्वारा आप १९४५ में मुक्त हुये।

फ़ासिस्तों के नारकीय जेल से रिहा होने के बाद भी श्री श्मित आराम करने वाले नहीं थे। "आराम का वक़्त नहीं है," वह बोले, "हमारे सैकड़ों कस्बे और गांव तबाह हो चुके हैं। इस तबाहा के दाग़ हमको मिटाने हैं। देश के नवनिर्माण का अब समय आ गया है।"

सन् १९४५ में बर्लिन के कई उच्च पदों पर आपने काम संभाला। सन् १९४६ में सम्पूर्ण बर्लिन नगर-संसद के आप सदस्य चुने गये। इस संसद में सोशल डेमोक्रैटिकपार्टी तथा सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी का भारी बहुमत था। इस नगर-संसद ने बर्लिन के लिए कई कानून पास किये। लेकिन आरम्भ से ही स्थानीय और विदेशी साम्राज्यवादियों ने इन जनवादी सुधारों का विरोध किया। बर्लिन के पश्चिमी भागों में इन सुधारों को लागू करने से रोका गया, यद्यपि ये क़ानून संपूर्ण बर्लिन की निर्वाचित संसद ने पास किये थे। इसी प्रकार, सितम्बर सन् १९४८ में पश्चिम बर्लिन में अलग मुद्रा चालू कर दी गई। बर्लिन को विभाजित करने में यह एक उत्तेजनात्मक और निर्णायक क़दम था। वे दुःखद दिन श्री श्मित को बहुत अच्छी तरह याद हैं। उन्होंने कहा, "वे दिन ज़बरदस्त संघर्ष के दिन थे उन लोगों के लिये जिन्होंने बर्लिन की एकता बनाये रखने के लिये जी जान की बाज़ी लगा रखी थी।... आज बर्लिन के विभाजन के बाद भी हम बर्लिन को पुनः एक करने की लगातार कोशिश कर रहे हैं। लेकिन प. बर्लिन का सेनेट, आज तक भेजे गये हमारे प्रस्तावों तथा सुझावों को हर बार अस्वीकार करता रहा है। प. बर्लिन, ज. ज. ग. के बीच में मुद्रा की चोरबाज़ारी, जासूसी तथा तोड़-फोड़ करने का भयंकर अड्डा बन गया है। लेकिन हमें इस बात का दृढ़ विश्वास है कि प. बर्लिन के निवासी इस तथ्य को जान जायेंगे कि प. बर्लिन को स्वतंत्र, असैनिक और शांतिप्रिय नगर में तबदील करने में उनका भी फ़ायदा है। ऐसे नगर में, एक ओर तो वे हिंसावादी प्रचार और विदेशी सेनाओं के आधिपत्य से मुक्त हो जायेंगे और दूसरी ओर, ज.ज.ग. उत्तेजनाओं के सबसे ख़तरनाक अड्डे से छुटकारा पायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

सप्तवर्षीय योजना और बर्लिन

अर्नस्ट उल्फ़, टाउन कौंसिलर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन, उद्योग और यातायात का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। ज. ज. ग. की सप्तवर्षीय योजना में, बर्लिन के कारखानों का उत्पादन, सन् १९६५ तक १०० प्रतिशत बढ़ाने की योजना है। उद्योग का समाजवादीकरण ही इस लक्ष्य की पूर्ति का प्रमुख साधन है। इसलिये, उत्पादन का तकनीकी स्तर बढ़ाना, उत्पादन के अच्छे से अच्छे तरीकों को संगठित तथा विकसित करना और उत्पादन को बढ़ाने के अत्यन्त विकसित वैज्ञानिक साधनों तथा उत्पादन-पद्धतियों को अपनाना, हमारा प्रमुख काम बन गया है। सन् १९६५ में, १० लाख मार्क कीमत वाले उत्पादन के लिये साल में केवल २१ व्यक्तियों की आवश्यकता होगी, जबकि इतने ही समय और कीमत की वस्तुओं के उत्पादन के लिये सन् १९५८ में ४२ व्यक्तियों की जरूरत पड़ती थी।

बर्लिन के उद्योगों में बिजली और इंजीनियरी उद्योग सबसे प्रमुख उद्योग है। ज.ज.ग. की कुल बिजली का ३० प्रतिशत भाग आजकल बर्लिन में ही पैदा होता है। ज. ज. ग. के विकास में बिजली उद्योग विशेष महत्व रखता है क्योंकि शक्ति को विकसित करने और उत्पादन को स्वचालित और मेकनीकी ढंग पर चालू करने का मूलाधार बिजली की शक्ति ही है।

हम री राजधानी के इंजीनियरी कारखाने, ज. ज. ग. को अधिक बिजली सप्लाई करने वाले टरबाइन और जनरेटर पैदा करते हैं। इसके अलावा, वे उत्पादन को बढ़ाने वाले स्वचालित मशीनी औज़ार भी पैदा करते हैं।

यह एक मानी हुई बात है कि उत्पादन में लगातार वृद्धि होने का मतलब है जनता के जीवन स्तर का भी लगातार बढ़ते रहना। इसका अर्थ यह भी है कि दुकानें अनेक प्रकार की वस्तुओं से भरपूर रहती हैं जहां लोग हर समय मन पसन्द वस्तुएं ख़रीद सकते हैं।

फ़ासिस्त युद्ध के दौरान बर्लिन के अनेक मकान तथा अन्य चीजें बरबाद हो गईं। इसलिये, सप्तवर्षीय योजना में बर्लिन का पुनर्निर्माण एक महत्वपूर्ण काम है। सन् १९६५ तक ७७,००० नये मकान बनेंगे जो लहलहाते बागों और सुसज्जित पार्कों से सुशोभित होंगे। इन नये रहायशी क्षेत्रों में अत्याधुनिक ढंग की दुकानें, मोटर गैरेज, खाने पीने के रेस्त्रां तथा दूसरी आराम देने वाली वस्तुएं उपलब्ध होंगी। श्रमजीवी माताओं को अपने बच्चों की चिन्ता से मुक्ति मिलेगी क्योंकि शिक्षित नर्सों की देख-रेख में कई नर्सरियां चालू होंगी। १९६५ के अन्त तक बच्चों की शिक्षा से संबंधित ऐसी सभी ज़रूरतें प्रदान कर दी

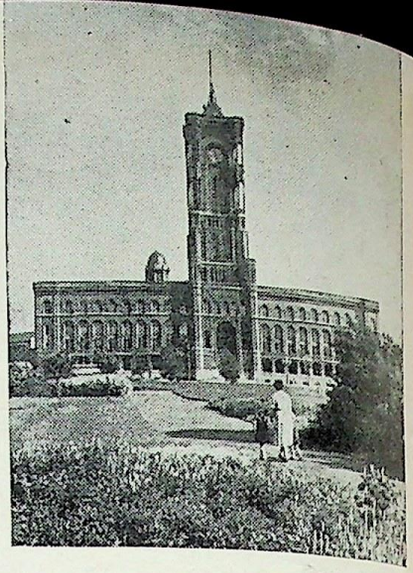

जनवादी बर्लिन के नगर निगम का आवास : 'लाल टाउनहाल'

जायेंगी जो हर बच्चे के लिये पोलि-टेकनीक हाई स्कूल में १० कक्षाओं तक पढ़ने के लिये आवश्यक हैं। इसका मतलब है सार्वजनिक शिक्षा पर खर्च बढ़ा दिया जायेगा। इस प्रकार नगर के हर व्यक्ति की शिक्षा पर ८० प्रतिशत अधिक पैसा खर्च किया जायेगा।

जनता की सांस्कृतिक आवश्यकताओं की ओर भी यथेष्ट ध्यान दिया जायेगा। मनोरंजन के अनेक केन्द्रों की स्थापना होगी। इन सांस्कृतिक केन्द्रों का पूरा-पूरा लुत्फ़ उठाने के लिए लोगों की आय को बढ़ाना होगा : एक ओर उनका वेतन बढ़ा दिया जाएगा और दूसरी ओर चीज़ों के दाम घटा दिए जायेंगे। आवश्यक चीज़ें इफरात से सप्लाई की जायेंगी। इन चीज़ों का

(शेष पृष्ठ ११ पर)

बर्लिन में कार्ल मार्क्स एले

बर्लिन के सर्वतोमुखी निर्माण का एक दृश्य

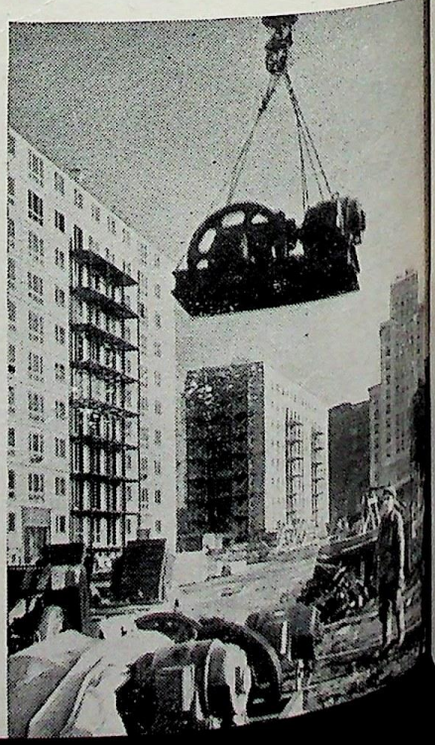

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम धमकियों में नहीं आते

हेलमुत लांगे

पश्चिमी जर्मनी के युद्ध मन्त्री श्री स्त्राउस के इन शब्दों पर ध्यान दीजिये : 'बर्लिन पर मशीन गन चलाने से भी अधिक जोरदार हथियार है उसका आर्थिक बहिष्कार और इस्पात की सप्लाई बन्द करना।' श्री स्त्राउस दो जर्मन राज्यों के बीच होने वाले व्यापार को "शीत युद्ध का आसान हथियार बनाना चाहते हैं।"

लेकिन पश्चिमी जर्मन के प्रतिहिंसावादियों में उस दिन एक ज़बरदस्त खलबली मच गई जिस दिन सोवियत रूस ने जर्मनी के साथ शांति सन्धि करने और पश्चिम बर्लिन को एक स्वतन्त्र नगर में तबदील करने का प्रस्ताव सामने रखा। ९ जून, १९६१ के अमरीकी अखबार 'न्यूयार्क हैराल्ड ट्रिब्यून' में पश्चिमी जर्मनी के अर्थ-मंत्री श्री एरहर्ड का एक वक्तव्य छपा है जिसमें उन्होंने यह धमकी दी है कि शांतिसन्धि होने के बाद प. जर्मनी, जर्मन जनवादी गणतंत्र को व्यापारिक दृष्टि से एक ग़ैरमुल्क समझ लेगा। इसका सीधा मतलब है कि बोन सरकार ज. ज. ग. के साथ होने वाले व्यापार पर कुठाराघात करेगी।

श्री एरहर्ड के इस बुरे इरादे को ज. ज. ग. की जनता ने खूब अच्छी तरह समझ लिया है। आवश्यक कच्चे माल को रोकने तथा आर्थिक बायकाट की धमकियों से, पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवादी शासक, ज. ज. ग. को शांतिसन्धि करने से रोकना चाहते हैं। इस प्रकार वे शांति के रास्ते में अड़ंगा डालकर पश्चिमी जर्मनी की सेना को जल्द से जल्द, अणु-अस्त्रों से लैस करना चाहते हैं।

लेकिन जर्मन जनता इन दबावों और धमकियों में आकर शांतिसन्धि का अपना मूल अधिकार खोना नहीं चाहती। यही कारण है कि ज. ज. ग. के इंजीनियर, वैज्ञानिक, मज़दूर तथा साधारण जनता,

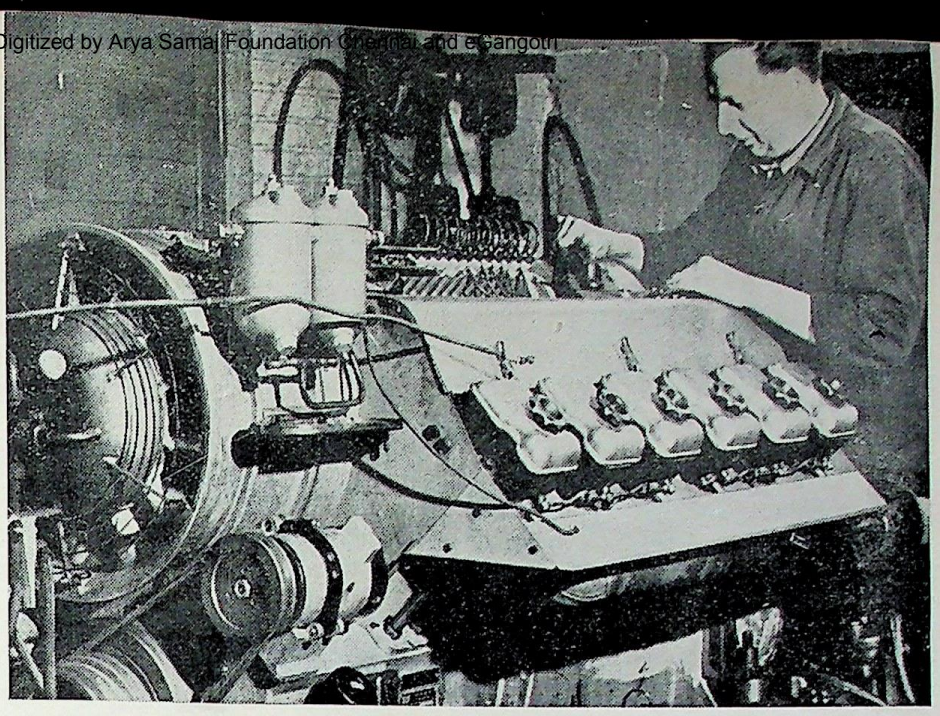

१२ सिलेंडर वाला एक नया इंजन ठंडा करने के यन्त्र सहित। ये इंजन पहले प. जर्मनी से खरीदे जाते थे। अब इनका उत्पादन ज. ज. ग. में ही होता है।

पश्चिमी जर्मनी के प्रतिहिंसावादियों और युद्ध-पोषकों की धमकियों का जवाब अपने ठोस कामों के रूप में देते हैं। यहां के कल-कारखानों, संस्थाओं तथा संगठनों में एक नया अभियान चल पड़ा है जिसका मात्र उद्देश्य है जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापारिक तथा आर्थिक ढांचे को पश्चिमी जर्मनी की धमकियों तथा दबाव से सुरक्षित करना और उसको इस क्षेत्र में स्वतन्त्र बना देना। इस प्रबल अभियान का नतीजा हुआ है अनेक ईजादों तथा नई उत्पादन-प्रक्रियाओं की खोज। इनसे ज. ज. ग. को लाखों मार्क की बचत तो हुई ही, साथ ही यहां के मज़दूर तथा अन्य कामगारों के कौशल और कार्य दक्षता का भी पता चला। सारी जनता में एक अपूर्व जोश भी भर गया।

जनवरी, १९६१ से बित्तरफेल्द का इलैक्ट्रो-केमिकल का बड़ा कारखाना मैंगनीज-कारबोनेट, भारी मिक़दार में ही पैदा करने लगा है। प. जर्मनी के मैंगनीज़ कारबोनेट से इसका स्तर अधिक अच्छा है। इस तरह मज़दूर और वैज्ञानिक आपस के सहयोग से बिजली उद्योग के लिये अनिवार्य सामग्री, पैदा करने में समर्थ हो सके।

इसी प्रकार, बर्लिन के सिग्नल और सुरक्षा टेकनोलौजी वाले कारखाने को तांबे की तारें टेस्ट करने के यन्त्र प. जर्मनी की एक फर्म से खरीदने पड़ते थे। लेकिन जून, १९६१ में, सिर्फ चार महीनों के बाद, टेस्ट करने के ये और दूसरे यन्त्र ज. ज. ग. ने स्वयं बनाने शुरू कर किये। प. जर्मनी से यह सामान ४००० मार्क देकर आता था, लेकिन ज. ज. ग. में यह सामान तैयार करने में सिर्फ ९५५ मार्क की लागत लगी।

'फारबेनफाबरीक वोलफेन' नामक फर्म, प. जर्मनी के रासायनिक ट्रस्टों से ९० प्रकार की अध-पक्की रासायनिक वस्तुएं खरीदती थी। लेकिन ज. ज. ग. के रसायन-शास्त्रियों तथा इंजीनियरों ने अब स्वयं इन वस्तुओं को पैदा करना शुरू किया है। परिणाम : ३३ लाख मार्क की रक़म, की बचत हुई। इसी प्रकार, जहाज बनाने वाले वारनो के कारखाने के इंजीनियरों ने जहाजों के वे कल-पुर्जे स्वयं बनाने शुरू किये हैं जो पहले १० लाख मार्क से भी ज्यादा रकम में प. जर्मनी से आते थे।

पश्चिमी जर्मनी की व्यापारिक बायकाट की धमकियों का मुंह तोड़ जवाब दिया देसाउ क्षेत्र के मज़दूरों ने। जर्मनी की सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के नेतृत्व में, यहां के हर कारखाने में एक कार्यक्रम तैयार किया गया है, जिसके अनुसार पश्चिमी जर्मनी से आने वाले कच्चेमाल तथा दूसरे सामान का उत्पादन ज. ज. ग. में ही होगा। आर्थिक निर्भरता से मुक्ति

(शेष पृष्ठ २० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी मिट्टी का सामान

क्लाउस उंगर

एक सम्पन्न उद्योग

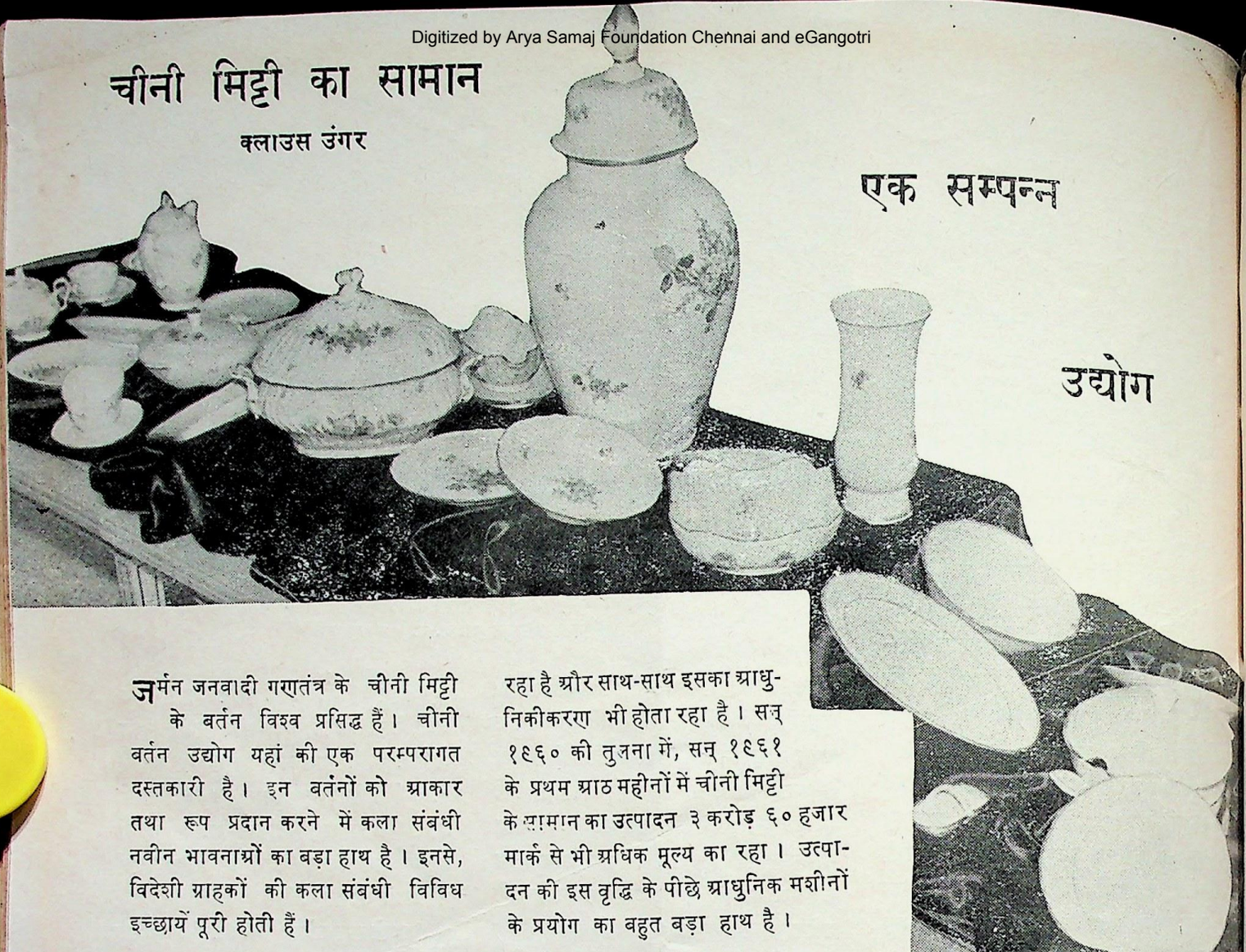

आधुनिक कला कौशल से पूर्ण ज.ज.ग. का चीनी मिट्टी का सामान

जर्मन जनवादी गणतंत्र के चीनी मिट्टी के बर्तन विश्व प्रसिद्ध हैं। चीनी बर्तन उद्योग यहां की एक परम्परागत दस्तकारी है। इन बर्तनों को आकार तथा रूप प्रदान करने में कला संबंधी नवीन भावनाओं का बड़ा हाथ है। इनसे, विदेशी ग्राहकों की कला संबंधी विविध इच्छायें पूरी होती हैं।

चीनी मिट्टी के सामान का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग होता है—घर गृहस्थी में, अस्पतालों में, गुसलखानों और पाखानों में, कमरों के सजाने और बिजली का सामान तैयार करने में। ज. ज. ग. में हर साल, घरों में काम आने वाले चीनी मिट्टी के बर्तनों का उत्पादन २२,००० टन के लगभग है। अन्य देशों में भी ऐसे सामान की मांग बराबर बढ़ती जा रही है। फलतः ज. ज. ग. ने सन् १९५८ में, घर में इस्तेमाल होने वाले चीनी के ४,५६८ टन बर्तन निर्यात किए और सन् १९६० में इनका निर्यात बढ़कर ६,१२३ टन हो गया। समाजवादी देशों के अतिरिक्त, अमरीका, ब्रिटेन, स्विटज़रलैंड, इटली और फ्रांस जैसे देश भी चीनी मिट्टी के बर्तनों तथा अन्य सामान के बड़े ग्राहक हैं। घाना तथा अरब गणराज्य जैसे नवजात राष्ट्र भी ज.ज.ग. से चीनी मिट्टी का सामान खरीदने लगे हैं।

चीनी मिट्टी के सामान का उत्पादन करने वाला उद्योग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और साथ-साथ इसका आधुनिकीकरण भी होता रहा है। सन् १९६० की तुलना में, सन् १९६१ के प्रथम आठ महीनों में चीनी मिट्टी के सामान का उत्पादन ३ करोड़ ६० हजार मार्क से भी अधिक मूल्य का रहा। उत्पादन की इस वृद्धि के पीछे आधुनिक मशीनों के प्रयोग का बहुत बड़ा हाथ है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सप्तवर्षीय योजना में—१९५८-६५—शीशे और चीनी मिट्टी का सामान बनाने वाले कारखानों के लिए १०० करोड़, ३० लाख मार्क की रक़म सुरक्षित रखी गई है। काला और त्रिप्तिस नामक कस्बों में ऐसे दो नए कारखाने बन रहे हैं जिनकी उत्पादन क्षमता प्रतिवर्ष ८,४०० टन होगी। काला के कारखाने की, बिजली से चलने वाली पहली भट्टी इसी वर्ष चालू हो गई है। इस कारखाने में प्लेट और प्याले बनाने के मशीनी सांचे, गीली मिट्टी सुखाने की आधुनिक मशीनें और सामान ले जाने वाले स्वचालित पट्टे (बेल्ट) लगा दिए गए हैं। काला और त्रिप्तिस के ये चीनी मिट्टी का सामान पैदा करने वाले कारखाने, यूरोप के अत्याधुनिक कारखानों को मात करेंगे।

चीनी मिट्टी के उद्योग के और उसकी शैली और स्तर की ओर भी काफी ध्यान दिया गया है।

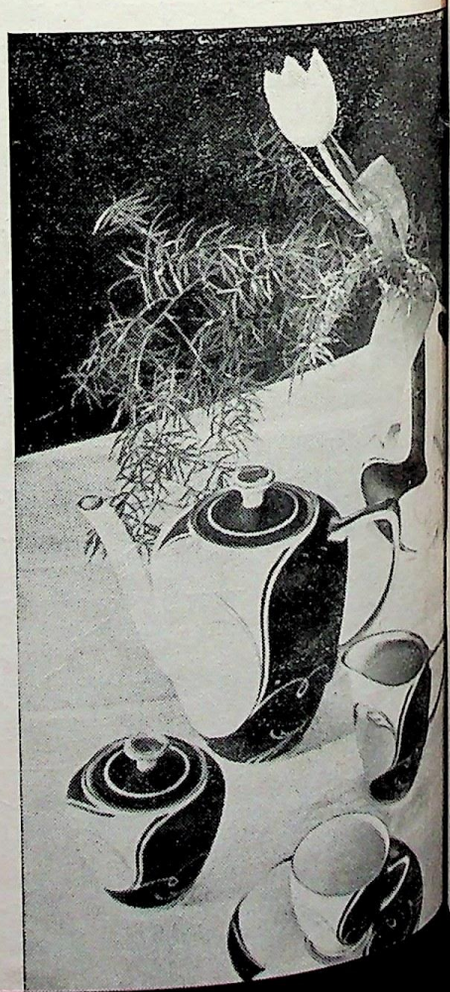

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले गई। दफ़्तर का काम कुछ ही क्षणों में समाप्त हो गया।

एक मोटर पर सवार होकर हम बर्लिन की ओर दौड़ने लगे। हवाई अड्डे से बर्लिन लगभग २२ मील दूर है। मोटर में लगे हुए रेडियो से जर्मन संगीत की मधुर लय ने मुझे और मेरे हमसफर साथी, निर्देशक सथ्यू पर कुछ ऐसा जादू किया कि हम लोगों को अपने अजनबी होने का ख्याल तक न रहा। .... बर्लिन का प्रारंभ पुरानी तरह की एक पथरीली सड़क से होता है। ४५ मिनट के सफ़र के बाद हमारी मोटर, उन्तरदेन-लिन्दन नामक मार्ग पर निकल आई, जहां से हमें बर्लिन का प्रसिद्ध द्वार नज़र आया। जर्मनी में इस द्वार को ब्रांदनबुर्ग-त्वा कहते हैं। इस द्वार की दाईं ओर होटल अदलां की प्रसिद्ध इमारत खड़ी है।

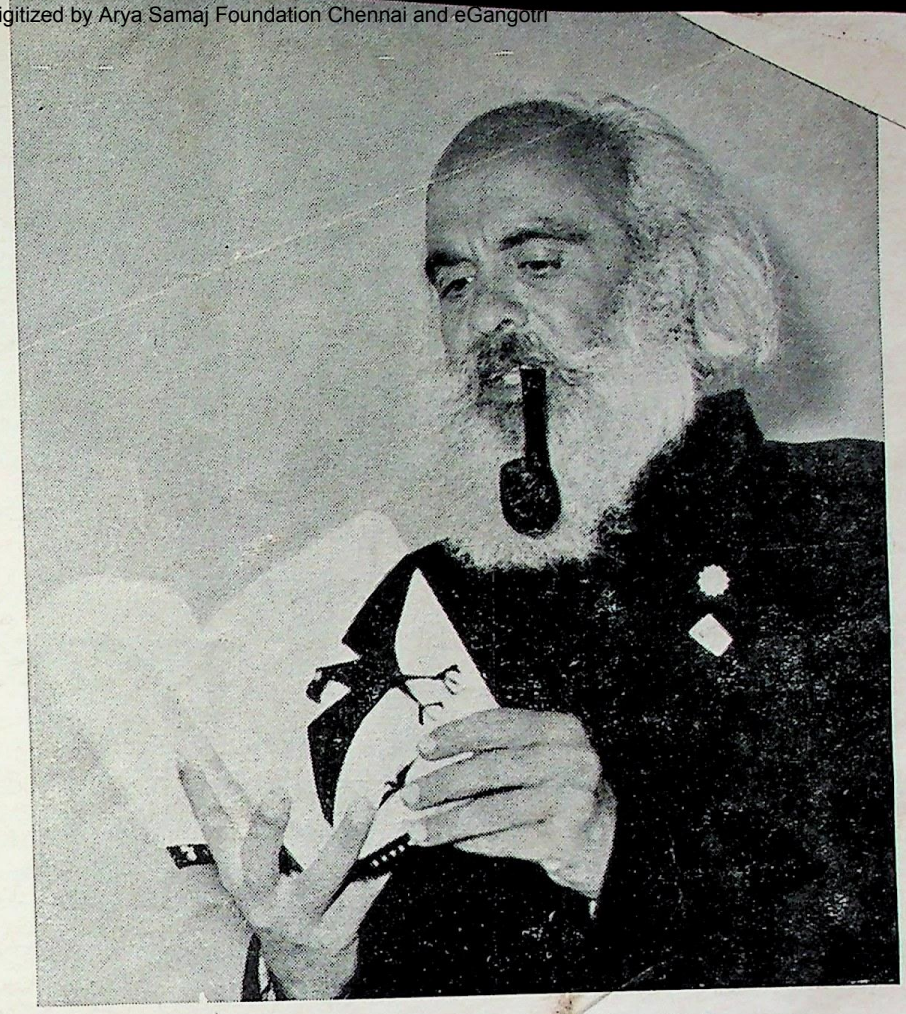

होटल अदलां : हमारी मोटर आधी टूटी-फूटी एक इमारत के सामने रुकी। अपने दोस्तश्री सथ्यू की ओर देखते हुए मैंने मादाम वाम बुवा से पूछा कि हम यहां क्यों रुके। मादाम ने इत्तला दी कि हम लोग यहीं ठहरेंगे। मन ही मन, मैं इस टूटी-फूटी इमारत को कोसने लगा! लेकिन हम होटल की तीसरी मंज़िल पर पहुंचा दिए गए।

अन्दर दाखिल होते ही मैं आश्चर्य चकित रह गया! यह इमारत बाहर से कुरूप और टूटी-फूटी दिखाई देती है, लेकिन अन्दर से यह एक सुन्दर और भव्य राजमहल के अंतरंग से कम न थी। इसीलिए ये होटल सारे यूरोप में प्रसिद्ध है। दूसरी जंग से पहले, बल्कि नाज़ियों के अत्याचारों से भी पहले, होटल अदलां एक विस्तृत क्षेत्र पर अपने भव्य वैभव के साथ, हर प्रकार की आमोद-प्रमोद की सामग्री से ओतप्रोत और इन्द्रपुरी का आभास देता हुआ, खड़ा रहा! इस होटल ने पचास वर्ष की अवधि में यों तो पचासों इन्क़लाब देखे। लेकिन दूसरी जंग ने इसे बरबाद करने में कोई कसर उठा न रखी, क्योंकि यह होटल एक ऐसे क्षेत्र में स्थित है जहां हिटलर के सरकारी तथा सैनिक दफ़्तर थे। .... मेरे कमरे के बाईं ओर राइश्ताग की विश्वप्रसिद्ध इमारत खड़ी है। यों समझ लीजिये कि यही क्षेत्र नाज़ियों के अत्याचारों का केन्द्र था।

होटल में खासी चहल पहल थी। बाहर से नज़र आने वाली, जगह-जगह उखड़े हुए पलस्तर की दीवारों के अन्दर इतनी दिलकश फ़िज़ा, ऐसा रागरंग! स्वागत के कमरे से रेस्त्राँ तक फूल तथा पौदों की सजावट, सुनहरे अक्षरों में लिखे गये समाजवादी नारे, नेताओं के टंगे चित्र, संगीत...नृत्य...शराब के जाम!....

सांस्कृतिक मेले के इस ज़माने में—जिसके हम अतिथि हैं—यह होटल, शाम सवेरे एक नई क़ौमियत का रंग धारण कर लेता है। आज सुबह रूस का एक प्रतिनिध-मंडल यहां ठहरा था। देखते ही देखते सारा होटल, रूसी भाषा-भूषा और खान-पान से सज गया। होटल अदलां अच्छा खासा रूस नज़र आ रहा था। दोपहर को, घाना का काले हब्शियो का एक प्रतिनिधि-मंडल आ पहुंचा, और होटल तुरंत छोटा मोटा अफ्रीका बन गया!... इस पूर्वी जर्मनी को आखिर हुआ क्या है? इस होटल में रूस और अफ्रीका के लोगों की ही नहीं, बल्कि युहूदियों का भी स्वागत सत्कार होता है! हिटलर के ज़माने में ऐसा सत्कार करने वालों को गैस चैम्बर या किसी बिजली की भट्ठी में झोंक दिया जाता।

दूसरे दिन बारह बजे डा. रोज़मेरी क्लाउस तशरीफ लाईं। नारियों की इस प्रतिनिधि ने हमें हमारे कार्यक्रम से अवगत कराया और जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक मंत्रालय ने जो सुविधायें हम को उपलब्ध की थीं, उनकी सूचना भी दी।

सांस्कृतिक मेले का कार्यक्रम दिलचस्प तो था ही, लेकिन बहुत बड़ा भी था। अनेक नाटक, बैले संगीत-रूपक और सिम्फनी—सिर्फ दो हफ़्तों में क्या क्या देख सकते थे! अपने कार्यक्रम पर अभी हम सोच विचार ही कर रहे थे कि एक पत्रकार और फोटोग्राफर आ टपके। इन्टरव्यू खत्म हुआ तो डा. राज़मेरी ने

(शेष पृष्ठ २० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

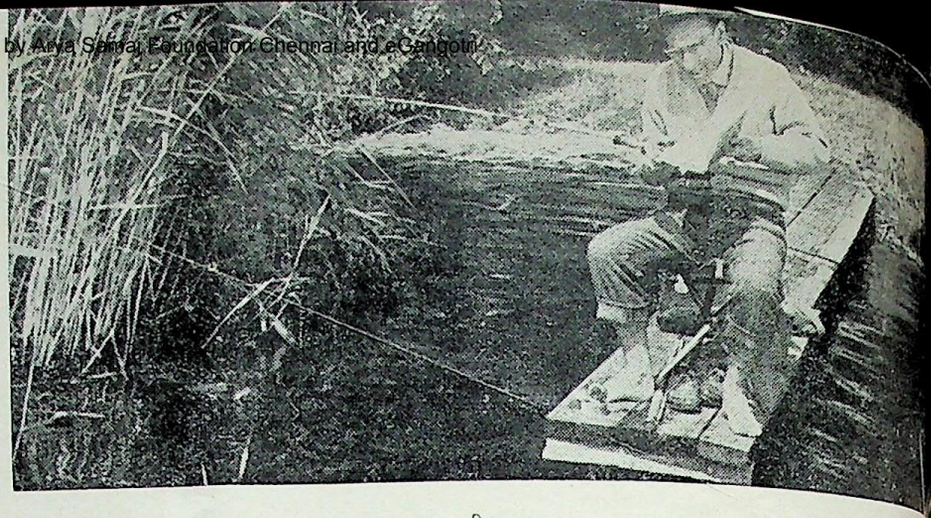

शुष्क, नीरस गुरु

डेफ़ा फ़िल्म जगत :

समस्या और समाधान

आजकल दुनिया में हज़ारों फिल्में बनती हैं। इनमें से बहुत कम ख्याति प्राप्त कर पाती हैं। कुछ फिल्में ऐसी भी हैं जो अच्छी तो होती हैं लेकिन उनमें वे सब बातें नहीं दिखायी जाती जो एक ख्याति प्राप्त फिल्म में होती हैं। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि ऐसी फिल्में किसी खास पहलू को लेती हैं और इनका उद्देश्य सीमित होता है। "गूतेन ताग, लीबैर ताग" "नमस्कार, प्यारे दिन नमस्कार" इसी कोटि की एक जर्मन फिल्म है।

इसकी कथा यों चलती हैं : छपाई का काम सिखाये जाने वाले एक प्रेस में एक शिक्षक, शिक्षार्थियों से खूब कड़ी मेहनत करवाता है। ऐसा करने में उसकी कोई बुरी नीयत नहीं। अपने शिष्यों को बेहतर प्रेस कर्मचारी बनाना ही उसका उद्देश्य है। हंस कर दो बातें करना भी उसको खलता है। बहुत काबिल प्रेस विशेषज्ञ होने पर भी, स्वभाव से वह नीरस है। अहंकार भी उसमें कम नहीं। लेकिन अल्हड़ यौवन और मनचले जज़बात से भरे हुये शिक्षार्थी यह सब कैसे बरदाश्त करते। उनके तो हंसने बोलने, खाने-पीने के दिन हैं।—इस गहरे अन्तविरोध ने शिक्षक और शिष्यों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी, एक तनाव पैदा कर दिया। इस वस्तु स्थिति का परिणाम यह निकला कि शिक्षार्थी काम सीखने और पढ़ाई लिखाई करने के बजाय अपना अधिकतर समय, संगीत सीखने और अपनी एक संगीत मंडली बनाने में बिताने लगे। इस तरह अपने काम में और परीक्षाओं में शिक्षार्थी तो गोल हुये, लेकिन उनकी संगीत मंडली दिन प्रतिदिन फलने फूलने लगी। आखिर एक दिन ऐसा भी आया कि सार्वजनिक स्थानों में भी वे अपनी संगीत मंडली लेकर आने लगे। छापेखाने के व्यवस्थापकों और 'युवक लीग' की मन्त्री को—जो एक लड़की है—जब इस स्थिति का पता चला तो हालत पर काबू पाने की कोशिश शुरु हुई।

एक तदबीर भी सोची गयी। व्यवस्थापक और 'युवक लीग' की मन्त्री ने शिक्षार्थियों से वादा किया कि उनकी गायक तथा संगीत मंडली को टेलीविजन पर लाया जायेगा जिसके द्वारा सारे देश की जनता न केवल उनका संगीत और गायन सुनेगी बल्कि उनकी पूरी मंडली को देख भी लेगी। लेकिन इसके लिये छात्रों को एक शर्त पूरी करनी होगी। वह यह कि वे अपनी पढ़ाई लिखाई तथा प्रशिक्षण की ओर भी काफी ध्यान दें और आने वाली परीक्षा में अच्छे नम्बर लेकर पास हो जायें। शर्त मंजूर हुई और छात्र पढ़ने लिखने और काम सीखने में जुट गये। उन्होंने एक दूसरे की सहायता की। इस तरह पढ़ाई लिखाई में जिस भी शिक्षार्थी में जो भी कमजोरी थी वह दूर हो गई।—और जब परीक्षाफल सामने आया तो सब शिक्षार्थी अच्छे नम्बर पास हुये थे।

लेकिन शिक्षक महोदय का क्या हुआ? आप विश्वास करिये या नहीं, लेकिन यह एक मधुर सत्य है कि श्री स्ट्रेवेल की (यही नाम है शिक्षक महोदय का) भी बिलकुल काया पलट हो गयी है। रोनी सूरत की जगह हंसमुख चेहरा आपके सामने नाचता है। यह जानकर आप अवश्य आश्चर्य चकित होंगे कि श्री स्ट्रेवेल के

(शेष पृष्ठ २० पर)

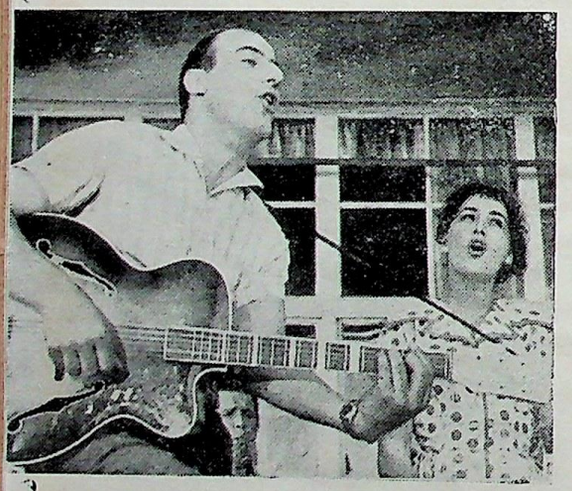

पढ़ाई लिखाई छोड़कर गाना बजाना हो रहा है

अध्यापक संभला

प्रेम से पत्थर पिघला

गुरु ने शहनाई बजाई और शिष्य झूमे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH— हम जर्मन सीखते हैं

Lektion XV— पाठ पन्द्रह

DIE JAHRESZEITEN IN DEUTSCHLAND—जर्मनी में मौसम

Am Montag hat Herr Bose eine Einladung bekommen. Auf der Einlädung steht: Am Mittwoch ist in der Goethe—Oberschule ein Vortrag über die Jahreszeiten in Deutschland. Für ausländische Gäste sehr interessant. Da sich Herr Bose schon lange für diese Fragen interessiert hat, besuchte er den Vortrag. Ausländer aus verschiedenen Ländern der Erde waren da. Zuerst hat der Direktor der Schule die Gäste begrüsst, dann hat ein Meteorologe über das Klima in Deutschland gesprochen. Er sagte, dass es in Deutschland vier Jahreszeiten gibt—den Frühling, den Sommer, den Herbst und den Winter. Der Frühling beginnt am 21. (einundzwangzigsten) März und endet im Juni. Im vorigen Jahr hat er sehr wenig warme Tage gehabt. Manchmal sind aber schon im Frühling sehr heisse Tage gewesen. In diesen Tagen beginnt die Arbeit der Bauern auf den Feldern. Der Meteorologe sagte: "Viele Menschen aus der Stadt haben im vorigen Jahr den Bauern bei ihrer Arbeit geholfen. Wenn der Sommer im Juni beginnt haben wir warmes Wetter. Das Thermometer zeigt 20-25 Grad Celsius. Natürlich sind auch oft Gewitter in den Sommermonaten, dann regnet es, blitzt und donnert es. Der Sommer ist in Deutschland die Zeit der Ferien. Wer Interesse hat, fährt in den Ferien an die See oder ins Gebirge. Am 23. (dreiundzwanzigsten) September beginnt der Herbst. Mit ihm kommen kühles Wetter, Sturm, Nebel und Regen. Viele Vögel sind in warme Länder geflogen. Im Frühling sind sie wieder hier."

"Für uns ist diese Jahreszeit sehr wichtig", sagte der Meteorologe, "weil die grosse Ernte beginnt. Auf allen Feldern kann man fleissige Menschen sehen. Bald sind die Felder und Bäume leer. Die Blätter der Bäume färben sich bunt und fallen zur Erde. Da es manchmal im Oktober oder November schon kühl ist, kaufen die Leute in diesen Monaten ihre Winterkleidung." Vom Winter erzählte er, dass er in Deutschland im Dezember beginnt. Er ist besonders für die Kinder eine schöne Jahreszeit, weil es schneit und weil sie Schlitten fahren können. Die Ausländer aus den warmen Ländern riefen: "Für uns ist der erste Schnee eine Sensation gewesen. Wir haben das noch nie gesehen. Die erste Zeit haben wir sehr gefroren, weil wir keine warme Kleidung getragen haben." Herr Bose sagte: "Jetzt kenne ich den deutschen Winter und weiss, dass im Januar und Februar oft 15—20 Grad Kälte sind, deshalb trage ich immer einen Mantel."

Für alle ausländischen Gäste Ist dieser Vortrag sehr interessant gewesen. Sie haben viel gelernt.

सोमवार को श्री बोस को निमंत्रण मिला। निमंत्रण में लिखा था: बुधवार को गेटे माध्यमिक विद्यालय में जर्मनी के मौसमों पर भाषण होगा। विदेशी अथितियों के लिए वह बहुत मनोरंजक होगा। श्री बोस की इन प्रश्नों में अधिन दिनों से दिलचस्पी थी। इसलिए वे भाषण सुनने गये। वहां संसार के अनेक देशों के विदेशी थे। पहले विद्यालय संचालक ने अतिथियों का स्वागत किया, फिर अन्तरिक्ष-विशेषज्ञ ने जर्मनी के जलवायु पर भाषण दिया। उसने कहा: जर्मनी में चार ऋतुए होती हैं वसन्त, ग्रीष्म, हेमन्त और शीत। वसन्त २१ मार्च से प्रारम्भ होता है और जून में समाप्त होता है। गत वर्ष गर्मियों के बहुत कम दिन थे। लेकिन कभी-कभी उनकी संख्या अधिक होती है। इन्हीं दिनों खेतों में किसानों का काम शुरू होता है। अन्तरिक्ष-विशेषज्ञ ने कहा: गत वर्ष अनेक व्यक्तियों ने नगर से (जाकर) किसानों की मदद की। जून में जब ग्रीष्म प्रारम्भ होता है तो मौसम गरम हो जाता है। थर्मामीटर में पारा २०-२५ अंश तक पहुंच जाता है। गर्मी के महीनों मे अक्सर तूफान भी आते हैं, फिर पानी बरसता है बिजली चमकती और गरजती है। जर्मनी में गर्मियों की छुट्टियां होती हैं। जिनकी दिलचस्पी होती है वे छुट्टियों में समुद्र-तट पर जाते हैं या पहाड़ियों पर। २३ सितम्बर से हेमन्त शुरू होता है। इसके साथ ठंडक, तूफान, कुहरा और बारिश शुरू हो जाती है। अनेक पक्षी गरम देशों की ओर उड़ जाते हैं। वसन्त में वे फिर लौट कर आते हैं।

अन्तरिक्ष-विशेषज्ञ ने कहा: यह मौसम हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि (इसी समय) फसल कटती है। सारे खेतों में मेहनती लोग दिखाई पड़ते हैं। जल्दी ही खेत और पेड़ रिक्त हो जाते हैं। पेड़ों की पत्तियां अनेक रंगों में बदल जाती हैं और जमीन पर गिर जाती हैं। कभी-कभी अक्तूबर या नवम्बर से ही सर्दी शुरू हो जाती है, इसलिए लोग इन्हीं महीनों में अपने जाड़ों के कपड़ें खरीद लेते हैं। उन्होंने जाड़ों के बारे में बताया कि जर्मनी में यह दिसम्बर से शुरू होता है। यह बच्चों के लिए खासतौर से अच्छा मौसम है क्योंकि (उस समय) बर्फ गिरती है और वे बेपहिये की गाड़ियों पर घूम सकते हैं। गरम देशों से आये विदेशियों ने कहा कि: "पहली बार बर्फ हमारे लिए रोमांचकारी थी। इससे पहले इसको हमने कभी नहीं देखा था। शुरू में हमें बहुत सर्दी लगी क्योंकि हमने गरम कपड़े नहीं पहने थे।" बोस ने कहा: "अब मैं जर्मनी की सर्दियों को जानता हूं और जानता हूं कि जनवरी-फरवरी में तापमान शून्य से १५-२० अंश नीचे तक पहुंच जाता है। अतः मैं हमेशा ओवरकोट पहने रहता हूँ।"

सभी विदेशी मेहमानों के लिए यह भाषण बड़ा मनोरंजक रहा। उन्होंने बहुत कुछ सीखा।

व्याकरण

1. Das Perfekt—The Present Perfect

The German Perfekt से विगत कर्म और वर्तमान फल का बोध होता है।

अ. Bildung des Perfekt—Das Perfect का निर्माण:

Präsens von $\frac{\text{haben}}{\text{sein}}$ + Partizip Perfekt = Perfekt

ब. Partizip Perfekt का निर्माण:

जर्मन भाषा में 'Partizip Perfekt' बनाने के लिए धातु के पहले 'ge—' और अन्त में '—t' जोड़ते हैं। यह दुर्बल क्रियाओं के लिए नियम हैं।

उदाहारणार्थ

Infinitiv	Imperfekt	Partizip Perfekt
arbeiten	arbeitete	gearbeitet
lernen	lernte	gelernt
leben	lebte	gelebt

नोट: यदि धातु का अन्त 't या d' में हो तो 'et' जोड़ते हैं।

सबल क्रियाओं में धातु के पहले 'ge' और अन्त में 'en' जोड़ कर Partizip Perfekt बनाते हैं:

उदाहारणार्थ

Infinitiv	Imperfekt	Partizip Perfekt
sprechen	sprach	gesprochen
liegen	lag	gelegen
schreiben	schrieb	geschrieben

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि की आंखों में

(पृष्ठ १७ का शेष)

हम को शहर देखने के लिये उकसाना शुरू किया।

विलहेल्म स्त्रासे : होटल से बाहर निकले तो शाम हो रही थी। होटल अदलां के सामने जो लम्बी सड़क जाती है, उस पर बर्लिन की बहुत सी प्रसिद्ध इमारतें बनी हुई हैं। लेकिन इनमें अधिकांश मिसमार हैं। तबाही के घाव जो छतों से शुरू होकर देखने वालों के दिल तक पहुंचते हैं। बमबारी से तबाह हुये मकानों के नंग धडंग ढांचे, लटके हुये उनके डरावने मेहराब, हर विवर से झांकती हुई अथाह कालिमा ! .... इसी इलाक़े में हिटलर का वह भूमिगत तहखाना था जहां उसने अपने बफ़ादार कुत्ते और अपनी प्रेयसी के साथ जंग हारते हुये आत्महत्या की थी।—अब वह तहखाना मिट्टी का एक ढेर मात्र है, मिट्टी का एक कुरूप ढेर !

ब्रांदेनबुर्ग त्वा : परली तरफ़ राइश-ताग की इमारत के पड़ोस में ब्रांदेनबुर्ग का विश्वप्रसिद्ध द्वार खड़ा है, जिसके तिकोने भाल पर रथ खेंचते हुए चार घोड़ों की दौड़ एक स्मृति, ठहराव बनके रह गई है। इस रथ पर विराजमान विजय की देवी अपने हाथ में विजय पताका थामे एक नयी विजय को निहार रही है—समाजवाद की विजय को ! पहले इस इमारत के तिकोने माथे से हिटलर की नाज़ी क्रूरता चीख रही थी, लेकिन आज उस भाल पर एक प्रकाश स्तम्भ (सर्च लाइट) खड़ा है जो पश्चिमी जर्मनी की युद्ध लोलुप हुकूमत की आखें चुंधिया रहा है ! इस द्वार के सामने फैला हुआ एक हरियाला मैदान है जिसमें हरी वर्दियां पहने अवामी पुलिस के सिपाही अपनी मशीनी बन्दूकें कंधों पर लटकाये कंटीले तार और कंक्रीट से बनी हुई सीमा की हिफ़ाज़त कर रहे हैं !—यह सीमा जो केवल जर्मन जनवादी गणतंत्र की ही नहीं, बल्कि सारी मानवता को तीसरी जंग की तबाई से बचाने के लिये १३ अगस्त, सन् १९६१ को रातों रात बनाई गई थी। शत्रु से अब सीमायें सुरक्षित हैं ! सब कुछ ठीक है ! धन्यवाद !

हम लोगों ने ब्रांदेनबुर्ग द्वार से पश्चिम बर्लिन की ओर देखा। इसको इत्तेफ़ाक़ ही कहिए कि हमारी नज़र सबसे पहले एक ऊंचे चबूतरे पर रखे हुए एक टैंक से जाट करायी। मादाम रोज़मेरी बोलीं, "यह है वह पहला रूसी टैंक जो फाशिज़्म को कुचलता हुआ बर्लिन में दाखिल हुआ था !" लुत्फ़ यह है कि यह टैंक पश्चिमी जर्मनी के इलाक़े में है। पश्चिमी जर्मनी के सिपाही सुबह और शाम इस टैंक के आस-पास मंडलाते रहते हैं। निश्चित रूप से यह टैंक उनको लाल सेना की याद दिलाता होगा। —अपनी ताक़त का ढिंडोरा पीटने वाले नाज़ी श्री स्त्राउस और ऐडना-ओर सोचते होंगे कि उनका ख़ुदा उनके ख़िलाफ़ सोचता है ! . . .

हम धमकियों में नहीं आते

(पृष्ठ ७ का शेष)

की दिशा में यह बहुत बड़ा क़दम है।

देसाउ में रेल के डिब्बे तैयार करने वाले कारखाने में, प. जर्मन के ज़ंग न लगने वाले इस्पात के नलों का प्रयोग होता था। अब उनके स्थान पर, वित्तर-फेल्द के बिजली रासायनिक कारखाने द्वारा बनाये गये अन्य धातु मिश्रित अलम्यूनियम के नल इस्तेमाल होते हैं।

सोवियत, संघ जर्मन जनवादी गण-तंत्र की आर्थिक सुरक्षा तथा स्वतंत्रता के इस संघर्ष में सबसे बड़ा और अमूल्य सहयोगी है। सोवियत सरकार हमको इस्पात तथा अन्य कच्चा माल भारी मिक़दार में उपलब्ध करेगी। इसके अतिरिक्त, दूसरे समाजवादी देश भी इस संघर्ष में हमारा हाथ बटा रहे हैं।

कुल मिलाकर इन प्रयत्न का परिणाम यह हुआ है कि पश्चिमी जर्मनी के नेताओं की व्यापारिक बायकाट की धमकियाँ अब उनके लिए ही अभिशाप सिद्ध हो रही हैं। इन धमकियों और दबावों से ज.ज.ग. और अन्य समाजवादी देशों का आपसी सहयोग और भी दृढ़ हो गया। कच्चे माल के अपने साधनों को खोजने और विकसित कराने के प्रयत्न इन से और भी तेज़ हो गये।

ज.ज.ग. के उल्लिखित संघर्ष का यह मक़सद नहीं कि हम अब पश्चिमी जर्मनी के साथ व्यापार करने के इच्छुक नहीं। इसका केवल इतना ही तात्पर्य है कि हम अपने देश के व्यापारिक और आर्थिक विकास का भाग्य ग़लत और ख़तरनाक लोगों के हाथों में नहीं सौंप सकते। भूतकाल के अपने अनुभव ने हमें यही सिखाया है। हम व्यापार को "शीत युद्ध का आसान हथियार" नहीं वरन्, शांति, सद्भावना और भाईचारा बढ़ाने का महान साधन समझते हैं !

समस्या और समाधान

(पृष्ठ १८ का शेष)

नीरस हृदय में प्यार का अंकुर भी फूट पड़ा है। फिर यह प्यार—कुछ कठिनाइयों के बाद—पवित्र विवाह के रूप में पल्लवित भी होता है।

इस कथा—और फ़िल्म का अन्त बहुत रोचक और नाटकीय है। शिक्षार्थियों की सफलता के बाद, शर्त के अनुसार, उनकी गायक तथा संगीत मंडली का टेलिविजन प्रोग्राम निश्चित हुआ। प्रोग्राम शुरू होने के कुछ ही देर पहले संगीत मंडली को पता चला कि उनका शहनाई बजाने वाला साथी ही गायब है। इसका मतलब था कि उनका सारा प्रोग्राम ठप्प हो जाता और उनकी इज़्ज़त धूल में मिल जाती। लेकिन उनके आश्चर्य और हर्ष की सीमा न रही यह देखकर कि उनका शुष्क, नीरस गुरू एक मंजा हुआ शहनाई वादक भी है !... अपने शिष्यों की संगीत मंडली में गुरू ने शहनाई वादक की जगह पूरी की ! इस तरह गुरू और शिष्य का अमर नाता जुड़ गया! . . .संगीत और विद्या एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक सिद्ध हुये !....

डेफा स्टूडियो में तैयार की गई इस फिल्म में लगभग सभी काम करने वाले युवक युवतियां अभिनय के क्षेत्र में एकदम नये हैं। इसके कई गीत ज.ज.ग. में बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं—विशेषकर नवयुवकों में। सामाजिक दृष्टि से ऐसे सोद्देश्य चित्र कितने लाभदायक और आवश्यक हैं, इस पर दो मत नहीं हो सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम जर्मन सीखते हैं

(पृष्ठ १९ का शेष)

नोट : निम्नलिखित सबल क्रियाओं की धातु से महत्वपूर्ण स्वर बदल जाते हैं :

Infinitiv	Imperfekt	Partizip Perfekt
e	a	o
sprechen	sprach	gesprochen
e	i	a
gehen	ging	gegangen
i (e)	a	u
verbinden	verband	verbunden
ei	ie	ie
schreiben	schrieb	geschrieben
e	a	e
geben	gab	gegeben
u	ie	u
rufen	rief	gerufen
o	a	e
kommen	kam	gekommen
a	u	a
fahren	fuhr	gefahren
au	ie	au
laufen	life	gelaufen

नोट : आगे से आप को सबल क्रियाएँ इस रूप में शब्द सूची में मिलेंगी :

सबल और दुर्बल दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ ये उपसर्ग अवश्य लगे रहते हैं जैसे :

be-, emp-, ent-, er-, ver-, zer-.

क्रिया से उपसर्ग कभी नहीं अलग होता और 'ge' उनमें कभी नहीं जुड़ता :

e. g.	verbinden	verband	verbunden	(सबल क्रिया)
	besuchen	besuchte	besucht	(दुर्बल क्रिया)

अभ्यास :

1. Setzen Sie den Text "800 Jahre Leipziger Messe" ins Perfekt
Put the text "800 Jahre Leipziger Messe" into Present Perfect.
2. Sagen Sie die folgenden Sätze im Perfekt—Say the following sentences in the Present Perfect tense.
Ein Jahr bin ich in Deutschland. Ich lerne hier viel. Ich besuche Städte und Dörfer. Überall informieren mich die Menschen. Sie erklären mir ihre Ziele und sprechen von ihren Wünschen. Man weiss hier sehr gut, dass Indien eine alte und grosse Kultur hat. Oft publiziert man auch die Reden unseres Ministerpräsidenten Nehru in den Zeitungen der Deutschen Demokratischen Republik.
3. Lesen und schreiben Sie die folgenden Sätze im Perfekt—Read and write the following sentences in the Present Perfect tense :
Wir.....über die Heimat.....(sprechen). Er.....uns über das Leben in Deutschland..... (erzählen). Sie.....mir viele Bilder aus Indien..... (zeigen). Die Freunde.....auf viele Fragen..... (antworten). Ich.....Herrn Bose in Leipzig..... (treffen). Du.....im Theater.....(sein). Ihr..... eine Zeitung.....(haben).
4. Fragen zum Text "Die Jahreszeiten in Deutschland" Beantworten Sie die Fragen mündlich und schriftlich ! Was hat Herr Bose bekommen ? Was steht auf der Einladung ? Warum besucht er den Vortrag ? Wer begrüsste die Gäste ? Was hat der Meteorologe über die Jahreszeiten in Deutschland gesagt ? Wer hat den Bauern bei der Arbeit geholfen ? Wohin fahren die Menschen im Sommer ? Was können Sie über den Winter sagen ? Was riefen die Ausländer ?

इस पाठ में आये शब्द

die Jahreszeit,-en	मौसम
bekommen, bekam, bekommen	पाना, मिलना
der Mittwoch	बुधवार
Johann Wolfgang von Goethe	
die Oberschule,-n	माध्यमिक स्कूल
der Vortrag, "e	भाषण
lange	लम्बा
für A.	लिये
die Frage,-n	प्रश्न
der Ausländer,-	विदेशी
die Erde (without Plural)	ज़मीन, भूमि
zuerst	पहले, सर्व प्रथम
der Meteorologe,-n	अन्तरिक्ष-विशेषज्ञ
das Klima, die Klimate	जलवायु
der Frühling	वसन्त
der Sommer	ग्रीष्म
der Herbst	हेमन्त
der Winter	शीत
enden	समाप्त
der Juni	जून
warm	गरम
der Tag,-e	दिन
manchmal	कभी-कभी
heiss	गर्म (अधिक गर्मी के अर्थ में)
der Bauer,-n	किसान
das Feld,-er	खेत
auf+Frage wo ? =Dativ	पर, को
+Frage wohin ? =Akkusativ	
heifen, half, geholfen	सहायता देना
das Thermometer,-	थर्मामीटर
der Grad,-e	अंश
natürlich	स्वभावतः
das Gewitter,-	तूफ़ान
der Sommermonat,-e	गर्मी की ऋतु
es regnet (only3rd person sing.)	वर्षा हो रही है
es blitzt	बिजली चमक रही है
es donnert	गरज रही है
die Ferien (only plural)	छुट्टियां
an+Frage wo ? =Dativ	तक, पर
+Frage wohin ? =Akkusativ	
die See,-n	समुद्र
das Gebirge	पहाड़ियां
kühl	ठंडा
das Wetter	मौसम
der Sturm, "e	तूफ़ान
der Nebel,-	कुहरा, धुंध
der Regen	वर्षा
der Vogel, "	पक्षी
fliegen, flog, geflogen	उड़ना
die Ernte,-n	तैयार फसल
der Baum, "e	पेड़
sich färben	रंग बदलना
bunt	बहुरंगी
fallen, fiel, gefallen	गिरना
der November	नवम्बर
der Monat,-e	महीना
die Winterkleidung	जाड़ों के कपड़े
der Dezember	दिसम्बर
es schneit	बर्फ़ गिर रही हैं
der Schlitten,-	बे पहिये की गाड़ी
der Schnee	बर्फ़
die Sensation,-en	रोमांच
frieren, fror, gefroren	जमना, सर्दी लगना
der Januar	जनवरी
der Februar	फरवरी
die Kälte	सर्दी (सर्द)
deshalb	इसलिये, अतः
alle	सभी
voriges Jahr	गतवर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की ख़बरें

भारतीय राज्य सभा के सदस्य का मत

भारतीय राज्य-सभा के एक सदस्य, श्री ए. डी. मणि ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मन्त्रालय के मुखपत्र 'फारेन एफ़ेयर्स बुलेटिन' से एक बात चीत के दौरान कहा: "भारत तथा ज.ज.ग. की विदेश नीति में कई ऐसी बाते हैं जो एक जैसी हैं"। श्री मणि की यह बात-चीत उल्लिखित बुलेटिन के १ फरवरी के अंक में छपी है।

जर्मन समस्या का उल्लेख करते हुये श्री मणि ने इस बात पर जोर दिया कि यह समस्या स्वयं जर्मनी की जनता हल कर सकती है। "मैं केवल इस बात का विश्वास दिला सकता हूं", श्री मणि बोले, "कि भारतवासियों की सद्भावना आपके देश और जनता के साथ है इस समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने में"।

श्री मणि, जनवरी के अंत में ज.ज.ग. में आये थे। यहां वह पीपुल्स चैम्बर के अध्यक्ष डा. योहानेस दीक्मान् तथा अन्य प्रतिभाओं और नेताओं से मिले। इसके अतिरिक्त उन्होंने ज.ज.ग. की संसदीय संस्थाओं को भी देखा। इन संस्थाओं का काम देखकर वह काफ़ी प्रभावित हुये। वह बोले "ज.ज.ग. की संसदीय संस्थाओं को देखकर यह कहना ग़लत होगा कि आपका पीपुल्स चैम्बर (लोकसभा) रिकार्ड करने की मशीन मात्र है। आपके चैम्बर में खूब वादविवाद होते हैं। इसके बाद ही राष्ट्रीय हितों के आधार पर फ़ैसले लिये जाते हैं"।

भारतीय राज्य-सभा के सदस्य ने यह मत भी प्रकट किया कि भारत और ज.ज.ग. के बीच निकट संबंध जोड़ने की अनेक संभावनायें हैं।

इटली का प्रसिद्ध अभिनेता तथा दिग्दर्शक वित्तोरियो द सइका बर्लिन एनसेम्बले देखने आये। ब्रेख्त का नाटक, तीन पेनी ऑपेरा देखा उन्होंने। चित्र में श्री वित्तोरियो, अभिनेत्री एनजेलिका दोमरू से वार्तालाप कर रहे हैं

११०,००० व्यक्तियों द्वारा पश्चिम बर्लिन से पलायन

सन् १९६१ में, पश्चिम बर्लिन से कुल मिलाकर 'सिर्फ' १०९,८५९ व्यक्ति भाग कर ज.ज.ग. में आये। यह आंकड़े स्वंय पश्चिम बर्लिन के आंकड़े जमा करते वाले दफ़्तर ने छापे हैं। ये आंकड़े पश्चिम बर्लिन सेनेट (प्रशासन) के इस झूठे प्रचार का पर्दा फ़ाश करते हैं कि प. बर्लिन में दूध की नदियां बहती हैं और वहां से सिर्फ कुछ ही लोग भाग जाते हैं।

इन १ लाख दस हज़ार शरणार्थियों में अधिकतर ऐसे लोग हैं जो अपने तथा अपने परिवारों के लिये प. बर्लिन में अन्धकारमय भविष्य के अतिरिक्त कुछ नहीं देखते। वहां के कुशासन तथा ग़लत नीतियों से बचने के लिये ही ये ज.ज.ग. में शरण लेने आये।

पश्चिम बर्लिन में रहने वाले विदेशी लोग भी श्री ब्रांत की उत्तेजनात्मक नीतियों से तंग आ चुके है। परिणामस्वरूप, जहां सन् १९६० में केवल १२,९०४ विदेशी प. बर्लिन छोड़कर गये, वहाँ सन् १९६१ में २४,६०५ विदेशी श्री ब्रांत के बर्लिन का त्याग करने पर मजबूर हुये।

फेफड़ों की एक्स-रे जांच अनिवार्य

ज.ज.ग. में सभी लोगों के लिये अब यह अनिवार्य हो गया है कि वे हर साल अपने फेफड़ों की एक्स-रे द्वारा जांच करा लें। टी. बी. जैसे भयंकर रोग को समूल नष्ट करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण क़दम है। ज.ज.ग. में, इसी तरह, बच्चों के पोलियो जैसे भयंकर रोग को भी जड़ से उखाड़ दिया गया।

जनता की सुविधा के लिये सरकार ने चलती फिरती एक्स-रे मशीनें मुहैया की हैं जो मोटरों पर सवार हो कर हर जगह पहुंचती हैं। फेफड़ों की एक्स-रे जांच के लिये लोगों को कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता है। यह काम सरकार अपने पैसे से करती है।

टी. बी. की बीमारी से बच्चों को सुरक्षित करने के लिये भी ज.ज.ग. की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार ने एक नया क़ानून पास किया है। इसके अनुसार १६ वर्ष तक के बच्चों को बार बार एक विशेष प्रकार का टीका लगाया जाता है।

पश्चिमी जर्मनी के खान मज़दूरों से सहानुभूति

हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी के सार-लैंड नामक क्षेत्र में एक भयंकर खान दुर्घटना हुई जिसमें सैंकड़ों मज़दूर मर गये। इस दुःखद अवसर पर ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री श्री ओतो-ग्रोतेवोल ने, प. जर्मनी की सरकार को एक तार भेजा जिसमें शोक प्रकट किया है। तार में लिखा है : "सार क्षेत्र में इस भयंकर दुर्घटना के अवसर पर ज. ज. ग. की सरकार तथा जनता की ओर से मैं शोक सन्देश भेज रहा हूं। मरे हुये मज़दूरों के दुखी संबंधियों के साथ हमारी हार्दिक सहानुभूति है।"

प्रधान मंत्री के इस सन्देश के अतिरिक्त ज. ज. ग. की सैंकड़ों मज़दूर यूनियनों ने खान मज़दूरों के दुःखी परिवारों के लिये अपने अवकाश-गृहों में जगह देने की पेशकश की। ज. ज. ग. की सरकार ने खानों में फंसे हुये मज़दूरों की जान बचाने के लिये तकनीकी सहायता भी पेश की।

जर्मन-सोवियत मैत्री संघ को बधाई

जर्मन सोवियत मैत्री संघ को श्री ख्रुश्चेव ने एक सन्देश भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि सोवियत यूनियन की जनता की गहरी सहानुभूति ज. ज. ग. के साथ है जो जर्मन के इतिहास में पहला किसान-मज़दूर राज्य है। मैत्री संघ के कार्य को सराहते हुये उन्होंने इस बात को दोहराया है कि जर्मनी की शांति-सन्धि तथा उस पर आधारित प. बर्लिन की गुत्थी को सुलझाना, वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का प्रमुख प्रश्न है। इसकी सफलता पर ही यूरोप तथा सारे संसार की शांति की नींव टिकी हुई है।

स्वतन्त्र जर्मन नवयुवक संगठन का एक प्रतिनिधि मंडल जनवरी में भारत आया। प्रतिनिधि उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के साथ खड़े हैं

सूचना पत्रिका के संबंध में वक्तव्य

फार्म ४

(नियम ८ देखिये)

१. प्रकाशन का स्थान : नयी दिल्ली

२. प्रकाशक की अवधि : मासिक

३. मुद्रक का नाम : यूनाइटिड इण्डिया प्रेस

४. प्रकाशक का नाम : क्राफ्ट बुम्बेल
जाति : जर्मन
पता : २२ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली

५. सम्पादक का नाम : क्राफ्ट बुम्बेल
जाति : जर्मन
पता : २२, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली

६. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो इस पत्रिका के मालिक अथवा साझीदार हैं, या जो इसकी कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं :

भारत स्थित ज.ज.ग. का व्यापारिक दूतावास,
२२- कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली

मैं, क्राफ्ट बुम्बेल, यह घोषित करता हूं कि उल्लिखित विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

क्राफ्ट बुम्बेल
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

४ वर्ष ७
अप्रैल
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

२२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ४ २० अप्रैल, १९६२

यह अंक

पृष्ठ

निःशस्त्रीकरण में पूर्ण आस्था ३
लइपज़िक : सह-अस्तित्व का ज्वलन्त प्रतीक ५

व्यक्तित्व की झांकी

अर्नाल्ड ज़्वाइग ७
खिलौने : बच्चों की निराली दुनिया ८

जनवाद के बढ़ते चरण

सर्वतोमुखी विकास १०
बर्लिन : कवि की आंखों में ११
ज. ज. ग. की आधुनिक चित्र-कला १२
अपाहज बच्चों का स्कूल १४
लायसेंस : औद्योगिक विकास की सहायक १५

वोर लरनेन दोइच

पाठ सोलह १७

डेफ़ा फ़िल्म जगत

लोकप्रिय वैज्ञानिक फिल्मों का निर्माण १९
भारत का कच्चा लोहा २०

ज़र्मनी की ख़बरें २२

मुख पृष्ठ :

ईस्टर त्यौहार के अण्डों को चित्रांकित करना, ज. ज. ग. की अल्प संख्यक सोर्ब जाति की विशेष कला है। ये दो कलाकार संलग्न हैं अण्डों के चित्रांकन में। ईस्टर जो आ रहा है।

अन्तिम पृष्ठ :

नवनिर्मित म्यूगेलटूम : बर्लिन के निकट छुट्टियां बिताने का एक लोकप्रिय विहारस्थल।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, २२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक बिल्डिंग, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःशस्त्रीकरण में पूर्ण आस्था

आजकल सारी दुनिया की आंखें जनेवा में हो रहे १८ देशों के निःशस्त्रीकरण सम्मेलन पर लगी हुई हैं। इस सम्मेलन में आधुनिक युग की सबसे विकट, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण समस्या—निःशस्त्रीकरण को सुलझाने के प्रयत्न हो रहे हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोग निःशस्त्रीकरण से संबंधित इन प्रयासों में विशेष रुचि रखते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जर्मनी ही पहले दो विश्व युद्धों की ज़िम्मेदार है। ज. ज. ग. की जनता यह फ़ैसला कर चुकी है कि वह युद्धों को हर कीमत पर रोकने के प्रयत्नों में योगदान देगी। इसलिये दोनों जर्मन राज्यों की पूर्ण निःशस्त्रीकरण की नीति यहां की जनता तथा सरकार का मूल मन्त्र बन चुका है। जनता का यह दृढ़ निश्चय, ज. ज. ग. सरकार की विदेश नीति में पूर्णतया अभिव्यक्त होता है। हाल ही में, ज. ज. ग. के विदेश मन्त्री डा० बोल्ज़ ने निःशस्त्रीकरण के संबंध में, संयुक्त राष्ट्र संघ के महामन्त्री, श्री ऊ थांत को एक पत्र लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं —सम्पादक

मान्यवर महामंत्री,

संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के सोलहवें अधिवेशन में ४ दिसम्बर, सन् १९६१ के दिन अणु-शस्त्रों के उत्पादन अथवा एकत्रीकरण के संबंध में जो वादविवाद हुआ, उस पर मैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का मत आप तक, और आपके द्वारा विश्व संस्था तक पहुंचाना अपना कर्तव्य समझता हूं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र हर उस सुझाव तथा क़दम का पूर्ण समर्थन करता रहा है और करेगा जो विश्व-शांति की स्थापना तथा पूर्ण निःशस्त्रीकरण के हक़ में उठाया जायेगा। इसलिये हमारी सरकार पूर्ण निःशस्त्रीकरण से संबंधित २० दिसम्बर, सन् १९६१ वाले प्रस्ताव का हार्दिक स्वागत करती है जो संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में पास हुआ। महासभा के पन्द्रहवें अधिवेशन के समय भी, ज. ज. ग. की सरकार ने महामन्त्री को एक स्मृति-पत्र भेज दिया था। उसमें यह सुझाव दिया गया था कि धीरे-धीरे दोनों जर्मन राज्यों में पूर्ण निःशस्त्रीकरण की योजना लागू कर दी जाय और इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय द्वन्द्व और तनाव के बहुत बड़े केन्द्र—जर्मनी को, शीत युद्ध के क्षेत्र से हटा दिया जाय। इसी सुझाव में यह मांग भी की गयी थी कि दोनों जर्मन राज्य यह फ़ैसला करें कि वे न तो अणु-शस्त्रों का उत्पादन करेंगे और न ही वे इन शस्त्रास्त्रों को बटोर कर अपनी सीमाओं के अन्तर्गत लायेंगे। ज. ज. ग. का यह सुझाव समस्त जर्मनी को आणविक शस्त्रीकरण से दूर रखेगा है।

आणविक शस्त्रीकरण के इस संदर्भ में ज. ज. ग. की सरकार, पोलैंड की जनवादी सरकार के उस विश्व प्रसिद्ध प्रस्ताव की ओर संकेत करना आवश्यक समझती है जिसमें मध्य यूरोप में अणु-शस्त्र विहीन एक क्षेत्र पैदा करने का सुझाव रखा गया था। ज. ज. ग. की सरकार ने इस सुझाव का समर्थन किया था जो मैंने ५ अक्तूबर, सन् १९५७ के दिन महासभा के अध्यक्ष को एक तार द्वारा भेजा था।

हाल ही में, चेकोस्लोवाकिया की समाजवादी सरकार और स्वीडन तथा फिनलैंड की सरकारों ने भी अणुशस्त्रों से विहीन क्षेत्रों की स्थापना के सुझावों का अनुमोदन किया है। इसलिये यूरोप में, अणुशस्त्रों से आज़ाद एक बड़े क्षेत्र की स्थापना करना एक निश्चित संभावना बन चुकी है। यह क्षेत्र स्कैंडिनेविया के देशों से लेकर सुदूर दक्षिण के एडरिया समुद्र तक विस्तार पा सकता है। लेकिन इस योजना के साकार होने में एक ही रुकावट है और वह है पश्चिमी जर्मनी की हकूमत का निरन्तर विरोध।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार यह जानती है कि दुनिया के लोग अणुयुद्ध के ख़तरे को हमेशा के लिये समाप्त करना चाहते हैं। इसीलिये हमारी सरकार ऐसे प्रस्तावों का प्रबल समर्थन करती है जो अणुशस्त्रों को अन्य देशों में फैलने से रोक लें। इसके अतिरिक्त, हमारी सरकार अफ्रीका में भी एक ऐसे क्षेत्र की स्थापना चाहती है जो अणुअस्त्रों से एकदम आज़ाद हो।

इसके साथ ही साथ, जर्मन जनवादी गणतंत्र इस बात को भी नजर अंदाज नहीं कर सकता कि पश्चिमी जर्मनी में बड़ी तेज़ी से न केवल शस्त्रीकरण ही हो रहा है, वरन् अमरीकी अणुशास्त्रों को भी वहां इकट्ठा किया जा रहा है। वहां की हकूमत खुद भी अणुशस्त्रों का उत्पादन करना चाहती है और इन शस्त्रास्त्रों के वाहक यानों के लिये अपनी सीमा में अड्डे स्थापित कर रही है। पश्चिमी जर्मनी के इस भयंकर शस्त्रीकरण का एक मात्र उद्देश्य है अणु युद्ध द्वारा जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा अन्य समाजवादी देशों से प्रतिशोध लेना, उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीत लेना। ज. ज. ग. की सरकार ने इन सभी तथ्यों को एक स्मृति-पत्र के रूप में, चेकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधि-मंडल के द्वारा, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के सोलहवें अधिवेशन में, दुनिया के सामने रखा है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, अणु शस्त्रास्त्रों के हासिल करने, बनाने या बटोर कर जमा रखने को तिलांजलि देने के लिये तैयार है। लेकिन शर्त यह है कि पश्चिमी जर्मनी की फेडरल हकूमत भी इन शस्त्रास्त्रों को तिलांजलि दे और इस बात की गारण्टी दे कि वह इस नीति को अमल में लायेगी।

ज. ज. ग., आज भी निःशस्त्रीकरण से संबंधित उन सभी सुझावों और प्रस्तावों में दृढ़ आस्था रखता है जो समय-समय पर उसने संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने रखे हैं। हमारी सरकार विशेषकर मध्य यूरोप में आणविक शस्त्रों से विहीन एक ऐसे क्षेत्र की स्थापना का प्रबल समर्थन करती है जिसमें दोनों जर्मन राज्य सम्मिलित हों।

अन्त में, श्री महामन्त्री, मैं आपको पूर्ण निःशस्त्रीकरण के प्रयासों में, ज. ज. ग. की जनता और सरकार के पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

आपका
एल. बोल्ज़
विदेश मंत्री, जर्मन जनवादी गणतंत्र

डा० लोथर बोल्ज़

ज. ज. ग. का स्मृति-पत्र :

जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन का एक सरकारी दस्तावेज़

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री, डा० लोथर बोल्ज़, दो जर्मन राज्यों में निःशस्त्रीकरण से संबंधित अपनी सरकार का एक स्मृति-पत्र देने के लिये मार्च में जनेवा गये। २८ मार्च को, जनेवा की १७ राष्ट्रों के निःशस्त्रीकरण सम्मेलन में ज. ज. ग. का उल्लिखित स्मृति-पत्र स्वीकार किया गया। इस प्रकार यह पत्र सम्मेलन का सरकारी दस्तावेज़ बन गया।

शीत युद्ध के तनावों को कम करने के उपायों पर विचार करने वाली उप-समिति में चेकोस्लोवाकिया के विदेश मन्त्री, श्री वैक्लाव डेविड ने भाग लेने वाले प्रतिनिधियों से यह अनुरोध किया कि वे ज. ज. ग. के स्मृति-पत्र पर अच्छी तरह विचार विमर्श करें, क्योंकि इसमें काफ़ी महत्त्वपूर्ण बातें और सुझाव रखे गये हैं।

सम्मेलन के सूत्रों में इस बात पर काफ़ी सन्तोष प्रकट किया गया कि ज. ज. ग. की सरकार ने पोलैंड के विदेश मंत्री, श्री रपाचकी की मध्य यूरोप में अणुशस्त्रों से विहीन क्षेत्र की स्थापना करने वाली योजना में, एक बार फिर अपनी पूर्ण आस्था की घोषणा की है। इसी प्रकार, शस्त्रास्त्रों के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण तथा दोनों जर्मन राज्यों के शस्त्रीकरण को घटाने के संबंध में भी ज. ज. ग. का स्मृति-पत्र पोलैंड द्वारा व्यक्त नियन्त्रण संबंधी उपायों का समर्थन करता है।

डा० बोल्ज़ जनेवा में सोवियत संघ, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के विदेश मंत्रियों के अलावा तटस्थ राष्ट्रों के मुख्य प्रतिनिधियों से भी मिले।

ज. ज. ग. लौटकर डा० बोल्ज़ ने कहा : "तटस्थ राष्ट्रों के प्रतिनिधि ही नहीं, बल्कि पश्चिमी देशों के नागरिक भी जनेवा में खुले आम यह कहते थे कि ज.ज.ग. द्वारा, १७ राष्ट्रों के निःशस्त्रीकरण जनेवा सम्मेलन के लिये सफलता की शुभकामना व्यक्त करना, अत्यन्त स्वाभाविक है। पश्चिमी जर्मनी का रवैया इसके ठीक विपरीत है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलतम लइपज़िक मेला :

सह-अस्तित्व का ज्वलन्त प्रतीक

एक निरीक्षक

इस बात से हमारे पाठक परिचित ही हैं कि इस वर्ष, ज. ज. ग. के लइपज़िक शहर में वसन्तकालीन व्यापार मेला ४ मार्च को शुरू हुआ और १३ मार्च को समाप्त। इस मेले के ८०० वर्षों के जीवन में, इस वर्ष का यह वसन्त मेला व्यापारिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टि से अद्वितीय और सफलतम रहा।

लइपज़िक मेले की इस अद्वितीय सफलता का व्यापक महत्व तब हमारे सामने आ जाता है जब हम इस बात को ध्यान में रखेंगे कि पश्चिमी जर्मनी के सामरिक तथा प्रति-हिंसावादी तत्वों ने नाटो कौंसिल के सक्रिय सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और सद्भावना के इस मेले को रोकने तथा असफल बनाने के अनेक प्रयत्न किये। इन तत्वों ने अपने देश की व्यापारिक फर्मों तथा संस्थाओं पर इस बात के लिए दबाव डाला कि वे लइपज़िक मेले में सम्मिलित न हों। लेकिन निम्न आंकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि इन तत्वों को मुंह की ही खानी पड़ी :

दबाव और धमकियों के बावजूद पश्चिमी जर्मनी से ६१ व्यापार फर्मों ने मेले में भाग लिया और प. बर्लिन से लगभग ११ हज़ार दर्शक और विश्व के ९४ देशों के ५ लाख से अधिक दर्शक लइपज़िक मेला देखने आये। इनमें से २८,४००० दर्शक समाजवादी देशों से और २१,९०० दर्शक अन्य देशों से आये। शेष ज. ज. ग. के दर्शक थे। ५८ देशों की ९००० व्यापार फर्मों तथा संस्थाओं ने इस मेले में अपने-अपने मंडप खड़े किये थे जो ३० लाख, २५ हज़ार वर्ग फुट ज़मीन पर फैले हुये थे। ये आंकडे नाटो के तोड़ फोड़ करने वाले और शांति तथा सद्भावना के विरोधी तत्वों के मुंह तोड़ उत्तर का जीवित प्रमाण हैं।

ब्रिटिश मंडप का एक दृश्य

लइपज़िक मेले में भारतीय मंडप। सोवियत संघ के उपप्रधानमन्त्री श्री मिकोयां और ज. ज. ग. के राज्य परिषद् के अध्यक्ष (बीच में) भारतीय वस्तुओं को गौर से देख रहे हैं

मेला इस दृष्टि से भी काफ़ी महत्व-पूर्ण रहा कि इसमें कई विश्व-प्रसिद्ध राज-नीतिज्ञ तथा व्यक्ति उपस्थित रहे। इनमें से उल्लेखनीय हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्तर उलब्रिख्त, सोवियत संघ के मंत्री परिषद् के प्रथम उपाध्यक्ष श्री मिकोयां, चेकोस्लोवाकिया में स्थित भारत के राजदूत, पोलैंड के प्रधान मंत्री श्री सिरनकेविच और चेकोस्लोवाकिया, हंगरी तथा रोमानिया के उप-प्रधान मंत्री।

मेले के दौरान ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष ने एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कान्फ्रेन्स बुलाई। इसमें प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं और रेडियो तथा टेलिविज़न कम्पनियों के ५०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रेस और प्रसारन के ये प्रतिनिधि अरब गणराज्य, घाना, सोवियत संघ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माली गणराज्य के श्री अब्दुल दयारा और अन्तर जर्मन व्यापार के उपमन्त्री, श्री गेहार्ड वाइस

ब्राज़िल, भारत, हंगरी, पोलैंड, ग्रीस, प. जर्मनी, अमरीका, फिनलैंड, आस्ट्रिया, सइप्रेस तथा अन्य देशों से आये थे।

एक प्रश्न के उत्तर में ज.ज.ग. के राज्य मंत्री ओटो विनज़ेर ने कहा कि बोन के शासन अधिकारियों ने दो जर्मन राज्यों के बीच व्यापार सन्धि को तोड़कर एक उत्तेजनात्मक और ग़ैर क़ानूनी क़दम उठाया है। इस सन्धि पर पिछले ही साल दस्तखत हुये थे। इस सन्धि में यह भी लिखा गया है कि लइपज़िक व्यापार मेलों में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा। व्यापार मंत्री श्री बालकाउ ने घोषणा की कि इन उत्तेजनाओं के बावजूद दोनों जर्मन राज्यों के आपसी व्यापार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस संबंध में उन्होंने इस रहस्य का भी उद्घाटन किया कि प. जर्मनी की अनुपस्थित बड़ी बड़ी इस्पात फर्मों और ट्रस्टों ने, मेले में अपने एजेंट भेज दिये थे ज. ज. ग. की विदेश व्यापार संस्था के साथ व्यापार समझौते करने के लिये।

मन्त्रि महोदय ने यह सूचना भी दी कि लइपज़िक के मेले में जो स्थान पहले पश्चिमी जर्मनी के इस्पात उद्योग मंडपों के लिए इस्तेमाल होता था, इस वर्ष कई अन्य देशों—स्वीडन, बेलजियम, सोवियत-संघ, पोलैंड, ब्रिटेन, फ्रांस, हंगरी आदि ने उनकी अनुपस्थिति का फ़ायदा उठाया। इन देशों ने प. जर्मनी के मंडपों के खाली स्थान पर अपने अतिरिक्त मंडप खड़े किये।

भारत—एक प्रमुख प्रदर्शक: समुद्र-पार देशों में से भारत ने मेले में सबसे अधिक क्षेत्र घेरा था अपने मंडप के लिए। अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के इस व्यापार मेले में भारतवर्ष अधिकाधिक दिलचस्पी ले रहा है। इसका प्रमाण यह है कि चेकोस्लोवाकिया में स्थित भारत के राजदूत सरकारी दौरे पर, इस मेले में पधारे। इसके अतिरिक्त, भारत के राज्य व्यापार निगम (स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन) के व्यवस्था निदेशक, श्री नरायण ने यहां एक प्रेस कानफ्रेन्स में भारत के योजना-बद्ध विकास और इसमें बुनियादी उद्योगों के महत्व पर प्रकाश डाला। भारत के विकास और नवनिर्माण में ज. ज. ग. और भारतवर्ष की व्यापारिक-संधि महत्वपूर्ण योग प्रदान करती है। इस सन्धि के अनुसार दोनों देशों के बीच व्यापार, समानता और सन्तुलित आधार पर हो रहा है। इसी प्रेस कान्फ्रेन्स में यह महत्वपूर्ण घोषणा भी हुई कि भारत और ज. ज. ग. के बीच लइपज़िक मेले में १ करोड़, २० लाख रुपये का एक व्यापार समझौता हुआ। इस समझौते के अनुसार, ज. ज. ग. सन् १९६२ में भारत को अमोनियम सलफेट तथा पोटाश जैसे उर्वरक उपलब्ध करेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार संस्था ने लइपज़िक के इस व्यापार मेले में ४ अरब, ३२ करोड़ और ७० लाख मार्क की रक़म का व्यापार किया (.८८ मार्क = १ रुपया)। इस रक़म में से ३ अरब, २७ करोड़ और ३० लाख मार्क का व्यापार समाजवादी देशों और बाक़ी १ अरब, ५ करोड़ और ४० लाख मार्क का व्यापार ग़ैर-समाजवादी देशों के साथ हुआ। इसके अतिरिक्त, माल के आयात-निर्यात के कई व्यापारिक समझौतों पर भी दस्तखत हुए। इनके अनुसार ज. ज. ग. ३ अरब, ७ करोड़ मार्क क़ीमत की वस्तुएं अन्य देशों को निर्यात करेगा, और १ अरब, २५ करोड़ और ७० लाख मार्क की रक़म की वस्तुएं अन्य देशों से आयात करेगा। निर्यात होने वाली वस्तुओं में से ६६ करोड़, ९० लाख रक़म की चीज़ें और आयात वस्तुओं में से ३८ करोड़, ५० लाख के रक़म की चीज़ों की आदान-प्रदान ग़ैर-समाजवादी देशों से होगा। इस प्रकार केवल ग़ैर-समाजवादी देशों के साथ ज. ज. ग. के व्यापार में १० करोड़ और ४० लाख मार्क की वृद्धि होगी।

मेले में इतना बड़ा व्यापार ज. ज. ग. ने ही किया हो, ऐसी बात नहीं। भारत, अरब गणराज्य, सोवियत-संघ तथा अन्य देशों ने भी यहांबहुत अच्छा व्यापार किया है।

उल्लिखित तथ्यों के आधार पर इस परिणाम पर पहुंचना अनिवार्य है कि लइपज़िक का व्यापार मेला राजनीतिक तथा आर्थिक उपलब्धियों की दृष्टि से अत्यधिक सफल तो रहा ही, साथ ही यह बात एक बार फिर सिद्ध हुई कि यह मेला पूर्व और पश्चिम का अनुपम मिलनस्थल भी है और विभिन्न आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के सहअस्तित्व और सद्भावना का ज्वलन्त प्रतीक!

ज.ज.ग. का "एम १४ ओपतिमा" टाइपराइटर। इसमें विभिन्न विदेशी भाषाओं के १०० 'की बोर्ड' लगाये जा सकते हैं

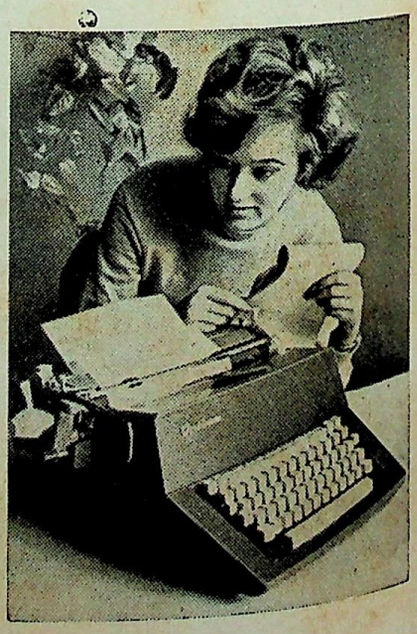

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र

और

- निःशस्त्रीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण
- पश्चिम जर्मनी की समस्या
- जर्मन शांति-सन्धि

ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उलब्रिख्त के एक महत्त्वपूर्ण भाषण के कतिपय उद्धरण

---

१४ मार्च, सन् १९६२ से जनेवा में हो रहे १८ देशीय निःशस्त्रीकरण सम्मेलन पर दुनिया के लोगों की आंखें लगी हुई हैं। वैसे निःशस्त्रीकरण के मामले को लेकर सन् १९४५ से कई सम्मेलन हो चुके हैं, लेकिन जनेवा का वर्तमान निःशस्त्रीकरण सम्मेलन, एक विशेष स्थिति और बदली हुई परिस्थितियों में हो रहा है। (१८ देशों में से फ्रांस ही एक ऐसा देश है जिसने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया है)।

ज. ज. ग. की जनता और सरकार, सोवियत संघ द्वारा सम्मेलन के सामने प्रस्तुत किये गये मसौदे "कड़े अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण के आधीन आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण" का हार्दिक स्वागत तथा समर्थन करती है। यह एक रचनात्मक प्रस्ताव है जो सभी लोगों के हितों के अनुकूल है, विशेषकर जर्मन जनता के अनुकूल जो शांति सन्धि की चिर अभिलाषी है।

निःशस्त्रीकरण का निरीक्षण तथा नियंत्रण मूल प्रश्न है, शस्त्रास्त्रों पर रोक लगाना गौण। अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा निःशस्त्रीकरण के बिना नियन्त्रण की मांग करना, मान्यता प्राप्त वैध जासूसी के लिये खुली छूट की मांग करने के बराबर है।

भारत के प्रतिरक्षामंत्री, श्री कृष्ण मेनन द्वारा प्रस्तावित आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण की योजना का हम हार्दिक स्वागत करते हैं जो कम से कम समय में तैयार करके उन्होंने सम्मेलन के सामने रखी। अन्य देशों को आणविक शस्त्र न देने के साथ-साथ उन्होंने आणविक शस्त्रों से विहीन क्षेत्रों के निर्माण और अणु प्रयोगों को बन्द करने की मांग की। श्री मेनन ने, निशस्त्रीकरण संबंधी समझौतों के निरीक्षण के लिये राष्ट्रीय केन्द्रों को स्थापित करने तथा अन्य ऐसे उपायों को लागू करने के विचारों का भी समर्थन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनता के लिये वरदान

सोवियत संघ द्वारा प्रस्तुत की गई योजना न केवल ज.ज.ग. की सम्पूर्ण जनता की शांति संबंधी इच्छाओं को ही पूरा करती है, बल्कि वह पश्चिमी जर्मनी की अधिकांश जनता के हितानुकूल भी है। जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की सफलता सम्पूर्ण जर्मन जनता के लिये एक अमर वरदान से कम न होगी!

मुझे इस बात का विश्वास है कि पश्चिमी जर्मनी के अधिकांश नागरिक इस बात से संतुष्ट तथा हर्षित होंगे यदि दोनों जर्मन राज्य अपनी सेनायें तोड़ सकें और वे शस्त्रीकरण पर धनराशि खर्च करने से हमेशा के लिये मुक्त हो जायें। मुझे इस बात का भी पूर्ण विश्वास है कि प. जर्मनी की अधिकांश जनता इस बात से अत्यन्त प्रसन्न होगी यदि उनकी हकूमत, शस्त्रीकरण और सेना पर खर्च किये जाने वाली अतुल धनराशि लोगों के आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक विकास और सामाजिक कल्याण तथा उनकी स्वास्थ्य रक्षा आदि के लिये खर्च करेगी। मेरा यह निश्चित मत है कि जर्मनी के लोग उस दिन सुख की नींद सो लेंगे जिस दिन घातक युद्धों को, आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण द्वारा, हमेशा के लिये समाप्त कर दिया जायेगा।

युद्धों के भयंकर परिणामों से जर्मन जनता भली भांति परिचित है जिसने दो घातक युद्धों का अनुभव किया है। इसलिये सम्पूर्ण जर्मन जनता को, पूर्ण निःस्त्रीकरण को सफल बनाने का यह शुभ अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। इसके लिये भरसक प्रयत्न करने में हमें किसी प्रकार की भी आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

शस्त्रीकरण की भयंकर होड़ को जल्द से जल्द रोकने के लिये हम, कम से कम, नीचे दिये गये उपायों को कार्यान्वित करना अत्यन्त आवश्यक समझते हैं:

१. दोनों जर्मन राज्य यह घोषणा करें कि वे न तो एक दूसरे के विरुद्ध और न ही अन्य देशों के विरुद्ध बल प्रयोग करेंगे।

२. शस्त्रीकरण को रोकने के लिये दोनों राज्य एक संधि पर दस्तख़त करें।

३. दोनों जर्मन राज्यों के लिये आणविक शस्त्रों का उत्पादन, प्रयोग तथा संचयन वर्जित हो और वे आणविक, रासायनिक तथा कीटाणु संबंधी शस्त्रास्त्र और इनके वाहक राकेट कहीं और से प्राप्त न करें। इसी प्रकार, दोनों जर्मन राज्य अन्य देशों में ऐसे शस्त्रों के परीक्षणों में भी सम्मिलित न हों।

४. एक संधि द्वारा, अधिक विदेशी अणुशस्त्र इकट्ठा करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये।

५. दोनों जर्मन राज्य युद्ध संबंधी सभी प्रचार बन्द करें और वे एक दूसरे तथा अन्य देशों की सीमाओं पर अधिकार जताना छोड़ दें।

६. दोनों जर्मन राज्य, आणविक शस्त्रों को अन्य देशों तक फैलने का विरोध करें।

हमारे विचार में ये ऐसे उपाय हैं जो तनाव को कम करने और निःशस्त्रीकरण के उद्देश्य तक जल्द से जल्द पहुंचाने में सहायक सिद्ध हों ही। साथ ही ये उपाय, प. जर्मनी की अधिकांश जनता की मांग के अनुरूप भी होंगे।

पश्चिमी जर्मनी की संसद में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भी इसी प्रकार के प्रस्ताव पेश कर रहे हैं। संसद के अनेक सोशल डेमोक्रैट सदस्य भी ऐसे प्रस्ताओं का समर्थन करते हैं लेकिन इन विचारों को जनता के सामने लाने में वे अभी आनाकानी करते हैं।

निःशस्त्रीकरण और नियन्त्रण

जहां तक निःशस्त्रीकरण के नियन्त्रण का सवाल है, दोनों जर्मन राज्यों को किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का नियन्त्रण ही स्वीकार करना होगा। इसी के साथ-साथ हम यह सुझाव भी पेश करते हैं कि दोनों राज्यों में दो नियन्त्रण-आयोग स्थापित किये जायें। संसद सदस्यों के अतिरिक्त मजदूर यूनियनों, महिलाओं तथा युवक संस्थाओं जैसे जनवादी संगठनों के प्रतिनिधि इन आयोगों के सदस्य हों। नियन्त्रण संबंधी सभी बातें ये दोनों आयोग आपस में मिल बैठ कर तय करें। इस प्रकार, इन आयोगों के माध्यम से दोनों जर्मन राज्यों की जनता निःशस्त्रीकरण के महत्वपूर्ण सवाल के साथ सक्रिय रूप में जुड़ जायेगी।

निःशस्त्रीकरण विषयक बात चीत में और आज के महत्वपूर्ण प्रश्नों को शांतिमय ढंग से सुलझाने में, पश्चिमी जर्मनी की एडेनाअर हकूमत हमेशा की तरह आज भी किसी समझौते को हर क़ीमत पर रोकने के लिये तुली हुई है। उदाहरण के लिये, जनेवा के जिस निःशस्त्रीकरण सम्मेलन पर आज दुनिया की शांतिकामी जनता की आंखें लगी हुई हैं उसी सम्मेलन के सामने, प. जर्मनी के युद्ध मंत्री श्री स्त्राउस ने यह मांग दोहराई है कि आणविक शस्त्रास्त्रों से संबंधित किसी भी निर्णय के अधिकारी 'बोन', अर्थात् प. जर्मनी के प्रतिहिंसावादी राजनीतिज्ञ ही हैं और कोई नहीं। इतना ही नहीं। एडेनाअर ने हाल ही में एक प्रेस सम्मेलन में "नाटो सेनाओं को आणविक शस्त्रों से लैस करने" की मांग की। इसका सीधा सीधा मतलब है हिटलर के भूतपूर्व नाज़ी सैनिक अफसरों तथा जेनरलों को अणु शस्त्रास्त्रों से लैस करना जो नाटो सेनाओं के मुख्य पदों पर बिठाये गये हैं। लेकिन प. जर्मनी की यह युद्ध पोषक और जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन का जबरदस्त विरोध करने की नीति, अन्त में इसको विच्छिन्न करेगी अन्य शांतिकामी देशों से। आज जबकि पूर्ण निःशस्त्रीकरण द्वारा अखिल मानवता को घातक युद्धों से हमेशा के लिये मुक्त करने का पावन तथा भगीरथ प्रयत्न हो रहा है, हम जर्मनों के लिये यह दुख और लज्जा की बात है कि एक जर्मन राज्य ही—प. जर्मनी की फेड़रल रिपब्लिक—इस सत्प्रयास की जड़ें काटने में लगा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संबंध में, प. जर्मनी की जनता को अपना आखिरी फैसला देना होगा। लेकिन ऐसा करने से पहले उसको न केवल अपनी फेडरल हकूमत के विचारों से ही सन्तोष प्राप्त करना होगा, बल्कि उसको सोवियत संघ द्वारा प्रस्तावित मसौदे और जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा प्रस्तावित स्मृति-पत्र को भी जांचना परखना होगा जो इन राज्यों के प्रवक्ताओं ने १८ राष्ट्रीय जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के सामने रखे।

जर्मन शांति सन्धि

जर्मनी की समस्या सुलझाने के लिये एक अनुकूल वातावरण पैदा करना अत्यन्त आवश्यक था। इस बात को दृष्टि में रखते हुये सोवियत संघ ने जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा वार्सा सन्धि से संबंधित अन्य राज्यों की सहमति से, इस बात की घोषणा की कि वह, ज. ज. ग. के साथ एक निश्चित समयावधि में शांति-सन्धि करने की शर्त स्थगित करने के लिये तैयार है। इसके अतिरिक्त, अमरीका की यह प्रार्थना भी कि पश्चिमी देशों को इस संबंध में विचार विमर्श करने के लिये कुछ समय दिया जाये, सोवियत सरकार ने स्वीकार की। लेकिन बदक़िस्मती से अमरीका और ब्रिटेन बोन हकूमत (प. जर्मनी) के इस बहकावे में आ गये कि आरंभ होने वाली बात चीत को पश्चिम बर्लिन तक आने जाने वाले रास्तों के मामले तक ही सीमित रखा जाये। इसका अवश्यम्भावी परिणाम यह निकला कि शांति संधि संबंधी महत्वपूर्ण बात चीत खटाई में पड़ गई।

सीमाओं के प्रश्न पर फिर से वादविवाद चलाना व्यर्थ है, क्योंकि दूसरे महायुद्ध के बाद अमरीका, सोवियत संघ और ब्रिटेन ने आपसी सन्धियों के जरिये ही ये सीमा रेखायें निर्धारित की हैं। आज इन सीमाओं को बदलने का मतलब होगा युद्ध आरंभ करना।

जर्मन शांति सन्धि संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की भावना के अनुकूल भी है। इस बात की कल्पना भी असंभव है कि नाटो के सैनिक अफसर जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में इस तरह घूमते फिरें जैसे वे अमरीकी अधिकृत क्षेत्र में हों। प्रत्येक शांति कामी व्यक्ति अथवा तत्व यह बात अच्छी तरह जानता है कि दूसरा युद्ध समाप्त हुये आज १७ वर्ष हो गये हैं और अब समय आ गया है कि ज. ज. ग. तथा अन्य देशों के बीच सवैध रिश्ते जुड़ें, ज. ज. ग. के यातायात मार्गों के इस्तेमाल पर अंतर्राष्ट्रीय क़ानून लागू होना चाहिये और पश्चिम बर्लिन, अधिकृत शासन सत्ता के चंगुल से आज़ाद होना चाहिये। यह जर्मन समस्या का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसीलिये पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधवादी राजनीतिज्ञों तथा तत्वों ने ज. ज. ग. में तोड़ फोड़ करने का काम, पिछले चन्द महीनों में, बहुत तेज़ कर दिया है। बोन के ये युद्ध लोलुप तत्व इस बात से भयभीत हैं कि यदि जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन सफल हुआ और यदि जर्मन शांति सन्धि का तथा प. बर्लिन समस्या का शांतिमय हल ढूंढ निकाला गया तो पश्चिमी जर्मनी की युद्ध और अणुशस्त्रीकरण संबंधी योजनायें ख़ाक में मिल जायेंगी।

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि

निःशस्त्रीकरण तथा आज की अन्य मुख्य समस्याओं से संबंधित बात चीत और विचार-विमर्श का अब तक कम से कम एक यह बहुत अच्छा परिणाम निकला है कि पश्चिमी देशों ने, उल्लिखित स्थिति के बारे में एक अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। यह बात एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि से कम नहीं। उनके सामने यह तथ्य साकार हो गया है कि दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व को अब अस्वीकार करना व्यर्थ है। वे यह भी समझ गये हैं कि कोई भी शक्ति—यहां तक कि युद्ध संबंधी उत्तेजनायें भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रभुसत्ता तथा सीमाओं को तबदील नहीं कर सकतीं।

आणविक शस्त्रीकरण का लगातार विरोध, आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण तथा जर्मन शांति सन्धि का समर्थन और पश्चिम बर्लिन की जटिल समस्या के शांतिपूर्ण समाधान की मांग—इसी शांति प्रिय नीति ने, दुनिया के अन्य देशों में, ज.ज.ग. का सम्मान तथा आदर बढ़ा दिया है।

अमरीका तथा पश्चिम के अन्य देश इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि सोवियत संघ तथा अन्य राज्यों और ज.ज.ग. के बीच होने वाली शांति सन्धि को वे अधिक समय तक नहीं रोक सकते। वे यह भी जानते हैं कि उनके निजी स्वार्थों की भलाई इसी में है कि वे जर्मन शांति सन्धि और प. बर्लिन तथा वहां तक पहुँचने के गमनागमन के मार्गों की समस्या का शांति पूर्ण समाधान ढूंढ़ने का समर्थन करें।

प. बर्लिन के गमनागमन-मार्ग

पश्चिमी देशों के अग्रगण्य राजनीतिज्ञों का कहना है कि प० बर्लिन को जाने आने वाले मार्गों का सवाल बुनियादी सवाल है। इसी तरह, निःशस्त्रीकरण के सवाल पर वे निरीक्षण को बुनियादी प्रश्न मानते हैं। लेकिन जब तक निशस्त्रीकरण के बारे में मतैक्य न हो, तब तक कैसे और किस चीज़ का निरीक्षण होगा? इसलिये निःशस्त्रीकरण का प्रश्न ही मूल प्रश्न है। निरीक्षण निशस्त्रीकरण का अंग है, प्राण नहीं। यही बात प० बर्लिन पर भी लागू होती है। इस समस्या को सुलझाने के लिये हमें वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखना ही पड़ेगा—अर्थात् हम इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते कि प. बर्लिन नामक क्षेत्र ज. ज. ग. की प्रभुसत्तात्मक सीमाओं में स्थित है और इसकी राजधानी बर्लिन का एक अभिन्न भाग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये प० बर्लिन तक पहुंचने और आने जाने के मार्गों के सवाल का हल इस मूल प्रश्न से जुड़ा हुआ है कि प० बर्लिन की अस्थिर स्थिति को समाप्त किया जाये, अर्थात् अमरीकी, ब्रिटिश तथा फ्रांस के वर्तमान आधिपत्य से वह मुक्त हो और वहां के जासूसी अड्डे खत्म कर दिये जायें। इसलिये प० बर्लिन के गमनागमन के मार्गों के प्रयोग की आज़ादी, जर्मन शांति सन्धि के साथ अनिवार्यतः जुड़ी हुई है।

वैसे भी, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में गमनागमन के मार्गों से संबंधित समझौते होते रहे हैं और होते रहेंगे। लेकिन इन मार्गों का प्रयोग—चाहे हवाई मार्ग हो अथवा सड़कें—हमेशा शांति प्रिय कामों के लिये हुआ है। कोई भी प्रभुसत्तात्मक देश युद्ध पोषण के कामों और जासूसी तथा तोड़ फोड़ के कामों के लिये अपने मार्गों को इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं दे सकता। इसलिये ज. ज. ग. भी प० बर्लिन को नाटो देशों का अड्डा बनाने की इजाज़त नही दे सकता और न ही वहां के हवाई तथा स्थल मार्गों को तोड़ फोड़, जासूसी तथा शीतयुद्ध के लिये खुला छोड़ा जा सकता है। इन मार्गों को केवल शांति प्रिय उद्देश्यों के लिये ही प्रयोग करने की छूट दी जा सकती है। ज. ज. ग. और सम्पूर्ण जर्मन जनता का कल्याण इसी में निहित है।

यदि जर्मन शांति सन्धि होगी और यदि प. बर्लिन की समस्या का शांति पूर्ण हल उपलब्ध होगा, तो इस स्थिति में ज. ज. ग. विभिन्न देशों के सदस्यों पर आधारित एक ऐसे आयोग की स्थापना करना स्वीकार कर लेगा जो यदि कभी किसी बात पर ज. ज. ग. और अमरीका, ब्रिटेन तथा फ्रांस के बीच मतैक्य न हो, मध्यस्थ अथवा पंच का काम करेगा। इस स्थिति में ये तीन राष्ट्र यदि सीधे ज. ज. ग. के साथ बात न करना चाहें तो सोवियत संघ के माध्यम से उल्लिखित आयोग में मतभेद सुलझाया जा सकता है।

इस मध्यस्थ-आयोग द्वारा पेश की गई सिफारिशों को ज.ज.ग. की सरकार स्वीकार कर सकती है। यदि इस आयोग की स्थापना भी अन्य तीन राज्यों को मान्य न हो तो संयुक्त राष्ट्र संघ की कोई संस्था प. बर्लिन के गमनागमन के मार्गों के शांतिप्रिय इस्तेमाल की गारंटी दे सकती है।

ज. ज. ग. : एक प्रभुसत्तात्मक राज्य

उल्लिखित स्थिति पैदा करने के लिये पहली शर्त जो पूरी होनी चाहिये वह यह है कि प० बर्लिन पर अमरीका, ब्रिटेन तथा फ्रांस का प्रभुत्व समाप्त किया जाये, और वहां से इन तीनों देशों की अधिकृत सेनायें हटाई जायें। अथवा इस बात को मान लिया जाये कि वहां तटस्थ राष्ट्रों का एक सैन्य दल गारंटी के रूप में ठहराया जायेगा। यदि चार बड़े राष्ट्र—सोवियत संघ, अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस—प. बर्लिन की वर्तमान अनिश्चित स्थिति को स्थिर करने के लिये शांतिपूर्ण हल ढूंढ़ निकालेंगे और इस प्रकार वे गत महायुद्ध के अवशेषों को समाप्त करेंगे, तो इस स्थिति में ज. ज. ग. प. बर्लिन को जाने वाले स्थल तथा वायु मार्ग—जो इसकी सीमाओं के अन्तर्गत स्थित हैं—इस्तेमाल करने की अनुमति दे सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ज. ज. ग. की प्रभुसत्ता तथा सीमाओं की सुरक्षा के प्रति सम्मान, इसकी समाज तथा शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप न करना और प. बर्लिन को एक असैनिक, स्वतन्त्र नगर में परिवर्तित करना—यह है वह पहली और आखिरी शर्त जो प. बर्लिन के गमनागमन मार्गों के इस्तेमाल लिये पूरी की जानी चाहिये। प. बर्लिन के सेनेट (प्रशासन) को यह बात स्पष्ट होनी चाहिये कि प. बर्लिन में प्रवेश पाने की समस्या उत्तेजनाओं और उस पर क़बज़ा जमाने से नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के आधार पर, ज. ज. ग. की प्रभुसत्ता स्वीकार करने और उसके प्रति आदर की भावना रखने की बुनियाद पर ही हल हो सकती है।

शांति स्थापना तथा तनाव कम करने की दिशा में प. बर्लिन सेनेट की यह एक महान देन होती, यदि वह वहां की नाज़ी तथा सैनिकवादी संस्थाओं के काम और हलचल को बन्द करती, और प्रतिशोध लेने की भावना को तिलांजलि देती और युद्ध प्रचार को समाप्त करती।

जर्मन परिसंघ (कानफेडेरेशन)

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने यह भी कहा कि प. जर्मनी में ऐसे अनेक लोग हैं जो इस बात से चिन्तित हैं कि आखिर एक ही जर्मनी में दो ऐसे जर्मन राज्य कैसे शांति पूर्वक साथ साथ रह सकते हैं जो आज दो अलग अलग और मूलतः विरोधी समाज व्यवस्थाओं पर आधारित हैं। "यह प्रश्न वाक़ई एक सही और अहम प्रश्न है, और हम भी इस बारे में सोच विचार करते हैं," श्री उल्ब्रिख्त बोले, "लेकिन हमने इस समस्या का भी एक समुचित हल प्रस्तावित किया है। ज. ज. ग., पश्चिमी जर्मनी के कई राजनीतिज्ञों तथा नागरिकों के इस विचार से सहमत है कि आधुनिक युग का सबसे बड़ा खतरा जर्मन भूमि पर अणु युद्ध का छिड़ जाना है, जो हमें हर क़ीमत पर रोकना होगा। इसका सीधा सीधा तात्पर्य यही है कि दो जर्मन राज्यों की जनता को किसी तरह शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का जीवन यापन स्वीकार करना ही होगा और प्रतिशोध तथा युद्ध की तैयारी करने की नीति को तिलांजलि देनी होगी। आधुनिक युग के इसी ऐतिहासिक सत्य तथा वास्तविकता को ध्यान में रखते हुये हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि दो जर्मन राज्यों को एक परिसंघ, अर्थात् कानफेडेरेशन का रूप दिया जाये। यही सूरत हमारी आजकल की ऐतिहासिक परिस्थितियों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की मांग को पूरा कर सकती है। असैनिक, स्वतंत्र और तटस्थ प. बर्लिन भी ऐसे जर्मन परिसंघ का सदस्य बन सकता है।"

श्री उल्ब्रिख्त ने इस बात को स्पष्ट किया कि इस कानफेडेरेशन का अस्तित्व शाश्वत और नित्य नहीं रहेगा क्योंकि जर्मन राष्ट्र हमेशा के लिये आज की तरह विभाजित नहीं रह सकता। ज्यों ज्यों प. जर्मनी के किसान, मज़दूर, बुद्धि जीवी और स्वयं उच्च वर्ग के अधिकांश लोग एकता के सूत्र में बंध कर साम्राज्यवाद और सैनिकवाद को निर्बल करेंगे, त्यों त्यों जर्मन परिसंघ के दो एकांशों अर्थात् दो राज्यों का अलगाव भी मिटता जायेगा। अन्त में ये दो जर्मन राज्य, प. बर्लिन सहित पूर्ववत एक हो जायेंगे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

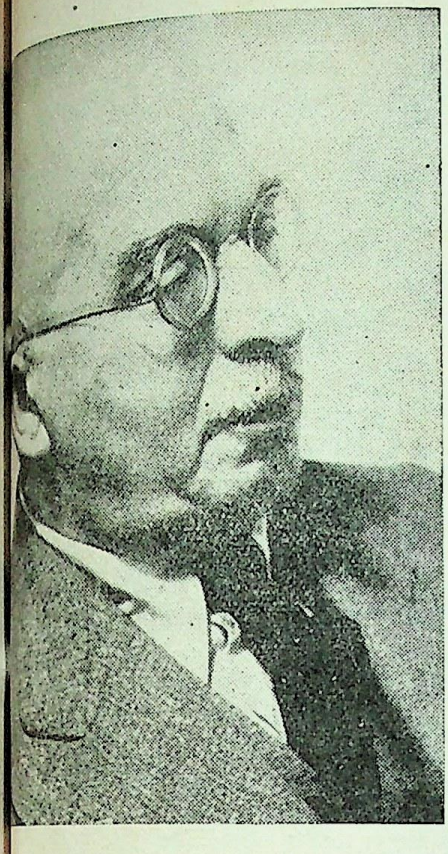

व्यक्तित्व की झांकी :

अर्नाल्ड ज़्वाइग

श्री अर्नाल्ड ज़्वाइग, वर्तमान शताब्दी के सबसे बड़े जर्मन साहित्यकारों में से एक हैं। सन् १८८७ में इनका जन्म, जर्मनी के एक छोटे कस्बे ग्लोगाउ में हुआ। जर्मनी के सात विश्वविद्यालयों में इन्होंने मनोविज्ञान, राजनीति, अर्थ-शास्त्र, कला तथा आधुनिक भाषाओं की शिक्षा पाई।

साहित्य के क्षेत्र में श्री अर्नाल्ड एक कहानीकार के रूप में प्रविष्ट हुये। सन् १९१२ में "क्लाडिया की वार्ता" नामक उपन्यास से आप ने ख्याति पाई। सन् १९१५ तक आते आते आप एक अनुभव-सिद्ध उपन्यासकार के रूप में संस्थापित हो गये। उस वर्ष आपको "हंगरी में हत्या" नामक कृति पर 'क्लाइस्त पारितोषक' प्राप्त हुआ।

श्री अर्नाल्ड ज़्वाइग की रचानायें दो विश्व युद्धों तथा इनके बीच की अवधि के क्रांतिकारी परिवर्तनों का प्रतिनिधि जर्मन साहित्य है। प्रथम महायुद्ध में आप सन् १९१५ से १९१८ तक, एक सैनिक थे। लड़ाई के दौरान, आत्म-अनुभव द्वारा आपने उन सामाजिक शक्तियों तथा तत्त्वों को देखा जो युद्धों को जन्म देते हैं। आपने, इन ही अनुभवों को अपने साहित्य में वाणी दी। यही अनुभवसिद्ध चेतना आपकी महान रचनाओं का मेरूदन्ड है।

सैनिक के रूप में पूर्वी मुहाज पर लड़ते हुये श्री अर्नाल्ड ने रूस के युद्ध-बन्दियों की ग़ैर क़ानूनी हत्या देखी। आपने सन् १९२१ में इस घटना पर आधारित एक दुःखान्त नाटक लिखा। बाद में इस नाटक को आपने उपन्यास "सारजंट ग्रिशक का झगड़ा" का रूप दिया। इस सुन्दर साहित्यिक कृति की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। इसके बाद आपने "साम्राज्यवाद से समाज-वाद तक का संक्रांतिकाल" चित्रित करने के लिये एक उपन्यास-माला लिखने का दृढ़ निश्चय किया। इस उपन्यास-माला को, आप ने "गोरी चमडी वालों का महायुद्ध" नाम दिया है और आज तक, उपन्यासों की इस श्रृंखला की छः कड़ियां आप जोड़ भी चुके हैं।

"सन् १९१४ की युवती" और "वरदां की शिक्षा" में श्री अर्नाल्ड ने प्रथम साम्राज्यवादी महायुद्ध की क्रूरताओं से संबंधित आत्मानुभवों को चित्रित किया। इसी प्रकार पूर्वी मुहाज़ के अपने अनुभवों को आपने "सारजंट ग्रिशका का झगड़ा" और "एक सम्राट की नियुक्ति" नामक उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। सन् १९५४ में आपने इस श्रृंखला की पांचवीं कड़ी जोड़ दी 'सन्धि' लिखकर। इस श्रृंखला की प्रथम कड़ी है "समय आ पहुंचा है।" जर्मन साहित्य में, प्रथम महायुद्ध संबंधी साहित्य में, ये उपन्यास अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। श्री अर्नाल्ड की सामाजिक तत्त्वों तथा शक्तियों को समझने की प्रतिभा और उनको अभिव्यक्त करने की वर्णन शैली अद्वितीय है। इसीलिए जर्मन जनता की भावनाओं को वह अपनी कृतियों में इतनी प्रबल वाणी दे पाये हैं। वास्तव में सम्पूर्ण जर्मन जनता ही इनके उपन्यासों की नायक है।

जर्मन में नाज़ीवाद और हिटलर-शाही के दौरान यहूदी, प्रगतिशील अथवा मानवता का पक्षपाती होना सब से बड़ा अपराध था। श्री अर्नाल्ड ज़्वाइग यहूदी भी थे और मानवता प्रेमी साहित्यकार भी। नाज़ियों की दृष्टि में इसलिये वह दोहरे पापी थे। अपने प्राणों की रक्षा के लिये आपको अपनी मातृभूमि से निष्कासन लेना पड़ा और आप प्राग, वियाना, फ्रांस तथा फिलस्तीन में मारे मारे फिरते रहे। जब आप फाशिस्त राक्षसों के हाथ न लगे तो उन्होंने आपकी रचनाओं को जलाना शुरू किया। लेकिन आपका साहित्य जन जीवन का अमृत पीकर अमर बन चुका था। इसका नाश करना राक्षसों की सामर्थ्य के बाहर था।

निष्कासन काल में आपको अपने वतन की याद और इसका प्यार बार बार सताया करता था। इसकी जीवन्त झलक आपके "वे क्रूर दिन" नामक उपन्यास में आज भी सुरक्षित है। अपनी मातृभूमि से दूर, दर दर की ठोकरें खाते हुये भी आपकी आंखों में जर्मनी और वहां की जनता बसी हुई थी। इसीलिये जब सोवियत रूस की सेना ने फासिस्त फौजों की कमर तोड़ दी तो आपके हर्ष और उल्लास की सीमा न रही।

सन् १९४९ में श्री अर्नाल्ड का "वांडसबेक का कुल्हाडा" नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसमें जर्मनी का वह जीवन चित्रित हुआ है जब वहां की जनता हिटलर के दमन चक्र में पिस रही थी। इन उपन्यासों के अलावा आपने अनेक कहानियां, कवितायें, नाटक तथा आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखे हैं। आज जबकि आपकी आंखें प्रकाश से लगभग विहीन हो चुकी हैं, फिर भी आप जन सेवा और साहित्य सृजन में लगे हुये हैं। आप आज भी साम्राज्य-वादियों की युद्धलोलुपसा और उनके षड़यन्त्रों का डट कर विरोध करते हैं।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौने : बच्चों की निराली दुनिया

इन्ग्रिद मन्न

आप सोनेबर्ग के नाम से भले ही अपरिचित हों, लेकिन यहां के खिलौनों से आप अवश्य परिचित होंगे। आइये, मैं आपको खिलौनों के इस देश की सैर कराऊंगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के दक्षिणी सिरे पर थुरिनजियन पर्वतमाला खड़ी है। इस पर्वतमाला की गोद में एक अत्यन्त मनोहर घाटी फैली है। सोनेबर्ग इस घाटी का एक अंग है जिसको लोग "खिलौनों का बक्सा" के नाम से याद करते हैं। इसका यह नाम बिलकुल सार्थक और उचित ही है, क्योंकि सोनेबर्ग का प्रदेश पिछले २०० वर्षों से खिलौनों का घर रहा है। यहां हर आकार प्रकार के खिलौने बनाये जाते हैं। सोनेबर्ग के खिलौना-संग्रहालय में आप को, जर्मनी तथा अन्य देशों के हज़ारों खिलौने —बिजली से चलने वाली रेलगाड़ियां, साज-सज्जा का सुन्दर सामान, मखमल के बने हुये गुड्डे-गुड्डियां, लकड़ी के खिलौने और मिस्र देश के मिट्टी के बने हुये प्राचीन काल के खिलौने, रखे हुये मिलेंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में खिलौना बनाने की इस परम्परा को आगे बढ़ाया गया है। आजकल यहां ८ सरकारी तथा ११ अर्ध-सरकारी फर्में और दस्तकारों के ११ सहकारी संघ नानाप्रकार के मन पसन्द हजारों छोटे बड़े खिलौने पैदा करते हैं। इन संस्थाओं के अतिरिक्त कई निजी फर्में भी इस उद्योग में संलग्न हैं। सोनेबर्ग निम्नप्रकार के खिलौने पैदा और सप्लाई करता है :

प्लास्टिक के खिलौने : परम्परागत पेपरमैशी के बने हुये खिलौनों का स्थान लिया है नर्म और सख्त प्लास्टि के बने हुये खिलौनों ने। गुड्डे तथा गुड्डियों के सिर, धड़ और हाथ पैर खास तरह के मशीनी सांचों में ढाले जाते हैं। खराब या जाया होने वाले खिलौनों को फिर से कच्चे माल में तबदील करके इस्तेमाल किया जा सकता है। प्लास्टिक का एक नया पदार्थ तैयार किया गया है जो काफी नर्म है। इस पदार्थ से बने हुये खिलौनों को बच्चे की नरम और कोमल उंगलियां खिलौने को चाहे कितना ही दबायें, लेकिन खिलौना उंगलियों का दबाव हटते ही, उछल कर, अपनी असली शकल में आ जाता है।

यहां की एक फर्म ने प्लश (एक प्रकार का कोमल कपड़ा) के बने हुये तीन प्रकार के खिलौने तैयार किये हैं। ये खिलौने मैले होने पर धोये भी जा सकते हैं। खिलौनों के अवयव लोहे की चूलों से भी नहीं जुडे हैं। इसलिये बच्चे, हाथ कट जाने के खतरे के बगैर खिलौनों को नहला धुला सकते हैं।

नन्हे मुन्ने अंतरिक्ष राकेट : जब से पहला अंतरिक्ष यात्री, यूरी गगारिन, अंतरिक्ष की सफल यात्रा कर आया है, तब से दुनिया भर के बच्चों ने अपने माता पिताओं को राकेटों तथा अंतरिक्ष-यानों के बारे में सवाल पूछ पूछ कर परेशान किया होगा। बिचारे मां बाप को, काग़ज़ पर पेनसिलों से राकेट के चित्र खींचकर बच्चों की उत्सुकता का समाधान करना पड़ा होगा। लेकिन उनको अब परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि ज.ज.ग. में ब्रानदेनबुर्ग की मेक्निकी खिलौना तैयार करने वाली 'वेब' नामक फ़ैक्ट्री ने, केवल तीन महीनों में एक नन्हा अंतरिक्ष-राकेट, उड़ाने वाले पैड सहित, तैयार किया है। इस खिलौने राकेट का शरीर प्लास्टिक से और उड़ाने वाला पैड प्लास्टिक तथा इस्पात से तैयार किया गया है। उड़ाने वाले पैड के साथ एक मोटर जुड़ी हुई हैं जो ४.५ वोल्ट की टार्च बैटरी से चलती है। मोटर एक बटन को दबाने से चालू होती है। उड़ाने वाले पैड से राकेट ७०, ८० तथा ९० दर्जों के कोणों पर उड़ाया जा सकता है। एक स्विच के दबाने से यह मुन्ना राकेट फर्र—र—से १०० से १३० फुट की ऊंचाई पर उठकर २०० फुट की दूरी तक उड़ सकता है। यह एक बहुत ही दिलचस्प खिलौना है जिसकी मांग अन्य देशों में भी बढ़ती जा रही है।

मेक्निकी खिलौने बच्चों को तक्नीकी प्रक्रियाओं से परिचित कराते हैं। ब्रांदेनबुर्ग की ही एक सरकारी मेक्निकी

लकड़ी के इन आधुनिक खिलौनों से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं

CC-0. In P

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्हे मुन्ने स्पूतनिक, राकेट, अंतरिक्ष यात्री....भविष्यके गगारिन और तितोव तैयार कर रहे हैं

खिलौना फ़ैक्ट्री ने एक खिलौना-ट्रैक्टर बनाया है। यह भी टार्च बैटरी से चलता है और लगभग १० सेर वज़न उठाकर ३० दर्जे की चढ़ाई चढ़ सकता है। थूरिनजिया की एक अन्य सरकारी खिलौना बनाने वाली फ़ैक्ट्री ने एक स्वचालित मोटरकार तैयार की है। यह आगे और पीछे दोनों ओर चल सकती है। सोनेबर्ग की एक दूसरी खिलौना-फ़ैक्ट्री, बच्चों के लिये कपड़े धोने की एक नन्ही मशीन बना रही है। यह २० सेन्टिमीटर लम्बी, ९.९ से० मी० चौड़ी और १५ से० मी० ऊंची होगी। प्लास्टिक और धातु से बनी यह मशीन भी ४.५ वोल्ट बैटरी से चलेगी। कपड़ा धोने का एक ड्रम और उनको सुखाने का एक यन्त्र भी इसके साथ जुड़ा होगा।

नन्हें इंजीनियरों के लिये : जर्मन जनवादी गणतंत्र में बच्चों की तकनीकी शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। यहां के सभी माध्यमिक स्कूलों में तकनीकी शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थी बच्चे इन स्कूलों में सभी तरह की छोटी बड़ी तकनीकी समस्याओं से परिचित हो जाते हैं। खिलौना बनाने वाली फ़ैक्ट्रियां भविष्य के इंजीनियर तैयार करने के इस महत्वपूर्ण काम में हाथ बटाती हैं।

जो बच्चे बिजली से चलने वाले खिलौनों में रुचि दिखाते हैं, उनके लिये विशेष प्रकार के बिजली-सेट तैयार किये जाते हैं। बिना किसी खतरे के, बच्चे इन सेटों पर विविध प्रयोग कर सकते हैं और बिजली इंजीनियरी की थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त करते हैं।

भविष्य के राजगीरों तथा वास्तुकारों के लिये, स्तइनख की सरकारी फ़ैक्ट्री ने मकानों की तामीर संबंधी कई मेक्निकी मशीनें बनाई हैं। इसी प्रकार अन्य फ़ैक्ट्रियों ने हवाई जहाज़, जहाज़ तथा ऐसी ही अन्य चीजें बनाने की खिलौना-मशीनें तैयार की हैं।

लकड़ी के आधुनिक खिलौने : प्लास्टिक अभी पूर्ण रूप से लकड़ी का स्थान नहीं ले सका है। न केवल थूरिनजिया में ही, बल्कि एत्ज़गबर्ग के पर्वत प्रदेश में भी लकड़ी के खिलौने बनाये जाते हैं। ज. ज. ग. के परम्परागत निर्यात सामान में इन खिलौनों का महत्वपूर्ण स्थान है। लकड़ी के खिलौने बनाना यहां की एक दस्तकारी थी, लेकिन अब इस उद्योगों में भी छोटी मशीनों का प्रयोग किया जाता है।

सोनेबर्ग की एक फ़ैक्ट्री ने एक आधुनिक गैरेज बनाया है। इसमें तान मंज़िलें हैं। पहली मंज़िल में मोटरों में पेट्रोल भरने वाला पम्प है। दूसरी और तीसरी मंज़िलों में मोटरें रखी जाती हैं जो लिफ्ट से उठाकर वहां पहुंचाई जाती हैं। इसी प्रकार, यह फर्म गुड्डियां और उनका सामान रखने के बक्से तैयार करती हैं। यह बक्सा गुड़िया रानी के राजमहल में तबदील किया जा सकता है।

खिलौनों का निर्यात : जर्मन जनवादी गणतंत्र, ये और इस प्रकार के दूसरे खिलौने ७० देशों को निर्यात करता है। इन देशों में विशेष उल्लेखनीय हैं हालैंड, बेल्जियम तथा स्कैंडिनेविया के सभी देश। इटली का अपना खिलौना उद्योग काफी विकसित है। फिर भी इटली ज.ज.ग. के खिलौनों का भारी मात्रा में आयात करती है। पिछले कुछ वर्षों से कई अफ्रीकी देशों में भी इन खिलौनों की मांग बढ़ रही है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि खिलौनों की इस अनोखी दुनिया में बच्चे विचरण करते हैं और खेल खेल में ही भविष्य के अनेक वैज्ञानिक, इंजीनियर तथा कलाकार निर्माण होते रहते हैं।

नन्हे मुन्नों की नन्ही मुन्नी गुड्डियां गुड्डे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवाद के बढ़ते चरण :

सर्वतोमुखी आर्थिक विकास

गर्हार्ड एच. केग्ल

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने लइपज़िक में, अपने मंडप में बीसियों नई वस्तुएं प्रदर्शन के लिये रखी थीं। ये वस्तुएं इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि ज. ज. ग. की समाजवाद आर्थिक नीति बिलकुल सही है।

ज. ज. ग. ने, औद्योगिक उत्पादन की ९३ नई वस्तुएं लइपज़िक मेले में प्रदर्शित की थीं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कसौटी पर बिलकुल खरी उतरती हैं। ये वस्तुएं केवल पिछले एक साल में पैदा की गई हैं। इन वस्तुओं के उत्पादन में नई तकनीक और अत्याधुनिक ढंग की मशीनों का बहुत प्रयोग हुआ। इसी का परिणाम है कि ज. ज. ग. में प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन, दुनिया के प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन के औसत से चार गुना अधिक है।

इन वस्तुओं में एक दैत्याकार ८० मीटर ऊंचा क्रेन प्रदर्शित हुआ था। चारों ओर घूमने वाला यह क्रेन ४० टन का वज़न उठा सकता है और निर्माण-स्थलों पर तामीर से संबंधित इस्पात के सभी भारी काम बहुत कम समय में करता है। यह क्रेन बड़ी आसानी से जोड़ा उखाड़ा भी जा सकता है।

आश्चर्य में डालने वाली एक और नई मशीन यहां थी इस्पात तार की मशीन। यह स्वचालित मशीन एक मिनट में ३,२०० चक्कर काटती है और कार्डबोर्ड को भेदने और काटने का काम करती है।

सन् १९६० की तुलना में, सन् ६१ में ज. ज. ग. के औद्योगिक उत्पादन में ६.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार दूसरे महायुद्ध पूर्व की तुलना में यहां का औद्योगिक उत्पादन तीन गुना (३०० प्रतिशत) बढ़ गया है जब कि पश्चिमी जर्मनी में यह उत्पादन केवल १६५ प्रतिशत ही बढ़ा है। ज. ज. ग. की इस औद्योगिक प्रगति का उल्लेख करते समय यह तथ्य भूलना नहीं चाहिये कि सन् १९६१ में हमको अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। सब से बड़ी कठिनाई प. जर्मनी हकूमत की व्यापार बहिष्कार की धमकियां थीं। इन कठिनाइयों के बावजूद ज. ज. ग. की आर्थिक प्रगति निरंतर बढ़ती गई।

सन् १९६१ में, सप्त-वर्षीय योजना के अनुसार, ज. ज. ग. में १०० से अधिक बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्रों का निर्माण हो रहा है। इनमें से कुछ तैयार हो चुके हैं और शेष बहुत जल्द पूरे हो जायेंगे। कोयला साफ़ करने का कारखाना तैयार हो चुका है। लुबेनाउ के बिजलीघर के सौ-सौ मेगावाट बिजली पैदा करने वाले छः टरबाइन तैयार हो चुके हैं। इसी प्रकार, 'ब्लैक पम्प' नामक उद्योग पुरी में, ज. ज. ग. में बना हुआ पहला ४२० टन वाला वाष्प जनरेटर बनकर लगभग तैयार हो चुका है। इस कारखाने के छः बायलरों को आपस में मिलाने वाले नलों की कुल लम्बाई १,९२० किलोमीटर है—अर्थात् बर्लिन से मास्को तक के फासले के बराबर।

ज. ज. ग. उद्योग की लगभग प्रत्येक शाखा में किसी न किसी नई वस्तु का उत्पादन हुआ है। 'काला' में स्थित चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने का स्वचालित कारखाना, जो युरोप में सब से बड़ा है, सन् १९६१ में चालू हो गया। 'क्लैटवित्ज़' की कोयला खान में ६००० टन भारी और ३८० मीटर लम्बा, दुनिया का सबसे लम्बा कोयला-वाहक पट्टा लगा दिया गया है। सुन्दर, रंगीन छपाई के लिये तांबे की प्लेटों वाला एक छापाखाना, प्लाउन के कारखाने में, तैयार किया गया है। दुनिया में अपने ढंग का यह सब से बड़ा प्रिंटिंग प्रेस है। रंगीन छपाई करने के साथ-साथ यह प्रेस ४४ पृष्ठों के पत्र की ३०,००० कापियां प्रति घन्टे में बान्ध सकता है।

ड्रेसडन के निकट, रोसेनडार्फ में पंचवर्षीय नाभिकीय भौतिकी की केन्द्रीय संस्था इन्स्टिट्यूट आफ न्यूकलियर फिज़िक्स) के सतत अनुसन्धान के फलस्वरूप, ज. ज. ग. दुनिया के समस्थानिकों (आइसोटोप) का वर्गीकरण करने वाले देशों में, चौथे स्थान पर है। इस वर्ष ज. ज. ग. की यह नाभिकीय शोध संस्था पहला रिएक्टर चालू करेगी।

पिछले वर्ष बर्लिन में टेलिविज़न के वैल्व बनाने का एक नया कारखाना चालू हुआ। ज. ज. ग. में १५ लाख लोगों के पास टेलिविज़न हैं, अर्थात् फ्रांस से अधिक। इसी प्रकार, सन् १९६१ में यहां के निवासियों ने खाने पीने की चीज़ों और औद्योगिक पदार्थों पर दो अरब मार्क खर्च किये—यानी सन् ६० की तुलना में प्रति व्यक्ति ने ११७ मार्क अधिक खर्च किये। सन् ६१ में ९६,००० नये रहायशी मकान तैयार किये गये और सन् ६२ में १००,००० रहायशी मकान तैयार होंगे। ये आंकड़े स्वयं ज.ज.ग. की जनता की खुशहाली और सर्वतोमुखी विकास के मुंह बोलते चित्र हैं!

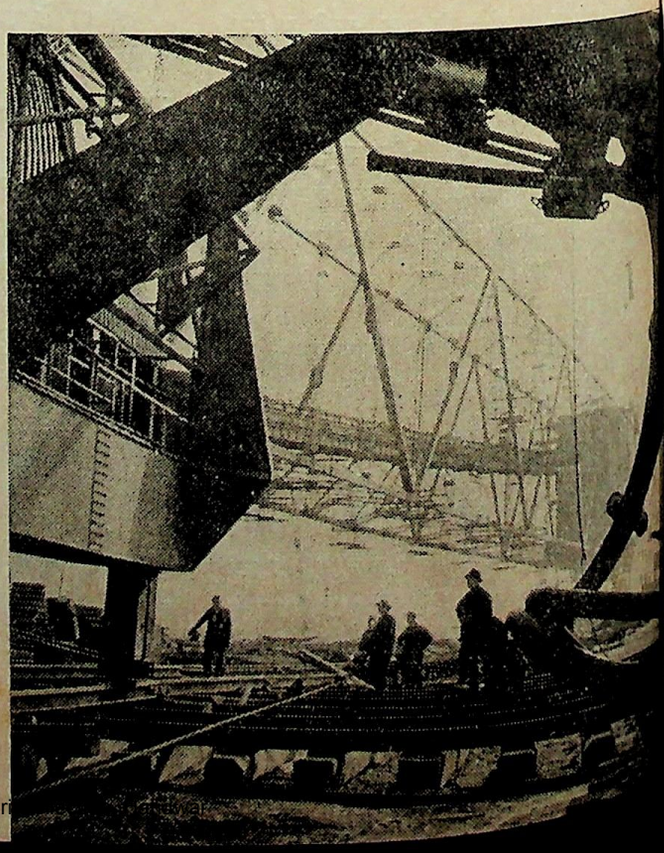

लाइनहैम्मर्खक का कारखाना जहां दुनिया का सबसे बड़ा परिवहन पुल बना। यह लगभग ४०० मीटर लम्बा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायरी के कुछ और पृष्ठ :

बर्लिन : कवि की पारदर्शी आंखों में

नियाज़ हैदर

हमारी दुभाषिया, श्रीमती रोज़मेरी, घड़ी देखते हुये बोलीं : "आप जानते हैं कि समय बहुत कम रह गया है। अभी सारे शहर का चक्कर लगाना होगा। और फिर·····"

मैंने पास खड़े हुये अवामी पुलिस के सिपाही का शुक्रिया अदा करने के लिये जर्मन भाषा का एक शब्द दोहराया : 'डांकेशोइन' ! नौजवान सिपाही कार्ल का चेहरा आनन्द विह्वल हो उठा। लोहे की सैनिक टोपी की छाया में उसके होटों की लालिमा और उजले दान्तों की जगमगाहट कार्ल की छाती से लगी हुई मशीनी बन्दूक की काली नाली पर प्रतिबिंबित हो कर उसमें मानो जज़्ब सी हो जाती !···मैंने कार्ल की मशीनी बन्दूक को डरते-डरते छूकर देखा। बांसुरी जैसी छिद्रों वाली लोहे की नाली बर्फ़ जैसी ठंडी थी ! सहसा मेरे अन्दर का कवि जाग उठा। छन्द का द्वार उन्मुक्त हुआ और कार्ल को सिर से पैर तक देखते हुये मैं गुनगुनाने लगा :

"अमन की सरहदों का मैं मुहाफ़िज़ हूं
मेरी वर्दी बहारों की मानन्द सरसब्ज़ो शादाब है"

मेरा यह कवि-मूड, डा. रोज़मेरी के टोकने से बिखर गया। वह कह रही थीं, "चलिए अब हम स्तालिनाल्ले की ओर चलें। समय बहुत कम रह गया है—बहुत ही कम।" कार्ल से 'वीदरज़ेहन'—फिर मिलेंगे, कह कर हम लोग वहां से रुख़सत हुये।

उनतर देन लिन्दन : विल्हेलम स्त्रासे पार करो तो बर्लिन की प्रसिद्ध सड़क 'उनतर देन लिन्दन' से गुज़रना पड़ता है। इस सड़क के पहले नुक्कड़ पर एक बड़ी इमारत का खंडर है जिसकी शिखा पर धुंवा उगलने वाली चिमनी बमबारी से टूट कर नीचे की ओर लटक रही है, जैसे एक बरबाद ज़िन्दगी गरदन लटकाये हुये ज़मीन से गले मिलने के लिये आतुर हो ! लेकिन इस लम्बे चौड़े मार्ग पर भवन-निर्माताओं की टोलियां, क्रेनों और बड़े-बड़े ट्रकों की क़तारों की क़तारें बढ़ती चली जा रहीं हैं, और गर्दन लटकाए हुई ज़ंग खाई चिमनी वायु के झोंकों से झूम-झूम कर अपना मस्तक ऊंचा उठाने का मानो दृढ़ प्रयत्न करती नज़र आ रही है !

'उनतर देन लिन्दन' से बर्लिन में प्रवेश करते हुये ऐसा लगता है जैसे हम प्राचीन यूरोपीय सभ्यता के स्वर्ग में पदार्पण कर रहे हों।···वास्तु तथा स्थापत्य कला के भव्य नमूने, यूनानी देवमाला की मोहित करने वाली सजीव प्रतिमायें, उपासना के पवित्र भावों को प्रेरणा देने वाली मूर्तिकला जिससे मानो संगीत उद्भूत होता हो, और संगेमरमर से तराशी हुई अमर सौन्दर्य की साकार मूर्तियां···यह है वह कलात्मक वातावरण जिसमें दर्शक आश्चर्य चकित रह कर खो जाता है !

स्थापत्य, वास्तु तथा मूर्तिकला के ये अमूल्य अवशेष, जो न जाने कितने कवियों तथा चित्रकारों का प्रेरणा स्रोत रहे हैं, अब और हमेशा के लिये सुरक्षित हैं। प्राचीन युग की अविस्मरणीय घटनायें, जिन्हें चित्रकारों ने अपने हृदय का रुधिर पिला पिला कर, अपने रंगीन चित्रों में उतार कर अमर बना दिया—आज भी और आज से हमेशा के लिये भी सुरक्षित हैं पूर्वी जर्मनी की जनवादी सरकार के हाथों में, जहां आज समाजवादी निर्माण तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।···स्मरण रहे कि जो जर्मनी दर्शन और विज्ञान का घर था, वही पश्चिम के पूंजीपतियों के षड़यन्त्रों का केन्द्र भी था जिनका मूर्तिमान आकार प्रकट हुआ हिटलर जैसे दानव और नाज़ीवाद के रूप में !··· लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवादी निर्माण के साथ-साथ मानव-मस्तिष्क तथा नई मानवीय संस्कृति का निर्माण भी हो रहा है !·····

हमारी गाड़ी स्तालिनाल्ले पर आकर रुकी। स्तालिनाल्ले का परिचय कराते हुये श्रीमती रोज़मेरी बोलीं, "यह है वह क्षेत्र जिसके निर्माण में जनता ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। असंख्य युवक, युवतियों तथा बच्चे बुड्ढों ने इस भव्य निर्माण में योगदान दिया !···" स्तालिनाल्ले को देखने से यह विश्वास होता है कि नष्ट हुआ बर्लिन न केवल अपने खोये हुये

(शेष पृष्ठ १९ पर)

नियाज़ हैदर बर्लिन के मज़दूरों के साथ। हिटलर ने जिस तहख़ाने में आत्म हत्या की, इन मज़दूरों ने उस मलवे को साफ़ किया—हमेशा के लिये...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

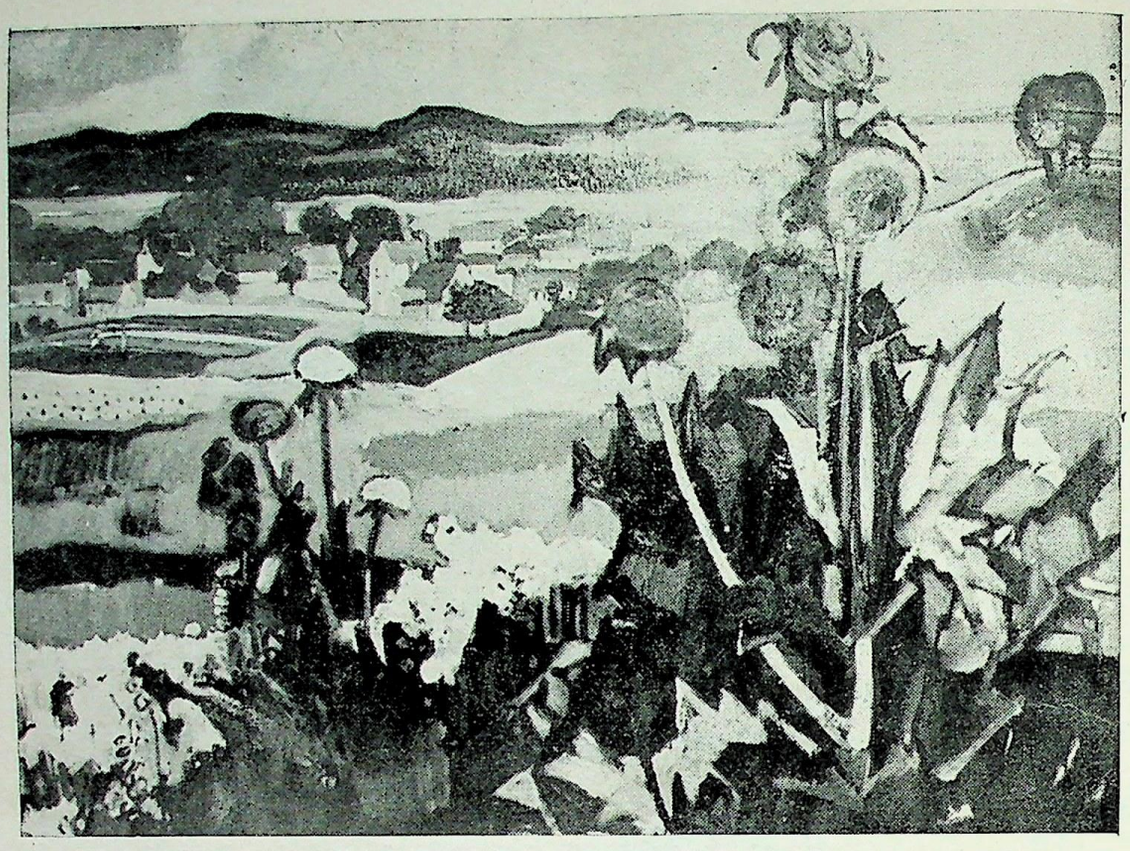

मेक्लेनबुर्ग का लैण्डस्केप : वाल्टर वोमाक्का

ज. ज. ग. के चि

१९ मार्च, सन् १९३ के
सन्धान तथा सांस्कृतिक
जनवादी। गणतंत्र के
किया। चित्रों की प्रदर्शनी
आधुनिक कला की
आर्ट—में हुआ। प्रदर्शनी
सैकड़ों लोगों ने इसको

ज.ज.ग. के चित्रकारों के
जर्मन चित्रकला के प्रतीक
में होगी।

इस प्रदर्शनी ने भारत
का ध्यान अपनी ओर
समीक्षकों ने चित्रों की
पत्रिका' के प्रिय पाठक
इसलिये उनके रसास्वाद
रहे हैं।

नर्तकी : एक अध्ययन प्रो. बर्ट हेल्लर

बच्चे, प्रभात काल में : एरिश गेर्लाख़

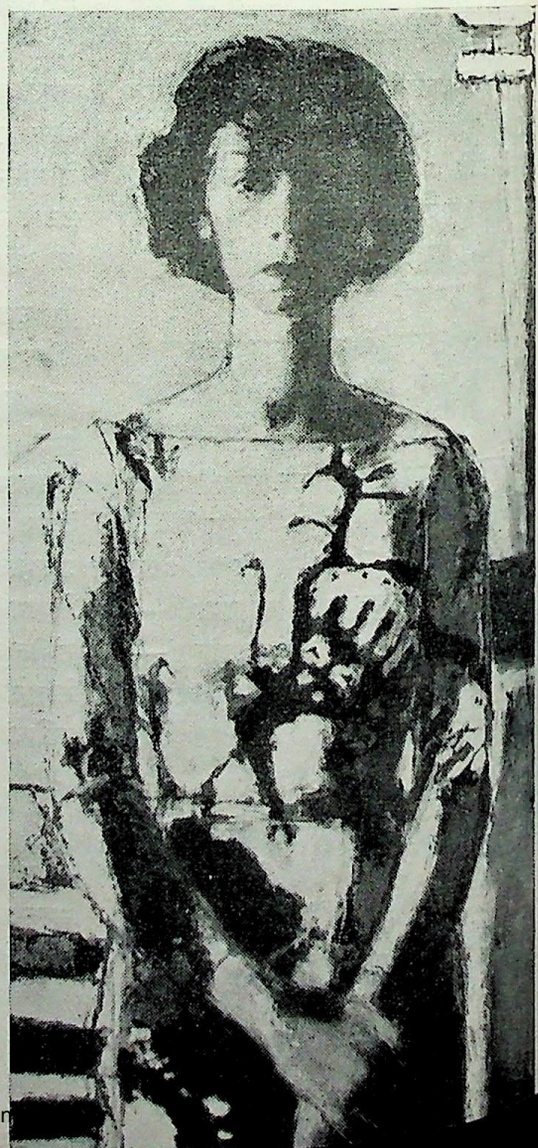

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग. के चित्रकला

न १९६० के वैज्ञानिक अनु-
सांस्कृतिक क्षेत्र हुमायूं कबीर ने जर्मन
तंत्र के चित्रों का उद्घाटन
की प्रदर्शनी नई दिल्ली में स्थित
की राष्ट्रीय गैलेरी ऑफ मार्डन
। प्रदर्शनी तक खुली रही और
इसको देखने

चित्रकारों के संख्या ४१ थी। आधुनिक
के प्रतीक प्रदर्शनी अब हिन्देशिया

भारत की वाले सभी अखबारों
ओर अन्य अखबारों के कला
त्रों की मुक्त प्रशंसा की। 'सूचना
पाठक इनसे सर्वथा वंचित न रहें,
रसास्वादन हां छः चित्रों को छाप

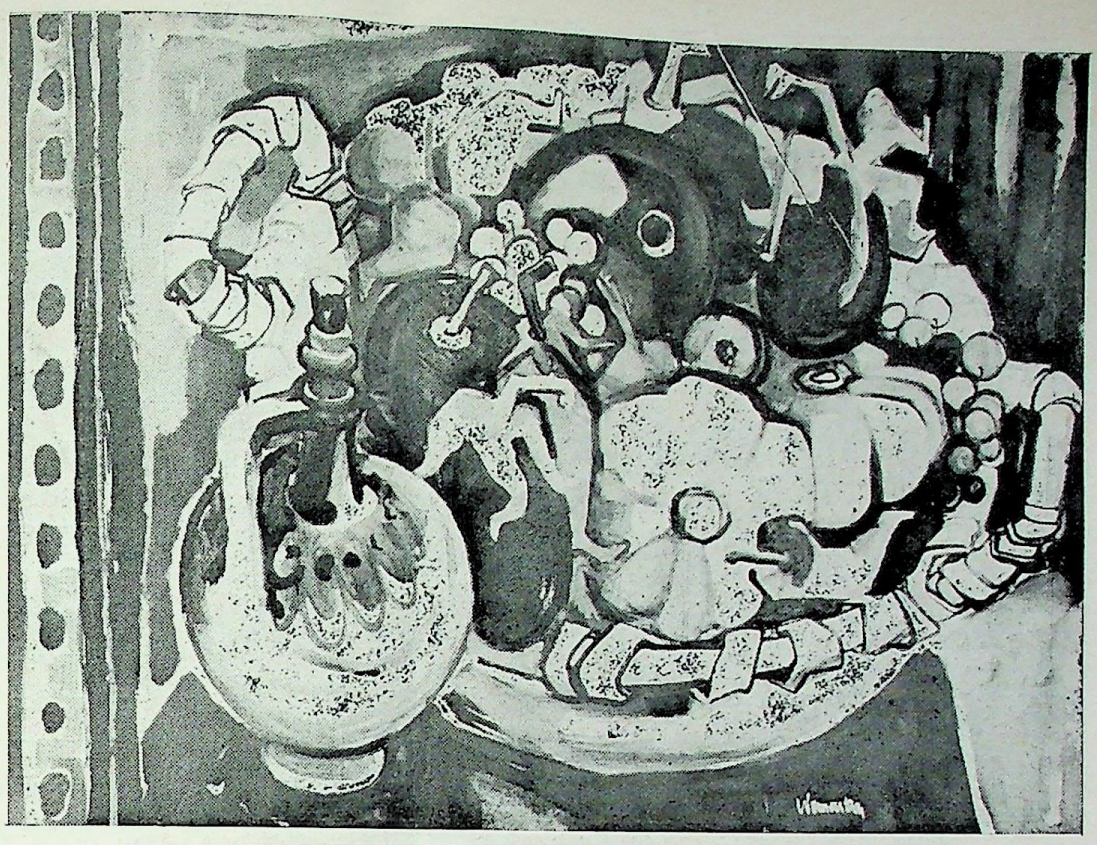

बलगेरिया का नीरव जीवन : वाल्टर वोमाक्का

चित्रकार एहमसन : प्रो. वर्ट हेल्लर

सपनों में खोई हुई : एरिश गेर्लाख

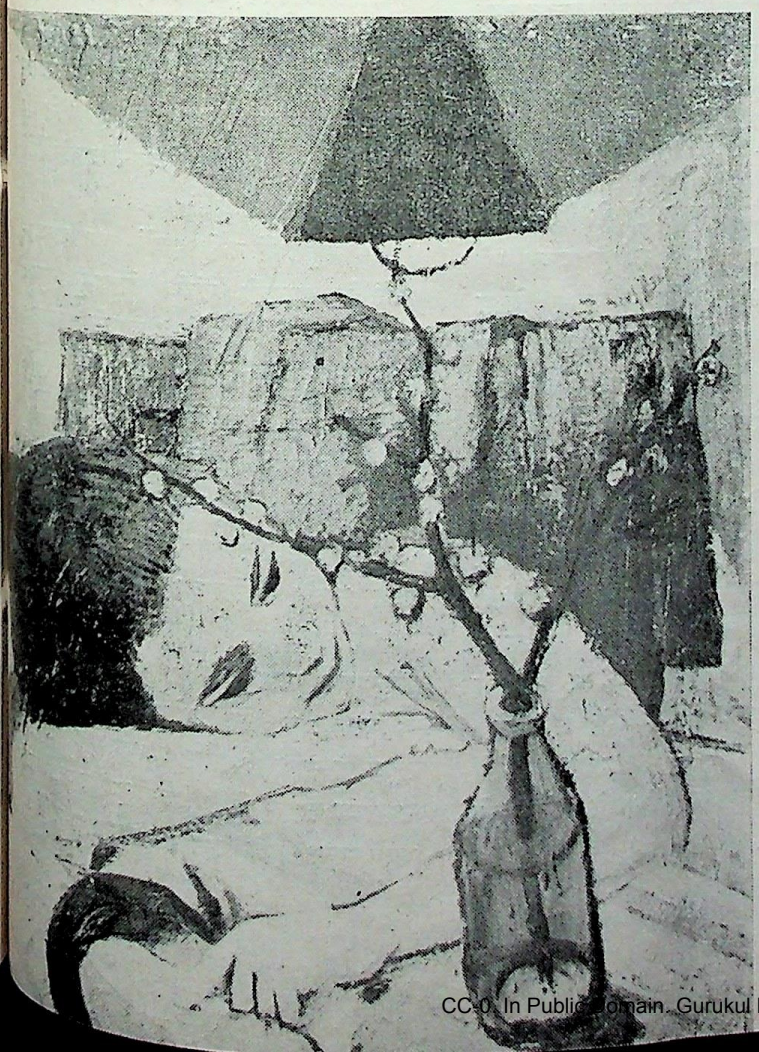

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली जमात के अपाहज बच्चे अपने कमरे में

अपाहज बच्चों का स्कूल

पीटर नीक्स

पिछले वर्ष, बर्लिन के जनवादी क्षेत्र में आधुनिक ढंग की एक इमारत तामीर हुई। ११ कमरों की यह आलीशान इमारत अपाहज बच्चों का स्कूल है।

यहां ऐसे बच्चे पढ़ने आते हैं जो नाड़ी, अस्थि अथवा क्षय आदि जैसे भयंकर रोगों से पंगु बने होते हैं। स्कूल आते जाते इन बच्चों को देख कर करुणा उत्पन्न होना स्वाभाविक है, लेकिन ये स्वाभिमानी बच्चे दया या करुणा के प्रदर्शन से रुष्ट होते हैं। ममता और देखभाल तो इनको चाहिये, लेकिन दया की भीख नहीं! वे भी पढ़ लिख कर सच्चे और ज़िम्मेदार जर्मन नागरिक बनना चाहते हैं!

इस संकल्प को पूरा करने के लिये ये बच्चे स्कूल में काफी परिश्रम करते हैं और बहुत कष्ट उठाते हैं। लेकिन इनके कष्ट को कम से कम करने के लिये, स्कूल में विशेष प्रकार के यन्त्र लगा दिये गये हैं जिनकी सहायता से ये अपाहज बच्चे आसानी से चल फिर सकते हैं—एक कक्षा से दूसरी कक्षा में आ जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त सब कमरे सुन्दर रंगों तथा चित्रों आदि से सजाकर बहुत खूबसूरत बना दिये गये हैं। यह सौन्दर्य बच्चों का कोमल हृदय लुभाता है।

यह अनोखा स्कूल देखने के लिये जब मैं यहां आया तो ११ वर्ष के बच्चों की एक कक्षा को देखने का निमन्त्रण मिला मुझे। इस कक्षा में दस बच्चे थे और मुख्य अध्यापक श्री फ्राइंड, स्वयं इन बच्चों की देखभाल करते हैं। वैसे भी किसी कक्षा में यहां बारह से अधिक बच्चे नहीं रखे जाते। इसका नतीजा यह होता है कि हर बच्चे की देखभाल और पढ़ाई लिखाई की ओर अधिक से अधिक समय दिया जाता है। हां तो, इस कक्षा में सुन्दर रेजिना को मैंने देखा जो इस स्कूल के कुटुम्ब में नई नई आई थी। अपने पहियों वाली आरामदेह कुर्सी में वह काफी प्रसन्न थी अपने नन्हे मुन्ने साथियों में!

बेचारी रेजिना को दो तीन वर्ष पहले लक़वा मार गया था। तीन वर्षों तक अस्पताल में रहने के बाद अब वह फिर स्कूल में पढ़ने के लिये आई है। तो क्या अस्पताल के तीन वर्ष रेजिना ने गंवा दिये? जी नहीं। जर्मन जनवादी गणतंत्र में बीमार बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध अस्पताल में ही कर दिया जाता है। इसलिये रेजिना ने अस्पताल के तीन वर्ष ज़ाया नहीं किये, बल्कि स्कूलों के पाठ्य-क्रम के अनुसार वह पढ़ती लिखती और परीक्षायें देती रही।

इसलिये जब रेजिना अस्पताल से बाहर आई तो पढ़ाई में वह किसी से पीछे नहीं थी। वह बहुत होशियार और परिश्रमी लड़की है। वह दसवें ग्रेड वाले पोलितकनीकी स्कूल की पढ़ाई करती है। दसवें ग्रेड की पढ़ाई करने के बाद, अपाहिज बच्चे अन्य छात्रों की तरह माध्यमिक स्कूल में जा सकते हैं और दो वर्ष की पढ़ाई के बाद विश्व-विद्यालयों में दाखिल हो सकते हैं।

इस स्कूल में नन्हे छात्रों तथा अध्यापकों के आपसी संबंध पिता-पुत्र तुल्य हैं—ममता, प्यार तथा आदर से भरपूर। स्कूल के अध्यापक इस बात की ओर विशेष ध्यान देते हैं कि माता पिता अपने अपाहज बच्चों के प्रति सही रवैया अपना लें। मुख्याध्यापक के शब्दों में: "उनकी आत्म निर्भरता की भावना को दृढ़ बनाना और उनके व्यक्तित्व को उभार कर विकसित करना अत्यन्त आवश्यक तथा महत्वपूर्ण काम है।"

ज. ज. ग. के प्रत्येक पोलितकनीकी स्कूल के साथ सरकार ने एक एक फैक्ट्री उपलब्ध कर रखी है। अपाहज बच्चों का यह स्कूल भी इसका अपवाद नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

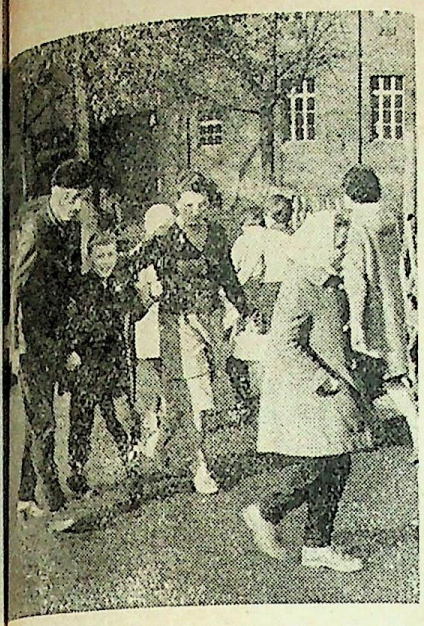

यह बच्चा टैक्सी में स्कूल आता है। किराया सरकार देती है

यहां के बच्चे, कारबुरेटर बनाने वाली स्कूल की फैक्ट्री को "अपनी" फ़ैक्ट्री कहते हैं। हफ़्ते में एक बार इस फैक्ट्री में उनको विभिन्न प्रकार के यन्त्रों तथा औज़ारों का प्रयोग और उत्पादन विधि सिखाई जाती है। अपनी उपलब्धियों पर ये बच्चे गर्व करते हैं। इस तरह उनका आत्म-विश्वास द्विगुणित हो जाता है।

स्कूल में ३८ अनुभव-सिद्ध शिक्षक पढ़ाते हैं। इनके अतिरिक्त ८ शिक्षा-विशेषज्ञ स्कूल के बीमार बच्चों को घर पर भी पढ़ाने जाया करते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र में ऐसे विशेष स्कूलों की संख्या १५ है। इन स्कूलों में पढ़ने वाले शिक्षक काफ़ी अनुभवी होते हैं जो बच्चों की समस्याओं को अतुल सहानुभूति से देखते और प्यार से सुलझाते हैं। इन स्कूलों में आने से पहले शिक्षकों को एक विशेष उपाधि प्राप्त करनी पड़ती है जिसके लिये उनको बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में दो साल की खास ट्रेनिंग दी जाती है।

अपाहज बच्चों की तरह ही ज. ज. ग. के अन्धे तथा बहरे बच्चों के लिये भी विशेष प्रकार के स्कूल खोले गये हैं। ये बच्चे भी पोलितकनीकी शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इनके पढ़ाने के लिये भी विशेष उपाधि प्राप्त तथा अनुभवी शिक्षक उपलब्ध किये जाते हैं। ऐसे बच्चे भी जिनमें कोई दिमागी खराबी हो, खास स्कूलों में खास देखभाल के आधीन रखे जाते हैं।

ज. ज. ग. की स्थापना से पहले, विशेषकर हिटलर के क्रूर नाज़ी शासन में, अपाहज तथा ऐसे ही अन्य बच्चों को निम्नकोटि के मानवों में गिना जाता था। पीड़ा, घृणा तथा अपमान ही उनके भाग्य में लिखा रहता था। लेकिन आज ज. ज. ग. के समाजवादी शासन में न केवल इन बच्चों की खास देखभाल ही की जाती है, वरन् उनकी स्वाभिमान तथा आत्मनिर्भरता की भावना को विकसित भी किया जाता है। इसका अवश्यम्भावी परिणाम यह निकलता है कि ये अपाहज बच्चे अपने आपको अन्य लोगों से भिन्न या हीन नहीं समझते, बल्कि अपने देश के नवनिर्माण में वे बराबर का हिस्सा लेते हैं। इस प्रकार वे अपने समाज के उपयोगी अंग बन जाते हैं, बोझ नहीं।

लाइसेन्सों द्वारा आर्थिक प्रगति

हंसजोर्ग शिखनीदर

विदेश व्यापार संस्था 'लाइमेक्स' के निदेशक

अपने राष्ट्रीय उद्योग की स्थापना के लिये अफ्रो-एशिया के नवजात राष्ट्रों और दक्षिणी अमरीका के संघर्षरत देशों को, विभिन्न प्रकार के उत्पादनों और उत्पादन विधियों के लिये कई तरह की मशीनों और यन्त्रों की आवश्यकता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वे पेटेन्ट अधिकार तथा लाइसेन्सें प्राप्त करके, अपने उद्योग धन्धों में काफ़ी विकास कर सकते हैं।

किसी नई तकनीकी अथवा उत्पादन विधि को खरीदने से ग्राहक संस्था या देश को काफ़ी आर्थिक लाभ हो सकते हैं बशर्तेकि लाइसेन्स प्राप्त करने वाला ग्राहक समान लेन देन में विश्वास रखता हो। उत्पादन की लाइसेन्स प्राप्त करने के बाद ग्राहकों को अच्छी से अच्छी तकनीकी तथा वैज्ञानिक सहायता उपलब्ध करना हमारा पहला कर्तव्य बन जाता है। इन लाइसेन्सों के द्वारा ग्राहक देशों तथा संस्थाओं को छोटे मोटे कारखाने तथा नई उत्पादन प्रक्रियायें तो हासिल होती ही हैं, इसके अतिरिक्त उनके बुनियादी उद्योगों को इनसे विकसित होने में सहायता भी मिलती है। यह बात अर्धविकसित, नवजात राष्ट्रों की आर्थिक तथा औद्योगिक स्वतन्त्रता के लिये विशेष महत्व रखती है।

लाइसेन्सें उपलब्ध करने के क्षेत्र मे भी ज. ज. ग. सब से आगे है। इस प्रकार का व्यापार, बर्लिन की सरकारी संस्था 'लाइमेक्स' के सिपुर्द किया गया है। 'लाइमेक्स', हर प्रकार के व्यापारिक समझौते कर सकती है, किसी चीज़ के उत्पादन की लाइसेन्स दे सकती है, लाइसेन्सों के आधीन स्थापित होने वाले नये कारखानों और फ़ैक्ट्रियों के लिये आर्थिक तथा तकनीकी सहायता दे सकती है—इत्यादि। इस काम के लिये 'लाइमेक्स' के पास अनुभव-सिद्ध और उपाधि-प्राप्त विशेषज्ञ तथा इंजिनियर हैं।

इस प्रकार की लाइसेन्सें तथा पेटेन्ट प्राप्त करने वाले ग्राहकों को कई फ़ायदे मिलते हैं: किसी वस्तु विशेष की तकनीकी जानकारी तथा उसको विकसित करने का वैज्ञानिक अनुभव उस वस्तु के अभिन्न अंग हैं। इसलिये ग्राहक को यह जानकारी तथा अनुभव भी उत्पादन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

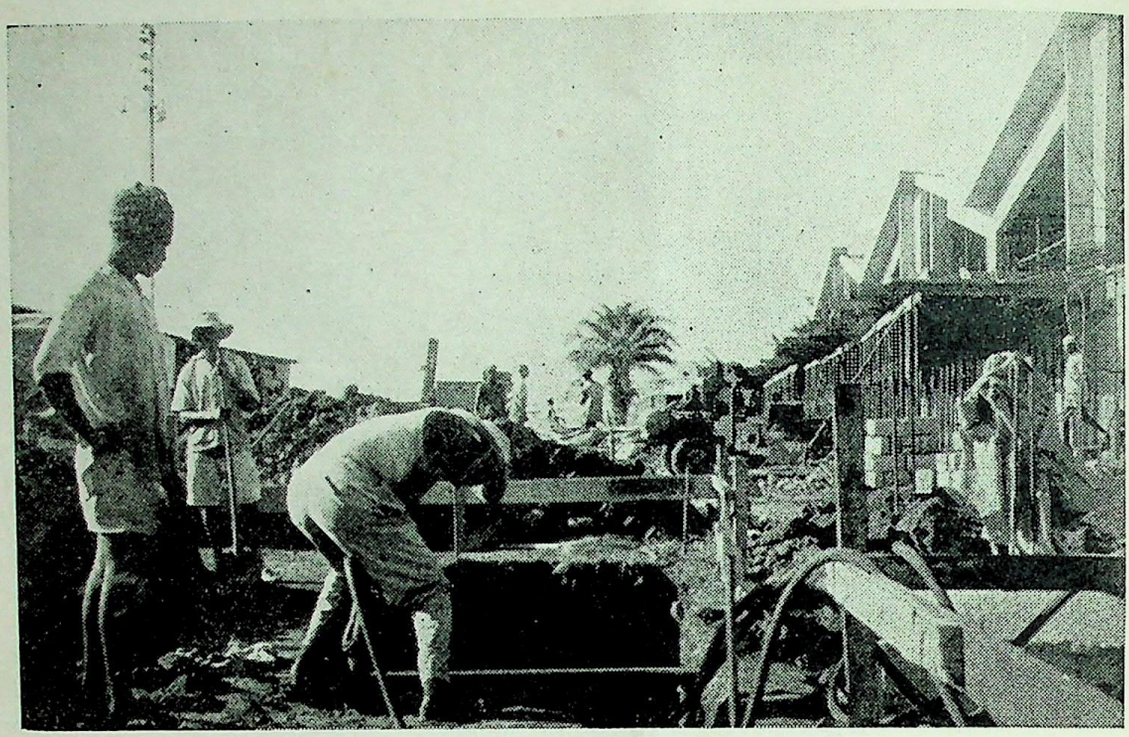

ज.ज.ग. के विशेषज्ञों के सहयोग से गिनी गणराज्य, कोनाक्री में, अपना सरकारी छापाखाना निर्माण कर रहा है

आधीन वस्तु की लाइसेन्स के साथ ही प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त किसी वस्तु को, उत्पादन अवस्था तक पहुंचाने के लिये, प्रयोग तथा अनुसन्धान में जो धनराशि और समय खर्च होता है, ग्राहक देश इस सबसे बच जाते हैं। इस तरह उनको काफ़ी धन की बचत भी हो जाती है। इतना ही नहीं। जो व्यापारिक फर्में, संस्थायें अथवा देश ये लाइसेन्सें प्राप्त करते और उनके आधीन नई वस्तुएं उत्पादन करने के अधिकार हासिल करते हैं, स्वंय वे भी उन वस्तुओं के उत्पादन-क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाते हैं। इसके अलावा, अन्य देशों में उत्पादित वस्तुओं की बिक्री भी मुमकिन हो जाती है, जिससे विदेशी मुद्रा कमाई जा सकती है।

व्यापारिक समझौता होने के बाद लाइसेन्स प्राप्त ग्राहक को, नक़शे तथा नमूने तैयार करने से लेकर वस्तु के उत्पादन की तकनीकी जानकारी तक के सम्पूर्ण तथ्य उपलब्ध करना हमारा प्रमुख कर्तव्य बन जाता है। इस काम के लिये ज. ज. ग. अपने अनुभव-सिद्ध विशेषज्ञ उपलब्ध करता है जो फ़ैक्ट्री और उत्पादन होने वाली नई वस्तु के संबंध में अपना परामर्श हर समय देते रहते हैं। इस वस्तु विशेष के उत्पादन के दौरान, वे स्थानीय विशेषज्ञों तथा इंजीनियरों को अपने अनुभव और तकनीकी जानकारी में साझीदार बनाते हैं।

ज. ज. ग. की ओर से किसी वस्तु के उत्पान के लिये आवश्यक मशीनें तथा अन्य अनिवार्य सामान खरीदने के लिये ग्राहकों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं। यह सामान वह जहां भी चाहें खरीद सकते हैं। 'लाइमेक्स' ग्राहकों को, निजी विशेषज्ञ तथा इंजीनियर नियुक्त करने का अधिकार और आज़ादी भी देती है। इस स्थिति में ज.ज.ग. के विशेषज्ञ फ़ैक्ट्री संबंधी निर्माण में हर प्रकार की सलाह और सहायता देने के लिये तैयार रहते हैं।

किसी वस्तु के उत्पादन के लिये लाइसेन्स हासिल करने के बाद, ज.ज.ग. केवल इस बात का इच्छुक रहता है कि ग्राहक, जल्द से जल्द उस वस्तु विशेष का उत्पादन शुरू कर दे। ग्राहक यदि चाहे तो उत्पादन के लिये आवश्यक मशीनें तथा दूसरा सामान जायज़ क़ीमत पर हमारे देश से प्राप्त कर सकता है। वैसे यह सामान खरीदने पर भी ग्राहक पर कोई पाबंदी नहीं।

तकनीकी सहायता और लाइसेन्स हासिल करने के समझौतों के अलावा ज. ज. ग., कई प्रकार की अपनी पेटेन्ट वस्तुओं के उत्पादन का अधिकार भी उपलब्ध कर सकता है। इस संबंध में जितने भी व्यापारिक समझौते होते हैं उनका मात्र उद्देश्य अन्य देशों को आर्थिक सहायता देना है, उनकी राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करना नहीं।

अन्य देश, ज. ज. ग. से जिन वस्तुओं के उत्पादन की लाइसेन्सें तथा रजिस्टर शुदा छाप वस्तुऐं प्राप्त कर सकते हैं इनमें से मुख्य ये हैं: मशीनी तथा इंजीनियरी औजार, खाद्य पदार्थ साफ करने तथा सड़कें बनाने की मशीनें, रेलगाड़ियां तथा मोटर गाड़ियां, दफ़्तरी मशीनें, आंखों के शीशे तथा इनसे संबंधित मशीनें, बिजली का सामान, रसायन (केमिक्ल्स) और दवाइयां।

हाल ही में, अन्य देशों के अतिरिक्त भारत और अरब गणराज्य की कई फर्मों को ज. ज. ग. ने मशीनी औजार तथा विभिन्न प्रकार का इंजीनियरी सामान बनाने की लाइसेन्सें दी हैं। व्यापार बढ़ाने और आर्थिक सहयोग की यह नीति, नवजात राष्ट्रों का आर्थिक आधार दृढ़ करती है और इससे शांति तथा सहअस्तित्व को भी पर्याप्त बल मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH—हम जर्मन सीखते हैं।

Lektion XVI—पाठ सोलह

DIE INTERNATIONALE FRIEDENSFAHRT अन्तर्राष्ट्रीय शांति साइक्ल दौड़

Viele Menschen In der DDR warten in jedem Jahr mit grosser Spannung auf den Monat Mai. In diesem Monat findet jährlich die Friedensfahrt statt. Es ist das grösste radsportliche Ereignis des Jahres. Jeder Mensch in der DDR weiss genau, was die Friedensfahrt ist. Auch die Menschen in Polen und in der Tschecho-Slowakei freuen sich immer wieder auf die Sportler aus vielen europäischen Ländern.

Am 2. Mai beginnt die Fahrt. Der Start findet jährlich in einer anderen Hauptstadt statt. Entweder in Prag, in Warschau oder in Berlin. Mehr als 2.000 km müssen die Sportler in 14 Tagen durchfahren. Täglich müssen sie eine Etappe von mehr als 150 Kilometern fahren. Diese grossen sportlichen Leistungen sind nur möglich, weil sich die Fahrer schon viele Wochen vor dem Start intensiv auf die Friedensfahrt vorbereiten. Tausende von Menschen stehen an den Strassen und wollen die Fahrt, die durch die Städte und Dörfer führt, sehen. Bei der Ankunft im Etappenziel erhalten die Fahrer vom ersten bis zum letzten Fahrer immer einen grandiosen Empfang.

An der Friedensfahrt nehmen jährlich Radsportler aus mehr als 15 verschiedenen europäischen Ländern teil. Im Jahre 1961 haben zum Beispiel Radsportler aus Albanien, aus Bulgarien, aus Dänemark, aus der DDR, aus England, aus Finnland, aus Frankreich, aus Monaco, aus Norwegen, aus Polen, aus Rumänien, aus der Schweiz, aus Schweden, aus der Sowjetunion, aus der Tschechoslowakischen Sozialistischen Republik und aus Ungarnteilgenommen,

Neben dem sportlichen Prinzip demonstrieren die Radsportler aus den verschiedenen europäischen Länderndurch ihre Teilnahme die Festigung der Freundschaft zwischen den Völkern der Welt. (Es gibt in der Chronik der Friedensfahrt viele nette Geschichten und Episoden, die von der Freundschaft der Menschen aus den verschiedenen Ländern erzählen.) Wer die Fahrt nicht an der Strasse sehen kann, der kann sie im Radio oder im Fernsehen verfolgen. Wenn die Fahrt beendet ist, treffen die Radsportler zu einer grossen Abschlussfeier zusammen. Hier feiert man nicht nur den sportlichen Sieg, sondern auch die neuen Freundschaften, die zwischen den Sportlern entstanden. Beim Abschied hört man immer wieder die Worte: "Wir kommen im nächsten Jahr wieder."

हर वर्ष ज. ज. ग. के लोग मई का बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। इस महीने में शांति साइक्ल दौड़ आयोजित होती है। यह दौड़ वर्ष की सबसे बड़ी साइक्ल घटना होती है। ज. ज. ग. का प्रत्येक व्यक्ति इस शांति दौड़ की पूरी पूरी जानकारी रखता है। पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के लोग भी यूरोपीय देशों के खिलाड़ियों को बार-बार देखने के लिये उत्सुक रहते हैं। २ मई को दौड़ शुरू होती है। हर साल दूसरे देश की राजधानी से दौड़ शुरू होती है: (अर्थात्) प्राग से, वारसा से अथवा बर्लिन से। खिलाड़ियों को, १४ दिनों में २००० किलो मीटर से अधिक फ़ासला तय करना होता है। हर दिन उनको १५० कि. मी. से अधिक फ़ासला तय करना पड़ता है। (दौड़ की) यह महान उपलब्धि केवल इसलिये संभव होती है क्योंकि शांति दौड़ में शामिल होने के हफ़्तों पहले खिलाड़ी जबरदस्त तैयारी करते हैं। हज़ारों लोग यह दौड़ देखने के लिये सड़कों के किनारों पर खड़े रहते हैं जो कस्बों और गांवों के बीच से गुज़रती हैं। हर दिन की मंज़िल पर पहुंचने के बाद साइक्ल सवार, आदि से अन्त तक, हमेशा अद्भुत स्वागत प्राप्त करते हैं।

शांति साइक्ल दौड़ में हर साल १५ विभिन्न यूरोपीय देशों के साइक्ल सवार भाग लेते हैं। मिसाल के लिये, सन् १९६१ में अलबानिया, बलगेरिया, डेनमार्क, ज. ज. ग., इंगलैंड, फिनलैंड, फ्रांस, मोनाको, नार्वे, पोलैंड, रूमानिया, स्विट्ज़रलैंड, स्वीडन, सोवियत संघ, चेकोस्लोवाक समाजवादी गणतंत्र और हंगरी के साइकल सवारों ने भाग लिया (वास्तव में भाग लिया है)।

खेल कूद के सिद्धान्त के अतिरिक्त, यूरोप के विभिन्न देशों के साइक्ल सवार इस दौड़ में भाग लेकर दुनिया की जनता के बीच मैत्री की सुदृढ़ता भी व्यक्त करते हैं। इस शांति दौड़ के इतिहास में ऐसी अनेक सुन्दर कथायें और घटनायें हैं जो विभिन्न देशों की आपसी मैत्री को दिखाती हैं। जो लोग इस दौड़ को सड़कों पर नहीं देख सकते, वे रेडियो अथवा टेलिविजन पर इसको देख सकते हैं। दौड़ की समाप्ति पर साइक्ल सवार एक बड़ी मीटिंग के लिये जमा हो जाते हैं। खिलाड़ी यहां न केवल खेलकूद की विजय ही बल्कि अपनी नई जुड़ी मित्रता भी मनाते हैं। विदाई के समय बार-बार ये शब्द सुनाई देते हैं: "दूसरे साल हम फिर आयेंगे।"

व्याकरण

I. Die trennbar zusammengesetzten Verben

The separable compound verbs—ऐसी संश्लिष्ट क्रियाएं जो अलग की जा सकती हैं। जर्मन भाषा में अनेक क्रियायें दो भागों से बनी हुई हैं, उपसर्ग और धातु।

मिसाल के लिए: teilnehmen (हिस्सा लेना) consist of *Teil*=part (हिस्सा) and *nehmen*= to take. (लेना)—इन्हें संश्लिष्ट क्रियायें कहते हैं।

सामान्य	वर्तमानकाल	भूतकाल	वर्तमानभूत
	प्रथम पुरुष	प्रथम पुरुष	प्रथम पुरुष
teilnehmen	ich nehme teil	ich nahm teil	ich habe teilgenommen

(अ) वर्तमान और भूतकाल मे उपसर्ग (teil) हमेशा धातु के अन्त में आता है। stattfinden, durchfahren, vorbereiten etc.

ऐसी क्रियाओं के उच्चारण के समय उपसर्ग पर जोर पड़ता है: stattfinden, durchfahren. vorbereiten. इत्यादि

नोट: निम्नलिखित उपसर्ग कभी अलग नहीं होते:

be-, emp-, ent-, er-, ge-, miss-, ver-, zer-.

इन उपसर्गों पर कभी ज़ोर नहीं दिया जाता। ये धातु से कभी अलग नहीं होते।

(क) मुख्य वाक्य में विभाजनीय क्रियाए:

C. The separable verbs in a Principal Clause.

जब साधारण काल में क्रिया सामान्य स्थिति में रहती है तो उपसर्ग अलग हो जाता है। जैसे:

In diesem Monat findet jährlich die Friedensfahrt statt.
An der Friedensfahrt nehmen jährlich Radsportler aus mehr als 15 europäischen Ländern teil.
Wir kommen im nächsten Jahr wieder. (Inf. wiederkommen)

(ख) उपसर्ग अधीन वाक्य में फिर क्रिया से मिल जाता है।

D. The prefix joins up again with the verb: in a subordinate clause:

उदाहरण के लिए:

Die sportlichen Leistungen sind nur möglich, weil sich die Fahrer gut vorbereiten.
Er sagte, dass er an der Friedensfahrt nicht teilnahm.

(ग) या जब सामान्य या भूत कालिक क्रिया वाक्य के अन्त में आती है:

जैसे

Mehr als 2000 Kilometer müssen die Sportler in 14 Tagen durchfahren. (Infinitive)
Er hat teilgenommen.

II. Der Relativastz—सम्बन्ध बोधक सर्वनाम

सम्बन्ध बोधक वाक्य एक अधीन वाक्य, है। मुख्य वाक्य में यह संज्ञा का सहायक होता है। सम्बन्ध-बोधक वाक्य संयोजक सर्वनाम से अथवा उस कारक चिन्ह से शुरु होता है जो संयोजक सर्वनाम के पहले हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Die Deklination des Relativpronomens—सर्वनामों के रूप

	Maskulinum पुल्लिंग	Femininum स्त्रीलिंग	Neutrum नपुंसकलिंग	Plural बहुवचन
Nominativ कर्तृकारक	der	die	das	die
Genitiv संबंधकारक	*dessen*	*deren*	*dessen*	*deren*
Dativ सम्प्रदानकारक	dem	der	dem	**denen**
Akkusativ कर्मकारक	den	die	das	die

Relativsatz:—Der Sport, der (Nom. Sing.) mir gefällt, interessiert mich.
Wer die Fahrt nicht an der Strasse sehen kann, der (Nom. Sing.) kann sie im Radio verfolgen.
Dort steht ein Sportler. Du sollst ihn (Akk. Sing.) begrüssen.
Dort steht ein Sportler, den (Akk. Sing.) du begrüssen sollst.
Wir stehen an der Strasse. Auf der Strasse (Dat. Sing.) fahren die Radsportler.
Wir stehen an der Strasse, auf der (Dat. Sing.) die Radsportler fahren.
Es gibt in der Geschichte der Friedensfahrt viele nette Geschichten und Episoden. Sie (Nom. Pl.) erzählen von der Freundschaft der Menschen aus verschiedenen Ländern.
Es gibt in der Geschichte der Friedensfahrt viele nette Geschichten und Episoden, die (Nom. Pl.) von der Freundschaft der Menschen aus verschiedenen Ländern erzählen.

Übung : Verwenden Sie den zweiten Satz als Relativsatz !
Use the 2nd sentence as a relative clause !

Zum Beispiel :

Die Menschen in der DDR warten. Sie wollen die Friedensfahrt sehen.
Die Menschen in der DDR, die die Friedensfahrt sehen wollen, warten.

1. Herr Bose besucht seinen Freund. Er hat eine Einladung bekommen. 2. Der Meteorologe spricht über das Klima in Deutschland. Er erklärt die Jahreszeiten. 3. Die Blätter der Bäume fallen zur Erde. Sie färben sich bunt. 4. Der Winter beginnt im Dezember. Er ist sehr kalt. 5. Der Lektor erklärt noch einmal das Beispiel. Die Studenten haben es vergessen. 6. Der Messegast dankte mir. Ich gab ihm eine Auskunft. 7. Herr Rahim konnte nicht nach Deutschland fahren. Seine Frau war krank. 8. Ich traf einen Freund. Mit ihm hatte ich drei Wochen nicht mehr gesprochen. 9. Gestern bekam ich den Brief. Ich hatte schon auf ihn gewartet.

III. Beantworten Sie die Fragen zum Text "Die internationale Friedensfahrt" mündlich und schriftlich !

Worauf (for what) warten die Menschen in der DDR in jedem Jahr ? In welchem Monat findet die Friedensfahrt statt ?
Wo findet der Start statt ?
Wieviel (how many) Kilometer müssen die Sportler fahren ?
Warum sind die grossen sportlichen Leistungen möglich ?
Wieviel Länder nehmen jährlich an der Friedensfahrt teil ?
Aus welchen Ländern haben Radsportler im Jahre 1961 teilgenommen ?
Warum nehmen die Radsportler an der Friedensfahr teil ?
Wovon (about) erzählt die Chronik der Friedensfahrt ?
Welche Worte hört man beim Abschied ?

VOKABELN

die Friedensfahrt, -en	शांति साइकल दौड़
die Spannung, -en	तनाव
der Mai	मई
statt/finden, fand statt, stattgefunden	होना
jährlich	हर साल
oder	अथवा
grösste	सबसे से बड़ा
radsportlich	साइकल चलाना
das Ereignis, die Ereignisse	घटना
genau	ठीक-ठीक
Polen	पोलैंड
die Tschechoslowakei	चेकोस्लोवाकिया
wieder	फिर
der Sportler	खिलाड़ी
europäisch	यूरोपीय
zweiten (2.)	दूसरा
der Start, -s	आरंभ
anderen	दूसरा
die Hauptstadt, "-e	राजधानी
entweder.....oder (Konjunktion)	यह या वह
Prag	प्राग
Warschau	वारसा
Berlin	बर्लिन
mehr als	अपेक्षाकृत, अधिक
zweitausend (2.000)	दो हज़ार
der Kilometer	किलोमीटर
durch/fahren, fuhr durch, durchgefahren	गुज़रना
täglich	हर दिन, रोजाना
die Etappe, -n	मंजिल
einhundertundfünfzig (150)	एक सौ पचास
sportlich	खेल-कूद
die Leistung, die Leistungen	नतीजा, परिणाम
möglich	संभव
vor, D. (Präposition)	सामने
intensiv	ज़बरदस्त,
vor/bereiten, bereitete vor, vorbereitet	तैयारी करना
Tausende von	हज़ारों
an + Frage w..? = Dativ	पर, में
an + Frage wohin? = Akkusativ	को, तक
die Strasse, -n	सड़क
durch, A. (Präposition)	बीच से
die Ankunft	पहुंचा
das Etappenziel, -e	समाप्ति
bis zu, D. (Präposition)	तक
letzten	अंतिम
grandios	भव्य, महान
der Empfang, -e	स्वागत समारोह
teil/nehmen, nahm teil, teilgenommen	भाग लेना
der Radsportler	साइकल खिलाड़ी
Albanien	अलबानिया
Bulgarien	बलगारिया
Dänemark	डेनमार्क
England	इंग्लैंड
Finnland	फिनलैंड
Frankreich	फ्रांस
Monaco	मोनाको
Rumänien	रूमानिया
Schweden	स्वीडन
die Schweiz	स्विटज़रलैंड
die Sowjetunion	सोवियत संघ
Ungarn	हंगरी
das Prinzip, die Prinzipien	सिद्धान्त
demonstrieren	दर्शाना, व्यक्त करना
die Teilnahme	सम्मिलित होना
die Festigung	सुदृढ़ करना,
die Freundschaft, -en	मैत्री
zwischen, D. (Präposition)	बीच
die Chronik, -en	इतिहास, वृत्तान्त
nett	सुन्दर
die Geschichte, -en	इतिहास
die Episode	घटना
zusammen/treffen, traf zusammen, zusammengetroffen	मिलना, जमा होना
die Abschlussfeier, -n	अंतिम आयोजन
nicht nur...sondern auch (Konjunkt.)	न केवल, वरन् भी
der Sieg, -e	विजय
wieder/kommen, kam wieder, wiedergekommen	लौटना
nächste	दूसरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफा फ़िल्म जगत :

लोकप्रिय वैज्ञानिक फिल्मों का निर्माण

के. स्टेर

अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों तथा वैज्ञानिक सम्मेलनों आदि में डेफा स्टूडियो द्वारा बनाई गई लोकप्रिय वैज्ञानिक फिल्में, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कसौटी पर पूरी उतरी हैं। यह बात इन फिल्मों के उच्च स्तर का प्रमाण है। डेफा स्टूडियो के कलाकारों, वैज्ञानिकों आदि का, सामूहिक प्रयत्न इस सफलता के सबसे बड़े कारणों में से एक है। दूसरा कारण है विज्ञान और संस्कृति को जनता में लोकप्रिय बनाने का, ज. ज. ग. की सरकार का भरसक प्रयत्न! डेफा स्टूडियो को इसके लिये हर प्रकार की सरकारी सहायता दी जाती है।

डेफा स्टूडियो अपने १३ वर्ष के व्यापक अनुभव पर खड़ा है। दूसरे महायुद्ध के बाद यह पहला जर्मन स्टूडियो था जिसने वैज्ञानिक विषयों की अनेक फिल्मों द्वारा ज्ञान फैलाना प्रारंभ किया। इन फिल्मों की लोकप्रियता के कारण सन् १९५३ में वैज्ञानिक फिल्में बनाने का एक अलग स्टूडियो ही तैयार करना पड़ा। इनप्रयासों का परिणाम यह निकला है कि आज ज.ज.ग. के लोग वैज्ञानिक फिल्मों में अधिकाधिक रुचि दिखा रहे हैं। जनता अब केवल मनोरंजन से ही संतुष्ट नहीं होती। वह वैज्ञानिक, तकनीकी तथा सामाजिक प्रगति आदि के क्षेत्रों में भी पर्याप्त रुचि रखती है। जनता की इस बढ़ती हुई रुचि को पूरा करने के लिये डेफा स्टूडियो निम्न कार्यक्रम पर काम करता है :

'पीड़ा रहित प्रसूति' का एक दृश्य

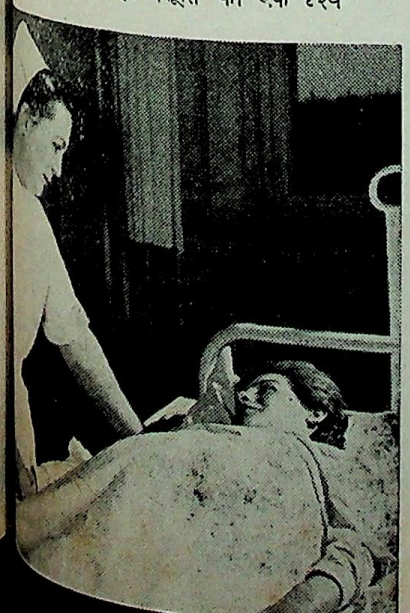

१. वैज्ञानिक विषयों पर आधारित फिल्मों द्वारा विज्ञान का प्रसार करना और अन्य देशों के बारे में सूचनायें उपलब्ध करना।—कई लोगों ने भारत को गलत रंग में पेश किया था। लेकिन "भारत की विजय" नामक फिल्म बना कर सभी गलत भ्रांतियों को दूर किया गया और यह दिखाया गया कि भारत के लोग २०० वर्षों के उपनिवेशीय शासन के पिछड़ेपन को निर्माण द्वारा कैसे दूर कर रहे हैं। इसी प्रकार "भारत के दैनिक जीवन" में भारतवासियों के दिन प्रतिदिन के जीवन को दिखाया गया।

२. दूसरी कोटि की फिल्मों द्वारा विज्ञान तथा तकनीकी प्रगति संबंधी जानकारी उपलब्ध की जाती है। इसके अतिरिक्त श्रम सुरक्षा, अच्छे बीज, अच्छी खाद आदि से संबंधित फिल्में बनाकर मजदूरों और किसानों को दिखाई जाती हैं। इसी प्रकार, फसलों के रोगों और उनके निवारण के उपाय भी दर्शाये जाते हैं।

३. तीसरी कोटि की फिल्में हैं शिक्षा दायक फिल्में। ये फिल्में स्कूलों, विश्वविद्यालयों तथा मजदूर-यूनियन स्कूलों की समस्याओं का चित्रण करती हैं।

सन् १९४५ से, १००० से अधिक फिल्में डेफा स्टूडियो से तैयार होकर बाहर आई हैं। इनमें से कई कलात्मक सौन्दर्य तथा भावात्मक अभिव्यक्ति के कारण विश्व प्रसिद्ध हो चुकी हैं। इस वर्ष डेफा स्टूडियो में तीनों कोटि की १४० से अधिक फिल्में बनाने की योजना है। आशा है कि ये लोकप्रिय वैज्ञानिक फिल्में भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर लेंगी।

(पृष्ठ ११ का शेष)

कवि की पारदर्शी आंखों में

सौन्दर्य को पुनः प्राप्त करके रहेगा, वरन् इसका भवन-निर्माण सौन्दर्य तथा स्थापत्य कला अधिक निखर आयेगी।

पूर्वी जर्मनी—यानी जर्मन जनवादी गणतंत्र की ज़िन्दगी ठेकेदारों तथा सेठ साहूकारों के शिकंजे से आज़ाद है। नई सभ्यता जन्म लेकर यहां नई मंज़िलों की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है। राज-मज़दूर यहा न तो फुटपाथों पर सोते हैं और न ही ठेकेदार उनकी रोज़ी छीन सकते हैं! यहां के सभी मज़दूर अत्याधुनिक मकानों में रहते हैं और आज की सभी सुविधायें—मोटर, रेडियो, टेलिविज़न, मोटर-साइकल आदि, उनको उपलब्ध हैं। इसी प्रकार, नारियों के समान अधिकारों, बच्चों की मुफ्त शिक्षा तथा लालन पालन, स्वास्थ्य तथा आरोग्य की देखभाल, सहकारी खेती और सामूहिक प्रयत्नों द्वारा औद्योगिक प्रगति ने—जर्मनी की सरज़मीन के पूर्वी भाग को नाज़ी विचारों और प्रभावों से साफ़ किया है। आज यहां की जनता के दिल में दुनिया की जनता के लिये मैत्री, सद्भावना तथा शांति की शुभकामनाये ठाठें मार रही हैं। यहां नवयुवक अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिये दिन रात पहरा देते हैं और मौत से टकराने के लिये हर समय तैयार रहते हैं। आज, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता में भारत की सभ्यता तथा संस्कृति के प्रति आदर तथा सम्मान और भारतीय जनता के लिये प्रेम, और शुभकामनाओं के पवित्र भाव वर्तमान हैं!.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

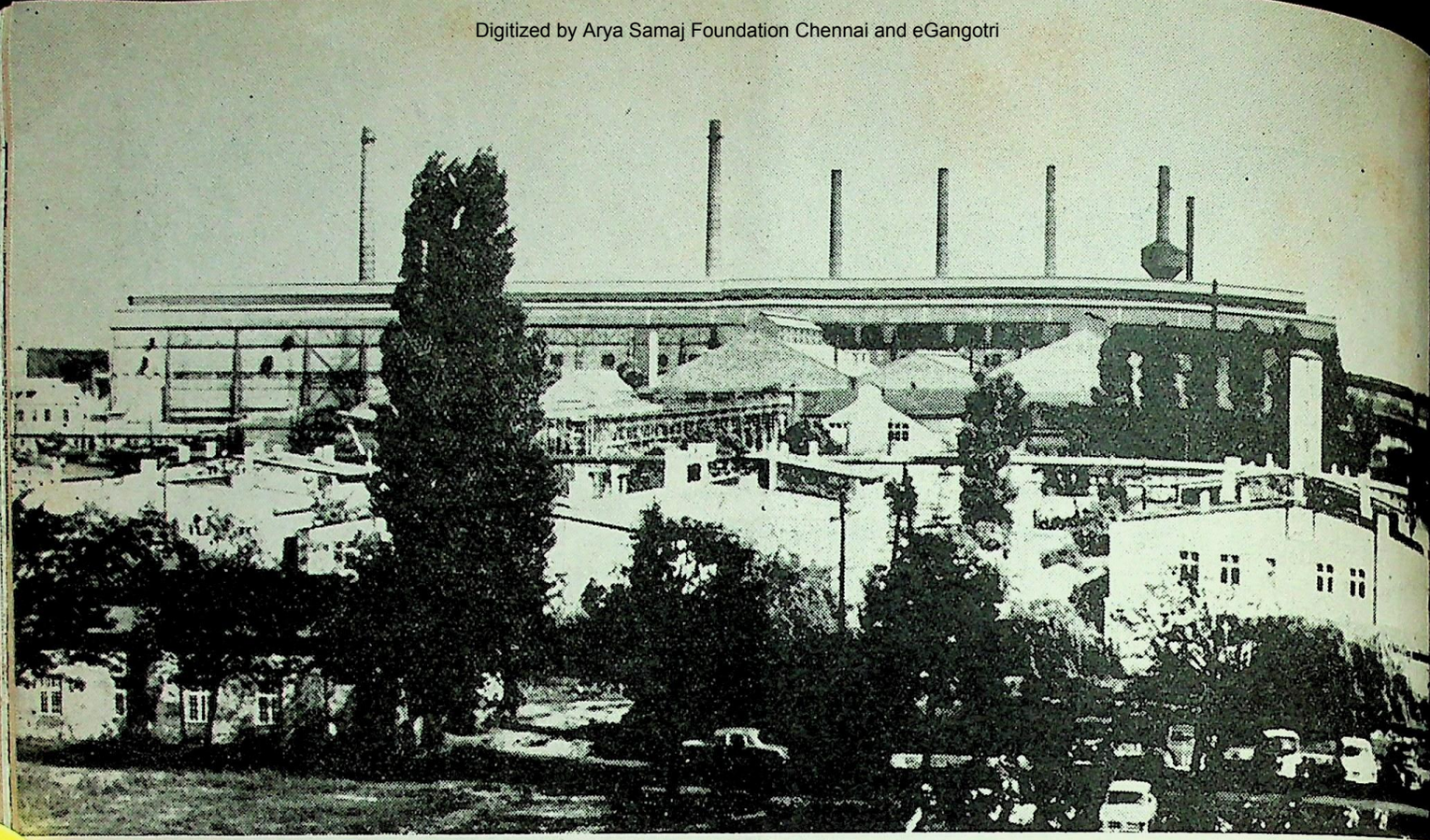

भारत का कच्चा लोहा

व्यापार, विभिन्न देशों की जनता को एक दूसरे के निकट ला देता है और मैत्री तथा शांति की जड़ों को दृढ़ करता है। इसके अतिरिक्त, व्यापार, देशों के औद्योगीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन भी है।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच दोस्ती तथा व्यापार के रिश्ते दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। ज.ज.ग. भारत को न सिर्फ़ आधुनिक मशीनें तथा यंत्र ही उपलब्ध करता है, वरन् वह इसको बने बनाये कारखाने भी निर्यात करता है। इस तरह हमारा देश, भारत के औद्योगीकरण में हाथ बटा रहा है। इसके अलावा ज. ज. ग. भारत के खेतों के लिये बहुत बड़ी मात्रा में, उर्वरक भी उपलब्ध करता है।

भारत और ज.ज.ग. के बीच व्यापार कितनी तेज़ी से और कितनी बड़ी मात्रा में बढ़ रहा है इसका हल्का सा आभास, हाल ही के लइपज़िक वसन्त मेले में हुये व्यापार से लग सकता है। इस मेले में भारतीय तथा ज. ज. ग. की फर्मों के बीच कई व्यापारिक समझौतों पर दस्तख़त हुये। इन समझौतों के अनुसार ज. ज. ग. भारत को २·६ करोड़ रुपयों की मशीनें तथा यन्त्र और १·२ करोड़ रुपयों की रक़म के उर्वरक--एमोनियम सल्फेट तथा म्यूरियेट-पोटाश, उपलब्ध करेगा।

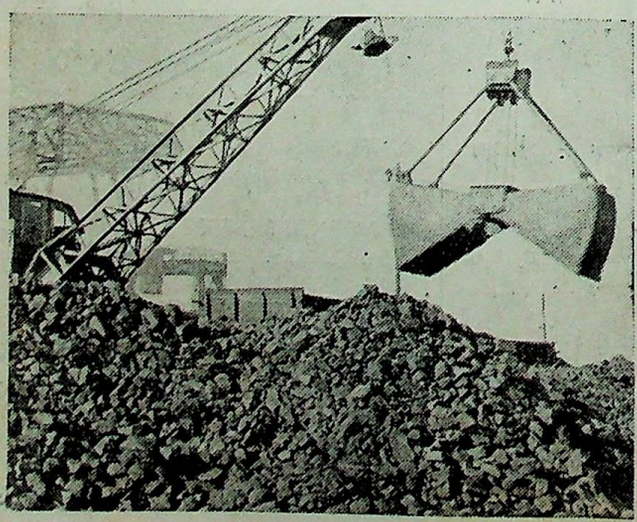

क्रेन, भारत से आया कच्चा लोहा, गोदामों में भर रहे हैं

हमारे दो देशों के बीच सन्तुलित व्यापार है। इसका अर्थ यह है कि भारत ज. ज. ग. को समान रक़म की चीज़ों का निर्यात भी करेगा। भारत से निर्यात होने वाली इन वस्तुओं में कच्चे लोहे का प्रमुख स्थान है। ज. ज. ग. के कई बड़े-बड़े इस्पात पैदा करने वाले कारखाने, तामीराती इस्पात बनाने के लिये भारत का कच्चा लोहा इस्तेमाल करते हैं।

इस्पात उत्पादन की एक विधि है 'सीमेन-मार्टिन' विधि। इस विधि में कच्चा लोहा एक अनिवार्य तत्व है जो आक्सिजन-वाहक का काम करता है। इस्तेमाल होने वाले कच्चे लोहे में कुछ गुणों का होना अनिवार्य है, जो इस प्रकार हैं :

१. इसमें इस्पात तत्व बहुत होना चाहिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

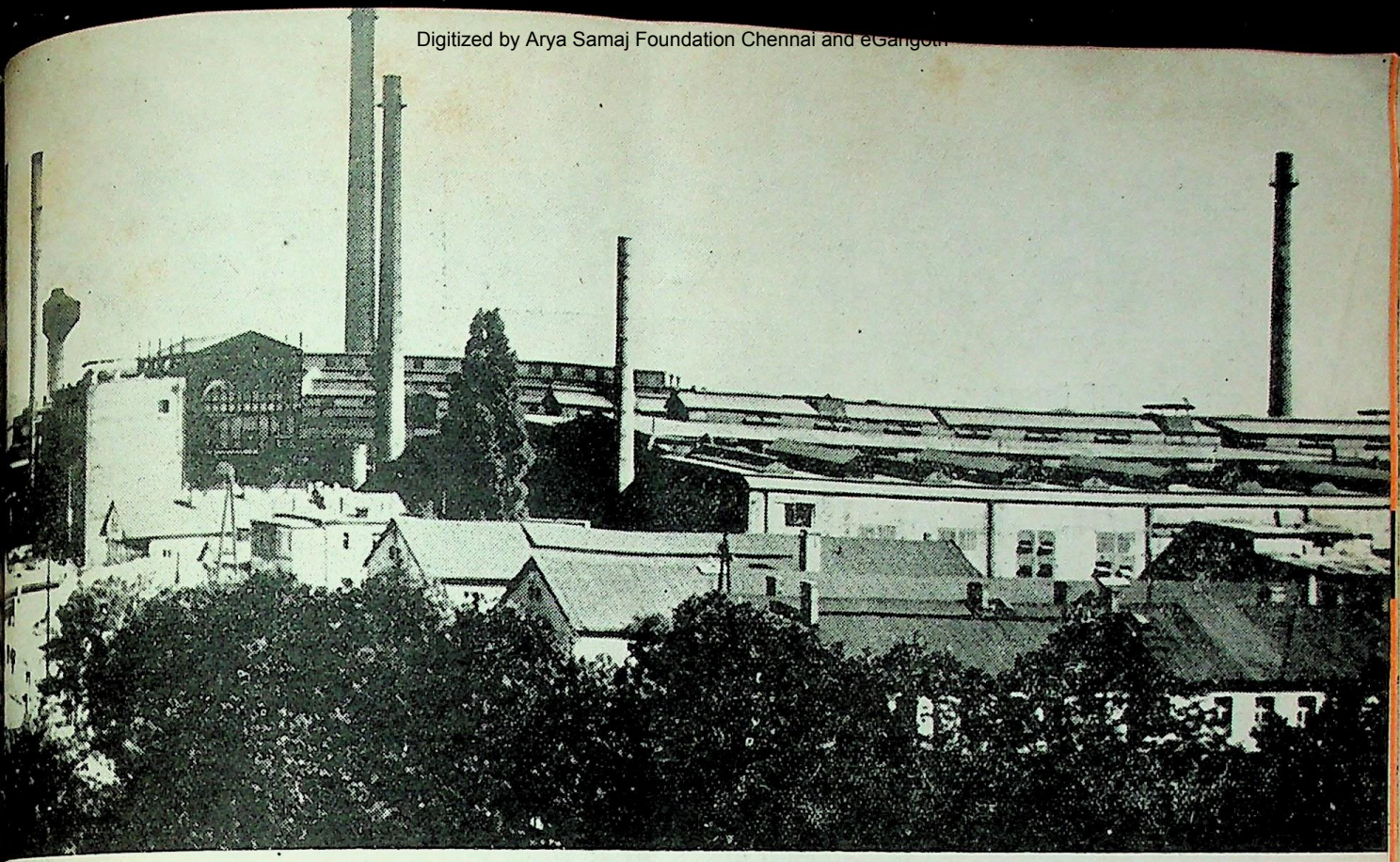

हेनिगसडोफ कारखाने का एक भाग

लोहे की नींव

एच. ब्राल

२. गन्धक और फासफ़ोरस कम मात्रा में मौजूद होना चाहिये; और

३. इस कच्ची धातु में एक खास आकार की स्थूलता होनी चाहिये।

भारत के कच्चे लोहे में ये सभी गुण पूर्ण रूप से विद्यमान हैं।

भारत से कच्चा लोहा समुद्र-मार्ग द्वारा ज. ज. ग. तक पहुंचाया जाता है। बन्दरगाहों से रेलगाड़ी में सफर करके अन्त में यह धातु अपने विश्रामस्थलों अर्थात् इस्पात कारखानों के गोदामों में इस्तेमाल किये जाने तक आराम करती है। इस्तेमाल होने की प्रक्रिया में ज.ज.ग. के इस्पात मज़दूर, इसको अपने बढ़ते हुये इस्पात उद्योग के लिये अनेक रूप प्रदान करते हैं। इस्पात की बनी हुई अनेक वस्तुएं बाद में विश्व के विभिन्न देशों में विविध यन्त्रों, मशीनों तथा अन्य चीज़ों के रूप में, वहां के उद्योग की सहायता के लिये पहुंच जाती हैं। इस प्रकार भारत की यह धातु न केवल ज. ज. ग. के इस्पात उद्योग को ही बढ़ाती है, अपितु यह हमारे देश तथा अन्य देशों के बीच के व्यापार और मैत्री को भी मज़बूत बनाने में सहायक होती है।

कच्चे लोहे की भारत से लेकर ज.ज.ग. की यात्रा और वहां के कारखानों में इसके प्रयोग तक, दोनों देशों के नाविकों, डाक तथा इस्पात मज़दूरों, इंजीनियरों और विशेषज्ञों के असंख्य हाथ इस धातु को संवारते दुलराते हैं और इस प्रकार मानव के भविष्य को संपन्न तथा शांतिमय बनाने के लिए अनथक काम करते हैं।

इस प्रकार भारत का कच्चा लोहा केवल इस्पात का मुख्य आधार ही नहीं है, बल्कि यह हमारे दो देशों की तथा विश्व की जनता के शांतिमय भविष्य का एक निर्माता भी है।

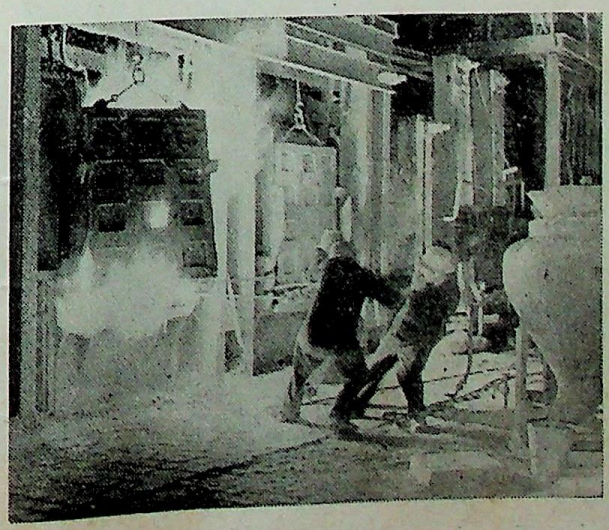

हेनिग्सडोफ इस्पात कारखाने के इस्पाती मज़दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की ख़बरें

भारतीय प्रतिनिधि ज.ज.ग. में

अखिल भारतीय सहकारी संस्था के उपाध्यक्ष श्री आर्य और महामंत्री श्री पराशर, १३ मार्च को जर्मन जनवादी गणतंत्र में पधारे। ज.ज.ग. की उपभोक्ता-सहकारी संस्था ने इनको आमन्त्रित किया था। भारत के ये अतिथि उपभोक्ता-सहकारी-संस्था की फैक्ट्रियां तथा दुकानें देखेंगे। इसके बाद भारतीय तथा ज.ज.ग. की सहकारी संस्थाओं की समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान होगा। ज.ज.ग. की सहकारी संस्थायें भारतीय सहकारिता में काफ़ी दिलचस्पी लेने लगी हैं।

इन दिनों, हिन्देशिया की उपभोक्ता-सहकारी-संस्था का एक प्रतिनिधि मंडल भी ज.ज.ग. के दौरे पर आया है।

मेले में अरब गणराज्य का व्यापार

लइपज़िक व्यापार मेले में संयुक्त गणराज्य के मंडप-अधिकारी श्री अब्दुल ग़नी ने एक इण्टरव्यू में कहा, "लइपज़िक का वसन्त मेला इस वर्ष फिर संयुक्त अरब गणराज्य के लिये बहुत लाभदयाक सिद्ध हुआ।" श्री ग़नी के इस सन्तोष का कारण यह है कि मेला समाप्त होने से एक दिन पहले, मंडप में प्रदर्शित सारी वस्तुएं ज.ज.ग. को बेची गयीं। इसके अतिरिक्त, अरब गणराज्य के प्रतिनिधियों ने कई अन्य देशों के साथ भी व्यापार की सफल बातचीत की।

प. बर्लिन का पुलिस अफ़सर गिरफ्तार

पश्चिमी बर्लिन के एक पुलिस अफसर, विल्हेलम गौराक् के खिलाफ गिरफ्तारी का वारण्ट जारी हुआ है। यह अफसर पहले हिटलर की खुफ़िया नाज़ी पुलिस का अफसर रहा है।

वारण्ट जारी करने का कारण यह है कि उसने डेनमार्क के एक नागरिक की उन दिनों हत्या की थी जब डेनमार्क हिटलर की क्रूर सेनाओं के अधिकार में था।

जांच द्वारा इस बात का पता चला है कि पहली फरवरी, सन् १९४४ में ग्रौराक् ने डेनमार्क के एक सिपाही फाल्केन्ना को, दो अन्य नाज़ी सैनिकों की सहायता से, गोली मारी थी। गिरफ्तार होने के दिन तक यह नाज़ी क़ातिल पश्चिम बर्लिन पुलिस का एक बड़ा अफसर था। ग्रौराक् के बारे में उल्लिखित तथ्य सामने आने पर, डेनमार्क और बर्लिन में ज़बरदस्त प्रदर्श हुये।

प्राचीन भाषाओं के प्रसिद्ध भाषाविद् डा. शोट्लैंडर (दायें से पहले) पश्चिम बर्लिन त्याग कर ज.ज.ग. की राजधानी में रहने के लिये आये। कारण: वहां के फासिस्तवादी शिक्षा अधिकारी उनको संत्रस्त करते हैं स्वतंत्र विचार रखने के लिये

कम्बोडिया में कोंसल की स्थापना

१३ मार्च को, बर्मा स्थित ज. ज. ग. के कोंसल-जनरल श्री हांस वास्स और कम्बोडिया के प्रधान मन्त्री राजकुमार नारोदोम सिहानोक में इस बात पर विचार हुआ था कि दोनों देशों में कोंसली संबंध स्थापित हों। अब जल्द ही ज. ज. ग. और कम्बोडिया के बीच इस प्रकार का संबंध स्थापित होगा और एक दूसरे के देश में कोंसल-जनरल भेज दिये जायेंगे। कम्बोडिया द्वारा ज. ज. ग. को राजनायिक मान्यता देने की ओर यह बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण क़दम है। इस अवसर पर राजकुमार को श्री हांस वास्स ने ज. ज. ग. की राज्य परिषद् (लोकसभा) के अध्यक्ष श्री वाल्तर उल्ब्रिख्त का एक शुभ सन्देश भी दिया।

क्षय रोग के अंतिम दिन

दस वर्षों में—सन् १९५० से १९६० तक—ज. ज. ग. में क्षय रोग से ग्रस्त रोगियों की संख्या ४८.३ प्रति १०,००० व्यक्तियों से घट कर १३.१ प्रति १०,००० व्यक्ति तक आ गई। इसी अवधि में क्षयरोग से मरने-वालों की संख्या भी ७.८ से घट कर १.७ प्रति १०,००० व्यक्तियों तक आ गई। इस आश्चर्यजनक सफलता का रहस्य, ज.ज.ग. के आरोग्य मंत्रालय के एक प्रवक्ता डा० एरलेर के इन शब्दों में निहित है: "हमारी इस महान सफलता का मात्र कारण है हमारे देश की आरोग्य व्यवस्था का सुचारु संचालन, जिसका एक मुख्य उद्देश्य है क्षय रोग का समूल नाश। इस अभियान में हमारी सरकार पैसे की कोई परवाह नहीं करती।" इस कथन की सच्चाई ये आंकड़े पेश करते हैं: सन् १९६० में ज. ज. ग. की सरकार ने क्षय रोग के नाश के लिये २१ करोड़,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

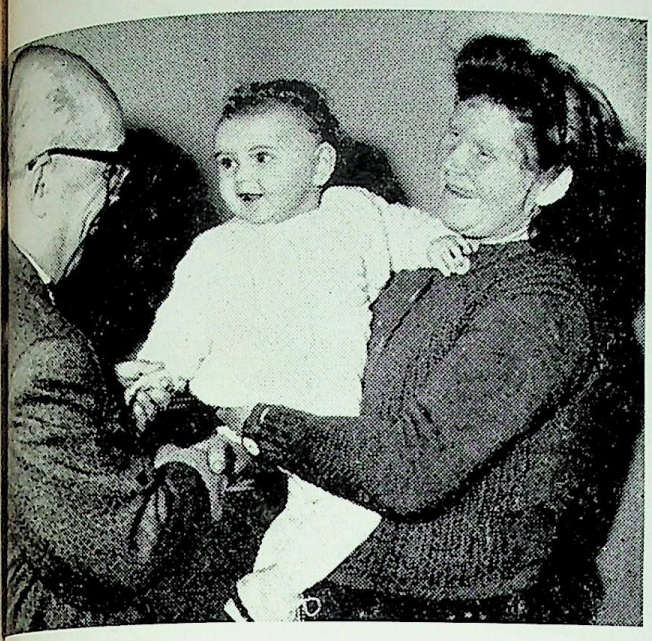

अगस्त, १९६१ में पश्चिम बर्लिन के क्रूर जासूस, तीन महीने की इस दुधमुही बच्ची को भी चुराने में नहीं हिचकिचाये। लेकिन ज. ज. ग. की सरकार तथा जनता के ज़बरदस्त प्रदर्शनों के फलस्वरूप प. बर्लिन के अधिकारियों को 'सिलविया' लौटानी ही पड़ी। चित्र में, मां की ममता मुस्करा रही है

४५ लाख मार्क की धनराशि खर्च की (०.८८ मार्क = १ रुपया)। डा० एरलेर ने अनिवार्य वार्षिक एक्स-रे जांच को भी इस सफलता का एक बड़ा कारण बतलाया। उन्होंने कहा कि पिछले साल ज. ज. ग. में १ करोड़, ११ लाख लोगों की एक्स-रे जांच हो चुकी है। ज. ज. ग. की कुल आबादी में अब केवल ६० लाख लोगों की एक्स-रे जांच बाकी रह गई है।

व्यक्तित्व की झांकी

(पृष्ठ ७ का शेष)

अपने महान अस्त्र—साहित्य, सृजन के द्वारा! युद्धों तथा युद्ध-पोषकों से घृणा और मानवता से अथाह प्यार—यही है आपके जीवन और साहित्य का मूल मन्त्र!.....

दूसरे विश्व युद्ध के समाप्त होने पर श्री अर्नाल्ड का निष्कासन काल समाप्त हुआ और सन् १९४८ में आप स्वदेश लौटे जो दुर्भाग्य से अब दो राज्यों में विभक्त हो चुका था। लेकिन आपने जर्मन जनवादी गणतंत्र को ही अपनी कामनाओं और आकांक्षाओं का साकार रूप समझा और यहीं बस गये। अपने देश लौटकर श्री अर्नाल्ड बोले, "यूरोप के खंडहरों में अब हमको नव निर्माण शुरू करना है। अब हमें शांति को संवारने वाले लाखों, करोड़ों हाथों की आवश्यकता है। विनाशकारी कार्यों को तिलांजली देकर हमें नये शांतिमय और समृद्ध जीवन को जन्म देना और विकसित करना है! यह एक बहुत बड़ा और अत्यन्त मानवीय कृत्य है। आव, इस पवित्र कार्य को पूर्ण करने का हम वृत्त ले लें!..."

ऐसे महान मानवतावादी लेखक की कृतियों का बहुत लोकप्रिय होना स्वाभाविक है। ज.ज.ग. तथा अन्य देशों में इनकी रचनायें लाखों की संख्या में छप रही हैं। सन् १९५० में श्री अर्नाल्ड जर्मन साहित्य अकादमी के अध्यक्ष बना दिये गये। आप सन् १९४९ से ज.ज.ग. के पीपुल्स चैम्बर (लोक सभा) के सदस्य हैं। साहित्य और समाज की महान सेवाओं के उपलक्ष्य में आप को कई पुरस्कार मिले जिनमें से सन् १९५० का कला तथा साहित्य का राष्ट्रीय पुरस्कार, और सन् १९५६ का अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार विशेष उल्लेखनीय हैं।

अनुपम सम्मेलन!

'सूचना पत्रिका'

अपने प्रिय पाठकों को निमन्त्रित करती है

अपनी प्रथम किंतु अद्वितीय गोष्ठी में!

दिनांक : बृहस्पतिवार, १० मई, सन् १९६२

समय : सांयकाल ५.३० बजे

स्थान : १२, कौटिल्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली

गोष्ठी में, 'पत्रिका' अपने पाठकों के अमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत करेगी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

६ वर्ष ७
जून
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

४, वलयमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ६ २० जून, १९६२

इस अंक में

पृष्ठ

गमनागमन मार्ग संबंधी रचनात्मक सुझाव ३

व्यक्तित्व की झांकी
विल्ली ब्रेडल : ख्याति-प्राप्त साहित्यकार ५

जनवाद के बढ़ते चरण
अध्यापकों का खुशहाल जीवन ६
अमर मैत्री का आधार ७
ज. ज. ग. में कृषि ८
फ्राइबर्ग की खान अकादमी ९
भारत की खनिज संपदा ११
क्षयरोग उन्मूलन का अभियान १२
वैले : एक झांकी १४
हिन्दी भाषा का अध्ययन १५

सीमांत पर हत्या १६

वीर लरनेन दोइच
पाठ अठारह १७

जर्मनी की ख़बर २०

मुख पृष्ठ :

श्री लंका के संसद सदस्यों का एक प्रतिनिधि मण्डल मई में ज. ज. ग. आया। आइसेन्हूतेनस्यताद्त के ४ नंबर स्कूल के बच्चों ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

अन्तिम पृष्ठ :

ज. ज. ग. के रमणीय स्थानों में हर साल छुट्टियां मनाने वालों की भीड़ लग जाती है। चित्र में छुट्टियों का आनन्द लेने वाला एक दल वन-आंचल में स्थित 'एर्ज़गेबजे' गांव में स्थित एक विश्रामस्थल में वाली-बाल खेल रहा है।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम बर्लिन की समस्या :

20 JUN 1962

गमनागमन-मार्ग संबंधी रचनात्मक सुझाव

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

दुनिया में शांति की स्थापना के लिये, दूसरे महायुद्ध के अवशेषों को, १७ वर्षों के बाद, आज खत्म करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। इसीलिये, सोवियत संघ तथा अमरीका के प्रतिनिधियों के बीच, जर्मन शांति और पश्चिम बर्लिन के गमनागमन मार्गों के संबंध में चलती हुई बात चीत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दूसरे महायुद्ध के अवशेषों के खातिमे के साथ ही साथ यदि सोवियत रूस, अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस में शांति सन्धि के बारे में भी समझौता हो जाता तो पश्चिम बर्लिन की स्थिति में स्थिरता आ जाती। इससे एक ऐसी अनुकूल स्थिति पैदा हो जाती जिसमें ज.ज.ग. की सीमाओं के बीच से प. बर्लिन तक आने जाने वाले मार्गों के विषय में भी समझौता हो जाता। ज.ज.ग. की सीमाओं से गुजरने वाले प. जर्मनी के गमनागमन मार्गों का शांतिपूर्ण उपयोग (अन्य देशों द्वारा) तब तक असंभव है जब तक दूसरे महायुद्ध के अवशेषों को समाप्त न किया जाये और इस बात की समुचित गारंटी न दी जाये कि ज.ज.ग. तथा अन्य समाजवादी देशों के खिलाफ़ आक्रामक कार्यों के लिये उक्त मार्गों का दुरुपयोग नहीं होगा। इसलिये प. बर्लिन के गमनागमन मार्गों का प्रश्न, जर्मन शांति सन्धि का ही एक अभिन्न अंग है।

ज. ज. ग. की सरकार ने अब तक, सभी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांति पूर्ण ढंग से हल करने का प्रबल समर्थन किया है और इस दिशा में अपने रचनात्मक सुझाव भी पेश किये हैं। ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का हाल ही का एक सुझाव उक्त नीति का प्रमाण है। श्री उल्ब्रिख्त के सुझाव के अनुसार एक मध्यस्थ आयोग स्थापित करना चाहिये। यह आयोग, पश्चिमी देशों को, पश्चिम बर्लिन का अधिकृत स्थिति समाप्त करने के काम को आसान बना देगा और प. बर्लिन के गमनागमन मार्गों के उपयोग संबंधी समझौतों अथवा संधियों पर दस्तखत करने में भी मदद देगा। यह सुझाव, ज. ज. ग. की इस नीति का प्रतीक है कि सभी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े शांतिपूर्ण ढंग से सुलझायें जायें। इस सुझाव को काफ़ी सराहा गया।

इस संदर्भ में यह बता देना आवश्यक है कि पश्चिमी ताकतें भी अब समझौतों और बातचीत करने के महत्व तथा

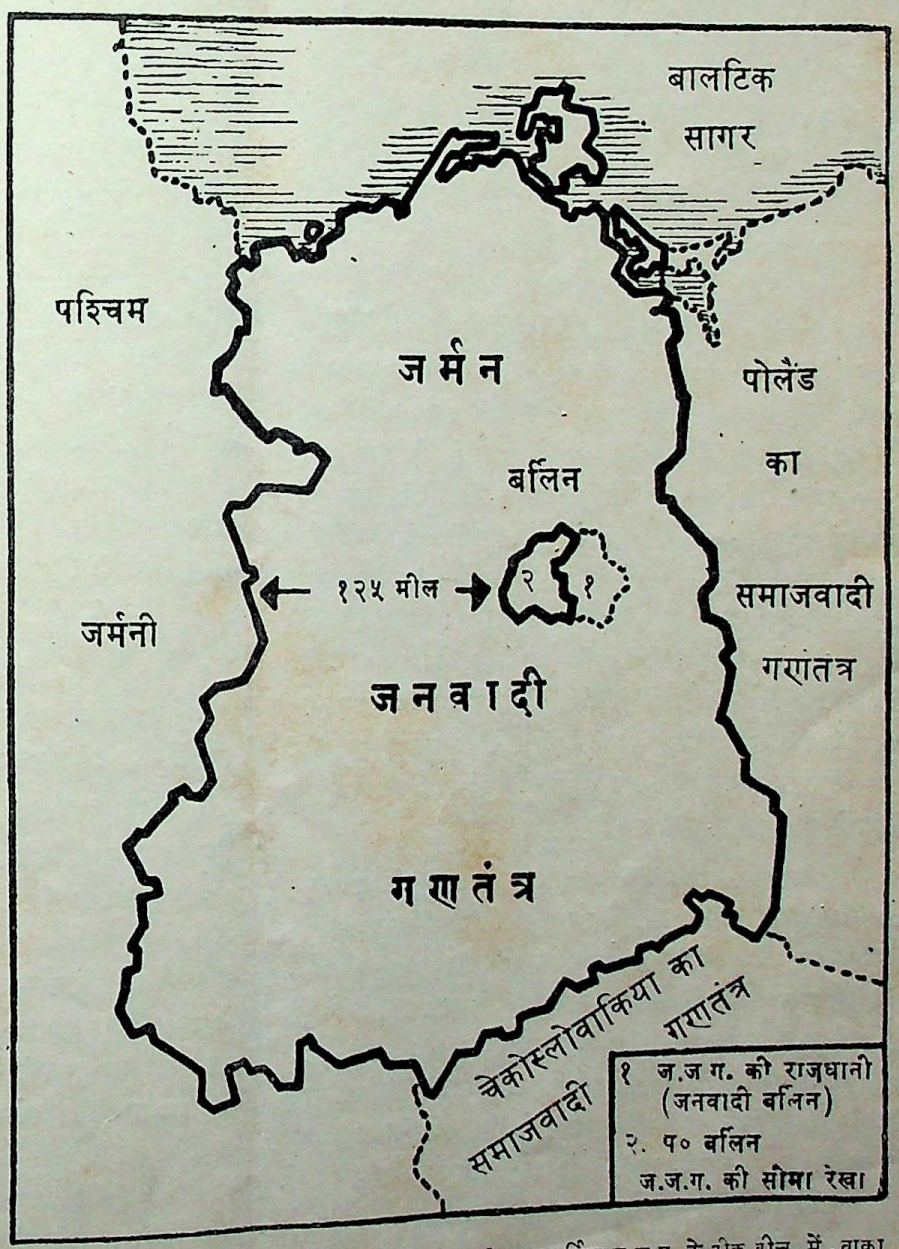

इस नक्शे में प. बर्लिन की स्थिति देखी जा सकती। प. बर्लिन ज.ज.ग. के ठीक बीच में वाका है और इसके सभी गमनागमन मार्ग ज.ज.ग. की राज्य सीमा से गुजरते हैं। इसलिये इन मार्गों से संबंधित कोई भी समझौता ज.ज.ग. के सहयोग तथा समर्थन के बिना असंभव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता को समझने लगीं हैं। इसका प्रमाण है पश्चिमी देशों के प्रसिद्ध अखबारों के बयान। ब्रिटेन में श्री उल्ब्रिख्त के सुझावों पर काफी चर्चा हुई। प्रसिद्ध दैनिक "टेलिग्राफ" ने उक्त सुझावों को "निश्चित प्रगति" और "गार्जियन" ने उनको "आशापूर्ण" घोषित किया। पेरिस (फ्रांस) के प्रसिद्ध अखबार "ला माण्डे" ने लिखा कि ये सुझाव "बातचीत द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने की इच्छा को प्रकट करते हैं।"

यह तो रही बात पश्चिमी देशों के अखबारों की। लेकिन उनकी साझीदार, पश्चिमी जर्मनी की फेडरल हकूमत ठीक उलटा सोचती है। बोन हकूमत ने इन सुझावों को बिना सोचे बिचारे रद्द किया। इस रवैया के पीछे पश्चिमी जर्मनी की अन्ध-विरोध की नीति ही काम करती है। हमेशा की तरह आज भी इन सुझावों को इस हकूमत ने ठुकरा दिया। बोन हकूमत किसी ऐसे क़दम को सफल होने नहीं देती जिसके द्वारा शांति तथा समझौते का वातावरण पैदा हो सके। इसलिये, पश्चिम बर्लिन के गमनागमन-मार्ग संबंधी इन सुझावों को भी यदि प. जर्मनी की हकूमत ने तोड़ मरोड़ कर देखा और रद्द किया तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

आखिर, पश्चिम बर्लिन की समस्या है क्या ?

इस प्रश्न पर प्रकाश डाला श्री उल्ब्रिख्त ने, सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के १५वें अधिवेशन के अवसर पर। उन्होंने कहा : "बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंध बनाये रखने के लिये, ज. ज. ग. इस बात के लिये तैयार है कि एक प्रकार का मध्यस्थ आयोग स्थापित किया जाये जो प. बर्लिन के यातायात तथा आवागमन के मार्गों की आज़ादी की गारंटी दे। लेकिन शर्त यह है कि पहले गारंटर ताक़तों—अमरीका, रूस, ब्रिटेन तथा फ्रांस के, शांति सन्धि पर दस्तख़त हों। मध्यस्थ आयोग की स्थापना के बाद, ज.ज.ग. और अमरीका, फ्रांस तथा ब्रिटेन के बीच यदि कभी कोई मतभेद हो तो इसी आयोग को झगड़ा सुलझाने के लिये अपील की जायेगी। सोवियत संघ, जो अन्य देशों की तरह इस आयोग का सदस्य होगा, उक्त मतभेद को निपटाने का ज़िम्मेवार होगा।"

पश्चिम बर्लिन के गमनागमन मार्गों के प्रश्न को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने का उपयुक्त तरीक़ा यही है कि उक्त मध्यस्थ आयोग की स्थापना की जाये जिसके सदस्य गारंटर ताकतों के प्रतिनिधि हों। यह मध्यस्थ आयोग संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व केसिद्धान्त के अनुरूप भी होगा, क्योंकि चार्टर में इस बात की व्यवस्था है कि मतभेदों को निपटाने के लिए, विभिन्न राष्ट्र मध्यस्थ देशों, मध्यस्थ आयोगों या ऐसी ही संस्थाओं का आश्रय ले सकते हैं। ये आयोग अथवा संस्थायें मतभेद रखने वाले देशों की प्रभुसत्ता का पूर्ण रूप से सम्मान करते हैं।

लेकिन, चूंकि पश्चिमी देश आज भी ज. ज. ग. के अस्तित्व को मानने से इनकार किये हुये हैं और ज.ज.ग. के साथ सीधे सीधे बात चीत नहीं करना चाहते, इसलिये उपरोक्त सुझावों में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि सोवियत यूनियन, जो गारंटर ताक़तों में से एक है और जो मध्यस्थ-आयोग का सदस्य होगा, एक ओर इस आयोग में ज. ज. ग. के हितों का प्रतिनिधित्व करेगा और दूसरी ओर, ज. ज. ग. के साथ मतभेदों को निपटाने के लिये बातचीत भी करेगा।

ज.ज.ग. ने बार बार इस बात को दोहराया है कि उसकी विदेशी और देशी नीति, शांति तथा सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर आधारित है और वह प. बर्लिन के गमनागमन मार्गों के शांतिपूर्ण प्रयोग के लिये अनुकूल वातावरण पैदा करने के लिये हमेशा तैयार है। इन विचारों सच्चाई का प्रमाण यह है कि ज.ज.ग. की सरकार गारंटर ताकतों अथवा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नियुक्त किये गये किसी भी मध्यस्थ आयोग अथवा संस्था की, प. बर्लिन के यातायात मार्गों की स्वतन्त्रा से संबंधित सिफारिशें मानने के लिये तैयार होगी।

लेकिन, पश्चिम बर्लिन के गमनागमन मार्गों के बारे में पश्चिमी देशों के, अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण तथा अन्तर्राष्ट्रीयकरण वाले सुझाव, ज.ज.ग. के उक्त रचनात्मक सुझावों से एकदम भिन्न और वास्तविक स्थिति से बहुत दूर पड़ते हैं। पश्चिमी ताकतों के इन सुझावों में ज.ज.ग. की प्रभुसत्ता के प्रति आदर तथा सम्मान की भावना कहीं भी नहीं मिलती। ज.ज.ग. की प्रभुसत्ता को ठुकरा कर, पश्चिम बर्लिन के गमनागमन मार्गों की समस्या सुलझाना नितांत असंभव है। आजकल की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा शक्ति-संतुलन को देखते हुये, इस निर्विवाद सत्य को स्वीकार करना ही होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े तथा समस्यायें, अन्य देशों की प्रभुसत्ता का अनादर तथा उल्लंघन करने से नहीं बल्कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त पर ही सुलझाई जा सकती हैं।

ज.ज.ग. के सुझावों में इन सभी बातों का ध्यान रखा गया है। इन सुझावों में जहां ज.ज.ग. की प्रभुसत्ता तथा इसकी सुरक्षा का ख्याल रख गया है वहीं इनमें पश्चिमी ताक़तों के स्वार्थों को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया गया है।

लेकिन दुर्भाग्यवश, पश्चिमी जर्मनी के शासक प्रत्येक उस सुझाव का कड़ा विरोध करते हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के पक्ष में हो। प. बर्लिन की समस्या के प्रति उनका रवैया और भी कटु तथा विषैला है। इसीलिये वे ज.ज.ग. के रचनात्मक सुझावों को हर बार रद्द करते हैं। वे उन लोगों पर भी ज़बरदस्त दबाव डालते हैं जो इन शांतिपूर्ण प्रस्तावों तथा सुझावों के हक़ में हों। प. जर्मनी की हकूमत का यह रवैया शांति विरोधी तो है ही, साथ ही यह जर्मन राष्ट्र तथा जनता के हितों के लिये घातक भी है। बोन सरकार तथा वहां के राजनीतिज्ञों की यह नीति एक बार फिर इस हक़ीकत को सामने लाती है कि वे प. बर्लिन के गमनागमन तथा यातायात के मार्गों की कठिन और अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या को शांति तथा सुलह सफाई से नहीं बल्कि शक्ति तथा बल प्रयोग द्वारा हल करना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झांकी

विल्ली ब्रेडल

एक ख्याति-प्राप्त साहित्यकार

श्री विल्ली ब्रेडल, जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक लोकप्रिय उपन्यासकार हैं, जिनकी साहित्यिक रचनायें लाखों लोग पढ़ते हैं। लेखन शैली और कला पर इनका अपूर्व अधिकार है। भावों की स्पष्ट तथा कलात्मक अभिव्यक्ति के कारण श्री ब्रेडल का, जर्मनी के राष्ट्रीय साहित्य में एक ऊंचा स्थान है। एक आलोचक ने इनको "समसामयिक मज़दूर वर्ग के जर्मन साहित्यकारों में इतिहासकार" कहा है।

श्री विल्ली ब्रेडल की उच्चतम कोटि की कृति है तीन भागों पर आधारित उनका एक उपन्यास : "संबधी और मित्र"। इस कलापूर्ण उपन्यास के तीन भाग हैं: 'पिता', 'पुत्र' और 'पौत्र'। ऐतिहासिक विषयवस्तु प्रधान उपन्यासों के एक प्रसिद्ध जर्मन आलोचक ने इस कृति पर निम्न मत व्यक्त किया है : "इस महान कृति में पहली बार जर्मन श्रमिक का, गत शताब्दी से आज तक का, विकास चित्रित हुआ है। यह तथ्य साहित्यिक दृष्टि से इतना बड़ा और महत्वपूर्ण है कि इसके आधार पर जर्मन साहित्य के इतिहास में यह उपन्यास एक अमर स्थान प्राप्त करेगा। इस कृति की अभिव्यंजनाशैली और भाषा, कलात्मक तथा स्पष्ट है, इसलिये मोहक है। इस के सजीव पात्र जीवन संघर्ष के प्रतीक हैं!"

श्री ब्रेडेल ने अपनी इस बृहत् कलाकृति में हैम्बुर्क के एक श्रमिक परिवार की तीन पीढ़ियों का चित्रण किया है। यह श्रमिक परिवार वास्तव में समपूर्ण जर्मन मजदूर वर्ग का प्रतीक है जिसके माध्यम से लेखक ने जर्मन मज़दूर वर्ग के आन्दोलन का पतन, (अवसरवाद के कारण) और दूसरे महायुद्ध के बाद इसका उदय तथा उत्थान दर्शाया है।

६० वर्षीय वृद्ध, श्री ब्रेडल का जीवन बहुत ही रोचक तथा अपूर्व है।

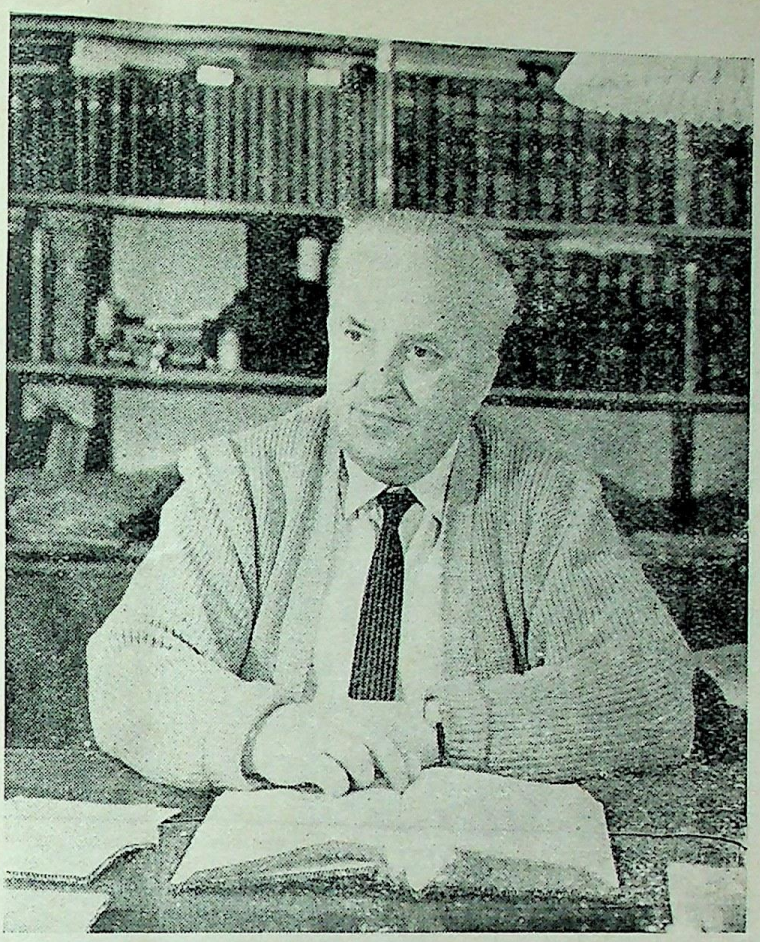

आप पहले हैमबुर्क के एक इस्पात मज़दूर थे और अब आप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के एक महान लेखक हैं। आपको आनरेरी डाक्टर की उपाधि दी गई है और आप जर्मन साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष भी हैं।

जर्मनी के मज़दूर वर्ग के आन्दोलन में श्री ब्रेडल हमेशा आगे और उनकी मुक्ति के लिये संघर्षरत रहे। शांति और जनता की खुशहाली आपका मात्र लक्ष्य है जिसके लिये आप निरन्तर काम करते हैं। १५ वर्ष की आयु में आप समाजवादी युवक-संगठन' के सदस्य बने। सन् १९२३ में, हैमबुर्क के मज़दूरों के विद्रोह में आप शामिल हो गये। स्पेन के 'अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड' में भर्ती होकर आपने फास्ति फ्रांको के खिलाफ लड़ा। 'वाइमर रिपब्लि'क के दिनों में अखबारों में आपने जो लेख लिखे उनसे बौखला कर शासन-अधिकारियों ने आपको क़िले की एक जेल में डाल दिया। कारावास के अनुभवों के आधार पर यहीं आपने अपनी प्रथम रचना— न. और क. की मशीन फैक्ट्री', को जन्म दिया।

जब जर्मनी में फासिस्तवाद और उसके प्रतीक हिटलर ने शासनसत्ता हथिया ली तो श्री ब्रेडल को पुनः गिरफ़तार करके एक सैनिक शिविर (कंसेन्ट्रेशन कैम्प) में बन्द करदिया गया। लेकिन लेखक की सृजनात्मक कल्पना यहां के जुल्म तथा बन्धनों से भी न झकड़ी जा सकी। शिविर के अनुभवों को आपने अपने सशक्त उपन्यास "मुक़दिमा" में चित्रित किया और इस तरह क्रूर नाज़ीवाद को चुनौती दी।

श्री विल्ली ब्रेडल की रचनाओं की संख्या ३० है। इनमें से कई एक के तो अनेक संस्करण छप चुके हैं। प्रकाशित प्रतियों की संख्या लाखों तक पहुं चुकी है। इन रचनाओं में से अधिकांश तो उपन्यास हैं और कुछ कहानी संग्रह। इन सभी कृतियों का वर्ण्य-विषय श्री ब्रेडल के आत्मानुभव हैं जो मज़दूर आन्दोलन के गुप्त संघर्ष, स्पेन के गृहयुद्ध और दूसरे महा युद्ध पर आधारित हैं। इसके अलावा, ज.ज.ग. के नवनिर्माण के प्रति युवकों

(शेष पृष्ठ १६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापकों का खुशहाल जीवन

डा. रूडोल्फ पाकुल्ला

पांच बजे प्रातः, जब अन्य लोग मीठी नींद में खोये होते हैं, पाल बेर्नट का दिन शुरू होता है। शांत और खामोश प्रभातकाल से वह बेहद प्यार करते हैं। अपने दैनिक व्यायाम के बाद श्री बेर्नट, अपनी लिखने वाली मेज़ पर बैठते हैं और छात्रों को पढ़ाया जानेवाला पाठ तैयार करते हैं। इस संबंध में उनका कहना है : "यह सच है कि मेरी कई ज़िम्मेदारियां हैं, लेकिन कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ को मैं सर्वाधिक महत्व देता हूं। इसका कारण यह हैं कि पोलितकनीकी माध्यमिक स्कूल में (जहां मैं पढ़ाता हूं) दसवीं कक्षा, अंतिम कक्षा है। मेरे सभी छात्र इसी कक्षा में पदार्पण करने जा रहे हैं। इन छात्रों को इस कक्षा के योग्य बनाने के अतिरिक्त मैं उन व्यक्तिगत विद्यार्थियों की ओर भी ध्यान देता हूं जो अपेक्षाकृत पढ़ाई में कमज़ोर होते हैं। उनकी कमज़ोरी दूर करना तथा उनमें आत्म-विश्वास पैदा करना मेरा बहुत बड़ा कर्तव्य है। गांवों से आये हुए अनेक विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास की कमी होती है जिसके कारण पढ़ाई में वे पिछड़ जाते हैं....."

श्री पाल बेर्नट, फ्रैंकफर्ट-ओडर ज़िले के शूनवाल्दे गांव के पोलितकनीकी माध्यमिक स्कूल में पिछले १२ वर्षों से पढ़ा रहे हैं। इस अवधि में उन्होंने अनेक विद्यार्थियों को पढ़ाया है और उनको विश्वविद्यालयों तथा अन्य उच्च तकनीकी शिक्षाओं के लिए तैयार किया है। ज़िले के हर स्कूल की तरह यहां भी विशेष विषय पढ़ाये जाते हैं। प्रत्येक शिक्षक दो या तीन विषयों का विशेषज्ञ होता है और वह उन विशेष विषयों को पढ़ाता है। श्री पाल बेर्नट जर्मन भाषा और रसायनशास्त्र के विशेषज्ञ हैं। पत्र व्यवहार की पाठन विधि से उन्होंने जर्मन भाषा का पाठ्य-क्रम तीन वर्षों में पास किया और एक सांयकालीन कालेज से उन्होंने रसायन-शास्त्र की उपाधि प्राप्त की। इन दोनों उपाधियों के लिए उनको अपना स्कूल छोड़ना नहीं पड़ा।

श्री बेर्नट विवाहित हैं और दो पुत्रों के पिता हैं। उनकी आर्थिक स्थिति के तथ्य काफ़ी रोचक हैं। उनके ही शब्दों में इसका ब्योरा सुनिये : "सन् १९४८ में, २३० मार्क मासिक वेतन पर मैं शिक्षक बना। आज तक ज. ज. ग. के सभी शिक्षकों का वेतन तिगुना हो चुका है। शिक्षण के १२ वर्षीय अनुभव और दसवीं कक्षा तक विशेष विषय पढ़ाने के कारण इस समय मेरा वेतन ७२५ मार्क (८८ मार्क = १ रुपया) है। इसके अतिरिक्त मेरे दो बच्चों के लिये ८० मार्क मिलते हैं। मेरा परिवार तीन कमरों वाले एक फ्लैट में रहता है जिसमें सभी आधुनिक सुविधाओं के अतिरिक्त एक सुन्दर बाग भी है। हर साल मुझे एक महीने की छुट्टी मिलती है। इन छुट्टियों का अधिक हिस्सा मैं उच्च प्रशिक्षण देने वाले संस्थानों में गुज़ारता हूं जो सरकार की ओर से छुट्टियों में ही चलाये जाते हैं।"

श्री बेर्नट भविष्य की चिन्ताओं से भी सर्वथा मुक्त हैं। ६५ की आयु के बाद या किसी भयंकर रोग के ग्रसित होने पर—अपनी मासिक आय का ६० प्रतिशत धन उनको अवकाश-वृत्ति (पेनशन) के रूप में मिलेगा, अन्य सभी शिक्षकों की तरह। अकाल मृत्यु होने पर अवकाश-वृत्ति उनके संबंधियों को मिलेगी।

पढ़ाना तो श्री बेर्नट का पेशा है। लेकिन वह सामाजिक कार्यों में भी उतनी ही रुचि रखते हैं जितनी शिक्षा में। आप

एक गांव स्कूल के नन्हे अभिनेता

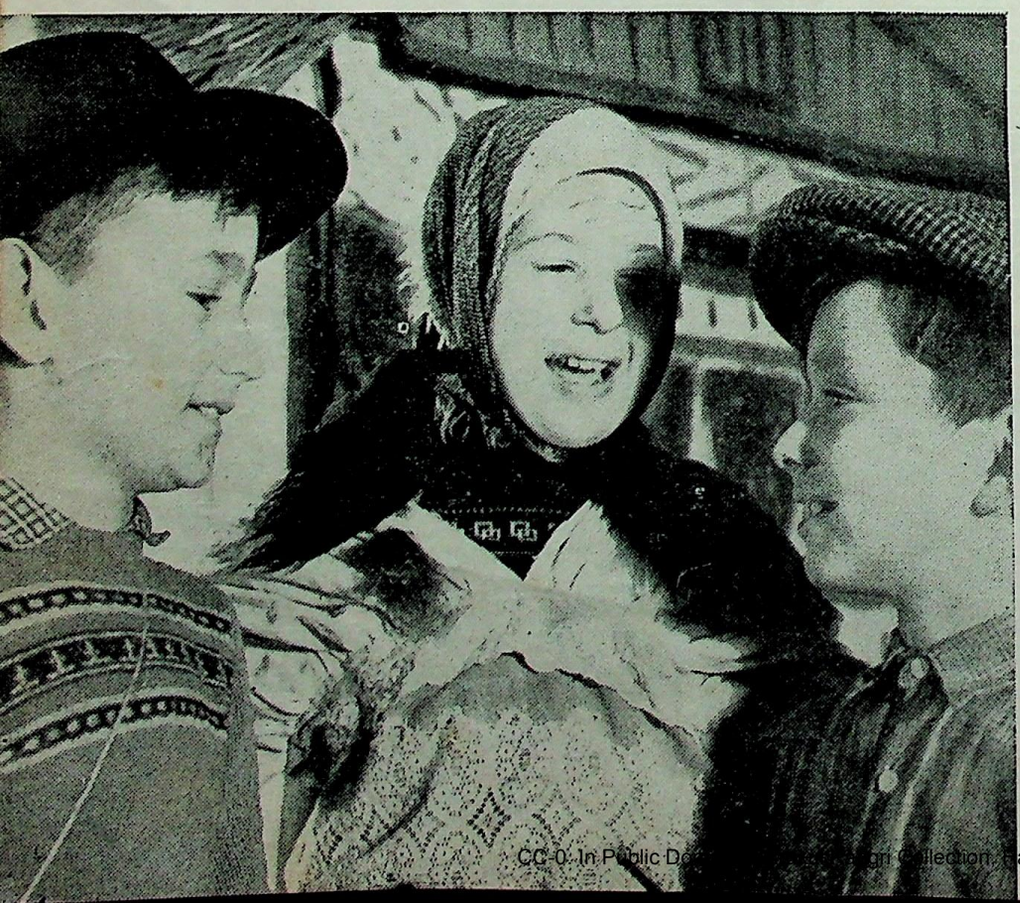

CC-0. In Public Do... Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj

'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन' नामक राजनीतिक पार्टी के सक्रिय सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त, पिछले कई वर्षों से वह गांव परिषद् के सदस्य तथा युवक समिति के अध्यक्ष भी हैं। गांव के जीवन को वह तथा उनके अन्य साथी इतना सुन्दर तथा आकर्षक बनाना चाहते हैं ताकि गांव के युवक, शहर के आकर्षण से मुक्त हो जायें। श्री पाल वेर्नट, न केवल गांव के सांस्कृतिक तथा मनोरंजन संबंधी अन्य कामों में ही सक्रिय भाग लेते हैं, बल्कि वह गांव के युवकों से ग्राम निर्माण के लिए श्रमदान भी कराते हैं।

श्री वेर्नट, कैथोलिक मत के कट्टर अनुयायी हैं। उनके मतानुसार "शिक्षक का पेशा और सामाजिक कार्यों में मेरा सक्रिय सहयोग, सभी के लिए शांति-दाई तथा कल्याणकारी है। इस सारे काम में राज्य मेरी सहायता करता है। मेरे लिये समाजवाद, ईसाई धर्म का ही अमली रूप है। इसीलिये मैं इसका समर्थक हूं। यहां प्रत्येक शिक्षक के सामने यह लक्ष्य रखा गया है कि वह यहां के युवकों को जातिवादी-घृणा तथा राष्ट्रीय दंभ से मुक्त रखें और उनको शांति तथा सहयोग का पाठ पढ़ायें। ये सिद्धान्त सच्चे ईसाई धर्म के विरोधी हो ही नहीं सकते। अन्त में, आपको यह भी बताना चाहता हूं कि अपने धार्मिक विश्वासों और तद्संबंधी कामों को करने में, मैं पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हूं।"

यह तो हुई बात श्री पाल वेर्नट की अर्थात् एक गांव-शिक्षक की। अब इसके जीवन की तुलना करिये शहर के तरुण शिक्षक श्री अर्नस्त काइन के जीवन से, जो बर्लिन-पाँको क्षेत्र के एक स्कूल में पढ़ाते हैं। इनका जीवन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की तरुण-पीढ़ी के शिक्षकों का प्रतीक है। वह एक राज-गीर के बेटे हैं और सन् १९४७ में आप एक माध्यमिक स्कूल में दाखिल हुये। वहां वज़ीफे पर यह पढ़ते रहे। इसके बाद, एक शिक्षा संस्थान में तीन साल तक इन्होंने गणित तथा भौतिकी

(शेष पृष्ठ २३ पर)

स्कूल का मैदान हमवार करने में शिक्षक तथा छात्र, उत्साह और उल्लास से श्रमदान कर रहे हैं

अमर मैत्री

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का एक प्रतिनिधि मण्डल, राज्य परिषद के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के नेतृत्व में, समाजवादी चेकोस्लोवाकिया के दौरे पर गया था। यह प्रतिनिधि मण्डल १६ मई को ज.ज.ग. वापिस लौटा।

ज.ज.ग. के प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत, चेकोस्लोवाकिया की लोकसभा के अधयक्ष, श्री ज़ेनेक फायरलिंगर ने किया। अपने स्वागत भाषण में अध्यक्ष महोदय ने स्पष्ट किया कि समाजवादी शिविर निशस्त्रीकरण और दो जर्मन राज्यों के बीच शांति सन्धि के लिये भरसक प्रयत्न कर रहा है। इसी अवसर पर श्री उल्ब्रिख्त ने हाल ही की बर्लिन सम्बंधी सोवियत-अमरीकी बातचीत का समर्थन करते हुये कहा कि इस तरह की बातचीत निरर्थक होगी यदि इसके पीछे ईमानदारी का जज़बा न हो।

पश्चिम बर्लिन की समस्या पर प्रकाश डालते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने स्पष्ट घोषणा की : "पश्चिम बर्लिन के आवागमन तथा यातायात के मार्गों के शांतिपूर्ण प्रयोग के लिये ज.ज.ग. एक अन्तर्राष्ट्रीय मध्यस्थ आयोग की स्थापना के लिये हर समय तैयार है। लेकिन हम किसी भी क़ीमत पर किसी भी आयोग के सामने ज. ज. ग. की प्रभुसत्ता का परित्याग करने के लिये कदापि तैयार नहीं।"

ज.ज.ग. इस बात को अपना अत्यन्त आवश्यक और पावन कर्तव्य समझता है कि वह जर्मन भूमि से किसी नये युद्ध को शुरू होने से रोके। इस संदर्भ में श्री उल्ब्रिख्त ने दोनों जर्मन राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया। उन्होंने कहा : "आजकल की ऐतिहासिक परिस्थितियों में, दो जर्मन राज्यों का एक परि-संघ (कानफेडरेशन) ही, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का अमली रूप होगा। इस परि-संघ में तटस्थ, असैनिकवादी तथा स्वतंत्र पश्चिम बर्लिन भी सम्मिलित हो सकता है।"

ज.ज.ग. तथा चेकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधि मण्डलों ने १८ मई को प्रकाशित हुये अपने संयुक्त वक्तव्य में इस बात की घोषणा की कि "उपनिवेशवादी शासन के अवशेषों को जल्द से जल्द

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवीं जर्मन किसान कांग्रेस का उद्घाटन समारोह

दिलचस्प तथ्य

ज. ज. ग. में कृषि

जर्मन जनवादी गणतंत्र के मागदेबुर्ग ज़िले में ९ से ११ मार्च (१९६२) तक जर्मन किसान कांग्रेस का सातवां अधिवेशन हुआ। कृषि संबंधी दृष्टिकोण से, यह कांग्रेस अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। ९ लाख, ४० हज़ार सहकारी किसानों के २,००० प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। भूत की उपलब्धियों और भविष्य में कृषि के सतत विकास पर खूब विचार विमर्श के बाद एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम की एक रूपरेखा तैयार की गई जिसको सभी सहकारी किसानों, कृषि-विशेषज्ञों, सरकारी अधिकारियों आदि के सोच विचार के लिये मसविदे के रूप में छाप दिया गया।

कृषि-विकास के कार्यक्रम की इस रूपरेखा पर २१२ ज़िला कानफ्रेन्सें हुई जिनमें ६६,१६४ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त कृषि-उत्पादन सहकारी समितियों ने इस कार्यक्रम को लेकर १७,३५२ मीटिंगें आयोजित कीं जिनमें ८ लाख सहकारी किसानों ने भाग लिया। किसान जनता में इतनी व्यापक और खुली बहस का नतीजा यह निकला कि दो हज़ार से अधिक प्रस्ताव पेश किये गये जिनको कार्यक्रम के अन्तिम मसविदे में सम्मिलित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम को इन प्रस्तावों सहित सातवीं जर्मन किसान कांग्रेस ने सरकार के सामने पेश किया। कार्यक्रम को अपनाये जाने की उक्त कार्रवाई अथवा प्रक्रिया, ज. ज. ग. में, लोकतन्त्र का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करती है।

ऊपरोक्त त्रिदिवसीय किसान अधिवेशन के सामने मुख्य विषय था सहकारिता को अधिकाधिक योग्य बनाना और इस प्रकार कृषि उत्पादन को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाना। आर्थिक दृष्टि से संपन्न सहकारी समितियां अन्य गरीब समितियों को किस प्रकार सहायता प्रदान करें—इस प्रश्न पर भी सोच विचार हुआ। इस प्रसंग में इस तथ्य की घोषणा की गई कि अधिक विकसित तथा समृद्ध सहकारी खेतों के एक हज़ार किसान, विशेषज्ञ तथा अधिकारी कम विकसित और कम संपन्न सहकारी खेतों में काम करने गये हैं।

कांग्रेस में, ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्लिब्रख्त तथा अन्य ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ और विद्वान भी सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त २०० विदेशी मेहमान भी इसमें पधारे थे जिनमें समाजवादी देशों—सोवियत यूनियन, चेकोस्लोवाकिया, पौलैंड, रूमानिया आदि देशों के प्रतिनिधि मंडल उल्लेखनीय हैं। इन मेहमानों ने ज. ज. ग. के सहकारी उत्पादन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यकीय फार्मों में उत्पादन तथा कृषि संबंधी हमारे शोध-संस्थानों में गहरी दिलचस्पी दिखाई।

ज. ज. ग. में १९,००० से अधिक सहकारी उत्पादन संघ हैं। दो वर्ष पहले ज. ज. ग. की लोकसभा में एक रिपोर्ट पेश की गई जिसमें बताया गया था कि यहां के सभी किसान स्वइच्छा से सहकारी खेतों के सदस्य बन चुके थे। किसानों द्वारा सहकारी खेती को अपनाने का फैसला एकदम सही था, यह बाद की उत्पादन वृद्धि से साबित हुआ।

ज. ज. ग. में सहकारी उत्पादन पर आधारित प्रथम सहकारी फार्म सन् १९५२ में वजूद में आये। पिछले दस वर्षों से, इन सहकारी खेतों का उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। मांस का उत्पादन ७८७,००० टन से बढ़ कर १,११३,७०० टन हो गया; दूध का उत्पादन २,७५३,००० टन से बढ़ कर ४,९५१,६०० टन हो गया, और अंडों का उत्पादन ७६ करोड़ ६० लाख से बढ़ कर २ अरब, ३५ करोड़ हो गया। यह उत्पादन आंकड़े केवल सन् १९५२ से १९६१ तक के हैं।

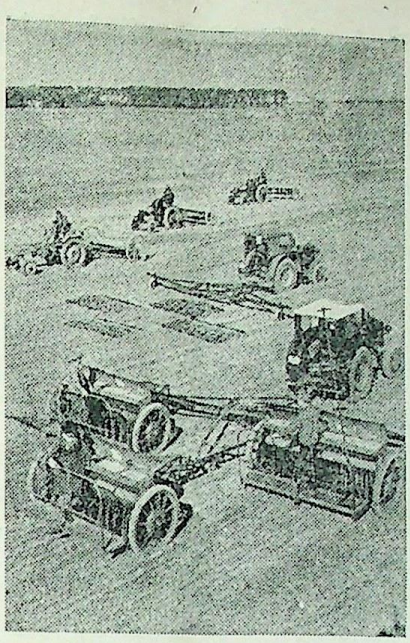

सहकारी खेतों के लिए आधुनिक मशीनें

सन् १९५० से हमारी समाजवादी सरकार ने ७३,००० ट्रेक्टर, ९,००० कुटाई मशीनें और ८,००० आलू की फसल काटने की मशीनें, कृषि कार्य के लिये उपलब्ध की हैं। इन मशीनों की कुल क़ीमत ६ अरब १० करोड़ मार्क है (·८८ मार्क = १ रुपया)।

जर्मन किसानों की उक्त सातवीं कांग्रेस में भाग लेने वाले कुल प्रतिनिधियों में से ४२.२ प्रतिशत अर्थात् ८२६ नारियां थीं।

यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि ज.ज.ग. में औरतें कृषि संबंधी योजनाओं में पर्याप्त रुचि रखती हैं। सहकारी खेतों में काम करने से वे अपना समानता का अधिकार व्यवहार में हासिल करती हैं। सहकारी आन्दोलन में नारियों ने बहुत अच्छा काम किया है। इसी के परिणाम स्वरूप कांग्रेस में यह प्रस्ताव भी पारित हुआ कि भविष्य में किसान नारियों को सहकारी समितियों तथा खेतों के संचालन में ज़िम्मेदार अधिकारियों के पदों पर नियुक्त करना चाहिये।

फ्राइबर्ग की खान अकादमी

वर्नर गेरहार्दत

जर्मन जनवादी गणपंत्र में स्थित फ्राइबर्ग की खान अकादमी सन् १९६५ में अपनी २०० वीं वर्षगांठ मनायेगी। इस अवधि में यह अकादमी, खान विज्ञान तथा तत्संबंधी प्रशिक्षण का एक विश्व-प्रसिद्ध केन्द्र बन चुकी है। इस अकादमी का जन्म हुआ सन् १७६५ में। यहां रूसी विद्वान लेमोनोसोव, वैज्ञानिक अलेक्ज़ेन्दर वोन हम्बोल्ट और फ्रेडरिख़ वोन हाडेर्नबर्ग (जो बाद में विख्यात कवि बना) जैसे विश्व विख्यात व्यक्तियों ने अध्ययन किया। कालान्तर में इस अकादमी में, खान-विज्ञान संबंधी नई और विशेष शाखायें जुड़ती गयीं और इस प्रकार यह अकादमी फैलती और विकसित होती रही।

युद्ध के बाद, सन् १९४९ में अकादमी पुनः चालू की गई। यहां पहले धनी पिताओं के पुत्र ही अध्ययन कर पाते थे। लेकिन अब अधिकांशतः मज़दूरों और किसानों के लड़के, लड़कियां भी यहां प्रशिक्षित होते हैं। खान अकादमी में अध्ययन करने के लिये, तरुण खान मज़दूरों को तीन वर्षों के प्रशिक्षण द्वारा तैयार किया जाता है।

फ्राइबर्ग अकादमी में, पिछले चन्द साल में, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की संख्या काफी बढ़ गई और आज इनकी संख्या युद्ध-पूर्व संख्या से कहीं अधिक है। सन् १७६१ में साढ़े तीन हज़ार से अधिक विद्यार्थी अकादमी में ट्रेनिंग ले रहे थे। इन विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये ५७ प्रोफ़ेसर तथा प्राध्यापक, २४७ सीनियर तथा वैज्ञानिक सहायक, १२७ रिसर्च असिस्टेंट और ६२ असिस्टेंट प्राध्यापक नियुक्त हुये हैं। इसलिये

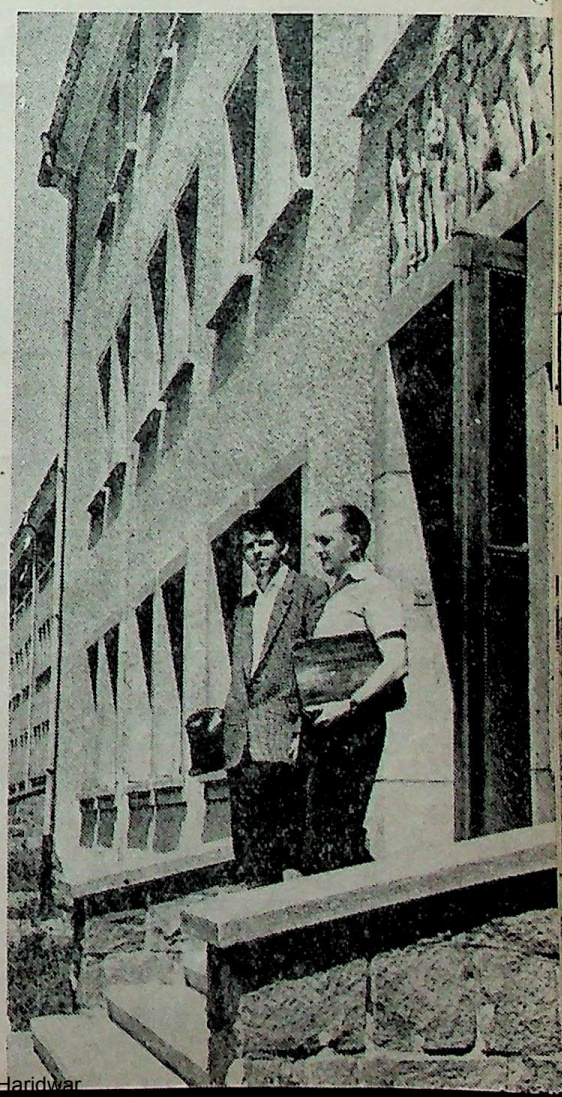

फ्राइबर्ग खान अकादमी के छात्र आधुनिक ढंग के छात्रावासों में रहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण का स्तर काफी ऊंचा है। सन् १९४९ से लेकर आज तक, ज.ज.ग. की जनवादी सरकार ने, खान अकादमी के विकास के लिये १९ करोड़, २० लाख मार्क की धनराशी उपलब्ध की है, इसके अलावा, अकादमी की इमारतों की तामीर के लिये ५ करोड़ मार्क की अतिरिक्त रकम अलग से दी गई है। सन् १९५९ तक, अकादमी की ६ बड़ी इमारतें, ४ बड़े लेक्चर हाल, आधुनिक सुविधाओं से युक्त १० छात्रावास तथा अन्य इमारतें बनकर तैयार हुई हैं।

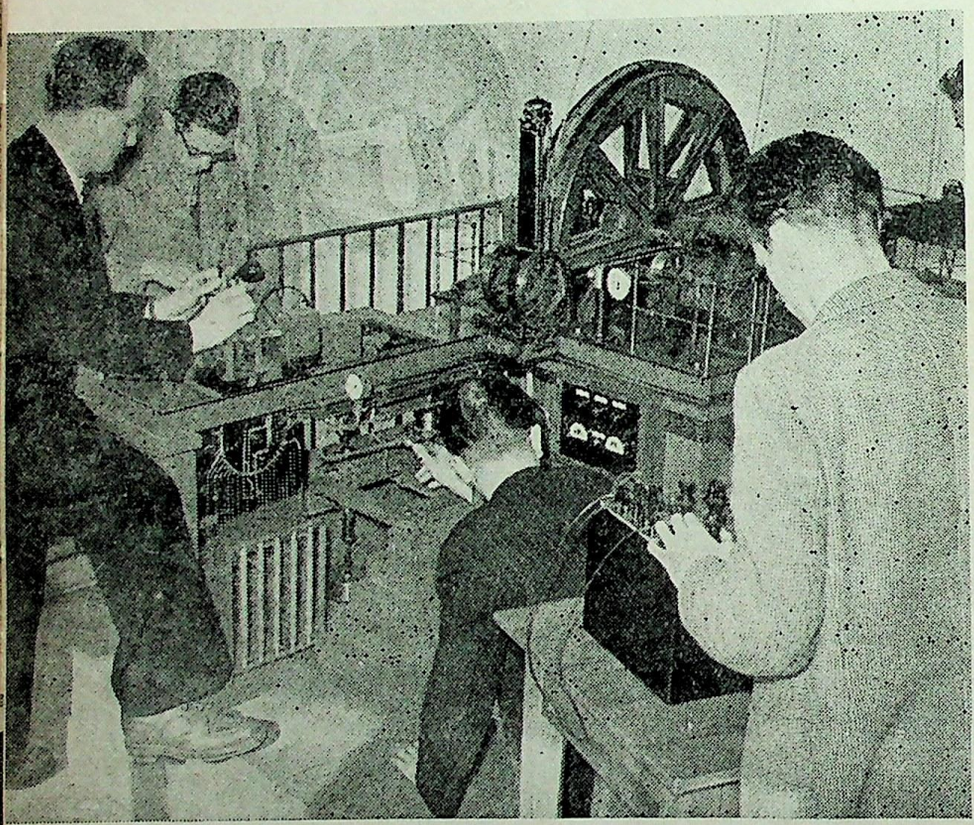

शिक्षार्थी मशीन के एक नमूने पर काम कर रहे हैं

अकादमी की ७ इमारतें तथा प्रयोगशालायें आजकल बन रही हैं।

इस समय अकादमी के कई निकाय है: गणित निकाय, खनिज तथा इस्पात निकाय और इंजीनियरी अर्थशास्त्र निकाय। इन निकायों के अतिरिक्त अकादमी के अनेकों संस्थान हैं जो लगातार अनुसन्धान, प्रशिक्षण तथा प्रकाशन आदि में संलग्न रहते हैं।

खान इंजीनियरों का प्रशिक्षण कैसे होता है? माध्यमिक स्कूल की अन्तिम परीक्षा पास करने के बाद, खान इंजीनियरी सीखने वाले विद्यार्थी के लिये, किसी खान में एक साल तक काम करना अनिवार्य है, क्योंकि ट्रेनिंग लेते समय खान का व्यवहारिक ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रशिक्षण के पहले तथा दूसरे वर्षों में खान इंजीनियरी गणित, रेखागणित, तकनीकी मेकेनिक्स, भौतिकी, रसायन-शास्त्र, रसायनिक टेकनालोजी, भूगर्भशास्त्र, साधारण तथा विशेष खनिज विज्ञान, मशीनों के तत्व और तकनीकी विज्ञान पढ़ाये जाते हैं। प्रशिक्षण के तीसरे, चौथे तथा पांचवे वर्षों में, उक्त विषयों का ही विशेष और गहरा अध्ययन कराया जाता है। प्रथम दो वर्षों के प्रशिक्षण के बाद, शिक्षार्थी को हर साल छः हफ्तों के लिये ज.ज.ग. की विभिन्न खानों में व्यावहारिक-ज्ञान के लिये जाना और काम करना पड़ता है। पांच वर्षों के अध्ययन के बाद विद्यार्थी उपाधि-प्राप्त खान इंजीनियर बन जाते हैं और ज.ज.ग. की औद्योगिक तथा आर्थिक प्रगति में हाथ बटाते हैं। प्रत्येक खान इंजीनियर का वेतन ८७० या ९०० मार्क से शुरू होता है और फिर ज़िम्मेदारियों के साथ बढ़ता जाता है।

खान इंजीनियरी का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षार्थी फ्राइबर्ग खान अकादमी तथा अन्य खान इंजीनियरिंग स्कूलों में कैसे जीवन यापन करते हैं? सभी विद्यार्थी बहुत आरामदेह छात्रावासों में रहते हैं जहां एक कमरे का मासिक किराया केवल १० मार्क देना होता है। इस किराये में बिजली, पानी तथा बिस्तर भी सम्मिलित है। एक समय के खाने पर ८५ फेनिक (१०० फेनिक = १ मार्क, अर्थात् लगभग ११ आने) खर्च होते हैं। अधिकांश विद्यार्थियों को सरकार, १३० से १८० मार्क तक की छात्रवृत्ति देती है।

खान अकादमी में, शिक्षार्थियों के मनोरंजन का सामान भी काफी है। मनोरंजन क्लब में नाच, गाना, नाटक, संगीत आदि का पूरा पूरा प्रबन्ध है, और क्रीड़ा-क्लब में शतरंज, वालीबाल, पिंगपांग तथा दर्जनों खेलों की व्यवस्था है। अकादमी हर साल, खेलकूद का वार्षिक समारोह आयोजित करती है। ज.ज.ग. के महत्वपूर्ण तथा सुन्दर स्थानों का भ्रमण भी किया जाता है।

फ्राइबर्ग खान अकादमी मे अनेक विदेशी शिक्षार्थी भी प्रशिक्षण लेते हैं। इनमें से कई खान विज्ञान में अनुसंधान कर रहे हैं। १६ विदेशी शोधार्थी इस विज्ञान में पी. एच. डी. की उपाधि लेने की तैयारी कर रहे हैं जिनमें ७ भारतवासी हैं। मैंने २६ वर्षीय भारतीय शोधार्थी श्री रामकृष्ण परमहंस—जो आन्ध्र प्रदेश के विजयनगरम ज़िले के हैं—से बातचीत की। वह अपनी ट्रेनिंग तथा अनुसन्धान से काफ़ी सन्तुष्ट हैं। अपने जर्मन प्रोफेसरों तथा प्राध्यापकों से उनके बहुत अच्छे संबंध हैं। भारत लौटने पर श्री परमहंस, अपने जर्मन प्रोफेसरों तथा मित्रों और खान अकादमी से अपना रिश्ता हर क़ीमत पर बनाये रखेंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि फ्राइबर्ग खान अकादमी न केवल खान इंजीनियर ही तैयार करती है बल्कि दो देशों की मैत्री को दृढ़ करने में भी सहायता पहुंचाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की खनिज संपदा

गैरहार्ड एच. केग्ल

जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत के खनिजों की काफ़ी साख है। इसी प्रकार, भारत के विशेषज्ञों की दृष्टि में ज.ज.ग. की मशीनें प्रशंसा की वस्तु हैं। ज.ज.ग., भारत से कई धातुओं का आयात करता है और वहां के धातु-विशेषज्ञ भारतीय धातुओं के गुण तथा स्वभाव की काफ़ी तारीफ़ करते हैं। ज.ज.ग. भारत से जिन धातुओं का आयात करता है उनमें कच्चा लोहा, कच्चा मैंगनीज़, लोह विहीन बक्साइट तथा लारड़ाइट के अलावा अबरक सब से महत्वपूर्ण धातु है।

साधारण अबरक का आयात, ज.ज.ग. केवल भारत से ही करता है। अबरक, प्रायः भारत के दो स्थानों—मद्रास में गण्टूर से तथा बिहार से आता है, जहां यह धातु अनन्त मात्रा में मौजूद है। निर्यात करने से पहले भारत में इस धातु को शोधा जाता है और मोटी सिलों के रूप में तबदील किया जाता है।

ज.ज.ग. में अबरक का इस्तेमाल करने वाले तीन बड़े-बड़े कारखाने हैं। इनमें से दो कारखाने अबरक की ढीली परतों का उपयोग करते हैं। इंजन बनाने तथा बिजली इंजीनियरिंग का बर्लिन का 'हांस बाइमलर' नामक सरकारी कारखाना, इन परतों से विद्युत-संरोधक (इनसूलेटिंग) सामान तैयार करता है। ज.ज.ग. के विकसित बिजली उद्योग के हर क्षेत्र में इस सामान को अलग अलग वर्गों में छांटने का काम थूरिनजिया में स्थित सरकारी कारखाना पूरा करता है।

एक अन्य इनसूलेटिंग कारखाना अबरक की सिलों से ऐसा विद्युत-संरोधक सामान तैयार करता है जो रेडियो तथा टेलिविजन इंजीनियरिंग में खास तौर से इस्तेमाल होता है। इसके अतिरिक्त इस्पात उद्योग में भी अबरक की सिलों का काफी प्रयोग होता है। ज.ज.ग. ऐसे सभी सामान का निर्यात करता है जिसमें अबरक का इस्तेमाल होता है।

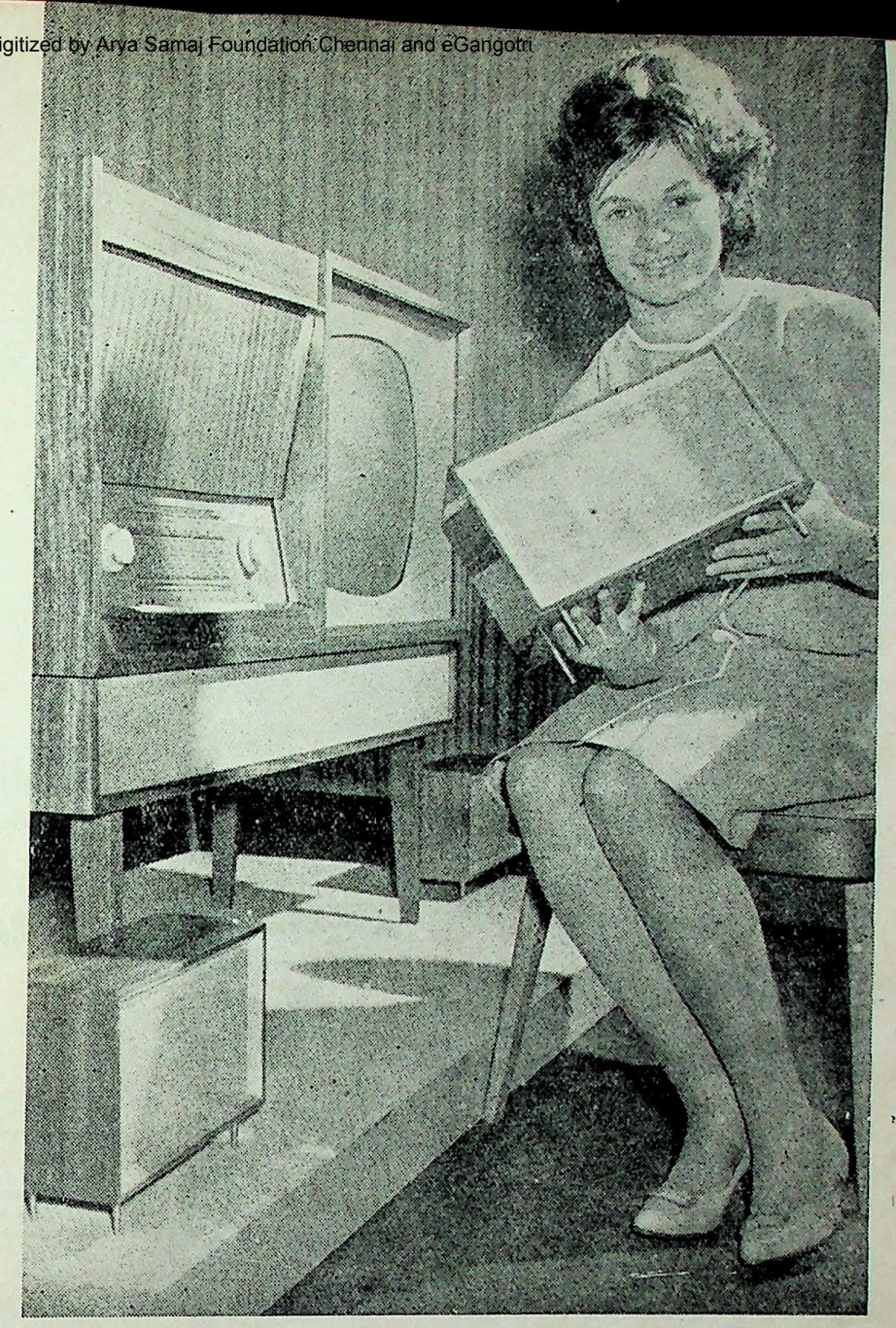

ज.ज.ग. में निर्मित एक अत्याधुनिक रेडियो-टेलिविज़न सेट। अबरक इसका एक महत्वपूर्ण तत्व है।

भारत में कच्चे धातुओं के अक्षय भण्डार मौजूद हैं जिनमें शुद्धता की मात्रा का अंश बहुत है। इसलिये भारत के कच्चे धातुओं और विशेषकर कच्चा मैंगनीज़, ज. ज. ग. काफी मात्रा में खरीद लेता है। भारत के कच्चे मैंगनीज़ से लिपेनडोर्फ़ का सरकारी कारखाना उमदा इस्पात तैयार करता है जो बाद में ज.ज.ग. के, मशीनें बनाने वाले विश्वप्रसिद्ध कारखानों को विभिन्न सामान के उत्पादन के लिये उपलब्ध किया जाता है। भारत का कच्चा लोहा, ज.ज.ग. के सम्पूर्ण इस्पात तथा लोहा उद्योग में इस्तेमाल होता हैं।

उल्लिखित तथ्य इस बात का प्रमाण हैं कि भारत और ज.ज.ग. के बीच आर्थिक तथा व्यापारिक सहयोग दोनों देशों के लिये बहुत हितकर है और दिन प्रति दिन बढ़ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया यह खबर सुनकर आश्चर्यचकित रह गई कि एक जर्मन वैज्ञानिक डा. राबर्ट कोख ने क्षयरोग के कीटाणुओं का पता लगाया है। डा. कोख का, अनुसन्धान-जीवन जर्मनी के एक क़स्बे वोल्सटाइन से आरम्भ हुआ जहां वह डाक्टर थे! आपका जन्म दिसम्बर, सन् १८४३ में और देहान्त १९१० में हुआ।

क्षयरोग के कीटाणुओं की खोज के बाद डा. कोख ने सन् १८८३ में कलकत्ता में कालरा के कीटाणुओं का पता लगाया। इटली तथा हिन्देशिया में उन्होंने मलेरिया रोग पर खोज की। इस प्रकार अपने सतत् अनुसन्धान के द्वारा डा. कोख अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिक बन गये।

डा. राबर्ट कोख की इन भव्य तथा मानव-सेवी परंपराओं को जर्मन जनवादी गणतंत्र में वैज्ञानिक अनुसन्धान द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। क्षयरोग को समूल नष्ट करने के लिये यहां निरन्तर एक अभियान चलाया जा रहा है।

क्षयरोग के सफल उपचार के लिये, आइ. एन. एच. जैसी दवाइयां हर जगह मिलती हैं। एक्स-रे के व्यापक प्रयोग द्वारा प्रारभं में ही क्षयरोग का पता लग जाता है और उसको समाप्त करने में कठिनाई नहीं होती। सन् १९६१ में ज.ज.ग. के १ करोड़ और १० लाख

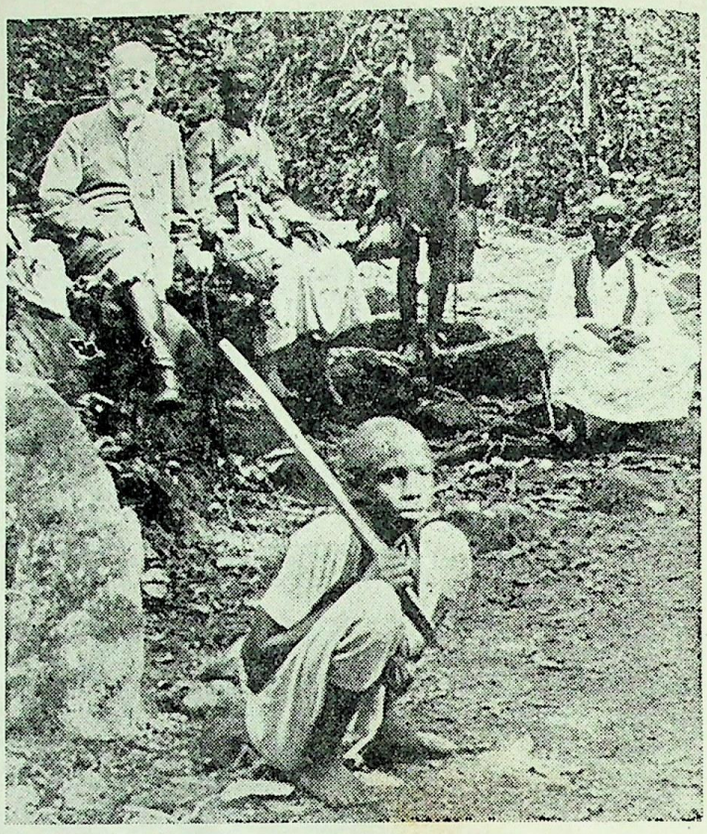

डा. कोख अफ्रीका के बुकोवा नामक स्थान के निवासियों के साथ

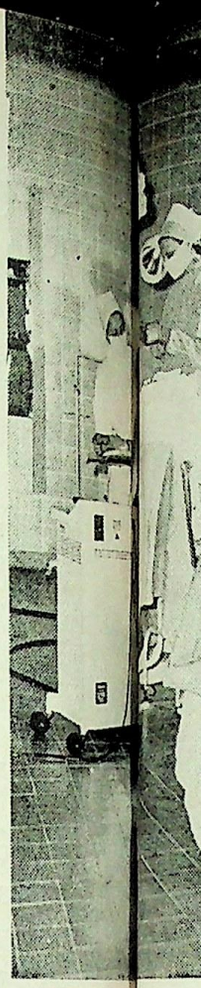

अत्याधुनिक

ज. ज. ग. में

क्षयरोग उन्मूलन

व्यक्तियों का मुफ़्त एक्स-रे परीक्षण हुआ। १ जनवरी सन् १९६२ के दिन ज.ज.ग. में क्षयरोग के उन्मूलन के लिये एक नया क़ानून पास किया गया। इसके अनुसार यहां के प्रत्येक नागरिक के लिये, क्षयरोग का टीका लगाना तथा एक्स-रे की जांच करवाना अनिवार्य हो गया।

क्षयरोग को जड़ से उखाड़ने के लिये, उल्लिखित उपायों तथा उपचार के अतिरिक्त क्षयरोगियों को स्वस्थ बनाने के लिये भी कई क़दम उठाये गये हैं। इस सिलसिले में, थूरिनजन जंगल में, बाड-बेरका नामक स्थान पर क्षयरोगियों का अस्पताल उल्लेखनीय है।

इस अस्पताल या आरोग्य-आश्रम में ११०० क्षयरोगी हैं जिनकी देख रेख के

यूरोप के सबसे अच्छे आश्रमों में से एक : बाड-बरका आरोग्य-आश्रम का मुख्य द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

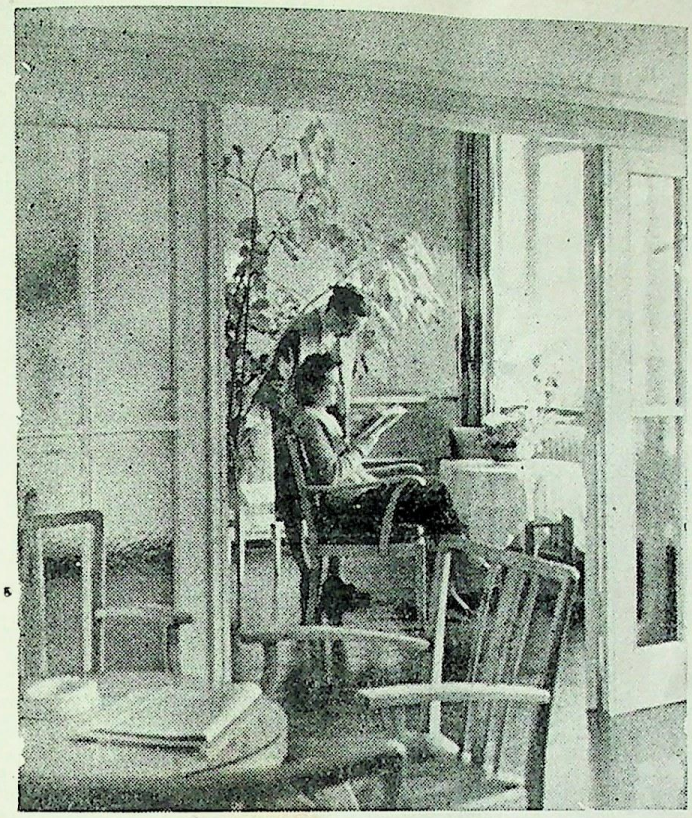

रोगियों के हर वार्ड के साथ विश्राम कक्ष जुड़े हुये हैं

मानवीय अभियान

लिये २५ डाक्टर, ३०५ नर्सें तथा कम्पौण्डर, ४ मेडिकल निरीक्षक और एक मेडिकल निदेशक है। रोगियों की सेवा के लिये डाक्टरी विज्ञान के अत्याधुनिक साधन उपलब्ध किये गये हैं। प्रत्येक रोगी को औसतन १६० दिन यहां रहना पड़ता है और उसके आमोदप्रमोद के लिये रेडियो, पुस्तकालय तथा मनोरंजन के अन्य साधन वर्तमान हैं। हर रोगी को सरकार रोज़ाना २५ मार्क की रक़म देती है—अर्थात् प्रत्येक रोगी पर १६० दिन में, ४००० मार्क की रक़म सरकार खर्च करती है।

स्वस्थ होने पर किसी भी रोगी को बेरोज़गारी का सामना नहीं करना पड़ता, क्योंकि उसकी नौकरी कोई छीन नहीं सकता। आरोग्य-आश्रम में रहने के समय में रोगियों को शार्टहैंड, टाइप तथा विदेशी भाषायें सिखाने का पूरा प्रबन्ध किया गया है ताकि, अपने स्वास्थ्य के लिए, वह नीरोग होकर कोई हल्का-फुल्का काम करना चाहें तो कर सकें। इस शिक्षण की व्यवस्था सरकार के ख़र्च पर विश्वविद्यालय करते हैं। परीक्षायें भी ली जाती हैं।

इस मानवघाती रोग के उन्मूलन के लिये ज.ज.ग. की सरकार ने सन् १९६० में २१ करोड़ और ४५ लाख मार्क की धनराशि खर्च की। इस अभियान का परिणाम यह निकला कि सन् १९५० में क्षयरोगियों की संख्या ४८.३ प्रति हज़ार थी जो घटकर सन् १९६० में १३.१ प्रति हज़ार पर पहुंची।

क्षयरोग के उन्मूलन तथा जनता के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये ज. ज. ग. का उल्लिखित अभियान, मानव-सेवी विज्ञान तथा डा. रार्बट कोख द्वारा प्रतिपादित मानवीय परंपराओं के लिये एक योग्य श्रद्धांजलि है। डा. कोख के जन्म दिन पर (१० दिसम्बर को) उनकी पुण्य स्मृति के उपलक्ष में हर साल, योग्य तथा मानव प्रेमी डाक्टरों को "जनता सेवी डाक्टर" की उपाधि प्रदान की जाती है।

स्वस्थ रोगी शार्टहैंड तथा टाइप सीख रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैले : एक झांकी

जर्मन जनवादी गणतन्त्र में, बैले— अर्थात् संगीत-नृत्य का एक ऊंचा स्थान है। इस कला में निपुण होने के लिये काफ़ी प्रयास और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

राज्यकीय बैले स्कूल में आजकल १३८ छात्र, जिनमें से अधिकांश मज़दूरों तथा किसानों के बच्चे हैं, संगीत-नृत्य की कठिन किन्तु सुन्दर कला में प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण की अवधि पांच साल की है। दाखिले पर, विद्यार्थी की आयु १४ या १५ वर्ष की होनी चाहिये। हर साल, बैले स्कूल में प्रवेश पाने के लिये ४०० प्रार्थना-पत्र प्राप्त होते हैं जिनमें से केवल ३० या ४० उम्मीदवार दाखिल किये जाते हैं। ९० प्रतिशत विद्यार्थियों को सरकार छात्रवृत्ति देती है अन्य कालिजों तथा स्कूलों के छात्रों की तरह।

नृत्य की शिक्षा में शस्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य के अतिरिक्त नृत्य के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन भी शामिल है। इसके अलावा, शिक्षार्थियों को दो विदेशी भाषायें, रुसी तथा फ्रंच पढ़ाई जाती है। सौन्दर्य शस्त्र, शरीर विज्ञान और नृत्य, संगीत अभिनय आदि का इतिहास का विशेष अध्ययन कराया जाता है। भाव-मुद्राओं के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता है।

राज्यकीय बैले स्कूल तथा जर्मन स्टेट आपेरा (भवन) का आपस में गहरा संबंध और सहयोग है। स्टेट आपेरा में विद्यार्थी अपनी कला का प्रदर्शन करके आत्म-विश्वास प्राप्त करते हैं और दर्शकों के सामने आते हैं। राज्यकीय बैले के इस स्कूल से उच्च कोटि के अनेक बैले कलाकारों का उद्भव निश्चित है।

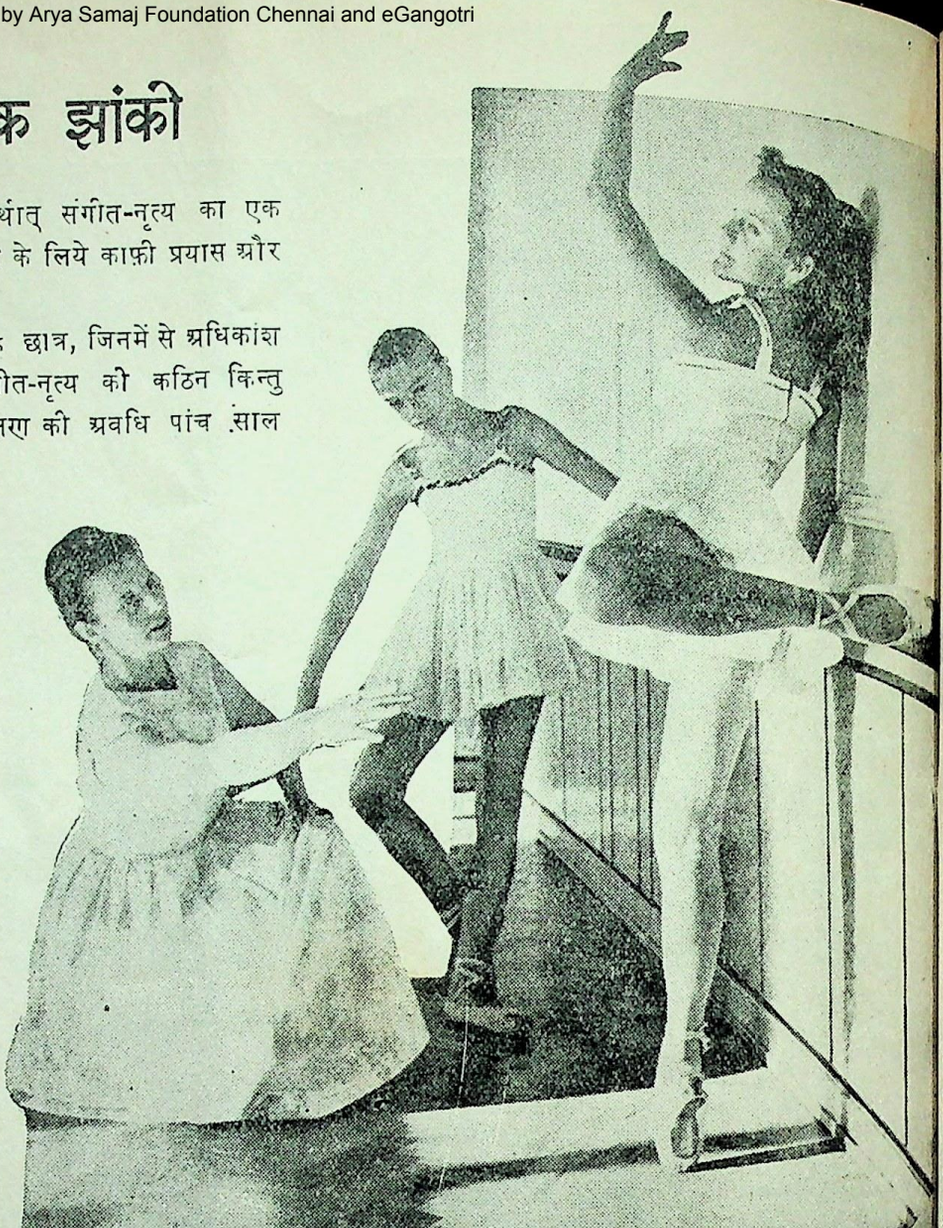

बैले सीखने वाले ये शिशु एक दिन पूर्ण कलाकार के रूप में निखर आयेंगे

शिक्षार्थी डोरिस न्यूपेल तथा लोथर हान्फ "शहज़ादी और सात शूरवीर" नामक बैले में

श्रीमती हागेन अपने दो शिष्यों को मुद्राओं का सही ज्ञान दे रही हैं

Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमबोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन में

हिन्दी भाषा का अध्ययन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में, भारतीय प्राच्य विद्या संबंधी (इनडालोजी) धारणा, पश्चिम के पूंजीवादी देशों की धारणा से, भिन्न है। यहां भारतवर्ष संबंधी अध्ययन केवल भाषा-विज्ञान तक ही सीमित नहीं। प्राच्य विद्या क्षेत्र में यहां ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक तथा प्राणिशास्त्र संबंधी विषय भी पढ़ाये जाते हैं। लेकिन इन विषयों का अध्ययन अनिवार्यतः भारतीय भाशाओं के अध्ययन से जुड़ा हुआ है।

ज.ज.ग. के शोधार्थी तथा विद्यार्थी केवल भारतवर्ष के पुरातत्व में ही रुचि नहीं रखते, बल्कि वे भारत के प्राचीन तथा अर्वाचीन राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास में भी काफ़ी रुचि रखते हैं। लेकिन अपनी इस रुचि तथा जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए उनके लिए भारतीय भाषाओं का, और विशेष कर भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन करना, आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद, जब बर्लिन के हमबोल्ट विश्वविद्यालय में, भारतीय प्राच्य विद्या संस्थान (इन्सटिच्यूट आफ इनडालोजी) की स्थापना हुई तो सहसा हिन्दी भाषा का महत्व सामने आया। हिन्दी का अध्ययन आरंभ करने के लिये उक्त संस्थान को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि सन् १९४५ से पहले, जर्मनी में हिन्दी भाषा का अध्ययन होता ही नहीं था। इसलिये न तो योग्य हिन्दी शिक्षक और न ही अच्छी हिन्दी पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध थीं।

हमबोल्ट विश्वविद्यालय के उक्त संस्थान में पहली बार, सन् १९५५ में, हिन्दी का पठन-पाठन शुरू हुआ, जबकि एक भारतीय डाक्टर, श्री वैद्य ने यहां हिन्दी पढ़ाना स्वीकार किया। सन् १९५७ में डा० एम. अनसारी प्राच्य विद्या संस्थान में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुये। अगले चन्द वर्षों में श्रीमती अनसारी ने इस संस्थान से संस्कृत तथा हिन्दी की उपाधियां प्राप्त कीं और शोधार्थी तथा हिन्दी के सहायक-रीडर के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। उस समय इस संस्थान में १५ विद्यार्थी हिन्दी भाषा का अध्ययन कर रहे थे।

सन् १९५८-५९ में, संस्थान के हिन्दी प्राध्यापकों की सूची में, शांतिनिकेतन के पंडित शास्त्री सम्मिलित हुये। वह रीडर नियुक्त हुये। भारत लौटने के बाद, श्रीमती त्रिपाठी ने उनका स्थान पूरा किया और वह दो साल तक (सन् १९५९-६० में) यहां हिन्दी पढ़ाती रहीं। आजकल, प्राच्य विद्या संस्थान में, १८ विद्यार्थी हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं। उनके शिक्षक हैं डा० तथा श्रीमती अनसारी, श्री एस. के. सिन्हा और कुमारी वेस्टपाल।

जैसा ऊपर कहा गया है कि प्रारंभ में इस संस्थान को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। योग्य पाठ्य पुस्तकें

(शेष पृष्ठ १६ पर)

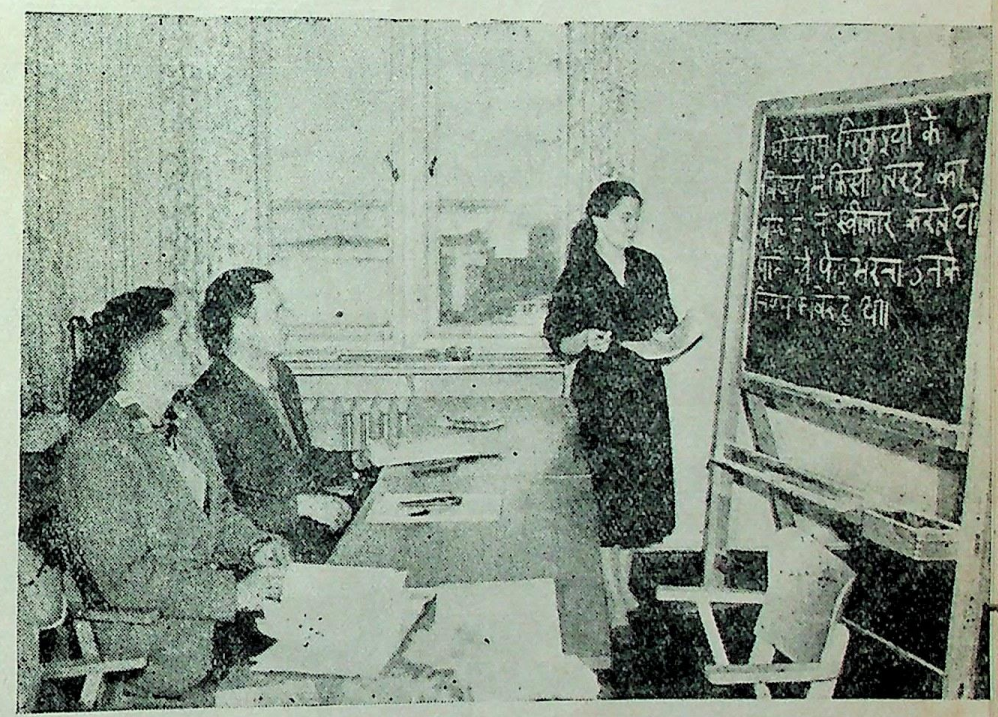

श्रीमती अनसारी हिन्दी पढ़ा रही हैं। आपने प्रेमचन्द के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' का जर्मन भाषा में अनुवाद किया है।

भारतीय प्राच्य विद्या संस्थान में ज.ज.ग. के विद्यार्थी विभिन्न भारतीय भाषाओं का अध्यन करते हैं।

CC-0. [illegible] Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प. बर्लिन पुलिस द्वारा

सीमान्त पर हत्या

२३ मई को, शाम के साढ़े पांच बजे, पश्चिम बर्लिन की हथियार-बंद पुलिस ने, ज.ज.ग. की सीमा-सुरक्षा पुलिस पर अचानक गोलियां बरसानी शुरू कीं। पीतर गोइरिंग नाम के एक सिपाही को गोली लगी और वह तुरन्त मर गया। दूसरा सिपाही कार्ल लाउमर बुरी तरह ज़ख्मी हुआ। ज. ज. ग. की सीमा-सुरक्षा पुलिस ने जवाब में एक भी गोली नहीं चलाई।

हत्यारों की गोली वर्षा तब शुरू हुई जब एक नामालूम व्यक्ति ज. ज. ग. की सीमा का ग़ैर कानूनी तौर से उल्लंघन कर रहा था। इस ग़ैर कानूनी हरकत से बाज़ रखने के लिये ज. ज. ग. की सीमा-सुरक्षा पुलिस ने उसको चेतावनी दी। उसी क्षण प. बर्लिन क्षेत्र से गोली वर्षा आरम्भ हुई और ज. ज. ग. के उक्त दो सिपाही गोलियों का निशाना बने। यहां इस तथ्य का उल्लेख करना अनुचित न होगा कि ज.ज.ग. की सीमा-सुरक्षा पुलिस को, पश्चिम बर्लिन की सीमाओं के अन्दर गोली न चलाने की कड़ी आज्ञा दी गई है ताकि कोई ऐसी दुर्घटना न हो जिससे तीसरे युद्ध का श्रीगणेश हो। इस बात का सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि प. बर्लिन की इस घोर उत्तेजना का प्रत्युत्तर गोलियों से ही दिया जाता तो स्थिति कितनी भयंकर हो जाती।

यह घटना एक बार फिर प. बर्लिन की ख़तरनाक स्थिति को प्रकट करती है। जब तक प. बर्लिन इस अस्थिर स्थिति में रहेगा तब तक तीसरे विश्वयुद्ध का गंभीर ख़तरा दुनिया के सिर पर मण्डराता रहेगा। इस भयंकर स्थिति अर्थात् दुनिया को तबाही से बचाने का एक मात्र उपाय यही है कि प. बर्लिन को जल्द से जल्द एक तटस्थ, असैनिक तथा आज़ाद नगर में तबदील किया जाये।

पीतर गोइरिंग मरा नहीं, बल्कि वह शांति की बलिवेदी पर शहीद हुआ। आज, ज.ज.ग. की सम्पूर्ण जनता, उसकी दुखियारी मां के साथ आंसू बहा रही है। इस बदक़िस्मत मां के पति को, दूसरे महा युद्ध में फ़ासिस्त आततायियों ने क़त्ल किया, और आज १७ वर्षों के बाद फिर उनही क्रूर फासिस्तों ने उसके लाडले की हत्या की। मां के इन पवित्र

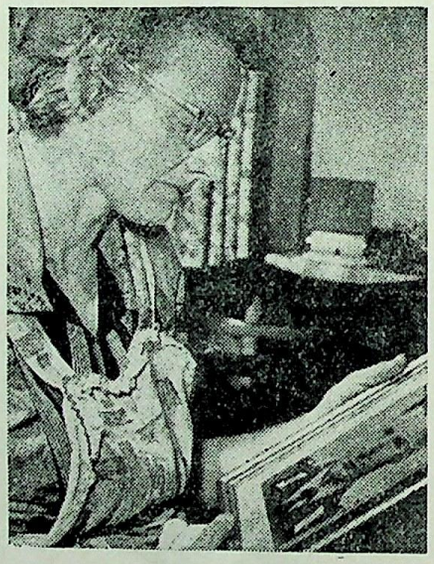

शोक संतप्त मां, अपने शहीद बेटे के चित्र को देख रही है

शब्दों में अथाह शोक के साथ, हत्यारों के प्रति घृणा और क्रोध झलकता है: "विश्वास नहीं होता मुझे कि मेरा बेटा मर गया है। युद्ध के कठिन दिनों में मैंने उसको पाल पोस कर बड़ा किया। मुझे उसपर गर्व था। मेरी अपार पीड़ा को केवल मांओं का हृदय ही महसूस कर सकता है। मेरे बेटे की हत्या दुनिया की आत्मा के लिये एक चिनौती है, हत्यारे राक्षसों के नग्न ताण्डव को रोकने की! मासूम बच्चों की हिफाज़त करना प्रत्येक मानव का पावन कर्तव्य है....."

(पृष्ठ ५ का शेष)

की भावना को आपने, 'पचास दिन' नामक कहानी में बहुत ही सुलझे तथा रोचक ढंग से अभिव्यक्त किया है। १२ कहानियों के 'खजूर बाग़ में दावत' नामक संग्रह की कहानियों का विषयवस्तु है—नया, जनवादी चीन। आपने जर्मनी के महान देशभक्त तथा शहीद 'थालमन्न' के जीवन चरित पर बनाई जाने वाली दो फिल्मों की पट्ट-कथा भी लिखी है।

'एक नया अध्याय' श्री विल्ली ब्रेडल का अत्याधुनिक उपन्यास है। इसमें दूसरे महा युद्ध में पीड़ित तथा ध्वस्त जर्मनी के नवनिर्माण, जनवादी शक्तियों का उदय तथा विकास और सोवियत सेना का सहयोग चित्रित हुआ है।

श्री विल्ली ब्रेडल, श्रमिक वर्ग में उत्पन्न हुये और इसी वर्ग के संघर्षों में तप कर एक विश्व-प्रसिद्ध लेखक के रूप में निखर आये। आपने जर्मन साहित्य में समाजवादी यथार्थवाद का प्रतिपादन किया।

(पृष्ठ १५ का शेष)

न होने के अतिरिक्त हिन्दी व्याकरण की पुस्तकों का नितांत अभाव था। हिन्दी अख़बार तथा पत्र, जो विद्यार्थियों के लिये अच्छी पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करते हैं, बिलकुल उपलब्ध नहीं थे। इसके अतिरिक्त, अध्यापकों का अभाव था। इन कठिनाइयों के बावजूद, संस्थान के, हिन्दी अध्ययन - अध्यापन संबंधी उक्त प्रयास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि से कम नहीं।

हिन्दी भाषा के अध्ययन विषयक इन लघु किन्तु महत्वपूर्ण प्रयासों का परिणाम यह निकला है कि संस्थान ने हिन्दी पढ़ने वाले जर्मन विद्यार्थियों को इस योग्य बना दिया है कि वे, ऐसे हिन्दी ग्रन्थ और कृतियां पढ़ सकते हैं जो भारतवर्ष संबंधी उनके अनुसंधान के लिये आवश्यक तथा अनिवार्य हैं।

हमबोल्ट विश्वविद्यालय का उक्त भारतीय प्राच्य विद्या संस्थान, हिन्दी भाषा का गंभीर अध्ययन करने का एक वृहद् कार्यक्रम निश्चित कर रहा है। इस समय यह संस्थान हिन्दी की योग्य पाठ्य पुस्तकें तथा शिक्षक उपलब्ध करने में जुटा हुआ है। अपने इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयास में, भारतीय मित्रों तथा सहयोगियों की सद्भावना और सहायता, इस प्रयास का एक माहान संबल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH—हम जर्मन सीखते हैं।

Lektion XVIII—पाठ अठारह

Ein Tag im Herder-Institut—हर्डर संस्थान में एक दिन

Heute haben wir die Absicht, das Herder-Institut in Leipzig zu besuchen. Es befindet sich in einer ruhigen Strasse, die im Zentrum der Stadt liegt. Damit die ausländischen Studenten an den Universitäten der DDR später ohne Schwierigkeiten studieren können, müssen sie zuerst am Herder-Institut die deutsche Sprache erlernen. Um das Leben der Studenten schon am Morgen beobachten zu können, müssen wir in ein Studentenheim gehen. Es befindet sich neben dem Institut. Zwischen 7 Uhr und 8 Uhr herrscht in der Mensa ein reges Leben. Die Studenten frühstücken. Der Beobachter kann fast alle Sprachen der Erde hören. Pünktlich um 8 Uhr beginnt der Unterricht im Institut. In Gruppen zu 15 Studenten führt man den Sprachunterricht durch. Damit sich die Studenten nicht nur in ihrer Muttersprache unterhalten, hat man Studenten mit verschiedenen Sprachen in einer Gruppe zusammengefasst. Täglich haben sie 5 bis 6 Studen Unterricht. Die Freundschaft untereinander ist das Hauptprinzip, nach dem die Studenten zusammen leben und arbeiten. Oft diskutieren sie zusammen über die politische und ökonomische Situation in ihren Ländern, um sich gegenseitig zu informieren, was für Probleme jedes Land hat. Damit die Studenten auch das Leben in der DDR besser kennenlernen können, machen sie oft mit ihren Dozenten Exkursionen in Betriebe und Städte. Hier haben sie die Möglichkeit, sich in Gesprächen mit deutschen

आज हम लइपज़िक के हर्डर संस्थान को देखने का इरादा रखते हैं। यह (संस्थान) नगर के बीच में एक शांत सड़क पर स्थित है। विदेशी विद्यार्थी, ज.ज.ग. के विश्वविद्यालयों में बिना किसी कठिनाई के अध्ययन कर सकें, इसके लिये उनको पहले हर्डर संस्थान में जर्मन भाषा सीखनी पड़ती है। सुबह का समय, विद्यार्थी कैसे बिताते हैं यह देखने के लिये हमें छात्रावास में जाना पड़ेगा। यह संस्थान के बगल में ही स्थित है। प्रातः ७ और ८ बजे के बीच, खाना खाने के हाल में बड़ी चहल-पहल रहती है। इस समय विद्यार्थी नाश्ता लेते हैं। दुनियां की लगभग सभी भाषायें सुनाई देती हैं (हाल में)। संस्थान में ठीक ८ बजे पढ़ाई शुरु होती है। जर्मन भाषा के पाठ, पन्द्रह-पन्द्रह विद्यार्थियों के समूह को, दिये जाते हैं। विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों में एक साथ रखा जाता है, ताकि वे केवल अपनी मातृभाषा में ही न बोलते रहें। प्रतिदिन ५ या ६ पाठ पढ़ाये जाते हैं। आपस की मैत्री मुख्य सिद्धान्त है जिसके आधार पर विद्यार्थी एक साथ काम करते और रहते हैं। प्रायः वे अपने अपने देशों की राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति पर भी बातचीत करते हैं जिससे वे प्रत्येक देश की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के जीवन को ठीक से जानने के लिये, विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ प्रायः कारखाने और दूसरे शहर देखने के लिये जाते हैं। जर्मन जनता के संपर्क में आकर उसके जीवन तथा कार्य की जानकारी प्राप्त करने के यहां अनेक अवसर उपलब्ध हैं। इस संपर्क

कांगो के छात्र, जो हर्डर संस्थान में जर्मन भाषा सीखते है, रेडियो पर अपमे देश के बारे में ताज़ातरीं खबरें सुन रहें हैं।

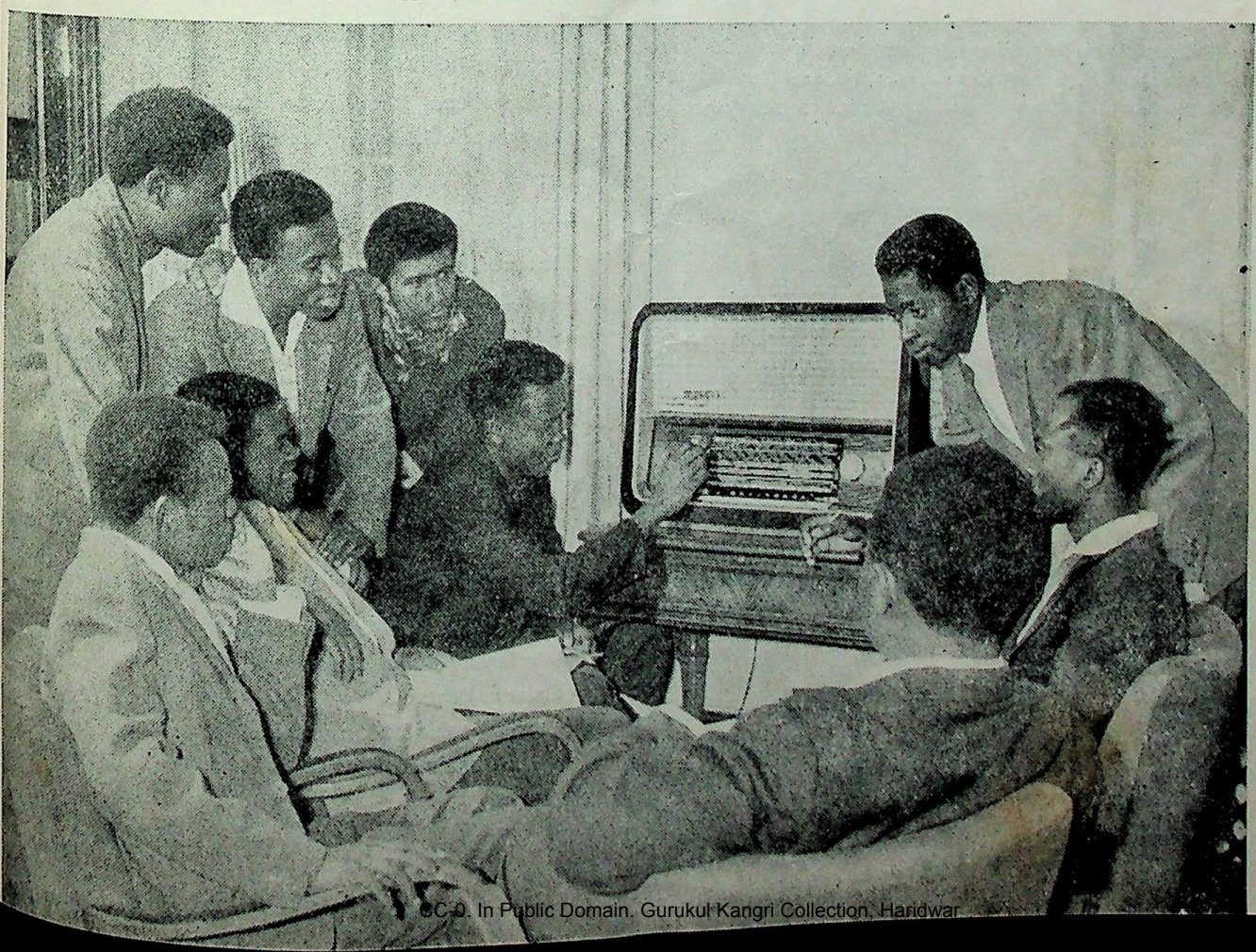

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Menschen über ihr Leben und ihre Arbeit zu informieren. Auf der anderen Seite sind es die deutschen Menschen, die durch diese Gespräche viel über das Leben der Menschen in anderen Ländern erfahren. Natürlich trifft man sich auch oft mit deutschen Studenten und spricht über das zukünftige Studium an den Universitäten und Hochschulen. Damit die ausländischen und auch deutsche Studenten ohne materielle Sorgen studieren können, stellt die Regierung der DDR Stipendien zur Verfügung. Ich frage einen Ausländer: "Wieviel Stipendium bekommen Sie monatlich?"

"Als Student bekomme ich 280,—Deutsche Mark im Monat. Ich wohne mit noch zwei anderen ausländischen Studenten in einem Studentenheim und bezahle monatlich 10-, Deutsche Mark Miete. Für mein Essen—Frühstück, Mittagessen und Abendbrot—habe ich monatlich 120, —Deutsche Mark zu bezahlen. Einen Teil meines Stipendiums spare ich, um mir Fachbücher oder später einen Fotoapparat kaufen zu können. So wie ich machen es viele ausländische Studenten. Selbstverständlich gehe ich auch ins Kino oder ins Theater, um das kulturelle Leben in der DDR kennenzulernen. Das Wichtigste für alle ausländischen Studenten ist, dass wir in der Deutschen Demokratischen Republik sehr viel lernen, damit wir nach der Rückkehr in unsere Heimatländer aktiv beim Aufbau der Industrie und des Bildungswesens helfen können."

व्याकरण

I. Der Finalsatz—अप्रधान या उपवाक्य

अप्रधान या उप-वाक्य, एक आधीन वाक्य है जो संयोजक **"damit"** अर्थात् "in order" (इसके लिये) से आरम्भ होता है; अथवा यह किसी **"Absicht"** अर्थात् इरादे को प्रकट करता है।

उदाहरण के लिये :

(क) Man hat die Studenten mit verschiedenen Sprachen in einer Gruppe zusammengefasst (Hauptsatz), **damit** sich die Studenten (sie) nicht nur in ihrer Muttersprache unterhalten können (Finalsatz).

नोट : अप्रधान या उप-वाक्य, मुख्य वाक्य के प्रारंभ या अंत में जोड़ा जा सकता है,

जैसे :

Damit die ausländischen und auch die deutschen Studenten ohne materielle Sorgen studieren können (अप्रधान वाक्य), stellt die Regierung der DDR Stipendien zur Verfügung (प्रधान वाक्य)

इन दो उदाहरणों में, प्रधान तथा उप-वाक्यों के कर्त्ता भिन्न हैं।
पहले में.....man=impersonal (प्रधान वाक्य),.....die Studenten (अप्रधान या उप-वाक्य).

दूसरे में.....die Regierung (अप्रधान वाक्य).....die ausländischen und deutschen Studenten (प्रधान वाक्य).

(ख) निम्न उदाहरणों में प्रधान वाक्य तथा उप-वाक्य के कर्त्ता समान हैं

जैसे :

Damit die ausländischen **Studenten** später ohne Schwierigkeiten studieren können (उप-वाक्य), müssen **sie** (die Studenten) zuerst am Herder-Institut die deutsche Sprache erlernen (प्रधान वाक्य).

Die ausländischen **Studenten** machen oft Exkursionen in Betriebe und Städte (प्रधान वाक्य), **damit sie** (die Studenten) auch das Leben in der DDR besser kennenlernen können (उप-वाक्य).

II. "um zu" वाली सामान्य क्रियाओं का प्रयोग :

"um zu" युक्त सामान्य क्रिया का इस्तेमाल तब होता है जब प्रधान तथा उपवाक्य के कर्त्ता समान हों। जिस वाक्य में सामान्य क्रिया का प्रयोग हो उसके प्रधान वाक्य में केवल एक कर्त्ता होता है।

उदाहरण के लिये :

उप-वाक्य : Damit **wir** (कर्त्ता) das Leben der Studenten schon am Morgen beobachten können (उप-वाक्य), müssen wir (कर्त्ता) in ein Studentenheim gehen (प्रधानवाक्य).

अथवा :

जैसे **"um zu"** युक्त सामान्य क्रियायें

Wir (कर्त्ता) müssen in ein Studentenheim gehen, um das Leben der Studenten schon am Morgen beobachten zu können.

नोट : आधीन वाक्य हमेशा **"um"** सामान्य क्रिया से आरम्भ होता है। **"zu"**, सामान्य क्रिया के पहले और वाक्य के अन्त पर आना चाहिये।

अप्रधान वाक्य : Die Studenten diskutieren oft zusammen über die politische und ökonomische Situation in ihren Ländern, damit sie (die Studenten) sich gegenseitig informieren.

अथवा :

Infinitikonstrukion mit **"um zu"** :

Die Studenten diskutieren oft zusammen über die politische und ökonomische Situation in ihren Ländern, **um** sich gegenseitig **zu** informieren.

१. "damit" का प्रयोग करके दो वाक्यों को जोड़ कर एक ही ऐसा वाक्य बनाइये कि उसमें प्रधान और अप्रधान वाक्य सम्मिलित हों।

जैसे : Ich sage die Vokabeln noch einmal.
Sie sprechen sie gut.

Ich sage die Vokabeln noch einmal, damit sie sie gut sprechen.

Wir besuchen die Arbeiter im Betrieb.
Wir lernen die Arbeit kennen.
Er lernt Deutsch.
Er kann in der DDR studieren.
Du zeigst mir die Technische Messe.

से जर्मन जनता भी अन्य देशों के जनजीवन की जानकारी प्राप्त करती है। (इन भ्रमनों में ये विद्यार्थी) प्रायः जर्मन विद्यार्थी से भी मिलते हैं और वे उनके साथ, वहां के विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों में अपनी भावी शिक्षा की बातें करते हैं। देशी और विदेशी विद्यार्थी आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त होकर अध्ययन कर सकें, इसके लिये ज.ज.ग. की सरकार उनको वज़ीफे देती है। मैंने एक विदेशी विद्यार्थी से पूछा: "तुम्हें कितना वज़ीफा मिलता है महीना?....." "मुझे हर मास २८० जर्मन मार्क मिलते हैं। मैं दो अन्य विदेशी छात्रों के साथ छात्रावास में रहता हूं और १० मार्क महीने का किराया देता हूँ। दो वक्त भोजन और नाश्ते के लिये १२० मार्क देता हूँ। वज़ीफे का कुछ हिस्सा तकनीकी किताबें या बाद में कैमरा ख़रीदने के लिये बचा लेता हूँ। कई विदेशी छात्र ऐसा ही करते हैं। ज.ज.ग. के सांस्कृतिक जीवन से परिचित होने के लिये मैं थियेटर या सिनेमा देखने जाता हूँ। हम विदेशी छात्रों के लिये सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि ज.ज.ग. में हम बहुत कुछ सीखते हैं और जब हम अपने देशों को लौटेंगे तो वहां हम उद्योग तथा शिक्षा व्यवस्था के निर्माण में सक्रिय सहयोग दे सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Ich kann die neuen Maschinen kennenlernen.
Herr Müller erklärt dem Ausländer das Theaterstück.
Er kann es sehen.
Wir sind schon um 5Uhr gegangen.
Herr Rahim ist pünktlich am Bahnhof.
Ich spreche mit dem Direktor.
Er kommt zu dem Vortrag.

२. "um...zu" को वाक्यों में जोड़ना ।

जैसे : Ich komme. Ich will mit der sprechen.
Ich komme, **um** mit dir **zu** sprechen. (without "wollen")
Die Ausländer fragen, Sie wollen alles erfahren.
Er fährt nach Weimar. Er will die Stadt kennenlernen.
Die ausländischen Studenten studieren am Herder-Institut.
Sie wollen die deutsche Sprache kennenlernen.
Wir fahren ins Gebirge. Wir wollen Schlitten fahren.
Ich gehe an die Strasse. Ich will die Radsportler sehen.
Du fragst nach dem Preis. Du willst den Mantel kaufen.
Herr Bose geht in das Kino. Er will den Film sehen.
Ich schreibe den Brief an den Geschäftsfreund.
Ich will von meinen Eindrücken auf der Messe erzählen.

("हर्डर संस्थान में एक दिन" पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिये :)

१. Welche Absicht haben wir ?
२. Wo befindet es sich ?
३. Warum müssen die ausländischen Studenten am Herder-Institut studieren ?
४. Was kann man in der Mensa beobachten und hören ?
५. Wie findet der Unterticht statt ?
६. Worüber diskutieren die Studenten oft ?
७. Welche Möglichkeiten haben sie, um das Leben in der DDR kennenzulernen ?
८. Wie unterstützt die Regierung der DDR die Studenten ?
९. Was erzählt ein ausländischer Student ?
१०. Was ist das Wichtigste für die ausländischen Studenten ?

इस पाठ में आये शब्द

ruhig	शांत
damit (Konjunktion)	के लिये
später	बाद में
ohne (Präposition)	बिना, बगैर
die Schwierigkeit,-en	कठिनाई
der Morgen,-	प्रातः
beobachten	देखना, निरीक्षण करना
das Studentenheim,-e	छात्रावास
herrschen	यहां : वहां है
die Mensa, die Mensen	खाना खाने का हाल
rege	व्यस्त
frühstücken	नाश्ता करना
der Beobachter,-	दर्शक, निरीक्षक
pünktlich	ठीक समय पर
der Unterricht	पाठ
die Gruppe,-en	समूह
durchführen-führte durch-durchgeführt	काम करना, पढ़ना
der Sprachunterricht	भाषा के पाठ
die Muttersprache,-en	मातृ भाषा
zusammenfassen-fasste zusammen-zusammengefasst	एक साथ रखना
die Stunde,-n	घण्टा
untereinander	एक दूसरे के बीच में
das Hauptprinzip,-ien	मुख्य सिद्धान्त
arbeiten	काम करना
diskutieren	बात-चीत करना, बहस करना
politisch	राजनीतिक
die Situation,-en	स्थिति
gegenseitig	आपस का
besser	अधिक अच्छा
der Dozent,-en	विश्वविद्यालय का प्राध्यापक
die Seite,-n	तरफ, ओर
erfahren-erfuhr-erfahren	सीखना
zukünftig	भविष्य
die Hochschule,-n	विश्वविद्यालय
materiell	आर्थिक, सामग्री
das Stipendium, die Stipendien	वजीफा
als	जैसे
das Essen	भोजन,
das Frühstück	नाश्ता
das Mittagessen	सुबह का खाना, लंच
zahlen	देना
der Teil,-e	भाग, हिस्सा
sparen	बचत करना
das Fachbuch,"-er	तकनीकी किताब
selbstverständlich	बेशक
das Kino,-s	सिनेमा
kulturell	सांस्कृतिक
das Wichtigste	अत्यन्त महत्वपूर्ण
das Heimatland	स्वदेश
die Rückkehr	लौटना
aktiv	सक्रिय
die Industrie	उद्योग
das Bildungswesen	शिक्षा व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की ख़बरें

ज.ज.ग. का अस्तित्व : एक ठोस वास्तविकता :

हाल ही में फ्रांस के प्रसिद्ध पत्र 'कम्बैट' के विशेष संवाददाता जॉ बैनो ज.ज.ग. गये थे। 'कम्बैट' में उनका एक लेख छपा जिसमें उन्होंने लिखा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र का अस्तित्व एक ठोस वास्तविकता है जो आज या कल पश्चिमी देशों को स्वीकार करनी पड़ेगी ज.ज.ग. को मान्यता प्रदान करके। इस ठोस हक़ीकत को तथ्यों द्वारा चित्रित करते हुये श्री जॉ बैनो ने लिखा:"ज.ज.ग. ने आश्चर्यजनक आर्थिक प्रगति की है। केवल एक दशक में ज.ज.ग. ने अपने व्यापार तथा उद्योग को बढ़ाया और विकसित किया है। यहां के निवासियों का जीवन स्तर काफ़ी ऊंचा है और यहां आवारा, कामचोर तथा दूसरे की कमाई पर ज़िन्दा रहने वाले हरामखोर लोगों का नामोनिशां भी बाक़ी नहीं। नयी उद्योग-पुरियों तथा केन्द्रों में लोग काम तथा अध्ययन करने का व्रत लेते हैं अपना भविष्य उज्जवल बनाने के लिये। किसान सहकारी कृषि उत्पादन से सन्तुष्ट हैं और वे वर्तमान स्थिति को उस स्थिति से अच्छा समझते हैं जबकि उनको दो जून रोटी के साथ सैनिकों की लातें भी सहनी पड़ती थीं ....."

श्रीलंका के संसद सदस्यों का प्रतिनिधि-मण्डल :

१८ मई को, लंका की लोक सभा के सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मण्डल ज.ज.ग. पहुंचा। लंका की लोक सभा के अध्यक्ष, श्री आर. एस. पोलपोला इस मण्डल का नेतृत्व कर रहे थे। सदस्यों की संख्या १५ थी और इनमें श्रीलंका के दोनो सदनों के प्रतिनिधि शामिल थे।

प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये, ज.ज.ग. के पीपुल्स चैम्बर (लोक सभा) के अध्यक्ष, डा. योहान दीक्मान्न ने कहा, "आज हमारे रिश्तों के वे सूत्र फिर से जुड़ गये जो हम ने तीन साल पहले आपके अतिथि बनकर आरंभ किये थे" प्रत्युत्तर में श्रीलंका के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता बोले, " हमारी यह प्रबल इच्छा है कि आपके देश में हम लाभदायक चीज़ें देखें जिनसे हमारा देश भी फ़ायदा उठा सके।"

विदेशी छात्रों का प्रशिक्षण :

लाइपज़िक के पोलिग्राफी इंजीनियरिंग कालेज में २४० विद्यार्थी प्रशिक्षत हो रहे हैं जिनमें २५ विद्यार्थी भारत, वीयतनाम, इराक़, गिनी तथा अन्य ऐशिया अफ्रीका के देशों से प्रशिक्षण के लिये आये हैं। तीन साल के पाठ्य-क्रम में वे छापेखानों तथा छपाई का ज्ञान प्राप्त करेंगे। आगामी वर्षों में इस कालेज में प्रशिक्षण पाने वाले विदेशी छात्रों की संख्या ५० प्रतिशत बढ़ा दी जायेगी।

प्राध्यापक की गिरफ़तारी

बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक, डा. मानफ्रीड म्यूलर को प. बर्लिन की सीमा पुलिस ने २६ मई को गिरफ़तार किया। आप ज.ज.ग. से पश्चिमी जर्मनी को जा रहे थे और आपके पास प्रवेश पत्र तथा अन्य सभी दस्तावेज़ मौजूद थे। गिरफ़तारी का कारण पूछने पर सीमा अधिकारी ने उनको एक अस्पष्ट सा उत्तर दिया कि प. जर्मनी की फेडरल, हकूमत के अन्दरूनी मामलों के मंत्रालय ने उनकी गिरफतारी का हुक्म दिया है। अध्यापक के कड़े विरोध पर भी उनको ज़बरदस्ती प. जर्मनी सीमा में दाखिल होने से रोका गया और वापस ज.ज.ग. भेजा गया।

डा. म्यूलर विश्वविद्यालय में धर्म-शास्त्र पढ़ाते हैं और आप प. जर्मनी की

इराक़, ज.ज.ग.में कौंसली संबंध

इराक़ की राजधानी बग़दाद में २४ मई, सन् १९६२ को एक संयुक्त वक्तव्य में बताया गया कि ज.ज.ग. और इराक़ राज्य के बीच कौंसली रिश्ते स्थापित किये गये और बर्लिन तथा बग़दाद में दोनों देशों के कौंसल जनरल रहेंगे। संयुक्त वक्तव्य में कहा गया : "यह फैसला इस आधार पर किया गया क्योंकि दोनों देशों में व्यापारिक तथा अन्य संबंध बढ़ते जा रहे हैं और दोनों देश शांति तथा आपसी सहयोग में विश्वास रखते हैं।"

इस महत्वपूर्ण घटना से, एक बार फिर ज.ज.ग. की, पूर्णनिः-शस्त्रीकरण तथा उपनिवेशवाद के विनाश में आस्था और नवोदित राष्ट्रों की प्रभुसत्ता के प्रति आदर की भावना प्रमाणित हो गई। इस के विपरीत पश्चिमी जर्मनी की फेडरल रिपब्लिक ने, ज.ज.ग. के साथ इराक़ के ये कौंसली संबंध, राजनयिक संबंधों में परिवर्तित होने पर इराक़ के खिलाफ कार्रवाई करने की धमकी दी है। इराक़ के अन्दरूनी मामलों में इस नग्न हस्तक्षेप पर वहां के प्रसिद्ध अख़बार 'अल-बिलाल' ने टिप्पणी करते हुये २६ मई को लिखा : "बोन के प्रतिहिंसा तथा सैनिक-वादी तत्त्वों की ऐसी धमकियां अब रोज का रोग बन चुकी हैं। ये तत्त्व हिटलर के उत्तराधिकारी हैं। हमारे दो गणतन्त्रों—ज.ज.ग. तथा इराक़—का सह-योग भविष्य में बढ़ता और दृढ़तर होता रहेगा, जैसा कि घटनायें और हमारा अनुभव सिद्ध कर रहा है ..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

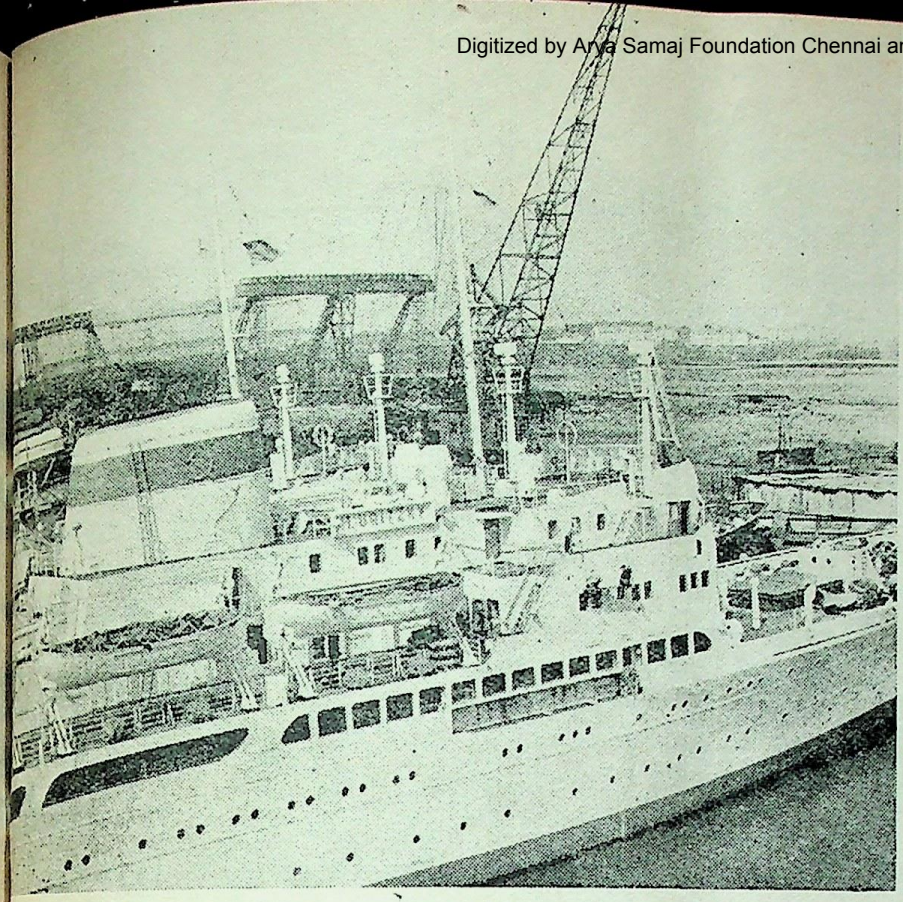

ज.ज.ग. का एक यात्री पोत यूरोप में सबसे बड़े यात्री पोतों में से एक

ईसाई संस्थाओं के निमंत्रण पर वहां जा रहे थे। एक पत्रकार सम्मेलन के सामने डा. म्यूलर ने प. जर्मनी के उक्त रवैये पर कहा : "फेडरल हकूमत, प. जर्मनी के ईसाइयों को यह बात जानने देना नहीं चाहती कि ज.ज.ग. में ईसाई धर्म कितना स्वतन्त्र और खुशहाल है।"

अमूल्य पुरातत्व सामग्री नष्ट प्राय :

जर्मनी के दूसरे सब से बड़े विशेष पुस्तकालय की सामग्री — जिसमें प्रागैतिहासिक काल तथा मध्ययुग की अमूल्य पुरातत्व तथा अन्य सामग्री है— पश्चिमी जर्मनी की राजधानी बोन के एक तहखाने में पिछले १७ वर्षों से सड़ रही है। यह दुःखद सूचना वहां के एक प्रसिद्ध अखबार ने २० अप्रैल को दी है। इस पुस्ताकालय में ३५,००० अमूल्य पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें तथा अन्य ऐसी सामग्री है जो अब अनुपलब्ध है। अखबार ने लिखा है : "पुस्तकालय में, स्वच्छ वायु के आवागमन के लिये न रोशनदान हैं न खिड़कियां ! अधिकांश किताबें गीली होकर सड़ रहीं हैं। खासकर पत्र-पत्रिकाओं की बहुत दुर्दशा है।"

शिक्षा-विशेषज्ञ का मत :

श्री डेविड जानस्टन, इंग्लैंड के एक प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हैं। हाल ही में आप जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्कूलों तथा कालिजों का दौरा कर रहे थे। ज.ज.ग. की शिक्षा प्रणाली को देख कर आप अत्यन्त प्रभावित हुये, विशेषकर बच्चों की शिक्षा से। ज.ज.ग. की यात्रा समाप्त करके श्री जानस्टन ने पत्रकारों के सम्मुख अपना मत प्रकट करते हुये कहा कि वह ज.ज.ग. की जनवादी शिक्षा व्यवस्था से काफ़ी प्रभावित हुये। इसमें मानवीय मूल्यों पर बल दिया जाता है। विशेष रूप से आप इस बात से प्रभावित हुये कि बच्चों को शांति का पाठ पढ़ाया जाता है। श्री जानस्टन ने अध्यापकों के प्रशिक्षण संबधी व्यवस्था की भी काफ़ी प्रशंसा की।

प. जर्मनी की लोक-सभा के उपाध्यक्ष का कटु सत्य :

डा० थोमस डेहलर, पश्चिमी जर्मनी के बुन्दस्ताग (लोक-सभा) के उपाध्यक्ष है। २७ अप्रैल को, अपनी हकूमत की अन्ध कम्यूनिस्ट विरोधी तथा सोवियत-संघ को झूठमूठ बदनाम करने की नीति को, उन्होंने एक बार फिर बुरी तरह लताड़ा। श्री डेहलर, 'फ्री डिमोक्रैटिक पार्टी' के सदस्य है। उन्होंने अपनी हकूमत से, सोवियत रूस के प्रति यर्थाथ और तर्क पर आधारित एक योग्य नीति अपनाये जाने की मांग की है। म्यूनिख में उन्होने, सोवियत संघ को 'दानवी शत्रु' कहने की निंदा की। अपनी हकूमत की नीति का विरोध करते हुये उन्होंने कहा 'सोवियत संघ को हर बार बलि का बकरा बनाना ग़लत है। अपने दोषों को छुपा कर दूसरों के सिर डालना बहुत बुरी नीति है।"

लाउस का सैनिक प्रतिनिधि-मण्डल:

लाउस का एक सैनिक प्रतिनिधि मण्डल, वहां के राष्ट्रीय सैनिक परिषद् के अध्यक्ष, जनरल कांग ली के नेतृत्व में ज.ज.ग. के दौरे पर आया था। एक बात-चीत के दौरान कांग ली ने कहा कि साम्राज्यवादियों की उत्तेजनाओं के बावजूद लाउस की जनता ने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि है वह अपनी राष्ट्रीय एकता तथा शांति के लिये निरन्तर संघर्ष करेगी और सक्रिय तटस्थता की नीति का साथ देगी। "इस सब के लिये, समाजवादी देश जो सहायता हमें दे रहे हैं, हम उसके लिये उन के अभारी हैं," कांग ली बोले, "हम किसी क़ीमत पर भी अपने देश के टुकड़े होने नहीं देंगे, भले ही साम्राज्यवादी इस दिशा में षड़यन्त्र रचते रहें।"

कांग ली और वाल्टर उल्ब्रिख्त

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरब गणराज्य के लिये फिल्में :

टेलिविजन पर दिखाने के लिये, संयुक्त अरब गणराज्य ने जर्मन जनवादी गणतंत्र से ४० फ़िल्में खरीद ली हैं। इन फिल्मों, में विश्वप्रसिद्ध फिल्म "हत्यारे हम में ही मौजूद हैं" भी खरीदी गई। आज भी यह फ़िल्म मानवीय भावनाओं से पूर्ण, युद्धोत्तर कालीन जर्मन फिल्म समझी जाती है। इस फिल्म का विषय है दूसरे महायुद्ध के घोर अपराधियों की कहानी, जिनको दण्ड देना दुनिया का कर्तव्य है। .....अरब गणराज्य के टेलिविजन पर 'कुमारी स्कूदरी' और 'पत्थर का दिल' नामक फिल्में भी दिखाई गई हैं।

तथ्य और आंकड़े

★ दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद, ज. ज. ग. के रोस्टाक बन्दरगाह के क़स्बे में आज तक लगभग १२,००० नये रहायशी मकान बनाये गये हैं। यह क़स्बा सन् १९४२ में भयानक बमबारी से बिल्कुल तबाह हो गया था।

★ इस वर्ष के पहले तीन महीनों में ज. ज. ग. की सरकार ने यूरोप, एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका के १७ देशों के साथ व्यापारिक समझौते किये। यह तथ्य पश्चिमी जर्मनी के इस झूठे प्रचार को, कि ज. ज. ग. आर्थिक सहयोग उपलब्ध करने में असमर्थ है, नंगा कर देता है।

★ ज. ज. ग. में ८२२ अस्पताल हैं जिनमें २,०४,७६७ रोगियों को दाखिल करने का प्रबन्ध है। इन अस्पतालों के अलावा यहां ४०२ क्लिनिक, ३५२ सामान्य और ४०० चलते-फिरते शफ़ाखाने हैं जो खासकर गांवों में घूमते हैं। क्षय रोग की रोकथाम के लिये परामर्श देने वाले ४०० केन्द्र भी हैं। यहां, हर साल, प्रति व्यक्ति के स्वास्थ्य पर २१,११८ मार्क की रक़म खर्च की जाती है।

★ मां बनने वाली औरतों को, ज.ज.ग. में, प्रसव से पहले ५ हफ़्तों की और प्रसव के बाद ६ हफ़्तों की छुट्टी मिलती है पूरे वेतन सहित। यहां हर साल लगभग ३ लाख गर्भवती नारियों की देख-रेख होती है।

★ सन् १९६१ में, ज. ज. ग. में, १० करोड़ से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। ये पुस्तकें अपराध, युद्ध, यौन आदि के वर्णन और प्रचार से पूर्ण नहीं, बल्कि शांति, मानवतावाद और सहयोग के मानवीय भावों से ओतप्रोत हैं।

★ ज. ज. ग. में ८८ रंगशालायें तथा आपेरा-भवन हैं। हर साल इन में १ करोड़ ६० लाख व्यक्ति नाटक तथा संगीत-रूपक देखने आते हैं। सन् १९५९-६० में इनमें ३०,६२१ अभिनय हुये जिनमें ४,३२१ बच्चों के लिये थे।

★ ज. ज. ग. में पांच मुख्य राजनीतिक दल और अनेक संस्थायें तथा संगठन हैं। सब दलों और संस्थाओं के कई अख़बार हैं। ४० दैनिक अख़बार ऐसे हैं जिनकी रोज़ाना ७० लाख प्रतियां छपती हैं। २७ साप्ताहिक तथा ५२६ मासिक पत्रों के अलावा गांवों में भी लगभग १,००० अख़बार छपते हैं। कागज़ बनाने के कारखाने तथा छापेखाने राष्ट्रीय संपत्ति में आते हैं।

★ ११,९८७ सार्वजनिक पुस्तकालय, ज. ज. ग. के शहरों, गांवों तथा कस्बों में फैले हुए हैं। इन पुस्तकालयों में पुस्तकों की कुल संख्या १ करोड़ २५ लाख है। इनके अतिरिक्त मजदूर यूनियनों के अपने ५,८०४ पुस्तकालय भी हैं जिनमें लगभग ५५ लाख पुस्तकें हैं — सन् १९६० में, इन पुस्तकालयों के ३१ लाख से अधिक पाठक थे जिनको १ करोड़, ५० लाख पुस्तकें बिना किसी पैसे के उधार दी गयीं।

ज.ज.ग. के प्रसिद्ध ट्रेड यूनियन कार्यकर्त्ता हिन्देशिया दो मज़दूर नेताओं कारजोनो तथा कादी आन के साथ

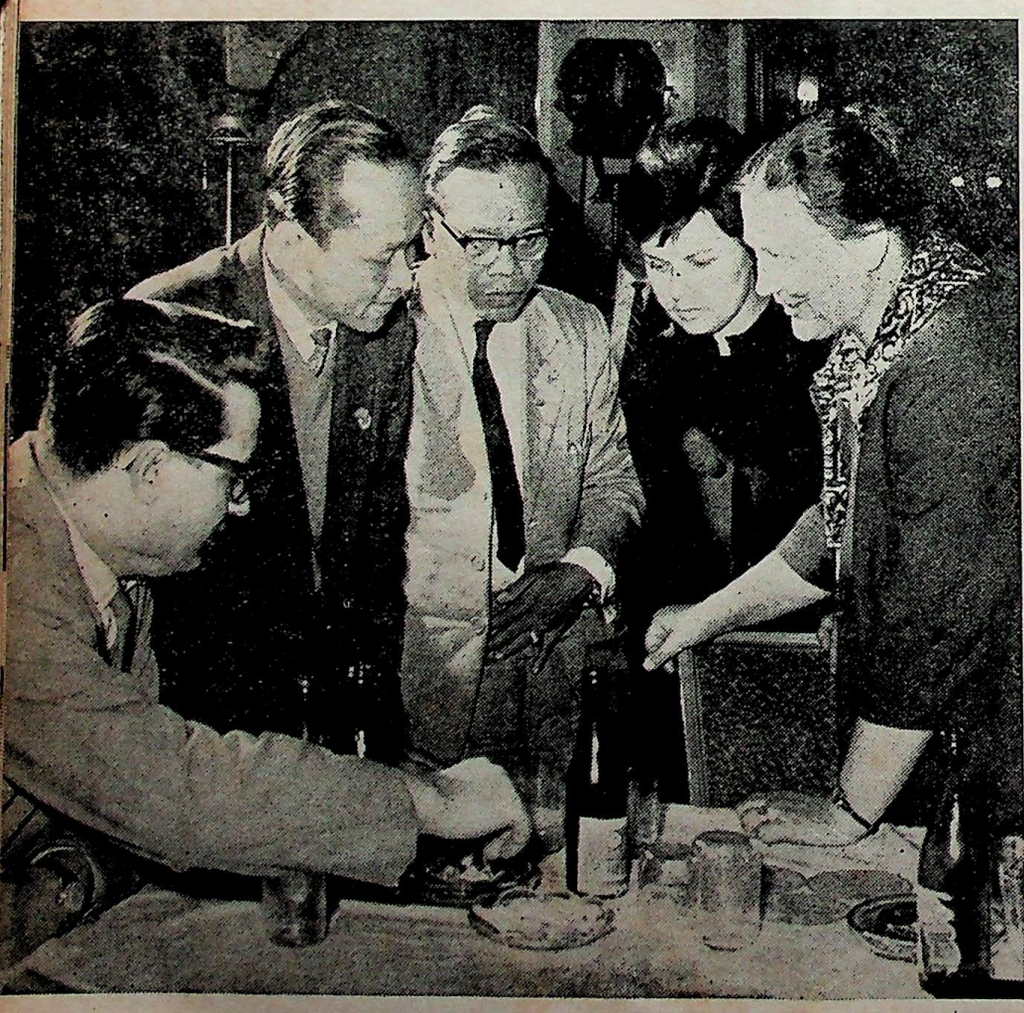

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पत्रिका' सम्मेलन की कार्यवाही

गत मास में 'सूचना पत्रिका' के पाठकों का एक सम्मेलन 'पत्रिका' के दफ़्तर में हुआ। सम्मेलन में भाग लेने वाले पाठक प्रतिनिधि उपस्थिति की संज्ञा के अधिकारी हैं, क्योंकि गाज़ियाबाद के एस्सपरांटो ग्रुप के मंत्री, वी.एस.एस. सामुदायिक केन्द्र (किदवाई नगर शाखा) के अवैतनिक महानिदेशक और पत्र मित्र संघ के कई कार्यकर्त्ताओं तथा अन्य पाठकों ने 'पत्रिका सम्मेलन' में भाग लिया।

बैठक काफी दिलचस्प रही। मैत्री-पूर्ण वातावरण में विचारों का आदान प्रदान हुआ। चर्चा का मूल विषय 'सूचना पत्रिका' थी—इसका भाव और रूप। इसको अधिक रोचक तथा लोकप्रिय बनाने के लिये पाठकों ने विभिन्न सुझाव सामने रखे। इनमें मुख्य ये थे : १. 'पत्रिका' में पत्र-मित्र कालम शुरू किया जाये। २. पाठकों के पत्रों को भी इनमें स्थान मिलना चाहिये। ३. चुटकलों और हास्य विनोद को भी 'पत्रिका' की पाठ्य सामग्री में जगह मिलनी चाहिये। ४. तथ्यों और आंकड़ों द्वारा ज.ज.ग. की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक प्रगति को दिखाया जाना चाहिये। ५. 'पत्रिका' के पाठकों के सम्मेलन तथा बैठकें नियमित रूप से किसी निश्चित अवधि के बाद, आयोजित होनी चाहियें।

ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के उप-प्रमुख श्री हरनर्ट फिशर ने अपने हिन्दी भाषण द्वारा 'पत्रिका सम्मेलन' का अन्त किया (श्री फिशर अब अपने देश को लौट गये हैं।) सम्मेलन में भाग लेने वाले पाठकों को धन्यवाद देते हुये उन्होंने भारत तथा ज.ज.ग. के आपसी सहयोग तथा सद्भावना और दोनो देशों के शांति तथा सहअस्तित्व संबंधी भावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंनें उपस्थित सज्जनों को इस बात का आश्वासन दिया कि 'सूचना पत्रिका' उनके अमूल्य सुझावों को कार्यान्वित करने का यथाशक्ति प्रयास करेगी।

'सूचना पत्रिका' भारत और ज.ज.ग. की मैत्री, सहयोग तथा सह-अस्तित्व के पावन उद्देश्यों का एक अंश और प्रतीक है। हिन्दी भाषा द्वारा भारतीय जनता को, ज.ज.ग. के बहुमुखी जीवन का दिग्दर्शन कराना, 'पत्रिका' का प्रधान उद्देश्य है।

'पाठक सम्मेलन' लगभग दो घण्टों के बाद समाप्त हुआ।

अध्यापकों का खुशहाल जीवन

(पृष्ठ ७ का शेष)

के विषयों में विशेष शिक्षा पाकर विशेष शिक्षक की उपाधि प्राप्त की। यहां भी, श्री काइन को १८० मार्क का वजीफा मिलता रहा। इनकी रुचि बहु-मुखी है। आप एक मजे हुये खिलाड़ी, रंगमंच के शौकीन और मछलियों के सिद्धहस्त शिकारी हैं। पढ़ाने के बाद श्री काइन, अपने शिष्यों को कुशल खिलाड़ी बनाने के लिये अपने अनुभवों का साझी-दार बनाते हैं। इतना ही नहीं आप एक 'पयोनियर दल' के अगुआ भी हैं और अपने इस दल के साथ आप कई यात्राओं पर जाते हैं। इसके अतिरिक्त आप खेल-कूद प्रतियोगितायें, रंगमचों के अभिनय, उत्सव-समारोह तथा वादविवाद गोष्ठियां भी आयोजित करते हैं। इतने व्यस्त कार्यक्रम के लिये, श्री अर्नस्त काइन स्कूल समय के बाद भी वहां रहते हैं। (दस कक्षाओं वाले माध्यमिक स्कूल में प्रत्येक विशेष शिक्षक को हफ़्ते में २६ पाठ देने होते हैं)।

श्री काइन, एक छोटे और दो बड़े कमरों वाले फ्लैट में अपनी बूढ़ी मां के साथ रहते हैं। मकान काफी आरामदेह है। टेलिविजन, रिफ्रिजिरेटर, कपड़े धोने की मशीन और सुन्दर सजावट वाले सामान से उनका यह छोटा घर सजा हुआ है। अपने अन्य कई सहयोगी अध्या-पकों की तरह श्री काइन भी मोटर खरी-दने के लिये पैसा बचा रहे हैं। ६००० मार्क तो उन्होंने अब तक अपने ७५० मार्क के मासिक वेतन से बचाये हैं। इस बचत के 'रहस्य' के पीछे उनकी दूरदर्शी बूढ़ी मां का हाथ है जिसका बचपन और जवानी निर्धनता की घोर यातना में कटे हैं, क्योंकि वह एक मजदूर की बीवी थीं। आज, बूढ़ी मां जब अपने बेटे और अपने छोटे सुन्दर घर को देखती है तो अना-यास वह कह उठती है : "बेटा, काश तुम्हारे पिता आज जीवित होते यह सब देखने के लिये।" श्री काइन के पिता दूसरे महायुद्ध में मारे गये थे।

श्री अर्नस्त काइन किसी भी पार्टी या राजनीतिक दल के सदस्य नहीं हैं। लेकिन अपने हमपेशा श्री बेर्नट के इस मत से वह भी सहमत हैं कि जर्मनी के युवकों को शांति और सद्भावना के विचारों में दीक्षित करना, ज. ज. ग. की शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षक का सर्वोच्च लक्ष्य है।

अमर मैत्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

मकर देना चाहिये जैसा कि संयुक्तराष्ट्र संघ की महासभा के १५वें अधिवेशन के प्रस्ताव में मांग की गई है।"

दोनों राज्यों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को अपने देशों की विदेश-नीति का आधार स्तम्भ घोषित किया। संयुक्त वक्तव्य में कहा गया : "आज-कल की ज्वलन्त समस्यायें हैं : पूर्ण निशस्त्रीकरण, दूसरे महा युद्ध के अवशेषों का जर्मन शांति संधि द्वारा खातिमा और प. बर्लिन की समस्या को युरोप की सुरक्षा के दृष्टिकोण से हल करना।"

दोनों राज्यों ने सोवियत यूनियन के निशस्त्रीकरण संबंधी सुझावों का समर्थन किया और जर्मन सैनिकवाद तथा प्रतिहिंसावाद का डट कर मुकाबला करने का दृढ़ निश्चय व्यक्त किया।

इसके अतिरिक्त इन दोनों समाजवादी देशों ने आपस में आर्थिक तथा सांस्कृतिक सहयोग को अधिक बढ़ाने की घोषणा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

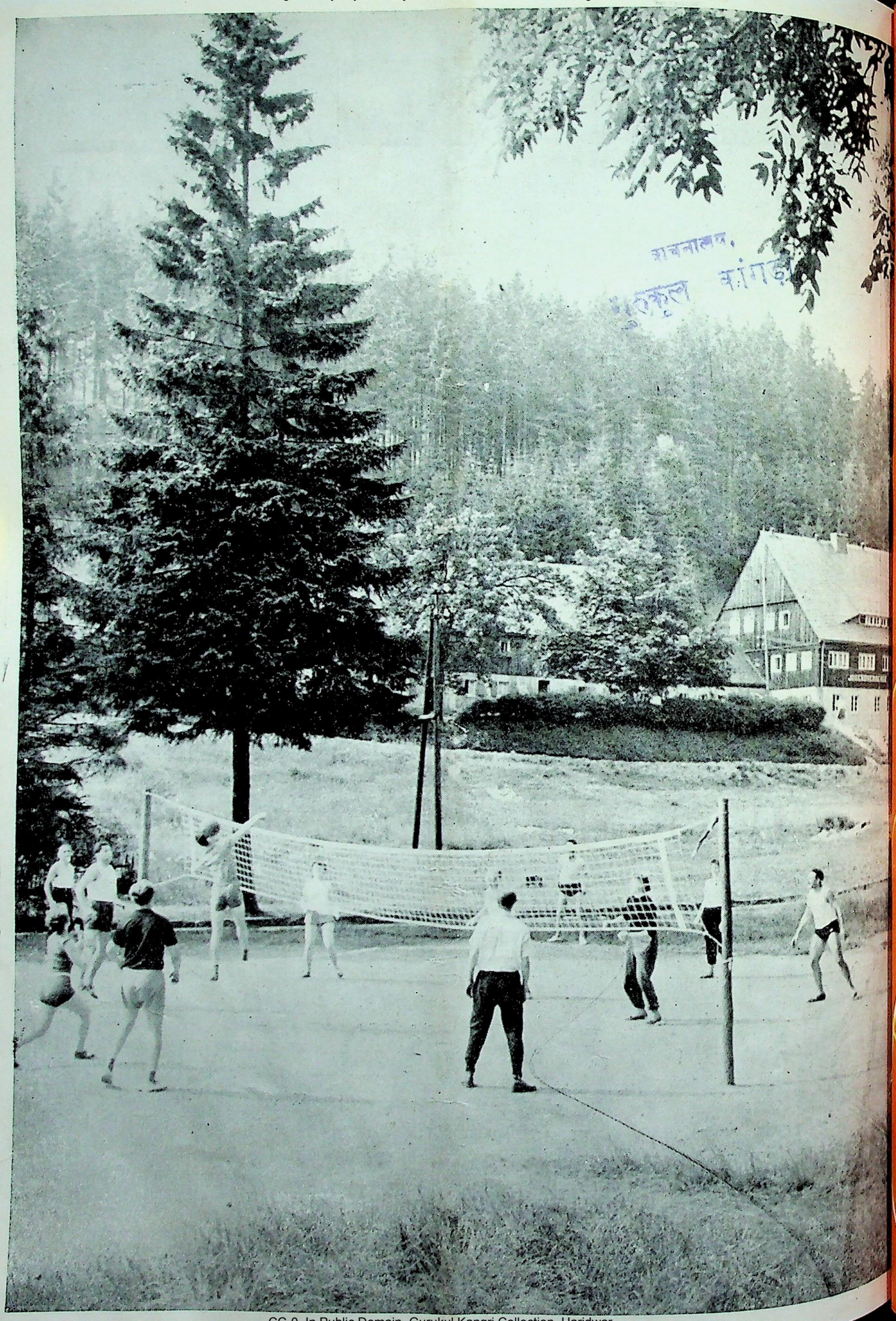

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

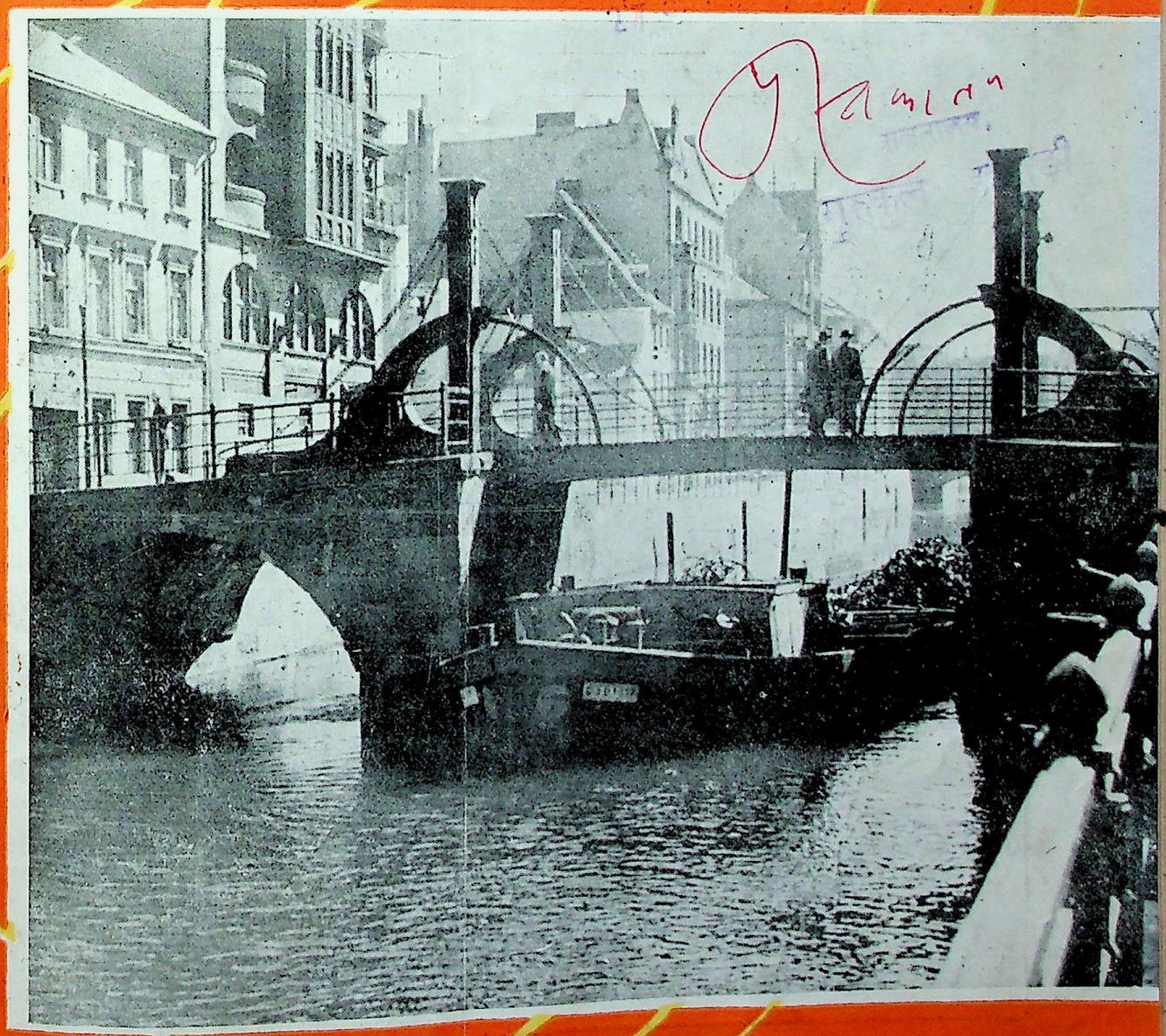

७ वर्ष ७
जुलाई
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हायदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ७ २० जुलाई, १९६२

इस अंक में

पृष्ठ

जनवादी बर्लिन की सीमा पर दूसरी हत्या ३
निःशस्त्रीकरण का समर्थक कौन ? ५

व्यक्तित्व की झांकी
मेरी रचना प्रक्रिया ६

जनवाद के बढ़ते चरण
एक बहादुर लड़की की कहानी ७

उस आनन्दमय दिन की प्रतीक्षा में.... ८
'राबेन्स्ब्रुक की गाथा' १०
बर्लिन का चिड़िया-घर १२
एक बृहत् अनुसन्धान केन्द्र १४
जर्मनी में टेलिविजन १५

डा० अशरफ : शोक श्रद्धाञ्जलि १६

दो पत्र १७

वीर लरनेन दोइच
पाठ उन्नास १८

लइपज़िक : शरद्कालीन मेला २०

जर्मनी की ख़बरें २१

मुख पृष्ठ :

बर्लिन का २६० वर्ष पुराना यूफेनब्रूके नामक पुल

अन्तिम पृष्ठ :

इस्पात के एक बड़े कारखाने में नाकोव्सकी, एक फौन्डर, बड़े ध्यान से इस्पात का ढलना देख रहे हैं

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी 27 JUL 1962

प. बर्लिन : घोर उत्तेजनाओं का गढ़

जनवादी बर्लिन की सीमा पर दूसरी हत्या

१८ जून को जर्मन जनवादी गणतंत्र की सीमा सुरक्षा पुलिस का एक और सिपाही पश्चिम बर्लिन के उत्तेजनात्मक तत्वों द्वारा जानबूझ कर मार डाला गया। चार हफ्तों में यह दूसरी घोर उत्तेजना और हत्या है इन पैशाचिक तत्वों द्वारा। २० जून को जनवादी बर्लिन की लगभग सारी जनता ज. ज. ग. के सीमान्त के इस वीर प्रहरी की अर्थी को देखने तथा उसका अन्तिम दर्शन करने के लिये दूसरी बार उमड़ पड़ी।

ज. ज. ग. की सीमा पुलिस का लास कारपोरल 'राइनहोल्ट पाउल हून' केवल २० वर्ष का तरुण था जिसको प. बर्लिन के एक एजेण्ट ने दिन दिहाड़े क़त्ल किया। हत्यारा ज. ज. ग. की राज्य-सीमा में एक गुप्त सुरंग से घुसकर आया था जो प. बर्लिन से पूर्वी-बर्लिन तक, प. बर्लिन के पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के सक्रिय सहयोग से बनाई गई थी। लेकिन जनवादी बर्लिन की सीमा के सजग प्रहरियों ने जब एजेण्ट को देखा तो उन्होंने उसे प्रवेश-पत्र आदि जैसे दस्तावेज़ मांगे। हत्यारे एजेण्ट ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और सीमा पुलिस पर गोलियां चलाईं। इन गोलियों का शिकार बना सिपाही 'राइनहोल्ट पाउल हून'। क़त्ल करके हत्यारा सुरंग से भाग कर वापस प. बर्लिन पहुंचा जहाँ तालियों से उसका स्वागत हुआ। प. बर्लिन की एक ऊंची इमारत पर तमाशा देखता हुआ एक आदमी चिल्लाया : "सुअर के बच्चो, तुम सब को भी हम गोली से उड़ा देंगे।" यह धमकी पूर्वी बर्लिन के सीमा पुलिस के सिपाहियों के लिए थी जो अपने मरे हुये साथी के गिर्द जमा हुये थे।

इस संदर्भ में यह बात बड़ी अहम और ध्यान देने योग्य है कि हत्या होने से पहले ही, प. बर्लिन के प्रेस, रेडियो तथा टेलिविजन के पत्रकार उस स्थान पर पहुंचे थे जहां 'पाउल हून' की हत्या हुई। इसका स्पष्ट अर्थ है कि यह उत्तेजना और हत्या एक पूर्व निश्चित योजना का परिणाम थी। इतना कुछ होते हुये भी ज.ज.ग. की सीमा पुलिस ने जवाब में एक भी गोली नहीं चलाई।

इस घोर उत्तेजना की पृष्ठभूमि भी दृष्टव्य है। इस हत्या के एक दो ही दिन पहले, पश्चिमी जर्मनी के चानस्लर श्री एडेनाअर, प. बर्लिन गये थे और वहां के महापौर विल्ली ब्रांत को साथ लेकर उन्होंने ज.ज.ग. के खिलाफ कई उत्तेजनात्मक भाषण दिये थे। गुप्त सुरंग तथा प्रेस और अन्य पत्रकारों का घटना से पहले ही घटनास्थल पर पहुंचना, ये सब चीज़ें हत्याओं तथा घोर उत्तेजनाओं की पूर्व निश्चित योजना को स्पष्ट सिद्ध करती हैं। इस जाने बूझे कत्ल को प. बर्लिन के पत्रकारों ने किस तरह तोड़ मरोड़ कर पेश किया यह भी दृष्टव्य है। सायंकाल ८ बजे प. बर्लिन रेडियो ने यह सूचना प्रसारित की : "अभी-अभी पता चला है कि दीवार के निकट एक नई घटना हुई है। सीमा पर, प. बर्लिन पुलिस तथा पूर्वी क्षेत्र (पूर्वी बर्लिन) की सीमा सुरक्षा पुलिस के बीच गोलियां चली हैं। हत्या के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया। लगभग उसी समय प. बर्लिन के टेलिविजन से यह घोषणा हुई : "आज शाम के ७ बजे, पूर्वी बर्लिन की सीमा सुरक्षा पुलिस और प. बर्लिन पुलिस के बीच गोलियां चलीं।" इस घोषणा में भी हत्या का जिक्र नहीं।

इसके बाद, रेडियो तथा टेलिविजन की ये घोषणायें, प. बर्लिन शासन के अन्तरिम मंत्री श्री एलबर्त्स के हुकम से दबाई गईं और १० बजे रात तक इस घटना का बिल्कुल उल्लेख नहीं हुआ। इसके बाद, झूठा प्रचार प्रसारित होना शुरू हुआ। कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया कि ज. ज. ग. के सीमा सुरक्षा सिपाही को स्वयं अपने ही साथियों ने गोली से मार डाला। एक ओर तो यह नग्न झूठ प्रसारित हो रहा था और दूसरी ओर प. बर्लिन का प्रमुख प्रेस-अधिकारी श्री बाह्र, जो अभी अपने अन्तरिम मंत्री की चालबाज़ी से अनभिज्ञ था, एक अमरीकी रेडियो संवाददाता के सामने यह स्वीकार कर रहा था कि ज. ज. ग. के सीमा सुरक्षा सिपाही को प. बर्लिन के एक आदमी ने मारा।

दूसरे दिन प. बर्लिन की एक प्रेस एजेन्सी ने यह सूचना दी : "आंखों देखी एक सूचना के अनुसार पता चला है कि पूर्वी बर्लिन का सीमा सुरक्षा सिपाही अपने साथियों द्वारा नहीं बल्कि एक शरणार्थी द्वार मारा गया।" तीसरे दिन प. बर्लिन पुलिस के एक प्रवक्ता ने स्वीकार किया कि सीमा सुरक्षा सिपाही पर, प. बर्लिन के एक एजेन्ट ने गोली चलाई। एक अमरीकी प्रेस एजेन्सी, ए. पी. ने इस बात का उल्लेख करते हुये लिखा : "प. बर्लिन के तीन आदमी सोवियत-क्षेत्र (पूर्वी बर्लिन) में गये थे। उनमें से दो सुरंग के पूर्वी बर्लिन में खुलने वाले मुहाने पर खड़े रहे और तीसरा पूर्वी बर्लिन की सीमा के बहुत अन्दर चला गया। प्रवक्ता यह न बता सका कि वह वहां क्या करने गया था।" लेकिन प. बर्लिन की नीति निर्धारण करने वालों का यह झूठा प्रचार कुछ घण्टों तक ही जनता को धोखे में रख सका, क्योंकि तथ्य अधिक देर तक दबाये न जा सके।

सिपाही 'पाउल हून' की हत्या की ज़बरदस्त जांच हुई और ये तथ्य सामने आये : पाउल हून का क़ातिल प. बर्लिन निवासी रुडोल्फ म्यूल्लर है जिसका जन्म २२ फरवरी, सन १९३१ को हुआ है, और जिसका पता है प. बर्लिन क्रूइज़बर्ग-४२। प. बर्लिन में काम करने वली पश्चिमी देशों की जासूसी तथा तोड़ फोड़ करने वाली गुप्त संस्थाओं के साथ सन् १९५३ से म्यूल्लर के गहरे संबंध हैं। म्यूल्लर के दो सहायकों में से एक प. बर्लिन के एक विद्यार्थी, एबरहार्ड गालिन्के को, ज. ज. ग. की पुलिस गिरफ्तार करने में सफल हुई। गालिनके ने बताया कि म्यूल्लर घोर उत्तेजनाओं के लिये "बड़े से बड़ा खतरा" मोल लेने के लिये तैयार रहता है। पिस्तौल से चलाई गई गोलियों की वैज्ञानिक जांच से सिद्ध हुआ कि वे गोलियां पश्चिमी जर्मनी में बनी हैं क्योंकि उन पर वहां की "सेसो' छाप लगी थी।

ज. ज. ग. के प्रधान अभियोजक ने हत्यारे रूफोल्ड म्यूल्लर के खिलाफ एक वारण्ट जारी किया है और प. बर्लिन के अधिकारियों से मुजरिम को ज. ज. ग. के अधिकारियों को सौंपने की मांग की है। लेकिन, प. बर्लिन शासन के एक प्रवक्ता ने इस जायज़ मांग को यह कह कर अस्वीर किया कि रूडोल्फ म्यूल्लर का यह अपराध "दण्डनीय नहीं है।"

ज. ज. ग. की सरकार ने एक वक्तव्य में स्पष्ट किया है कि पश्चिमी जर्मनी तथा प. बर्लिन के इस शर्मनाक रवैये और घोर उत्तेजनात्मक नीति के गंभीर परिणाम निकलेंगे। साथ ही इस वक्तव्य में, ज. ज. ग. की राजकीय सीमाओं के उल्लंघन से पैदा होने वाली भयंकर स्थिति की ओर एक बार फिर विश्व का ध्यान आकर्षित किया गया है, और प. बर्लिन की विकट समस्या को जल्द से जल्द शांतिपूर्ण ढंग से हल करने की मांग भी दोहराई गई है। ज. ज. ग. की सरकार ने यह भी घोषित किया कि पश्चिमी देश प. बर्लिन में काबिज़ रहने के अपने विशेष अधिकार तो जताते हैं लेकिन उनको एक अन्य प्रभुसत्तात्मक राज्य के खिलाफ होते षड्यन्त्र और घोर उत्तेजनाओं को रोकने की कोई चिन्ता नहीं। बर्लिन सीमा पर प. बर्लिन के पुलिस तथा एजेण्टों द्वारा, ज. ज. ग. के दो सिपाहियों की हत्याओं जैसी उत्तेजनायों अधिक समय तक सहन नहीं की जा सकतीं। इन हालात में प. बर्लिन को, एक असैनिक तथा स्वतंत्र नगर में तबदील करना ही सबों के लिये हितकर रहेगा, विशेष कर विश्व शांति के लिये ! नहीं तो इस प्रकार की घोर उत्तेजनायें कभी, संयम का बांध तोड़ कर विश्व को खतरे में डाल देंगी।

बर्लिन निवासी शहीद 'पाउल हून' को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःशस्त्रीकरण का समर्थक कौन ?

इर्विन लेमान्न

प. जर्मनी के डस्सेलडार्फ क़स्बे में, अणु-शस्त्रीकरण के विरूद्ध एक ज़बरदस्त मशाली प्रदर्शन

जनेवा का १७ राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण सम्मेलन, इस बात की कसौटी है कि निःशस्त्रीकरण के बारे में कौन कितना ईमानदार है। इस सम्मेलन ने यह बात भी बिलकुल स्पष्ट कर दी है कि दो जर्मन राज्यों में कौन राज्य विश्व शांति तथा निःशस्त्रीकरण के हक़ में है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर) तथा सरकार ने जहां सोवियत यूनियन के आम तथा पूर्ण निःशस्त्रीकरण संबंधी सुझाव का पूर्ण समर्थन किया है, वहीं उन्होंने जनेवा सम्मेलन के सामने, जर्मनी में तनाव कम करने के बारे में विस्तृत सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं। इस प्रसंग में, ज. ज. ग की सरकार का वह स्मृति-पत्र दृष्टव्य है जो उसने संयुक्त राष्ट्र संघ के निःशस्त्रीकरण आयोग को पेश किया। यह स्मृति-पत्र अब जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन का एक अहम दस्तावेज़ बन चुका है। इस स्मृति-पत्र में, दोनों जर्मन राज्यों के लिये आणविक तथा अन्य शस्त्रों के त्याग का सुझाव दिया गया है। पूर्ण निःशस्त्रीकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण क़दम होगा। इसी प्रकार ज. ज. ग. की सरकार ने, तनाव कम करने के लिये, एक अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण आयोग की स्थापना का दूसरा सुझाव भी पेश किया जिसके सदस्य वारसा तथा नाटो सन्धि के देश होते। यह नियन्त्रण आयोग दोनों जर्मन राज्यों में निःशस्त्रीकरण का निरीक्षण करता।

दो जर्मन राज्यों में निःशस्त्रीकरण की अनिवार्यता पर बोलते हुये, ज.ज.ग. के विदेश मंत्री, डा. बोल्ज़ ने लोक सभा में कहा: "पिछले दो युद्धों में जर्मन जनता ने जो भयंकर यातनायें और मुसीबतें उठाईं, वे हमको इस बात के लिये प्रेरित करती हैं कि हम शस्त्रास्त्रों और जर्मन सैनिकवाद को, जो हमारी तथा अन्य देशों की शांति के घोर शत्रु है, जर्मन भूमि से हमेशा के लिये उखाड़ फेंकें। ऐसा करने से ही जर्मनी में स्थाई शांति क़ायम की जा सकती है। हमारे जर्मन राष्ट्र का यह पावन कर्त्तव्य है कि हम निःशस्त्रीकरण की दिशा में पहला क़दम उठाकर अपने पिछले पापों का प्रायश्चित करें। ऐसा करना, आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण की ओर पहला और अनुकरणीय क़दम होगा अन्य ताकतों के लिये।..."

अब देखिये पश्चिमी जर्मनी का रवैया निःशस्त्रीकरण और विश्व शांति के प्रति। जिस दिन जनेवा में निःशस्त्रीकरण सम्मेलन आरम्भ हुआ, ठीक उसी दिन प. जर्मनी के संसद ने, सेना और शस्त्रों के लिए सन् १९६२ के बजट में, १८ अरब मार्क की धन राशि उपलब्ध की। उसी दिन प. जर्मनी के चानसेलर, डा. एडेनाअर ने यह मांग पेश की कि नाटो सैनिक गुट की सेना को आणविक शस्त्रों से लैस किया जाये, जिसमें प. जर्मनी की प्रतिहिंसावादी सेना भी शामिल है।

इसी प्रकार, पश्चिमी जर्मनी के अखबारों में जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के बारे में अनेक भ्रांतियां और निराशा फैलाई गई। संक्षेप में निःशस्त्रीकरण और शांति से संबंधित प्रत्येक प्रयत्न तथा सुझाव को, प. जर्मनी की सरकार तथा अखबारों ने, असफल बनाने का भरसक प्रयत्न किया।

लेकिन पश्चिमी जर्मनी की इस शांति विरोधी और युद्ध पोषक नीति का हर जगह ज़बरदस्त विरोध हो रहा है? हाल ही में पश्चिम बर्लिन का महापौर, विल्ली ब्रांत ब्रिटेन गया। एक सार्वजनिक भाषण में जोंही उसने प. जर्मनी की उक्त नीति के हक़ में बोलना शरू किया तो श्रोताओं ने इतना ज़बरदस्त प्रर्दशन किया उसके ख़िलाफ कि श्री ब्रांत को मंच छोड़ कर भाग जाना पड़ा। इसी प्रकार ९ अप्रैल को, जनेवा सम्मेलन में बलगेरिया के नेता श्री ताराबनोव ने चानसेलर एडेनाअर के उस बयान की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया जिसमें उन्होंने समाजवाद को घोर शत्रु घोषित किया था। प. जर्मनी के युद्ध मंत्री 'स्त्राउस' ने भी सोवियत यूनियन को नाटो द्वारा ख़त्म करने की धमकी दी थी।

यह है एक संक्षिप्त तुलना उन तथ्यों की जिन से जनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के प्रति दो जर्मन राज्यों का रवैया स्पष्ट हो जाता है। ज.ज.ग. जहां पूर्ण निःशस्त्रीकरण का, बिना किसी झिझक के, पूर्ण समर्थन करता है, वहां पश्चिमी जर्मनी युद्ध और शस्त्रीकरण की दिशा में एक-एक क़दम उठाता है। इसलिये जर्मन जनता के हितों का एक मात्र प्रतिनिधि ज.ज.ग. है, प. जर्मनी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी रचना प्रक्रिया

एरिक नोइच

एरिक नोइच, जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक तरुण कथाकार हैं। पिछले वर्ष उनकी कहानियों का पहला संग्रह "बिट्टरफेल्ड की कहानियां" प्रकाशित हुआ, जिससे, कथाकार लोगों की प्रशंसा का पात्र बना। श्रमिक जीवन का अन्तर्द्वन्द्व, गहरी अनुभूति तथा उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति इन कहानियों की जान है। लेखक जीवन की बहुमुखी भावनाओं तथा समस्याओं के कितना निकट है, "बिट्टरफेल्ड की कहानियां" इसका ज्वलंत प्रमाण है। एरिक नोइच जीवन सत्य की विभिन्न अनुभूतियों को किस प्रकार कलात्मक माध्यम से कथा-बद्ध करते हैं, यह उनके ही शब्दों में सुनिये।

सम्पादक

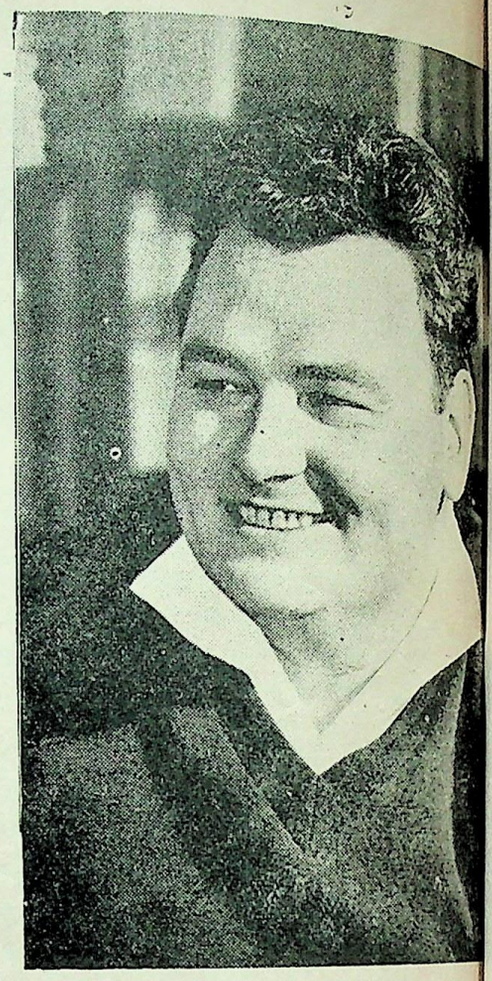

आजकल मैं एक उपन्यास लिख रहा हूँ जिसका नायक एक मज़दूर है और जो एक तरह से, ज.ज.ग. के विकास का एक प्रतिनिधि पात्र है। मेरा यह नायक, उद्दण्ड और अक्खड़ स्वभाव का एक बढ़ई है, जो देश के एक निर्माणस्थल से दूसरे निर्माणस्थल में जाता है। पैसे और खूबसूरत लड़कियों के पीछे वह दीवाना है——उसके जीवन का मात्र उद्देश्य यही दो चीजें हैं। लेकिन मेरा नायक दम्भी और अहंकारी होने पर भी एक मेहनतकश श्रमिक है जो अपने चारों ओर के वातावरण और सामाजिक यथार्थ से अछूता नहीं रह पाता। धीरे धीरे किंतु निश्चित रूप से, वह बदल जाता है। वह जीवन और समाज के प्रति अपने उत्तर-दायित्व को समझ लेता है।...

ज.ज.ग. के हाल्ले नामक ज़िले में, कई वर्ष मैंने पत्रकार के रूप में काम किया है। हाल्ले में, रसायनिक पदार्थों के नये तथा भीमकाय कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं। मैं इस निर्माणस्थल को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ —— खासकर यहां काम करने वाले श्रमिकों को। इन लोगों के संपर्क में आकर और उनके चरित्रगत वैचित्र्य ने मुझे प्रेरणा दी कि उनके जीवन को मैं अपने उपन्यास का वर्ण्य-विषय बनाऊं।

मैंने अपना उपन्यास शुरू किया। लेकिन इसके कुछ अध्याय लिखने पर मैं ने महसूस किया कि मेरा अनुभव अभी इतना परिपक्व नहीं है कि मैं अपने श्रमिक पात्रों की गहरी तथा विभिन्न अनुभूतियों और अन्तर्द्वन्द्वों को सही तरह से चित्रित कर सकूं। उदाहरण के लिये मेरे सामने यह समस्या आई कि यदि मेरा नायक 'बल्ला', किसी लड़की के सम्पर्क में आये जिससे उसका इश्क हो जाये लेकिन जो उससे अधिक पठित् एक इंजीनियर हो और वह उस कारखाने में एक ऊंची जगह पाये जहां 'बल्ला' भी काम करता हो——तो ऐसी स्थिति, किस तरह के द्वन्द्व और भावनाओं को जन्म देगी? इसी प्रकार, यदि उस निर्माणस्थल पर एकदम किसी नये ढंग से काम शुरु किया जाये, और मेरा अहंवादी नायक, अपनी मर्ज़ी के खिलाफ केवल अपने अन्य श्रमिक साथियों की झिड़कियों से बचने के लिये, उस ढंग का अनुमोदन करे तो ऐसी स्थिति में क्या होगा?.....

ये ऐसे प्रश्न थे, घर के कमरे में बैठकर, जिनका उत्तर पाना असंभव था। भावानुभूतियों तथा मानसिक द्वन्द्व के इन जटिल प्रश्नों को सुलझाने के लिये मुझे उन्ही श्रमिकों का आश्रय लेना पड़ा जो अपने हाथों से हाल्ले के भीमकाय रसायनिक कारखानों का निर्माण कर रहे हैं। मैं वहां बढ़ई श्रमिकों के एक दल में गया जिसमें मेरे नायक 'बल्ला' जैसे कई श्रमिक मौजूद हैं। तब से हम महीने में दो बार मिलते हैं। एक एक करके मैं अपने उपन्यास के अध्याय उनको सुनाता हूँ और मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि वे श्रमिक मेरे उत्सुक श्रोता ही नहीं बल्कि सजग आलोचक भी हैं।

मेरी यह रचना प्रक्रिया मुझे दो उपलब्धियां प्रदान करती है। एक ओर मुझे अपने विषय की सही कसौटी, (श्रमिक श्रोताओं के रूप में) मिलती है जो किसी सजीव रचना के निखार के लिये अत्यंत आवश्यक है, और साथ ही मानव स्वभाव की गहराइयों को जानने तथा जांचने का मुझे अमूल्य अवसर प्राप्त होता है। दूसरी ओर मुझे अपनी कृति को कलात्मक दृष्टि से पूर्ण बनाने का मौका भी मिलता है।.....

अपनी रचना के अध्याय या अंश सुनाने के बाद, प्रायः हम में ज़बरदस्त बहस भी छिड़ जाती है। इस बहस के दौरान मेरे श्रोता-आलोचक

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27 JUL 1962

एक बहादुर लड़की की कहानी

उसका नाम है 'कारिन नइत्सके', और वह जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के एक माध्यमिक विद्यालय में पढ़ती है। ज. ज. ग. में उसका नाम हर आदमी की ज़बान पर है, और लोकप्रियता में वह किसी फिल्मी अभिनेत्री से कम नहीं! —कारिन की इस लोकप्रियता का श्रीगणेश उस दिन हुआ जिस दिन उसने अपनी वीरता की कहानी, ज. ज. ग. के सबसे बड़े अखबार "नोयस दुइचलैंड" के विशेष संवाददाता को सुनाई।

जब 'कारिन' का जन्म हुआ उस समय बर्लिन जल कर खाक हो चुका था और दूसरा महायुद्ध समाप्त हो रहा था। भूख से बेहाल बर्लिन में कारिन की मां ने अपनी नवजात बच्ची को कैसे ज़िन्दा रखा यह उसकी मां ही जाने। जब कारिन तीन साल की हुई तो जर्मनी, पश्चिमी अधिकृत शक्तियों के विश्वासघात के कारण, दो भागों विभक्त हुआ। बर्लिन के भी दो टुकड़े हो गये। मासूम कारिन इस सबसे अनभिज्ञ थी। इसके बाद पूर्वी-जर्मनी में नई व्यवस्था ने राज्य-सत्ता संभाली। जर्मन भूमि पर पहली बार एक नया राज्य—किसान तथा मज़दूर का राज—संस्थापित हुआ। इसका नाम पड़ा जर्मन जनवादी गणतंत्र! उस दिन से कारिन तथा उसके माता-पिता की मुसीबतों का अन्त हुआ। कारिन स्कूल भेज दी गई। नई व्यवस्था में निःशुल्क शिक्षा के साथ-साथ किताबें भी मुफ्त दी जाती थीं।

पश्चिम बर्लिन में कारिन की एक चाची रहती थी जिससे मिलने के लिये वह प्रायः वहां आया जाया करती थी। प. बर्लिन को, "फ्री वरल्ड अर्थात् पश्चिमी देशों का नमूना" बनाने के लिये अमरीका ने यहां लाखों डालर लगा दिये हैं, इस लिये यहां तड़क भड़क वाले कपड़े और चमकीली, शानदार मोटरें चारों ओर घूमती नज़र आती हैं। कारिन इन चीजों को ललचाई दृष्टि से देखा करती थी।—लेकिन कालान्तर में, आयु के साथ-साथ कारिन की सोच समझ और दृष्टिकोण भी विकसित होता गया। प. बर्लिन की इस तड़क भड़क के पीछे उसके जागृत मस्तिष्क ने वहां का असली चेहरा भी देखा। उसने देखी वहां की गला-काट होड़, युवकों द्वारा किये जाने वाले अपराधों की संख्या में दिन प्रति दिन की वृद्धि, कम्युनिस्ट विरोधी शीत युद्ध संबंधी प्रचार, नाज़ी साहित्य का खुला क्रय-विक्रय आदि। 'फ्री वरल्ड' के इस दर्शनीय नगर पर इन "अनुकम्पाओं" की तुलना कारिना ने अपने ज.ज.ग. से की जहां शांति, अस्तित्व तथा मानवता के कल्याण के अतिरिक्त कोई प्रचार नहीं किया जाता। वहां नाज़ी अपराधियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है, पुनः संस्थापित करके पूजा नहीं जाता। ····· आखिर कारिन, "फ्री जर्मन यूथ' नामक एक युवक संगठन की सदस्य बनी।

सन् १९६१ में, कारिन का सुखमय जीवन सहसा अप्रत्याशित घटनाओं के भंवर में घिर गया। ·····कारिन का पिता रेलवे में एक सिग्नल-मैन था और अच्छी मज़दूरी पाता था। रेलवे मज़दूरों ने कारिन के पिता को अपनी यूनियन का अध्यक्ष चुना। यहीं से कारिन और उसका परिवार दुःखद घटना-चक्र में फंस गया। अध्यक्ष बनते ही कारिन के पिता ने यूनियन के पैसों से अपनी जेबें भरनी शुरू कीं। अपने मज़दूर सहयोगियों के प्रति उसका यह कुकृत्य, विश्वासघात से कम न था। उसकी चोरी पकड़ी गई और सज़ा के तौर पर कारिन के पिता को कम वेतन वाले काम पर लगा दिया गया।

बजाय इसके कि श्री नइत्सके (कारिन का पिता) इस साधारण सज़ा से फायदा उठाता और अच्छा काम करके फिर से अपने मज़दूर सहयोगियों का विश्वास पात्र बनता, उसने पश्चिमी जर्मनी भागने की ठान ली। भागने की भूमिका तैयार करने के लिये उसने कारिन और अपनी पत्नी से, अपने सहयोगियों तथा अधिकारियों के बारे में, झूठी बातें बतानी शुरू कीं। कारिन को इन बातों पर विश्वास न हुआ और वह अपने पिता को प. जर्मनी न भागने की राय देती रही। अन्त में पिता धमकियों पर उतर आया लेकिन कारिन पर इन धमकियों का भी कोई असर न हुआ। इसके बाद पिता ने धोखे से काम लिया। एक दिन उसने प. बर्लिन में रहने वाली कारिन की चाची को देख आने का सुझाव दिया। कारिन और उसके माता पिता प. बर्लिन पहुंचे। यहां पिता ने कारिन को स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब वे जनवादी बर्लिन (पूर्वी बर्लिन) वापस नहीं जायेंगे। बिचारी कारिन पर मानो वज्र गिरा। वह अपने पिता को, कम से कम धोखेबाज़ तो नहीं समझती थी। जब कारिन लौटने पर दृढ़ रही तो पिता ने उसको एक कमरे में ताला लगा कर बन्द कर दिया।

कारिन के पिता ने अपने परिवार को 'राजनीतिक शरणार्थी' घोषित किया था। इसलिये उनको पश्चिमी जर्मनी जाने के लिए मुफ़्त हवाई टिकट और कुछ पैसे दिये गये। ज. ज. ग. में जिस आदमी ने सरकारी पैसा ग़बन किया वही चोर, प. जर्मनी में, 'स्वतन्त्रता का योधा' की उपाधि से विभूषित हुआ। ·····रोते धोते कारिन अपने माता पिता की क़ैद में हवाई जहाज़ पर बैठी। हवाई जहाज़ जब ज.ज.ग. के आकाश में उड़ने लगा (प. बर्लिन से प. जर्मनी जाने के लिये ऐसा करना अनिवार्य है क्योंकि प. बर्लिन, ज.ज.ग. की सीमाओं के बीच में स्थित है) तो कारिन को अपना स्कूल, अपने सहपाठी, अपनी सहेलियां·····सब कुछ याद आगया! मन ही मन उसने किसी क़ीमत पर, ज.ज.ग. लौटने की दृढ़ प्रतिज्ञा की!

पश्चिमी जर्मनी का एक स्थान है बोखूम। यहीं कारिन के पिता को रेल महकमे में नौकरी दी गई, लेकिन काफ़ी कम तनख़ाह पर। रहने के लिये इस परिवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दिया गया एक साधारण कमरा जिसका किराया बहुत था। कारिन को ज.ज.ग. में आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण अपना सुन्दर घर याद आया!—कारिन स्कूल में दाखिल हुई, लेकिन यहां के गन्दे वातावरण में उसका दम घुटने लगा। स्कूल में समाजवाद और ज.ज.ग. को गालियां दी जातीं थीं। अणु-अस्त्रों और हिटलर के गुण गाये जाते थे। अफ्रो-एशिया की संघर्ष-रत जनता को 'राक्षस' और 'जंगली' कह कर पुकारा जाता था।.....कारिन उदास रहने लगी! अपने वतन लौटने के लिये वह बहुत छटपटाने लगी!

गुप्त रूप से उसने अपनी सहेलियों और सह-पाठियों से पत्र-व्यवहार शुरू किया स्वदेश लौटने के लिये। रेल का किराया जोड़ने के लिये वह एक-एक पैसा (फेनिक) बचाने लगी।.....तब एक दिन चुपके से वह ज.ज.ग. को जाने वाली एक रेलगाड़ी पर सवार हुई! लेकिन सीमा पर पहुंचकर, प. जर्मनी के पुलिस ने उसको रोक लिया और उसका टिकट छीनकर उसको वापस बोखूम लौटने के लिये कहा। कारिना अब हताश हो गई!...

सहसा कारिन की नज़र एक बड़े प्रचार पोस्टर पर पड़ी। मोटे मोटे शब्दों में इसपर लिखा था: "प्रत्येक व्यक्ति प. बर्लिन का दर्शन एक बार अवश्य करता है—स्वतन्त्रता के प्रतीक नगर का!" कारिन की निराश आंखों में अपने देश लौटने की आशा फिर से सजीव हो उठी। प. जर्मनी के पुलिस को बुद्धू बनाने की तरक़ीब वह समझ चुकी थी।

कारिन ने सोचा यदि वह किसी तरह प. बर्लिन पहुंच जाये तो वहां से ज.ज.ग. पहुंचना बहुत आसान होगा। उसने तुरन्त बोखूम का टिकट बदल कर प. बर्लिन का टिकट खरीद लिया। प. बर्लिन की सीमा पर जब पुलिस ने उसको रोका तो कारिन ने निर्भीकता से कहा: "मैं एक बार, स्वतन्त्रता का प्रतीक नगर, प. बर्लिन देखना चाहती हूं!" पुलिस खुश हुई लड़की के इस उत्तर से।—गाड़ी आगे बढ़ी। ज.ज.ग. की राज्य सीमा में प्रवेश करते ही कारिन यहां के एक स्टेशन पर बड़े इतमीनान से उतरी! वह अपने वतन की भूमि पर थी, एकदम आज़ाद!.....

अपनी सखा सहेलियों ने उसको घेर लिया। एक मज़दूर परिवार ने उसको अपनी लड़की बनाकर अपना लिया। अपने स्कूल में वह फिर से दाखिल हुई। अब परीक्षा की तैयारी कर रही है।

जों ही कारिन की उल्लिखित कहानी अखबार में छपी ज.ज.ग. के कौने-कौने से लोगों के पत्र उसके पास आने लगे। उसका धैर्य तथा साहस, उसका दृढ़ इरादा जनता की अतुल प्रशंसा का पात्र बना। क्यों न बनता? कारिन, ज.ज.ग. की जागरुक तरुण पीढ़ी का एक ज्वलन्त प्रतीक जो है!

उस आनन्दमय दिन की प्रतीक्षा में...

पीटर नाइके

अनिता और हांइज़ लिटफिन के जीवन में वह सबसे बड़ा और आनन्द दायक दिन था! डाक्टर ने जांच करके उनको बताया कि उनके घर एक मुन्ना आने वाला है! इस सूचना से, श्री और श्रीमती लिटफिन का अनुमान एक अत्यन्त सुन्दर हक़ीक़त में बदल गया!

श्रीमती अनिता लिटफिन अध्यापिका हैं और उनके पति एक सरकारी कारखाने में फोरमैन हैं। दो साल पहले उनका विवाह हुआ और उन्होंने अपने दो कमरों वाले फ्लैट को आधुनिक ढंग से सजाया। अपने इस नन्हे घर में, लिटफिन दम्पति को सभी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध थीं: रिफ्रिजिरेटर, कपड़े धोने की मशीन तथा टेलिविजन आदि! इस खुशहाल घर में केवल एक ही चीज़ की कमी थी और वह थी एक नन्हे मुन्ने बच्चे की!

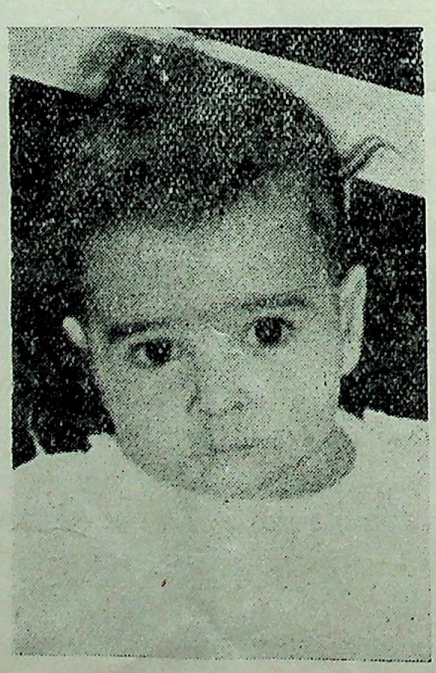

अब उनकी यह कमी भी पूरी होती नज़र आ रही है!

जर्मन जनवादी गणतंत्र में नारी अधिकारों तथा माता तथा शिशु कल्याण से संबंधित कई क़ानून, वहां की लोकसभा द्वारा पास किये गये हैं। सलाह मशविरा देने के लिये हज़ारों केन्द्र खोले गये हैं जहां गर्भवती स्त्रियों को परामर्श देने के साथ साथ डाक्टरी देखरेख के अधीन भी रखा जाता है।

इन केन्द्रों में केवल गर्भवती स्त्रियां ही सत् परामर्श नहीं लेतीं। "संभावित पिताओं" को भी यहां सलाह-मशविरा लेना पड़ता है। यही कारण है कि श्री हांइज़ लिटफिन भी एक ऐसे केन्द्र में, डाक्टरी परामर्श को ध्यान से सुनते हैं। इसी परामर्श पर अमल करने से वह अपनी गर्भवती पत्नी के आगामी महीनों की समस्याओं को आसान बना सकेगा। इतना ही नहीं। भावी माता की तरह भावी पिता के खून की भी डाक्टरी जांच होगी। यह इसलिये कि प्रसव के समय यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई जटिल स्थिति उत्पन्न हो तो जल्दी से जल्दी मां अथवा बच्चे को, अपेक्षित कोटि का खून पहुंचाया जाये।

इन ही वैज्ञानिक उपायों के कारण शिशुओं की मृत्यु-दर सन् १९४८ में ८.३ प्रतिशत से घटकर सन् १९६१ में ३.३ प्रतिशत पर आ गई। ये आंकड़े बर्लिन के गर्भवती स्त्रियों वाले परामर्श केन्द्र के पर्यवेक्षक, डा० हेनड्रिक्स ने बताये।

माता तथा शिशु कल्याण से संबंधित क़ानून के अनुसार, कोई भी गर्भवती नारी, किसी भी क़ीमत पर नौकरी से हटाई नहीं जा सकती। उसको ऐसा कोई काम दिया जाता है जो उसके योग्य हो। गर्भिनी स्त्री से छुट्टियों में तथा रात के समय काम नहीं लिया जा सकता और न ही अतिरिक्त समय का काम दिया जाता है। इस सबके अलावा उसको प्रसव के पहले पांच हफ्ते और प्रसव के बाद छः हफ्तों की सवेतन छुट्टी दी जाती है। डा० हेनड्रिक्स के मतानुसार, "इन क़ानूनों पर अमल करने से मातृ-मृत्यु की दर घटकर ९.८ प्रति १०,००० पर आ गई। यह दर और भी घटती जा रही है!"

इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी में पैदाइश की दर घट रही है और प्रति १०,००० माताओं में १५३ मातायें मौत का ग्रास बन जाती हैं।

अब हम लिटफिन दम्पति की ओर फिर आते हैं। न केवल गर्भिणी अनिता के स्वास्थ्य का ही भार ज.ज.ग. की सरकार के कन्धों पर है, बल्कि यथा समय सरकार शिशु अलाउन्स (भत्ता) देकर दम्पतिको आर्थिक सहायता भी पहुँचायेगी। ज.ज.ग. में पहले बच्चे पर ५०० मार्क, दूसरे पर ६०० मार्क, तीसरे पर ७०० मार्क, चौथे पर ८५० मार्क, और इसके बाद प्रत्येक अतिरिक्त बच्चे पर १००० मार्क, की रक़म सरकार देती है। इसके अलावा, माता पिता, कुछ करों की छूट के साथ साथ, प्रति बच्चे पर हर महीने २० मार्क का भत्ता भी उस संस्था या संगठन से प्राप्त करते हैं जिसमें वे काम करते हों।

श्रीमती अनिता लिटफिन ने एक प्रसूतिगृह में अपना नाम रजिस्टर किया है। वह यहीं अपने बच्चे को जन्म देगी। ज.ज.ग. में लगभग ९० प्रतिशत बच्चे प्रसूतिगृहों में ही जन्म लेते हैं। अनिता, इस अस्पताल के डाक्टरों, नर्सों तथा बच्चों आदि से हिलमिल गई है। प्रसव पीड़ा के समय ये सब उसकी पीड़ा को कम करने में सहायक होंगे। अन्य गर्भवती नारियों के साथ वह रोग-निरोधक पाठ भी ग्रहण करती है। रोग-निरोधन की यह पाठ-विधि महान सोवियत वैज्ञानिक पावलोव के अनुसन्धान पर आधारित है। यहां गर्भिणी नारियों को, गर्भकाल में उनके शारीरिक परिवर्तनों के बारे में बताया जाता है। भावी माताओं को कुछ व्यायाम भी सिखाये जाते हैं जिनको करने से, प्रसव-कालीन पीड़ा कम होती है और उसके बाद उनका शारीरिक सौन्दर्य और स्वास्थ्य अपनी पूर्व दशा में आ जाता है।

श्वास नियन्त्रण की विधि का अभ्यास भी कराया जाता है। यह अभ्यास भी प्रसव पीड़ा को कम करने में सहायता पहुंचाता है। प्रसवकाल के पांच हफ़्ते पहले, प्रसूति-गृह की प्रमुख डाक्टर स्वयंम गर्भिणी नारियों का चार्ज लेती है।

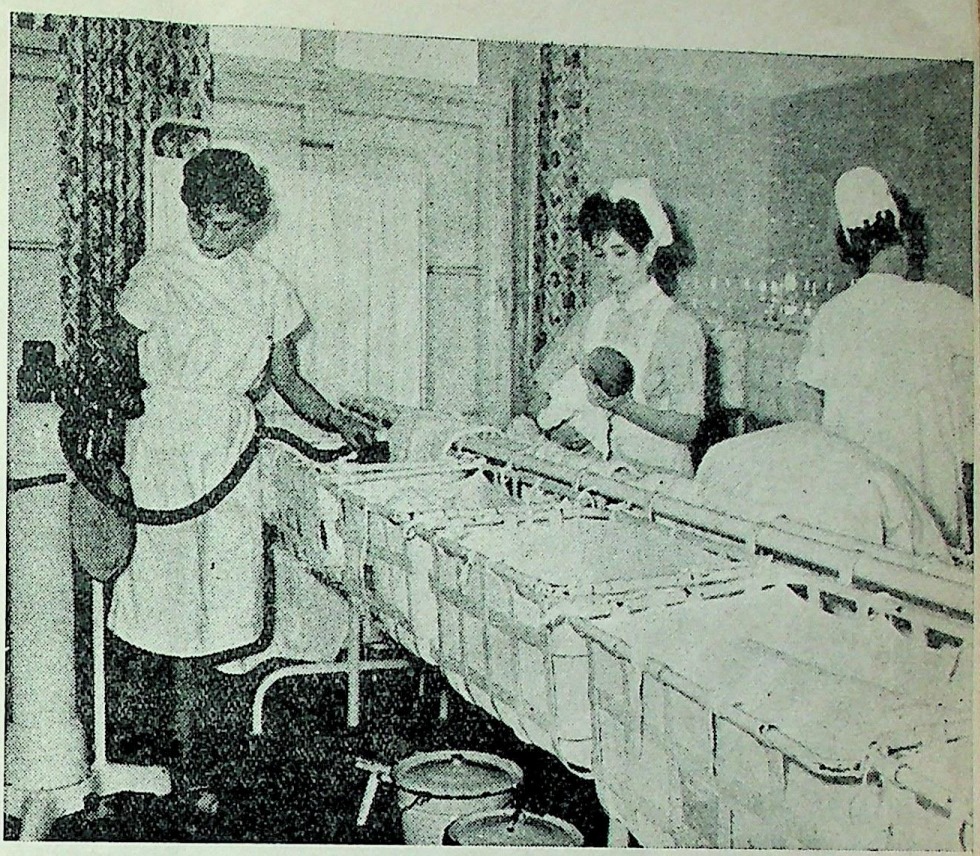

प्रसूति गृह में शिशुओं का वार्ड

इस प्रकार, अनिता लिटफिन उस सुखद और आनंदमय दिन की प्रतीक्षा कर रही है जब उसकी गोद भर जायेगी। इस महान दिन के स्वागत की तैयारी में ज.ज.ग. की समाजवादी सरकार अनिता जैसी सहस्त्रों भावी माताओं के लिये जो कुछ करती है उसके आभार प्रदर्शन के लिये उसके पास शब्द नहीं। तरुण दम्पति को अरोग्य तथा स्वास्थ्यप्रद कामों के लिये कोई पैसा खर्च करना नहीं पड़ेगा। यह सारा भार समाजवादी सरकार खुद उठाती है! इसके अलावा, ज.ज.ग. के तमाम श्रम करने वाले लोगों के, अपने अपने ट्रेड यूनियन संगठनों के सामाजिक बीमा विभाग, पूरी डाक्टरी सहायता उपलब्ध करते हैं। फलस्वरूप लिटफिन परिवार में जो नया मानव जन्म लेगा, उसके भरण-पोषण के आर्थिक भार से तरुण दम्पति सर्वथा मुक्त है। ज.ज.ग. में यह क़ानून सर्वसाधारण जनता के लिये है कुछ खास लोगों के लिये नहीं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाज़ी पाश्विकता की कहानी :

'रावेन्स्ब्रुक की गाथा'

दूसरे महा-युद्ध में जर्मनी की नाज़ी सेना ने कई स्थानों में सैनिक शिविर (कनसेण्ट्रेशन कैम्प) खोले जो वास्तव में मृत्यु-शिविर थे और जहाँ उन्होंने हज़ारों, लाखों बेगुनाह लोगों—बच्चों, बूढ़ों औरतों और मर्दों को तिल तिल कर मौत के घाट उतारा। इन शिविरों में नाज़ी दरिन्दों की कहानी, घोर पाशविकता और बर्बरता की एक अत्यन्त कटु तथा दुःखद कहानी है !

ऐसा ही एक मृत्युशिविर रावेन्स्बुक नामक स्थान में स्थित था। यह स्थान बर्लिन से अधिक दूर नहीं है। इस शिविर में औरतें और बच्चे रखे जाते थे। २३ देशों की १ लाख, ३२ हज़ार औरतें यहाँ लाई गई थीं जिनमें से नाज़ी सैनिकों के अकथनीय अत्याचार के कारण ९२००० औरतें मृत्यु का ग्रास बन गयीं। इन्हीं निर्दोष नारी बन्दियों में एक थीं हेड्डा ज़िन्नर, जो खुशक़िस्मती से जिन्दा बच गई। हेड्डा ज़िन्नर आज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की एक लेखिका बन चुकी हैं। आपको यह ख्याति मिली अपनी "राक्षस का वृत्त" नामक नाटक से जिसका वर्ण्य विषय है सन् १९३३ में फासिस्टों द्वारा राइख़ताग भवन जलाने की घटना। हेड्डा ज़िन्नर को ज. ज. ग. के दो महत्व-पूर्ण साहित्यिक पुरस्कार, 'राष्ट्रीय पुरस्कार' और 'लेस्सिंग पुरस्कार' मिल चुके हैं। जर्मनी की इस महान लेखिका की ख्याति में चार चान्द लग गये, रावेनस्बुक मृत्युशिविर के जीवन पर लिखे गये नाटक 'रावेनस्बुक की गाथा' से, जो "सन् १९६१ के बर्लिन समारोह" के अवसर पर अभिनीत हुआ। लेखिका ने इस नाटक में जहाँ एक ओर नाज़ी पाशविकता का सजीव चित्रण किया है, वहीं उन्होंने मृत्यु के खिलाफ जीवन का और फासिस्त अत्याचार के खिलाफ निर्बल तथा निहत्थी किंतु दृढ़ और वीर नारियों का अमर संघर्ष भी चित्रित किया है। 'रावेन्स्बुक की गाथा' उन महान साहित्यिक कृतियों की कोटि में आती है जिनमें, फासिस्त बर्बरता तथा नाज़ी अधिकार के विरुद्ध विभिन्न देशों में संगठित किये गये गुप्त विरोध के नायक नायिकाओं तथा शहीदों का संघर्ष चित्रित हुआ है। इस नाटक में रावेन्स्ब्रुक के मृत्युशिविर में कैद नारियों के नाज़ी अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष की गाथा चित्रित होकर अमर हुई है।

बाईं से दाईं ओर : 'वीरा' (रूसी बन्दी) 'मारिया' (जर्मन) 'डाक

'रावेन्स्ब्रुक की गाथा' का एक दृश्य। मुक्ति की गुप्त शुभ सूचना मिली है इनको

'रावेन्स्ब्रुक की गाथा' की कहानी सन् १९४५ के वसन्त से शुरू होती है। सोवियत यूनियन की बन्दी नारियां, हिटलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

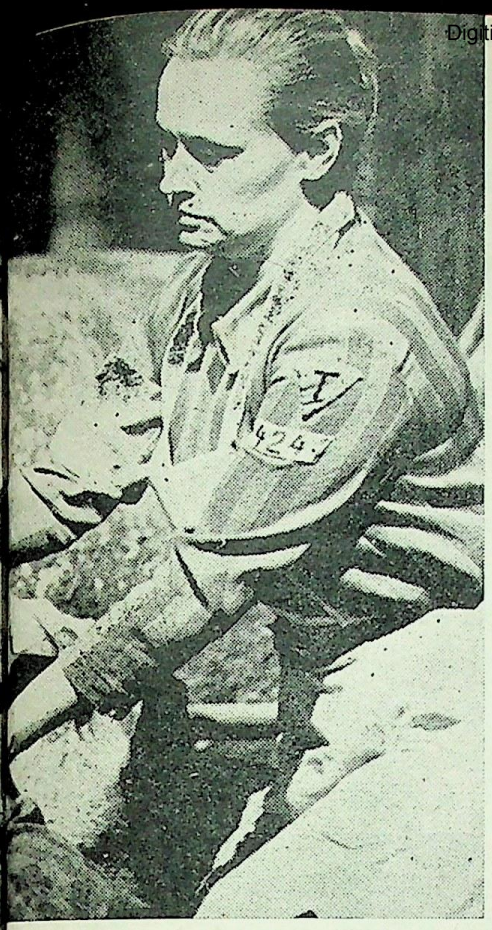

'मारिया' (जर्मन) डाक्टर (चेकोस्लोवाकिया बंदी)

की फासिस्त सेना के लिए युद्ध सामग्री बनाने से इन्कार करती हैं। अन्य बन्दी भी इस वीरतापूर्ण क़दम का अनुसरण न करें इसके लिये तीन नारियों को सब के सामने फांसी देने का हुक्म होता है। इनमें से एक 'वीरा' बच कर शिविर के एक अन्य बन्दी की शरण जाती है। शरण देने वाली है चेकोस्लोवाकिया की एक ज़नाना डाक्टर! डाक्टर की एक साथी है जर्मन बन्दी 'मारिया' जो गुप्त संघर्ष में डाक्टर का विश्वास पात्र है। 'वीरा' को शरण देने का मतलब है सभी रोगी बंदियों का जीवन ख़तरे में डालना।

'वीरा' की वेश भूषा बदल कर उसको पोलैण्ड की एक बंदी नारी का नाम और अंक दिया जाता है जो उसी दिन मर चुकी है।···सारे शिविर पर आतंक और भय छा जाता है। संघर्ष की वीर सेनानियों के सामने अपने शत्रु-विरोधी गुप्त मोर्चे की कुछ खामियां आ जाती हैं जिनमें से एक बड़ी खामी यह थी कि फासिस्त अधिकारियों ने उनके बीच अपराधी और समाज विरोधी मनोवृत्ति की बन्दी औरतें रख दी थीं जासूसी करने के लिये।

इन कठिनाइयों के बावजूद बन्दी वीरांगनाओं का शत्रु विरोधी गुप्त मोर्चा टूटता नहीं।···'वीरा' का बच निकलना फासिस्तों के मुंह पर एक करारा तमाचा था। उसको ढूण्ढ़ निकालने के लिये 'गेस्टापो' तथा अन्य फासिस्त संस्थायें अपना पूरा दमनचक्र चालू करती हैं। नारी बंदियों पर अमानुषिक अत्याचारों का पहाड़ टूटता है। इसी बीच 'एल्लन' नाम की एक बंदी शिविर में लाई जाती है। राजनीति से उसका दूर का भी वास्ता नहीं। वह गायक है और एक गीत गाने के लिये, जिसे फासिस्त अत्याचारी नाज़ी नेता 'गोइबेल्लज़' के खिलाफ समझते हैं—उसको बंदी बनाया जाता है। मृत्यु-शिविर के दमित वातावरण में भय और अहंकार की भावनायें 'एल्लन' को, विश्वासघात की ओर बढ़ाती हैं। लेकिन समाज से ठुकराई गई और प्रताड़ित इस नारी को जब 'वीरा' का मानवीय प्यार और विश्वास मिलता है तो पारस के स्पर्श से पत्थर सोना बन जाता है। 'एल्लन', 'वीरा' को शिविर के आततायी नाज़ी सैनिकों की पकड़ से दूर रखने की प्रतिज्ञा करती है। लेकिन दुर्भाग्य से क्रूर नाज़ी 'वीरा' को पकड़ने में सफल हो जाते हैं। शिविर के बच्चों तथा नारियों को बचाने के लिये 'वीरा' अपना बलिदान देती है, दुष्ट नाज़ियों की गोलियां अपने सीने पर धारण करके।···

'रावेन्स्ब्रुक की गाथा' नामक उक्त नाटक, हेड्डा ज़िन्नर की शक्तिशाली लेखनी तथा अनुभूत भावनाओं की एक सजीव कृति है जिसमें मानवीय मूल्यों तथा अमानुषिक अत्याचारों का द्वन्द्व तथा संघर्ष बहुत ही सुन्दर रूप में अभिव्यक्त हुआ है। इसके अलावा रावेन्स्ब्रुक का मृत्यु-शिविर, मृत्यु के विरुद्ध जीवन का और फासिस्त दमन के विरुद्ध स्वतंत्रता का एक ज्वलन्त प्रतीक है!

वाचनालय, गुरुकुल

जर्मन फासिस्त पुलिस के बर्बर दमन से 'एलिन' के सामने विश्वासघाती होने के अलावा कोई उपाय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

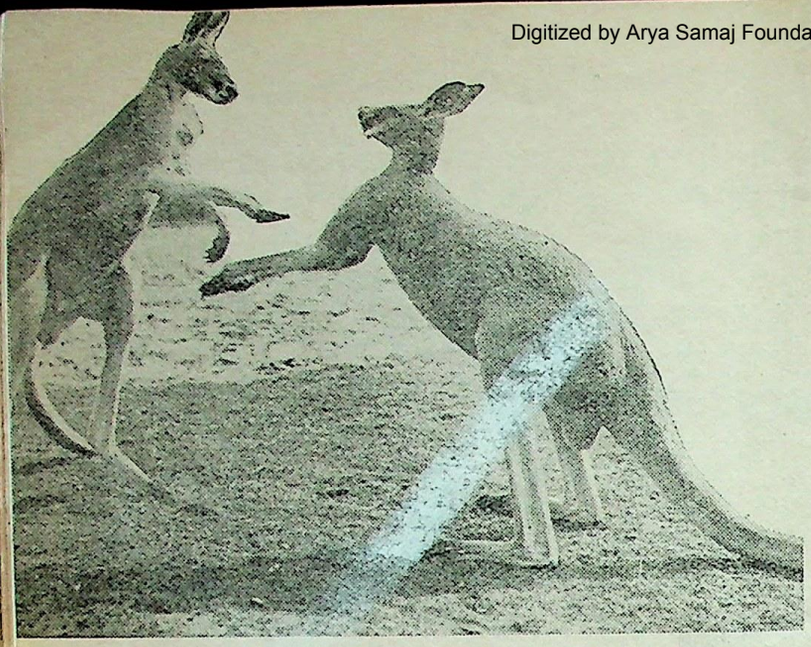

'आव दोस्त अब सुलह करें'—आस्ट्रेलिया के कंगरू एक दूसरे से कह रहे हैं

बर्लिन का चिड़िया-घर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में यहां का प्रसिद्ध चिड़िया-घर स्थित है जो पूर्व और पश्चिम के जर्मन निवासियों में बहुत लोकप्रिय है। इसका उद्घाटन हुआ सन् १९५५ में। जनवादी बर्लिन में पहले कोई चिड़िया-घर नहीं था; इसलिये जब चिड़िया-घर बनाने की योजना तैयार हुई तो यहां की जनता ने इसका हार्दिक स्वागत किया। चिड़िया-घर निर्माण एक बृहत् योजना थी। जब अधिकारियों ने इस योजना को सफल बनाने के लिये अपील की तो ५ वर्षों में बर्लिन वासियों ने, ६०५,००० घण्टों का श्रमदान किया। इस तरह १९ लाख मार्क की धनराशी की भी बचत हुई। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत रूप में, लोगों ने और स्कूलों, संस्थाओं तथा सांस्कृतिक संगठनों ने दिल खोल कर १६ लाख मार्क की रक़म का दान भी दिया।

उक्त चिड़िया-घर, २८८ एकड़ भूमि पर फैला है। इसमें ३०० पशु-पक्षी निवास करते हैं जिनमें कई विदेशी मित्रों ने दिये हैं। चिड़िया-घर के निदेशक डा. डाथे तथा अन्य कर्मचारियों ने यहां के निवासियों के लिये अलग अलग अनुकूल वातावरण उपस्थित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

इस चिड़िया-घर की सबसे बड़ी उपलब्धि है सन १९६१ में, विशेष प्रकार के एक जल-पक्षी 'पेलिकन' और मलाया के भालू का पालन पोषन करना। जीव-विज्ञान की दृष्टि से यह सफलता विश्व महत्व की समझी जाती है।

चिड़िया-घर, बर्लिन निवासियों का एक अत्यंत लोकप्रिय मनोरंजन-स्थल है। प्रत्येक रविवार को हज़ारों लोग यहां छुट्टी मनाने आते हैं।

जनवादी वीयतनाम के अध्यक्ष होची-मिन्ह, पोलैण्ड के प्रधानमंत्री, प्रसिद्ध जीव-विज्ञानी प्रोफेसर चाऊ ची-शाऊ जैसे महानुभाव, इस चिड़िया-घर का भ्रमण कर चुके हैं।

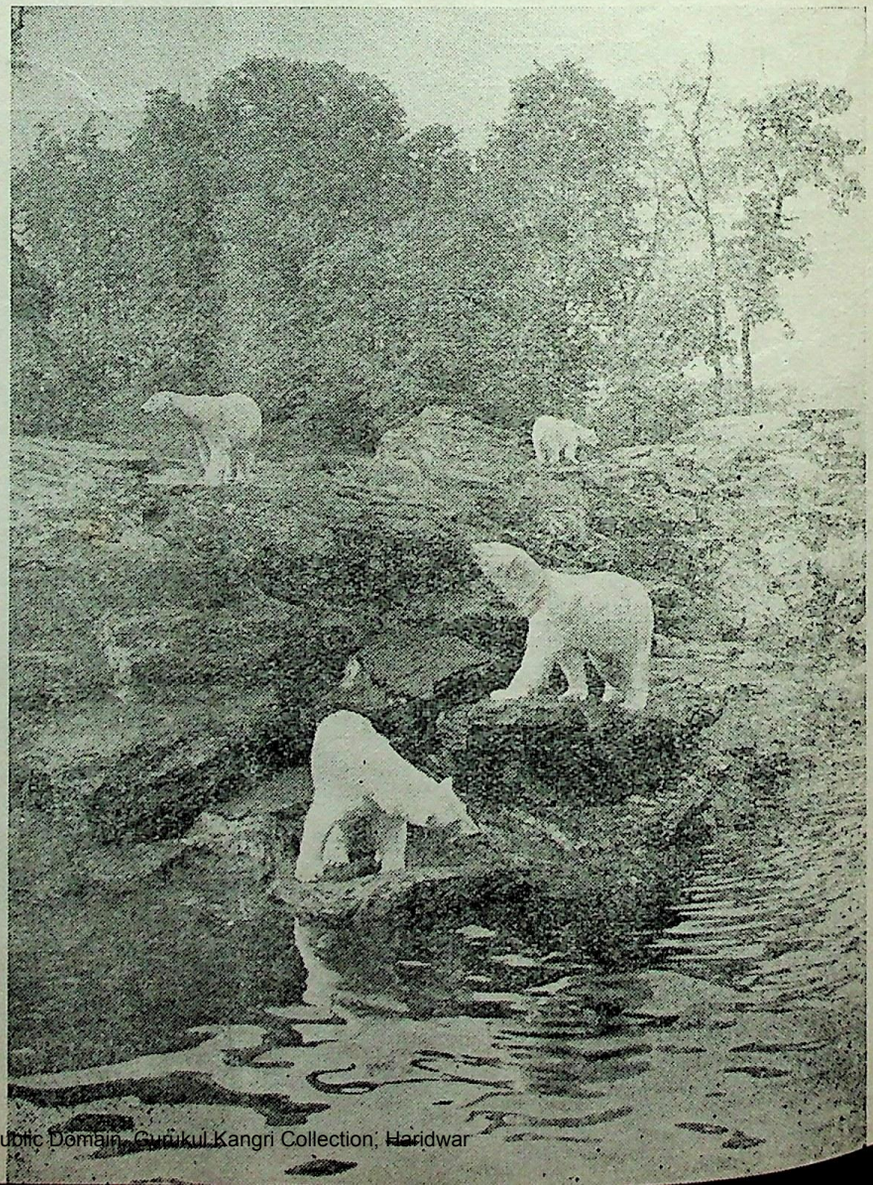

ध्रुव प्रदेशीय भालुओं का सुन्दर कक्ष जो चट्टानों को काटकर बनाया गया है और जहां २६०० क्यूबिक गज़ का एक विस्तृत जलाशय है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

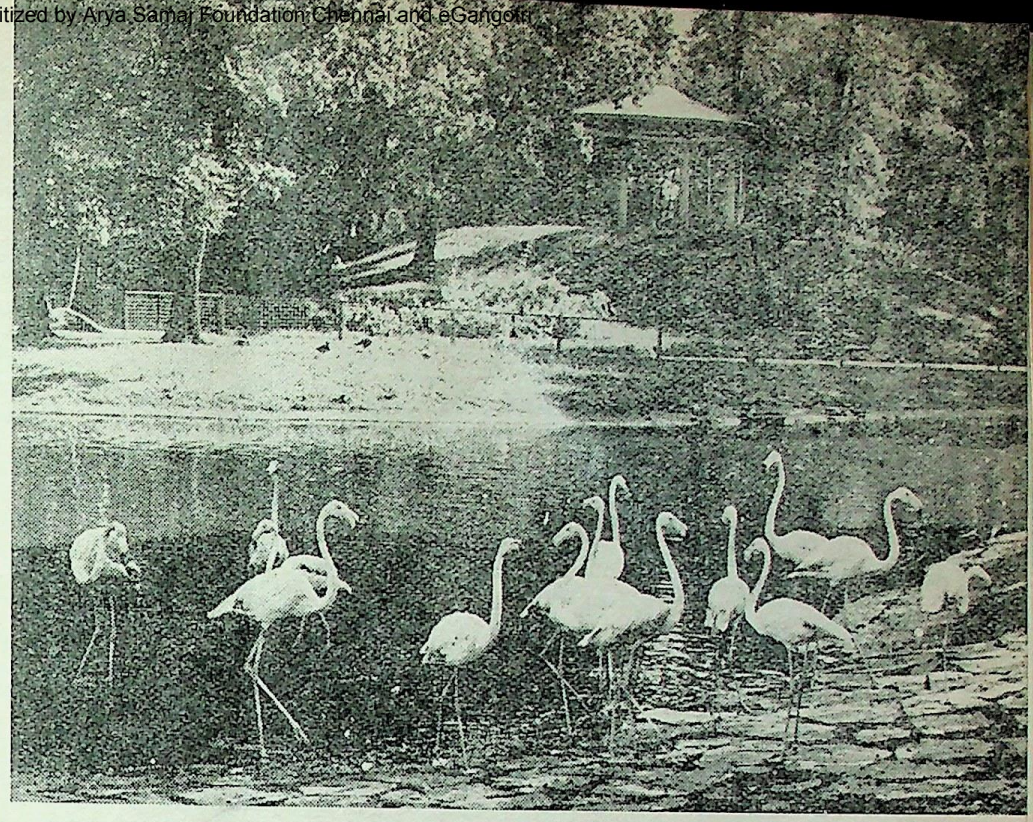

सारस पक्षी जल विहार कर रहे हैं। हाल ही में क्यूबा के दो मित्र भी इनमें आ मिले हैं

बच्चों का प्रिय पशु—अंगोला का जिराफ जिसको खरीदने के लिये उन्होंने पैसे खुद इकट्ठे किये

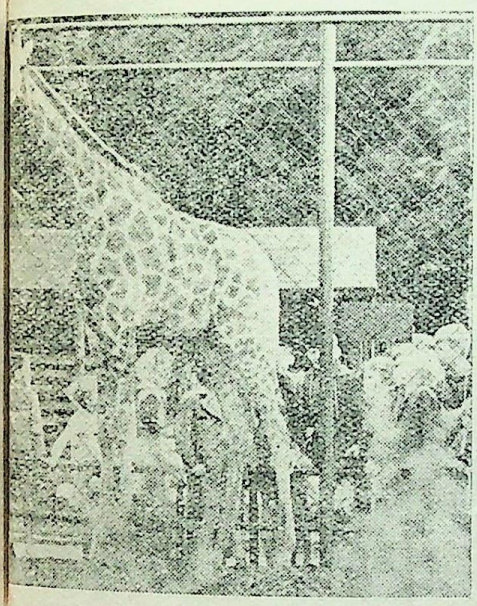

हत्थिनी 'कारला' अपने नटखट बच्चे के साथ

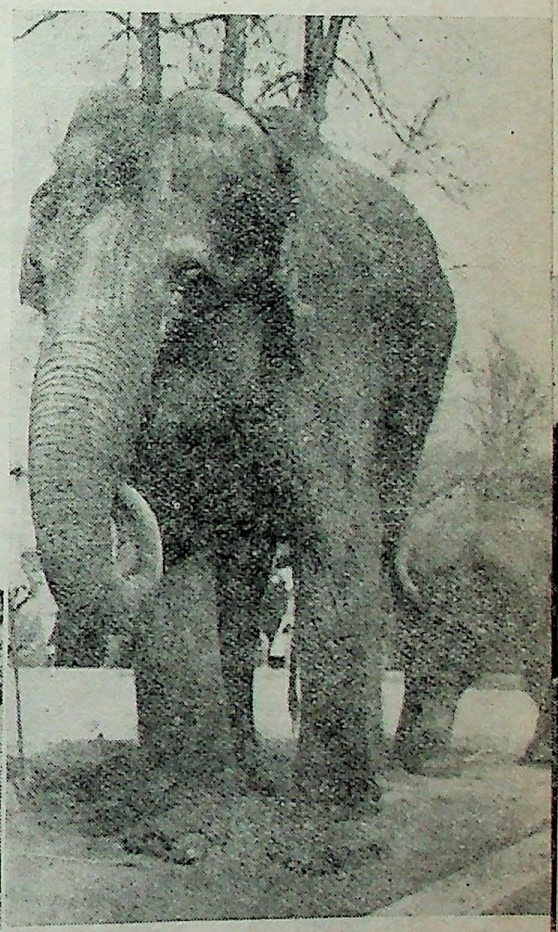

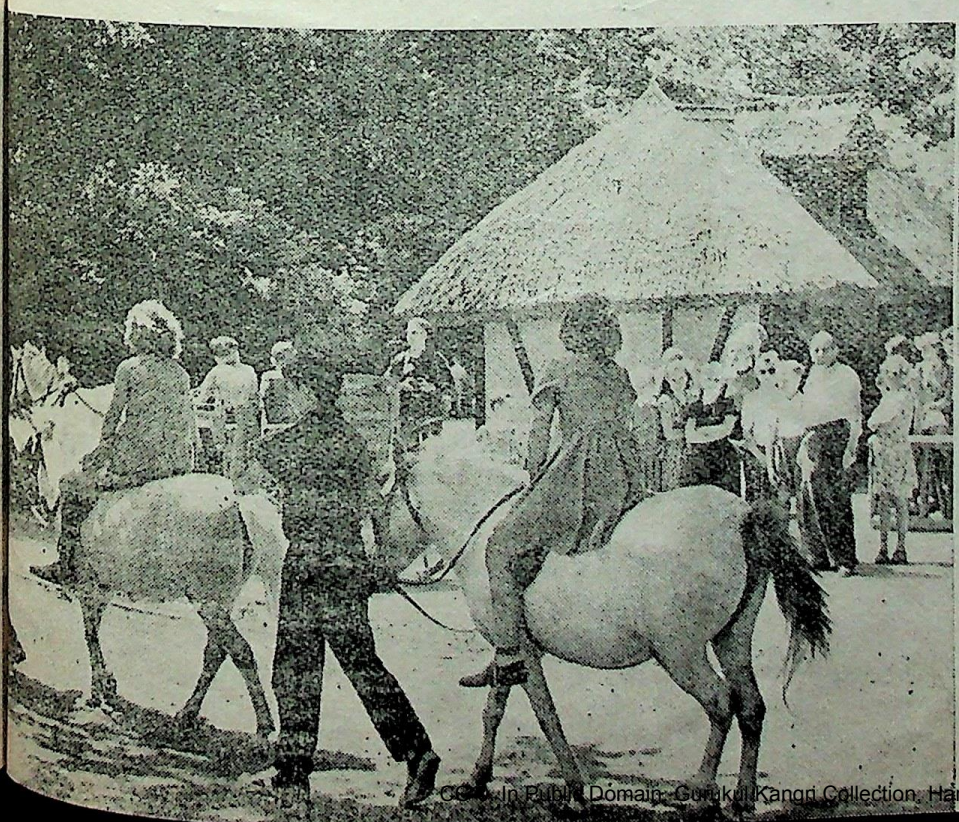

वाह! घोड़े की सवारी में कितना आनन्द आता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वृहत् अनुसन्धान केन्द्र

पीटर नीके

बर्लिन के दक्षिण पूर्व में, आडलर्स-शोफ नाम का क्षेत्र, ज. ज. ग. की 'आँख' कहलाता है, क्योंकि यहां का टेलिविजन केन्द्र यहीं स्थित है। इसके अतिरिक्त यहां जर्मन विज्ञान अकादमी भी है और यह स्थान ज.ज.ग. में होते हुये अनुसन्धान का सर्वप्रमुख केन्द्र भी है।

यह विश्व प्रसिद्ध अनुसन्धान केन्द्र, जर्मन विज्ञान अकादमी की कई संस्थानों पर आधारित है और दस हज़ार वर्ग मीटर से भी अधिक क्षेत्र पर फैला हुआ है। केन्द्र के मुख्य भवन पर दैत्याकार रेडियो टेलिस्कोप विराजमान है जिसका व्यास ३६ मीटर, यानी ४० गज़ है। अनुसन्धान से संबंधित अनेक संस्थानों के अधिकांश भवनों का निर्माण दूसरे महायुद्ध के बाद ही हुआ है—विशेषकर पिछले ६ वर्षों में। कई अन्य भवन आज भी बन रहे हैं। दो प्रयोगशालायें, हाल ही में बनकर तैयार हुई हैं।

अनुसन्धान केन्द्र के मुख्य भवन में श्री विट्टब्रोट हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। डा. विट्टब्रोट अनुसन्धान केन्द्र के वैज्ञानिक मंत्री हैं। वैज्ञानिक और मज़दूर, आपस के सहयोग से किस प्रकार नई टेकनालोजी को पूरे ज.ज.ग. में कार्यान्वित करते हैं, डा. विट्टब्रोट हमको यही करिश्मा दिखाना चाहते थे। देश के उत्पादन को बढ़ाने के लिए, टेकनालोजी का निरन्तर विकसित होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी होता है।

केन्द्र के सभी संस्थानों में ऐसे विषयों पर अनुसन्धान हो रहा है जो राष्ट्र के आर्थिक जीवन की प्रगति में सहायक हो सकें। डा. विट्टब्रोट बोले, "हमारे वैज्ञानिकों का सिद्धान्त और व्यवहार अलग नहीं, बल्कि वे एक दूसरे के पूरक हैं। उनमें से कई प्रसिद्ध वैज्ञानिक हमारे बड़े-बड़े कारखानों में विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं के रूप में काम करते हैं।" उदाहरण के लिए विश्व विख्यात ज़ाइस तथा ब्यूना कारखानों के संचालक हैं (क्रमशः) डा. श्रेड और प्रो. नेल्लेस। ये दोनों वैज्ञानिक ज.ज.ग. के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से विभूषित हो चुके हैं।

"सन् १९६२ में, आर्थिक परियोजना के अन्तर्गत, वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिये १ अरब, २१ करोड़ मार्क की धनराशि उपलब्ध कर दी गई है," डा. विट्टब्रोट बोले, "इस भारी रक़म से हमारे देश के आर्थिक उत्पादन में वृद्धिहोना अनिवार्य है।"

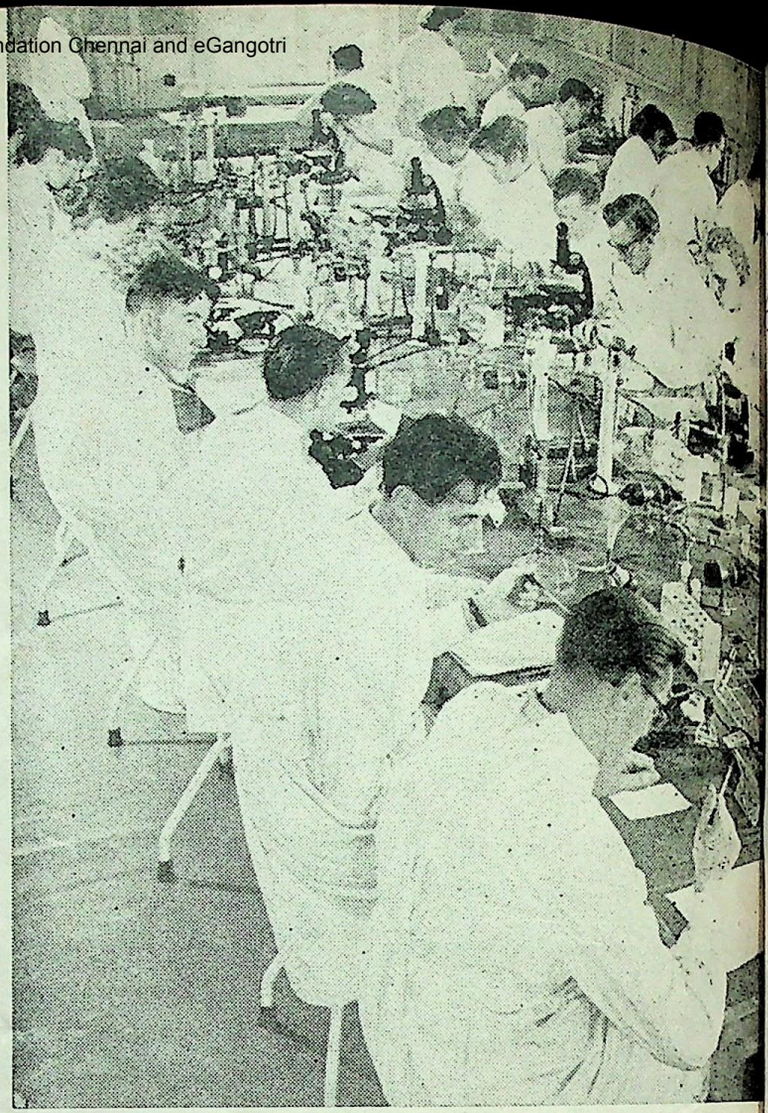

ज.ज.ग. में, विज्ञान के हज़ारों शोधार्थी अनुसन्धान में लगे हुये हैं

हाल ही में प्रो. मानफ्रेड बोन आर्डेने ने अपने संस्थान में, धातु काटने का एक विलक्षण यन्त्र ईजाद किया। धातु काटने वाला यह यन्त्र विद्युत प्रकाश की प्रचण्ड ज्वाला के आकार का है (आर्क-प्लास्मा फ्लेम कट्टर)। इस यन्त्र से निःसृत ज्वाला का तापमान १५०० दर्जे सेन्टिग्रेड तक पहुँच सकता है, और यह मोटी से मोटी इस्पात की चादर को मिनटों में काट सकता है। लोहे की मज़बूत चादरों को काटने में जहां पहले ८ घण्टे का समय लगता था, उक्त यन्त्र से अब वही काम केवल १० मिनट में होता है। धातु काटने के अतिरिक्त इस यन्त्र से धातुओं को पिघलाना, उनको वाष्प में तबदील करना, आदि जैसे काम भी लिये जाते हैं।

इस महत्वपूर्ण ईजाद से, प्रो. आर्डेने, उनका इंजीनियर रोगेनबक और प्रयोग-मेकानिक पोखर्ट, तुरन्त इस नतीजे पर पहुंचे कि कारखानों में प्लास्मा फ्लेम कट्टर के प्रयोग से उत्पादन में काफी वृद्धि होगी। जर्मन टेलिविजन दर्शकों के सामने उन्होंने अपने यन्त्र का प्रदर्शन भी किया। इसके बाद देश के ६० बड़े-बड़े कारखानों के १५०० विशेषज्ञों तथा इंजीनियरों को बुलाकर उनको यन्त्र के नक़शे और काम आदि समझा दिये गये। फलस्वरूप आज ज.ज.ग. के अधिकांश कारखानों में प्लास्मा फ्लेम कट्टर का इस्तेमाल होता है।

अनुसन्धान केन्द्र के विभिन्न संस्थानों को देखते हुये डा० विट्टब्रोट के हमराह हम हाई वैक्यूम टेक्नालोजी वाले संस्थान में पहुंचे। यहां, अभी अभी एक बहुत बड़े वैक्यूम पम्प की ईजाद हुई है। इस पम्प का नाम है 'रूट्स पम्प' इस के प्रयोग से

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

जर्मनी में टेलिविजन

मारलीने फेसपर

जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्थित 'हर्त्स' पर्वत माला के दामन में कुइडलीनबुर्ग नाम का, एक हजार साल पुराना एक अत्यन्त रमणीय स्थान है। यहां की सांकरी गलियां, बाजार-चौक का विश्वप्रसिद्ध 'फव्वारा', और दूर खड़ा एक मध्यकालीन दुर्ग, कुइडलीन-बुर्ग की पुरातनता की मानो घोषणा करते हैं। लेकिन काल-चक्र के हाथों ने इस रमणीय क़स्बे को अछूता नहीं रहने दिया। प्राचीन गॉथिक वास्तु-कला के बने हुये यहां की छतों पर नज़र आते टेलिविजन के अनेक रेटिना इस बात के साक्षी हैं। ज.ज.ग में टेलिविजन हर छोटे बड़े क़स्बे और गांव में पहुंच चुका है। प्राचीन और अर्वाचीन के इस संगमस्थल, कुइडलीनबुर्ग में, ज.ज.ग. के टेलिविजन व्यवसाय ने अपनी दसवीं वर्षगांठ मनाई।

टेलिविजन का कार्यक्रम न केवल यहां ही, बल्कि पश्चिमी जर्मनी में भी बहुत लोकप्रिय है। बर्लिन-आडलर्सहोफ का गगनचुम्बी टेलिविजन टावर, जिसकी शिखा पर लाल बतियां जगमगाती हैं, ज.ज.ग. के टेलिविजन का प्रतीक है। यह टेलिविजन केन्द्र, एक छोटा मोटा शहर है जिस में खूब हलचल रहती है। यहां के कर्मचारी दिन रात कार्यरत रहकर लोगों के देखने के लिये कार्यक्रम तैयार करते हैं। ये कार्यक्रम बहुत रोचक होते हैं। सारी जर्मनी में इन कार्यक्रमों की रोचकता ही लोकप्रियता का रहस्य है। बीसियों अभिनेताओं, विशेषज्ञों, तथा अन्य ऐसे ही लोगों के अतिरिक्त, ज.ज.ग. के इस टेलिविजन केन्द्र में, कार्यक्रमों को रोचक बनाने के लिये हज़ार से अधिक कर्मचारी काम करते हैं।

टेलिविजन स्टेशन में अत्याधुनिक ढंग के आठ टेलिविजन स्टूडियों हैं जहां निरन्तर रिहर्सल होते रहते हैं, कैमरे काम करते हैं, और नाटकों की तैयारियां होती रहती हैं। घण्टी बजते ही सम्पादक, व्यवस्थापक, कैमरामैन, उद्घोषक आदि अपना अपना काम संभालते हैं। ज.ज.ग. में ५० प्रतिशत टेलिविजन कार्यक्रम, दर्शाये जाने वाले विषयों के संबंधित क्षेत्रों से सीधे दर्शकों तक लाये जाते हैं, जैसे खेल के मैदान से, किसी कलाभवन या नाट्यशाला से या वैज्ञानिक प्रयोगशाला इत्यादि से। टेलीविजन का कार्यक्रम लगभग १० से १२ घण्टे रोज चलता है जो राजनीति, अर्थशास्त्र, संस्कृति, विज्ञान, मनोरंजन, नाटक, बाल, युवक, नारी आदि अनेक विभागों में बटा हुआ है। रात की शिफ्ट में काम करने वाले मज़दूरों के लिये प्रातःकाल में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन होता है जिसमें रोज़मर्रा की राजनीतिक सूचनायें, कोई नवीनतम फिल्म या वैज्ञानिक घटनायें दिखाई जाती हैं। मध्याह्न के बाद, नारियों और बच्चों का कार्यक्रम होता है। टेलिविजन का रसोइया, गृहनियों को नई ज़ियाफतें बनाना सिखाता है तथा दर्ज़ी, कपड़े सीना पिरोना सिखाता है। दो से चार बजे शाम तक नवीननतम फिल्में दिखाई जाती हैं।

बच्चों के टेलिविजन कार्यक्रम इतने रोचक होते हैं कि वयोवृद्ध लोग भी बड़े चाव से उनको देखते हैं। सायंकाल साढ़े सात बजे सामयिक घटनाओं पर टिप्पणियां प्रस्तुत की जाती हैं जिनका संबंध अन्तर्राष्ट्रीय, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्थानीय अथवा खेलकूद आदि क्षेत्रों से होता है।

रात के कार्यक्रम में, ब्रेख़्त तथा वाल्टर फेलज़ेनश्टाइन जैसे विश्वप्रसिद्ध लेखकों के नाटक और प्रहसन दर्शाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इस कार्यक्रम में जासूसी नाटक, जाज़ नृत्य, क्लबघरों का हल्का फुल्का मनोरंजन भी टेलिविजन द्वारा लोगों तक पहुँचाया जाता है। रात के इस कार्यक्रम में "अन्तर आत्मा का विद्रोह" अथवा "नरक से पलायन" जैसी सुन्दर और नाटकीय फिल्में भी दिखाई जाती हैं। संक्षेप में ज. ज. ग. का सम्पूर्ण टेलिविजन कार्यक्रम मनोरंजक तथा रोचक होने के साथ-साथ उच्च स्तर का और लाभदायक भी होता है!

बर्लिन-आडलर्सहोफ के हमारे टेलिविजन केन्द्र में रोज़ाना दर्शकों के सैकड़ों प्रशंसात्मक पत्र आते हैं। साथ ही जागरूक दर्शक, आलोचना और रचनात्मक सुझाव भी हमारे समाने रखते रहते हैं। टेलिविजन में काम करने वाले कलाकारों तथा अन्य लोगों का, अपने दर्शक-आलोचकों से ऐसा सजीव संपर्क ही, ज. ज. ग. के टेलिविजन की लोकप्रियता का दृढ़ आधार और उनकी प्रेरणा का अक्षय स्रोत है!

एक हज़ार साल पुराना 'कुइडलिनबुर्ग'

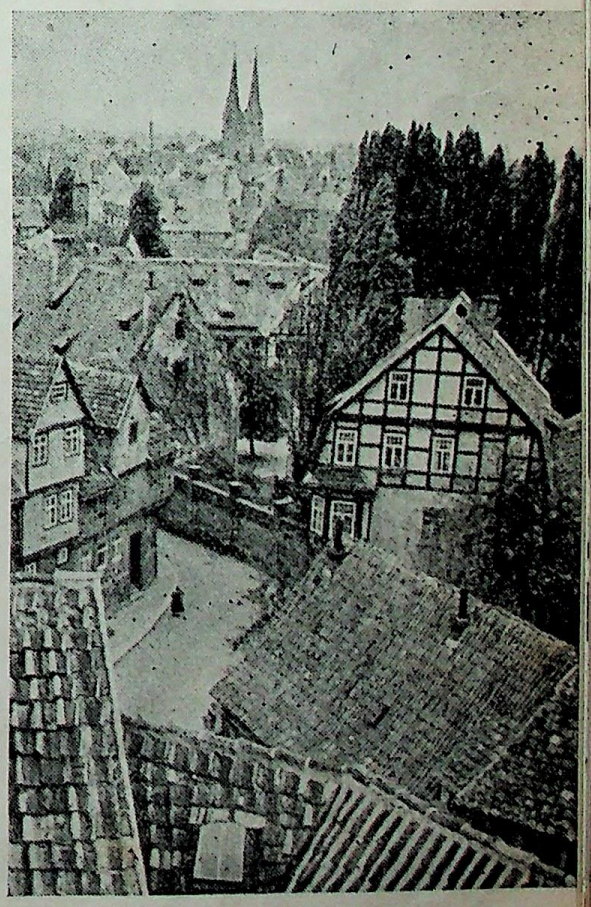

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक श्रद्धांजलि

७ जून, सन् १९६२ के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, बर्लिन में, डा० के० एम० अशरफ का देहान्त हुआ। स्वर्गीय अशरफ, हम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन के भारतीय इतिहास विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर पिछले दो वर्षों से आसीन थे।

डा. अशरफ का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। इसके बावजूद वह विलक्षण प्रतिभा के विद्यार्थी थे। अपनी इसी प्रतिभा के कारण अलवर राज्य ने उनको छात्रवृत्ति प्रदान की, और वह उच्च शिक्षा के लिये विलायत चले गये। दो वर्षों के गहन अनुसन्धान के बाद उनको पी. एच. डी. की उपाधि मिली। उनके अनुसन्धान का विषय था: "सन् १००० से सन् १५२६ तक, हिन्दुस्तान के निवासियों की सामाजिक तथा आर्थिक दशा" स्व. अशरफ का यह पाण्डित्यपूर्ण। शोध-प्रबन्ध भारत के मध्ययुगीन इतिहास के शोधकार्य में, आज भी मील पत्थर की हैसियत रखता है।

डा. अशरफ की प्रतिभा केवल अध्ययन तथा अनुसन्धान तक ही सीमित नहीं रही। विद्यार्थी जीवन में ही वह भारत मुक्ति आन्दोलन के घनिष्ठ संपर्क में आ चुके थे। जब महात्मा गान्धी ने, असहयोग आन्दोलन का श्री गणेश किया तो विद्यार्थी अशरफ, विश्वविद्यालय छोड़कर संघर्श में कूद पड़े। उस समय वह केवल १९ वर्ष के थे। उक्त आन्दोलन की समाप्ति पर वह पुनः अलीगढ़ विश्वविद्यालय में दाखिल हुये, जहां वह एक अत्यन्त सक्रिय विद्यार्थी नेता बने।

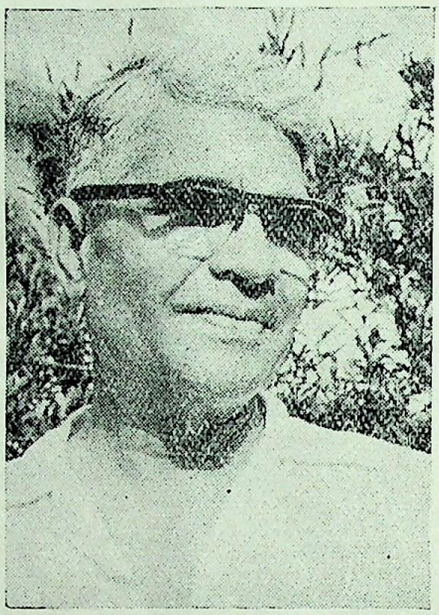

अपना शोध कार्य समाप्त करके, डा. अशरफ, सन् १९३७ में भारत लौटे। उस समय भारत का स्वतंत्रता संग्राम नई ऊंचाइयों को छू रहा था। डा. अशरफ इस संग्राम में कूद पड़े, और देखते ही देखते, इण्डियन नेशनल कांग्रेस में एक ऊंचे स्थान पर पहुंचे। राष्ट्रीय आन्दोलन के आदर्शों तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ आस्था, सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या, साम्प्रदायकता के विष को जड़ से उखाड़ने का संकल्प——ये ही गुण थे जिन्होंने एक ओर तो स्व. अशरफ को भारतीय जनता में लोकप्रिय बनाया, लेकिन दूसरी ओर, साम्प्रदायिक तथा घोर प्रतिक्रियावादी तत्वों के क्रोध और घृणा का पात्र भी बनाया।

इंग्लैंड निवास के दिनों में डा. अशरफ मार्क्सवादी दर्शन और समाजवादी तत्वों के सक्रिय संपर्क में आये थे। समाजवादी आदर्शों तथा सिद्धान्तों से वह इतने प्रभावित हुये थे कि भारत में अपनी चर्म लोकप्रियता के समय में वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनने में रंचमात्र भी न हिचकचाये। इन आदर्शों तथा सिद्धान्तों के प्रति वह अन्तिम श्वासों तक वफ़ादार रहे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद, स्व. अशरफ, सन् १९४९ में अपनी चिकित्सा के लिये विलायत गये। वहां से लौट कर वह सक्रिय राजनीति से अलग रहकर केवल गहन अध्ययन में जुट गये। कई वर्ष वह काश्मीर में रहे और वहां काश्मीर राज्य के अनुसन्धान विभाग में काश्मीर के प्राचीन इतिहास का अध्ययन करते रहे।

हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में, स्व. अशरफ, अपने विद्यार्थियों तथा विद्वानों में समान रूप से लोकप्रिय थे। उनकी अप्रत्याशित मृत्यु से ज.ज.ग. को और विशेषकर उनके विद्यार्थियों, सहयोगियों तथा मित्रों को, एक अकथनीय क्षति हुई जो शायद ही कभी पूरी की जा सके।

स्वर्गीय अशरफ ज.ज.ग. और भारत की जनता के बीच घनिष्टतम मित्रता के इच्छुक थे। वह दोनों देशों के सांस्कृतिक तथा आर्थिक रिश्तों को धृढ़ बनाने के लिये निरन्तर काम करते रहे। हमारी 'सूचना पत्रिका' इस सहयोग तथा मैत्री की एक महत्वपूर्ण, मूर्तिमान कड़ी है। आज, इस दुःखद अवसर पर, 'सूचना पत्रिका' दिवंगत आत्मा की पुण्य स्मृति में अपनी शोकाकुल श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पत्र

श्रीमान जी,

मुझे आपकी इस मास और पिछले मास की 'सूचना पत्रिका' मिली। जर्मन जनवादी गणतंत्र के निःशस्त्रीकरण के लिये किये जा रहे प्रयत्न प्रशंसनीय हैं। भगवान करे वह अपने प्रयत्नों में सफल हो और दुनिया को शांति प्रदान करे। भारत और जर्मनी के मैत्री-पूर्ण संबंध बहुत ही प्रशंसनीय हैं। ... 'पत्रिका' में विशेषकर 'हम जर्मन सीखते हैं' नामक पाठ बहुत ही लाभप्रद हैं और मैं उसका अभ्यास भी करता हूं।

आपका

दर्शन कुमार भाटिया

अमृतसर

प्रिय महोदय,

सब से प्रथम तो मैं आप से यही कहूंगा कि आपकी 'पत्रिका' शीघ्रातिशीघ्र लोकप्रिय हो। 'पत्रिका' ज.ज.ग. के विषय में अद्वितीय ज्ञान बढ़ाती है।...

गत मास 'सूचना पत्रिका' के पाठकों के सम्मेलन में जो ५ सुझाव रखे गये हैं और उन सुझावों को कार्यान्वित करने के लिये जो आश्वासन व्यापार दूतावास के उप-प्रमुख ने दिये हैं, उनके प्रति मैं आभारी हूं। लेकिन मेरी भी सम्मति है कि पत्रिका में पाठकों के प्रश्नोत्तर का भी एक स्तम्भ रखा जाये जिससे पाठकों को और भी ज्ञानार्जन करने का सुअवसर प्राप्त हो। ...

श्री हरिजन मन्दिर,

पटना-७

आवश्यक सूचना

इस बात का फैसला किया गया है कि अगस्त, सन् १९६२ से 'सूचना पत्रिका' निशुल्क न रहकर, दाम पर बेची जायेगी। इच्छुक पाठक, निम्न फार्म भरकर हमारे पास, चन्दा सहित भेज दें, ताकि 'पत्रिका' आपके पास यथावत आती रहे। चन्दे की दर इस प्रकार होगी: वार्षिक २ रू०; अर्ध-वार्षिक १ रू०; एक प्रति २० न. पै.।

सेवा में

सम्पादक,

सूचना पत्रिका,

१२, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली

महोदय,

मैं 'सूचना पत्रिका' का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूं। इस हेतु अपना वार्षिक। अर्ध-वार्षिक चन्दा, मनी आर्डर/नक़द पोस्टल आडर द्वारा भेज रहा/रही हूं।

भवदीय

पूरा नाम

तिथि.....

पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH—हम जर्मन सीखते हैं

(Lektion XIX—पाठ उन्नीस

Das Bildungswesen in der Deutschen Demokratischen Republik —जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा प्रणाली

Anlässlich des "Tages des Lehrers", der in jedem Jahr am 12. Juni stattfindet, wurde in einer Schule der DDR ein Forum zum Thema "Das Bildungswesen in der DDR" veranstaltet. Viele ausländische Gäste, die sich besonders für dieses Problem interessieren, sind gekommen. Die Gäste werden von einem Lehrer begrüsst. Nach einem kurzen Vortrag über das Bildungswesen der DDR haben die Gäste die Möglichkeit, Fragen zu stellen, die von Lehrern beantwortet werden. Ein Gast aus Indien fragt: "Gibt es in der DDR eine allgemeine Schulpflicht, und wer finanziert das Bildungswesen?"—"Ja, jedes Kind muss vom sechsten Lebens-Jahr ab die Schule besuchen. Grosse finanzielle Mittel sind schon zur Verfügung gestellt worden und werden jährlich von unserer Regierung zur Unterstützung des Bildungswesens zur Verfügung gestellt" Ein Gast aus dem Irak will wissen: "Wie lange gehen die Kinder in die Schule, uud welche Schulen gibt es in der DDR?" Ein Vertreter des Volksbildungsministeriums antwortet: "Ab 1962 muss von allen Kindern die polytechnische Oberschule besucht werden. Sie gehen dann 10 Jahre zur Schule. Es gibt in der DDR ausser der zehnklassigen polytechnischen Oberschule noch die zwölfklassige Oberschule. In ihr werden die Schüler auf das zukünftige Studium an den Universitäten und Hochschulen vorbereitet. Vor dem Studium an einer Universität oder Hochschule wird von jedem Studenten das Abitur verlangt, das nach dem Besuch der zwölfkiassigen Oberschule von den Schülern abgelegt wird." Herr Alvarez aus Kuba interessiert sich für das Studium an den Fach—, Ingenieur—, Hochschulen und Universitäten in der DDR, Er fragt: "Welche Möglichkeiten haben die jungen Menschen in der DDR, um studieren zu Können. Vielleicht können Sie mir auch einige Universitäten und Hochschulen nennen?" Der Vertreter einer Universität antwortet: "Bei uns haben alle Jugendlichen, die gut lernen, die Möglichkeit zu studieren. Die Fach-und Ingenieurschulen, an denen speziell Ingenieure und Techniker für unsere Wirtschaft ausgebildet werden, können alle Schüler besuchen, die die polytechnische Oberschule mit Erfolg absolviert haben. Das Studium dauert in der Regel 3 Jahre. Danach machen sie eine staatliche Abschlussprüfung und werden als Ingenieure oder Techniker in volkseigenen Betrieben oder Institutionen eingesetzt. An den Universitäten und Hochschulen werden zum Beispiel Ärzte, Lehrer, Diplomphysiker, Diplomchemiker und Diplomingenieure für die verschiedenen Wirtschaftszweige ausgebildet. Das Studium dauert 5—6 Jahre und wird von den Studenten mit dem Staatsexamen abgeschlossen. Danach arbeiten die jungen Wissenschaftler entweder als Assistenten an den Universitäten oder Hochschulen oder in Polykliniken, Schulen, Forschungsinstituten und Betrieben. Universitäten gibt es in: Leipzig, Jena, Berlin, Dresden, Greifswald, Halle und Rostock. Hochschulen gibt es in Berlin, Cottbus, Dresden, Erfurt, Freiberg, Ilmenau, Karl-Marx-Stadt, Leipzig, Leuna-Merseburg, Magdeburg, Meissen, Potsdam und Weimar. Es gibt 36 Hochschulen und Univertitäten in der DDR. Ausserdem gibt es noch in den grossen volkseigenen Betrieben und in fast allen Städten der DDR Volkshochschulen und Abendoberschulen, wo die Arbeiter und Angestellten nach ihrer Arbeit ihr Wissen erweitern können." Ein Gast aus Indonesien will wissen, ob alle Studenten ein Stipendium bekommen und wie hoch es ist.—"Uber 90% der Studenten bekommen ein Stipendium. An den Fachschulen werden Stipendien von 150,—bis 200,—Deutsche Mark gezahlt und an den Universitäten von 180,—bis 260,—Deutsche Mark."

Zum Schluss der Veranstaltung dankte ein Gast aus Finnland im Namen aller Gäste für dieses interessanse Forum.

"अध्यापक दिवस" के अवसर पर, जो हर साल १२ जून को मनाया जाता है, "ज.ज.ग. की शिक्षा प्रणाली" के विषय पर ज.ज.ग. के एक स्कूल में, एक वादविवाद गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस प्रश्न में अभिरूचि रखने वाले कई विदेशी मेहमान (इसमें भाग लेने) आये हैं। एक अध्यापक द्वारा मेहमानों का स्वागत होता है। ज.ज.ग. में शिक्षा प्रणाली के विषय पर एक संक्षिप्त भाषण के बाद, मेहमानों को प्रश्न पूछने का काफी अवसर है, अध्यापक जिनके उत्तर देते हैं। भारत का एक मेहमान पूछता है: "क्या, ज.ज.ग. में शिक्षा अनिवार्य है, और शिक्षा प्रणाली को कौन आर्थिक सहायता देता है?" (उत्तर मिला) "हां, हर एक बच्चे के लिये ६ वर्ष की आयु से स्कूल जाना जरूरी है। शिक्षा प्रणाली के संचालन के लिये, हमारी सरकार कई आर्थिक साधन अपने हाथ में रखती है।" ईरान का अतिथि जानना चाहता है: "बच्चे कब तक स्कूल जाते हैं, और ज.ज.ग. में किस प्रकार के स्कूल हैं?" राष्ट्रीय शिक्षा मन्त्रालय का एक प्रतिनिधि उत्तर देता है: "सन् १९६२ के बाद से सभी बच्चों को पोलि-तकनीकी माध्यमिक स्कूलों में दाखिला लेना पड़ेगा। बच्चे १० साल तक स्कूल में पढ़ते हैं। इन १० वर्षीय तकनीकी स्कूलों के अतिरिक्त, ज.ज.ग. में, १२ कक्षाओं (वर्षों) वाले माध्यमिक स्कूल भी हैं। ये स्कूल, छात्रों को विश्वविद्यालय तथा विशिष्ट तकनीकी हाई स्कूलों की पढ़ाई के लिये तैयार करते हैं। विश्वविद्यालय अथवा विशिष्ट तकनीकी हाईस्कूलों में प्रविष्ट होने से पहले, विद्यार्थियों को मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास करनी पड़ती है। बारह कक्षा वाले स्कूलों में पढ़ने के बाद ही इस परीक्षा में बैठा जा सकता है।" क्यूबा का श्री अलवारिस, ज.ज.ग. के तकनीकी स्कूलों, विशिष्ट हाईस्कूलों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने का इच्छुक है। वह पूछता है: "ज.ज.ग. में, तरूणों के अध्ययन के लिये कौनसी संभावनायें हैं? क्या आप कुछ विश्वविद्यालयों और विशिष्ट हाई स्कूलों का नाम बता सकते हैं?" एक विश्वविद्यालय का प्रतिनिधि उत्तर देता है: "हमारे यहां अच्छा पढ़ने लिखने वाले सभी तरूणों के लिये अध्ययन की संभावनयें मौजूद हैं। तकनीकी तथा इंजीनियरी स्कूलों में, जहां हमारे आर्थिक विकास के लिये टेकनीशियन और इंजीनियर ट्रेनिंग पाते हैं, ऐसे सभी छात्र दाखिल हो सकते हैं जिन्होंने किसी पोलि-तकनीकी माध्यमिक स्कूल की शिक्षा पूरी की हो। अध्ययन की अवधि ३ साल की होती है। इसके बाद उनको एक अंतिम परीक्षा में बैठना पड़ता है, और (पास होने के बाद) उनको, सरकारी कारखानों तथा संस्थानों में इंजीनियर तथा टेकनीशियन नियुक्त किया जाता है। उदाहरण के लिये, विश्वविद्यालयों और विशिष्ट तकनीकी हाई स्कूलों में, उद्योग की विभिन्न शाखाओं के लिये डाक्टर, अध्यापक, उपाधि प्राप्त पदार्थ तथा रसायन विज्ञानी, और इंजीनियर ट्रेनिंग पाते हैं। यहां अध्ययन की अवधि ५ या ६ साल की है, और छात्रों की परीक्षा से ही इस अवधि का अन्त होता है। इसके बाद ये तरूण लोग, विश्वविद्यालयों या विशिष्ट हाईस्कूलों में सहायकों के रूप में काम करते हैं, अथवा, अस्पतालों, स्कूलों, शोध-संस्थानों और कारखानों में काम करते हैं। यहां लइपज़िक, येना, बर्लिन, ड्रेस्डन, ग्राइफ्स्वाल्ड, हाल्ले और रोस्टोक में विश्वविद्यालय हैं; विशिष्ट हाई स्कूल हैं बर्लिन, कोट्बुस, ड्रेस्डन, एरफर्ट, फ्राइबर्ग, इलमेनाड, कार्ल मार्क्स-श्टाट्, लइपज़िक, लोइना-मार्जेबुर्ग, मार्देबुर्ग, माइसेन, पोट्सडाम और वाइमर में। ज.ज.ग. में कुल मिलाकर ३६ विशिष्ट हाई स्कूल और विश्वविद्यालय हैं। इनके अतिरिक्त, ज.ज.ग. के बड़े-बड़े राष्ट्रीय कारखानों और लगभग सभी क़स्बों में विश्वविद्यालयों की शाखायें प्रशाखायें तथा सायंकालीन कक्षायें फैली हुई हैं जहां मजदूर तथा कर्मचारी काम काज के बाद अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।" हिन्देशिया का एक मेहमान यह जानना चाहता है कि क्या सभी विद्यार्थी छात्रवृत्ति पाते हैं और कितनी पाते हैं? "९० प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती है। तकनीकी स्कूल १५० से लेकर २०० मार्क तक की रक़म और विश्वविद्यालय १८० से लेकर २६० मार्क तक की छात्रवृत्ति देते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याकरण

I. Das deutsche Passiv—जर्मन भाषा में कर्मवाच्य

अपने भावों को आप दूसरों पर दो प्रकार के वाक्यों द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :

क) **im Aktiv**—कर्तृवाच्य द्वारा ख) **im Passiv**—कर्मवाच्य द्वारा

अ) कर्मवाच्य कैसे बनता है :

१. वर्तमानकालिक कर्मवाच्य = "werden" (होना) का वर्तमान काल + पूर्ण कृदन्त, जैसे :

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
ich **werde** gefragt	ich frage
du **wirst** gefragt	du fragst (and so on)
er, sie, es **wird** gefragt	
wir **werden** gefragt	
ihr **werdet** gefragt	
sie **werden** gefragt	

२. भूतकालिक कर्मवाच्य = "werden" का भूतकाल + पूर्ण कृदन्त, जैसे :

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
ich **wurde** gefragt	ich fragte
du **wurdest** gefragt	du fragtest usw
er, sie, es **wurde** gefragt	
wir **wurden** gefragt	
ihr **wurdet** gefragt	
sie **wurden** gefragt	

३. पूर्ण कर्मवाच्य = "sein" का वर्तमान काल + पूर्ण कृदन्त + "worden"

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
ich **bin** gefragt **worden**	ich habe gefragt
du **bist** gefragt **worden**	du hast gefragt etc.
er, sie, es **ist** gefragt **worden**	
wir **sind** gefragt **worden**	
ihr **seid** gefragt **worden**	
sie **sind** gefragt **worden**	

४. पूर्ण भूतकालिक कर्मवाच्य = "sein" का भूतकाल + पूर्ण कृदन्त + "worden"

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
ich **war** gefragt **worden**	ich hatte gefragt
du **warst** gefragt **worden**	du hattest gefragt
er, sie, es **war** gefragt **worden**	
wir **waren** gefragt **worden**	
ihr **ward** gefragt **worden**	
sie **waren** gefragt **worden**	

नोट : "worden" शब्द "werden" का ही एक रूप है। केवल कर्मवाच्य बनाने में इसका प्रयोग होता है।

आ) **Das Passiv im Satz**—वाक्यों में कर्मवाच्य

पुरुष-वाचक कर्मवाच्य तथा भाव-वाचक कर्मवाच्य में अन्तर जान लेना आवश्यक है :

कर्तृवाच्य में कर्त्ता प्रधान होता है और उसका फल कर्म पर पड़ता है।

१. पुरुष-वाचक कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है और कर्त्ता उसका सहायक होता है।

उदाहरण के लिये :

कर्तृवाच्य	Der Lehrer Subjekt	begrüsst	die Gäste Akkus-Objekt
पुरुष-वाचक कर्मवाच्य	Die Gäste **werden**	von dem Lehrer **begrüsst**	Präsens
	Die Gäste **wurden**	von dem Lehrer **begrüsst**	Präteritum
	Die Gäste **sind**	von dem Lehrer **begrüsst worden**	Perfekt
	Die Gäste **waren**	von dem Lehrer **begrüsst worden**	Plusquamperfekt

यह द्रष्टव्य है कि केवल सकर्मक क्रियायें ही पुरुष-वाचक कर्मवाच्य की संरचना कर सकती हैं।

पुरुष-वाचक कर्मवाच्य के निम्न उदाहरण, "ज.ज.ग. की शिक्षा प्रणाली" से लिये गये हैं :

Die Fragen **werden von den** Lehrern **beantwortet.**
Grosse finanzielle Mittel **sind** schon zur Verfügung **gestellt worden und werden** jährlich von unserer Regierung zur Unterstützung des Bildungswesens zur Verfügung **gestellt.**

२. भाव-वाचक कर्तृवाच्य से, भाव-वाचक कर्मवाच्य भी बनाया जा सकता है। भाव वाचक कर्तृवाच्य हमेशा "man" शब्द को कर्त्ता के रूप में जोड़ने से बनाया जा सकता है, जैसे :

कर्तृवाच्य	भाव-वाचक कर्मवाच्य	
Man hilft ihm	Ihm **wird** geholfen	Präsens
	Ihm **wurde** geholfen	Präteritum
	Ihm **ist** geholfen **worden**	Perfect
	Ihm **war** geholfen **worden**	Plusquamperfekt

अभ्यास

१. Setzen Sie die Verben im Präsens, Präteritum, Perfekt und Plusquamperfekt des Passiv ein !

Die Technische Messe.....pünktlich um 9Uhr..... (öffnen)
Der Unterricht.....um 8Uhr..... (beginnen)
Die Maschinen.....von Herrn Bose..... (kaufen)
Die Bücher.....von dem Geschäftsfreund..... (bezahlen)
Die deutsche Sprache....von den Ausländern.... (lernen)
Er.....von seinem Freund..... (entschuldigen)
Herr Meyer.....von dem Betrieb zum Studium (delegieren)
Die Abschlussfeier.....von vielen Menschen.... (besuchen)
Die Rede.....von den Studenten..... (hören)
Die Broschüre.....von den Bauern..... (lesen)

२. Bilden Sie aus den folgenden Sätzen das "unpersönliche Passiv" im Präsens und Perfekt !

Man gibt ihm die Broschüre
Man feiert den Tag der Republik.
Man antwortet dem Professor.
Man öffnet das Zimmer.
Man exportiert die Waren.
Man hilft dem Freund.
Man lernt für die Zukunft. (future)

II. Beantworten Sie die Fragen zum Text "Das Bildungswesen in der DDR" mündlich und schriftlich!

Wann wird der "Tag des Lehrers" gefeiert ?
Worüber findet ein Forum statt ?
Von wem werden die Gäste begrüsst ?
Welche Fragen stellen die Gäste aus Indien, dem Irak, Kuba und Indonesien ?

III. Antworten Sie selbst auf diese Fragen !

पाठ में आये शब्द

anlässlich	इस अवसर पर
werden—wurde—worden	होना
das Thema, die Themen	विषय
veranstalten	आयोजन होना, आयोजन करना
kurz	संक्षिप्त
Frenga stellen	प्रश्न पूछना
beantworten	उत्तर देना
eine allgemeine Schulpflicht	अनिवार्य शिक्षा
ab = Adverb temporal	से
finanziell	आर्थिक
das Mittel,—	पैसा, साधन
die Unterstützung,—en	सहायता
der Irak	इराक़
wie lange	कितनी देर तक
der Vertreter,—	प्रतिनिधि
das Volksbildungsministerium	राष्ट्रीय शिक्षा मन्त्रालय
polytechnisch	पोलि-तकनीकी
ausser D. (Präposition)	बगैर, अतिरिक्त
zehnklassig	दस कक्षायें
zwölfklassig	बारह कक्षायें
das Abitur o. Pl.	मैट्रिक परीक्षा
verlangen	मांग करना
ablegen, legte ab, abgelegt	पास करना
die Ingenieurschule,-n	इंजीनियरी स्कूल
jung	तरूण
vielleicht	शायद
hoch—höher = Comparation	उच्चतर, माध्यमिक
der Jugendliche,-n	तरूण
speziell	खासकर, विशेषतयः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लइपज़िक का शरद्कालीन मेला

लइपज़िक में लगने वाला शरद्कालीन मेला आ रहा है। २ से ९ सितम्बर इस मेले की अवधि है, जिसमें लगभग ४५ देशों की ६,५०० व्यापारिक तथा अन्य फर्में और संस्थायें भाग लेंगीं। प्रदर्शनी का कुल क्षेत्र ११०,००० वर्ग मीटर पर फैला होगा।

इसी वर्ष लइपज़िक में परंपरागत वसन्त कालीन मेला भी लगा जिसमें ७० देशों के प्रदर्शक तथा व्यापारी फर्मों ने क्रय-विक्रय किया। अब शरद्कालीन मेले में इन व्यापारियों तथा ग्राहकों को दूसरी बार क्रय-विक्रय करने का अनुपम अवसर मिलेगा। इस मेले में कई तरह का सामान होगा, विशेषकर, रेडियो, टेलिविजन, कैमरे, प्रोजेक्टर, रिफ्रिजिरेटर, मोटर, इत्यादि। वर्ष में दो बार लगने वाले, लइपज़िक के वसन्त तथा शरद्कालीन मेले, व्यापारिक लेन-देन की दृष्टि से समान महत्व के हैं।

मेले में प्रदर्शित होने वाली वस्तुएं ३० भिन्न भिन्न शाखाओं में विभक्त की गई हैं। इस विभाजन से ग्राहकों को अपनी वांछित वस्तुएं बिना किसी कठिनाई के मिल जाती हैं। लइपज़िक के ये मेले अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हैं। यह देखा गया है कि प्रदर्शिनी की निम्न शाखाओं तथा विभगों में, प्रायः अन्य देशों की व्यापारिक संस्थायें अधिक संख्या में सम्मिलित होती हैं: वस्त्र तथा कपड़ों की शाखा, खाद्य सामग्री विभाग, पुस्तकें तथा प्रकाशन विभाग और औषधि तथा गृहस्थ की चीज़ों की शाखा।

लइपज़िक के इन मेलों में अन्य देशों के अतिरिक्त समाजवादी देश बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इस वर्ष के शरद्कालीन मेले में समाजवादी पोलैण्ड की विदेशीय व्यापार की १४ संस्थायें भाग लेंगी जो प्रदर्शनी का १४०० वर्ग मीटर क्षेत्र घेर लेंगी। इसी प्रकार, चेकोस्लोवाकिया, मेले की १८, तथा हंगरी १२ शाखाओं में हिसा लेंगे। सोवियत यूनियन, बलगेरिया तथा रूमानिया के समाजवादी देश, चीज़ों का खूब क्रय-विक्रय करेंगे। मंगोलिया जनवादी गणतंत्र, मेले में एक सूचना केन्द्र खोलेगा। यूगोस्लोविया एक बार फिर मेले में भाग लेगा।

इन समाजवादी देशों के अतिरिक्त, यूरोप के सभी गैर समाजवादी देश भी शरद्कालीन मेले में अपना सामान प्रदर्शित करेंगे। उत्तरी यूरोप के देश दूध से बनी चीज़ें, मछली, तैयार कपड़े, जूते और सजावट का सामान ही अधिकतर प्रदर्शित करेंगे। पश्चिमी तथा दक्षिणी यूरोप के देश नानाप्रकार के फल तथा शरावें, बने बनाये कपड़े, विभिन्न प्रकार के वस्त्र, जूते, फर्निचर, दवाइयां तथा किताबें आदि प्रदर्शित करेंगे। स्विटज़रलैंड की प्रसिद्ध घड़ियां तथा इटली का विख्यात अक्कोरडियन वाद्ययंत्र भी मेले की प्रदर्शनी में जगह पायेंगे।

यूरोप से इतर जो अन्य देश लइपज़िक के शरद्कालीन मेले में भाग ले रहें हैं, उनमें भारतवर्ष अग्रगण्य है। भारत के अतिरिक्त अन्य अफ्रोऐशियाई तथा दक्षिणी-अमरीका के देश — ईरान, तूनीसिया, सूडान, रोडेसिया, कोलम्बिया, इकवेडोर, ब्राज़िल और अमरीका भी अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के इस मेले में भाग लेंगे।

---

der Ingenieur,-e	इंजीनियर
der Techniker,-	टेकनीशियन
die Wirtschaft	उद्योग
ausbilden, bildete aus, ausgebildet	सिखाना, पढ़ाना
absolvieren	मुक्त होना,
in der Regel	साधारणतयः
danach	उसके बाद
staatlich	सार्वजनिक, जनता
die Abschlussprüfung,-en	अंतिम परीक्षा
die Institution -en	संस्थान
einsetzen, setzte ein, eingesetzt	संस्थापित करना
der Arzt,-"e	डाक्टर
der Diplomphysiker,	डिपलोमा प्राप्त भौतिक विज्ञानी
der Diplomchemiker,	डिपलोमा प्राप्त रसायन शास्त्री
der Diplomingenieur, e	डिपलोमा प्राप्त इंजीनियर
der Wirtschaftszweig,-e	आर्थिक क्षेत्र
das Staatsexamen, die Staatsexamina	सरकारी परीक्षा
abschliessen, schloss ab, abgeschlossen	समाप्त करना
der Wissenschaftler,-	वैज्ञानिक
der Assistent,-en	सहायक
das Forschungsinstitut,-e	शोध संस्थान
ausserdem	इसके अतिरिक्त
die Abendoberschule,-n	सायंकालीन कक्षायें
der Angestellte,-n	कर्मचारी
das Wissen o. Pl.	ज्ञान
erweitern	वृद्धि करना
Indonesien	हिन्देशिया
zum Schluss	अन्त में
danken, Dank aussprechen	धन्यवाद देना, कृतज्ञता प्रकट करना
im Namen, G.	किसी की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की खबरें

हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के प्रकाशन

लइपज़िक के "ऐनसाइक्लोपीडिया प्रकाशन घर" के शब्दकोश विभाग ने सन् १९६५ तक १५५ नये प्रकाशन, प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इन में १९ यूरोपीय भाषाओं तथा २४ अफ्रो-एशियाई भाषाओं के प्रकाशन होंगे। उक्त प्रकाशन घर विशेष कर ओरियन्टल भाषाओं के शब्दकोश तैयार करने में व्यस्त है। आज तक यहां से चीनी-जर्मन तथा मंगोल-जर्मन भाषाओं के शब्दकोश छप चुके हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। आजकल जर्मन-हिन्दी, जर्मन-अरबी, जर्मन-हिंदेशियाई, फारसी-जर्मन और कोरियाई-जर्मन भाषाओं के शब्दकोश तैयार किये जा रहे हैं।

प्राचीन चीनी साहित्यिक भाषा के पाठ से संबंधित चार ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इसी वर्ष हिन्देशियाई भाषा संबंधी एक पाठ्य-पुस्तक भी प्रकाशित होगी। सन् १९६३ में जापानी भाषा का एक व्याकरण और जर्मन-जापानी शब्द-कोश छापा जायेगा। अफ्रीकी देशों की राष्ट्रीय भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकें भी सन् १९६३ में संपादित तथा प्रकाशित करने की योजना है।

उक्त प्रकाशन घर ने आज तक ९ भाषाओं के शब्दकोष प्रकाशित किये हैं जो ज.ज.ग. में अध्ययन करने वाले विदेशी शिक्षार्थियों में बहुत लोकप्रिय हुये हैं।

★

प्रधानमन्त्री नेहरू पर कीचड़ उछालने की नीति

पश्चिमी जर्मनी के एक अखबार "मिट्टाग" के २ जून वाले अंक में भारत के प्रधानमंत्री नेहरु की तटस्थ विदेश नीती पर कीचड़ उछाला गया है। अपने एक अग्र-लेख में इस अखबार ने यह मांग की है कि चूंकि भारत, पश्चिमी जर्मनी से आर्थिक सहायता लेता है इसलिये जर्मन समस्या के संबंध में उस को, प. जर्मनी की सरकार के दृष्टिकोण का समर्थन करना चाहिये। व्यंग्य पूर्ण भाषा में इस अखबार ने 'गांधी के चेले' को नैतिकता तथा राजनीति का उपदेश भी दिया है।

ज.ज.ग. के राजनैतिक सूत्रों में प. जर्मनी के अखबार के उल्लिखित गैर-ज़िमेदार रवैये को भर्त्सना की दृष्टि से देखा गया है। इन सूत्रों का कहना है कि यह धमकियां घोर उपनिवेशवाद की भावनाओं का स्मरण कराती हैं।

★

अमरीकी नीतिज्ञ की सही मांग

अमरीका के एक भूतपूर्व राजनयज्ञ श्री चार्ले थेयर ने अमरीकी सरकार को दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की यथार्थता पहचान लेने की सलाह दी है। "हॉपर मैगज़ीन" के एक अग्र लेख में श्री थेयर ने लिखा है: "अब वह समय आ गया है जब हमें अपनी बर्लिन नीति को बदल कर दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिये। इस ठोस वास्तविकता को आज तक नज़र अंदाज़ करके हमने पूर्वी जर्मनी को राजनैतिक-मान्यता देने से इनकार किया है। अमरीकी सरकार की यह नीति एकदम ग़लत और भ्रामक है। इस नीति को समाप्त करना चाहिये।"

श्री चार्ले थेयर एक अनुभव सिद्ध राजन-यज्ञ हैं और वह दूसरे महायुद्ध से पहले और बाद में, जर्मनी के बर्लिन, बोन, म्युनिख आदि नगरों में महत्वपूर्ण राजनयिक पदों पर आसीन थे।

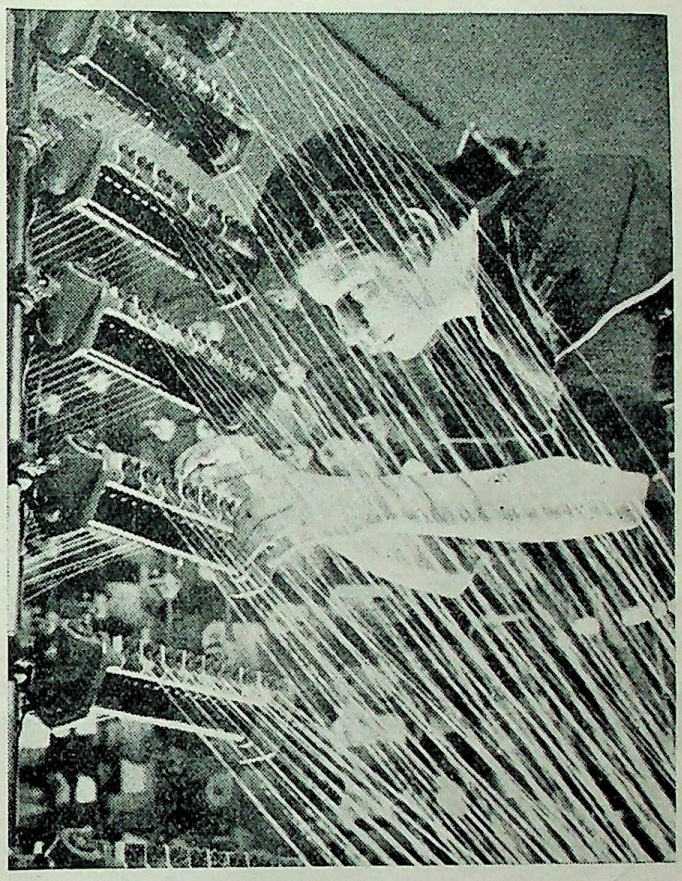

रूमाल और तौलिया बनाने वाले कारखाने ने, हाल ही में अपनी शताब्दी मनाई। इस कारखाने का सामान १० देशों को निर्यात किया जाता है

बर्लिन सीमा पर घोर उत्तेजनायें

ज. ज. ग. की सीमा के खिलाफ बर्लिन में अगस्त १३, सन् १९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अप्रैल ३०, सन् १९६२ के बीच १२४ उत्तेजनायें और षड़यन्त्र रचे गये। इन उत्तेजनाओं में लूटमार और बारूद के धमाके भी शामिल हैं। प. बर्लिन से जनवादी बर्लिन की सुरक्षा पुलिस पर ९० बार गोलियां चलाई गईं। इन आंकड़ों में रोज़मर्रा की अनेक छोटी-मोटी उत्तेजनायें शामिल नहीं। इन षड़यन्त्रों तथा उत्तेजनाओं में घोरतम घटना और उत्तेजना थी सीमा सुरक्षा सिपाही पीटर गोइरिंग की हत्या!

प. बर्लिन के हत्यारों के जिस दस्ते की गोलियों का शिकार पीतर गोइरिंग हुआ, उस दस्ते का कमानदर वेनद्त नाम का एक पुलिस अफसर था। इस दस्ते की गोलियां से पीतर गोइरिंग का एक अन्य साथी कार्ल लाउमर भी बहुत ज़खमी हुआ।

हत्यारे दस्ते का, अगुआ, वेनद्त एक जाना पहचाना नाज़ी है जो हिटलर की फासिस्त जर्मनी में भी एक पुलिस अफसर रहा है। युद्ध संबंधी अपराधों में उसको सोवियत यूनियन में सज़ा दी गई। प. जर्मनी में उसको फिर पुलिस अफसर बनाया गया।

प. जर्मनी के इन फासिस्तों तथा हिंसावादी तत्वों के संबंध में ज. ज. ग. के प्रधानमंत्री के प्रेस-अफसर के ये शब्द उद्धरणीय हैं, "इन सभी उत्तेजनाओं तथा अपराधों के पीछे प. बर्लिन पुलिस और फासिस्त तथा हिंसावादी तत्वों का हाथ है जिनको प. बर्लिन की अधिकृत सेना के सैनिक अधिकारियों का सक्रिय सहयोग मिलता है।—ये घटनायें तथा षड़यन्त्र प. बर्लिन के मामले के फौरी हल की आवश्यकता को सिद्ध करते हैं।"

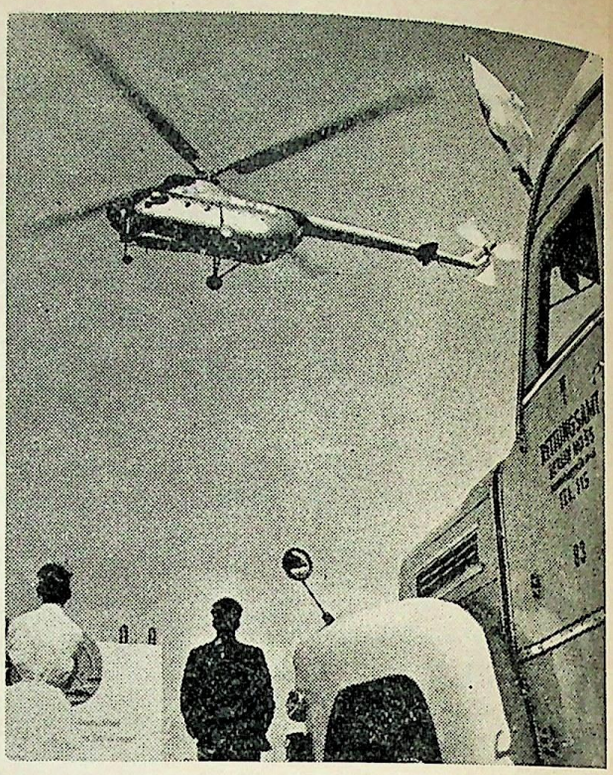

कोट्बुस क़स्बे के अस्पताल से एक १९ वर्षीय रोगी को, जिसकी हालत बहुत ख़राब थी, हेलिकोपटर द्वारा बर्लिन पहुँचाया गया। यहां के प्रसिद्ध अस्पताल 'चैरिटे' में उसका उपचार होगा

✶

प. जर्मनी का शांतिकामी पादरी

पश्चिमी जर्मनी के गिरजाघरों के अध्यक्ष डा. मार्टिन वाइमौलेर ने खुले आम शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का समर्थन और अणु-युद्ध का ज़बरदस्त विरोध प्रकट किया है। उन्होंने अपने भाषण में शांति स्थापना के कार्य को ईसाइयों का पुनीत और विशेष कर्तव्य घोषित किया है। "जीवन का दृढ़ आधार और अटल नियम है शांति और इसकी सुरक्षा हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है" डा. मार्टिन बोले। पादरी महोदय ने प. जर्मनी के सैनिकवादियों को खूब लताड़ा, शांति के नाम से जिनके हाथ पैर फूल जाते हैं। विश्व-शांति के लिये प. जर्मनी में आन्दोलन इतना प्रबल हो रहा है कि वहां के अधिकारी ईसाइयों के शांति संबंधी समारोहों को भी बलप्रयोग द्वारा दबाते तथा धमकाते हैं।

✶

अमरीकी वैज्ञानिक ज. ज. ग. में

गत मास में, अमरीका के अलासका विश्वविद्यालय के भू-भौतिकी संस्थान (जियो-फिज़िक्ल इन्सटिच्यूट) के निदेशक प्रोफेसर सिडनी चापमैन जर्मन जनवादी गणतंत्र में पधारे। प्रोफेसर महोदय रायल सोसाइटी के सदस्य हैं और इनकी गणना, विश्व के विख्यात तथा अग्रगण्य भू-भौतिक वैज्ञानिकों में होती है। सन् १९५७-५८ में यह महान वैज्ञानिक अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष के विशेष कमेटी के अध्यक्ष थे।

✶

अणु-शस्त्र विहीन क्षेत्र का समर्थन

पश्चिमी देशों के कई प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, विद्वान तथा बुद्धिजीवी मध्य यूरोप में एक अणुशस्त्र विहीन क्षेत्र की स्थापना का समर्थन करते हैं। इस क्षेत्र की स्थापना का सुझाव सबसे पहले पोलैण्ड के विदेश मन्त्री श्री रपाची ने दुनिया के सामने रखा था।

हाल में ही एक अमरीकी उद्योगपति श्री सइरस ईटन तथा फ्रांस की सोशलिस्ट पार्टी क भूतपूर्व महामन्त्री श्री डेनियल मेयर ने पश्चिमी जर्मनी की हकूमत का अणुशस्त्र-हीन क्षेत्र की स्थापना से संबंधित जनमत प्रकाशित किया है। जनमत ने इस क्षेत्र की स्थापना के हक़ में अपना पूर्ण समर्थन प्रकट किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ६ का शेष)

मेरी रचना प्रक्रिया

कटु किंतु लाभदायक आलोचना करते हैं। इस बहस में श्रोता भी लाभान्वित होते हैं--वे अन्य देशों की कला तथा साहित्य का ज्ञान उपलब्ध करते हैं।...

कई महीने पहले, मेरी कहानियों का एक संग्रह "विट्टरफेल्ड की कथायें" प्रकाशित हुआ। ये कहानियां भी, क्लोराइन रसायन के कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों के जीवन से सम्बद्ध हैं जिनके संपर्क में, मैं काफी समय तक रहा। कहानियां लिखकर मैं उनको सुनाया करता था।

एक दिन की बहुत गरम बहस, मुझे आज भी अच्छी तरह याद है। मेरी एक कहानी का विषय था पुराने, अनुभवी मज़दूरों का अविश्वास एक कारखाने के नये और तरुण निदेशक के प्रति। यह अविश्वास, सहयोग और सद्भावना के लिये सबसे बड़ी बाधा थी। यह भावना पूंजीवादी सत्ता का अवशेष है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने व्यक्तित्व को ही सर्वोच्च समझता है, अन्य सभी को गौण तथा अयोग्य।....मैंने अपनी एक कहानी का विषय यही भावना बनाई थी। क्लोराइन कारखाने के मज़दूर, स्वयं इस भावना के दुष्परिणामों का शिकार हुये थे। यह एक समस्या थी जिसका मैंने गहरा अध्ययन किया था। मेरी इस विवादास्पद कहानी का नाम है "वर्षा वार्ता"...

यह कहानी आलोचकों को पसन्द आई लेकिन मज़दूरों को नहीं। बहुत वादविवाद के बाद कारखानों के श्रमिकों तथा इंजीनियरों को यह बात समझ में आ गई कि कला और साहित्य, यथार्थ का अनुकरण मात्र नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इस तथ्य को जानलेने के बाद श्रमिकों की साहित्यिक तथा कलात्मक जिज्ञासा बढ़ी और इस प्रकार, मनन चिन्तन का उनका दृष्टिकोण भी व्यापक हुआ।.....

(पृष्ठ १४ का शेष)

एक वृहत् अनुसन्धान केन्द्र

जस्ता (ज़िंक) वाष्पीकरण के कारखानों के उत्पादन में २७ प्रतिशत की वृद्धि होगी। यह ईजाद इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि अब ज.ज.ग. वैक्यूम पम्पों के आयात से मुक्त होगा।

भौतिक-तकनीकी संस्थान में, इस संस्थान के अध्यक्ष प्रो. रोम्पे भी हमारी बातचीत में शामिल हुये। उन्होंने हमको दो रंगीन स्लाइड दिखाये। एक स्लाइड की सतह खुरदरी और हरे रंग की थी, लेकिन दूसरे स्लाइड की सतह अपेक्षाकृत काफी हमवार थी। हमारी समझ में कुछ नहीं आया। आखिर प्रो. रोम्पे ने ही समझाया।...दोनों स्लाइड वास्तव में एक जल-पोत के जल-निमग्न भाग के दो फोटो थे। पोत के इस भाग के आधे हिस्से पर वही रंग चढ़ा हुआ था जो प्रत्येक जहाज़ के जलनिम्न भाग पर चढ़ा दिया जाता है, लेकिन इसके शेष हिस्से पर संस्थान में तैयार किया गया एक नया पेंट चढ़ाया गया था। १० हज़ार टन का यह पोत जब पूर्वी अफ्रीका की यात्रा से वापस लौटा तो इस सफलता पर संस्थान के शोधार्थी तथा विशेषज्ञ अत्यन्त प्रसन्न हुये कि उनके संस्थान में ईजाद किये गये नये रंग पर समुद्रजल की क्रिया का प्रभाव नगण्य है--अर्थात् इस रंग पर, समुद्रजल द्वारा स्वतः उत्पन्न दो विशेष प्रकार के घास, 'अलगा' तथा 'म्यूसेल' चिपक कर उगने नहीं पाये थे। इससे जहां पोत की रफ़्तार को कम करने वाली एक बड़ी रुकावट खत्म हो गई, वहां जहाज़ के ईंधन के खर्च में भी काफी बचत होगी।

इस वृहत् अनुसन्धान क्षेत्र का निरीक्षण समाप्त करने पर डा. विट्टरबोट बोले, "हम वैज्ञानिकों के लिये इससे बढ़कर कोई बात नहीं कि मज़दूरों और इंजीनियरों से मिलकर हम अपने रचनात्मक सिद्धान्तों तथा अनुसन्धानों को कार्यान्वित करके उनको आकार प्रदान करें। यही समाजवादी सहयोग का परम लक्ष्य है।"

बर्लिन के 'पीपुल्स पार्क'--जन उद्यान--में, बर्लिन निवासी, परिश्रम के बाद किताबें पढ़ते हैं, गप्प लड़ाते और मज़े उड़ाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

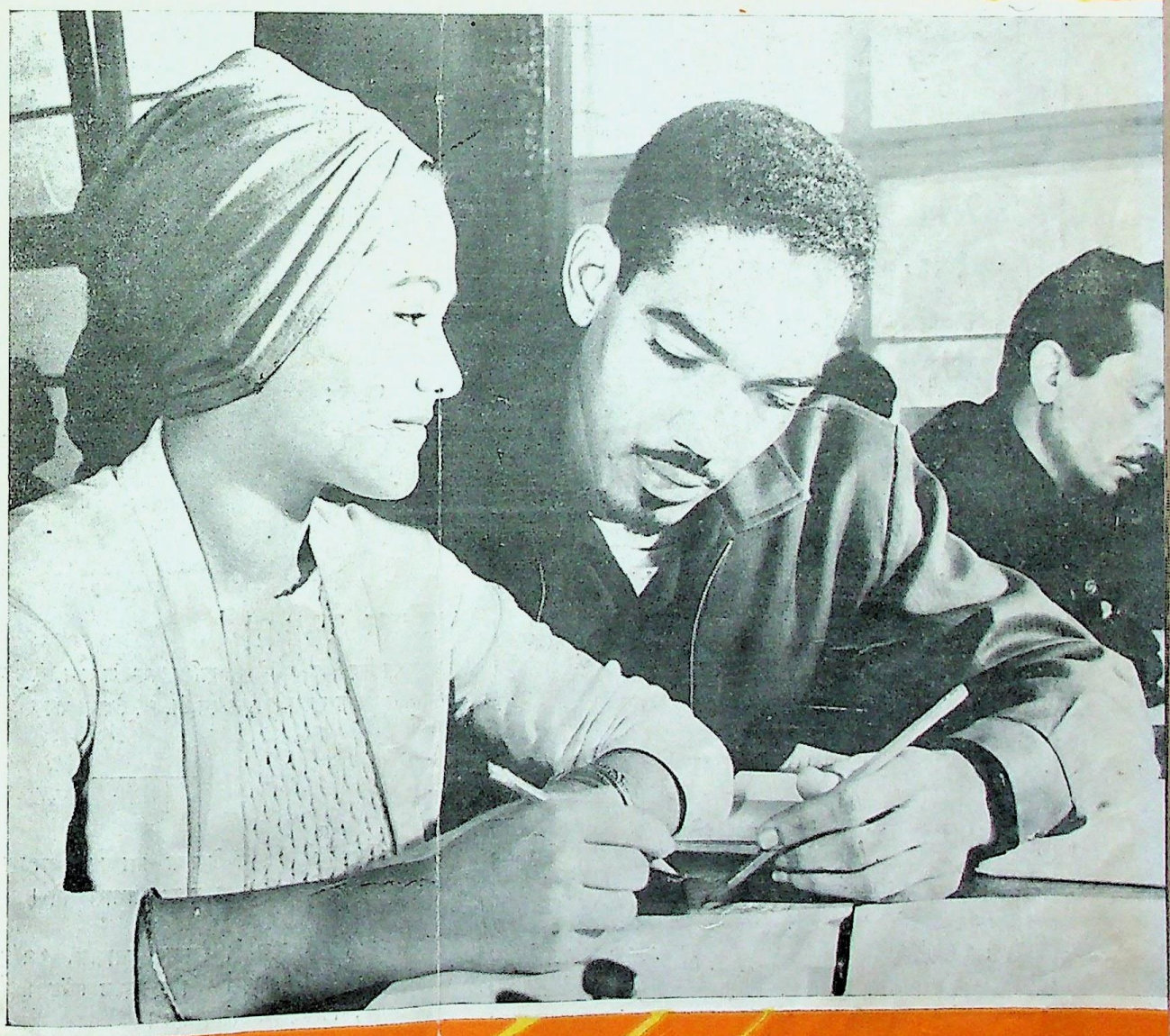

८ वर्ष ७
अगस्त
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ८ २० अगस्त, १९६२

इस अंक में

	पृष्ठ
स्वतंत्रता दिवस की शुभ कामनायें	३
दीवार....शांति की धूढ़ प्रहरी !	४
व्यक्तित्व की झांकी	
ग्रट पालूक्का	६
जनवाद के बढ़ते चरण	
भारतीय अखबार उद्योग	७
पुरातन और नूतन का संगम	८
शिक्षा के मानवीय उद्देश्य	१०
भारतीय चित्रकार की प्रदर्शनी	१२
तरुण लेखक और उनके प्रकाशक	१४
पुस्तक रूपसज्जा का संस्थान	१६
डेफा फिल्म जगत	
प्यार की करामात	१८
वीर लरनेन दोइच	
पाठ बीस	१९
जर्मनी की ख़बरें	२१

मुख पृष्ठ :

विद्रोही क्यूबा की नई पीढ़ी के प्रतीक, दो तरुण, जो ज.ज.ग. में शिक्षा पा रहे हैं !

अन्तिम पृष्ठ :

कलकत्ता विश्वविद्यालय के श्री शशिभूषण, ज.ज.ग. के रोस्टोक ज़िले में स्थित वनस्पति रोपण संस्थान में पी.एच.डी. की तैयारी कर रहे हैं

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24 AUG 1962

स्वतन्त्र दिवस
की
शुभ कामनायें

१५ अगस्त, सन् १९४७ के दिन दुनिया भर के प्रसिद्ध अख़बारों ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाचार छापा : "भारतवर्ष स्वतन्त्र हो गया।" संसार के लाखों करोड़ों लोगों ने साम्राज्यवाद पर, भारत की इस महान विजय का हार्दिक स्वागत किया।.....

पिछले १५ वर्षों में स्वतंत्र भारत, अधिक खुशहाल बना है। गोवा, दामन और दिव आज़ाद होकर भारत माता की गोद में आ मिले हैं।.....

भारत की जनता और यहां के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू, हमारे देश — जर्मन जनवादी गणतंत्र में, सम्मान तथा आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं, क्योंकि यहां की जनता और श्री नेहरू भारतवर्ष की खुशहाली, विश्वशांति की स्थापना और पूर्ण निःशस्त्रीकरण के लिये निरन्तर संघर्ष कर रहे हैं।.....

आज, भारतवर्ष की स्वतंत्रता की १५वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर भारत में स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रमुख तथा अन्य सदस्य, भारतीय जनता की सतत प्रगति तथा विकास की कामना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवार, . . . शांति की दृढ़ प्रहरी !

१३ अगस्त, सन् १९६१ का दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के इतिहास में एक नया अध्याय है। उस दिन यहां की जनवादी सरकार ने, वारसा-सन्धि के अन्य देशों की सहमति से, ज.ज.ग. की राज्य-सीमा को और भी दृढ़ तथा सुरक्षित कर दिया, बर्लिन के उस भाग में कंक्रीट की एक विराट दीवार खड़ी करके जो भाग ज.ज.ग. की राज्य सीमा के अन्तर्गत आता है। ज.ज.ग. की सरकार को यह क़दम क्यों उठाना पड़ा, इस पर 'सूचना पत्रिका' में हम समय-समय पर लिखते रहे हैं। बहुत संक्षेप में इस प्रश्न का उत्तर, विल्ली ब्रांत (प. बर्लिन के मेयर) तथा रिचर्ड लोवेनथाल द्वारा लिखित पुस्तक "एरनस्त रोइटर—आइन लीबेन फ्युअर डी फ्राइहाइट" के इस वाक्य में संनिहित है : "हम पूर्वी क्षेत्र (ज.ज.ग.—सं) के खिलाफ बारूद की तरह काम करते हैं, और हम पूर्वी क्षेत्र पर इतना अधिक दबाव डालेंगे जिसकी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। . . ."

पश्चिमी जर्मनी और प. बर्लिन से होने वाली तोड़-फोड़ तथा उत्तेजनाओं के बावजूद, ज.ज.ग. की सरकार ने बात-चीत तथा सुलह सफाई से प. बर्लिन की विकट समस्या को सुलझाना चाहा। लेकिन इन शांतिपूर्ण प्रयासों के उत्तर में प. बर्लिन से, ज.ज.ग. तथा अन्य समाजवादी देशों के खिलाफ, उत्तेजनाओं और तोड़-फोड़ का काम और भी तेज़ कर दिया गया। इसलिये अपने राज्य की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिये ज.ज.ग. की सरकार के सामने एक ही रास्ता खुला था और वह था बर्लिन के जनवादी हिस्से के गिर्द कंक्रीट की दीवार खड़ी करना। शांतिकामी जनता, इसी दीवार को "शांति की प्रहरी दीवार" तथा "फासिस्त विरोधी दीवार" के नाम से पुकारती है। वास्तव में इस मज़बूत दीवार ने दुनिया को और विशेषकर यूरोप को, तीसरी जंग की तबाही से बचाया।

'पत्रिका' के अनेक पाठकों की उक्त दीवार संबंधी जिज्ञासा को शांत करने के लिये, हम आज जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के उस महत्वपूर्ण भाषण को संक्षेप में यहां उद्धृत कर रहे हैं जो उन्होंने सन् १९६२ के जून मास के अन्त पर दिया था, जर्मन तथा प. बर्लिन की समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के संबंध में।

—सम्पादक

बर्लिन में, फासिस्त विरोधी दीवार खड़ी किये जाने से, पश्चिम बर्लिन की विकट समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने की सही और वास्तविक स्थिति पैदा हो गई है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का सत्ताधिकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में काफी बढ़ गया है और उसकी शांतिपूर्ण नीति को विश्व की शांतिकामी जनता का समर्थन मिलता जा रहा है। हमारी शांतिपूर्ण नीति की इसी सफलता के कारण पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिम बर्लिन के फासिस्त तथा प्रतिहिंसावादी तत्व, बौखला उठे हैं। ये तत्व जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने की, अमरीका-सोवियत यूनियन में हो रही बात-चीत को, किसी भी क़ीमत पर असफल बनाने पर तुले हुये हैं।...

मैं, ज.ज.ग. के खिलाफ प. बर्लिन से होने वाली घोर उत्तेजनाओं का उल्लेख भी आपके सामने करना चाहता हूं। इन उत्तेजनाओं को चालू करने का इशारा, स्वयं चानसेलर एडेनाअर तथा प. बर्लिन के नगर-प्रमुख श्री ब्रांत ने दिया। प. बर्लिन की सीमा में, अपराधी तथा फासिस्त तत्वों को संगठित किया गया और उनको ज.ज.ग. की राजधानी में सीमा-दुर्घटनायें पैदा करने का आदेश दिया गया। आदेश मिलते ही इन तत्वों ने, प. बर्लिन पुलिस के सक्रिय सहयोग से, ज.ज.ग. की सीमा-रक्षा पुलिस पर क़ातिलाना हमले तथा सीमान्तों पर बम-विस्फोट किये और बर्लिन की रेलों की तोड़-फोड़ शुरू की। स्पष्ट है इन घोर उत्तेजनाओं से एक खतरनाक स्थिति पैदा हो गई है। इन आक्रामक कार्यों को हम गंभीर दृष्टि से देखते हैं।

साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि घोर उत्तेजनाओं की इस नीति से, चानसेलर एडेनाअर को कोई भी सफलता न मिल सकी। राष्ट्रीय (शांति) कांग्रेस में भाग लेने वाले पश्चिम बर्लिन के ५०० शांति सैनिकों की आवाज़, उन चन्द हत्यारों तथा फासिस्त तत्वों से कहीं अधिक थी जो १७ जून को, ज.ज.ग. की राज्य-सीमा पर घोर उत्तेजनाओं द्वारा उथल-पुथल पैदा करने के सपने देख रहे थे। लेकिन धन्य है किसान मज़दूरों की हमारी शासन सत्ता जिसके दृढ़ धैर्य और संयम के आगे इन तत्वों को मुंह की खानी पड़ी। प. बर्लिन में स्थित अमरीकी पत्रकारों ने यह मत प्रकट किया है कि इन उत्तेजनाओं का एकमात्र उद्देश्य था सोवियत-अमरीकी बातचीत को तोड़ देना।

प. बर्लिन के हाल ही के एक दौरे में प. जर्मनी के चानसेलर एडेनाअर ने इस बात को प्रकट किया कि वह और उनकी हकूमत हर उस समझौते की विरोधी है जिसका उद्देश्य जर्मन शांति संधि अथवा प. बर्लिन समस्या का शांतिपूर्ण हल हो। बोन सरकार, अमरीका और सोवियत यूनियन के बीच चलती बातचीत को अपने प्रतिशोध तथा प्रतिहिंसा की नीति के हितों के विरुद्ध समझती है। चानसेलर एडेनाअर के ये युद्धपोषक विचार, प. बर्लिन के नगर-प्रमुख श्री विल्ली ब्रांत के उन विचारों से मेल खाते हैं जिनमें उन्होंने खुले आम यह कहा कि वह हर उस व्यक्ति को शरण देंगे जो ज.ज.ग. के खिलाफ बम का प्रयोग करेगा, वहां की रेलों की तोड़-फोड़ करेगा, या क़तल आदि जैसी किसी भी उत्तेजना में भाग लेगा। . . .

अमरीका के राज्य मंत्री, श्री डीन रस्क के पश्चिम बर्लिन आने के अवसर पर श्री एडेनाअर तथा श्री ब्रांत ने, ज.ज.ग. की राज्य-सीमा पर दुर्घटनायें और तनाव पैदा करने के लिये प्रत्येक तरीक़ा इस्तेमाल किया। इस ग़ैर-ज़िम्मेदार रवैये का मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24 AUG 1962 वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

उद्देश्य था श्री रस्क पर इस बात का दबाव डालना कि वह केवल प. बर्लिन ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण बर्लिन को बातचीत का विषय बनाये। दूसरे शब्दों में इसका मतलब था ज.ज.ग. की राजधानी, पूर्वी बर्लिन के अन्दरूनी मामलों में दखल देना। प. जर्मनी और प. बर्लिन के प्रतिहिंसावादी और फासिस्त तत्व यह बात खुले आम कहते फिरते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य है किसी तरह से प. बर्लिन में स्थित पश्चिमी देशों की अधिकृत सेनाओं को ज.ज.ग. के विरुद्ध उत्तेजनाओं में फांस लेना। अपनी इन घोर उत्तेजनाओं को ठीक जताने के लिये वे यह कहते हैं कि ज.ज.ग. की राज्य सीमा कोई वैध सीमा नहीं जिसका उल्लंघन नहीं करना चाहिये। लेकिन ऐसे लोगों को मैं साफ-साफ कह देना चाहता हूं कि हमारे धैर्य, संयम तथा शांति कामना को हमारी कमजोरी समझना निरी मूर्खता है। हमारी राज्य की सीमायें दृढ़ और अजेय हैं। आक्रामक तत्वों को मुंह तोड़ जवाब दिया जायगा और उनके द्वारा प. बर्लिन से हमारी सीमाओं में भेजने वाले एजण्टों तथा हत्यारों को भी कड़ी सजा दी जायेगी।

जहां तक प. बर्लिन में हमारी रेल गाड़ियों की तोड़-फोड़ का सवाल है, (जो ज.ज.ग. के नियन्त्रण में चलती हैं) मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि इस तोड़-फोड़ का एक ही परिणाम निकलेगा और वह यह कि प. बर्लिन का रेल यातायात टूट जायगा और स्वयं प. बर्लिन निवासी इस स्थिति से कठिनाइयों में पड़ जायेंगे। दूसरे शब्दों में, प. बर्लिन में हमारी रेलों पर हमलों का अर्थ है प. बर्लिन की जनता के शांत जीवन में उथल-पुथल मचा देना। इन हमलों से प. बर्लिन स्थित पश्चिमी ताक़तों की सेना की सप्लाई भी बन्द हो जायेगी।... चानसेलर एडेनाअर एक नई चाल चले हैं। उन्होंने यह सुझाव दिया है कि बर्लिन सीमा पर हुई दुर्घटनाओं पर चार ताक़तों के दरमियान बातचीत हो। इस तरह श्री एडेनाअर का खयाल है कि वह जर्मन शांति संधि को रोक सकेंगे या कम-से-कम कुछ और समय तक टाल सकेंगे। लेकिन सीमा-उत्तेजनाओं पर चार ताक़तों की बातचीत के बदले यदि श्री एडेनाअर केवल इतना करें कि प. बर्लिन के अपने चेले-चांटों तथा अधिकारियों को तोड़-फोड़ तथा हत्यायें बन्द करने को कह दें, ज.ज.ग. के खिलाफ दिन-रात होने वाला घृणा तथा प्रतिहिंसा का प्रचार बन्द करा दें और प. बर्लिन में संगठित जासूसी संस्थायें तोड़ दें, जो ज.ज.ग. में अपने एजण्ट भेजती हैं तो सीमा दुर्घटनाओं का मामला बड़ी आसानी से स्वयं ही हल हो जायेगा।

श्री एडेनाअर की, अमरीका के राज्य मंत्री श्री रस्क से यह मांग करना कि जर्मन शांति संधि के समझौते से मुतालिक काम करने वाला आयोग संस्थापित न किया जाय, काफी दिलचस्प मांग है। श्री एडेनाअर, सोवियत संघ तथा अमरीका के इस संभाव्य सुझाव का विरोध करते हैं। इस विरोध का क्या अर्थ है? इसका सीधा मतलब यह है कि श्री एडेनाअर दूसरे महायुद्ध के अवशेषों को खत्म करना नहीं चाहते ताकि वह अपनी प्रतिशोध तथा प्रतिहिंसावादी नीति चालू रख सकें। इस विरोध का यह भी अर्थ है कि वह जर्मन एकता और इसलिये दो जर्मन राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के घोर विरोधी हैं। लेकिन यह एक सर्वविदित बात है कि जर्मन एकता तब तक असंभव है जब तक शांति संधि पर समझौता और दस्तखत न हों। जर्मन एकता और शांति-संधि अन्योन्याश्रित हैं। इसलिये श्री रस्क से जर्मन शांति संबंधी आयोग को कायम न करने की मांग करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि श्री एडेनाअर तथा उनकी हकूमत जर्मनी की एकता नहीं चाहती।...

यह तथ्य कितना अस्वाभाविक और खतरनाक है कि ज.ज.ग. के ठीक बीच में, अर्थात् पश्चिम बर्लिन में, नाटो सैनिक गुट की अनेक जासूसी संस्थायें वर्तमान हैं जो ज.ज.ग. के खिलाफ तोड़-फोड़ तथा अन्य उत्तेजनात्मक काम करती रहती हैं। इन संस्थाओं को, प. बर्लिन के अधिकृत प्रशासन का समर्थन तथा सहयोग प्राप्त है। यह स्थिति खतरनाक होने के साथ-साथ अवैध भी है क्योंकि प. बर्लिन ज.ज.ग. के बीच में वाक़ा है और बर्लिन का वह भाग है जहां पोट्सडम संधि की शर्तों को पूरा करना तो दूर रहा, उल्टे उनकी अवहेलना हुई है। यदि ऐसा न हुआ होता तो आज कोई झगड़ा भी खड़ा न हुआ होता।...

अमरीका तथा अन्य नाटो ताक़तों ने, यूरोप की युद्धोत्तर कालीन स्थिति को ज्यों का त्यों रहने दिया है। इसलिये हमारी सरकार ने १३ अगस्त, सन् १९६१ को जनवादी बर्लिन के गिर्द, कंक्रीट की जो दीवार, सीमा-रेखा के रूप में खींची है, वह एक ऐसा तथ्य है जो सर्वमान्य होना चाहिये। मैं इस बात की आशा करता हूं कि अमरीका, ब्रिटेन तथा फ्रांस की सरकारें, प. जर्मनी तथा प. बर्लिन के प्रतिहिंसावादी तत्वों द्वारा संगठित उक्त घोर उत्तेजनाओं की साजिश में नहीं फसेंगी, क्योंकि ऐसा होने से भयंकर परिणाम पैदा होंगे। प्रतिहिंसक तथा सैनिकवादी तत्वों की बौखलाहट इस बात का प्रमाण है कि वे अपने पश्चिमी सहयोगियों पर भी अब विश्वास नहीं करते। लेकिन यह एक जानी मानी बात है कि इन तत्वों को अमरीका के घोर प्रतिक्रियावादी तथा सैनिक तत्वों का समर्थन प्राप्त है। इसलिये ये उत्तेजनायें और भी खतरनाक हैं।

अन्त में यह हमारा कर्तव्य है कि हम प. जर्मनी के मजदूर वर्ग तथा वहां के सभी शांतिकामी शक्तियों से अपील करें कि इस विकट स्थिति में वे प. जर्मनी की युद्ध-लोलुप और प्रतिहिंसावादी नीति के खिलाफ प्रदर्शन करें और वे जर्मन शांति संधि, प. बर्लिन को तटस्थ बना देने और वारसा तथा नाटो ताक़तों के बीच युद्ध न होने की संधि का प्रबल समर्थन करें।

ज.ज.ग. की सरकार ने दुनिया की सभी सरकारों का ध्यान प. जर्मनी तथा प. बर्लिन के प्रतिहिंसक तथा प्रतिशोधवादी तत्वों द्वारा संगठित उल्लिखित घोर उत्तेजनाओं से उत्पन्न गंभीर स्थिति की ओर आकर्षित किया है। इसके अलावा हमने सभी राष्ट्रों से यह अपील की है कि वे इन तत्वों के उत्तेजनात्मक कार्यों के खिलाफ अपनी स्पष्ट राय दें और तनाव कम करने, जर्मन शांति संधि को सफल बनाने और प. बर्लिन को तटस्थ शहर बना देने की दिशा में अपना अमूल्य समर्थन प्रदान करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झांकी

ग्रट पालूक्का

उनके मित्र तथा सहयोगी उनको न तो श्रीमती पालूक्का कहते हैं और न ग्रट पालूक्का के नाम से पुकारते हैं। उनके लिये वह 'पालूक्का' हैं—सिर्फ पालूक्का! एक शब्द का यह छोटा-सा नाम अब न केवल जर्मनी में ही, वरन् विदेश में भी प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय बन चुका है।

ग्रट पालूक्का, जर्मन जनवादी गणतंत्र की निवासी हैं। उनकी आयु है ६० वर्ष की, लेकिन आज भी योजनाओं का मोह उन्होंने त्याग नहीं दिया है। नृत्य कला के प्रति पालूक्का की अनन्य लगन को देखते हुये, सरकार ने ड्रेस्डन के बस्ताइ-प्लेस नामक रमणीय स्थान में, सन् १९५५ में, उनको एक अत्यन्त सुन्दर स्कूल-भवन बनाकर दिया। इसी नृत्य-स्कूल अथवा संस्थान में वह अपनी योजनाओं को आकार प्रदान करने के लिये निरन्तर काम करती हैं। इस नृत्य-स्कूल की नींव पड़ने के दिन से वह कला अकादमी की सदय हैं। सन् १९६० में उनको ज.ज.ग. का सर्वोच्च पुरस्कार, 'राष्ट्रीय पुरस्कार', दिया गया और इस वर्ष के जनवरी मास में वह प्रोफेसर की उपाधि से भी विभूषित हुईं।

'पालूक्का नृत्यकला स्कूल, ड्रेस्डन' की बुनियाद डालने के दिन से श्रीमती पालूक्का ने अपनी सारी शक्ति नृत्य कला प्रशिक्षण पर लगा दी है। इससे उनकी नृत्य कला को चार चांद लग गये हैं और इन प्रतिभाशाली नर्तकी का गत जीवन, आज और भी श्रद्धा की नज़र से देखा जाने लगा है।

यहां सहसा, तृतीय दशक के वे कठिन दिन याद आते हैं जबकि (प्रथम) युद्धोत्तर काल की भयंकर मन्दी तथा मुद्रा-स्फीत के कारण सभी कलायें लगभग मिटती जा रही थीं, और केवल कुछ महान तथा लगन वाले कलाकार ही इस संकट में पनप सके थे। उन कलाकारों में से पालूक्का एक थीं। उस समय मैंने उनको 'योहान सेबस्तियन बाख़' नामक नृत्य माला प्रस्तुत करते देखा है। इस नृत्य-माला को पालूक्का ने 'हेल्ले तांज़े' अर्थात् 'प्रज्ज्वलित नृत्य' की संज्ञा दी थी। इस नृत्यों के द्वारा, प्रसिद्ध जर्मन संगीतकार योहान बाख़ के जीवन का अत्यन्त सफल और कलापूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया गया था। नृत्यों को देखकर मैंने उस समय लिखा था: "बाख़ के सुन्दर संगीत को नृत्य द्वारा कैसे अभिनीत किया जा सकता है, यह पालूक्का से सीखा जा सकता है।"

सन् १९२५ में, ग्रट पालूक्का ने, ड्रेस्डन में एक नृत्य कला स्कूल की बुनियाद डाली। इस स्कूल ने अनेक प्रसिद्ध तथा महान् नृत्यकारों, बैले-कलाकारों और नृत्य-शिक्षकों को जन्म दिया। रचनात्मक कला का यह सुन्दर केन्द्र बहुत विकसित तथा लोकप्रिय होता गया। लेकिन सन् १९३९ में हिटलर के फासिस्त शासन ने इस स्कूल को बन्द कर दिया और पालूक्का पर पाबन्दी लगा दी कि वह किसी को भी नृत्य की शिक्षा न दे। इसके बाद आया सन् १९४५ का वह अत्यन्त भयंकर दिन १३ फरवरी। उस दिन ड्रेस्डन पर ज़बरदस्त बम वर्षा हुई और पालूक्का का सर्वस्व स्वाहा हुआ उस तबाही में। अपने आपको वह मुशकिल से बचा पाईं।

लेकिन जीवन की तरह कला भी अमर है। ध्वंस और खण्डहरों के बीच पालूक्का की नृत्य कला फिर अंकुरित होने लगी। सन् १९५० में वह पुनः प्रकट हुईं नृत्यकार के रूप में!... और आज उन्होंने अपना तन, मन, धन अर्पण किया है नृत्य कला पर। आने वाली पीढ़ी को वह नृत्य कला में निपुण बना रही हैं अपनी शिक्षा के द्वारा, और वह परम्परागत नृत्य रूपों में नये रचनात्मक नृत्य जोड़कर, जर्मनी में, एक नई नृत्य परम्परा का निर्माण कर रही हैं!...

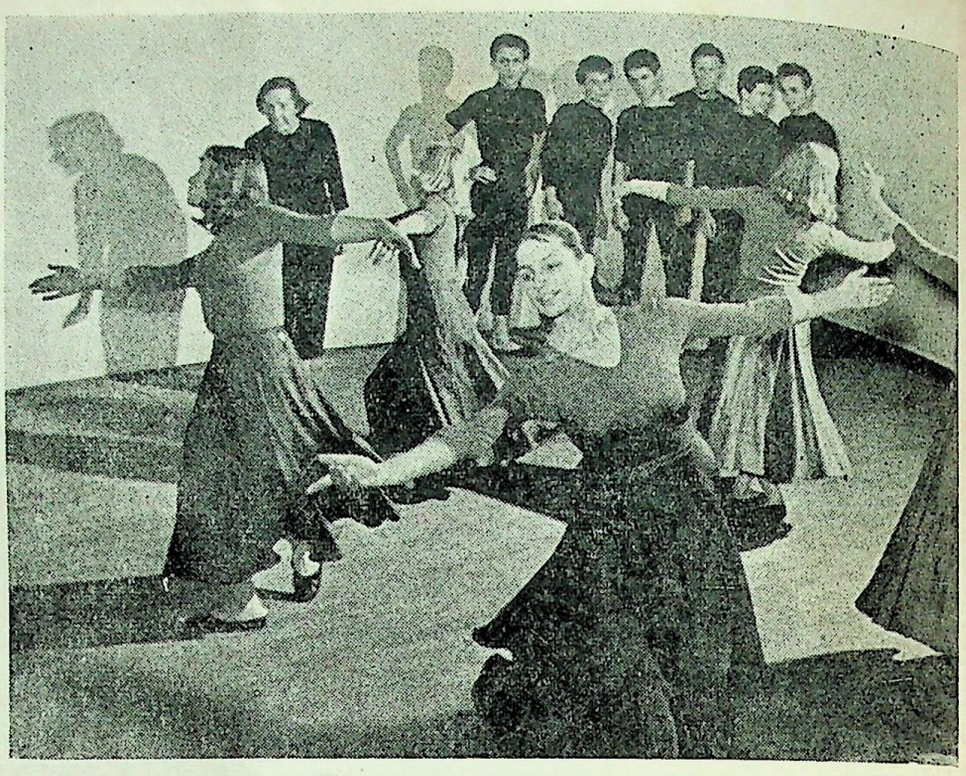

६० वर्षीया पालूक्का (काले वेष में पीछे) शिष्यों को नृत्य-अभ्यास करा रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय अख़बार उद्योग में

जर्मन छापखानों का सहयोग

जर्मन जनवादी गणतंत्र, 'प्लामाग' नामक विश्व प्रसिद्ध रोटरी छापखाने भारत को निर्यात कर रहा है। ये छापखाने भारत वर्ष के अख़बार उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, और इस विकास के दो अनिवार्य तत्वों, तेज़ रफ्तारी तथा कार्य क्षमता को पूरा करते हैं। भारत में कई बड़े अख़बारों ने ये रोटरी प्रेस लगा दिये हैं। हाल ही में इस प्रेस श्रृंखला में एक नवीनतम कड़ी जुड़ गई। वह है एक ऐसे रोटरी छापखाने की संस्थापना जो मलयाली (भाषा) अखबार उद्योग की धुरी होगी। कहना न होगा कि यह क़दम इस क्षेत्र में पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण क़दम है।

२५ मई, सन् १९६२ के दिन भारत के प्रतिरक्षा मंत्री, श्री कृष्णा मेनन ने, 'मातृ भूमि' अख़बार के एरनाकुलम संस्करण का उद्घाटन किया। मलयाली भाषा के अख़बार उद्योग में यह एक महत्वपूर्ण वृद्धि तो थी ही, साथ ही, मलयाली अख़बारों के इतिहास में पहली बार एक दैनिक अख़बार, दो शहरों से एक साथ प्रकाशित होगा। यह सफलता 'प्लामाग' रोटरी छापखाने का नतीजा है। दैनिक 'मातृ भूमि' का जन्म हुआ कालीकट में और यह महत्वपूर्ण अखबार पिछले ४० वर्षों से मलयाली जनता की सेवा कर रहा है। इस अख़बार का एरनाकुलम संस्करण, मलयाली अख़बार उत्पादन से संबंधित कई अन्य बातों में भी, मील पत्थर की हैसियत रखता है। उदाहरण के लिये, हाथ से कम्पोजिंग करने का स्थान, पहली बार, मोनोटाइप कम्पोजिंग ने लिया है जो मशीनों से होता है। यह जर्मन मशीनें, खास तौर से इसी काम के लिये तैयार की गई हैं। कम्पोजिंग की इस विधि को, तेज़ रफ्तार और कार्यदक्षता की दृष्टि से, मलयाली अख़बार उद्योग के लिये एक क्रांतिकारी तथा युग प्रवर्तक परिवर्तन कहा जा सकता है। जो प्लामाग रोटरी छापखाना यहां लगा दिया गया है वह एक घण्टे में, पूरे अख़बार की ५०,००० प्रतियां छाप सकता है।

'मातृ भूमि' का एरनाकुलम वाला अधिष्ठान काफी फैला हुआ और आलीशान है जिसमें, कर्मचारियों के रिहायशी मकान, अखबार के विभिन्न दफ्तर तथा कई लम्बे चौड़े हालों में छापेखाने की मशीनों की कतारें, शामिल हैं। चूंकि एरनाकुलम, केरल राज्य का महत्वपूर्ण यातायात तथा व्यावसायिक केन्द्र है, इसलिये लगता है कि 'मातृ भूमि' का यहां से प्रकाशित संस्करण जल्द ही, कालिकट के संस्करण से बहुत आगे निकल जायेगा। छापखाने की अनेक मशीनों में 'प्लामाग रोटरी' सर्वप्रमुख मशीन दीखती है। मुख्य इंजीनियर श्री नारायणन नय्यर ने, जो प्रेसों के अनुभवसिद्ध माहिर हैं, जर्मनी की इस रोटरी छपाई मशीन की बहुत प्रशंसा की। श्री नय्यर ने मुझे यह भी बताया कि ज.ज.ग. की छापखाने बनाने वाली फर्म ने, रोटरी को लगाने के लिये अपने दो जर्मन इंजीनियर भी भेज दिये जो तीन महीनों तक रोटरी लगाने के साथ साथ भारतीयों को रोटरी चलाने की ट्रेनिंग भी देते रहे।

१६ पृष्ठों का अख़बार छापने वाला 'मातृ भूमि' का यह जर्मन रोटरी पूरे दक्षिण भारत में, अपने आकार प्रकार का पहला ऐसा प्रेस है। इसी प्रकार के अन्य छापखाने मद्रास के 'तामिल नाड' और पूना के 'केसरी मराठा' नामक अख़बारों के अधिष्ठानों में आजकल लगाये जा रहे हैं।

ज.ज.ग. के इन प्लामाग रोटरी छापाखानों की सबसे बड़ी विशेषता है इसका दाम। अन्य देशों के ऐसे ही आकार प्रकार के रोटरी प्रेसों की तुलना में, प्लामाग रोटरी काफी सस्ते हैं। साथ ही ये मज़बूत और तकनीकी दृष्टि से बहुत पायदार तथा पूर्ण हैं। इनके छोटे बड़े पुर्ज़े हर समय प्राप्त होते हैं और इन प्रेसों को चलाना आसान है। ज.ज.ग. की प्लामाग रोटरी प्रेस बनाने वाली फर्म 'प्लामाग प्लाएन' न केवल सारे यूरोप में ही प्रसिद्ध है, बल्कि सात सागर पार के देशों में भी इसकी ख्याति दिन प्रतिदिन फैलती जा रही है।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

मद्रास स्थित, ज. ज. ग. के क्षेत्रीय व्यापार प्रतिनिधि, श्री होरिके, रोटरी छापखाने के उद्घाटन समारोह में भाषण दे रहे हैं

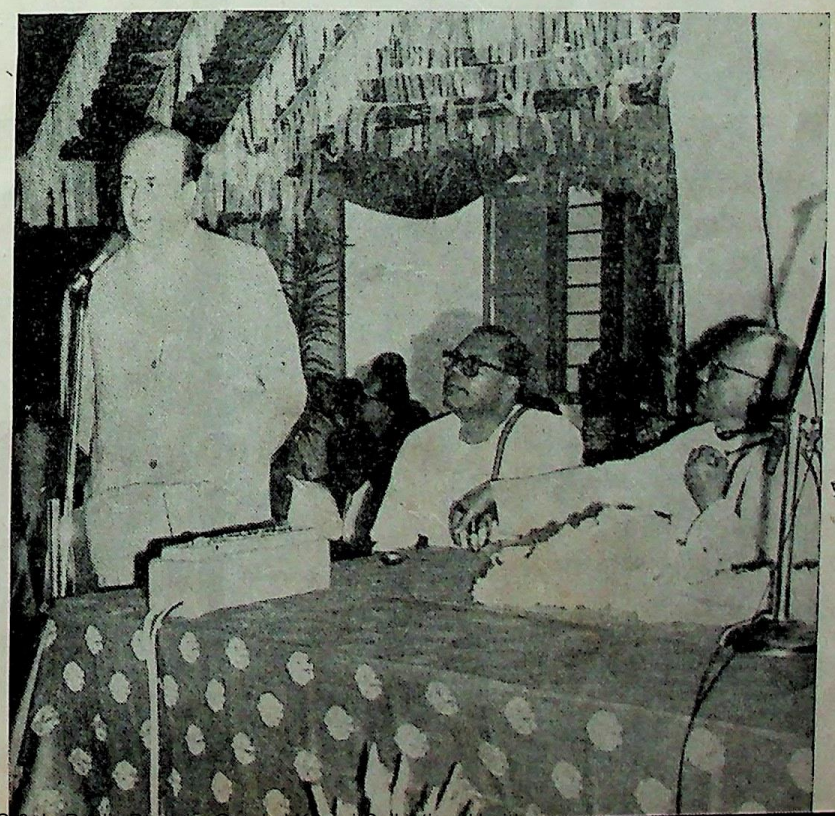

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राइफ्सवाल्ड

पुरातन

ग्राइफ्सवाल्ड का बाज़ार चौक तथा इसका टाउन-हाल। पीछे 'निकोलाइ गिरजा' खड़ा है

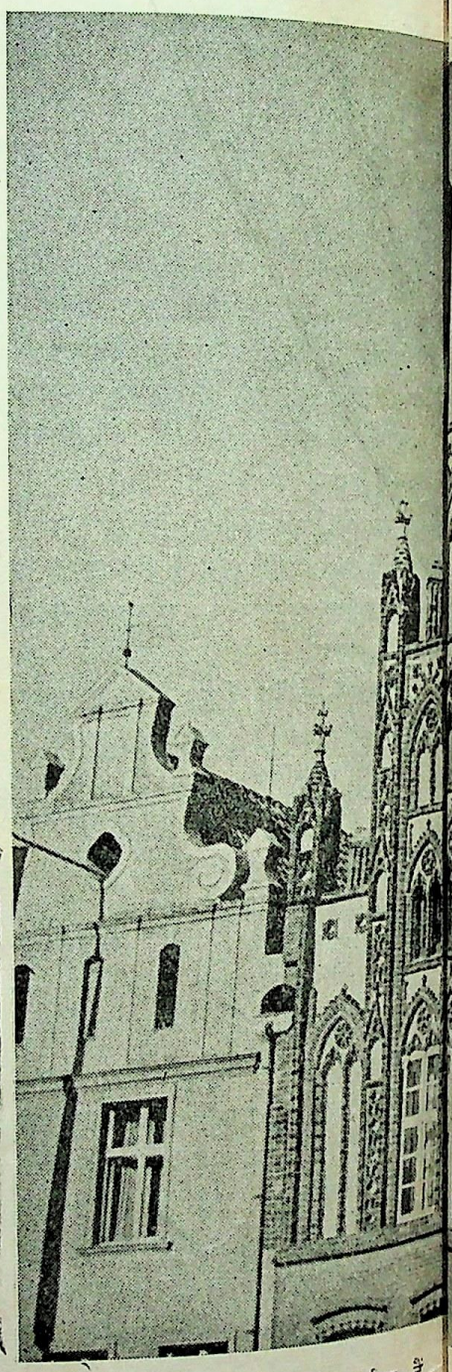

१४ वीं शताब्दी का, गाथिक वस्तु-कला का एक भवन

७०० वर्ष पुराना ग्राइफ्सवाल्ड, जर्मनी के उन इने गिने शहरों में से एक खुश-क़िस्मत शहर है जो दूसरे महायुद्ध के भयंकर विध्वंस से बच गया। जब, आगे बढ़ती हुई रूसी सेनाओं ने इसको चारों ओर से घेर लिया और इस शहर की भी वही दशा होती जो पूरी जर्मनी की हुई थी, तो कर्नल रूडोल्फ पीटरशेगेन की दूरदर्शिता ने ही इस प्राचीन नगर को तबाही से बचा लिया। कर्नल ने रूसी सेना के आगे हथियार डाल दिये और इस प्रकार उसने ग्राइफ्सवाल्ड को तबाह होने से बचा लिया।

'संत निकोलाइ' के गिरजे के टावर से सम्पूर्ण ग्राइफ्सवाल्ड नज़र आता है। उत्तर पश्चिम में स्थित शट्रालज़ुण्ड क़स्बा बहुत निकट दिखाई देता है और दूर उत्तर में रूगेन द्वीप का तट आविर्भूत होता हुआ सा दिखाई देता है। पूर्व में, चरागाहों के बीच से सपर्वत बहती हुई रीख़ नदी दिखाई देती है जो ग्राइफ्सवाल्ड को बाल्टिक सागर से मिला देती है।

ग्राइफ्सवाल्ड के मुख्य आकर्षण हैं तीन गिरजा-घर, जिनकी बनावट, एक दूसरे से एकदम भिन्न है। 'संत मेरी' का गिरजा मज़बूत और भीमाकार है। पड़ोस में फैले हुये सुन्दर मकान इसकी तुलना में बौने लगते हैं। दूसरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न का संगम

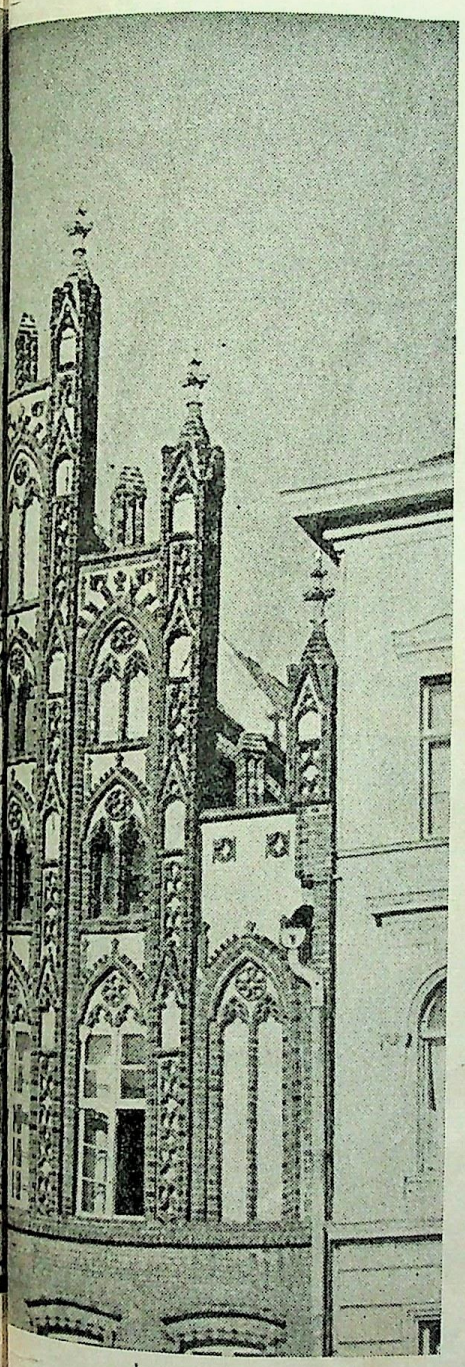

'निकोलाइ गिरजाघर', उंगली की तरह तना हुआ मानो नीलाकाश को छूने का प्रयत्न कर रहा है। ईंटों से निर्मित, गाथिक वास्तुकला के इस अनुपम नमूने की तुलना में कुछ दूर खड़ा 'जैकोबी गिरजा', छोटा किंतु आकर्षक लगता है।

ग्राइफ्सवाल्ड का इतिहास १३वीं शताब्दी से शुरू होता है। यह 'हांज़े' नामक शक्तिशाली व्यापार संस्था द्वारा विकसित क़स्बों में से एक था, और एक बड़ी बन्दरगाह होने के साथ साथ एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र भी था। यहां से न केवल उत्तरी जर्मनी को ही, वरन् उत्तरी यूरोप को भी जहाज़ों के द्वारा माल भेजा जाता था। लेकिन 'हांज़े' व्यापार संस्था के पतन के साथ ही ग्राइफ्सवाल्ड का व्यापारिक महत्व भी समाप्त हुआ।...

लेकिन प्राचीन के खण्डहरों में से नवीन का जन्म लेना एक अनिवार्य नियम है। ग्राइफ्सवाल्ड आज भी कृषि उत्पादन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहां आधुनिक ढंग के बने हुये कई गोदाम और हर तरह की आधुनिक मशीनों से आरास्ता अनाज रखने का एक विराट भण्डार घर, दर्शक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त ग्राइफ्सवाल्ड एक महत्वपूर्ण रेल जंकशन भी है और माल गाड़ियां आज भी अनाज से भर कर यहां से बाल्टिक सागर के तट तक जाती हैं।

१६वीं शताब्दी में, उदार तथा मानवीय विचारों वाले एक पादरी डा० हाइनरिख़ रूबेनो ने, जो ग्राइफ्सवाल्ड के महापौर भी थे, ग्राइफ्सवाल्ड विश्वविद्यालय की नींव डाली। वह इसके प्रथम रेकटर भी बने। कालान्तर में, इस विश्वविद्यालय की ख्याति देशान्तर तक फैल गई और इसके अध्यापनकार्य में, एर्नस्ट मोरिन्स आरनड्त जैसे विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा कवि और लाइफलेर, बिल्लरोथ तथा साउरब्रुख़ जैसे महान विद्वान तथा दार्शनिक सम्मिलित हुये।

आज जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी सरकार ग्राइफ्सवाल्ड विश्वविद्यालय को पर्याप्त आर्थिक तथा अन्य सहायता उपलब्ध करती है—विशेषकर अनुसन्धान को विकसित करने के लिये। सन् १९५६ में, जब इस विश्वविद्यालय ने अपनी ५००वीं वर्षगांठ मनाई, इसमें ४७० प्रोफेसर, प्राध्यापक तथा सह-प्राध्यापक अध्यापन कार्य पर नियुक्त थे, जबकि सन् १९२६ में इनकी संख्या केवल १६८ थी। विश्वविद्यालय के लिये कई इमारतें बनीं और बन रही हैं। इस प्राचीन शहर में, नूतन जीवन की हलचल बहुत सुन्दर और आकर्षक लगती है। विद्या तथा ज्ञान का यह केन्द्र, न केवल ग्राइफ्सवाल्ड के ही निवासियों की सेवा करता है, बल्कि आस पास के अनेक गांवों तथा कस्बों के विद्यार्थियों की, बढ़ती हुई ज्ञान, विज्ञान पिपासा को भी शान्त करता है। इस प्रकार ५०० वर्ष की अपनी भव्य परंपरा को आज भी, पुरातन और नूतन के समन्वय का यह प्रतीक—ग्राइफ्सवाल्ड विश्वविद्यालय, आगे बढ़ा रहा है।

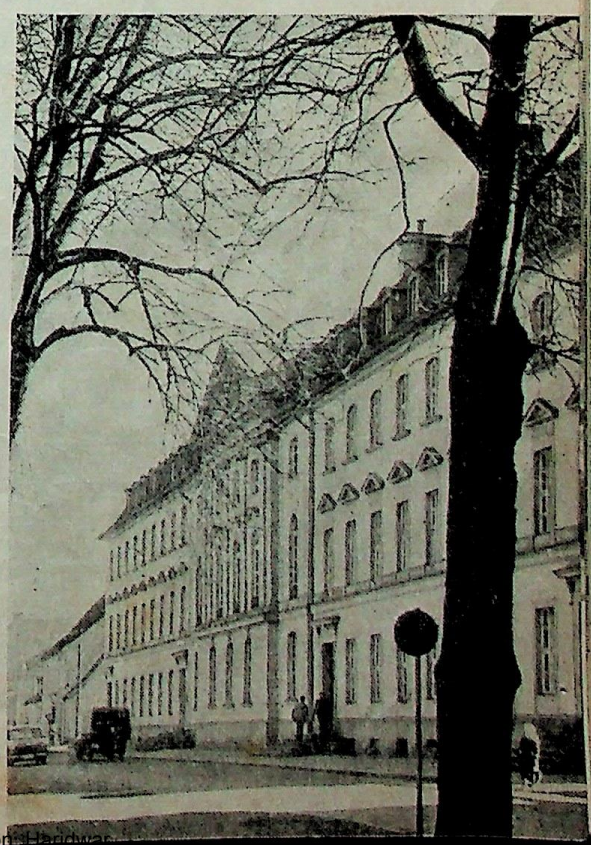

ग्राइफ्सवाल्ड विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

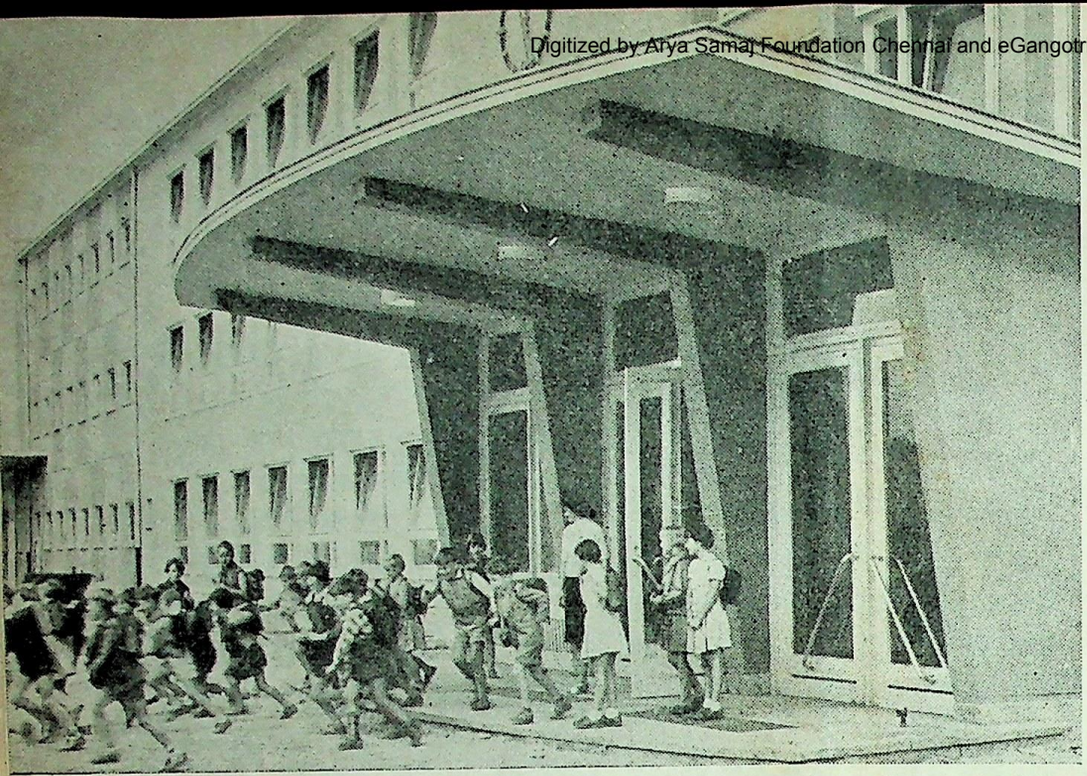

जर्मन जनवादी गणतंत्र में

शिक्षा

जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्कूल जाने वाले आयु के कुल बच्चों में लगभग ८० प्रतिशत बच्चे दस अथवा बारह वर्षीय पोलितकनीकी हाई स्कूलों में जाते हैं। १० वर्षों की सामान्य शिक्षा के बाद, जो सन् १९५९ से अनिवार्य कर दी गई है, विद्यार्थी स्कूल छोड़ने के बाद किसी व्यावसायिक स्कूल में दो साल तक किसी व्यवसाय की शिक्षा लेता है।

सन् १९४५ में, पूर्वी जर्मनी में केवल ४,११४ देहाती स्कूल थे जिनके पास केवल एक-एक कमरा था पढ़ाने के लिये। सन् १९५८ में इस प्रकार के अन्तिम तीन स्कूल समाप्त कर दिये गये। इसका कारण है ज. ज. ग. की वह नयी शिक्षा व्यवस्था, जिसकी बुनियाद दूसरे महा युद्ध के बाद डाली गई। इस नई शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य है ज. ज. ग. के किशोर तथा तरुण विद्यार्थियों को शांति, अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे, मानवतावाद तथा जनवादी मूल्यों की शिक्षा देना, ताकि वे आगे चलकर स्वदेश और संसार के योग्य नागिरिक बनें।

ऐसा वातावरण तैयार करने की दिशा में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण क़दम था सन् १९४६ का शिक्षा सुधार क़ानून। इसके अनुसार, नर्सरी स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक प्रत्येक विद्यार्थी को मनचाही शिक्षा प्राप्त करने का सामान तथा पूर्ण अधिकार है, चाहे वह किसी भी वर्ग या स्तर का हो। इस क्रांतिकारी सुधार के पूर्व, जर्मनी में धनी-वर्ग के बच्चों के लिये कई विशेष अधिकार सुरक्षित थे। ज. ज. ग. में उक्त सुधार के लागू होने से जर्मनी के इतिहास में पहली बार, प्रत्येक विद्यार्थी को किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार तथा अवसर मिला। इतना ही नहीं नयी शिक्षा व्यवस्था में मज़दूर तथा किसान वर्ग के बच्चों के विकास के लिये विशेष प्रबंध किया गया। इस व्यवस्था का मूलाधार है छात्र छात्राओं को मुफ्त शिक्षा तथा छात्रवृत्तियां देना।

नई शिक्षा व्यवस्था में स्कूलों, कालिजों आदि का—अर्थात् शिक्षा का, राष्ट्रीयकरण किया गया और अध्ययन अध्यापन को वैज्ञानिक आधार पर संगठित किया गया। हर कक्षा में औसतन २७ छात्र होते हैं और प्रति २३ छात्रों पर एक शिक्षक नियुक्त किया गया है। परिणामस्वरूप, ज. ज. ग. की शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा और ऊंचा उठ गया है।

पुरानी शिक्षा व्यवस्था, किताबी ज्ञान तथा वास्तविक जीवन में और सिद्धान्त तथा व्यवहार में, एक व्यवधान निर्माण करती थी। वैसे जर्मनी के लुइनिज़ तथा हम्बोल्ट जैसे महान शिक्षा-शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम में प्राकृतिक-विज्ञान तथा तकनीकी विषय लाकर, इस व्यवधान को पाटने के प्रशंसनीय प्रयत्न भी किये। लेकिन उनके इन महत्वपूर्ण प्रयासों को अनुकूल वातावरण न मिलने पर व्यापक सफलता न मिल सकी। लेकिन इन मानवतावादी मूल्यों की परंपरा को ज. ज. ग. की नई शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण रूप से अंकुरित होने का अब पूर्ण अवसर मिला है।

पोलितकनीकी शिक्षा साधारणतयः, और "उत्पादन-कार्य का शिक्षा दिवस" विशेष कर, स्कूलों के तमाम बच्चों को इस बात का थोड़ा बहुत ज्ञान देता है कि प्राकृतिक-विज्ञान, औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन क्षेत्रों में किस तरह इस्तेमाल में लाये जा सकते हैं। मतलब यह कि विद्यार्थी अलग खड़े रह कर इस प्रक्रिया को देखते भर नहीं, बल्कि वे उत्पादन-प्रक्रिया में सक्रिय हिस्सा भी लेते हैं। विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान के लिये किस प्रकार के (उत्पादन) कार्य

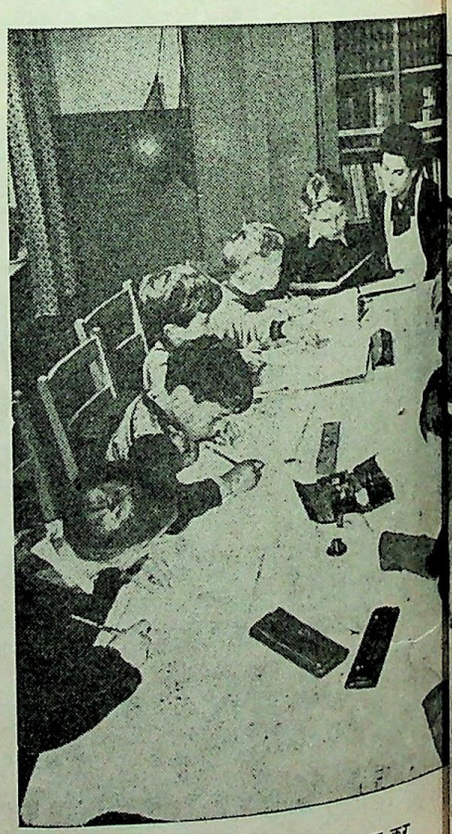

स्कूल के एक क्लब में विद्यार्थी मिलजुल कर काम कर रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीय उद्देश्य

उपयुक्त हैं, यह बात शिक्षा-शास्त्री, वैज्ञानिक, टेकनीशियन तथा मज़दूर किसान मिलकर फैसला करते हैं और इसके बाद इनको पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है, विभिन्न कक्षाओं के स्तर के अनुसार।

विषय	५ वीं	६ टी	७ वीं	८ वीं	९ वीं	१० वीं
जर्मन भाषा	७	६	५	५	५	४
इतिहास	१	२	२	२	२	२
नागरिक शास्त्र	—	—	—	—	१	२
भूगोल	२	२	२	२	२	१
रूसी भाषा	६	५	४	३	३	३
गणित	६	६	६	६	५	५
भौतिकी	—	३	२	२	३	४
नक्षत्र-विज्ञान (ज्योतिष)	—	—	—	—	—	१
रसायन शास्त्र	—	—	२	३	३	४
प्राणि शास्त्र	३	२	२	२	२	२
दस्तकारी	२	२	—	—	—	—
उत्पादन शिक्षा दिवस तथा समाजवादी-उत्पादन परिचय	—	—	३	४	४	४
तकनीकी नक़शानवीसी	—	—	१	१	१	१
ड्राइंग	१	१	१	१	१	—
संगीत	४	१	१	१	१	१
व्यायाम	३	३	३	२	२	२
दूसरी विदेशी भाषा (वैकल्पिक) (अंग्रेज़ी या फ्रेंच)	—	—	४	३	३	२
कसीदा कढ़ाई (वैकल्पिक)	१	१	—	—	—	—
सप्ताह में पढ़ाई के कुल घण्टे	३६	३४	३३	३४	३५	३६

प्रति सप्ताह पढ़ाई के घण्टे

उत्पादन, किन राजनीतिक तथा आर्थिक नियमों से शासित होता है, स्कूलों के विद्यार्थियों को इसका बुनियादी ज्ञान देने के लिये एक अलग विषय—'समाजवादी उत्पादन का परिचय', पढ़ाया जाता है। संलग्न तालिका आपको उस पाठ्यक्रम से अवगत करायेगी जो ज.ज.ग. में, ५ से लेकर १०वीं श्रेणी तक के बच्चों को हाई स्कूल में पढ़ाई जाती है।

अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में, बच्चों के माता पिता भी सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं। अनेकानेक ऐसे पितृ-परिषद और विशेष आयोग तथा संस्थायें वजूद में आई हैं, ढाई लाख के लगभग माता पिता जिनके सदस्य बन चुके हैं। संक्षेप में, ज. ज. ग. की शिक्षा व्यवस्था में उच्च मानवीय मूल्यों तथा उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर बच्चों को भविष्य की ज़िम्मेदारी संभालने के लिये तैयार किया जाता है।

शिक्षा का अनिवार्य अंग—खेल कूद

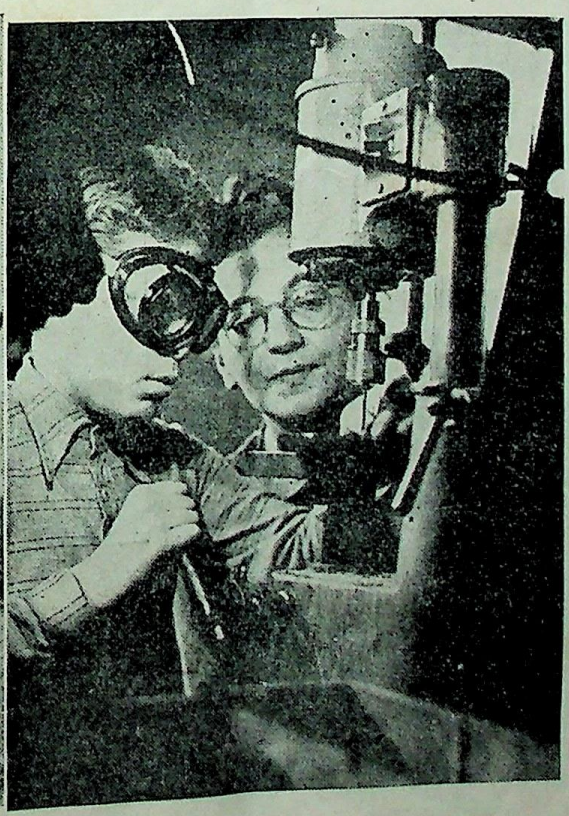

पालितकनीकी शिक्षा

शिक्षक और शिक्षार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र में

भारतीय चित्रकार की प्रदर्शनी

ज.ज.ग. की राजधानी, बर्लिन में, ६ जुलाई को, एक प्रसिद्ध चित्रकार, श्री माधव सतवाल्कर की चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। चित्रकार, बम्बई के एक चित्रकला संस्थान के निदेशक हैं। श्री सतवाल्कर के चित्र, जहां उनकी उत्कृष्ट चित्रकला का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहां वे भारतीय जीवन का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत करते हैं। श्री सतवाल्कर की इस चित्र-प्रदर्शनी में उनके वे चित्र भी सम्मिलित हैं जो उन्होंने 'कानिया' तथा अन्य अफ्रीकी देशों के निवास काल के दौरान तैयार किये।

श्री माधव सतवाल्कर आजकल ज.ज.ग. का पर्यटन कर रहे हैं। अपने इस पर्यटन में चित्रकार, वहां के प्रसिद्ध कला संस्थानों तथा संग्रहालयों का भ्रमण करेंगे और ज.ज.ग. के कला संस्थानों तथा स्कूलों में सौन्दर्यशास्त्र विषयक अध्ययन अध्यापन के साधनों से भी वह अवगत होने का प्रयत्न करेंगे। हाल ही में श्री सतवाल्कर ने, बर्लिन के एक ऐसे कालेज को देखा जहां चित्रकला का शिक्षण होता है। यहां के प्रशिक्षण के ढंग को "अनुकरणीय" बताते हुये चित्रकार ने टिप्पणी की कि "आज तक मैंने जितने कला संस्थान तथा स्कूल देखे हैं उनमें यह सर्वोत्तम है।"

कीनिया की नारी

भारतीय नारियां

भारतीय किसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकार की एक शिष्या

ग्वालिनें

पश्चिम भारत का एक ग्राम

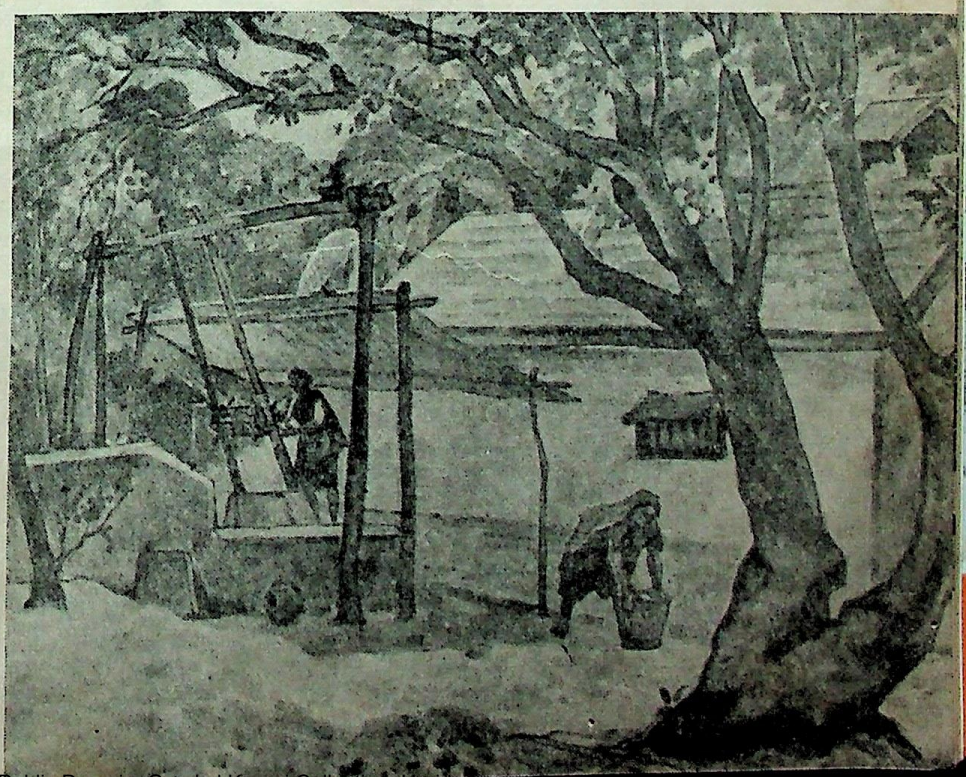

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

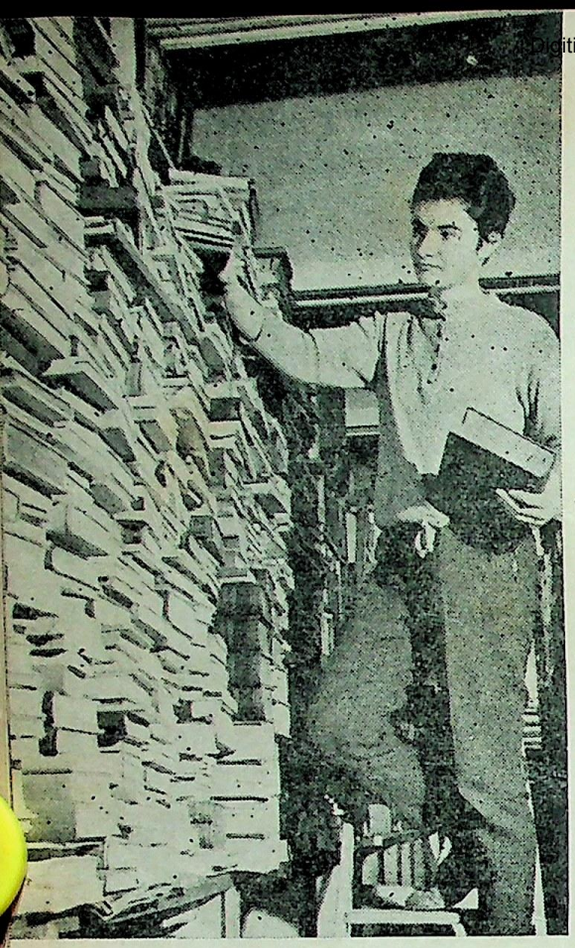

तरुण लेखक

पिछले कुछ वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के तरुण लेखक इतने लोकप्रिय हुये हैं जितने वे आज तक कभी नहीं हो पाये थे। इसका सीधा अर्थ यह है कि ज. ज. ग. में, तरुण पीढ़ी के प्रतिभा सम्पन्न लेखकों की अच्छी खासी संख्या विकसित हो रही है। ज. ज. ग. एक नवीन राष्ट्रीय साहित्य को जन्म दे रहा है जिसका उद्देश्य है "वर्तमान युग के नये मानव को तथा उसके सामाजिक संबंधों और अन्तर्द्वन्द्वों को अभिव्यक्त करना! उसके शांतिपूर्ण नवनिर्माण और सह-अस्तित्व की भावनाओं को चित्रित करना!"

तरुण लेखकों को इस महान उद्देश्य की दिशा में अग्रसर करने और उनकी लेखन प्रतिभा तथा कला को परिपक्व बनाने में, जर्मन लेखक संघ और बड़े-बड़े प्रकाशक अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं। तरुण पीढ़ी के लेखकों के प्रकाशक केवल उनकी कृतियां छाप कर ही सन्तोष नहीं करते, वरन् वे लेखकों के पाठकों के साथ संबंध स्थापित करते हैं, उनकी वादविवाद गोष्ठियां आयोजित करते हैं और नये लेखक तथा पाठकों की बैठकें बुलाकर लेखक तथा पाठक का सीधा संपर्क संस्थापित करते हैं। इन बैठकों में तरुण लेखक अपनी रचनायें पढ़कर सुनाते हैं। आलोचना, प्रत्यालोचना होती हैं, वादविवाद चलते हैं। कहना न होगा कि इस तरह लेखक को अपनी कृति, भाव और रूप की दृष्टि से संपूर्ण बनाने में, अमूल्य सहायता मिलती है।

ज. ज. ग. में नये मानवीय साहित्य तथा नई पीढ़ी के साहित्यकारों को विकसित करने के लिये बाकायदा ट्रेनिंग दी जाती है। इसके लिये यहां कई लेखक-प्रशिक्षण केन्द्र तथा संस्थानों में प्रसिद्ध तथा अनुभवी साहित्यकार तरुण लेखकों को लेखन कला में निपुण बनाते हैं। भावी लेखक को साहित्य के विभिन्न उपकरणों अर्थात् शैली, वस्तुविषय, सौन्दर्य बोध, प्रतीक विधान, कलात्मक अभिव्यक्ति आदि की पेचीदगियों से अच्छी तरह अवगत कराया जाता है। इसके बाद वह अपनी कोई मौलिक रचना प्रस्तुत करने का काम शुरू करता है। गुरु और शिष्य के इस निकट के संपर्क से, दोनों एक दूसरे के स्वभाव तथा जीवन से परिचित हो जाते हैं और तरुण लेखक में आत्म विश्वास पैदा हो जाता है तथा उसकी लेखन संबंधी अनेक गुत्थियां, गुरु के सत्-परामर्श से तुरन्त सुलझ भी जाती हैं।

इस प्रशिक्षण विधि का एक बहुत अच्छा परिणाम यह निकला है कि ज. ज. ग. में कई ऐसे प्रकाशन-घर वजूद में आये हैं जो केवल तरुण लेखकों की रचनायें ही छापते हैं। ये विशेष प्रकाशन-घर गुरु तथा लेखक शिष्यों के, एक दिन के सम्मेलन भी आयोजित करते हैं जहां साहित्य की समस्याओं तथा नये लेखकों की रचनाओं पर विचार विमर्श होता है।

प्रकाशन-घर इन नवोदित लेखकों की हर प्रकार से सहायता करने को तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिये, यदि उनको किसी ऐसे लेखक की आर्थिक अथवा अन्य कठिनाइयों का पता चले जो उसके लेखन कार्य में बाधा डालती हों, तो वे तुरन्त उसके लिये पैसों का प्रबन्ध करते हैं। इसके अतिरिक्त वे इन लेखकों के लिये शांत वातावरण वाले मकानों का भी प्रबन्ध करते हैं, जहां कोलाहल से दूर रहकर लेखक अधिक अच्छा काम कर सकें। जर्मनी में लेखकों को इतना पैसा तथा सुविधायें, इतनी मात्रा में पहले कभी उपलब्ध नहीं थीं। किताब पूरी करने पर कोई भी प्रकाशक उसकी रायल्टी मारने की हिम्मत नहीं कर सकता, जो एक अच्छी खासी रकम होती है।

यदि किसी लेखक की किसी कृति का वर्ण्य-विषय किसी अन्य देश अथवा किसी वृहत्त निर्माण-स्थल से संबंधित हो तो प्रकाशक उस लेखक को अपने खर्चे पर विदेश या उस निर्माण-स्थल की यात्रा पर भी भेज देता है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि प्रकाशक नवोदित तरुण लेखकों के विकास के लिये हर संभव क़दम उठाने पर कटिबद्ध रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक

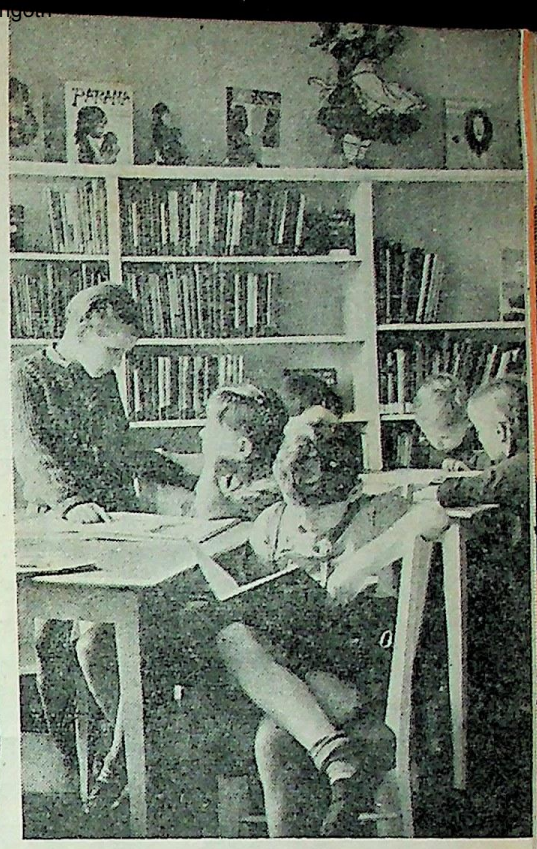

कई पुस्तकालयों के साथ बच्चों के विशेष वाचनालय जुड़े हैं

साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करने वाले नये लेखकों के लिये यह स्वाभाविक है कि उनकी कुछ प्रथम रचनायें, शैली की दृष्टि से एक दम न तो दोष रहित और न ही शत प्रतिशत मौलिक होंगी। लेकिन सहानुभूति, परामर्श तथा विचारों के आदान प्रदान से उनको मौलिक शैली का ज्ञान और महत्ता समझाई जाती है। कालान्तर में, नवोदित लेखक यह समझ लेता है कि किसी भी कृति की सफलता के लिये कलात्मक अभिव्यक्ति तथा रोचक शैली ये दो अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व हैं।

किताबों के असंख्य ग्राहक

प्रत्येक लेखक, कभी न कभी, कुछ समय के लिये कोलाहल से दूर, अलग थलग रहना चाहता है। ऐसे 'मूड' वाले अवसरों पर, प्रकाशक, लेखकों को अकेला छोड़ देते हैं—उनके 'मूड' में वे बाधा नहीं डालते।... तरुण लेखकों की रचनाओं को छापने वाले प्रकाशक यह बात जानते हैं कि उनसे पहली बार ही, एक दोष मुक्त तथा कलापूर्ण कृति की आशा करना ग़लत है। इसलिये वे, ऐसे लेखकों की कृतियां भी प्रकाशित करने में नहीं झिझकते जो साहित्यिक दृष्टि से परिपक्व न हों लेकिन जिनमें आगे, अच्छे लेखक बनने के बीज वर्तमान हों। नये लेखक को एक अच्छा लेखक बनने केलिये अवसर देना अत्यन्त आवश्यक है ताकि वह पाठक और आलोचक के सामने आ सकें। इसके बाद यह लेखक का कर्तव्य है कि वह इस अमूल्य अवसर से लाभ उठाये।

हमारी, समाजवादी शासन प्रणाली में मुनाफाखोरी किसी भी क्षेत्र में वर्तमान नहीं। मुनाफाखोरी पूंजीवाद की विपदा है। इसीलिये ज.ज.ग. के प्रकाशक, अपने लेखकों को और विशेषकर तरुण लेखकों को, हर प्रकार की सुविधा तथा उत्साह देना अपना कर्तव्य समझते हैं। जर्मनी के विश्व प्रसिद्ध कवि गोइटे (गेटे) के शब्दों में "एक सच्चा राष्ट्रीय लेखक का विकास युग की अनेक परिस्थितियों तथा उसके पूर्वज लेखकों के सफल तथा असफल प्रयत्नों (अर्थात् साहित्यिक परंपराओं) के अध्ययन पर निर्भर करता है।"

हर साल, ज.ज.ग. की राजधानी बर्लिन में किताबों का एक बाजार लगता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-रूपसज्

सन् १९४५ में लइपज़िक शहर के उस क्षेत्र में, जहां प्रकाशन-घर तथा छापखाने स्थित थे, कवल मलबे और धूल का साम्राज्य था। दूसरे महायुद्ध में हज़ारों बमों ने यहां के सभी प्रकाशन घरों और छापेखानों को धाराशायी कर दिया था। इस भयंकर तबाही के बाद जब पुनर्निमाण की गति तेज़ हुई तो लइपज़िक के अपने परंपरागत व्यवसाय अर्थात् पुस्तक-प्रकाशन को पुनः नवजीवन मिल गया। आज, फिर यहां से हर रोज़ हज़ारों लाखों पुस्तकें जहाज़ों में सवार होकर देश देशान्तरों की यात्रा पर निकलती हैं।

लइपज़िक, जो "पुस्तकों का शहर" कहलाता है, पुस्तकों के रूप-सज्जा कारों या रूपांकन करने वालों के प्रशिक्षन के लिये एक योग्य स्थान है। इस बात को आज से २०० वर्ष पहले ही एक विश्व-विख्यात जर्मन कवि योहान गोइटे के एक प्रसिद्ध कलाकार मित्र, श्री एडम फ्रीडर्ख ओइसर ने पहचान लिया था। उन्होंने सन् १७६४ में दुनिया की पहली ऐसी अकादमी को जन्म दिया जिसका मुख्य उद्देश्य था पुस्ककों की रूपसज्जा को कलात्मकता प्रदान करने के लिये अनुसन्धान करना और शिक्षण देना। दुनिया के सभी देशों से लोग इस अनुपन संस्थान (अकादमी) में प्रशिक्षण के लिये आते थे। जर्मनी में फासिज़्म के उदय और दूसरे महायुद्ध ने संस्थान के सतत विकास में बाधा डाली। लेकिन युद्ध समाप्त होते ही अकादमी का पुन-र्निमाण हुआ और इसके दरवाज़े रूप-सज्जाकारों के शिक्षण के लिये फिर से खोल दिये गये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की नवीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत, लइपज़िक के इस संस्थान में रूपसज्जा संबंधी प्रशिक्षण की विधि, अब बदलकर अधिक वैज्ञानिक तथा दिलचस्प बना दी गई है। इस प्राचीन अकादमी की रूपसज्जा-कला की भव्य परंपराओं को, आधुनिक युग की प्रगतिशील, मानवीय भावनाओं से जोड़कर एक सुन्दर और समन्वित पुस्तक-रूपसज्जा कला को जन्म दिया गया है। परिणामस्वरूप लइपज़िक की यह अकादमी पुस्तक-रूपसज्जा तथा ग्राफकला में फिर अपनी विश्व ख्याति को प्राप्त कर चुकी है। पुस्तकों की रूप-सज्जा कला के गहरे अध्ययन का अनि-वार्य परिणाम यह हुआ है कि प्रकाशन-घर और छापखाने, किताबों की व्यापक मांग के कारण, दिन रात काम में लगे रहते हैं।

ज.ज.ग. की सरकार, पुस्तकों की रूपसज्जा-कला को कितना महत्व देती है यह इस बात से पता चलता है कि सरकार ने पुस्तकों की रूपसज्जा तैयार करने वाला एक विषेश और अलग संस्थान ही लइपज़िक अकादमी में स्थापित किया है। सन् १९५६ में इस संस्थान की स्थापना हुई। पुस्तक उत्पादन के विशाल क्षेत्र में इस संस्थान का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

रूपसज्जा संस्थान के निदेशक हैं एक सक्रिय तथा जवान प्रोफेसर एलबर्ट काप्र जो अपने सहयोगियों के साथ काम में संलग्न रहते हैं और वे मिलजुल कर नवीन पदार्थों अथवा विधियों को प्रयोगों द्वारा विकसित करते रहते हैं, या, प्राचीन समय में इस्तेमाल होने वाली ऐसी सामग्री तथा शिल्पों (विधियों) की खोज करते रहते हैं जो काल के अथाह उदर में न जाने कब समा गये हैं। ऐसी सामग्री तथा विधियां यदि पुस्तक-रूपसज्जा कला के विकास में सहायक सिद्ध हों तो उनको तुरन्त काम में लाया जाता है।

भारत के कवि-सम्राट 'कालीदास' की रचनायें सारे यूरोप में, वहां की विभिन्न भाषा अनुवादों के माध्यम से, पढ़ी जाती हैं। जर्मन वासियों के घरों में महाकवि का 'ऋतुसंहार' आज भी देखा जा सकता है। पुस्तक रूपसज्जा के संस्थान ने इस कृति का एक अत्यन्त सुन्दर, नवीन संस्करण तैयार किया है। इस संस्करण की विशेषता यह है कि

पुस्तक रूप-सज्जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान

श्लोकों द्वारा वर्णित दृश्यों को रंगीन चित्रों के चित्रण द्वारा भी व्यक्त किया गया है। इन चित्रों की सज्जा देखते ही बनती है। पुस्तक रूपसज्जा की यह विशेष कला जर्मनी से लगभग समाप्त हो चुकी थी, लेकिन संस्थान ने इसको पुनर्जीवित कर दिया है। महाकवि कालिदास की एक अन्य विश्व प्रसिद्ध रचना 'मेघदूत' की भी आजकल नवीन रूपसज्जा तैयार हो रही है संस्थान में।

लइपज़िक के उक्त रूपसज्जा संस्थान में, अनेक प्राचीन तथा आधुनिक कवियों तथा लेखकों की रचनाओं की कलात्मक रूपसज्जा तैयार की जा चुकी है। यह कला विशेष, हस्तकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। हाथों से गढ़ी गई रूप-सज्जा की यह कला विशेष, आधुनिक मशीनों अर्थात् छापखानों के लिये एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित करती है ताकि वे भी लेखकों की कृतियों के भावानुरूप ही रूपसज्जा भी तैयार कर सकें! रूपसज्जा का ऊक्त संस्थान, ज.ज.ग. के प्रकाशन-घरों को भी, प्रकाशनों को अधिक सुन्दर और कलापूर्ण बनाने के संबंध में, परामर्श देता है।

संस्थान के निदेशक प्रो० काप्र संस्थान की सफलता-असफलता पर, इसकी भावी योजनाओं तथा कार्यक्रम पर, घण्टों बातें करते रहे हमारे साथ। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "२० वर्ष पहले इस लइपज़िक अकादमी ने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक रूपसज्जा तथा कला से संबंधित प्रथम दो वार्षिक कोश तैयार किये। हिटलर की फासिस्त सरकार ने इनको ज़ब्त कर के जला दिया। अब हमने इन वार्षिक कोशों की परंपरा को फिर से चालू कर दिया है। सन् १९५९ में संस्थान ने तीसरा वार्षिक-कोश संपादित करके छाप दिया। यह कोश, सरकार द्वारा 'वर्ष की सर्वोत्कृष्ट रूपांकित पुस्तक' घोषित हुई। इस कोश में, देश देशान्तरों की पुस्तक-रूपसज्जा तथा छपाई के विभिन्न नमूने तथा प्रसिद्ध चित्रकारों के इस कला विशेष संबंधी लेख संकलित किये गये हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध चित्रकार पाब्लो पिकास्सो के चित्र, जर्मनी की चित्रांकन पद्धति, चेकोस्लोवाकिया की आधुनिक मुद्रण-कला, दक्षिण अमरीका की मुद्रण-कला और चीन की काष्ठ मुद्रण-कला आदि।..."

ऐसे कोशों का प्रकाशन एक ओर तो विभिन्न देशों के मुद्रण के इतिहास से हमें अवगत कराता है, और दूसरी ओर सामयिक मुद्रण तथा पुस्तक रूपसज्जा कला को प्रोत्साहन और नई दिशाओं में बढ़ने का अवसर भी मिलता है। इस वार्षिक कोश का चौथा भाग सन् १९६० में प्रकाशित हुआ।...

अकादमी तथा संस्थान के कमरों और छापखानों में हमने अनेक जर्मन तथा विदेशी शिक्षार्थी देखे। विद्यार्थियों को यहां शिक्षा मुफ्त मिलती है और ९७ प्रतिशत छात्रों को सरकार की ओर से वज़ीफे दिये जाते हैं। पुस्तक-रूपसज्जा कला के अध्ययन के लिये यह अनिवार्य है कि पुस्तक उत्पादन की सम्पूर्ण तकनीकी प्रक्रिया को विद्यार्थी पूरी तरह जानता हो। शिक्षण की अवधि पांच वर्ष की है। शिक्षार्थी, प्रकाशन-घरों अथवा पत्र-पत्रिकाओं में काम करके अतिरिक्त पैसा भी कमा लेता है।

अकादमी के पास कई वर्कशाप तथा छापखाने हैं जहां शिक्षार्थी अनुभवसिद्ध रूपसज्जाकारों तथा कलाकारों की देख रेख में प्रशिक्षण पाते हैं।... आवरण पृष्ठ और जिल्द बान्धना, पुस्तक-रूपसज्जा के सब से महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनकी सुन्दरता तथा आकर्षण, एक प्रकार से, पुस्तक रूपसज्जा की जान है।...

कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसी महत्वपूर्ण अकादमी तथा संस्थान को, ज.ज.ग. की समाजवादी सरकार दिल खोलकर आर्थिक तथा अन्य सहायता देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

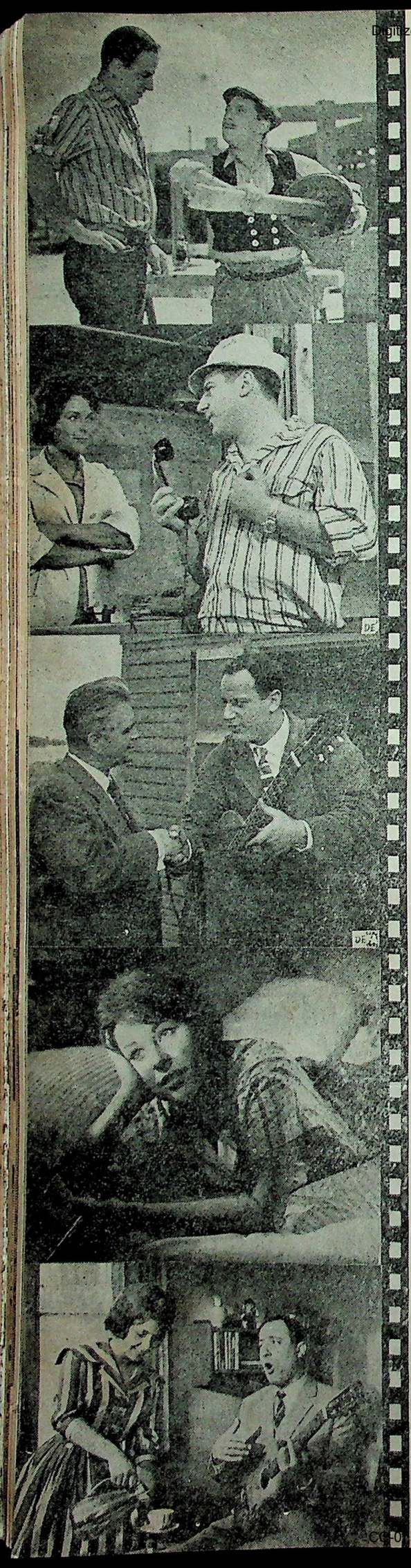

डेफा फिल्म जगत

प्यार की करामात

आज तक डेफा फिल्म कम्पनी (ज.ज.ग.) को, रोज़मर्रा के जीवन पर आधारित एक यथार्थवादी किन्तु हंसी-मज़ाक से भरपूर फिल्म बनाने में सफलता नहीं मिली थी। ऐसी फिल्म के लिये लोग बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करते थे, लेकिन हर बार उनको निराश ही होना पड़ता था। लेकिन अपनी नवीनतम फिल्म "आफ्फ डेर सोनेनसाइटे" (आन दि सन्नी साइड) में डेफा को, इस दिशा में काफी सफलता प्राप्त हुई है। यह फिल्म निश्चित रूप से हंसी-मज़ाक से लोट पोट करने वाला एक सुन्दर सुखान्त प्रहसन है, और यही गुण इसकी अपार लोकप्रियता का सर्व-प्रमुख कारण है।

इस फिल्म की कथावस्तु, वैसे किसी असाधारण घटना पर आधारित नहीं। एक तरुण इस्पात मज़दूर 'मार्टिन हाफ्फ' ने, अपनी शरारतों और चालाकियों के कारण, कारख़ाने के नाटक क्लब में एक ऐसा 'विशिष्ट स्थान' प्राप्त किया है कि क्लब का मैनेजर उससे किसी तरह छुटकारा पाना चाहता है। वह मार्टिन हाफ्फ को लइपज़िक के एक अभिनय प्रशिक्षण संस्थान में भेज देता है। लेकिन इस अध-कच्चे, शरारती और छिछोरे 'अभिनेता' को, कुछ ही महीनों बाद, संस्थान से बाहर निकाल दिया जाता हैं। इस प्रकार मार्टिन का, महान् अभिनेता बनने का सपना, एकदम टूट जाता है। अब वह किस मुंह से अपने कारख़ाने के अन्य सहयोगियों में जाये। वह वहां न लौटने में ही अपनी भलाई समझता है।

लइपज़िक में एक विशाल निर्माण-स्थल पर काम ज़ोरों पर चल रहा है, और यहीं मार्टिन हाफ्फ की क़िस्मत एक बार फिर—शायद अन्तिम बार—करवट बदलती है। वह सहसा एक अत्यन्त सुन्दर और सक्रिय युवती, ओटिल्ली ज़िन्न, को देखता है। युवती निर्माण-स्थल पर ओवर-सियर का काम करती है। रूप का जादू चल जाता है।

ओटिल्ली को अपनी ओर आकर्षित करने के सभी गुर असफल रह जाते हैं। मार्टिन का हलकापन, शरारतें और मदमस्त की सी उसकी एकटिंग युवती को उसके वश में न कर सकी।... और मार्टिन को यह अभ्यास करते-करते कई महीने बीत जाते हैं। इस अवधि में वह एक कुशल भवन-निर्माण मज़दूर के साथ साथ काफी संजीदा व्यक्ति भी बन चुका होता है और वह सचमुच ही ओटिल्ली से प्यार करने लगता है।.....

निर्माण-स्थल पर काम करने वाले मज़दूरों का भी अपना एक नाट्यदल तथा रंगमंच है। स्वाभाविक बात है कि मार्टिन इसका एक सक्रिय सदस्य है। लेकिन अब हल्के, छिछोरे और शरारती मार्टिन की जगह एक गंभीर और अनुभवी मार्टिन रंगमंच पर अपने सुन्दर तथा कलात्मक अभिनय की दाद दर्शकों से पाने लगता है। इन प्रशंसकों में, उसके सपनों की सिद्धि, ओटिल्ली ज़िन्न भी एक होती है। थोड़े ही समय में कला ने सौन्दर्य को जीता और ओटिल्ली, मार्टिन के प्यार की डोर में बंध जाती है।...साथ ही लइपज़िक का एक प्रसिद्ध रंगमंच मार्टिन को अपने संस्थान में एक विद्यार्थी अभिनेता के रूप में ग्रहण करता है। फिल्म यहीं समाप्त होती है।

वास्तविक जीवन से सम्बद्ध, यह फिल्म बहुत लोकप्रिय हो चुकी है और जो भी इस फिल्म का देखता है हंस-हंस कर उसके पेट दोहरे हो जाते हैं।.... मार्टिन हाफ्फ का सफल अभिनय किया है एक तरुण अभिनेता मानफ्रेड क्रूग ने, जिसका जीवन लगभग, मार्टिन हाफ्फ के जीवन से मिलता-जुलता है। नायिका, अर्थात् सुन्दर ओटिल्ली की भूमिका, तरुण अभिनेत्री मारिटा बूमे ने अदा की है जो कलात्मक दृष्टि से एक दम निर्दोष और सजीव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WIR LERNEN DEUTSCH — हम जर्मन सीखते हैं

Lektion XX — पाठ बीस

Der Aussenhandel — विदेश व्यापार

Nachdem wir schon viel über das Leben in der Deutschen Demokratischen Republik erfahren haben, wollen wir heute einiges über den Aussenhandel kennenlernen. Der Aussenhandel hat auch für die Wirtschaft der DDR eine grosse Bedeutung. Als der zweite Weltkrieg im Jahre 1945 zu Ende war, waren auch fast alle grossen Fabriken im Osten Deutschlands zerstört. Bevor man wieder mit der Produktion beginnen konnte, mussten die Arbeiter die Betriebe zuerst wieder aufbauen. Tag und Nacht wurde gearbeitet. Heute hat die DDR eine hochentwickelte Industrie. Sie besitzt aber nur eine kleine Rohstoffbasis. So erhielt zum Beispiel die Maschinenindustrie, die sich in der DDR befindet, vor dem zweiten Weltkrieg Kohle und Stahl aus dem Ruhrgebiet in Westdeutschland. Als Deutschland gespalten wurde, wurde auch der Warenverkehr sehr erschwert. Für die DDR ist es heute leichter, aus anderen Ländern Rohstoffe zu importieren als aus Westdeutschland. Ohne Importe des Aussenhandels ist es nicht möglich, die Bedürfnisse unserer Bevölkerung zu befriedigen. Ungefähr 40% (vierzig) Prozent unserer Importe bestehen aus Rohstoffen oder Halbfabrikaten. 60% (sechzig) Prozent sind Konsumgüter. Mehr als ein Drittel unserer Importe sind Lebensmittel. Täglioh rollen Züge mit Fleisch, Obst, Südfrüchten, Kakao und Kaffee über unsere Grenzen. Neben dem Aussenhandel mit den sozialistischen Staaten, der 75% (fünfundsiebzig) Prozent beträgt, hat auch die Erweiterung des Aussenhandels mit den jungen National-und antimperialistischen Staaten eine grosse Bedeutung. Die Handelspolitik der DDR gegenüber diesen Staaten beruht auf dem Prinzip der völligen Gleichberechtigung und Achtung des Handelspartners. Auf dieser Grundlage haben sich Handelsbeziehungen zu Indien, Indonesien, Burma, der VAR, dem Irak, Guinea, Ghana, Kuba und anderen Ländern entwickelt. Zur Zeit hat die DDR mit mehr als 100 Ländern Handelsbeziehungen. Die Regierung der Deutschen Demokratischen Republik verwirklicht auch im Aussenhandel die Prinzipien der friedlichen Koexistenz zwischen Staaten mit unterschiedlichen gesellschaftlichen Systemen.

जर्मन जनवादी गणतंत्र में जीवन के बारे में काफी कुछ जानने के बाद, आज हम विदेश व्यापार के बारे में कुछ कहेंगे। विदेश व्यापार भी जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिकता के लिये काफी महत्वपूर्ण है। सन् १९४५ में, दूसरे महायुद्ध की समाप्ति पर पूर्वी जर्मनी में लगभग सभी बड़े बड़े कारखाने तबाह हुये थे। उत्पादन को फिर से चालू करने के लिये, मजदूरों को ये कारखाने फिर से बनाने जरुरी थे। उन्होंने दिन रात काम किया। (परिणामस्वरूप) ज.ज.ग. में आज उद्योग बहुत ही विकसित है लेकिन, ज.ज.ग. के पास बुनियादी कच्चे माल के कुछ ही क़िसमें हैं। उदाहरण के लिये, ज.ज.ग. में जो मशीन उद्योग आज वर्तमान है, दूसरे महायुद्ध के पहले उसके लिये, कोयला तथा इस्पात पश्चिमी जर्मनी के रूहर क्षेत्र से आता था। जब जर्मनी का विभाजन हुआ तो इस माल के परिचलन में भी बाधा पड़ गई। आजकल ज.ज.ग. के लिये, प. जर्मनी को छोड़कर अन्य देशों से कच्चामाल आयात करना अपेक्षाकृत आसान है। विदेश व्यापार संबंधी आयात के बिना, जनता की आवश्यकताओं को पूरा करना संभव नहीं। हमारे यहां जितना सामान आयात किया जाता है उसका लगभग ४० प्रतिशत (चालीस) भाग कच्चा माल अथवा विधायित समान का होता है। (शेष) ६० प्रतिशत (साठ) उपभोक्ता सामान होता है। हमारे आयात सामान का तीसरा हिस्सा खाद्य पदार्थ होते हैं। हर रोज, गोश्त, मछली, फल, उष्ण-प्रदेशीय फल, कोका और काफी से भरी हुई माल गाड़ियां हमारी सीमाओं में आती रहती हैं। समाजवादी देशों के साथ हमारे विदेश व्यापार के अलावा, जो ७५ प्रतिशत (पच्चत्तर) है, नवजात तथा साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रों के साथ हमारे विदेश व्यापार को काफी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। इन राज्यों के साथ ज.ज.ग. की व्यापार नीति का सिद्धान्त है ग्राहकों के प्रति समानता और सम्मान। इसी आधार पर, (ज.ज.ग. के) व्यापारिक संबंध भारत, हिन्देशिया, बर्मा, अरब गणराज्य, इराक़, गिनी, घाना, क्यूबा तथा अन्य देशों के साथ विकसित हुये हैं। इस समय ज.ज.ग. के १०० से अधिक देशों के साथ, व्यापारिक संबंध हैं। ज.ज.ग. सरकार की विदेश व्यापार नीति, भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देशों (राज्यों) में, सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को भी स्वीकार करती है।

व्याकरण

१. काल सूचक वाक्यों में, संयोजकों "**nachdem**, (बाद) "**als**" (कब) **bevor**" (पहले) का प्रयोग :—

संयोजक "**nachdem**" (बाद) के उदाहरण

Nachdem wir bisher schon viel über das Leben in der DDR erfahren haben (Temporalsatz), wollen wir heute einiges über den Aussenhandel kennenlernen (Hauptsatz).

अथवा

Wir wollen heute einiges über den Aussenhandel kennenlernen, **nachdem** wir bisher schon viel über das Leben in der DDR erfahren haben. Frage: **Wann** wollen wir einiges über den Aussenhandel kennenlernen? Der Temporalsatz kann **vor** oder **nach** dem Hauptsatz stehen. (जैसे पाठ अठारह में)

नोट : संयोजक "**nachdem**" का प्रयोग करते समय आपको, मुख्य तथा कालसूचक वाक्य में प्रयुक्त क्रियापदों के रूपों के भिन्न कालों की ओर, विशेष ध्यान देना होगा। इसका प्रयोग निम्न प्रकार से होता है :

काल-सूचक वाक्य	मुख्य वाक्य
सामान्य वर्तमान में	वर्तमान काल में

अथवा

सामान्य भूत में	भूतकाल में
Nachdem wir viel über das Leben in der DDR erfahren hatten,	wollten wir einiges über den Aussenhandel kennenlernen.

अथवा

सामान्य वर्तमान में	भविष्य काल में
Nachdem wir viel über das Leben in der DDR erfahren haben,	werden wir einiges über den Aussenhandel kennenlernen.

नोट : भविष्यत् काल, सहायक क्रिया "**werden**" (गा) में सामान्य क्रिया जोड़ने से बनता है।

ich werde kennenlernen	wir werden kennenlernen
du wirst kennenlernen	ihr werdet kennenlernen
er, sie, es wird kennenlernen	sie werden kennenlernen

संयोजक "**als**" (कब) का प्रयोग

Als der zweite Weltkrieg im Jahre 1945 zu Ende war, waren auch fast alle grossen Fabriken im Osten Deutschlands zerstört.

नोट : संयोजक "als" के प्रयोग करने से, काल सूचक तथा मुख्य वाक्य में, रूपान्तरित क्रियायें हमेशा भूतकाल में प्रयुक्त होती हैं, जैसे :

काल सूचक वाक्य	मुख्य वाक्य
भूत काल में	भूत काल में

Bevor man mit der Produktion beginnen konnte (kann), mussten (müssen) die Arbeiter die Betriebe zuerst wieder aufbauen.

नोट : काल सूचक वाक्य और मुख्य वाक्य में दोनों क्रियाओं का प्रयोग वर्तमान अथवा भूतकाल में होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-सूचक वाक्य	मुख्य वाक्य
वर्तमान काल में	वर्तमान काल में
अथवा	
भूत काल में	भूत काल में

अभ्यास :

१. Verbinden (connect) Sie die Sätze mit "nachdem". Verwenden (use) Sie im Temporalsatz das **Perfekt** und im Hauptsatz das **Präsens**, oder im Temporalsatz das Plusquamperfekt und im Hauptsatz das Praeteritum.

उदाहरण :

Wir besichtigen den Betrieb. Wir kehren ins Hotel zurück.
Nachdem wir den Betrieb besichtigt haben (hatten), kehren (kehrten) wir ins Hotel zurück.
Der Doktor ruft den Studenten. Er spricht noch einma mit ihm.
Herr Bose kommt nach Leipzig. Er will die deutsche Sprache lernen.
Du erzählst den Text. Du lernst die Vokabeln.
Ihr arbeitet. Ihr geht ins Kino.
Sie lesen die Zeitung. Sie schreiben einen Brief.

२. Verbinden Sie die Sätze mit "als"!

उदाहरण :

Ich warte auf den Freund. Ich sehe meinen Vertreter.
Als ich auf den Freund wartete, Sah ich meinen Vertreter.
Wir kamen ins Theater. Die Theateraufführung begann.
Du riefst mich. Ich kam.
Herr Bose war 1961 in Leipzig. Er besuchte die Technische Messe.
Er erzählte von seinen Eindrücken in der DDR. Er war wieder in seiner Heimat.
Ich interessierte mich für das Bildungswesen. Ich studierte in der DDR.

३. Verbinden Sie die Sätze mit "bevor". Verwenden Sie den Temporalsatz und Hauptsatz im Präsens oder im Practeritum.

उदाहरण :

Ich fahre in die DDR.	Ich lerne die deutsche Sprache.
Bevor ich in die DDR fahre, (fuhr)	lerne ich die deutsche Sprache. (lernte)

Die indische Studentin beginnt in Leipzig das Medizinstudium. Sie hat eine grosse Reise zu machen.
Er besucht Indien. Er informiert sich über das Leben in Indien.
Mein Freund kann Mathematik studieren. Er muss das Abitur ablegen.
Er arbeitete in einem indischen Betrieb. Er ging zum Studium nach Deutschland.
Ich muss mich zuerst in der Zeitung informieren. Ich spreche über die politische Situation in meiner Heimat.

11. Beantworten Sie die Fragen zum Text "Der Aussenhandel" mündlich und schriftlich !

Wofür (what for) interessieren wir uns heute ?
Wie war die Situation nach dem zweiten Weltkrieg in Deutschland ?
Woher erhielt die Maschinenindustrie vor dem zweiten Weltkrieg ihre Rohstoffe ?
Wann wurde der Warenverkehr mit Westdeutschland erschwert ?
Woraus (of what) bestehen die Importe der DDR ?
Mit welchen Staaten hat die DDR Aussenhandelsbeziehungen (foreign t ade relations) ?
Auf welchem Prinzip beruht die Handelspolitik der DDR?

पाठ में आये शब्द

der Aussenhandel o. Pl.	विदेश व्यापार
nachdem (Konjunktion)	बाद, कब
einiges	कुछ (न कुछ)
die Bedeutung,-en	महत्व
als (Konjunktion)	कब
zweite	दूसरा
der Weltkrieg,-e	विश्व युद्ध
die Fabrik,-en	कारखाना
der Osten	पूर्व दिशा
zerstören	ध्वस्त करना
bevor (Konjunktion)	पहले
die Produktion,-en	उत्पादन
aufbauen, baute auf, aufgebaut	बनाना
die Nacht,"-e	रात
hochentwickelt	विकसित
die Industrie,-n	उद्योग
besitzen, besass, besessen	होना, अपनाना
die Rohstoffbasis, die Rohstoffbasen	बुनियादी कच्चा माल
pie Maschinenindustrie, o. Pl.	मशीन उद्योग
die Kohle,-n	कोयला
der Stahl,"-e	लोहा
spalten, spaltete, gespalten	विभाजन करना
der Warenverkehr, o. Pl.	सामान का परिचलन
leichter	आसान
erschweren	बाधा डालना
importieren	आयात करना
als	अपेक्षाकृत
ohne	बिना
der Import,-e	आयात
das Bedürfnis,-e	आवश्यकतायें
die Bevölkerung, o.Pl.	जनता, आबादी
befriedigen	पूरा करना
das Prozent,-e	प्रतिशत
die Konsumgüter, Pl.	उपभोक्ता माल
das Drittel,-	तीसरा
die Lebensmittel, Pl.	खुराक, खाद्य
rollen	लुढ़कना
das Fleisch, o. Pl.	गोश्त
der Fisch,-e	मछली
das Obst, o. Pl.	फल
die Südfrüchte, Pl.	उष्ण प्रदेशीय फल
der Kakao, o. Pl.	कोका
die Grenze,-n	सीमा
sozialistisch	समाजवादी
die Erweiterung,-en	बढ़ जाना
der Nationalstaat,-en	राष्ट्रीय राज्य
antiimperialistisch	साम्राज्यवाद विरोधी
die Handelspolitik, o. Pl.	व्यापार नीति
gegenüber	आमने सामने
beruhen auf	आधारित होना
völlig	पूरा
die Gleichberechtigung, o. Pl.	अधिकारों की समानता
die Achtung, o. Pl.	सम्मान
die Grundlage,-n	बुनियाद
die Handelsbeziehung,-en	व्यापारिक संबंध
der Handelspartner,-	ग्राहक
Guinea	गिनी
Ghana	घाना
verwirklichen	महसूस या स्वीकार करना
friedlich	शांतिपूर्ण
die Koexistenz, o. Pl.	सह अस्तित्व
unterschiedlich	भिन्न
gesellschaftlich	सामाजिक
das System,-e	व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

जर्मनी की खबरें

भारतीय विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने भारतीय विद्यार्थियों के लिये २० छात्रवृत्तियां देने की पेशकश की है जो सन् १९६२ के शरद्ऋतु से प्रारंभ होंगी। ज.ज.ग. के उच्चतर शिक्षा के राज्य मंत्री का एक पत्र, जिसमें उक्त छात्रवृत्तियों की पेशकश है, भारत सरकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा सांस्कृतिक मामलों के मंत्री, डा. हुमायूं कबीर को, भारत में ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कुर्ट बेट्टकर ने दिया है। श्री कबीर ने इस पेशकश को, भारत तथा ज.ज.ग. के बढ़ते हुये सांस्कृतिक संबंधों के प्रतीक के रूप में सहर्ष स्वीकार किया।

छात्रवृत्तियां पाने वाले भारतीय विद्यार्थियों का खर्च ज.ज.ग. की सरकार देगी। छात्रवृत्तियों की रक़म की दर यह है: स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएट) विद्यार्थियों के लिये ४७० मार्क (१ मार्क=१ रु. १२ न. पै), विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये २८० मार्क और तकनीकी विद्यालयों के छात्रों के लिये २४० मार्क। स्नातकोत्तर छात्रों को, ४७० मार्क की अतिरिक्त वार्षिक रक़म किताबें आदि खरीदने के लिये दी जायगी। इसके अलावा प्रत्येक विद्यार्थी को दवाइयां तथा डाक्टरी इलाज आदि मुफ़्त मिलेगा।

डा. साहिबसिंह सोखे का मत

अखिल भारतीय शांति परिषद् के उपाध्यक्ष, मेजर जनरल साहिबसिंह सोखे ने, ज.ज.ग. के उन सुझावों का स्वागत किया है जिनमें, दो जर्मन राज्यों के सह-अस्तित्व तथा जर्मन शांति सन्धि को, बातचीत शुरू करने का आधार मानने के लिये कहा गया है। लिबरल डिमोक्रैटिक पार्टी (पू. जर्मनी) के मुखपत्र 'डेर मोरगेन' को, एक इण्टरव्यू में उन्होंने बताया कि यदि ज.ज.ग. के सुझावों के आधार पर पश्चिम बर्लिन की विकट समस्या को हल किया जाय तो यह विश्व में तनाव कम करने की ओर एक बहुत बड़ा क़दम होगा।

"मैं हर उस चीज़ से घृणा करता हूं जो शांति के विरुद्ध हो। इसलिये मैं आपके राज्य की सीमाओं पर (प. बर्लिन से) होने वाली घोर उत्तेजनाओं को धिक्कारता हूं", डा. सोखे बोले। इस संदर्भ में उन्होंने ज.ज.ग. के धैर्य तथा संयम को काफी सराहा। वह बोले: "यद्यपि प. बर्लिन, ज.ज.ग. की सीमाओं के बीच में स्थित है तथापि शांति के हित में आप अपने विरोधी पक्ष से, प. बर्लिन को एक स्वतन्त्र, तटस्थ तथा असैनिक नगर में तबदील करने की जो पेशकश कर रहे हैं, यह एक बड़ी रिआयत है।" डा. सोखे ने, प. बर्लिन में पश्चिमी अधिकृत सेनाओं को टिकाये रखना अनावश्यक बताया। इसके अतिरिक्त उन्होंने सोवियत यूनियन और अमरीका के बीच हो रही बर्लिन सम्बन्धी वार्ता की सफलता की कामना की।

३० प्रतिशत महिला न्यायाधीश

संकलित आंकड़ों से पता चला है कि ज.ज.ग. के कुल न्यायाधीशों में ३० प्रतिशत न्यायाधीश महिलायें हैं।

क़ानून के क्षेत्र में जर्मन नारियों का इतनी प्रचुर संख्या में पदार्पण का कारण है ज.ज.ग. के विश्वविद्यालयों में क़ानून पढ़ने वाली छात्राओं में वृद्धि।... ज.ज.ग. के उच्चतम न्यायालय अर्थात सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की कुल संख्या में से ५ महिलायें हैं। उनमें से दो न्यायालय-अध्यक्ष के उच्च पद पर भी आसीन हैं।

खान अकादमी के व्यापक संबंध

ज.ज.ग. में फ्राइबर्ग की खान अकादमी ने दुनिया के ३६ देशों से अपना व्यापक संपर्क स्थापित किया है। इन देशों में सोवियत यूनियन, अमरीका, भारत, ब्रिटेन, जापान, अरब गणराज्य तथा आस्ट्रेलिया उल्लेखनीय हैं। यह खान अकादमी, दुनिया का सबसे प्राचीन खान विश्वविद्यालय है जो सन् १७७५ में वजूद में आया। खान विज्ञान के इस केन्द्र को, समाजवादी देशों के लगभग ३० खान अनुसंधान तथा कालेजों का घनिष्ठतम सहयोग प्राप्त है। इसके अलावा यह अकादमी भारतवर्ष, अरब गणराज्य तथा सूडान को भी खान विज्ञान संबंधी सहायता देती है।

आजकल इस अकादमी में चार हज़ार छात्र-छात्रायें पढ़ते हैं, जिनमें २९ देशों के विद्यार्थी शामिल हैं। आधे से भी ज़्यादा छात्रों को सरकार, सालाना ७० लाख मार्क की रक़म वज़ीफों के रूप में देती है। अकादमी को विस्तार देने तथा विकसित करने के लिये ज.ज.ग. की सरकार ने आज तक ६ करोड़ मार्क की रक़म खर्च की है। हाल ही में अकादमी के १० छात्रावास तथा १२ नई इमारतें बन कर तैयार हुई।

24 AUG 1962

अफ्रीकी मज़दूर नेता का मत

हाल ही में, टोगो के स्वास्थ्य सेवा मज़दूर संघ के उप-महामंत्री, श्री इमेन्युअल अवोकू ने, ज.ज.ग. के एक पत्र को इण्टरव्यू देते हुए कहा: "सभी अफ्रीकी देशों की यह कामना है कि पश्चिम बर्लिन समस्या शांतिपूर्ण ढंग से हल होनी चाहिये और प. बर्लिन को एक तटस्थ, असैनिक तथा स्वतंत्र नगर में तबदील किया जाना चाहिये।... ज.ज.ग. ने तो इस आशय के कई सुझाव दिये हैं, अब बोन सरकार (पश्चिमी जर्मनी) को इन सुझावों पर विचार करके ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिये जिस से तीसरा युद्ध न छिड़ जाय। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीकावासी, उसी के समर्थक हैं जो शांति स्थापना के लिये काम करते हैं। स्पष्ट है कि प. बर्लिन की समस्या के मामले में हम ज.ज.ग. के साथ हैं।"

तैराकी प्रतियोगिता में विजय

१५ जुलाई को ज.ज.ग. के हाल्ले ज़िले में, हंगरी तथा ज.ज.ग. के बीच अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता हुई। ज.ज.ग. के तैराक, ९५ के मुकाबले में १२८ पोइंट लेकर, इस प्रतियोगिता में प्रथम रहे। गोता लगाने की प्रतियोगिता में भी ज.ज.ग. की टीम, १६ के मुकाबले में २८ पोइंट जीत कर प्रथम रही। इस संदर्भ में यह बताना आवश्यक है कि ज.ज.ग. की, ओलम्पिक तैराकी में दो स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली इंग्रिड क्रेमर इस प्रतियोगिता में अस्वस्थ होने के कारण शामिल न हो सकी थी।

अरब गणराज्य को सूत कताई मिल प्राप्त

संयुक्त अरब गणराज्य के उद्योग मंत्री ने, १४ जुलाई को, सूत कातने वाली एक बड़ी मिल का उद्घाटन किया। यह मिल ज.ज.ग. ने उपलब्ध की है और अरब गणराज्य के दक्षिण में इसको लगा दिया गया है। इस कताई मिल में २८,००० तकलियां हैं। इस मिल का संस्थापन, मिस्र देश के उर्ध्व भाग औद्योगीकरण की दिशा की ओर एक बड़ा क़दम है।

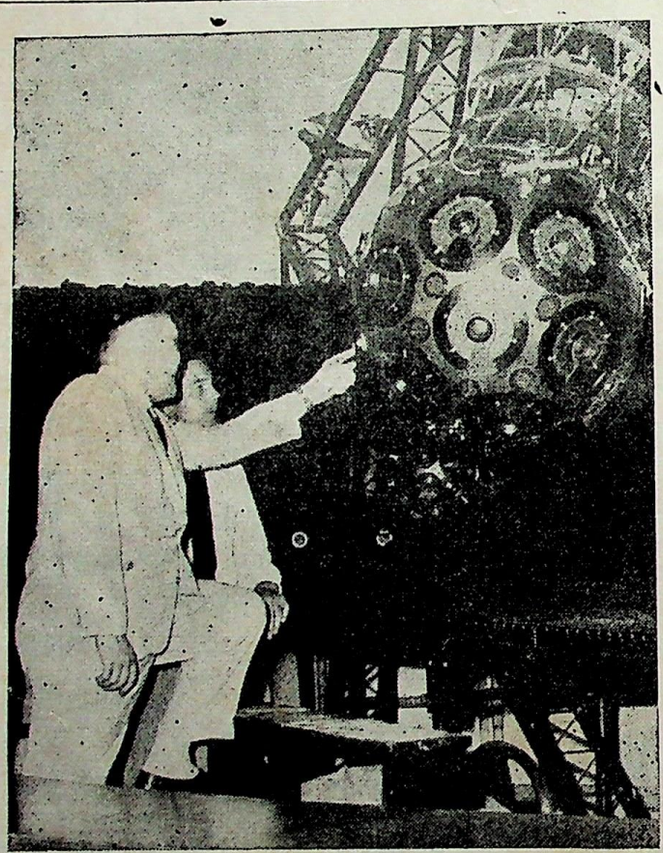

श्री बेट्टकर (दाईं ओर) ज़ाइस (ज.ज.ग. का विश्वप्रसिद्ध कारखाना) द्वारा निर्मित नक्षत्र-शाला (प्लेनेटेरियम) देख रहे हैं

कलकत्ता में व्यापार दूतावास के प्रमुख का व्यस्त कार्यक्रम

भारत में, ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री बेट्टकर, ९ जुलाई को कलकत्ता गये। उनका कार्यक्रम वहां काफी व्यस्त रहा।

पश्चिमी बंगाल की राजपाल, कुमारी पद्मजा नाइडू से भेंट करने के अतिरिक्त श्री बेट्टकर, वहां के मुख्य मंत्री श्री पी. सी. सेन; वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री, श्री टी. के. घोष; आरोग्य मंत्री, श्री जे. आर. धर; श्रम मंत्री, श्री बी. एस. नाहर तथा सरकार के अन्य प्रमुख अधिकारियों से भी मिले। कलकत्ता के महापौर श्री आर. एम. मोजुमदार से भी उनकी मुलाकात हुई।

इसके अलावा, श्री बेट्टकर ने पश्चिम बंगाल विधान सभा के स्पीकर तथा विधान परिषद् के अध्यक्ष से भी औपचारिक भेंट की।

व्यापार दूतावास-प्रमुख के सम्मान में, कलकत्ता शाखा के प्रमुख श्री वोल्लकर ने, राजनयिक वर्ग तथा बंगाल के सम्मानित व्यक्तियों को एक स्वागत समारोह में आमंत्रित किया।

उन भारतीय व्यापार संस्थाओं ने भी, जो ज.ज.ग. के लइपज़िक मेलों में भाग लेती रही हैं, श्री बेट्टकर के सम्मान में एक बृहत्त स्वागत समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में राजनीतिक तथा आर्थिक मामलों में सिद्धहस्त अनेक व्यक्ति पधारे थे।

कलकत्ता आवास के अवसर पर व्यापार प्रमुख और बंगाल के उच्च अधिकारियों तथा विशेषज्ञों में, ज.ज.ग. तथा भारत के आपसी व्यापार को अधिकाधिक बढ़ाने के बारे में बातचीत हुई। श्री बिड़ला से भी इस संबंध में बातचीत की गई।

१३ जुलाई को, भारतीय चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री फेडरेशन (एफ. आई. सी. सी. आई) के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभाग ने, व्यापार प्रमुख को अपनी एक मीटिंग में बुलाया, जिसमें उनसे, ज.ज.ग. और भारत के बीच व्यापारिक संबंधों की स्थिति तथा विकास पर प्रकाश डालने की प्रार्थना की गई।

कहना न होगा कि कलकत्ता में इस व्यस्त कार्यक्रम के दौरान, श्री बेट्टकर ने, संबंधित अधिकारियों तथा व्यक्तियों से सामाजिक, राजनीतिक तथा व्यापारिक मामलों के विषय में भी बातचीत की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथ्य और आंकड़े

★ पिछले वर्ष, ज.ज.ग. के तकनीकी स्कूलों में पढ़ने वाले ६५.२ प्रतिशत विद्यार्थियों को सरकारी वज़ीफे मिले। कुल छात्रों में से लगभग ७० प्रतिशत विद्यार्थी मज़दूर तथा किसान परिवारों के थे। इस वर्ष, विश्वविद्यालयों तथा विशिष्ट हाई स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों मे से ५५ प्रतिशत छात्र किसान तथा मज़दूर परिवारों से संबंध रखते हैं। इसमें से ७५ प्रतिशत को सरकारी वज़ीफे मिलते हैं।

★ हाल ही में, कार्ल मार्क्स स्टाद्त में एक अन्तर्राष्ट्रीय होटल का उद्घाटन हुआ। इसमें बच्चों के लिये एक अलग कमरा है। ऐसे अतिथि जो सपरिवार पर्यटन के लिये यहां आते हैं, अपने बच्चे यहां छोड़ कर निश्चिंत होकर भ्रमण कर सकते हैं। बच्चों की देख रेख के लिये बहुत अच्छी व्यवस्था है।

★ ड्रेस्डन का 'एर्ज़ाइ-मिट्टल' नामक औषधियां बनाने वाला कारखाना इस वर्ष ५५ लाख मार्क की धन राशि के मूल्य की अतिरिक्त औषधियां तैयार करेगा। इसी प्रकार यह कारखाना, 'येनाफार्म' नामक सरकारी कारखाने के सहयोग से, १९६२ के अंतिम छः महीनों में पेनसिलीन के ७०,००० यूनिट तैयार करेगा।

★ सालफेल्ड में स्थित, मशीनी औज़ार बनाने के सरकारी कारखाने में, काम करने वाले मज़दूरों ने, सन् १९६१ में, औसतन २० किताबें पढ़ीं। यहां के आधे से ज़्यादा मज़दूर, कारखाने के पुस्तकालय के स्थाई सदस्य हैं। इस पुस्तकालय ने गत वर्ष में ५ पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित कीं।

★ सिलिकोसिस नामक रोग के मरीज़ों के लिये वाड-सूडेरोड के स्थान पर एक नये आरोग्य-आश्रम का उद्घाटन हुआ। इसमें २०० रोगी, ६ हफ्तों तक मुफ्त इलाज पा सकते हैं। रहना खाना भी मुफ्त ही मिलता है। ज.ज.ग. की सरकार ने इस आरोग्य आश्रम के निर्माण के लिये ७५ लाख मार्क की धनराशि खर्च की। सरकार, हर साल, सिलिकोसिस के रोगियों के इलाज आदि पर, ३ करोड़, ५० लाख मार्क की रक़म खर्च करती है (१ मार्क = १ रु० १२ न०पै०)।

★ ज.ज.ग. में युद्ध का प्रचार करना एक जुर्म है। यहां की लोक सभा ने सन् १९५० में, "शांति सुरक्षा का क़ानून' नाम से एक क़ानून पास किया। इसके अनुसार, ज.ज.ग. का कोई भी नागरिक यदि अन्य देशों की जनता या जातियों के विरुद्ध कुप्रचार या ग़लत प्रचार करे तो वह दण्डनीय है। इस क़ानून में युद्ध संबंधी प्रचार को "यूरोप की शांति और देशों की जनता की आपसी मैत्री तथा सद्भावना के लिये" गंभीर ख़तरा घोषित किया गया है।

★ दूसरे महायुद्ध में, सन् १९४३-४४ के दौरान, पूर्वी बर्लिन बमबारी से तबाह हुआ था और ९०,००० मकान खाक में मिल गये थे। पूर्वी अर्थात् आधुनिक जनवादी बर्लिन अब ज. ज. ग. की राजधानी है।... १५ वर्षों के निरन्तर और कड़े परिश्रम के बाद पूर्वी बर्लिन, पुनः अपने वैभव और सौन्दर्य को प्राप्त कर चुका है। यहां सन् १९६० तक पूरे ९०,००० रिहायशी मकान बनाये गये।

इस मास के प्रथम सप्ताह में, 'आल इन्डिया फाइन आर्टस एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी नई दिल्ली' के भवन में भारत सरकार के कानून मंत्री श्री अशोक सेन ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पांच सामयिक चित्रकारों के ६५ चित्रों की प्रदर्शनी का उदघाटन किया। इन में से एक यह चित्र, प्रो. हांस थियो रिचटेर का बनाया हुआ है जिसका शीर्षक है "ड्रिंकिंग गर्ल"।

कई वर्षों से, प्लामाग रोटरी छापखानों का प्रयोग कर रहे हैं जिनमें से उल्लेखनीय हैं : विजयवाड़ा का 'विशाल आन्ध्र' मदुरा का 'जन शक्ति', सिकन्दराबाद का 'दक्कन क्रोनिक्ल' और कलकत्ता का 'अमृत बाज़ार पत्रिका'। इनके अतिरिक्त चार रोटरी भारत वर्ष के चार अन्य स्थानों में लगाये जा रहे हैं। रोटरी छापखाने संस्थापित होने की इस प्रक्रिया में, जर्मन प्रेस विशेषज्ञों तथा इंजीनियरों की देख रेख में, भारत वासी ट्रेनिंग पाकर स्वयं इन अत्याधुनिक मशीनों को चलाने के योग्य बन जाते हैं। भारत के अखबार उद्योग के सतत विकास और समृद्धि के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के रोटरी छापखानों का सहयोग प्रशंसनीय तो है ही, साथ ही हमारे दो देशों की बढ़ती हुई मैत्री का दर्पण भी है।...

के० एन० रामचन्द्रन

(पृष्ठ ७ का शेष)

मनुभाई सन्ज़ एण्ड कं० नामक फर्म, भारत में इन रोटरी छापखानों की मात्र वितरक प्रतिनिधि फर्म है। उनका कहना है कि इन छापखानों के उत्पादक, भारत के खरीदारों को अनेक सुविधायें देते हैं। वे क़र्ज़ पर ये रोटरी छापखाने सप्लाई करते हैं और उनके दाम रुपयों में स्वीकार करते हैं। भारत के विदेश मुद्रा संबंधी संकट को देखते हुये, ये सुविधायें, भारतीय खरीदारों के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

भारत के कई प्रसिद्ध अखबार पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

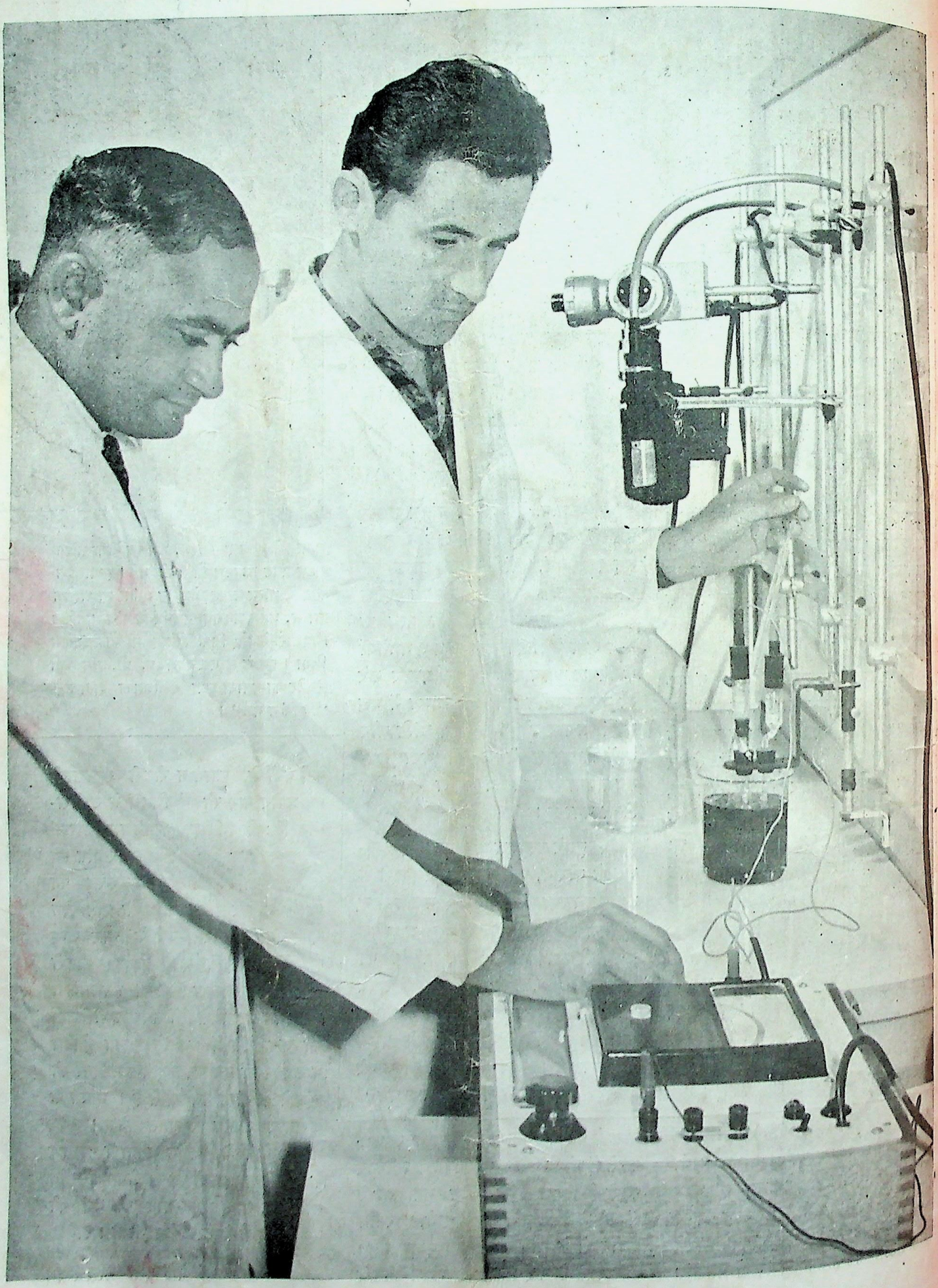

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

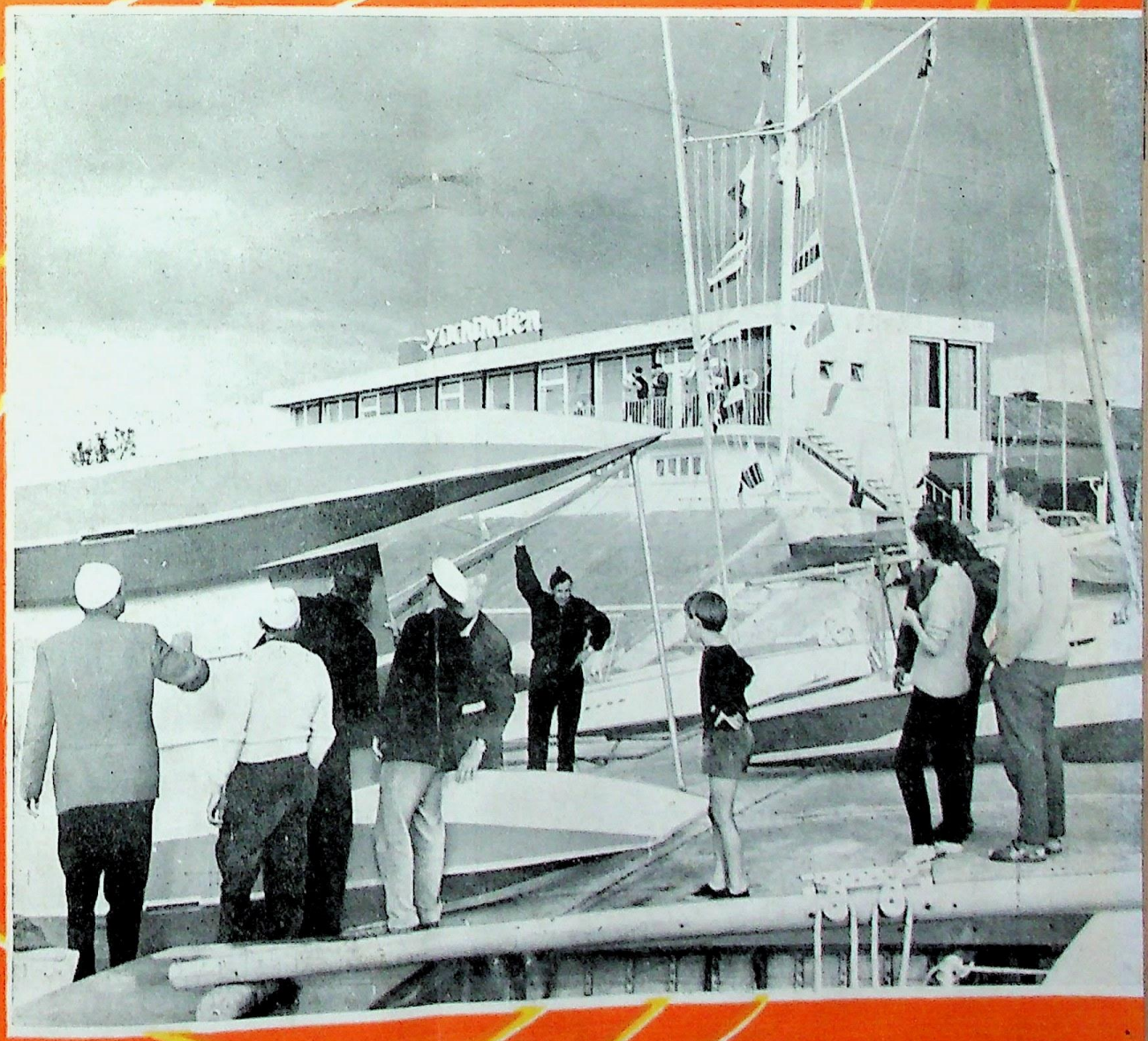

९

वर्ष ७
सितम्बर
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

●

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

●

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

●

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ९ २० सितम्बर, १९६२

इस अंक में

पृष्ठ

शुभ-कामनाओं के सन्देश ३
जर्मन जनता का राष्ट्रीय कार्यक्रम ४

व्यक्तित्व की झांकी
एर्विन स्ट्रिट्टमेटर ५

जनवाद के बढ़ते चरण
ज. ज. ग. के दो महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ ६
भारत संबंधी अनुसन्धान ८
पुनर्मिलन : १७ वर्षों के बाद ९
एक आदर्श सहकारी पशुपालक १०
वाइमर १२
जर्मन जनवादी गणतंत्र का सुन्दर और पायदार सामान १४
एक अमरीकी महिला के विचार १६
व्यक्तिगत स्वतंत्रता की दुर्दशा १८
जर्मनी की ख़बरें १९

मुख पृष्ठ :

रास्टोक की बन्दरगाह का खेलकूद मैदान जो खिलाड़ियों ने अपने श्रमदान से बनाया है

अन्तिम पृष्ठ :

कैसी रही दोस्त ! टब की सवारी भी कम मजेदार नहीं . . .

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्य परिषद् तथा मंत्रिपरिषद् के अध्यक्षों, अर्थात् श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और श्री आट्टो ग्रोटवोल ने भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति, तथा प्रधान मंत्री को, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, शुभकामनाओं के संदेश भेजे हैं। हम यहां उन संदेशों को उद्धृत कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त, ज.ज.ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, डा. योहानेस दीख़मन्न ने उपराष्ट्रपति डा. ज़ाकिर हुसैन तथा भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष श्री हुकुमसिंह को भी शुभकामनायें भेजी हैं।

—सम्पादक

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन,
राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य,
नई दिल्ली।

महामान्य,

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् तथा यहां की जनता की ओर से, भारतवर्ष की स्वतन्त्रता की १५वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाइयां स्वीकार कीजिये।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता के गत १५ वर्षों में आपके महान देश ने नवनिर्माण की दिशा में बहुत प्रगति की है। साथ ही, भारतवर्ष, उपनिवेशवाद के उन्मूलन, निःशस्त्रीकरण और विश्व शांति की स्थापना के लिये जो सतत और सक्रिय प्रयत्न कर रहा है उसके लिये सारे संसार में उसका सम्मान तथा प्रतिष्ठा है।

यह मेरा निश्चित मत है कि भविष्य में भारत गणराज्य विश्व शांति की स्थापना में सक्रिय सहयोग देता रहेगा। अन्त में शांति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये मैं आपके स्वास्थ्य और सफलता की कामना करता हूं।

वाल्टर उल्ब्रिख्त
अध्यक्ष, राज्यपरिषद्
जर्मन जनवादी गणतंत्र

श्री जवाहरलाल नेहरू,
भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री,
नई दिल्ली।

महामान्य,

भारतीय स्वतंत्रता की १५वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर मैं आपको, और आपके द्वारा भारतीय जनता को, अपनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता की ओर से हार्दिक बधाइयां भेज रहा हूं। स्वीकार कीजिये।

स्वतन्त्रता को मज़बूत बनाने, राष्ट्र के नवनिर्माण और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शांति स्थापना, निःशस्त्रीकरण तथा उपनिवेशवाद को समाप्त करने में, भारतीय गणराज्य जो सक्रिय संघर्ष कर रहा है, उसके कारण सारे संसार में वह सम्मान तथा प्रशंसा का पात्र बना है। भविष्य में भी भारत इन सत्प्रयत्नों को जारी रखेगा और हमारे दो देशों में हर प्रकार के मैत्रीपूर्ण संबंध अधिकाधिक बढ़ते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

महामान्य, मैं आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूं जिसके कारण आप अपने देश तथा अन्य राज्यों के आपसी सहयोग और सह-अस्तित्व को दृढ़तर बना सकेंगे।

आटो ग्रोटवोल
अध्यक्ष, मन्त्रिपरिषद,
जर्मन जनवादी गणतंत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनता का राष्ट्रीय कार्यक्रम

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रत्येक भाग से २३०० प्रतिनिधि, १६ तथा १७ जून को बर्लिन में आयोजित 'राष्ट्रीय कांग्रेस' में सम्मिलित हुये। इन प्रतिनिधियों के अतिरिक्त पश्चिमी जर्मनी से भी ३५० प्रतिनिधि इस कांग्रेस में हिस्सा लेने के लिये आये थे। राष्ट्रीय महत्व की इस कांग्रेस में, सम्पूर्ण जर्मनी के विकास के भावी कार्यक्रम को विचाराधीन लाया गया। कांग्रेस का सर्वप्रमुख काम था, मार्च में प्रकाशित उस राष्ट्रीय मसविदे को अपनाना जिस पर जर्मनी की जनता ने, बैठकों तथा सभाओं में काफी सोच-विचार तथा वाद-विवाद किया था। राष्ट्रीय कांग्रेस ने दो संशोधनों के साथ इस मसविदे को स्वीकार किया और इसको "जर्मन जनता का राष्ट्रीय कार्यक्रम" घोषित किया।

जर्मन जनता के इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में, जिस पर ज.ज.ग. की जनता तथा सरकार ने अमल करना शुरू किया है, निम्नलिखित मुख्य बातें उद्घोषित की गई हैं :

१. विभाजित जर्मनी का एकीकरण तभी सम्भव है जब पश्चिमी जर्मनी में सैनिकवादियों, प्रतिहिंसावादियों तथा बड़े-बड़े इजारेदारों का प्रभुत्व तथा शासन समाप्त हो जाये। यह काम पश्चिमी जर्मनी की जनता का है।

२. जर्मन जनवादी गणतंत्र, पश्चिमी जर्मनी में क्या हो रहा है इसकी चिन्ता किये बिना, अपने मुख्य उद्देश्य अर्थात समाजवाद की स्थापना करके साम्यवादी समाज के निर्माण के मार्ग पर अग्रसर होगा।

३. दो जर्मन राज्यों के बीच शीत-युद्ध तथा तनाव का वातावरण अस्वस्थ और खतरनाक है, इसलिये तमाम मतभेदों के होते हुये भी, इन दो राज्यों को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की दिशा में प्रत्येक क़दम उठाना चाहिये।

४. बड़े राष्ट्रों के तत्वाधान में, दोनों जर्मन राज्यों को सैनिक दृष्टि से तटस्थ बना देना चाहिये।

जैसा कहा गया है, राष्ट्रीय महत्व की इस कांग्रेस में, ढाई हज़ार से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ये प्रतिनिधि जर्मनी के हर वर्ग, पेशे और क्षेत्र से संबंध रखते थे। दूसरे शब्दों में ये सम्पूर्ण जर्मन जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इनमें से कतिपय प्रतिनिधियों के भाषणों के कुछ अंश नीचे इसलिये उद्धृत किये जा रहे हैं ताकि 'राष्ट्रीय कार्यक्रम' से संबंधित जर्मन जनता का मत स्पष्ट हो जाय :

विस्मर के एक ताल्लुकेदार, प्रोफेसर सेबिस्तयान वोन स्टाइन ने कांग्रेस में भाषण देते हुये कहा : "पश्चिमी जर्मनी के कई मित्र प्रायः मुझ से यह पूछते हैं कि मैं ज.ज.ग. में क्यों रहता हूं जबकि मेरे लिये, अर्थात् पुराने ताल्लुकेदार परिवार के एक व्यक्ति के लिये, प. जर्मनी के दरवाज़े खुले हैं। मेरा सीधा सा जवाब यह है कि वर्तमान युग में मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि कोई व्यक्ति कहां अधिक धन बटोर सकता है, बल्कि यह है कि वह कहां रह कर जनता की अधिक सेवा कर सकता है। ज.ज.ग. में जनसेवा के सभी द्वार खुले हैं। यहां की अनेक और बहुमुखी उपलब्धियां इसकी साक्षी हैं। ज.ज.ग. जर्मन जनता को सुखद भविष्य के पथ पर ले जाने में सर्वथा समर्थ है। . . ."

पूर्वी जर्मनी (ज.ज.ग.) के एक गांव के एक किसान प्रतिनिधि, मार्गिट फुस्स ने कहा : "पहले हमारा गांव एक बहुत बड़ी जागीर का एक छोटा सा हिस्सा था। ३०० वर्षों तक ब्यूरो जागीरदार वंश का शासन रहा, और इसी वंश के इशारों पर ही गत महायुद्ध में, मेरे कुटुम्ब के ६३ व्यक्ति (मामे, चाचे, भाई आदि) मारे गये जिनमें मेरे पिता भी एक थे। युद्ध की तबाही से हमारा छोटा गांव भी बच न सका। यहां भी १२ घर ध्वस्त हुये बमबारी से। . . . सन् १९४५ से मेरा गांव भी निर्माण की वृहत योजना का अभिन्न अंग बन गया। हमने ३७ नये मकान और ५२ फ्लैट तामीर किये हैं और अब हमारे गांव में ९० टेलिविजन सेट और ७ मोटरें भी हैं। गांव में शायद ही कोई नौजवान ऐसा हो जिसके पास मोटर-साइकल न हो। . . . जागीरदार के प्रभुत्व में कुछ खुशकिस्मत बच्चे ही गावं के टूटे-फूटे स्कूल का दर्शन कर पाते थे, लेकिन अब गांव के सभी बच्चे १० वर्षीय स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं। गांव के १४ व्यक्ति कालेज में तकनीकी विषय पढ़ रहे हैं और ३७ महिलायें सायंकालीन स्कूलों में प्रशिक्षित कृषक बनने के लिये अध्ययन कर रही हैं . . . पहले की तरह अब हमारे गांव की पंचायत जागीरदार और उसके चेले-चांटों के इशारों की कठपुतली नहीं, वरन् इसमें आज किसान, मज़दूर, पादरी, औरतें आदि सभी हिस्सा लेते हैं और मिल-जुलकर गांव के विकास संबंधी फैसले लेती हैं। . . .

पश्चिमी जर्मनी के सैकसोनी ज़िले के एक गावं प्रतिनिधि, रिचर्ड होप्पे ने अपने भाषण में कहा : "पश्चिमी जर्मनी के हम किसानों के लिये जीना दिन प्रति दिन कठिन होता जा रहा है। हमारी बोन हकूमत ने चूंकि साझा बाजार की दूसरी अवस्था भी हम पर ठूंस दी इस साल के प्रारम्भ में, इसीलिये हमारी कठिनाइयां और मुसीबतें बढ़ती जा रही हैं। . . . हाल ही में हमारे क्षेत्र के एक किसान सम्मेलन में हम यह जानकर आश्चर्य चकित रह गये कि हमारी सारी ज़मीन अब बड़े-बड़े बैंकों को गिरवी रखी गई है। भूमि संगठन के अधिकारी से अपने गांव के बढ़ते हुये कर्ज़ का कारण पूछने पर उसने जवाब दिया: 'यदि मैं आप लोगों को सही बात कहूं तो मेरी नौकरी चली जायगी'। . . .

"मेरा खेत ५० एकड़ रक़बे का है लेकिन इतने बड़े खेत पर मेरा गुज़ारा नहीं चलता है। इसलिये मुझे, साथ-साथ बढ़ई का

(शेष पृष्ठ २३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व की झांकी

एर्विन स्ट्रिट्टमेटर

एर्विन स्ट्रिट्टमेटर का जीवन एक सतत संघर्ष की कहानी है। आज आप जर्मनी के एक ख्याति-प्राप्त लेखक बन चुके हैं—कई साहित्यिक रचनाओं के जन्मदाता। लेकिन ख्याति के इस शिखर तक पहुंचने के पीछे उनके आत्मानुभव तथा भावनाओं का हाथ है जिनको लेखक ने अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया।

श्री स्ट्रिट्टमेटर का जन्म सन् १९१२ में श्प्रेमबर्ग के एक साधारण गांव के एक साधारण निर्धन परिवार में हुआ। इसलिये जन्म से ही आपको कठिनाइयों तथा मुसीबतों का सहवास मिला। किसी तरह से, गांव की व्याकरण पाठशाला में दो चार दर्जे तक पढ़ाई भी की और फिर आप पेट पालने के लिये घर से निकल पड़े। इस अभियान में आप को नानबाई, ड्राइवर, वेटर, पशुपालक तथा कारखाने के मज़दूर के कई पेशे अपनाने पड़े। अन्त में जब सन् १९४५ में, भूमि सुधार का क़ानून लागू हुआ तो आपको भी ज़मीन मिल गई और आपके यायावर (खानाबदोश) जीवन का अन्त हुआ। जर्मन जनवादी गणतंत्र में लोकसत्ता आसीन होने के बाद श्री स्ट्रिट्टमेटर को गांव के साथ छोटे-छोटे समुदायों का रजिस्ट्रार बनाया गया और आप एक स्थानीय पत्र के सम्पादक भी बन गये।

लेकिन संघर्षमय जीवन की आत्मानुभूतियां तथा खट्टे-मीठे उनके अनुभव जब मानसिक क्षेत्र से बाहर आने के लिये मचल उठे तो श्री स्ट्रिट्टरमेटर ने लेखन के माध्यम के द्वारा इनको अभिव्यक्त किया। इस प्रकार आप अपने प्रथम उपन्यास "गाड़ीबान" के साथ साहित्य में पधारे। आपके इस पहले उपन्यास ने ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। विश्व प्रसिद्ध आलोचक-नाटककार श्री ब्रेख्त ने इस उपन्यास के संबंध में लिखा: "चरित्र-चित्रण की सजीवता, अनुभूतियों की मौलिकता और भाषा पर अधिकार ने 'गाड़ीबान' के लेखक को उच्च कोटि के जर्मन साहित्यकारों की पंक्ति में ला खड़ा किया, जो संख्या में अभी इने गिने ही हैं।" 'गाड़ीबान' एक उत्तम कला कृति है, इसमें सन्देह नहीं।

श्री एर्विन स्ट्रिट्टमेटर ने आज तक अनेक साहित्यक कृतियों—उपन्यासों, कहानियों, कविताओं तथा नाटकों को जन्म दिया है। इनका मूलाधार (वर्णय विषय) है उनके अपने जीवन के कटु अनुभव, मानव प्रकृति तथा स्वभाव का गहन अध्ययन और ग्रामीण जनता के जीवन के साथ उनके अटूट संबंध। अपने अनेक पात्रों तथा विविध घटनाओं के जीवन्त चित्रण के द्वारा, लेखक ने, अन्धकारमय जीवन की कठिनाइयों तथा मुसीबतों से सतत संघर्ष करने का तथा आने वाले स्वर्णिम भविष्य का आशापूर्ण सन्देश दिया है। अपनी साहित्यक कृतियों को सजीव तथा लोक जीवन के यथार्थ से संलग्न रखने के लिये श्री स्ट्रिट्टमेटर ने बर्लिन की आरामदेह जिन्दगी का परित्याग किया और वह दूर, एक गांव में रह रहे हैं कृषिकों के सहवास और वन उपवनों की निर्मल वायु में।

पहले 'गाड़ीबान' में और उसके बाद अपने एक अन्य उपन्यास 'टिनको' में लेखक ने एक किशोर पात्र की आंखों से संसार को देखा है जिसमें वह कुछ सीखना चाहता है और ज़िन्दा रहने की तीव्र इच्छा उस में भरी हुई है। 'गाड़ीबान' में (सन् १९५० में प्रकाशित) लेखक ने, 'लोपे' नामक किशोर के माध्यम से गांव की उस अपमानजनक स्थिति तथा जीवन का चित्रण किया है, जिसकी मुसीबतों का शिकार 'लोपे' हुआ है। इसके साथ ही 'गाड़ीबान' वाइमर रिपब्लिक के अन्त तथा फासिस्तवाद के उदय पर अच्छी तरह प्रकाश डालता है।

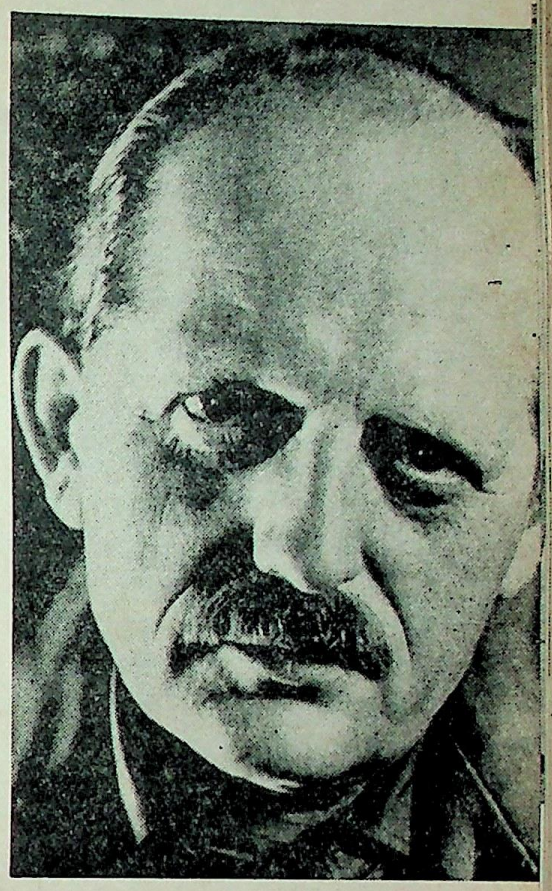

'टिनको' (सन् १९५४ में प्रकाशित), दूसरे महायुद्ध की समाप्ति तथा भूमि-सुधार के बाद के ग्रामीण जीवन की कहानी प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र भी एक किशोर, 'टिनको' है। 'टिनको' में चित्रित जर्मन गांव की दशा 'गाड़ीबान' के गांव की तुलना में एकदम बदल चुकी है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का नया गांव अब विकास के नये जीवन और ग्रामीणों की खुशहाली से एकदम महक रहा है। जर्मनी के पुराने तथा नये गांव के इस आमूल परिवर्तन को लेखक स्ट्रिट्टमेटर की अनुभवसिद्ध लेखनी, बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रित करने में सफल रही है। यही बात उनकी नवीनतम रचना "विलक्षण श्रमिक" के बारे में भी कही जा सकती है। यह एक वृहत उपन्यास का प्रथम भाग है, जो सन् १९५७ में प्रकाशित हुआ। इसका मुख्य पात्र है एक भूमिहीन किसान का सातवां पुत्र जो सन् १९०९ से १९४५ तक किसी तरह मर-

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज. ज. ग. के दो महत्वपूर्ण निज

"काला सोना"

चित्र में आप जो दैत्याकार मलबा उठाने, धरती खोदने तथा अन्य ऐसा ही भारी काम करने वाला कैटरपिलर (लोहे का) पुल देख रहे हैं, यह ऐसा लगता है मानो प्राक् ऐतिहासिक काल का कोई भीमकाय जीव हो जो अब विलुप्त हो चुका है। इस पुल की संवाहक भुजायें ५०० मीटर लम्बी हैं तथा खुदाई करने वाले इसके बेलचे बड़े-बड़े भयंकर दान्त से दिखते हैं। लेकिन यह "दैत्याकार जीव" कोई प्रागैतिहास काल का विलुप्त प्राणी नहीं, वरन् आधुनिक युग के इस्पात से बना "कैटरपिलर पुल" है। यह भीमकाय मशीन लोगों की समृद्धि की सहायक है।

लइपज़िक तथा बोटना के आस पास अर्थात् मध्य जर्मनी के सेन्फटेनबर्ग के इलाके में उक्त दैत्याकार मशीनों ने कई घन मीटर का क्षेत्र घेर लिया है। पूर्णतः स्वचालित ये यन्त्र, करोड़ों वर्षों से भूगर्भ में छुपे और रेत, पत्थर आदि की कई परतों की चादर ओढ़े हुये भूरे कोयले (लिग्नाइट) को झंझोड़ कर, सैंकडों फुट की गहराई से खोद कर बाहर लाते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में लोग इस खनिज को आदर की दृष्टि से देखते हैं, इसलिये इसको "काला सोना" कह कर पुकारते हैं। पोटाश (सफेद सोना) के अतिरिक्त, भूरा कोयला (काला सोना) ज.ज.ग. का दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ है। इस खनिज के बिना ज.ज.ग. के लिये दुनिया में, पांचवां औद्योगिक देश बनना असंभव ही था। इस 'काले सोने' के बग़ैर यहां के ल्यूना, बिट्टरफेल्ड तथा वोल्फेन के बड़े बड़े रासायनिक कारखाने कभी गतिशील न होते। और इसके बिना बिजली की शक्ति का भी आविर्भाव न हो पाता।

हमारा राज्य, जो एलवे तथा ओडर नामक दो नदियों के परिवेश में फैला है,

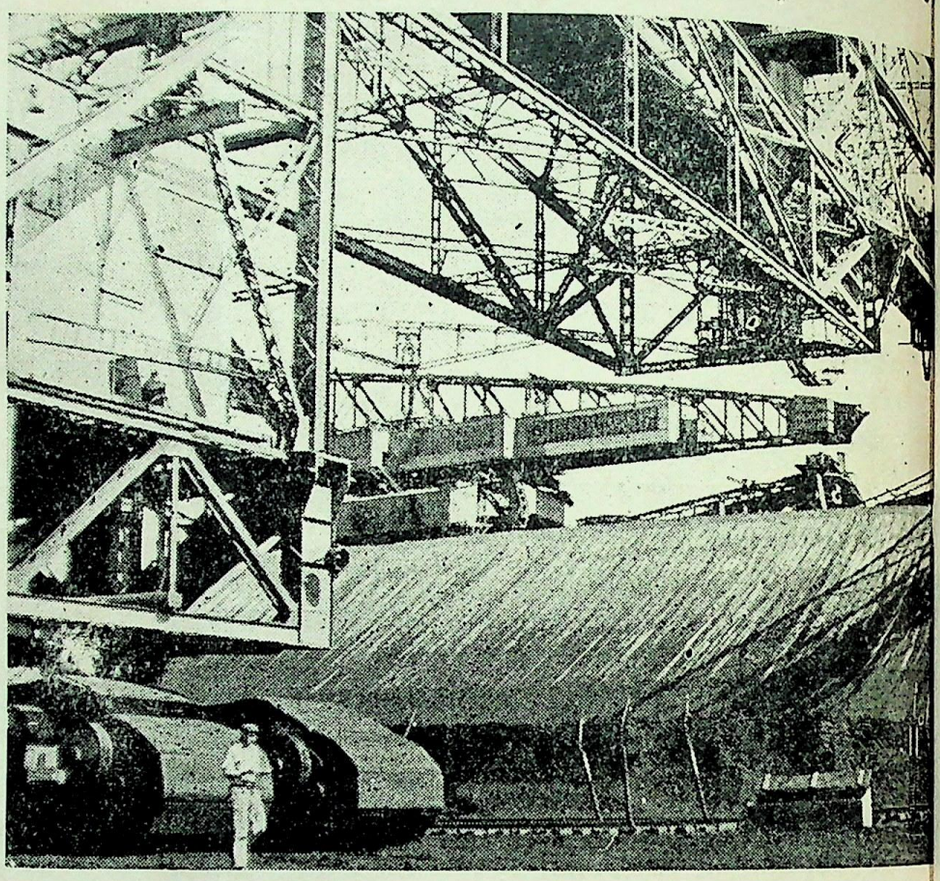

सेनफ्टेनबर्ग में भीमकाय कैटरपिलर पुल

दुनिया का सब से बड़ा राज्य है भूरा कोयला उत्पादन करने का। सन् १९५९ में हमारे खान मज़दूरों ने 'काले सोने' के २१ करोड़, ५० लाख टन खोद निकाले। सन् १९६० में इस मात्री में १ करोड़ टन की वृद्धि हुई और सन् १९६५ में, सप्त-वर्षीय योजना की समाप्ति पर, इस मात्रा को २७ करोड़ और ७७ लाख टन तक पहुंचा दिया जायेगा।

तकनीकी पर्यवेक्षण द्वारा इस बात का पता लगाया गया है कि ज.ज.ग. के, कोट्टबुस नामक पूर्वी प्रदेश में यहां के कुल भूरे कोयले—अर्थात् ढ़ाई खरब टन से लेकर ४ खरब टन का — ६३ प्रतिशत भाग वर्तमान है, जो अभी तक खोदा नहीं गया है।

'काला सोना' अर्थात भूरा कोयला तो कच्चा माल है जिसको शोध कर कई रासायनिक क्रियाओं से कई उपयोगी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। उदाहरण के लिये भूरे कोयले से हर साल ६० लाख टन पिसे कोयले की ईंटें, गैस पैदा करने के लिये २२ लाख टन खुश्क कोयला, ४६ हज़ार टन तेल, ६० हज़ार टन बेनजाइन औ २५ हज़ार टन डेडिरोन तैयार किये जाते हैं। इस प्रकार भूरे कोयले का 'काला सोना' नाम पूर्णतः सार्थक है।

"सफ़ेद सोना"

सन् १८४०। देश देशान्तरों में एक खबर आग की तरह फैली: यूसटस वी. लीबिग, जर्मनी के एक विख्यात रसायनशास्त्री ने प्राणियों के पदार्थ परिवर्तन तथा कृषि भूमि पर अपने रासायनिक प्रयोगों के परिणामों के आधार पर यह क्रांतिकारी खोज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खनिज पदार्थ

एर्नेस्ट कूनिख

थी कि भूमि में पोटाश डालने से उपज की मात्रा काफी बढ़ाई जा सकती है। उस दिन से पोटाश की मांग दुनिया के हर देश में बढ़ने लगी।

पता लगाया गया है कि दुनिया में हर साल $K_2{}^0$ प्रकार के पोटाश के ९० लाख टनों का उत्पादन होता है। पोटाश उत्पादक देशों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र का तीसरा स्थान है। प्रथम दो स्थान अमरीका और पश्चिमी जर्मनी के हैं। ज.ज.ग. कुल उत्पादन का १८ प्रतिशत भाग उत्पन्न करता है।

प्रकृति ने ज.ज.ग. की गोद अनेक खनिज पदार्थों, विशेषकर क्षारों (लवणों) से भर दी है। मध्य यूरोप में वर्तमान ये लवण-निक्षेप (डिपाज़िट्स) आज से लाखों वर्ष पूर्व, पर्मी युग अर्थात् मत्स्य चूना-पत्थर युग में वजूद में आये। अनुमान है कि ज.ज.ग. में लगभग १४ अरब टन पोटाश-लवण और अरबों टन साधारण लवण मौजूद है।

ज.ज.ग. में पोटाश का सब से बड़ा निक्षेप वेर्रा नदी तटवर्ती थूरिनजिया नामक वन-प्रदेश के पश्चिम में वर्तमान है। यह निक्षेप यूरोप का सबसे बड़ा निक्षेप है और ज.ज.ग. के कुल पोटाश उत्पादन का ४२ प्रतिशत भाग यहीं उत्पन्न होता है। पोटाश के अन्य निक्षेप हार्ज़ पर्वतमाला के दक्षिणी और उत्तरी प्रदेशों में भी वर्तमान हैं। हार्ज़ का उत्तरी प्रदेश ही ज.ज.ग. के पोटाश खान उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र है जिसका जन्म सन् १८६१ में हुआ रसायनशास्त्री लीबिग की क्रांतिनारी खोज के बाद।

ज.ज.ग. की "वेर्रा पोटाश खान" यूरोप की पोटाश खानों में सबसे बड़ी है। यहां लगभग ८,७०० खान मज़दूर पोटाश---अर्थात् वर्तमान शताब्दी का 'सफेद सोना' ज़मीन की गहराइयों से खोद कर बाहर लाते हैं।

वेर्रा के इस पोटाश खान का उत्पादन सन् १९६० की तुलना में सन् १९६५ के अन्त तक ३.४ प्रतिशत अधिक बढ़ जायेगा। इस प्रकार, सन् १९६५ से, ज.ज.ग. दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा पोटाश उत्पादक देश बन जायेगा। यहां की खानों में अत्याधुनिक यन्त्र, मशीनें आदि भी काम पर लगा दी जायेंगी जो पोटाश उत्पादन को कई गुना बढ़ाने में समर्थ होंगी।

पोटाश निर्यात करने वाला सबसे बड़ा देश : जर्मन जनवादी गणतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा पोटाश निर्यात करने वाला देश है। यहां से हर वर्ष लगभग १० लाख टन पोटाश निर्यात किया जाता है अन्य देशों को। इसके अलावा पोटाश और इस उद्योग से से संबंधित हर प्रकार के यन्त्र तथा मशीनें ४५ देशों को भेजी जाती हैं जिनमें समाजवादी देशों के अतिरिक्त ब्रिटेन, आस्ट्रिया, स्वीडन, फिनलैंड, नार्वे, डेनमार्क, हालैंड, बेलजियम, यूगोस्लो-

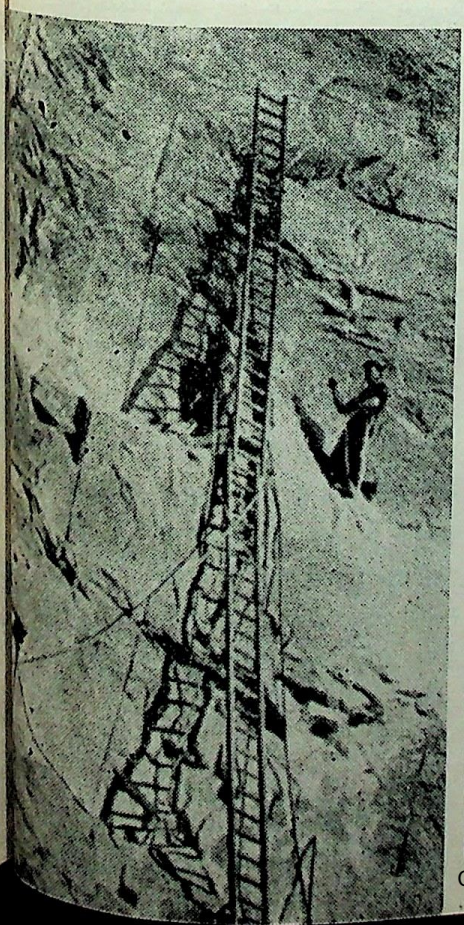

स्टास्सर्फ़ट की खानों से भूरा कोयला निकाला जा रहा है

पोटाश के भण्डार में बर्मे से छेद किया जा रहा है खान से निकालने के लिये

विया और भारत, ब्राज़िल कोलम्बिया विशेष उल्लेखनीय हैं। ज.ज.ग. के वार्षिक पोटाश-खादों के निर्यात को यदि परिवहन के आंकड़ों में कहना चाहें तो हम कह सकते हैं कि इसके परिवहन के लिये हर साल १ लाख ५५ हजार ट्रकें, अथवा ५० डिब्बों वाली ३ हज़ार १ सौ माल गाड़ियों की आवश्यकता पड़ेगी।

ज.ज.ग. अपने खान मज़दूरों पर गर्व करता है जो कठिन से कठिन प्राकृतिक स्थिति में, अपने राष्ट्र के आर्थिक विकास का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग, 'सफेद सोना' खानों के गर्भ से निकाल लाते हैं। वे जानते हैं कि श्रम का फल भी उन्ही को भोगना है।

खान मज़दूर संघ के सुझावों पर, ज.ज.ग. की सरकार, पिछले पांच वर्षों में खान मज़दूरों की मज़दूरी बराबर बढ़ाती रही है। इसके लिये उसने २१ करोड़ मार्क की धनराशि खर्च की (१ मार्क=

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज. ज. ग. में भारत संबंधी अनुसन्धान

डा० योशिम हाइडरिख

जर्मन जनवादी गणतंत्र में लगभग प्रत्येक शिक्षा संस्थान में **भारत विषयक अनुसन्धान** होता है। एक ओर जहां इस अनुसन्धान की प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाया जाता है, वहां दूसरी ओर आधुनिक भारत को भी अनुसन्धान का अभिन्न अंग बना दिया गया है। ज.ज.ग. के अस्तित्व में आने के बाद भारत विषयक अनुसन्धान को नई गति तथा विस्तार मिला और उसको नवीन दिशाओं की ओर अग्रसर किया गया। आज स्थिति यह है कि भारत वर्ष के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितिक तथा अन्य कई क्षेत्र जर्मन अनुसन्धान की परिधि में आ गये हैं। ज.ज.ग. के उन शिक्षा संस्थानों तथा अनुसन्धान केन्द्रों में, जिनमें भारत संबंधी अनुसन्धान होता है, ऐसे उपायों पर सोच विचार किया जा रहा है जिनसे प्राचीन तथा बहुमुखी अर्वाचीन अनुसन्धान प्रणालियों का समन्विय संभव हो।

ज. ज. ग. में समाजवादी व्यवस्था के प्रचलन से, प्राच्य-विद्या विषयक अनुसन्धान कार्य भी कुछ भिन्न हो गया है। उदाहरण के लिये हमारे लोग भारतीय जनता की सांस्कृतिक उपलब्धियों उनके इतिहास तथा साम्राज्यवाद विरोधी उनके संघर्ष का सही रूप और दिशा जानना चाहते हैं। ज.ज.ग. में अनुसन्धान —और विशेषकर प्राच्य-विद्या अनुसन्धान अब कुछ इने गिने विद्वानों तथा विशेषज्ञों का ही सुरक्षित क्षेत्र नहीं रह गया है। राजनीतिक चेतना तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान के अभूतपूर्व विस्तार के कारण हमारे लोग, अनुसन्धान और विशेषकर नवजात राष्ट्रों से संबंधित अनुसन्धान में बहुत अधिक दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

येना, हाले तथा ग्राइफसवाल्ड के विश्वविद्यालयों के साधारण तथा तुलनात्मक भाषा-विज्ञान संस्थानों में कई भाषा-शास्त्री प्राचीन तथा मध्य युगीन **भारतीय भाषाओं का अध्ययन** कर रहे हैं। प्राचीन अनुसन्धान परंपराओं के अनुरूप यहां, **भारत-आर्य भाषा परिवार** और **भारत यूरोपीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन** तथा अनुसन्धान हो रहा है। उदाहरण के लिये येना के फ्रेडरिख शिल्लर नामक विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान संस्थान के निदेशक **प्रोफेसर हाउशिल्ड** ने थूम्ब द्वारा लिखित **"संस्कृत भाषा की नियमावली"** की परिवर्धित तथा परिशोधित एक बृहत टीका प्रकाशित की है। इसमें, **संस्कृत और द्राविड़** तथा **मुगडा भाषाओं** के संबंधों पर विचार किया गया है।

इसी प्रकार, हाले के मार्टिनलूथर विश्वविद्यालय के भाषा-संस्थान में भाशाओं के इतिहास पर अनुसन्धान होता है। यहां **आधुनिक भारतीय भाषायें**, विशेषकर **तामिल भाषा** अध्ययन का विशेष विषय है। इसी विश्वविद्यालय से संलग्न पुरातत्व-संस्थान में प्राच्य देशों का प्राचीन इतिहास विभाग एक अलग विभाग ही है जिसके निदेशक हैं डा. मोडे। यहां **भारतीय पुरातत्व** का अध्यन भी होता है। हाल ही में **प्रो. मोडे** ने प्राचीन भारत से संबंधित एक प्रबन्ध प्रकाशित किया। बर्लिन तथा लइपज़िक के विश्वविद्यालों में भी प्राच्यविद्याओं के अध्ययन अध्यापन तथा अनुसन्धान की व्यवस्था है। लाइपज़िक के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय में एक विशेष संस्थान है **भारतीय संस्थान**। इस संस्थान में कई युवक तथा वयोवृद्ध शोधार्थी, प्राचीन तथा अर्वाचीन भारत से संबंधित विभिन्न विषयों, जैसे **प्राचीन भारत में दण्डविधान, १९वीं शताब्दी में भारतीय राष्ट्र आन्दोलन का स्वरूप, भारत-जर्मन संबंध की समस्यायें** आदि विषयों पर अनुसन्धान कर रहे हैं। प्राचीन

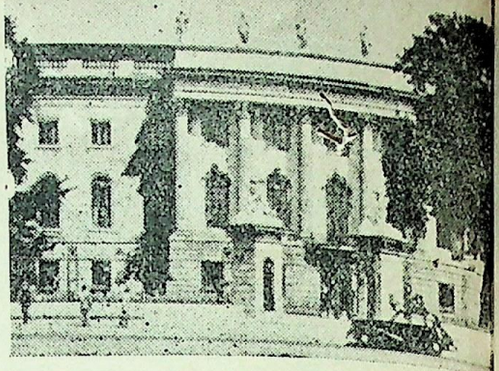

बर्लिन का हम्बोल्ट विश्वविद्यालय

तथा आधुनिक **हिन्दी भाषा तथा साहित्य** का अध्ययन इस संस्थान की मुख्य विशेषता है।

बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय के विश्व प्रसिद्ध **प्राच्य-विद्या संस्थान** के निदेशक हैं राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता **प्रोफसर रूबेन**। पिछले कुछ वर्षों में इन्होंने कई शोध ग्रन्थ लिखे जिनमें उल्लेखनीय हैं **भारतीय दर्शन ग्रन्थों के अनुवाद, भारयीय दर्शन का इतिहास** और **पंचतंत्र और इसकी नैतिकता**। इस संस्थान में भी **आधुनिक हिन्दी** तथा **बंगला भाषा और साहित्य** का अध्ययन अध्यापन होता है। यहां एक ऐसा विभाग संस्थापित किया जा रहा है जिसमें **इस्लाम कालीन भारत** का विशेष अध्ययन होगा। प्राच्य-विद्या संस्थान में आधुनिक भारत के **आर्थिक इतिहास की टीकायें** तैयार की जा रही हैं। इनके अतिरिक्त **राजा राममोहन राय** की चुनी हुई **कृतियों** के संस्करण भी प्रकाशन के लिये तैयार हो रहे हैं। **प्राचीन भारतीय दर्शन** के अध्ययन के साथ ही यहां भारतीय दर्शन की **आधुनिक प्रवृतियों** का अध्ययन भी हो रहा। इस प्रसंग में **लोकमान्य तिलक** तथा **स्वामी विवेकानन्द** द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक विचारों पर भी मनन चिन्तन हो रहा है

बर्लिन स्थित 'जर्मन विज्ञान अकादमी' में एक विशेष संस्थान है **प्राच्य-अनुसन्धान संस्थान**। इस संस्थान का **भारतीय विभाग** भारत संबंधी शोध कार्य का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण अनुसन्धान केन्द्र है। संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्मिलन

१७ वर्षों के बाद

होरेस्ट रिचटेर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'ओर' नामक पर्वतमाला के दामन में उगता हुआ सा एक छोटा कस्बा। नाम है ग्लाशूट्टे। इसमें एक खेत के बीच खड़ा पुराने आकार का एक किसान घर कुबड़े छत और छोटी-छोटी दो चार खिड़कियों वाला। पिछली एक शताब्दी से यह मकान, पर्वत से आते हुये आंधी तूफानों को सहता आया है। अब इस मकान के सामने अति आधुनिक ढंग की एक इमारत—घड़ी बनाने वाले विश्वप्रसिद्ध कारखाने का ट्रेड-स्कूल—खड़ी है। ...लेकिन कतार में आने वाली उस खूबसूरत मोटर की मंजिल यह नई, भव्य इमारत नहीं, बल्कि उसका रुख उसी प्राचीन बोसीदा किसान घर की ओर है। मकान के सामने आकर मोटर ठहरी और इस के द्वार खुल गये।... एक लम्बा आदमी जल्दी-जल्दी मकान की फाटक की ओर बड़ी तेज़ी से बढ़ा और वहां लगी नाम की तख्ती देख कर उसके मुंह से एक हर्ष-ध्वनि निकली "श्रीमती बर्गनेर"! एक बार फिर उस ने इस नाम को दोहराया। ...सहसा पहली मंजिल की एक खिड़की में सफेद बालों से पूर्ण एक सिर नमूदार हुआ। लम्बे आदमी मे एक बार फिर आवाज़ दी "श्रीमती बर्गनेर", लेकिन इस बार हर्षोल्लास के अतिरेक के कारण उसका स्वर प्रकम्पित, इसलिये क्षीण था!

खिड़की से झांकता हुआ बूढ़ी अम्मा के मुंह से केवल एक बोल फूट पड़ा "अण्ड्री" और फिर वह सीढ़ियों की ओर लपकी। सत्तर वर्षीय वृद्धा, अपनी छड़ी का सहारा लेना भी भूल गई! क्षणों के बाद वे एक दूसरे के गले लग रहे थे—फ्रांस के एक क़स्बे माण्ट्रेयल का मेयर, आण्द्रे ग्रिगोरे, और ज.ज.ग. के एक छोटे कस्बे ग्लाशूट्टे की एक साधारण औरत, श्रीमती हेडविंग बर्गनेर गले मिल रहे थे! एक करुणाजनक दृश्य! आखिर, आण्द्रे ग्रिगोरे बोला: "वापस आकर मैंने अपना वादा पूरा किया है।"...

कहानी का आरंभ सन् १९४३ में है जबकि आण्द्रे ग्रिगोरे, ग्लाशूट्टे में एक फ्रांसीसी युद्ध बन्दी के रूप में आया था। एक साल तक आन्द्रे नाज़ी युद्ध शिविर की यातनायें भोग चुका था 'कामेज़' में, जहां पत्थर की खानों में युद्ध बन्दियों से कमर तोड़ मेहनत कराई जाती थी। वह फासिस्त अफसरों की क्रूरताओं को खूब अच्छी तरह जान चुका था। लेकिन इस जानकारी के साथ जिस महान सत्य का साक्षात्कार उसने किया वह यह था विश्व के सभी मजदूरों—रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन आदि देशों के श्रमिकों का हित विश्व शांन्ति के साथ जुड़ा हुआ है। यह जीवन-सत्य आण्द्रे कभी न भूला इसके बाद! आत्मानुभावों से प्राप्त इस यर्थाथ को जान लेने के बाद, आण्द्रे ने (उन दिनों), जर्मनी के फासिस्त-विरोधी तत्वों को खोज निकाला और उनके साथ उसने संपर्क स्थापित किया। ...

ग्लाशूट्टे के फासिस्त शिविर में, १७ देशों के सैनिक तथा नागरिक बन्दियों को बन्द कर दिया गया था। बर्गनेर परिवार का होटल शिविर से थोड़ी ही दूरी पर था इसलिये फासिस्तों द्वारा काम पर लगाये गये अनेक युद्ध-बन्दियों को इसी होटल में लाकर खाना खिलाया जाता था। देखते देखते बर्गनेर होटल के पिछवाड़े का एक कमरा अवैध क्रियाओं तथा कार्यों का अड्डा बन गया। बन्दी यहां राजनीतिक सूचनाओं का आदान प्रदान करते, नवीनतम घटनाओं पर सोच-विचार करते और उन साथियों को को सावधान करते जिनकी जिन्दगी फासिस्तों के क्रूर हाथों में पड़ जाने का खतरा था।

पिछवाड़े के कमरे में फुसफुसाहट और धीरे धीमी बात-चीत के दौरान जब कभी श्रीमती बर्गनेर या उसकी सुन्दर लड़की 'ट्राडेल' कमरे में प्रवेश करती, प्लेट प्याले हटाने और मेज़ें साफ करने के लिये, तो बंदियों की फुसफुसाहट एकदम बन्द हो जाती। लेकिन ये दोनों नारियां हमेशा उनको मित्रता की नज़र से देखती थीं। मैत्री की यह दृष्टि धीरे धीरे, पहले तो सहानुभूति और फिर सक्रिय सहयोग में बदल गई। श्रीमती बर्गनेर अपने परिवार से प्रायः कहती: "ये बन्दी भी मनुष्य हैं हमारी ही तरह। ये नाज़ी युद्ध के विरोधी और शांति के समर्थक हैं। हमारी तरह वे भी शांति चाहते हैं!"

सक्रिय सहयोग का प्रथम चरण यह था कि बर्गनेर होटल की मालिक ने बन्दियों का राशन बढ़ा दिया। अपने खेत से बर्गनेर परिवार जो भी उपजाता शाक, सब्जियां आदि, पहले बंदियों को खिलाया जाता था। जल्द ही बंदी इस बात को समझ गये कि उनकी सहायता करके सम्पूर्ण बर्गनेर परिवार अपने आप को बड़े खतरे में डाल रहा है।...आण्द्रे ग्रिगेरी को यहां फिर अच्छे जर्मन निवासी मिले थे!

आण्द्रे ने एक दिन धीरे से श्रीमती हेडविंग बर्गनेर को अपनी गुप्त योजना समझाई। ...फासिस्त अधिकारी उन दिनों चुने हुये कुछ बहुत ही कुशल श्रमिकों को तीन वर्ष में एक बार, फ्रांस के उस क्षेत्र में छुट्टी पर जाने देते थे जो नाज़ी सेना के अधिकार में था। आण्द्रे तो कुशल श्रमिकों की इस कोटि में नहीं आता था, लेकिन फिर भी उसने इन्हीं की एक टोली के साथ भागने का निश्चय किया। लेकिन परिचय-पत्र आदि जैसे दस्तावेज़ और आवश्यक कपड़े आदि वह कहां से

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एडेलट्राउड फिलिप्प
एक आदर्श सहकारी पशुपालक

एर्नस्ट कूनिख़

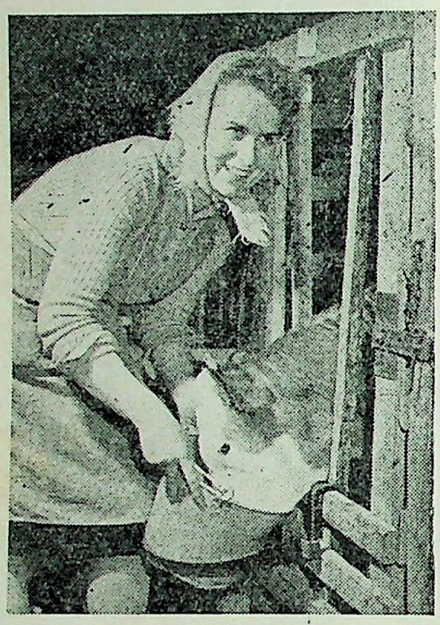

सन् १९६० का दिसम्बर मास। जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक समुद्रतट-वर्ती क़स्बे, रोस्टोक में, जर्मन कृषक सम्मेलन हो रहा है। पण्डाल पर बैठ हुये सभापति मंडल में कतिपय नारियां भी विराजमान हैं। इनमें हाले ज़िले के एक गांव 'स्टाइग्रा' की एक किसान औरत भी है श्रीमती एडेलट्राउड फिलिप्प!

इस महत्त्वपूर्ण किसान सम्मेलन में, और विशेष कर इसके सभापतिमण्डल जैसे सर्वोच्च स्थान पर श्रीमती फिलिप्प कैसे पहुंच गईं? ऐसा सम्मान क्योंकर दिया गया उनको? इन प्रश्नों का उत्तर है किसान महिला का सीधा सादा किन्तु परिश्रमी जीवन। वह एक आदर्श पशु-पालक है स्टाइगा गांव के एक सहकारी खेत की! इस काम के साथ साथ वह अपने गांव की औरतों के कल्याण तथा उनके अन्य सामाजिक हितों की देख रेख भी करती हैं। इसके अतिरिक्त वह ज.ज.ग. की एक किसान संस्था 'कृषकों की पारस्परिक सहायता संघ' के महिला आयोग की ज़िला अध्यक्ष भी है। किसानों के, विशेषकर कृषक औरतों के लिये इस अनथक कार्य का ही परिणाम है कि अपनी सहकारी समिति ने श्रीमती फिलिप्प को रोस्टोक के महत्वपूर्ण कृषक सम्मेलन में, अपना प्रतिनिधि बना कर भेज दिया।

श्रीमती फिलिप्प के रोज़मर्रा जीवन के बारे में कुछ जानने की उत्सुकता जाग पड़ी मुझ में। इसलिये मैं उनसे मिलने गया उनके गांव।

जब मैं गांव पहुंचा, उस समय शाम के पांच बज रहे थे। मैं सीधा "पांचवीं पार्टी कांग्रेस" नामक कृषि उत्पादन सहकारी खेत पर पहुंचा। दूध के टीन और बालटियां खनक रही थीं और नाना रंगों के बछड़े डकार रहे थे। यह उनके खाने पीने का समय था। सहकारी खेत के इन बछड़ों की देख रेख के लिये दो किसान औरतें हैं। उनमें से एक हैं श्रीमती ऐडेलट्राउड फिलिप्प! ··· काम से निवृत्त होकर मैंने उनको घेर लिया बात चीत के लिये।

सर की रूमाल और काम करने का चोग़ा उतारते हुये वह तरुण किसान औरत मुझ से बोली, "सहकारी खेत में वेष काम मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हूं अपने काम से।" श्रीमती फिलिप्प के इन शब्दों में भला का आत्मविश्वास भरा था। "पशु और विशेषकर उनके बछड़े मुझे बहुत प्यारे लगते हैं। इसलिये जब सहकारी

श्रीमती फिलिप्प अपने बच्चों के साथ

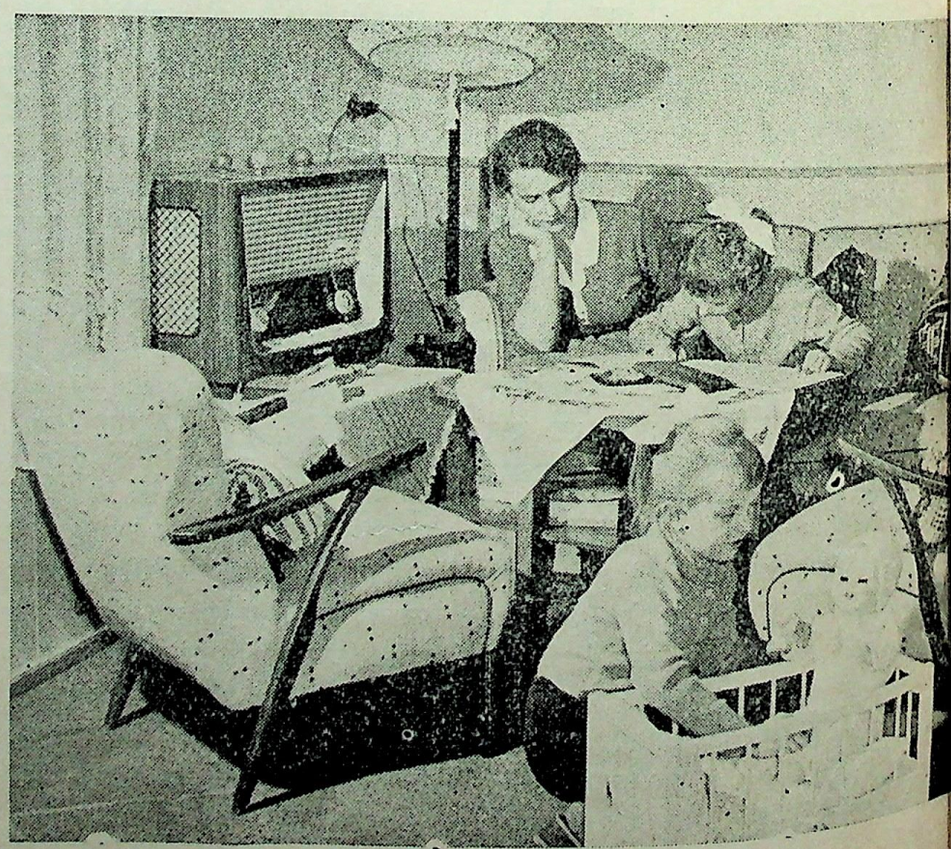

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेत में मुझे बछड़ों की देख भाल सौंपी गई तो मैं बहुत प्रसन्न हुई। इन नन्हे-नन्हे बछड़ों के साथ दूध पीते बच्चों का सा ममता भरा व्यवहार करना आवश्यक है।...'' श्रीमती फिलिप्प के शब्द धारा का रूप धारण कर चुके थे, : ''सहकारी खेतों के स्वच्छ और खुले वातावरण में बछड़े निरोग रहते हैं, टी. बी. की छूत से दूर। इन कोमल प्राणियों के पालन के लिये सावधानी सब से ज़रूरी बात है। उनको समय पर और समान तापमान वाला दूध मिलना चाहिये पीने के लिये। इसके लिये मैंने एक समय सारणी तैयार की है।...''

इसके बाद श्रीमती फिलिप्प कुछ देर के लिये मौन हुईं। मुझे ऐसा लगा कि वह कुछ याद कर रही थीं। आखिर वह बोली, ''इस गांव में पहले भी एक छोटा सहकारी खेत था। जब इस खेत को कृषि उत्पादन सहकारी खेत में मिला देने की बात चली तो मेरे और पति के विचार इस संबंध में आशाजनक नहीं थे। छोटा सहकारी खेत एक बड़े तथा शक्तिशाली सहकारी खेत में मिलकर कितने दिन जीवित रह सकता था। ...

''तब सन् १९५९ का वर्ष आया। हमारे गांव के बहुत से कृषक 'कृषि उत्पादन सहकारी खेत' में सम्मिलित हो गये। मेरे मन में भी एक अन्तर्द्वन्द छिड़ गया : मेरे परिवार को इस स्थिति में क्या करना चाहिये ? क्या हम दूसरे से अलग रहकर अपनी अलग खेती करते रहें ? यह ठीक है कि मेरा पति और परिवार अपनी ज़मीन को जोतने आदि में सहायता देंगे—ज़मीन जो मुझे मां बाप से विरासत में मिली है। लेकिन सुबह से रात तक जी तोड़ मेहनत करके भी खाने पीने को पूरा नहीं पड़ेगा तो क्या करेगा मेरा परिवार ? फिर मेरे दो बच्चों को कौन देखेगा ? मेरी गृहस्थी कौन संभालेगा ? यह बड़ा विकट मानसिक द्वन्द्व था जिसका समाधान ढूंढ़ना ज़रूरी था ! बहुत सोचने विचारने के बाद मेरे इन प्रश्नों का एक ही उत्तर मिलता था : मिलजुल कर काम करना।...''

श्रीमती फिलिप्प और उनका परिवार आखिर ''पांचवीं पार्टी कांग्रेस'' नामक दूसरे सहकारी खेत में सम्मिलित हुआ और मज़े की बात तो यह है कि इस सामूहिक खेत का अध्यक्ष चुना गया श्री गूनथेर फिलिप्प यानी एडेलट्राडुफिलिप्प के पति को। इसके बाद अन्य सहकारी किसानों की तरह फिलिप्प परिवार को भी कितनी सुख सुविधायें मिलीं यह आप उनके ही शब्दों में सुनिये :

''हमें बच्चों की चिन्ता नहीं करनी पड़ती क्योंकि जब तक हम सहकारी काम में व्यस्त होते हैं हमारा किंडरगार्टेन हमारे बच्चों की देखभाल करता है। उपभोक्त सहकारी संघ ने यहां एक बहुत बड़ी दुकान भी खोली है जहां हमें, सूई से लेकर फर्निचर तक, सभी आवश्यक वस्तुएं मिलती हैं। यहां हफ्ते में दो बार फिल्में दिखाई जाती हैं। हमने सामूहिक उद्योग से एक अच्छी रंगशाला भी तैयार की है जिसके रंगमंच पर हमारे कलाकार कई नाटक खेल चुके हैं। टेलिविजन पर हमको देशदेशान्तर का हाल मालूम होता है। हमारे गांव में हर दूसरे घर में एक टेलिविजन है।... सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हमारे सहकारी खेतों में अधिकांश काम जैसे दूध दोहना, चारा खिलाना, आलूओं की फसल काटना आदि, अब तन्त्रों तथा मशीनों से होता है।...''

जून, सन् १९७०। एक मोटर जा रही है समुद्र तटवर्ती रमणीय शहर रोस्टोक की ओर। मोटर एक दम्पति और उनके दो बच्चे हैं। कौन हैं ये लोग ? आप इनको भली भांति जानते हैं। जो महिला मोटर चला रही है वह श्रीमती एडेलट्राडुफिलिप्प ही हैं। वह अपने परिवार के साथ छुट्टियां मनाने जा रही हैं समुद्र के किनारे पर...अपनी मोटर में बैठकर। किसान और अपनी मोटर ?—आश्चर्य है ! जी नहीं इसमें आश्चर्य की क्या बात है। सहकारी खेती खुशहाली और समृद्धि का दृढ़ आधार है !

जर्मन पाठों के संबंध में

सूचना पत्रिका की कतिपय संगठनात्मक तबदीलियों तथा अनेक नये पाठकों की जर्मन भाषा सीखने की बढ़ती हुई मांग के कारण हमें, पत्रिका में प्रकाशित होने वाली जर्मन पाठमाला 'हम जर्मन सीखते हैं' कुछ अवधि तक स्थगित करनी पड़ रही है। हम जर्मन-भाषा की एक नई पाठमाला तैयार कर रहे हैं जो उचित समय पर 'पत्रिका' में प्रकाशित होगी।

इस पाठमाला के गत २० पाठों से जिन पाठकों ने जर्मन-भाषा की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की, यदि वे अपने शिक्षण को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो 'सूचना पत्रिका' का वार्षिक चन्दा (दो रुपये) भेजकर हम उनको जर्मन-भाषा सीखने की ऐसी सामग्री, बिना दाम के, भेज सकते हैं जो उनके लिये काफी लाभदायक सिद्ध होगी।

अन्त में हम अपने सभी जर्मन-भाषा सीखने वाले वर्तमान और भविष्य के पाठकों को अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजते हुये यह कामना करते हैं कि वे जल्दी-जल्दी जर्मन भाषा सीखें।

हम जर्मन भाषा सीखने वाले पाठकों को एक अन्य पुस्तक पढ़ने का सुझाव भी देते हैं जिसका नाम और मिलने का पता यह है :

'GERMAN LANGUAGE' (ENGLISH HINDI) BY N. G. MEHTA, NAIKATMA PUBLISHERS, TAPOVAN, NASIK. (C. RLY)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा इ

हर्ड्ज़ वी

हर साल हजारों पर्यटक जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा पर आते हैं और उनमें से कोई ही पर्यटक ऐसा होगा जो यहां के उस रमणीक स्थान को न देखता होगा जहां जर्मनी के विश्व-प्रसिद्ध कवियों 'गोइटे' तथा 'शिल्लर' ने अपना अधिकांश जीवन बिताया। यह स्थान वाइमर कहलाता है। यहां कई अत्यन्त महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक संस्थान स्थापित किये गये हैं। वाइमर ही वह स्थान है जहां सन् १९१९ में जर्मनी के इतिहास में एक स्वर्ण अध्याय जोड़ा गया। जर्मनी की विधान सभा ने यहां एकत्र होकर एक नवीन संविधान स्वीकार किया। यही संविधान इतिहास में 'वाइमर संविधान' से विख्यात हुआ। इसके अतिरिक्त ज.ज.ग. की सरकार ने यहां उक्त दो कवियों—'गोइटे' तथा 'शिल्लर' के वे निवासस्थान भी सुरक्षित कर दिये हैं जिनमें वे रहते थे। 'गोइटे राष्ट्रीय संग्रहालय' तथा 'जर्मन राष्ट्रीय रंगशाला' का निर्माण भी किया गया है यहां। 'गोइटे' तथा 'शिल्लर' का देहान्त भी यहीं हुआ और उनकी समाधियां भी दर्शनीय हैं। जो भी व्यक्ति इन उल्लिखित अवशेषों तथा संस्थानों को देखता है, वह प्रभावित हुये बिना नहीं रहता।... यहां इस बात की ओर संकेत करना अनुचित न होगा कि वाइमर प्राचीन काल से ही जर्मनी की मानवीय सांस्कृतिक परम्परा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस भव्य परम्परा को पहले, महान विद्वान् तथा दार्शनिक 'योहान गोट्फ्रीड हेर्डर', विख्यात कवि 'क्रिस्टोफर मार्टिन वीलैंड' और महान संगीतकार 'फ्रांज़ लिस्ज़्ट' आदि ने जन्म देकर विकसित किया। 'गोइटे' और 'शिल्लर' इसी परम्परा के दो उज्ज्वल नक्षत्र हैं।

लेकिन जर्मनी की मानवीय संस्कृति के इस भव्य केन्द्र को, जहां 'गोइटे' और 'शिल्लर' ने अपनी अमृत वाणी को जन्म दिया था, निकट अतीत में, फासिस्त तथा नाज़ी दरिन्दों ने अपने आतंक तथा अत्याचार से नरक बना दिया। हिटलर के अनुयायी हत्यारों ने वाइमर में १८ देशों के ५६,००० नर नारियों, बच्चों बूढ़ों को एकत्र करके क़त्ल कर दिया। इन्हीं में, एर्नस्ट टेलमन्न, जर्मन श्रमिक वर्ग का महान नेता भी एक था।

इसीलिये आज, 'बूखेनवाल्ड राष्ट्रीय स्मारक' खड़ा होकर इस बात की साक्षी दे रहा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता और सरकार इस बात पर तुले हुये हैं कि वे जर्मनी में फासिज़्म तथा युद्ध लोलुप शक्तियों का फिर से उदय रोक देंगे हर क़ीमत पर, जिन्होंने विश्व को दो बार युद्ध की तबाही में झोंक दिया।

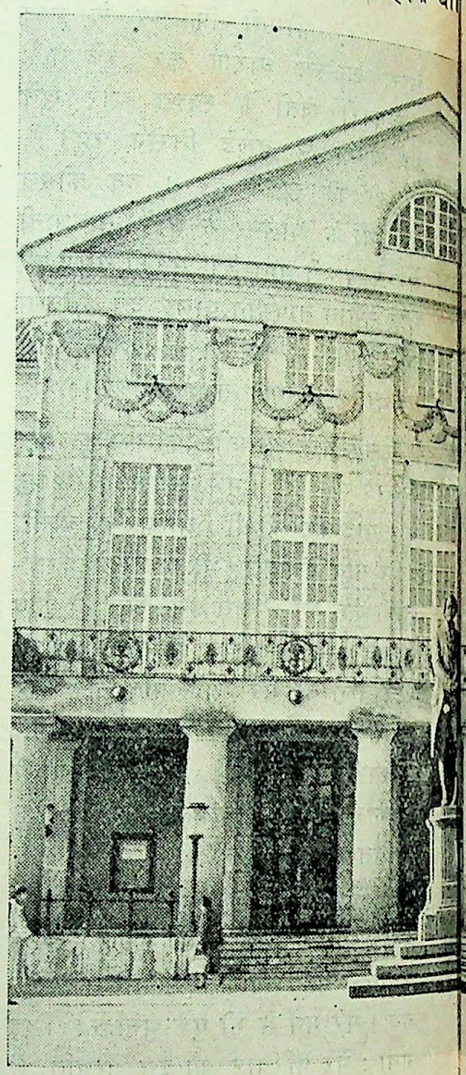

वाइमर की राष्ट्रीय रंगशाला। सामने, प्रसिद्ध कवियों स्मारक हि

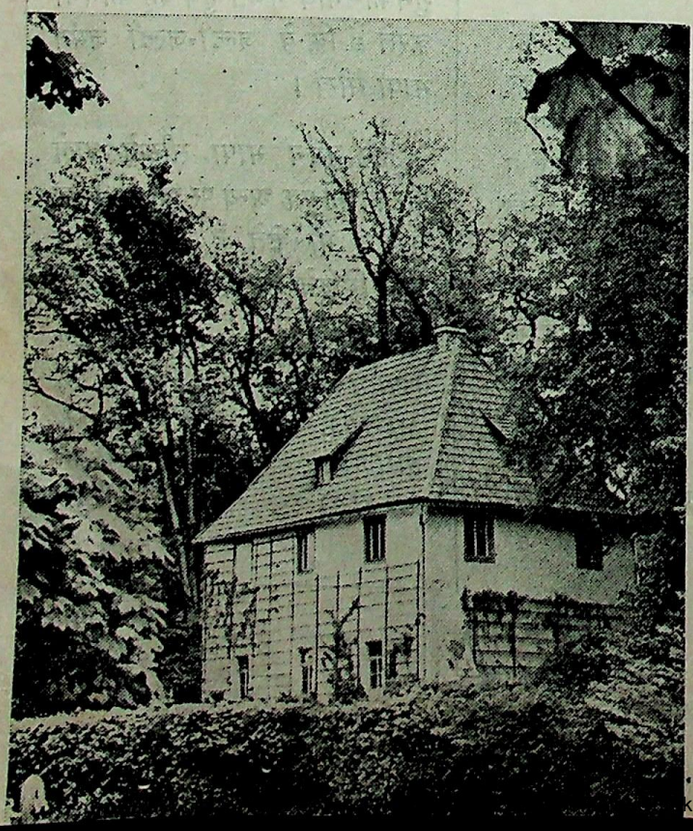

जहां गोइटे रहते थे ◄

सन् १९४५ तक वाइमर की शस्त्र फैक्ट्री में जहां पहले प्राण घातक टैंक तथा तोपें बनाई जाती थीं, अब वहां कृषि उत्पादन को बढ़ाने की सामग्री तथा फसल काटने की मशीनें निर्माण होती

वाइमर में गोइटे भवन जो अब महान कवि का स्मारक-संग्रालय है ►

kul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

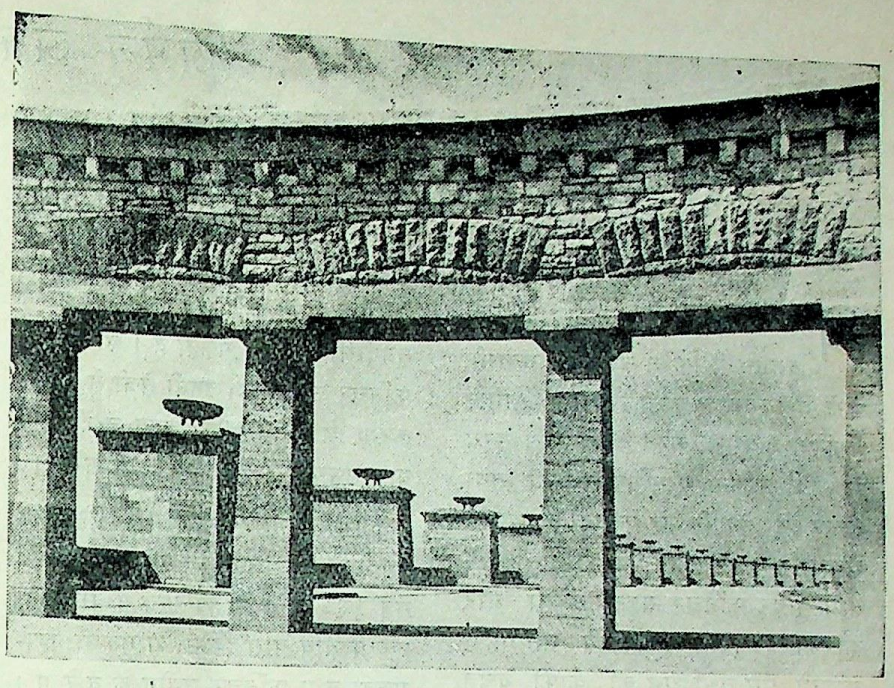

ऐसे १८ प्रस्तर खण्डों पर कई देशों के उन वीर शहीदों के नाम अंकित हैं जो बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर में फासिस्तों के खिलाफ लड़ते-लड़ते मारे गये

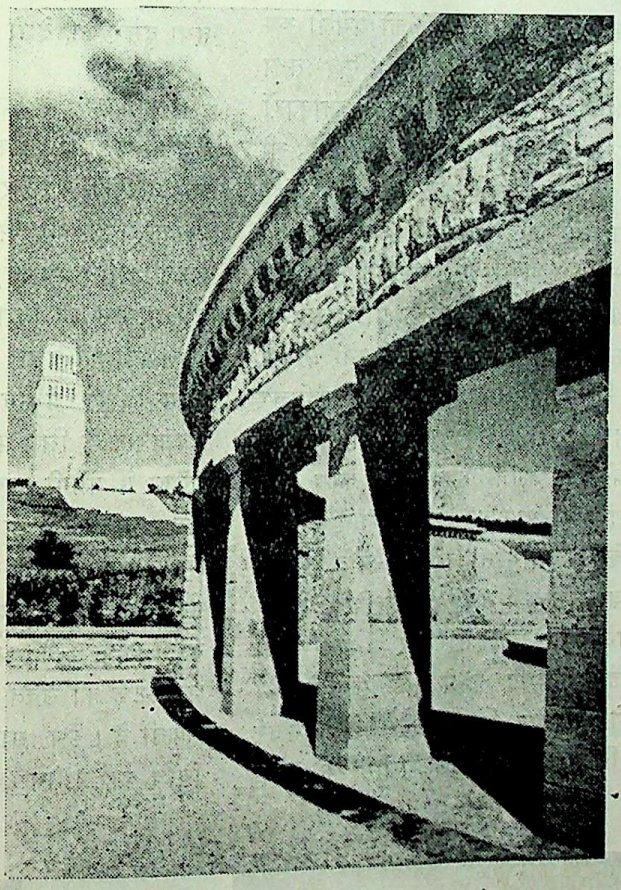

हज़ारों कब्रों वाले तीन क़ब्रिस्तानों में से एक का मुख्य द्वार। फासिस्तों द्वारा क़त्ल किये गये ५६००० वीर योद्धा यहां अन्तिम नींद सोये हैं

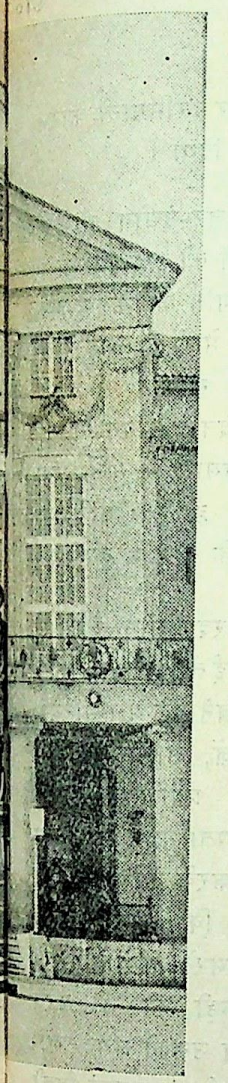

द्ध कवियों स्मारक दिख रहा है

हैं रिग कारखाने के
यन्त्र दुनिया भर के देशों
में हैं। ये वस्तुएं एक
तरह निर्माण के सन्देश
वाहक मज़दूर किसान

राज्य के! वाइमर की संगीत कला अकादमी और वास्तुकला अकादमी में हज़ार से अधिक छात्र दोनों कलाओं में शिक्षा पा रहे हैं जो भविष्य में जर्मनी की मानवीय संस्कृति की पुनीत परम्परा को विकास के पथ पर आगे बढ़ायेंगे।

राष्ट्रों का राजमार्ग

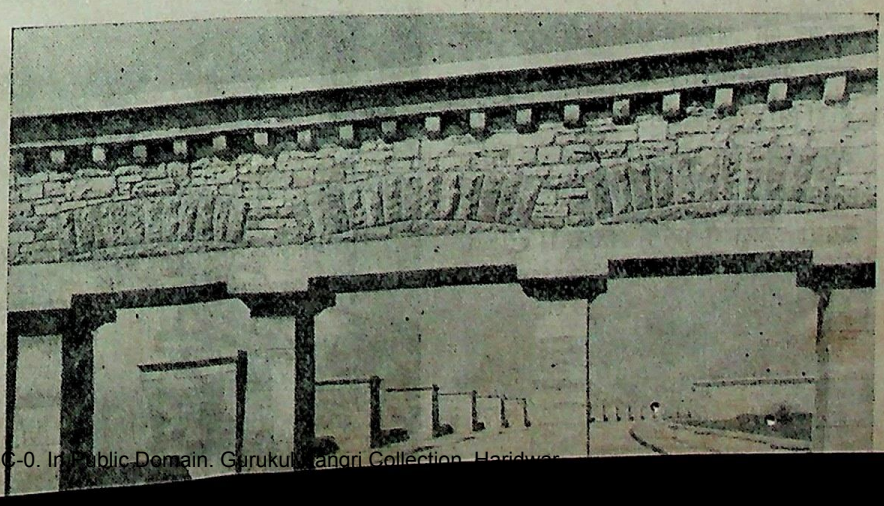

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र का सुन्दर प

डा० यू

पिछले चन्द साल का हमारा अनुभव बताता है कि ज.ज.ग. के निवासी, घरों में इस्तेमाल करने का ऐसा सामान (फर्निचर) पसन्द करते हैं जो शक्ल सूरत में सादा लेकिन आधुनिक ढ़ंग का तथा सुन्दर हो। भारी मेज़ कुर्सियों तथा पलंग अलमारियों की तुलना में छोटा, हल्का तथा सुन्दर फर्निचर बहुत अच्छा और कारआमद होता है। ऐसे सामान में सामग्री, पैसे तथा श्रम की काफी बचत भी होती है। इसके अतिरिक्त आधुनिक ढ़ंग के मकानों के—जिनके कमरे अपेक्षाकृत छोटे होते हैं—ठीक अनुरूप होने के साथ ही साथ हल्का सुन्दर फर्निचर कमरों की शोभा सज्जा को भी द्विगुणित कर देता है। आकार में छोटे फर्निचर का एक और लाभ यह भी हैं कि यह बहुउपयोगी होता है और गृहणी ऐसे सामान को (और जहां यह रखा हो उन कमरों को भी) बड़ी आसानी से हर दिन झाड़ पोंछ सकती है। हल्का फुलका फर्निचर एक मकान से दूसरे में भी बड़ी आसानी से लाया ले जाया जा सकता है।

फर्निचर संबंधी एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारी भरकम सामान तैयार करने में हाथ का अधिक और मशीनों का कम दखल होता है। लेकिन ज.ज.ग. में फर्निचर बनाने का पूरे का पूरा काम अब मशीनों द्वारा ही होता है। निरन्तर बढ़ती हुई मांग इस यन्त्रीकरण का मुख्य कारण है। छोटे आकार प्रकार के सामान का यह भी लाभ है कि खरीदार एक समय पर एक चीज़ खरीद सकता है। भारी और पुराने ढ़ंग के सामान की तरह उसके लिये पूरे का पूरा सेट खरीदना अनिवार्य नहीं। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा से अपना घर सजा सकता है और जब चाहे वह इस सज्जा में तबदीली भी कर सकता है। ज.ज.ग. में फर्निचर उद्योग का इतनी तेजी से यन्त्रीकरण हो रहा है कि बहुत जल्दी हम यह सामान निर्यात करना शुरू करेंगे।

हाथों से मशीनों तक आने की उक्त तबदीली बड़े नियोजित ढंग से लाई गई। सन् १९५४ में मंत्रिपरिषद ने बाक़ायदा एक प्रस्ताव पास किया वास्तुकला, रूप-सज्जा तथा फर्निचर उद्योग के बारे में। इसके बाद इस प्रस्ताव को अमली रूप देने के लिये देश भर के प्रसिद्ध तथा अनुभवी वास्तुकलाकारों, रूप सज्जाकारों और कला विशेषज्ञों की सहायता ली गई। इस हलचल का अगुवा था 'वास्तुकला तथा भवन-निर्माण अकादमी' का 'आन्तरिक रूप-सज्जा संस्थान' और इस संस्थान का योग्य निर्देशक प्रो. होर्स्ट मइशेल। इस संस्थान ने एक योजना तैयार की जिसके आधीन, सबसे पहले, फर्निचर तैयार करने की एक सरकारी फैक्ट्री में हाथों की जगह मशीनों से काम शुरू हुआ। 'संस्थान' ने इस कारखाने के लिये न केवल सामान के ही अति सुन्दर डिज़ाइनों तथा नमूने तैयार किये, बल्कि इसने प्लास्टिक, झागदार रबड़ (स्पंज) कार्डबोर्ड आदि जैसी नई सामग्री का प्रयोग भी शुरू किया बैठने वाले फर्निचर के लिये। इस सफल प्रयोग के बाद, 'संस्थान' ने, छोटे और दरमियानी कारखानों की ओर ध्यान दिया।

अब तक पूरा फर्निचर-उद्योग हरकत में आ चुका है मशीनों की सहायता से। इसके विकास तथा प्रगति की झलक हम लइपज़िक के व्यापार मेलों में हर साल दिखाते हैं। हमारे सामान में अन्य देशों की दिलचस्पी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसका प्रमाण वे व्यापारिक समझौते हैं जो हाल ही में हमारे देश तथा दूसरे कई देशों के बीच में हुये।

लइपजिक के शरदकालीन व्यापार मेले में ज.ज.ग. ने कई तरह का फर्निचर, जैसे बुकरैक, कपड़े रखने की अलमारियां, लिखने पढ़ने की मेज़ें, सोफे, कुर्सियां, पलंग आदि आदि, प्रदर्शित किये। इस सामान की विशेषता यह थी कि इस में लकड़ी की बचत करके नई प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया गया था। उदाहरण के लिये कमरों की बाहरी रूप सज्जा में मँहगी लकड़ी की जो परत चढ़ाई जाती थी, अब उसकी जगह प्लास्टिक पन्नी लगा दी गई। इस तरह बिक्री मूल्य (उत्पादन मूल्य) में काफी कमी हो गई। कहने की आवश्यकता नहीं की प्लास्टिक की उक्त परत धोई भी जा सकती है। इस सामग्री तथा उत्पादन विधि का प्रयोग अन्य फर्निचर मेज़ों,

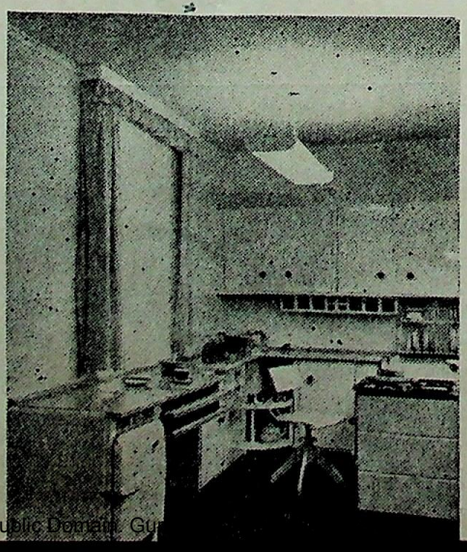

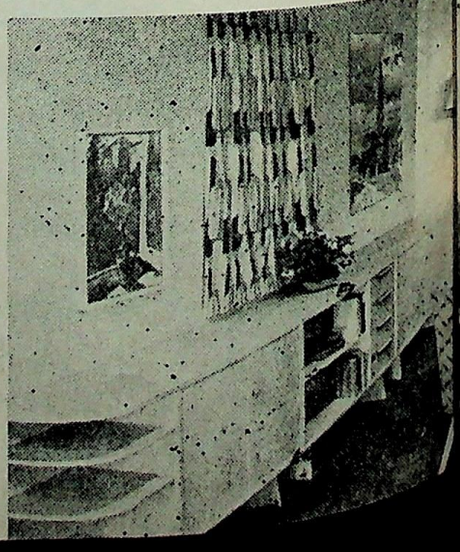

CC-0. In Public Domain. Gu

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायदार फर्निचर

अलमारियों, पलंगों आदि में भी बड़ी सफलता से किया गया। इसी प्रकार, मेज़ कुर्सियों तथा पलंगों आदि के गिलाफ (कवर) पहली बार कपड़े से न बनाकर एक नवीन संश्लिष्ट पदार्थ के तन्तुओं से बुनकर तैयार किये गये।

सामान तैयार करते समय लकड़ी की चीर फाड़ से लकड़ी के जो छोटे-छोटे टुकड़े और भूसा निकल आता है अब उसको भी प्रयोग में लाया जाता है—अर्थात् फर्निचर उद्योग में इस 'त्याज्य पदार्थ' का अब एक महत्त्वपूर्ण स्थान है कच्चे माल के रूप में। सन् १९५७ से फर्निचर बनाने वाले कुछ कारखाने केवल इसी सामग्री से सामान तैयार कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में वे ऐसे सामान बनाने के विशेषज्ञ हैं।

ज.ज.ग. में फर्निचर बनाने वाले कुछ कारखानों ने जुड़ने तथा तह होने वाले पूरे के पूरे रसोईघर ही निर्माण किये हैं रसोईघर के सामान सहित। एक कारखाने ने सन् ५७ के शरद्काली लइपज़िक मेले में एक ऐसे छोटे मोटे किचन को प्रदर्शित किया था जो जगह बदलने के अवसर पर अलग होकर एक अलमारी में तह कर बन्द हो सकता था।

सामान के लिये बढ़ती हुई घरेलू मांग के होते हुये भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र यह सामान अन्य देशों को भी निर्यात कर सकता है और करता है।

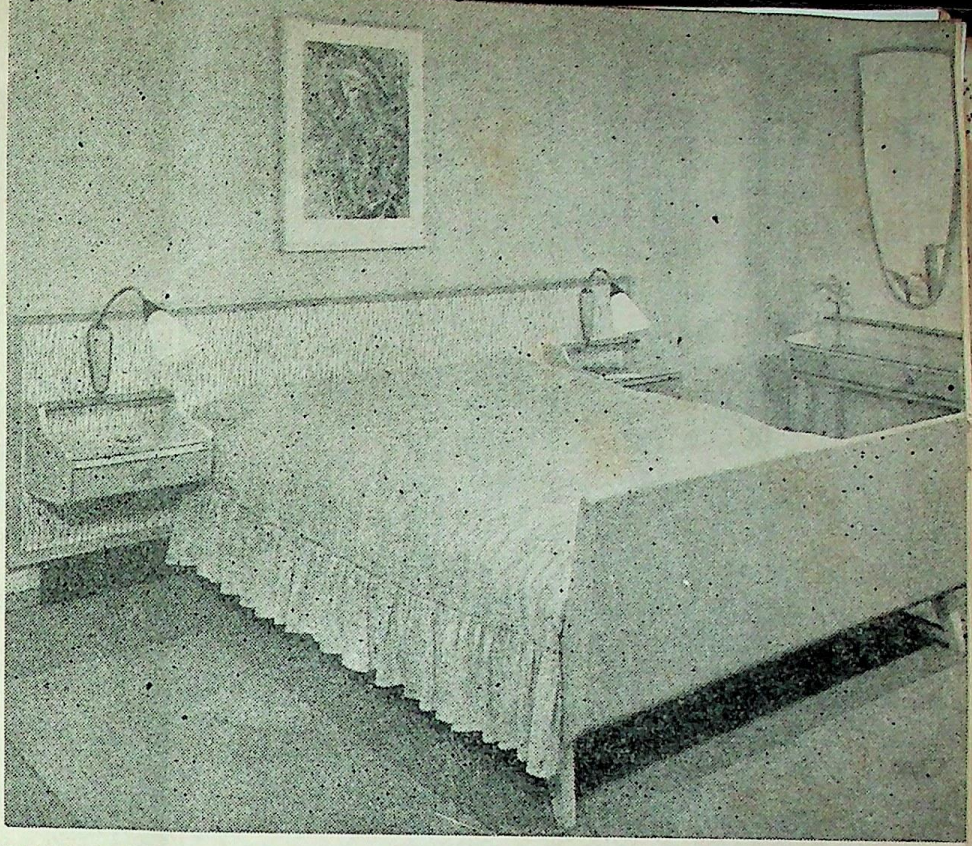

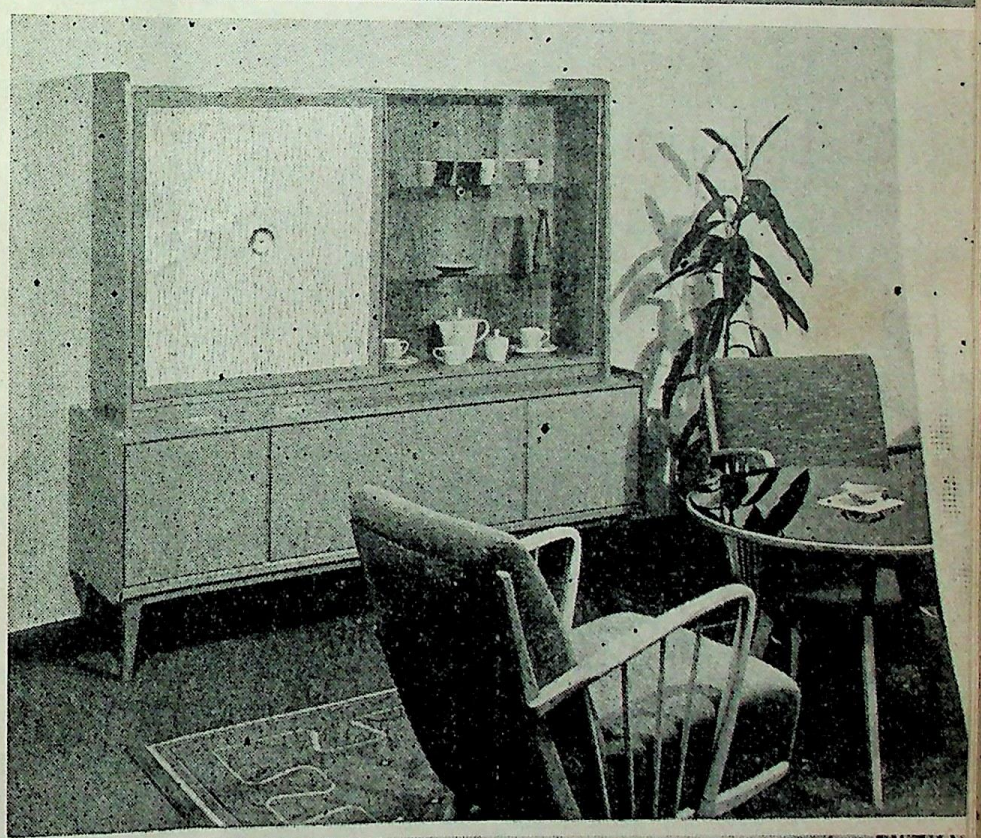

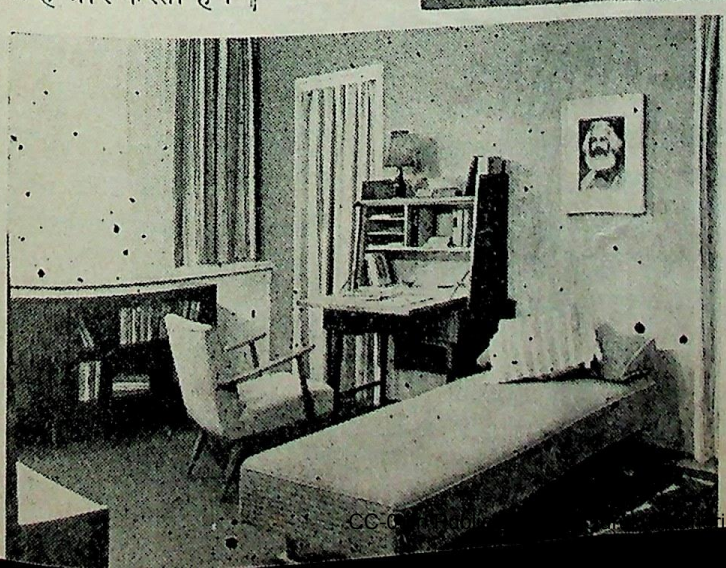

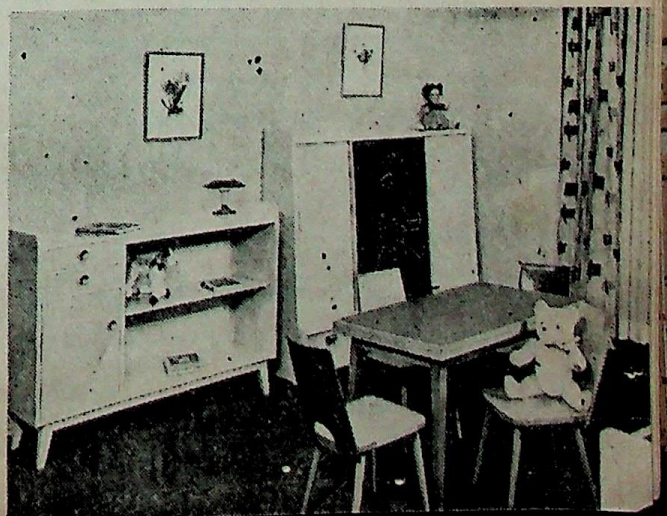

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अमरीकी महि

६० वर्षीय अमरीकी महिला-पर्यटक को मैं पूर्वी बर्लिन दिखाने के लिये ले गया। पर्यटन समाप्त करने के बाद उसने कहा: "नगर का रूप एकदम बदल रहा है, और चारों तरफ निर्माण कार्य बड़ी तीव्रगति से हो रहा है?" कुछ क्षण चुप रहने के बाद महिला फिर बोली: "मैं चार वर्ष पहले एक बार यहां आई थी। उस समय यहां के लोग इतने संतुष्ट, इतने अच्छी वेष भूषा में और इतने खुशहाल नहीं थे। लेकिन अभी यहां बहुत कुछ करना बाक़ी रह गया है।"

इस अमरीकी पर्यटक ने कुछ प्रशंसा के और कुछ आलोचना के भाव प्रकट किये। उदाहरण के लिये उनकी समझ में यह बात नहीं आई कि "पश्चिम बर्लिन की सीमा के इस तरफ के भाग को एक 'शो विन्डो' (प. बर्लिन की तरह) क्यों नहीं बना दिया गया है?" स्वयं ही अपने सवाल का जवाब देते हुये उसने कहा: "लेकिन नये कार्ल मार्क्स एल्ली के आस पास का क्षेत्र जब बनकर तैयार होगा—अर्थात् जब वहां की सफेद इमारतें, सिनेमा हाल, रंगशालायें, रेस्त्रां, दुकान तथा बाग़-बगीचे और खेल कूद के मैदान निर्मित होंगे तो पूर्वी बर्लिन सचमुच इन चीज़ों पर गर्व कर सकेगा। ...कुछ वर्षों के बाद मैं फिर यहां आऊंगी। तब मैं देखूंगी कि कितना निर्माण हुआ है।"

"दुकानें अच्छी खासी सजी हुई हैं और उनमें सामान भी खूब भरा है। लेकिन ताज़े फलों और सब्ज़ियों की कमी मुझे कुछ अखरी। इन चीज़ों की ओर काफी ध्यान दिया जाना चाहिये। लेकिन जो अमरीका निवासी इस धारणा के शिकार हैं कि बिचारे, पूर्वी जर्मनी के लोग भूखे मर रहे हैं, वे मूर्खों की दुनिया में रहते हैं। हमारे अमरीका में तो औरतें हर प्रकार से अपने आपको दुबला करने के प्रयत्न कर रही हैं, लेकिन यहां पूर्वी बर्लिन में, बच्चे बूढ़े, मर्द और औरतें सभी जम के खाते पीते और मौज उड़ाते हैं।...

"ठीक है कि पश्चिम बर्लिन की तरह यहां की दुकानें आवश्यकता से अधिक सजी-धजी नहीं हैं, लेकिन वहां के वातावरण में तो मनुष्य का दम घुटता है। मैं तो वहां दो दिन भी न टिक सकी। मुझे आश्चर्य है कि यूरोप के वे लोग जो नाज़ी बर्बरता का शिकार हुये आज पश्चिम बर्लिन को देखकर क्या कहेंगे। हर पग पर वहां समाज विरोधी तत्व भरे पड़े हैं।"

मेरे यह पूछने पर कि वह किस चीज़ से सब से अधिक प्रभावित हुई पूर्वी बर्लिन में, उसने तुरन्त उत्तर दिया: शिशुओं के लालन-पालन और देखभाल से। मैं ने यहां के कुछ किंडरगार्टेन देखे। नाम मात्र का पैसा देकर मातायें, बिना किसी चिन्ता के अपने बच्चों को इनमें रखती हैं और खुद काम पर जाती हैं। यहां बच्चों को खाने पीने के साथ साथ खेल-कूद, व्यायाम भी कराया जाता है। काश, हमारे अमरीका में भी इस तरह के किंडरगार्टेन होते। वहां तो बिचारी नौकरी करने वाली मातायें अपने बच्चों को या तो दादी, नानी के सिपुर्द करती हैं, अथवा, घर की चाबी अपने बच्चों के गले में बांध लेती हैं और ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि उनका बच्चा सड़कों पर किसी दुर्घटना का शिकार न हो।

"मैं यहां के वृद्ध लोगों के आवास-गृहों से भी बहुत प्रभावित हुई। इन गृहों में वृद्धों की सुख सुविधा के लिये हर प्रकार की आमोद प्रमोद की सामग्री उपलब्ध कर दी गई है। अमरीका, और विशेषकर न्यूयार्क में, मैंने अनेक ऐसे अवकाश प्राप्त वृद्ध देखे हैं जो साहचर्य और कुछ काम करने के लिये तरसते रहते हैं।...

"आप लोग एक और क्षेत्र में भी अमरीका से आगे हैं। वह क्षेत्र है स्वास्थ्य सुरक्षा का। अमरीका में धनी वर्ग अपने धन से स्वास्थ्य सुरक्षा की सभी सुख सुविधायें खरीद सकता है, और गरीब वर्ग को सरकारी अस्पतालों में थोड़ी बहुत मदद मिलती है। लेकिन बिचारा मध्य वर्ग पीसा जाता है। एक डाक्टर की सलाह प्राप्त करने के लिये इस वर्ग के लोगों को बड़ी रक़में खर्च करनी पड़ती हैं। इसलिये प्रायः इलाज के बगैर रहना पड़ता है। लेकिन आपके यहां की व्यवस्था में हर व्यक्ति के स्वास्थ्य का बीमा किया जाता है उस फर्म, कारखाने या दफ्तर द्वारा जहां वह काम करता है। ऐसा करना क़ानूनन लाज़िमी है यहां। इसके अलावा, स्वास्थ्य संबंधी सभी खर्च—डाक्टर से लेकर बड़े से बड़े आपरेशन या किसी आरोग्य-आश्रम में चार हफ्तों के आराम तक—ट्रेड यूनियन और सरकार देती है। मेरे लिये यह एक

वैज्ञानिक-तकनीकी साहि

पिछले दो दशकों में, विज्ञान तथा टेकनोलोजी में अभूतपूर्व विकास हुआ तीव्रतम गति से। इस विकास के बढ़ते चरणों में उल्लेखनीय हैं सोवियत संघ के दो अन्तरिक्ष नाविकों यूरी गागारिन तथा घेरम तितोव का अनन्त अन्तरिक्ष में प्रथम बार पदार्पण करना, अणु शक्ति का नियंत्रण तथा इसको शांतिपूर्ण कार्यों के लिये प्रयोग करना और विद्युत मस्तिष्क की ईजाद। विज्ञान तथा टेकनालोजी की इस अलौकिक प्रगति को सम्पूर्ण मानवता की बपौती बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है साहित्य। मानव-प्रगति में इच्छुक लोग, साहित्य के माध्यम द्वारा, उक्त प्रगति के लाभालाभ से अवगत होते रहते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र भी उन देशों में से एक है जो काफी बड़ी मात्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार

आश्चर्य से कम नहीं। काश, मेरे देश में भी यह सब कुछ होता—विशेषकर वृद्ध लोगों के लिये।

"आपकी शिक्षा व्यवस्था के बारे में भी यही कहा जा सकता है। अमरीका में हर मां बाप तभी से पैसा जोड़ना शुरू करता है जब उनका बच्चा जन्म ले ताकि बड़ा होने पर उसको पढ़ाया जा सके। मैंने सुना है कि अमरीका में कालेज की शिक्षा देने के लिये कई हज़ार डालरों की आवश्यकता होती है आजकल। लेकिन यहां आपके देश में, शिक्षा न केवल मुफ्त है बल्कि साथ में अधिकांश विद्यार्थियों को रहने खाने के लिये वज़ीफे भी दिये जाते हैं।

"मैं कला में थोड़ी-बहुत अभिरुची रखती हूं। मेरी यह धारणा थी कि जहां तक कला-क्षेत्र का संबंध है यहां की कला केवल कारखानों, ट्रैक्टरों और मज़दूरों की कृत्रिम मुस्कानों तक ही सीमित है। लेकिन चित्रों की एक प्रदर्शनी देखने के बाद मेरा यह भ्रम भी टूट गया। इस प्रदर्शनी की कई तस्वीरें मुझे बहुत पसन्द आईं (और कई नहीं भी आईं), लेकिन यहां के चित्रकारों की कला संबंधी ईमानदारी पर शक करने की कोई गुंजाइश नहीं। मुझे यह स्वीकार करने में ज़रा भी झिझक नहीं कि मेरे लिये यह अनुभव एकदम नया और आश्चर्यजनक था।"

अन्त में मैं ने इस वयोवृद्ध महिला से पूछा, "यहां की कौन सी ऐसी चीज़ या चीजें हैं जो आपको अच्छी नहीं लगीं?"

अमरीकी महिला ने कुछ देर सोचने के बाद उत्तर दिया: "यह मैं तो पहले ही कह चुकी हूं कि पूर्वी बर्लिन की चमक दमक कुछ कम ही है और इसको काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है। कुछ नाइट क्लब हों, रोशनी अधिक हो रात में, और खासकर कुछ ऐसे क़हवा-खाने हों जहां बैठकर, आराम से गप शप लड़ायी जा सके। फल और सब्ज़ियों के प्रकारों और कमी को कौरन दूर करना चाहिये आप लोगों को। मेरा यह भी ख्याल है कि आपके यहां काफी ज़्यादा नौकरशाही है। इस दिशा में भी कुछ करना चाहिये। लेकिन कुल मिलाकर मैं यह निश्चित रूप से कह सकती हूं कि यहां काफी प्रगति हुई और हो रही है। साथ ही इस प्रगति की दिशा भी सही है। आपके निमाण प्रयासों के साथ मेरा आर्शीवाद और शुभकामनायें सदा रहेंगी! ..."

...ीय भावनाओं का संवाहक

में वैज्ञानिक तकनीकी साहित्य प्रकाशित करता है। विज्ञान तथा टेकनोलोजी के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कहां कितनी प्रगति हुई या हो रही है, और अत्याधुनिक मशीनें, यन्त्र तथा औज़ार बनाने में इसका प्रयोग कैसे होता है—ज.ज.ग. का उक्त प्रकाशित साहित्य इस सबकी जानकारी कराता है। इस साहित्य में, टेकनोलोजी तथा विज्ञान से संबंधित दुरूह सिद्धान्तों से लेकर, व्यावहारिक ज्ञान देने वाली सभी प्रकार के प्रकाशन सम्मिलित हैं। इन प्रकाशनों में से कई एक तो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशंसा का पात्र भी बन चुके हैं।

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति—अर्थात् फासिज्म की मुँह तोड़ पराजय के बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक नवीन जर्मन साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ जो मानव मूल्यों, शांतिपूर्ण भावनाओं और मानव एकता की उदात्त भावनाओं से ओतःप्रोत है। पश्चिमी जर्मनी के साहित्य की तरह उक्त साहित्य, प्रतिहिंसा, युद्ध प्रचार और प्रतिशोध की कुरूप भावनाओं से भरा नहीं। विज्ञान तथा टेकनालोजी भी एक दुधारी तलवार है: आप चाहे इसको मानव विनाश के लिये प्रयोग में लाइये या मानव विकास के लिये। ज. ज. ग. मानव विकास तथा भ्रातृ भाव में दृढ़ आस्था रखता है। इसलिये विज्ञान तथा टेकनालोजी को भी यहां के वैज्ञानिक तथा सरकार इस विकास का एक सबसे बड़ा सहयोगी समझती है। इस भावना का परिणाम स्पष्ट है: सन् १९५३ से सन् ६१ तक ज.ज.ग. ने, जितना विज्ञान तथा तकनीकी साहित्य अन्य देशों को निर्यात किया उसकी मात्रा (पहले वर्षों की तुलना में) चौगुना बढ़ गई है, और आजकल ज.ज.ग. लगभग १०० देशों को यह साहित्य निर्यात करता है। सन् १९६२ के प्रथम छः महीनों में; यहां के प्रकाशन-गृहों पर इस साहित्य के निर्यात की मांग बहुत ज़्यादा बढ़ चुकी है और निरन्तर बढ़ती जा रही है।

ज.ज.ग. के ये विश्व विख्यात प्रकाशन बहुत सुन्दर रूपसज्जा से युक्त ही नहीं वरन् मानव मूल्यों, सद्भावना और सहयोग की पुनीत भावनाओं से भी भरे हुये हैं। यह साहित्य वह मज़बूत सेतु है जो भूत को वर्तमान से मिलाकर उज्जवल तथा समृद्ध भविष्य की ओर ले जाता है मानव को अपने व्यापक तथा उदार सन्देश के द्वारा! ...

सूचना पत्रिका:

चन्दे की दर

वार्षिक:	२.००
अर्ध वार्षिक:	१.००
एक प्रति:	०.२० न०पै०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की दुर्दशा

प्रो. वाल्टर हेजमन्न

इस लेख के लेखक डा. वाल्टर हेजमन्न पश्चिमी जर्मनी के मुन्स्तेर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता संस्थान के निदेशक थे। प. जर्मनी की एक बड़ी और महत्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी, क्रिस्चियन सोशल यूनियन, के संस्थापकों में प्रो. हेजमन्न एक हैं।.....एक वर्ष पहले, प्रोफेसर महोदय के खिलाफ एक ज़बरदस्त अभियान चलाया गया जिसके कारण उन्होंने प. जर्मनी का परित्याग किया और जून १९६१ में वह जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर बस गये। अब वह बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में साम्राज्यवाद का इतिहास पढ़ाते हैं। प्रो. हेजमन्न का, अपने अनुभवों पर आधारित निम्न लेख, पाठकों को काफी रुचिकर लगेगा।

—सम्पादक

किसी भी व्यक्ति के लिये—चाहे वह किसी राजनीतिक दल या मज़दूर संघ का सदस्य हो, अथवा बिल्कुल तटस्थ और राजनीति से जिसको दूर का भी वास्ता न हो—पश्चिमी जर्मनी की युद्ध-पोषक तथा शस्त्रीकरण की नीति के विरुद्ध और शांति के पक्ष में बोलने के लिये, उसका जीना मुश्किल कर दिया जाता है। जो कोई भी व्यक्ति सोवियत संघ के साथ सही संबंध जोड़ने की बात करे, अथवा दूसरे जर्मन राज्य (ज.ज.ग.) के साथ सह-अस्तित्व के सिद्धान्त पर अमल करने को कह दे, उसको तुरंत कम्युनिस्ट एजण्ट घोषित किया जाता है। प. जर्मनी के नीति-निर्धारक ऐसा इसलिये करते हैं क्योंकि वे प. जर्मनी को, सम्पूर्ण जर्मनी का प्रतिनिधि और 'पूर्वी दासता' के खिलाफ 'पश्चिमी स्वतंत्रता' के संरक्षक समझते हैं। इसलिये यदि कोई व्यक्ति अपने स्वतंत्र विचारों को सही ढंग से व्यक्त करे तो उसको फौरन जेल की कोठरी में बन्द किया जाता है।

पश्चिमी जर्मनी का क़ानून, विश्व-विद्यालय के प्राध्यापकों के विद्रोह से खास-तौर पर चिन्तित रहता है। वैसे फेडरल जर्मनी के संविधान में अध्ययन अध्यापन तथा अनुसन्धान की स्वतन्त्रता तो घोषित है, लेकिन यह स्वतन्त्रता केवल शिक्षा संस्थानों के लेकचर हालों तक ही सीमित है। संविधान की इस घोषणा के बावजूद अडेनाअर की हकूमत प्रोफेसरों तथा शोधार्थियों को, "पूर्व (ज.ज.ग.) के प्रभाव तथा गलतियों से सुरक्षित रखना" अपना कर्तव्य समझती है। इस प्रकार उनकी स्वतंत्रा का हनन करके पूंजीवादी सत्ता का क्रीतदास बना दिया जाता है संविधान की व्यक्तिगत स्वतंत्रता की घोषणा को रौंदकर!

बुद्धिजीवी प्रोफेसरों तथा शोधार्थियों को भी सरकारी कर्मचारी की कोटि में घसीटा गया है। दूसरे शब्दों में, सरकारी अधिकारियों की तरह ही उनको मालिक के प्रति "वफादार तथा आज्ञाकारी" रहने का आदेश दिया जाता है। लेकिन यदि इस आदेश का ज़रा सा भी उल्लंघन हो . . . अर्थात् यदि कोई शिक्षक या प्राध्यापक रालिक, यानी सांस्कृतिक मंत्री के राजनैतिक विचारों से असहमत होने की धृष्टता करे तो उसकी खैर नहीं। सबसे पहले ऐसे 'खतरनाक' प्राध्यापक के खिलाफ एक सरकारी जांच नियुक्त की जाती है। इसके बाद उसको अध्ययन अध्यापन से अलग करके उसकी नौकरी छीन ली जाती है। फिर दिखावे का मुक़दमा चलाकर उसका 'दोष' सिद्ध किया जाता है।

लेकिन ऐसे व्यक्तियों के कुछ मुक़दमे भी सामने आ जाते हैं जिन पर कम्युनिस्ट होना तो दूर रहा, कम्युनिस्ट प्रभाव में होने का इलज़ाम भी चिपक नहीं सकता। यदि अधिकारी मनमानी करके ये मनगढ़न्त इलज़ाम लगा भी दें तो लोग उनकी खिल्ली उड़ायेंगे। और सहयोगी प्रोफेसरों के अतिरिक्त जन साधारण भी ऐसे मुकदमों में काफी दिलचस्पी लेते हैं जो बोन सरकार के इन जाली मुक़दमों के हित में नहीं। लेकिन ऐसे मुक़दमों को भी 'सफल' बनाने के लिये हुकूमत के पास कई अस्त्र हैं। इनमें से एक अस्त्र है एजण्टों को खरीदकर झूठे गवाहों के रूप में इस्तेमाल करना। इस तरह क़ानून भी बना रहता है और काम भी सस्ते में हो जाता है। यह सारी भूमिका तैयार करने के बाद 'अभियुक्त' प्रोफेसर के खिलाफ एक ज़बरदस्त प्रेस अभियान शुरू करा दिया जाता है जिसमें उस पर हर तरह का कीचड़ उछाला जाता है। तब बिचारा एक व्यक्ति इस षड्यन्त्र का कैसे मुकाबला करे। वह सार्वजनिक जीवन से सन्यास लेने पर मजबूर हो जाता है। मैं स्वयं इसी तरह के एक षडयन्त्र का शिकार हुआ प. जर्मनी के उत्तरी राइनवेस्ट-फालिया ज़िले में।

विचारों तथा स्वतंत्र मत के उक्त दमन का, केवल मैं ही शिकार हुआ हूं पश्चिमी जर्मनी में, ऐसी बात नहीं। मैं ऐसे दर्जनों बुद्धिजीवियों के उदाहरण पेश कर सकता हूं जो उल्लिखि षड्यंत्र के शिकार हुये हैं। अपने सहयोगियों के कुछ उदाहरण यहां देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूं।

म्यून्स्टेर विश्वविद्यालय में मेरे सह-योगी क़ानून के प्रोफेसर श्री वेगनेर एक बार ज.ज.ग. के एक बयान से सहमत हुये और उन्होंने अपना यह मत प्रकट करने की 'ग़लती' की। प. जर्मनी की हकूमत ने तुरन्त उनको विश्वविद्यालय से निकलवा दिया और साथ ही उनको अविश्वसनीय क़रार दिया गया।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

ज़र्मनी की खबरें

एक महत्वपूर्ण मुलाकात

२८ जून को, घाना के राष्ट्रपति एनक्रूमा से ज. ज. ग. के राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष श्री गेराल्ड गोइट्टिंग ने मुलाकात की। श्री गोइट्टिंग घाना की राजधानी आक्करा में आयोजित "बम के बिना संसार" कानफ्रेन्स में ज. ज. ग. का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उन्होंने राष्ट्रपति को ज. ज. ग. के राज्य परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का विशेष शुभ संदेश दे दिया।

श्री एनक्रूमा ने उक्त कानफ्रेन्स में जर्मन शांति संधि तथा पश्चिम बर्लिन की समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। इसके लिये श्री गोईट्टिंग ने उनको धन्यवाद दिया और कहा कि ज. ज. ग. शांतिपूर्ण समझौते के लिये सुझाव देता आया है और इसके लिये हमेशा तैयार है।

अफ्रीका तथा ज. ज. ग. के इन दो नेताओं ने अपने दो देशों के बीच वैज्ञानिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को विकसित तथा दृढ़ करने के बारे में भी बातचीत की।

इराक़ के साथ सफल व्यापार वार्ता

इराक़ तथा ज. ज. ग. द्वारा नियुक्त दो आयोगों के बीच जून मास में व्यापार विषयक बातचीत चली और अन्त में दो देशों के बीच, सन् ६२-६३ में एक व्यापार संधि पर दस्तख़त हुये। ज. ज. ग की ओर से ज. ज. ग. वहां के विदेश व्यापार मंत्रालय में अफ्रो-एशियाई देशों के विभाग के महानिदेशक श्री मूजेने काट्टनेर और इराक़ की ओर से वहां के व्यापार मंत्रालय के महानिदेशक श्री हमीद नासिर ने उक्त संधि पर दस्तख़त किये।

इराक़ तथा ज. ज. ग. के बीच व्यापार संधि पहली बार सन् १९५८ में हुई थी। उसी संधि को आगे बढ़ाकर अब दो देशों के बीच होते हुये व्यापार को काफी विस्तार देना निश्चित हुआ है। संधि में कहा गया है कि "ज. ज ग. और इराक़ के बीच निरन्तर बढ़ता हुआ व्यापार हमारे दो देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के अलावा, व्यापार में समानता और एक दूसरे के हितों के लिये सहयोग के सिद्धान्त का परिणाम है।

उल्लिखित व्यापार संधि की बातचीत में इराक़ के मंत्रियों तथा उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। इनमें से उल्लेखनीय हैं: व्यापार मंत्री, श्री एम. ज़वाही, वित्त मंत्री श्री जामिली, केन्द्रीय बैंक के गोर्वनर, श्री एम. शवाफ, विदेश मंत्रालय में आर्थिक संबंधों के महानिदेशक श्री एन. मुतवल्ली आदि। संधि पर दस्तख़त होने के बाद इराक़ में ज.ज.ग. के प्रधान कार्यकारी कोंसल, श्री वोल्फगेंग कोनशेल ने, एक स्वागत समारोह का आयोजन किया जिसमें इराक़ी सरकार तथा सेना के उच्चाधिकारी पधारें।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ अफ्रीका में

ज. ज. ग. के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो. वाल्टर मार्को ने, नाइजीरिया के नास्सूका राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में कई भाषण दिये। प्रो. मार्को इस विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाने के लिये नियुक्त हुये हैं। वह ज. ज. ग. में, जर्मन-अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष भी हैं। इतिहास को विज्ञान की कोटि में रखते हुये प्रो. मार्को ने कहा: "यह मेरा अहोभाग्य है कि मैं यहां ज. ज. ग. के इतिहास (विज्ञान) का प्रतिनिधि हूं। ज. ज. ग., जर्मन इतिहास की मानवीय परंपराओं को आगे बढ़ा रहा है। इसीलिये यहां, नाइजीरिया में, जर्मन विज्ञान को सम्मान तथा आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

नाइजीरिया में प्रोफेसर मार्को का काम है वहां की नई पीढ़ी को स्वतंत्र रूप से इतिहास का पर्यवेक्षण करने के लिये तैयार होने में सहायता पहुंचाना जिससे वह अपने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को गर्व और सम्मान की दृष्टि से देखे। इस प्रसंग में प्रोफेसर ने अफ्रीकी देशों में इतिहास का अनुसन्धान पनपाने में ज. ज. ग. की सहायता का उल्लेख भी किया।

प्रसिद्ध भारतीय नर्तकी ज. ज.ग. में

हाल ही में भारत की प्रसिद्ध नर्तकी रीता देवी यूरोप के दौरे पर गईं थीं। इस दौरे में उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र का पर्यटन भी किया जहां उन्होंने पांच भिन्न स्थानों पर अपनी श्रेष्ठ कला का कलापूर्ण और सफल अभिनय किया। ऐसा एक अभिनय ज. ज. ग. के टेलिविज़न पर लाखों जर्मन निवासियों को भी दिखाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार में सबसे कम शिशु क्षयरोगी

जून मास में समाजवादी देशों के क्षयरोग के विशेषज्ञों की एक बैठक हुई ज. ज. ग. के वाइमर ज़िले में। इसमें इस बात की घोषणा की गई कि दुनिया भर के देशों में ज. ज. ग. एक ऐसा देश है जहां सबसे कम बच्चे क्षयरोग (टी. बी.) का शिकार होते हैं। सन् १९६१ में सारे ज. ज. ग. में क्षयरोग से केवल १३ शिशु मर गये। प्रौढ़ व्यक्तियों में भी इस भयंकर रोग का खातमा करने में ज. ज. ग. सब से आगे है।

क्षयरोग के उन्मूलन में उक्त सफलता का रहस्य यह है कि ज. ज.ग. में शिशुओं को टी. बी. विरोधी टीके लगवाये जाते हैं। इसके अलावा नई तथा अच्छी औषधियों, अनिवार्य एक्स-रे जांच आरोग्य संबंधी उत्तम प्रबंधों आदि ने भी इस रोग को समाप्ति की निकटतम सीमा तक पहुंचा दिया है। वाइमर में हुई टी. बी. के २५० विशेषज्ञों की उल्लिखित बैठक में इस बात का फैसला किया गया कि ज. ज. ग. से वीतनाम तक के समस्त समाजवादी देशों में, क्षयरोग को समूल नष्ट करने के लिए एक अभियान चलाया जाये। विशेषज्ञों ने सन् १९६५ तक क्षयरोगियों की संख्या प्रति एक लाख व्यक्तियों में केवल ६ तक घटाने का निश्चय किया है।

जनवादी बर्लिन में द साइका और सोफिया लोरेन

इटली का विश्व प्रसिद्ध अभिनेता तथा फिल्म निर्देशक श्री वितोरियो द साइका चार रोज़ के लिये अपनी एक नई फिल्म के कुछ दृश्य शूट करने के लिये पूर्वी अर्थात जनवादी बर्लिन में आये थे। उनके साथ फिल्म की नायिका सोफिया लोरेन भी थीं। यह नई फिल्म प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक, सार्त्र के एक नाटक "अलतोना का कैदी" पर आधारित है। ये दृश्य विख्यात जर्मन के नाटककार द्वारा स्थापित विश्वप्रसिद्ध बर्लिनेर एनसेम्बले में शूट किये गये जिनमें एनसेम्बले के विख्यात रंगमंच पर सोफिया लोरेन को भी अभिनय करते दर्शाना था। ज. ज. ग. की डेफा फिल्म कम्पनी ने हर प्रकार की सहायता उपलब्ध की इस कार्य को सफल बनाने के लिये। श्री द साइका ने डेफा तथा एनसेम्बले के उक्त सहयोग को 'बहुत ही अच्छा' और प्रशंसनीय कहा।

जनवादी बर्लिन के निवास काल में, द साइका तथा सोफिया लोरेन ने बर्लिनेर एनसेम्बले द्वारा अभिनीत, ब्रेख्त का प्रसिद्ध नाटक "तीन पेनी आपेरा" भी देखा। देखकर, लोरेन ने कहा : आजतक जितने भी रंग-मंच देखे हैं उनमें यह सबसे अच्छा है।

पश्चिम बर्लिन के अखबार यह सब कैसे सहन कर सकते थे। इसलिये उन्होंने वर्तमान शताब्दी के इन दो महान फिल्म कलाकारों के खिलाफ ज़हर उगलना शुरू किया। लेकिन इस घृणित प्रचार की ओर दोनों कलाकारों ने ध्यान तक न दिया। दसाइका ने केवल इतना कहा : मैं ब्रेख्त के एक नाटक से, जो मैं बहुत पसन्द करता हूं, एक दृश्य लाना चाहता था अपनी नई फिल्म में। इसलिये मैं उसी रंगमंच की शरण गया जहां उनके नाटक दुनिया में सबसे अच्छे खेले जाते हैं।

बर्मा के नेता का मत

बर्मा की अफ्रो-एशियाई एकता कमेटी के महामंत्री श्री ऊ ला क्या ने ज. ज. ग. की प्रमुख समाचार एजेन्सी ए. डी. एन. को एक इण्टर्व्यू में बताया कि जर्मन शांति संधि पर दस्तखत होने में अब अधिक देर नहीं होनी चाहिये। उन्होंने कहा : "प. बर्लिन की वर्तमान खतरनाक स्थिति से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह स्थिति अब असहनीय है। विदेशी सेनाओं (अमरीकी, फ्रेंच तथा ब्रिटिश—सं.) द्वारा अधिकृत प. बर्लिन बहुत तनाव पैदा करता है जो विश्व शांति के लिये ज़बरदस्त खतरा है। तीसरे विध्वंसक युद्ध के इस भयंकर उद्गम को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है एक ऐसी जर्मन शांति संधि का होना जिसके अनुसार प. बर्लिन एक असैनिक स्वतंत्र तथा तटस्थ नगर में तबदील हो।" आगे चलकर महामंत्री ने अपने इस कथन को और भी स्पष्ट करते हुये बताया : "बर्लिन में जो दीवार खड़ी कर दी गई है (जनवादी बर्लिन के गिर्द —सं.) वह शांति को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण प्रयास है। अपनी सीमा सुरक्षा के लिए ज. ज. ग. यदि वह उचित क़दम नहीं उठाता तो जंग छिड़ने का खतरा और भी बढ़ जाता। ऐसे युद्ध में आणविक शक्तियां अनिवार्यतः कूद पड़तीं और इस तरह समस्त मानवता का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता।"

अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव कलकत्ता

कलकत्ता में, अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव होने जा रहा है। इसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र अपनी सात बाल फिल्में दिखायेगा, जिनमें दो परीलोक की कथाओं पर आधारित हैं और शेष पांच कार्टून अर्थात् व्यंग्य चित्र हैं।

पश्चिमी जर्मनी बाल जगत के इस अबोध तथा निर्मल संसार में भी, अपनी शीत युद्ध की गलत नीति घसीटने में पीछे न रही। उत्सव की आयोजन समिति ने सर्वसमति से जब यह फैसला किया कि सम्मिलित होने वाले सभी देशों के राष्ट्रीय झण्डे (ज. ज. ग. का झण्डा भी) इस उत्सव पर लहरायेंगे तो प. जर्मनी तुरन्त उत्सव से अलग हो गई। पिछले वर्ष भी प. जर्मनी ने इसी उत्सव में उक्त कारण यानी उत्सव में ज. ज. ग. का झण्डा लहराने के कारण अपना असफल बायकाट किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एर्विन स्ट्रिट्टमेटर

(पृष्ठ ५ का शेष)

खप कर जीवन यापन करने में समर्थ होता है।

श्री एर्विन स्ट्रिट्टमेटर का प्रथम कहानी संग्रह 'दीवार गिर गई' सन् १९५३ में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कहानियां पढ़कर यह कहना ही पड़ता है कि लेखक एक सफल कहानीकार भी है। सन् १९५९ में लेखक ने बच्चों के लिये, हास्य-विनोद से पूर्ण, एक दीर्घ कथा 'पोपी पेडरो' लिखी। बच्चों ने इसको बेहद पसन्द किया।

श्री स्ट्रिट्टमेटर ने सन् १९५३ में एक नाटक लिखा 'काट्ज़ग्राबेन'। इस नाटक को रंगमंच पर खेलने में श्री बेरटोल्ट ब्रेख्त का सहयोग प्राप्त हुआ। इसमें भी शोषित किसानों का संघर्ष ही चित्रित किया गया है जो धनी किसानों के चंगुल से निकलने में और (भूमि-सुधार के बाद जमीन के मालिक बनने के बाद) नई परिस्थितियों में गांव का निर्माण करने में लग जाते हैं। सन् १९५६ में प्रकाशित उनके दूसरे नाटक 'डच दुलहन' में एक किसान नारी और एक फासिस्ट लेफ्टिनेण्ट हेनरख एर्डमन्न की (जो एक धनी किसान का बेटा भी था) प्रेम कथा वर्णित है। नारी श्रमिक, हान्ना टेंज़, उसका परित्याग कर बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत करती है। अन्त में वह गांव की सरपंच भी बन जाती है।

श्री एर्विन स्ट्रिट्टमेटर एक भावुक कवि भी हैं और उनकी कविताओं में नये जीवन का नया उल्लास प्रस्फुटित हुआ है। इन कवि-लेखक का कहना है कि, "यदि मेरे चार-चार हाथ होते तो भी मैं उस सर्वोतमुखी विकास को चित्रित करने में असमर्थ ही रह जाता जो विकास मेरे देश, मेरे जर्मन गणतंत्र में आजकल हो रहा है ..."

'काला सोना', 'सफेद सोना' ....

(पृष्ठ ७ का शेष)

१·१२ न० पै०)। मज़दूरी में बढ़ौती के अलावा खान मज़दूरों को कई अन्य सुविधायें भी उपलब्ध हैं। डाक्टरी जांच और दवा आदि मुफ्त मिलती है। यदि कोई मज़दूर किसी दुर्घटना के कारण काम के लायक न रहे तो उसके लिये परेशानी का कोई कारण नहीं, क्योंकि उसको ९० प्रतिशत मज़दूरी आजीवन मिलती रहेगी। साथ ही अस्पतालों में रहना तथा इलाज भी मुफ्त होता है।

ज.ज.ग. में मज़दूरों की सबसे बड़ी सामाजिक उपलब्धि है उनका छुट्टियां मनाने का अधिकार और व्यवस्था। हर साल लगभग ६६००० खान मज़दूर यहां के विभिन्न रमणीय स्थानों पर अपने परिवारों के साथ छुट्टियां बिताने के लिये जाते हैं, जहां १५ दिन में केवल ३० मार्क खर्च बैठता है।

इस बात को यहां कहना अनुचित न होगा कि ज.ज.ग. में, खान मज़दूरों के अपने ५० क्लब तथा मनोरंजन के केन्द्र, ८ रंगशालायें, ९१ वाद्यवृन्द, १४१ संगीत तथा ६६ नृत्य-दल हैं। ३ लाख ९० हज़ार पुस्तकों का उनका एक पुस्तकालय भी है।

ज.ज.ग. के अस्तित्व के पिछले तेरह वर्षों में उक्त 'सफेद सोने' का उत्पादन ५० प्रतिशत बढ़ गया है। सन् १९६५ तक शुद्ध पोटाश अर्थात् K_2^0 गुण के पोटाश का उत्पादन २२ लाख टन तक पहुंच जायेगा। इसका अर्थ यह है कि ज.ज.ग. 'सफेद सोने' के उत्पादन में, पश्चिमी जर्मनी को पीछे छोड़कर सबसे अधिक पोटाश उत्पादन करने वाले देशों में अमरीका के बाद दूसरा स्थान ग्रहण करेगा।

भारत संबधी अनुसन्धान ....

(पृष्ठ ८ का शेष)

बौद्ध धर्म का अध्ययन यहां की एक विशेषता है। इसके अतिरिक्त, **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** के पाठानुसन्धान के साथ साथ उसमें वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों तथा सामाजिक जीवन का अध्ययन भी हो रहा है। **भारतीय ग्राम व्यवस्था, भारतीय नीतिशास्त्र तथा यूरोप के लोक साहित्य पर पंचतन्त्र का प्रभाव** पर टीकायें और प्रबन्ध लिखे जा रहे हैं इस संस्थान के निर्देशन में।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में, प्राच्य विद्या अनुसंधान को वर्तमान स्थिति तक लाने के लिये हमें भगीरथ प्रयत्न करने पड़े। अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा हमें। जर्मनी का विभाजन सब से बड़ी बाधा साबित हुई प्राच्य-विद्या के शोध कार्य के विकास तथा विस्तार में। दूसरे महा युद्ध में क्षति से बचाने के लिये जर्मन राज्यकीय पुस्तकालय के जो अमूल्य ग्रन्थ तथा अनुपलब्ध पाण्डुलिपियां सुरक्षित स्थानों में भेजी गई थीं, पश्चिमी जर्मनी ने आज तक वे ज.ज.ग. को नहीं लौटाये हैं, जो इनका सही हकदार है। इस पुस्तकालय के प्राच्य तथा पाण्डुलिपि विभाग में अनेक अमूल्य ग्रन्थ थे। दूसरे अन्य पुस्तकालय बमबारी के कारण तबाह हुये। स्वाभाविक बात है कि इन कठिनाइयों के कारण ज.ज.ग. में हमें प्राच्य-विद्या अनुसन्धान लगभग शून्य से आरंभ करना पड़ा। इस बृहत्त कार्य में हम ज.ज.ग. की समाजवादी सरकार के आभारी हैं जिसने हमें इस नव निर्माण में दिल खोल कर आर्थिक तथा अन्य सहायता प्रदान की। अन्त में इस तथ्य की ओर संकेत करना अनुचित न होगा कि उक्त महान और महत्वपूर्ण अनुसन्धान कार्य ज.ज.ग. के समाजवादी निमार्ण का एक अभिन्न अंग है जो योग्य विद्वानों तथा शोधार्थियों के हाथों में निरन्तर बिना किसी बाधा के विकास के पथ पर बढ़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्मिलन

(पृष्ठ ९ का शेष)

लाता। ...श्रीमती बर्गनेर ने चुपचाप आण्द्रे की ये बातें सुन लीं। इसके बाद प्रोत्साहन देते हुये वह बोली: "बेटा, चिन्ता न करो। मैं इन सब चीज़ों का प्रबंध कर दूंगी।" बूढ़ी मां ने अपने हाथों से सीपिरो कर आण्द्रे का वेष तैयार किया। अपने भोजन से खाद्य सामग्री बचाकर उसको दे दी, और छाती से लगा कर आण्द्रे को विदा किया आशीर्वाद के साथ मानो अपने बेटे को विदा कर रही हो। उस दिन हर्ष और विषाद के मिले-जुले आंसू वृद्धा के गालों पर ढुलक गये थे!...नाज़ी जासूसों को उन्होंने तब तक भुलावे में डाल दिया जब तक आण्द्रे उनकी क्रूर पकड़ से काफी दूर निकल चुका।

लेकिन एक दिन सहसा आण्द्रे के एक बन्दी मित्र ने श्रीमती बर्गनेर के कान में धीरे से कहा: "आण्द्रे को पकड़ कर वे वापस लाये हैं।" वृद्धा मां का कलेजा धक् से रह गया। "यह सब कैसे हुआ," आतुर मां ने पूछा। बन्दी ने जवाब दिया: "फासिस्त पुलिस ने उसको सार-ब्रूइशकेन में पकड़ लिया। उसने स्वयं थोड़ी सी ग़फलत की थी इसीलिये पकड़ा गया। अब उसको यहां मरने के लिये भेज दिया गया है। वह इतना दुबला हो गया है कि मात्र ढांचा रह गया है। वह अपनी टांगों पर खड़ा भी नहीं रह सकता!"

लेकिन श्रीमती बर्गनेर ने उसी समय क़सम खाई: "मैं उसको मरने नहीं दूंगी, कभी नहीं।" तीन हफ्तों तक बूढ़ी मां, दलिया और फलों का रस बन्दी शिविर में गुप्त रूप से पहुंचाती रही। मां की ममता और इस स्वास्थ्यप्रद भोजन ने आण्द्रे को बल पहुंचाया मानसिक भी और शारीरिक भी!

सन् १९४५ का मई मास! ...सोवियत रूस की विजयी लाल सेना फासिस्त अत्याचार और नाज़ीवाद को रौंदती, पराजित करती हुई बन्दी शिविर तक पहुंची। आण्द्रे अपने अन्य बन्दी बन्धुओं के साथ विजयी सेना के स्वागत के लिये दौड़ पड़ा। वे अब स्वतंत्र हो चुके थे फासिज़्म की क्रूर जकड़ से! ...फिर जब वह अपने देश, फ्रांस लौटने लगा तो वृद्धा मां से बिछुड़ते समय उसने कहा था: "जब आप नई और स्वस्थ जर्मनी का निर्माण करेंगी तो मैं आप से मिलने आजाऊंगा!"

उस दिन के बाद पूरे १७ साल गुज़र गये, लेकिन आण्द्रे ग्रिगेरी अपना वचन न भूल सका। इस बीच में वह फ्रांस के मौन्ट्रेयल नामक शहर का मेयर बन चुका था और यूरोप के नागरिक राज-नीतिज्ञों के एक सम्मेलन में शामिल होने के लिये ड्रेसडेन आया। जर्मनी की एक बूढ़ी मां को दिया हुआ वचन अब भी उसको याद था? एक दिन सम्मेलन से निवृत्त होकर वह ग्लाशूट्टे पहुंच गया उसी वचन को पूरा करने के लिये।

पुरानी स्मृतियों को ताज़ा किया गया। श्रीमती बर्गनेर बोलीं: "उन बीते दिनों में, नई व्यवस्था और नये जीवन की बातें हम गुप्त रूप से तथा आतंक के वातावरण में किया करते थे। लेकिन आज हम एक शांतिपूर्ण नया जीवन बना चुके हैं फासिस्तों को दफनाकर"। निकट ही खेलते हुये अपने पौत्र की ओर संकेत करते हुये वृद्धा दादी बोली: "हम अपने तथा दुनिया के बच्चों को कदापि युद्ध की ज्वालायें देखने न देंगे अब...कदापि नहीं!"

"हां कदापि नहीं युद्ध होने देंगे हम," आण्द्रे ग्रिगेरी ने वृद्धा मां के दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुये कहा। हाथों के इस मिलन में, फ्रांस और ज.ज.ग. के हृदय मिल गये। दो देशों के इन दो साधारण व्यक्तियों के ये पुनीत उद्गार विश्व की अखिल शांतिकामी जनता के उद्गारों के प्रतीक हैं। ...

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता....

(पृष्ठ १८ का शेष)

वेंडर को इसलिये नौकरी से हाथ धोकर ज़बरदस्ती अवकाश ग्रहण करना पड़ा क्योंकि उन्होंने प. जर्मनी के शस्त्रीकरण की कुटिल नीति का विरोध तथा ज.ज.ग. को मान्यता प्रदान करने वाले सही विचारों को व्यक्त करने का दुस्साहस किया था।

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो. (श्रीमती) रेनेटे रीमेख को, डूस्सेलडार्फ के सांस्कृतिक मंत्री ने विद्यार्थियों की परीक्षा लेने के अधिकार से वंचित किया और उनको विश्वविद्यालय की नौकरी से अलग करवा दिया गया।

इसी प्रकार, बवेरिया के सांस्कृतिक मंत्री ने, म्यूनिख के प्रोफेसर डा. साल्लर तथा वूईज़बुर्ग के प्रोफेसर शिनाइडेर के खिलाफ एक जांच बिठाई। मारबुर्ग के प्रो. एबेनड्रोथ के साथ भी ऐसा ही हुआ।

जांच, मुकदमों तथा आतंक की यह सूची बहुत लम्बी है। प. जर्मनी के किसी भी विश्वविद्यालय के जिस भी प्राध्यापक या प्रोफेसर ने एडेनाअर की नीति के खिलाफ मुंह खोला, तुरन्त उसका मुंह आंतक तथा दबाव के डण्डों से बन्द कर दिया जाता है। लेकिन इस प्रकार का दमन-चक्र किसी देश के भय और निर्बलता का ही सूचक है उसके नैतिक-बल या सुरक्षा का द्योतक नहीं। एक ऐसी समाज-व्यवस्था जो डण्डों तथा दमन के आधार पर टिकी हो अधिक समय तक टिक नहीं सकती।...समाज-वादी समाज व्यवस्था के नैतिक तथा मानवीय आदर्शों के आगे, इस क्रूर व्यवस्था को, एक न एक दिन झुकना ही पड़ेगा। इसीलिये पूंजीवादी प. जर्मनी को त्याग कर, मैंने समाजवादी ज.ज.ग. को अपना घर बना लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनता का राष्ट्रीय कार्यक्रम

(पृष्ठ ४ का शेष)

काम भी करना पड़ता है। . . . पश्चिमी जर्मनी में ऐसे किसानों की अच्छी खासी संख्या है जो यह सोचते हैं कि यहां, ज.ज.ग. में, किसानों से ज़मीनें छीनी गई हैं और अब ज़मीनों पर उनका कोई अधिकार नहीं है। लेकिन काश, प. जर्मनी के अधिक किसान इस कांग्रेस में यहां के सहकारी खेतों की किसान औरतों की उत्साहपूर्ण बातें सुनते तो उनकी आंखें खुल जाती। ज.ज.ग. के मेरे सहकर्मी किसान बन्धुओं ने जिस गंभीरता, आत्म-विश्वास तथा गौरव से अपनी सफलताओं, असफलताओं तथा कठिनाइयों का इस कांग्रेस में बखान किया, मुझे स्वयं उस पर आश्चर्य हुआ।

"मेरी एक इच्छा है जो मैं यहां अभिव्यक्त किये बिना न रह सकूंगा : आप लोग सहकारी खेतों में जो शानदार काम कर रहे हैं, कृपया पश्चिमी जर्मनी में, रेडियो तथा टेलिविजन द्वारा उन तथ्यों को आप अधिक से अधिक प्रसारित कीजिये। इस तरह, ज.ज.ग. के खिलाफ फैलाये गये अनेक भ्रम तथा पूर्वाग्रह नष्ट होंगे, और पूर्वी तथा पश्चिमी जर्मनी के हम कृषकों को एक दूसरे के निकट आने का रास्ता खुद ही मिल जायगा। . . ."

कांग्रेस के सम्मुख भाषण करते हुये एक ईसाई पादरी, डा. क्रिस्टा योहान्नसेन ने निम्न विचार व्यक्त किये : "मुझे इस बात का अपार हर्ष है कि मैं (ज.ज.ग. की) क्रिसचियन डेमोक्रैटि यूनियन के सदस्य और एक ईसाई के रूप में यहां खड़ा हूं। यहां जो क्रांतिकारी परिवर्तन लाये गये, उनसे मुझे भी काफी उत्साह और बल मिल गया है, क्योंकि इस सामाजिक परिवर्तन में मैंने सक्रिय भाग लिया है। ऐसा देश ही (ज.ज.ग.) ईसाई धर्म का सच्चा घर है जहां सब लोग मिल-जुल कर शांति तथा समानता के लिये काम कर सकें, न कि वह देश जहां शस्त्रास्त्रों को पूजा जाता है और हर क़दम युद्ध की तैयारी के लिये उठाया जाता है। . . ."

मंत्रिपरिषद् के उपाध्यक्ष, डा. ग्रेटे विट्टकोवसकी ने अपने भाषण में कहा : "यह सर्वविदित बात है कि पिछले वर्ष मौसम बहुत ही खराब होने के कारण फसलों को यहां बहुत हानि पहुंची। इस हानि से कृषि सहायक पंशुओं को भी ठीक से चारा नहीं मिल सका। वसन्त के आगमन पर हम आशा करते थे कि चारे-घास की स्थिति सुधर जायगी, लेकिन वसन्त में भी बहुत ठंड पड़ी। परिणामस्वरूप हरा चारा काफी देर से उपलब्ध हुआ जिसके कारण दूध, गोश्त, अण्डों आदि के उत्पादन में कमी हो गई। स्पष्ट है कि इस कमी ने लोगों के लिये कठिनाइयां पैदा कीं। . . .

"सन् १९६१ में ज.ज.ग. के निवासियों ने, सन् १९५८ की तुलना में, औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुओं, अर्थात टेलिविजनों, कपड़े धोने की मशीनों, रिफ्रिजिरेटरों आदि पर लगभग ५ अरब मार्क अधिक खर्च किये। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक परिवार ने, ऐसी वस्तुओं पर औसतन १००० मार्क (१ मार्क = १.१२ नये पैसे) की अतिरिक्त रक़म खर्च की। . . आज ज.ज.ग. में १६ लाख टेलिविजन हैं, अर्थात हर चौथे परिवार में एक एक टी. वी. सेट है। दुकानों में विविध फैशनों के कपड़े इफरात में मिलने लगे हैं, और सन् १९५८ से आज तक, केवल बच्चों के कपड़े की सप्लाई में ५० प्रतिशत वृद्धि हुई है। . . .

"एक श्रमिक या कर्मचारी की आमदनी सन् १९५७ में सभी कर काटकर ५९० मार्क से बढ़कर, सन् १९६१ में ७७८ मार्क तक पहुंची। ज.ज.ग. में कम आमदनी वाले समूहों की संख्या दिन प्रतिदिन घट रही है और वे अधिक आमदनी वाले क्षेत्रों में आने लगे हैं। उदाहरण के लिये सन् १९५७ में, ज.ज.ग. के ३७.३ प्रतिशत परिवारों की मासिक आमदनी ५०० मार्क से कम थी। सन् १९६१ में यह संख्या घटकर २०.३ प्रतिशत तक पहुंच गई। . . . ८००० और १००० मार्क मासिक आमदनी वाले परिवारों की संख्या, इसी अवधि में, ११.२ प्रतिशत से बढ़कर २२.४ प्रतिशत हो गई। . . .

"इसके अलावा, सरकार भी शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यों, स्वास्थ्य तथा समाज कल्याण की योजनाओं पर करोड़ों मार्क हर साल अलग से खर्च करती है। सन् १९५१ में वहां प्रति व्यक्ति पर ४०० मार्क खर्च किये गये, सन् १९६१ में यह रक़म बढ़कर १००० मार्क हो गई। (पश्चिमी जर्मनी ने अपने लोगों पर, प्रति व्यक्ति केवल ५८२ मार्क खर्च किये सन् १९५६ में), इसके अतिरिक्त गैस, बिजली तथा परिवहन, प. जर्मनी की तुलना में बहुत सस्ते हैं। . . .

"कठिनाइयों तथा असफलताओं की चुनौती को हमारा एक-मात्र उत्तर है औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन को योजनाओं के द्वारा निरंतर बढ़ाते रहना। . . ."

रोस्टाक विश्वविद्यालय के रेक्टर, प्रो. रूडोल्फ शोरिख ने दो जर्मन राज्यों में दो भिन्न शिक्षा पद्धतियों का उल्लेख करते हुए कहा : "दोनों जर्मन राज्यों में विश्वविद्यालय पहले तो समान वातावरण में विकसित होते रहे, लेकिन अब उनके रास्ते एकदम अलग हो गये हैं। हमारे स्कूलों तथा कालेजों में जहां शिक्षा का उद्देश्य मानवीय मूल्यों की स्थापना करना तथा उनको विस्तार देना है, वहां पश्चिमी जर्मनी में शिक्षा संस्थायें धनी वर्ग की बपौती हैं और उनके ही हिताहितों से वहां की शिक्षा व्यवस्था भी जुड़ी हुई है। इसका प्रमाण है ये आंकड़े : पश्चिमी जर्मनी में हर १०,००० व्यक्तियों पर ३७ विद्यार्थी हैं, लेकिन ज.ज.ग. में इसी संख्या पर ६७ विद्यार्थी हैं। सन् १९२८-२९ में रोस्टाक विश्वविद्यालय में कुल १५० विद्यार्थी थे जिनमें से केवल ७ श्रमिक वर्ग के थे। इसके विपरीत आज इस विश्वविद्यालय में ४६८० विद्यार्थी हैं जिनमें से ५० प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी किसान तथा मजदूर परिवारों के हैं। . . .

"अभी हमारे शिक्षा संस्थानों को बहुत कुछ करना बाकी रह गया है, लेकिन दो उपलब्धियां अब तक हम निश्चित रूप से प्राप्त कर चुके हैं : विज्ञान को और विद्यार्थियों को, हम अपनी नई सामाजिक व्यवस्था में दृढ़ रूप से संस्थापित करने में सफल हो चुके हैं। विज्ञान तथा ज्ञान लोगों की भलाई के लिये है, उनके संहार के लिये नहीं। . . ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

११ वर्ष ७
नवम्बर
१९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ व्यापार तथा जर्मनी में आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सभी तरह की सूचनाएं यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :

दी

ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेशन
आफ़ दी
जर्मन डेमोक्रेटिक
रिपब्लिक

१२/३९, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली
पोस्ट बाक्स ३२०

फोन: ३४२०६, ३१०४१ केबल्स: हावदिन, नयी दिल्ली

शाखायें :

मिस्त्री भवन,
१२२, दिनशा वाचा रोड, बम्बई

फोन: २४५०५१, २४५०५२ केबल्स: हावदिन, बम्बई

फ़ैराडे हाउस,
पी-१७, मिशन रो एक्सटेन्शन, कलकत्ता

फोन: २३५५०४, २३५५०५ केबल्स: कलहावदिन

४, वल्यमाल रोड,
वेपेरी, मद्रास

फोन: ६१३१४ केबल्स: हावजर्मन

वर्ष ७, अंक ११ २० नवम्बर, १९६२

इस अंक में

	पृष्ठ
भारत और ज. ज. ग. में नई व्यापार सन्धि	३
तटस्थ देशों के साथ व्यापार	४
जनवाद के बढ़ते चरण	
धार्मिक साहित्य का प्रकाशन	५
एक लघु विचार का राष्ट्रव्यापी रूप	६
मधुर संस्मरण	८
गेरहार्ट हौप्टमन्न की याद में	१०
मुर्दे ज़िन्दा हैं	१२
गृहस्थी नारियों के लिए अध्ययन की सुविधाएं	१३
तथ्य और आंकड़े	१५
जर्मनी की ख़बरें	१६
चिट्ठी पत्री	१९

मुख पृष्ठ :

ज ज.ग. की तेरहवीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर, वहां अध्ययन करने वाले भारतीय विद्यार्थियों ने ज.ज.ग. की सरकार को बधाई दी। चित्र में, ज.ज.ग. में भारतीय नागरिकों की मेलजोल कमेटी के विद्यार्थी प्रतिनिधि, ज.ज.ग. के प्रधान मंत्री, विल्ली स्टोप (दायें से छट्ठे) उप विदेश मंत्री, सेप्प श्वाव (दायें से तीसरे) तथा राज्य सचिव एनटन प्लेनिकाव्सकी (बायें कोने पर) के साथ खड़े हैं।

अन्तिम पृष्ठ :

रूसियों का यह पुल आपको, ज.ज.ग. के सबसे ऊंचे पर्वत फिचटेलबर्ग तक ले जा सकता है। नीचे ओबरबीसेनटाल है—स्की प्रतियोगिताओं का सुप्रसिद्ध स्थान।

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३९ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत और ज. ज. ग. में नई व्यापार सन्धि

भारतवर्ष तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, लम्बी अवधि वाली व्यापार और भुगतान सन्धि, कई दिनों की बात चीत के बाद, अक्तूबर, सन् १९६२ में, एक वर्ष के लिये बढ़ा दी गई। इसके अतिरिक्त, सन् १९६३ में, दो देशों में वस्तुओं के आदान प्रदान से संबंधित संधि पर भी दस्तखत हो गये। बातचीत तथा अन्य सभी कार्रवाई, ज.ज.ग. की राजधानी, बर्लिन में हुई। दोनों देशों ने आपस के व्यापार तथा सहयोग को निरन्तर बढ़ाते रहने की आवश्यकता को निर्विवाद स्वीकार किया।

ज. ज. ग. की ओर से वहां के विदेश व्यापार मंत्रालय के अध्यक्ष, श्री हर्बर्ट मेयर, और भारत की ओर से, वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय के सहसचिव, श्री एस. वोहरा ने संधि से संबंधित दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किये।

पिछले दो वर्षों में, ज. ज. ग. तथा भारत के बीच वस्तुओं का आयात निर्यात काफी परिमाण में, और दोनों देशों के हितानुकूल बढ़ गया है। ज. ज. ग., भारत को निम्न वस्तुएं निर्यात करता है: मशीनी औज़ार, छापाखाने, कपड़ा बुनने की मशीनें, विद्युत तकनीकी सामान, छोटे पुर्जे बनाने के यंत्र और रासायनिक उत्पादन। बदले में, ज.ज.ग., भारत से ये चीजें आयात करता है: प्रोटीनयुक्त चारा, पटसन के उत्पादन, मसाले, अखरोट, कच्चा लोहा, अभरक की वस्तुएं, तम्बाकू, चाय और काफी इत्यादि।

पिछले कई वर्षों से, ज. ज. ग. अपनी वस्तुओं के निर्यात कार्यक्रम में, ऐसी अनेक वस्तुओं को सम्मिलित कर रहा है जो भारत के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हों। इसके अलावा भारत के विकासशील उद्योगों में तकनीकी सहयोग प्रदान करने, और इस विषय में भारत को अपनी टेकनालोजिकल प्रगति से परिचित करने के लिये, इस बात का फैसला किया गया है कि ज. ज. ग., सन् १९६३ में भारत में अपने तकनीकी सामान की प्रदर्शनियां आयोजित करेगा।

जहां तक भारत के निर्यात का सवाल है, ज.ज.ग. ने इस बात का आश्वासन दिया है कि वह भारत के निर्यात होने वाली वस्तुओं की ओर अत्यधिक ध्यान देगा। इसीलिए भारत की कई अन्य वस्तुओं को निर्यात सूची में रखा गया है। उदाहरण के लिये सन् ६२ में, उल्लिखित वस्तुओं के अतिरिक्त, ज. ज. ग. भारत से विद्युत बैटरियां, टीन के डिब्बों में बंद मछली, किरमिच का बिछाने का कपड़ा आदि भी आयात करेगा। इसी प्रकार, सन् १९६३ में, प्रथम बार, भारतवर्ष ज. ज. ग. को इंजीनियरी वस्तुओं का निर्यात करेगा। इन वस्तुओं को, यदि भारत, ज.ज.ग. के लइपजिक व्यापार-मेलों में प्रदर्शित करता रहेगा तो उसको बहुत लाभ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तटस्थ देशों के साथ व्यापार

ओटो ग्रूनेवाल्ड

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अनेक यूरोपीय तथा अफ्रो-एशियाई देशों के साथ अपने व्यापारिक संबन्ध जोड़े हैं। इन सम्बन्धों का मुख्य आधार है शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, एक दूसरे का हित और समानता। ज.ज.ग. की व्यापार नीति में, तटस्थ देशों के साथ व्यापार बढ़ाने को एक प्रमुख तथा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पिछले कुछ वर्षों में इन देशों के साथ ज.ज.ग. के व्यापारिक आदान प्रदान के परिणाम में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

ज. ज. ग. के विदेश व्यापार के लिये, एशिया तथा अफ्रीका के नवजात, तटस्थ राष्ट्रों का विशेष महत्व है। पिछले चन्द वर्षों में इन देशों के साथ वस्तुओं के आदन प्रदान को काफी हद तक बढ़ाया गया। ज. ज. ग. तथा इन देशों के बीच में सरकारी स्तर पर जो व्यापार संधियां हुई, वे इस महत्वपूर्ण वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। पिछले वर्षों में ज. ज. ग. ने कई तटस्थ देशों की सरकारों के साथ व्यापारिक समझौतों पर दस्तखत किये। इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं: भारत, अरब गणराज्य, घाना, गिनी, माली, मराक्को तूनीसिया, सूडान, यमन, सीरिया, लेबेनान, इराक़, हिन्देशिया, बर्मा, श्रीलंका और कम्बोडिया। इन समझौतों की अवधि पांच वर्ष की है और ग्राहक देशों के आयात तथा निर्यात की संभावनायें काफी अच्छी हैं।

ज.ज.ग., लम्बी अवधि वाली व्यापारिक संधियों तथा भुगतान के हक़ में है क्योंकि इस प्रकार की संधियां वस्तुओं के आदान प्रदान में सहायक सिद्ध होती हैं।

ज.ज.ग. तथा तटस्थ राज्यों के बीच उल्लिखित व्यापारिक समझौते तथा इन राज्यों में ज.ज.ग. के व्यापार दूतावासों का स्थापन इस बात का प्रमाण है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की न्यायपूर्ण तथा शांतिप्रिय व्यापार नीति, एफ्रो-ऐशियाई देशों में विशेषतय: सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है।

पिछले चन्द वर्षों में, ज. ज. ग. तथा एफ्रो-एशियाई देशों के बीच उक्त व्यापारिक संबंध केवल वस्तुओं के आदान-प्रदान तक ही सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि ये संबन्ध अब आर्थिक उपयोग का रूप धारण कर चुके हैं। इसका प्रमाण यह तथ्य है कि हाल ही के कुछ वर्षों में, ज. ज. ग. ने, भारत, अरब गणराज्य, गिनी, सीरिया और बर्मा को न केवल पूरे के पूरे कारखाने निर्यात किये हैं बल्कि उसने अपने तकनीकी विशेषज्ञ तथा इंजीनियर भी भेजे इन देशों की सहायता करने के लिये। इन विशेषज्ञों ने जहां कारखानों को लगाने और चालू करने में मदद दी वहीं उन्होंने स्थानीय लोगों को तकनीकी दृष्टि से तैयार भी किया। इसके अलावा, ज.ज.ग. ने इन देशों के विद्यार्थियों को अपने देश में तकनीकी प्रशिक्षण देने की हर प्रकार की सुविधा प्रदान की।

ज. ज. ग. ने, बर्मा को एक ऐसा कारखाना निर्यात करके वहां संस्थापित किया जो चावल की भूसी से तेल निकालकर उसका शोधन करता है। यह नया कारखाना धान की भूसी से कच्चा तेल और जैतून का तेल पैदा करता है। इससे बर्मा काफी विदेश मुद्रा बचा लेता है, क्योंकि पहले उसको उक्त दोनों तेलों का आयात करना पड़ता था। इस कारखाने के अतिरिक्त ज. ज. ग. ने बर्मा को, सीमेन्ट बनाने का एक कारखाना भी निर्यात किया है, जिसका दैनिक उत्पादन ४०० टन है। अब बर्मा को सीमेन्ट का आयात नहीं करना पड़ता।

ज.ज.ग. ने कई अन्य एफ्रो-ऐशियाई देशों को भी इस तरह की आर्थिक सहायता तथा सहयोग दिया है। कुछ धृष्टव्य उदाहरण ये हैं: हिन्देशिया को चीनी बनाने का एक कारखाना दिया गया; अरब गणराज्य में एक भारी बिजली घर की स्थापना की गई, और सूती कपड़े के कारखाने दिये गये; गिनी को छापेखाने तथा सीरिया को एक सीमेन्ट बनाने की फैक्ट्री निर्यात की गई। इसी प्रकार भारत की 'एनफील्ड इण्डिया लिमिटेड' नामक फर्म को मोटर साइकल बनाने के लिये आवश्यक सामान तथा औज़ार सप्लाई किये गये। इसके अतिरिक्त, भारत की एक अन्य फर्म, 'गोदरेज एण्ड बोयसे' के साथ एक समझौता हुआ जिसके अनुसार यह फर्म

(शेष पृष्ठ १५ पर)

ग्रीष्म ऋतु में, अरब गणराज्य के उद्योग मंत्री, श्री सिद्दीकी ने ज. ज. ग. द्वारा भेजे गए एक सूती कारखाने का 'केना' में उद्घाटन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

धार्मिक साहित्य का प्रकाशन

गेरहार्ड डेसिक

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हर प्रकार का साहित्य काफी मात्रा में प्रकाशित होता है, और हर वर्ष साहित्य प्रकाशन की मात्रा में वृद्धि होती जा रही है। ईसाई धर्म से संबंधित साहित्य भी इसका अपवाद नहीं। इस धार्मिक साहित्य का प्रकाशन, मुख्यतयः ईसाइयों के गिरजाघरों से जुड़े हुये, विशेष प्रकार के प्रकाशन-गृहों द्वारा होता है। इसके अतिरिक्त, ज.ज.ग. के ईसाइयों के प्रमुख दल 'क्रिस्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन' के प्रकाशत-गृह भी ईसाइ धर्म का साहित्य प्रकाशित करते हैं।

ईसाई धर्म के कई मत-मतान्तर हैं। इनमें से मुख्य मतों के अपने-अपने गिरजे तथा प्रकाशन-गृह हैं। उदाहरण के लिये, इवांजलिक मत का 'इवांजलिक प्रकाशन गृह', सन् १९४६ में, सोवियत सैनिक प्रशासन की प्रेरणा से, स्थापित किया गया। इसी प्रकार, आइसेनाख में 'इवांजलिक बाइबल सोसाइटी' और इसका वार्टबुर्ग प्रकाशन-गृह, ईसाई धार्मिक साहित्य प्रकाशित करता है। ....कैथोटलिक मत के गिरजा-घरों का लइपज़िक में 'सैंट बेन्नो' नामक एक बहुत बड़ा प्रकाशन-गृह है जो सन् १९५१ में स्थापित किया गया।

'क्रिस्चियन डिमोक्रेटिक यूनियन', ज.ज.ग. की पंचदलीय सरकार का एक दल है। इसके दो बड़े-बड़े प्रकाशन-गृह हैं: बर्लिन यूनियन प्रकाशन-गृह और लाइपज़िक में स्थित 'कोयलर तथा अमेलांग' नामक प्रकाशन-गृह। क्रि.डि.यू. के ये प्रकाशन-गृह किसी एक मत का धार्मिक साहित्य नहीं छापते, वरन् यहां ऐसा ईसाई साहित्य छापा जाता है जो मतमतान्तरों से ऊपर उठकर, ज.ज.ग. के तमाम ईसाइयों की धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्परा के गौरव को उजागर करता है तथा वर्तमान परिस्थितियों में, देश तथा विश्व के प्रति उनको अपने उत्तरदायित्व से सचेत करता है। गिरजों के सभी प्रकाशन-गृह भजन तथा भक्ति-गीतों के संकलन, धार्मिक कृतियां, धार्मिक संगीत तथा कला संबंधी रचनायें आदि प्रकाशित करते है।

ईसाई साहित्य को प्रकाशित करने वाले, उल्लिखित सभी प्रकाशन-गृह, आपस में सहयोग देते रहते हैं। उदाहरण के लिये, ज.ज.ग. में, लाम्बारेने के एक डाक्टर तथा मानव प्रेमी, स्व० एलबर्ट श्वाइटज़ेर पर, कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से श्वाइटज़ेर की आत्म-कथा 'मेरा जीवन और विचार' लइपज़िक के कोइलर तथा एमलांग नामक प्रकाशन गृह ने छापी। इसी प्रकार, 'इवांजलिक प्रकाशन गृह' ने श्वाइटज़ेर के बाल्य-काल के संस्मरण प्रकाशित किये। 'बर्लिन यूनियन प्रकाशन गृह' ने गेराल्ड गोइट्टिंग की 'एलबर्ट श्वाइटज़ेर से मिलन' नामक तस्वीरों की पुस्तक छापी। लइपज़िक के एक अन्य प्रकाशन गृह ने, विश्व-प्रसिद्ध जर्मन संगीतकार योहान बाख पर श्वाइटज़ेर द्वारा लिखित एक ग्रन्थ प्रकाशित किया।

ज. ज. ग. में, पुरानी और नई पीढ़ी के एसे कई उपन्यासकार, कहानीकार, कवि आदि हैं जो ईसाई धर्म के सिद्धान्तों से प्रभावित हैं और जो धर्म को ही साहित्य का मूलाधार मानते हैं। ऐसे लेखकों में हांस फ्रांक, कूर्ट एर्नाल्ड, क्रिस्टा योहान्नसेन, रोज़मेरी शूडर, हान्ना हाइडेक्राज़े, गोट्टफ्रीड उनटरडोरफेर, कार्ल राइनहौल्ड डोडेरलेन, आटो रीडेल और बोडो कूयेन की कृतियों को ज.ज.ग. के काफी लोग पढ़ते हैं। पश्चिमी जर्मनी के ईसाई लेखकों की रचनायें भी, ज.ज.ग. के पाठकों तक पहुंचाई जाती हैं। पोलैंड के दो ईसाई लेखकों, जोफिया कोस्साक और जान डोब्राखज़िनस्की की कृतियां, ज.ज.ग. में बहुत लोकप्रिय हैं।

'कोइलर तथा एमेलांग' प्रकाशन गृह ने हाल ही में, 'ईसाई तथा मार्क्सवादी नैतिकता' नामक महत्व कृति दो भागों में प्रकाशित की है। ··· धार्मिक कला कृतियों के क्षेत्र में बर्लिन के 'यूनियन प्रकाशन गृह' ने डा० ओनाख की एक पुस्तक 'प्रतिमायें' बहुत सुन्दर रूप सज्जा के साथ प्रकाशित करके एक नवीन देन दी है। ईसाई धर्म से संबंधित १५१ चित्रों की यह पुस्तक ज. ज. ग. में बहुत ख्याति प्राप्त कर चुकी है। इसी प्रकार, ईसाई धर्म के महान धार्मिक ग्रन्थ बाइबल से सम्बन्धित, विश्वविख्यात चित्रकार जोज़ेफ हेजेनबार्थ के चित्रों का 'श्वाश्वत आदर्श' नामक संकलन भी बहुत लोकप्रिय है।

'बर्लिन अकादमी प्रकाशन-गृह,' बाइबल के विभिन्न पाठ तथा प्राचीन ईसाई साहित्य के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री प्रकाशित करता है। जे० सी० हेनरिख के प्रकाशन गृह ने पांच भागों पर आधारित 'जर्मन गिरजे का इतिहास' छापा है। बाइमर के एक प्रकाशन-गृह ने धार्मिक संहिता का इतिहास छापना शुरू किया है। हाले के 'मैक्स नीमेयर' के प्रकाशन गृह ने धर्मशास्त्र के क्षेत्र में शोधकार्य करना आरंभ किया है। इसी प्रकार मार्क्कलीबंग का एक प्रकाशन गृह केवल धार्मिक कला से सम्बन्धित पुस्तकें ही छापता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ज.ज.ग. में धार्मिक साहित्य को न केवल प्रकाशन की सभी सुविधायें तथा स्वतंत्रता ही प्राप्त है, बल्कि यहां के जनजीवन में भी इस प्रकार के साहित्य को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लघु विचार का राष्ट्रव्यापी रूप

मारगिट क्नोटे

मागडेबुर्ग-आन-एलबे नामक क्षेत्र, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक नगर है। भारी मशीनें बनाने का एर्नस्ट टेलमन्न नामक सरकारी कारखासा यहां के सबसे बड़े कारखानों में से एक है। इसी कारखाने के एक वर्कशाप का 'जोज़ुफ लाण्डा' नामक तरुण फोरमैन, यहां लगी सोलह मशीनों को चालू रखने की व्यवस्था करता है। अन्य बड़े कारखानों की तरह यह कारखाना भी तीन पारियों में काम करता है, और फोरमैन जोज़ुफ़ इस बात का निश्चय करता है कि कारखाने की मशीनें, रात की पारी में विश्राम न लें, क्योंकि इस तरह उत्पादन में कमी हो जायेगी।

कारखाने में, अपने अनुभाग का काम इत्यादि देखकर और उसको तक़सीम करके, आज यह नौजवान फोरमैन अपने परिवार में प्रसन्न चित्त होकर जाता है। लेकिन एक साल पहले, कारखाने के द्वार में प्रवेश करते ही वह बहुत परेशान तथा चिंतित हो जाता था। इस चिन्ता के कई कारण थे। पहला कारण तो यह था कि उसके अनुभाग की सोलह मशीनें तकनीकी दृष्टि से एकदम नवीनतम ढंग की और बहुत कीमती थीं। इसलिये उनका पूरा-पूरा उपयोग करना तथा उनसे क़ीमत वसूल करने के लिये उन नई मशीनों को चौबीसों घण्टे चालू रखना, अत्यन्त आवश्यक काम था।

ऐसा करने के लिये जोज़ुफ लाण्डा को कुशल मज़दूरों की पर्याप्त संख्या की आवश्यकता थी। लेकिन एसे मज़दूरों का नितान्त अभाव था, क्योंकि दूसरे महायुद्ध में बहुत से ऐसे लोग मारे गये थे। इसके अलावा, जोज़ुफ लाण्डा के अनुभाग में काम करने वाले तरुण मज़दूरों में से कुछ मज़दूर स्वेच्छा से ज.ज.ग. की 'राष्ट्रीय जन सेना' में कुछ समय के लिये भरती हुये थे। परिणाम स्वरूप, सोलह मशीनों को चलाने के लिये, फोरमैन जोज़ुफ के अनुभाग में केवल २५ मज़दूर काम कर रहे थे। लेकिन गर्मियों के दिनों में स्थिति और भी चिन्ताजनक हुई, क्योंकि इन २५ मज़दूरों में से भी तीन श्रमिक अपनी छुट्टियां मनाने के लिये, विश्राम गृहों में आराम करने चले गये। इस प्रकार, मशीनों तथा उत्पादन को चालू रखने की स्थिति काफी गंभीर बन गई। न केवल फोरमैन लाण्डा ही, बल्कि उनके अनुभाग में काम करने वाले अन्य मज़दूर भी इस स्थिति से चिन्तित हो उठे।

इस गंभीर समस्या को सफलतापूर्वक हल करने के लिये जोज़ुफ लाण्डा तथा उसके अन्य साथियों ने अपने मज़दूर संगठन 'फ्री जर्मन ट्रेड यूनियन' की सहायता ली। उनकी यूनियन इस संगठन का एक अंग है। वे जानते हैं कि उनके समाजवादी राज्य में, मज़दूरों का जीवन स्तर तथा उनके अन्य हित इस बात पर आधारित तथा सुरक्षित हैं कि सरकारी कारखानों में उत्पादन बढ़ता रहे। वह किसी भी हालत में घटे नहीं।

एक इतवार को, उक्त मज़दूर संगठन के मन्त्री ने, फोरमैन लाण्डा के अनुभाग के श्रमिकों को, बातचीत के लिये आमन्त्रित किया कारखाने के क्लब में। वहां दूसरे कारखाने के अन्य अनुभवी मज़दूर भी बुलाये गये थे। बैठक आरम्भ हुई और मज़दूरों में काफी गर्मागर्म बहस हुई तीन घण्टों तक। घरों पर, प्रतीक्षा करता हुआ स्वादिष्ट खाना भी ठण्डा हो गया। वे उसको भूल गये बहस की गर्मी में। .....

फोरमैन लाण्डा इस मीटिंग में पूरी तरह तैयार होकर आया था। तात्पर्य यह कि उसने ऐसे सभी आंकड़े साथ लाये थे जिनसे यह पता चलता था कि १६ मशीनों में से कौन सी मशीन कितने समय तक चलती है और कितने समय तक बेकार रहती है। इन आंकड़ों के आधार पर उसने मीटिंग में यह सुझाव सामने रखा कि बिना अतिरिक्त शारीरिक श्रम किये एक मज़दूर (बारी-बारी से) दो मशीनें चला सकता है। जोज़ुफ लाण्डा के अन्य मज़दूर साथी इतनी तैयारी के साथ नहीं आये थे। उनके मन में, समस्या को हल करने के तरीक़े थे अतिरिक्त समय देकर काम करना अथवा इतवार के दिन भी काम करना। दो मशीनों को चालू रखने के, एकदम नवीन ढंग की उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। इसलिये फोरमैन लाण्डा के उक्त सुझाव के लिए वे, मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। ऐसी स्थिति में इस सुझाव पर ज़बरदस्त बहस का होना एक स्वाभाविक बात थी। यह सुझाव एकदम नया और क्रान्तिकारी था जिसको लागू करने के लिये, काम करने का ढंग एकदम बदलना पड़ता।

कुछ साथी इस आमूल परिवर्तन के हक़ में नहीं थे। उनका ख़याल था कि ऐसे मौलिक परिवर्तन उनके अधिकार से परे हैं। केवल 'ऊपर वाले' ऐसा कर सकते हैं। कुछ लोगों का खयाल था कि यह काम इन्जीनियरों, टेक्नालोजिस्टों अथवा व्यवस्थापन निदेशक का है। ऐसे विचार सुनकर कुछ पुराने और अनुभवी लोग भड़क उठे। उन्होंने यह कहकर फोरमैन लाण्डा के सुझाव का समर्थन किया कि ज. ज. ग. में, कारखाने राज्य अर्थात् उनकी अपनी सम्पत्ति है। यदि कारखाने का उत्पादन घट जायेगा तो उनकी मज़दूरी पर तो इसका प्रभाव पड़ेगा ही। लेकिन इससे अधिक बुरी बात यह होगी कि बर्मा, भारत या अरब गणराज्य (या किसी और देश) के लिये निर्यात होने वाला (और यहां बनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला सामान) समय पर तैयार नहीं होगा। इससे ज. ज. ग. को आर्थिक नुकसान तो होगा ही, साथ ही इसके सम्मान को भी धक्का लगेगा।

बहस की अवधि बढ़ने के साथ-साथ उन श्रमिकों के सामने यह बात बिल्कुल स्पष्ट होती गई कि उनके अनुभाग का प्रत्येक मज़दूर, ज. ज. ग. के भाग्य से जुड़ा हुआ है। जब यह तथ्य पूरी तरह उनके सामने स्पष्ट हुआ, अपने फोरमैन के क्रांतिकारी सुझाव की अनिवार्यतः भी उनके सामने स्पष्ट हुई। अपने अनुभाग तथा अपने पूरे कारखाने को उल्लिखित गंभीर स्थिति से सफलता पूर्वक बाहर निकालने का एक ही मार्ग था और वह था फोरमैन जोज़ुफ लाण्डा के सुझाव को कार्यान्वित करना। ···

बहस के खत्म होने पर सवाल यह नहीं रहा कि उक्त सुझाव सही है या गलत, बल्कि वे सभी लोग इस बात पर विचार कर रहे थे कि इस सुझाव को, जल्द से जल्द किस तरह अमल में लाया जाये। ··· काग़ज के टुकड़ों, यहां तक कि सिगरेट की खाली डिब्बियों पर भी मशीनों को चालू रखने (दो मशीनों को एक मज़दूर के द्वारा) के नक़्शे बनने लगे। ... देखते ही देखते, फोरमैन लाण्डा का सुझाव एक अनुभाग के सुझाव की परिधि से निकल कर टैकनालोजी सम्बन्धी एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बन गया। २५ मज़दूरों की एक छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण बैठक ने सारे ज. ज. ग. के निर्माण के लिये एक नया राज मार्ग खोला। ···

इस प्रसंग में यह कहना आवश्यक है कि कारखाने के व्यवस्थापक निदेशक ने फोरमैन लाण्डा की योजना का न केवल अनुमोदन ही किया बल्कि दूसरे दिन से कारखाने में इस योजना पर अमल होने लगा। इसका परिणाम यह निकला कि कुछ ही हफ्तों में कारखाने के उत्पादन में ३० प्रतिशत की वृद्धि हुई। उत्पादन की इस वृद्धि का अनिवार्य नतीजा यह निकला कि मज़दूरों की मज़दूरी भी दिन प्रतिदिन बढ़ती गई।

यहां इस बात की ओर संकेत करना भी अनुचित न होगा कि जोज़ुफ लाण्डा की योजना, ज. ज. ग. के अन्य मज़दूरों द्वारा अब, समय-समय पर, परिवर्धित तथा परिमार्जित होती रहती है। उदाहरण के लिये, हाल की एक ट्रेड-यूनियन मीटिंग में एक टर्नर ने यह कहा कि कारखाने में यदि विशेष प्रकार का एक सुच लगा दिया जाये तो एक मज़दूर, दो ही नहीं, बल्कि एक साथ तीन मशीनें चलाने में समर्थ होगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसी नवीन खोजों तथा योजनाओं के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा मज़दूरों की ट्रेड यूनियन, हर प्रकार की सहायता और प्रोत्साहन देती है। फोरमैन लाण्डा और उसकी क्रांतिकारी योजना, सम्पूर्ण ज. ज. ग. में, एक आदर्श तथा प्रेरणा बन चुकी है। ···

भारतीय लोक-सभा के अध्यक्ष को सन्देश

जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोक सभा, पीपुल्स चैम्बर के अध्यक्ष, श्री योहान्नेस दीक्मन्न ने, हाल ही में, भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष, सरदार हुकम सिंह को, एक पत्र तथा स्मृति-पत्र भेजा है जिसमें पश्चिमी जर्मनी के अणु शस्त्रों से लैस होने के संबंध में किये जाने वाले प्रयत्नों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। श्री दीक्मन्न ने अपने पत्र में लिखा है :

ऐसे सभी राष्ट्रों को, जिनके पास अणु शस्त्रास्त्र नहीं हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने, अपने कई प्रस्तावों के द्वारा इस बात की अपील की है कि वे इन शस्त्रास्त्रों को अपने देश में लाने का प्रयत्न न करें।

"प्रत्येक देश की लोकसभा का यह कर्त्तव्य है कि वह, संयुक्त राष्ट्र संघ के इस महान तथा मानवीय उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने पूर्ण प्रभाव का प्रयोग करें। अणु शस्त्रों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने तथा उनको नष्ट करने की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है। ···"

डा० दीक्मन्न ने ज. ज. ग. की लोकसभा की स्थाई-समिति की यह आशा भी व्यक्त की कि दुनिया के शांतिप्रिय देशों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के मिले-जुले प्रयत्न, राष्ट्र संघ के अणु शस्त्रों तथा निःशस्त्रीकरण से संबंधित प्रस्तावों को कार्यान्वित करवाते रहेंगे। ··· "जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का सवाल है वह हमेशा इस बात की भरसक कोशिश करता रहेगा जिससे अन्य देशों में अणु-शस्त्रों का फैलाव रुक जाये", डा० दीक्मन्न ने लिखा। इस संदर्भ में उन्होंने ज. ज. ग. के अनेक उपायों तथा सुझावों का उल्लेख भी किया।

विश्व में स्थायी शांति क़ायम करने के प्रयत्नों में योगदान देने के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोकसभा की स्थाई समिति ने उक्त स्मृति-पत्र तैयार किया है जो विश्व की सभी लोकसभाओं को भेजा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर संस्मरण

नरेन्द्रनाथ तांगरी

एक दिन मैं ज.ज.ग. के ट्रेड यूनियन भवन में खाना खा रहा था कि सहसा "दक्षिण पूर्वी ऐशिया संघ" की एक तार मेरे हाथों में थमा दी गई। इसमें ५ अगस्त से ११ अगस्त तक, यूरिनजियन जंगलों की सैर के कार्यक्रम में, मुझे सम्मिलित होने के लिये कहा गया था।

मैं बालटिक सागर में इतना नहाता तैरता और धूप सेंका करता था कि मेरे शरीर की त्वचा बिलकुल काली पड़ गई थी, और यहां के निवासी मुझे भारतीय न समझ कर अफ्रीका का निवासी समझने लगे थे। इसलिये उक्त निमन्त्रण पाकर मैं, आने वाले परिवर्तन से—विशेषकर रमणीय यूरिनजिया के जंगलों तथा पर्वतों की कल्पना से—बहुत प्रसन्न हुआ। वाइमर तथा वार्टबुर्ग का दर्शन भी कार्यक्रम में सम्मिलित था।

एरफर्ट पहुँचने पर मेरी मुलाकात अठारह भारतीय विद्यार्थियों से हुई। ये विद्यार्थी मेरी तरह ही भारत के पंजाब, मद्रास, बंगाल, महाराष्ट्र आदि जैसे विभिन्न प्रान्तों से यहां इंजीनियरी तथा अन्य विषयों में प्रशिक्षण लेने आये हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, हम भारतीय शिक्षार्थियों की हर प्रकार से सहायता करती है और अपने विभिन्न संस्थानों में आधुनिक ढंग की इंजीनियरी तथा टेक्नालोजी आदि में प्रशिक्षण देती है।··· 'जर्मन दक्षिण पूर्वी ऐशिया संघ' का एक प्रतिनिधि हम सब लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था यहां। उन्होंने अपने 'संघ' के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुये कहा कि इस प्रकार के सैर सपाटे तथा यात्रायें आयोजित करके, उक्त 'संघ' ज.ज.ग. और दक्षिण पूर्वी ऐशिया के देशों में सहयोग तथा मैत्री की पावन भावनायें दृढ़ करता है।

अब हमारी यात्रा शुरू हुई। पहले बस में बैठकर हम एरफर्ट (कस्बे) को देखने गये। तंग गलियों में बने पुराने मकान मज़दूरों के लिये बनाये गये आधुनिक ढंग के नये फ्लैटों से एक अनोखी तुलना प्रस्तुत कर रहे थे। पांच सौ साल पुराने गिरजे के गुम्बद की रंगीन शीशे लगी हुई खिड़कियां चमचमा रही थीं—मानो हीरे, जवाहर चमक रहे हों।···

दोपहर को हम 'मेरक्सलैबेन' गये जहां 'कृषि उत्पादन सहकारी समिति' के सदस्यों ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने हमको अपनी डेरी (दुग्धशाला), पालतू मुर्गियों का फार्म, कृषि कर्म के औज़ार तथा मशीनें और अपने कृषि उत्पादन दिखाये। इसके बाद उन्होंने हमारे लिये एक नृत्य पार्टी का आयोजन किया। सहकारी समिति के वे किसान लोग भारतवर्ष से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के बहुत इच्छुक थे। उन्होंने कई प्रश्न पूछे हम से—विशेषकर

भारतीय विद्यार्थी पर्यटक 'वार्टबुर्ग' में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय युवतियों के बारे में। क्या भारतीय युवतियां नृत्य तथा अन्य कलायें सीखती हैं ? वे अपने केशों को लम्बा क्यों रखती हैं, कटवाती क्यों नहीं ? वे लम्बी टांगों तक की ढकने वाली वेश-भूषा क्यों पहनती हैं ? आदि—···

दूसरे दिन हमको हिटलर के फासिस्त अत्याचारों, अमानुषिक क्रूरताओं तथा अकथनीय बर्बरता की कहानी से दो चार होना पड़ा। हमने कुख्यात बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर (कनसेन्ट्रेशन कैम्प) देखा, जहां नाज़ी दरिंदों ने हज़ारों निर्दोष मर्द औरतों तथा बूढ़ों की निर्मम हत्या की उनको तरह-तरह की यातनायें पहुँचाकर। इन हत्याओं तथा यातनाओं की कहानी सुनते समय हमको ऐसा लग रहा था जैसे हम परी कथाओं के राक्षसों तथा जिन्न-भूतों की कहानी सुनते थे जो मनुष्यों की हाड़, चाम, चर्बी तथा दांतों आदि को कच्चेमाल के तौर पर इस्तेमाल करते थे। लेकिन हिटलर के नाज़ी आततायियों की वह कहानी एक हकीकत थी—हमारी बीसवीं शताब्दी की एक ठोस वास्तविकता। बूखेनवाल्ड, दुनिया के शांतिप्रिय लोगों के लिये एक चेतवानी है, युद्ध लोलुप राक्षसों को फिर से सिर उठाने न देने की।···

इस दुःखद स्थान से चलकर हम 'येना' पहुंचे। यहां हमने विश्व प्रसिद्ध ज़ाइस नक्षत्रशाला देखी। लगभग एक घंटे तक हम यह भूल गये कि हम धरती के प्राणी हैं, क्योंकि नक्षत्रशाला में बैठकर हम ध्रुव, मंगल, बृहस्पत आदि नक्षत्र लोकों की यात्रा कर रहे थे।

हमारे पार्यटन के प्रोग्राम का एक दिलचस्प भाग था सूह्ल के जंगलों में भटकना। यहां वनाधिकारियों ने हमको वन-विज्ञान से संबंधित कई दिलचस्प बातें समझाई। एक अस्वस्थ वृक्ष को हमने एक मशीनी आरी से कटते देखा।

'येना' से ओबरहाफ का ट्रेड यूनियन गृह देखने गये। यहां सोवियत संघ, इंगलैण्ड, चीन, इटली, मंगोलिया, लुक्समबर्ग आदि देशों के अनेक पर्यटकों से मुलाक़ात हुई। उन्होंने हमारा भव्य स्वागत किया। वे भारत के नेहरू, गंगा तथा राजकपूर के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिये उत्सुक थे। भारतीय गीतों को सुन कर वे गदगद हो गये। रूसी संगीत ने हमको, नाचने और बार-बार नाचने के लिये प्रेरित किया। कुछ घंटों के इस सम्पर्क में हम एक दूसरे के इतने निकट आ चुके थे कि विदा के समय हम बहुत अनमने से रहे। यह विछोह काफी कष्टकर था।

चौथे दिन हम 'वार्टबुर्ग' के लिये प्रस्थान करने ही वाले थे कि हंगरी के पर्यटकों के एक समूह से मुलाक़ात हुई। एक दूसरे की भाषा न जानते हुये भी हमारे संकेत तथा इशारे भाषा का माध्यम बने और देखते-देखते हम एक दूसरे के चित्र लेने लगे कैमरों से। पते तथा उपहारों का आदान प्रदान हुआ।... वार्टबुर्ग की प्राकृतिक छटा देखकर, बरबस हमें अपने भारत के 'नन्दनवन' काश्मीर की याद आई। सुरक्षित रखे हुये यहां के कई चित्रों, वास्तुकला के नमूनों और अन्य ऐतिहासिक अवशेषों को देखकर, हमें जर्मन इतिहास की काफी जानकारी प्राप्त हुई। यहां हमने 'मार्टिन लूथर' का वह ऐतिहासिक मेज़ और कमरा भी देखा जहां वह क़ैद किये गये थे और जहां उन्होंने 'बाईबल' का जर्मन भाषा में पहली बार अनुवाद किया। यह उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और युगपरिवर्तनकारी क़दम था।

यहां के एक गांव 'सीबाख' के बड़े पादरी से हमने ईसाई धर्म तथा ज.ज.ग. में धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में, देर तक बातें कीं। इस बातचीत से, समाजवादी जर्मनी (ज. ज. ग.) में वर्तमान, धार्मिक स्वतंत्रता की कई बातें हमारे सामने स्पष्ट हुई।

अपने पर्यटन के अन्तिम दिन में हम, विश्व प्रसिद्ध जर्मन कवि 'गोइटे' के नाम पर, वाइमर में संस्थापित 'गोइटे भवन' देखने गये। गोइटे केवल कवि तथा नाटककार ही नहीं थे। वनस्पति शास्त्र तथा धातु विज्ञान में भी उनकी प्रयाप्त रुचि थी। 'गोइटे भवन' के विस्तृत पुस्तकालय में महाकवि की पाठ्य सामग्री तथा अनेक पुस्तकें और उनके मूल्यवान संकलन सुरक्षित रखे गये हैं। इनको देखकर गोइटे की रचनात्मक प्रवृत्ति तथा उनकी मानवीय भावनाओं के प्रति नत मस्तक हुये बिना नहीं रहा जा सकता। उनके मूल्यवान संकलन में महाभारत तथा महाकवि कालिदास का नाटक 'शकुन्तला' देखकर हम भारतीयों का सिर गौरव से तन गया।

'राइन हार्ड्स-ब्रून' के विश्राम-घर में खाना खाकर मैं और मेरे दो अन्य मित्र 'रामस्वामी' तथा 'रामकृष्णन', नाव की सैर के लिये गये। इसके बाद हम जंगल में बहुत देर तक घूमते रहे। घूमते हुये हमारी मुलाकात, किशोरों की प्रतिनिधि संस्था 'यंग पयोनिर्यस संगठन' के दो बाल सदस्यों से हुई। वे हम को जंगल में लगे अपने शिविर में ले गये। यहाँ हमने देखा कि बाल्यकाल से ही, लोगों को, ज. ज. ग. में कैसे खेल-कूद, सहभोज आदि के द्वारा सहयोग, सद्-भावना तथा अनुशासन की भावनायें रोपी जाती हैं। गाना बजाना हुआ।

हमारे एक हफ्ते का यह सुन्दर पर्यटन समाप्त हो रहा था। कार्टबुर्ग मोटर कारखाने के मजदूरों ने हमारे सम्मान में एक शानदार अलविदाई पार्टी का आयोजन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। मजदूर इतने अच्छे कलाकार तथा अभिनेता हो सकते हैं, यह सत्य यहाँ हमारे सामने एकदम प्रकट हुआ। हमने भी यहाँ कुछ भारतीय लोकगीत, नृत्य आदि गाये दिखाये। इस मैत्रीपूर्ण वातावरण में सब कुछ रागमय हो गया। हम भूल गये कि हम अपने घरों से हज़ारों मील दूर हैं।···

हमारा सात दिन का पर्यटन समाप्त हुआ। लेकिन जो स्नेह, मैत्री तथा सुविधायें अपनी इस यात्रा में हमको मिलीं, वे हमारे जीवन की अमर और मधुर यादें बन कर रहेंगी। मुझे इस बात का पूर्ण अनुभव हुआ कि ज.ज.ग. के लोग हम भारतवासियों से अथाह स्नेह तथा सम्मान करते ही हैं, साथ ही वे भारतवर्ष की मैत्री, सहयोग तथा सद्भावना प्राप्त करने के बहुत इच्छुक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेरहार्ट हौप्टमन्न की याद में

१५ नवम्बर, सन् १९६२ के दिन, सुप्रसिद्ध जर्मन नाटक-कार श्री गेरहार्ट हौप्टमन्न की जन्म-शती मनाई गई। जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने उस दिन, जर्मनी के इस महान लेखक को अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित की जिन्होंने अपने सामाजिक नाटकों द्वारा जर्मन साहित्य में यथार्थवादी नाटक का मार्ग प्रशस्त किया।

अपनी युवावस्था में ही श्री हौप्टमन्न जन साधारण के साथ निकट का संपर्क स्थापित करने के इच्छुक थे—विशेषकर ग़रीब और पीड़ित जनता के साथ। बाद में जनता के इसी शोषित अंग की उन्होंने, अपने श्रेष्ठ नाटकों 'सूर्योदय से पहले', 'बुनकर', 'ऊदबिलाव के बाल', 'गाड़ीवान हेनशेल' और 'टोपियां' में कलात्मक ढंग से चित्रित किया। इस महान नाटक-कार की लेखनी हमेशा पीड़ित तथा दलित मानवों के दुःख दर्द को ही अभिव्यक्त करती रही। ऐसा होते हुये भी उनकी कुछ कृतियों में कुछ अन्तर्विरोध मौजूद हैं। उदाहरण के लिये उनके दो नाटक—'हानिल्ले का स्वर्गारोहण' तथा 'खोई हुई घण्टी', रहस्यवादी तथा भाग्यवादी विचारों से भरे हुये हैं। ऐसा होते हुये भी इन नाटकों में उदात्त मानवीय भावनाओं का अभाव नहीं।

'बुनकर' नाटक का एक दृश्य

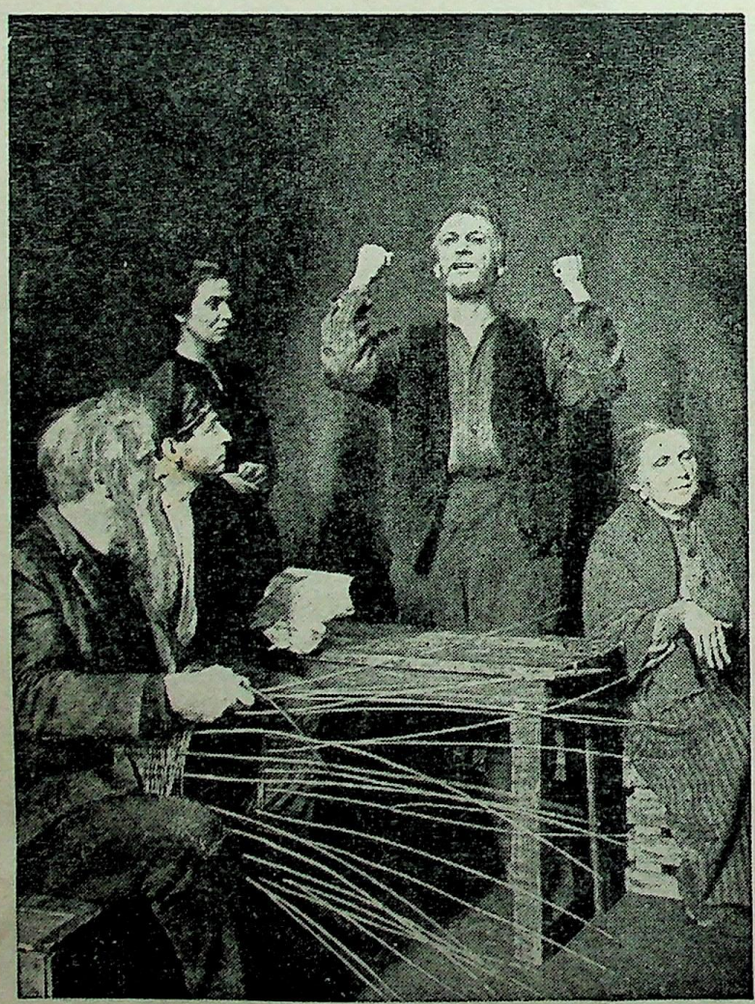

श्री हौप्टमन्न न केवल सिद्धहस्त नाटक-कार ही थे बल्कि वे एक अच्छे कवि तथा गद्य लेखक भी थे। इस महान लेखक की रचनाओं में जो कुछ महान, उदात्त तथा प्रगतिशील है, ज.ज.ग. की जनता उस पर गर्व करती है और ग़लत और झूठे विश्लेषणों तथा आरोपों से उनको बचाती है। इस बात का प्रमाण यह है कि आज ज.ज.ग. में एक भी ऐसा रंग-मंच या रंगशाला नहीं है जहां श्री हौप्टमन्न के नाटक अभिनीत न होते हों।

इस महान नाटक-कार की जन्मशति मनाने के अवसर पर इनके सर्वोत्तम नाटकों को, ज.ज.ग. की राजधानी बर्लिन के सभी बड़े-बड़े मंचों पर खेला गया, 'रंग-मंच महोत्सव सप्ताह' के दौरान। 'नाटक समारोह सप्ताह' श्री गेरहार्ट हौप्टमन्न की जन्म-शती के उपलक्ष में ही मनाया गया। रोस्टाक तथा ड्रेसडेन में भी यह समारोह मनाया गया। कुल मिलाकर २५ नाटकों का अभिनय हुआ। यह उत्सव, सुप्रसिद्ध लेखक के प्रति एक अनुकूल और ठोस श्रद्धांञ्जलि है।

यहां यह बताना भी अनुचित न होगा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में, ड्रेस्डेन हिड्डेनस्से तथा बर्लिन के निकट इस महान लेखक की यादगारों तथा स्मारकों को बड़ी श्रद्धा के साथ सुरक्षित रखा गया है। श्री गेरहार्ट हौप्टमन्न की, मानवीय भावनाओं से ओतःप्रोत रचनायें, ज.ज.ग. की नई समाजवादी सांस्कृतिक परंपरा का एक अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

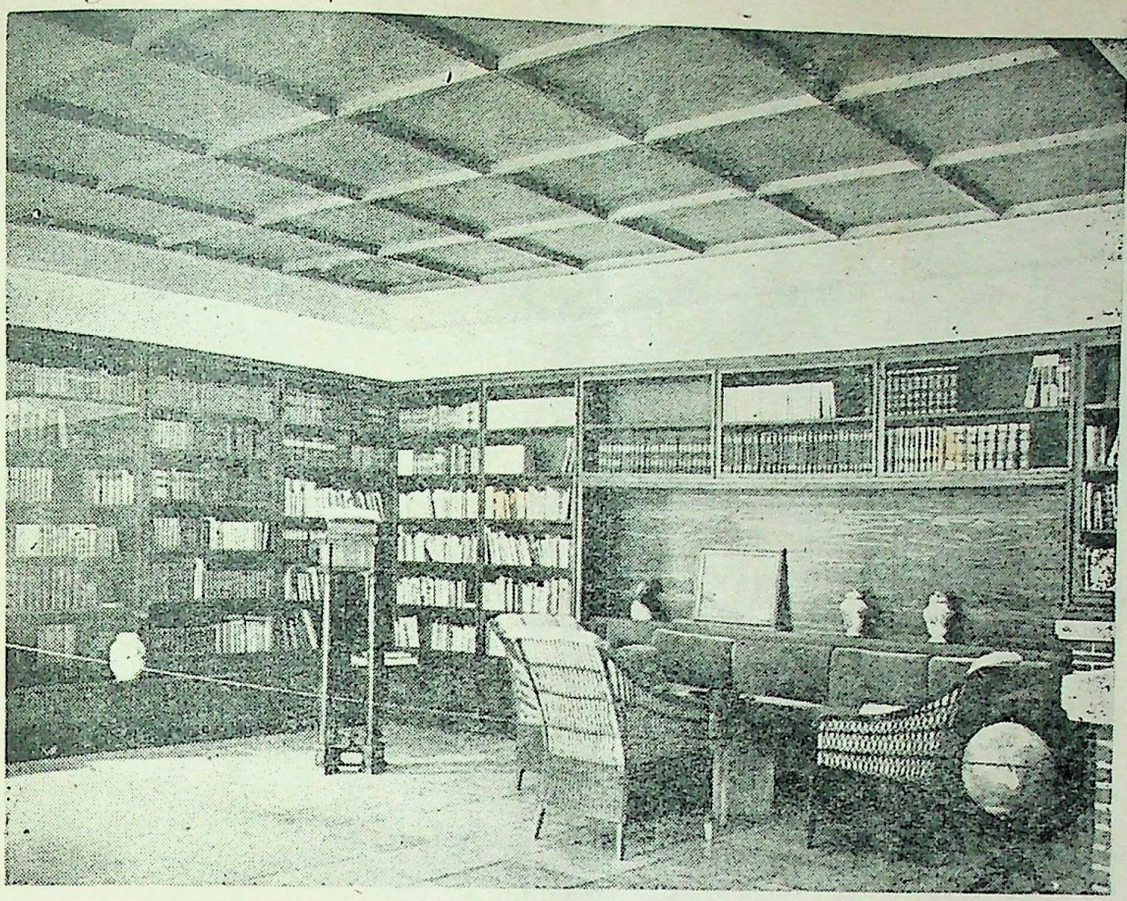

ौप्टमन का
ध्ययन-कक्ष

८० वर्ष की आयु में श्री गेरहार्ट हौप्टमन्न

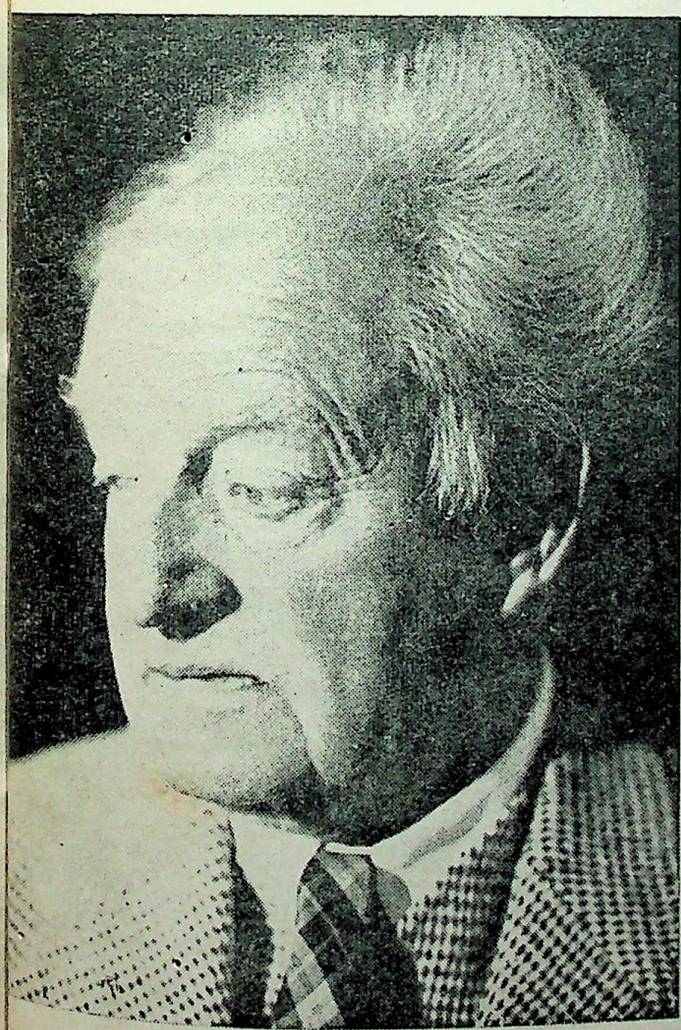

महान् साहित्यकार की समाधि

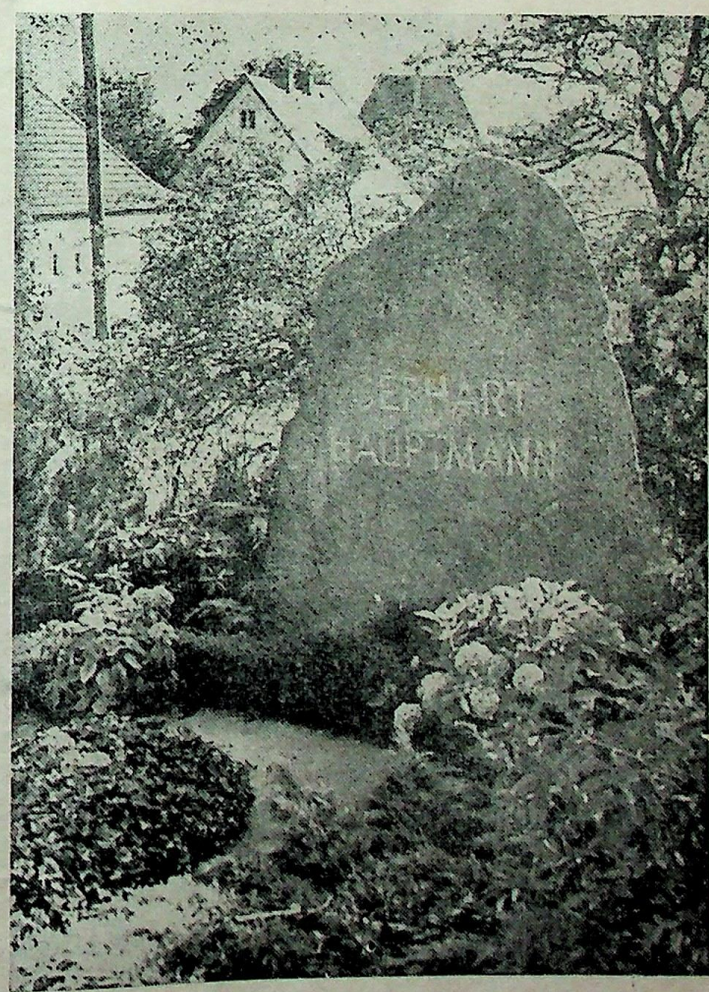

CC-0.-In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मुर्दे' ज़िन्दा हैं

ई० लीथर

हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी की एक प्रमुख समाचार एजेन्सी ने इस बात का दावा किया कि १३ अगस्त, सन् १९६१ के दिन के बाद, पश्चिमी जर्मनी की सेना के एक भी सैनिक ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण नहीं ली। यही दावा प० जर्मनी के कई अखबारों ने भी किया।

इस पर, ज. ज. ग. के कई संस्थानों, संगठनों और विशेषकर बर्लिन के टेलिविजन ने, इन पत्रों तथा समाचार एजेन्सियों की कमज़ोर पड़ी स्मृति को ज़रा ठीक करने के लिये कुछ तथ्य सामने लाये, जो इस प्रकार हैं :

१३ अगस्त, सन् १९६२ के दिन, फासिस्त-विरोधी तथा शांति की रक्षक बर्लिन की सीमा के गिर्द बनाई गई दीवार एक साल पुरानी हो गई। उसी दिन, ज. ज. ग. टेलिविजन के सैनिक नीति के विश्लेषक, श्री ओट्टो विनज़ेर ने, जो स्वयं प० जर्मनी की सेना के एक भूतपूर्व मेजर हैं, जर्मन जनता के सामने (टेलिविजन के माध्यम से) २२ जवान लाये जो पहले पश्चिमी जर्मनी की सेना के सैनिक थे। प० जर्मनी की सेना के ये भूतपूर्व सैनिक, पहली जून, सन् १९६२ से एक-एक करके वहां से भाग आये थे और उन्होंने ज. ज. ग. में शरण ली है। ये २२ जवान, प० जर्मनी की उस युद्ध पोषक नीति से तंग आ चुके थे जिस नीति ने उनके पूर्वजों—पिताओं, पितामहों आदि को दो भंयकर युद्धों में झोंक दिया था, और जिसके कारण लाखों निर्दोष मानवों की हत्या हुई थी। इस लिये वे प० जर्मनी के उन ही सैनिकवादियों तथा साम्राज्यवादियों के आधीन नहीं रहना चाहते थे जिन्होंने दो विध्वंसक विश्व युद्धों को जन्म दिया था।

ये २२ भूतपूर्व सैनिक, या जिनको खेल कूद की शब्दावली में हम फुटबाल की दो टीमें कह सकते हैं, पश्चिमी जर्मनी की युद्धोतेजक नीति का भंयकर खेल अब नहीं खेलते। यह खतरनाक खेल खेलने की बजाय उन्होंने ज.ज.ग. में आकर शांतिपूर्ण जीवन बिताना और यहां के नवनिर्माण में हाथ बटाना अधिक उचित और श्रेयस्कर समझा।

यहां, जो दो चित्र हमने छापे हैं वे, प० जर्मनी की सेना के इनही २२ भूतपूर्व सैनिकों के चित्र हैं। आप देख सकते हैं कि ये नवजवान हैं जिनको अपने जीवन तथा अपने देश जर्मनी से प्यार है। उनकी सूझ-बूझ काफी साफ है। इसीलिये, प० जर्मनी की सेना की विभिन्न इकाईयों में काम करते हुये वे अपने कटु अनुभवों से इस निर्णय पर पहुंचे कि शांतिप्रिय लोगों के लिये, युद्ध-प्रिय प० जर्मनी, की सेना में कोई स्थान नहीं। यही कारण था कि वे एक-एक करके दूसरे शांतिप्रिय जर्मन राज्य, अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र, में भाग आये।

अब हम आपको इन २२ नवयुवकों का पूर्ण परिचय देंगे जिन्होंने सैनिक वृत्ति छोड़कर, शांतिपूर्ण पथ को अपनाया है।

पहले चित्र में :

बैठे हुए (बाईं से दाईं ओर) : रिचार्ड लांग, बखतरबन्द बटालियन ३५१, हाम्मेलबर्ग; हेनरिख फ्रांक, प्रसार बटालियन १२०, रोटेनबुर्ग, हानोवर; विल्फ्रीड आल्सगूथ, पहला हवाबाज़ डिविजन, ब्रखसाल-बाडेन।

खड़े हुये (बाईं से दाईं ओर) : डीटर शमट्जलेर, ट्रेनिंग कम्पनी २।१, हानोवर-बोथफेल्ड; ओट्टो शवार्ज पहला बखतरबन्द ट्रेनिंग बटालियन, म्यूनस्टेर-लागेर; गुइनथर फिशर, दूसरा बखतरबन्द बटालियन २४३, इम्मेनडिजेन बाडेन; होस्ट पिलगेर, दूसरा एण्टी एयरक्राफ्टबटालियन २४, डेलमेनहोरस्ट; बोडो राट्ज़िन्गर, हवाई सेना स्क्वाड्रन ६, ईट्ज़ेहोई-होल्स्टाइन; यूरगेन स्टाइ-

(शेष पृष्ठ १८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्ती नारियों के लिये अध्ययन की सुविधायें

रूट फल्केनटाल

सप्त वर्षीय योजना को पूरा करने और अपनी वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति तथा शीघ्र विकास के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र को प्रशिक्षित लोगों तथा विशेषज्ञों की बहुत आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये, यहां के विद्यार्थी दस वर्षीय पोलितकनीकी माध्यमिक स्कूलों में दाखिला लेते हैं और गणित, विज्ञान, समाज शास्त्र तथा अन्य विषयों में काफी जानकारी प्राप्त करते हैं। लेकिन यह तो हुई तरुण वर्ग की बात। प्रौढ़ पीढ़ी, जो इन स्कूलों में अध्ययन करने से महरूम रही है, देश के निर्माण कार्य में हाथ बटाने के लिए क्या करती है?

प्रौढ़ लोगों को आधुनिक ढंग की शिक्षा तथा प्रशिक्षण देने के लिये, ज.ज.ग. में प्रौढ़-शिक्षा की विस्तृत व्यवस्था की गई है। इन लोगों के अध्ययन तथा प्रशिक्षण के लिये अनेक ऐसे संस्थान खोले गये हैं जहां ये लोग किसी भी पेशे का अध्ययन करके परीक्षा दे सकते हैं। पास होकर वे पोलितकनीकी स्कूलों में ऊंचा प्रशिक्षण पाने के अधिकारी बन जाते हैं।

प्रौढ़ लोगों के लिये इन शिक्षा संस्थानों के अतिरिक्त यहां फैक्ट्री अकादमियां भी हैं जिनका मुख्य कार्य है विशेष पेशों का प्रशिक्षण देकर उपाधियाँ देना। दूसरे शब्दों में ये अकादमियां साधारण मज़दूर से लेकर कुशल फोरमैन तक की ट्रेनिंग देती हैं। फैक्ट्रियों द्वारा संचालित ये अकादमियां, मजदूरों तथा तकनीकी हाई स्कूलों के विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने में सहायता देती हैं। साथ ही ये अकादमियां, पत्र-व्यवहार तथा सायंकालीन श्रेणियों के द्वारा भी इस काम में सहयोग प्रदान करती हैं। ग्राम अकादमियां भी यही काम करती हैं। इस प्रकार ये फैक्ट्री तथा ग्राम अकादमियां मज़दूरों तथा शिक्षार्थियों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान विज्ञान से संपर्क बनाये रखने तथा उसकी जानकारी प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहयोग देती हैं।

इस प्रसंग में एक अन्य प्रयोग भी काफी लोकप्रिय हो रहा है ज.ज.ग. में। यह प्रयोग है टेलिविजन द्वारा, मज़दूरों तथा शिक्षार्थियों को, तकनीकी ट्रेनिंग देना। इस कार्य के लिये टेलिविजन अकादमी खोली गई है। आज तक इस अकादमी ने श्रोता-दर्शकों को गणित तथा रसायन शास्त्र के कई पाठ पढ़ाये

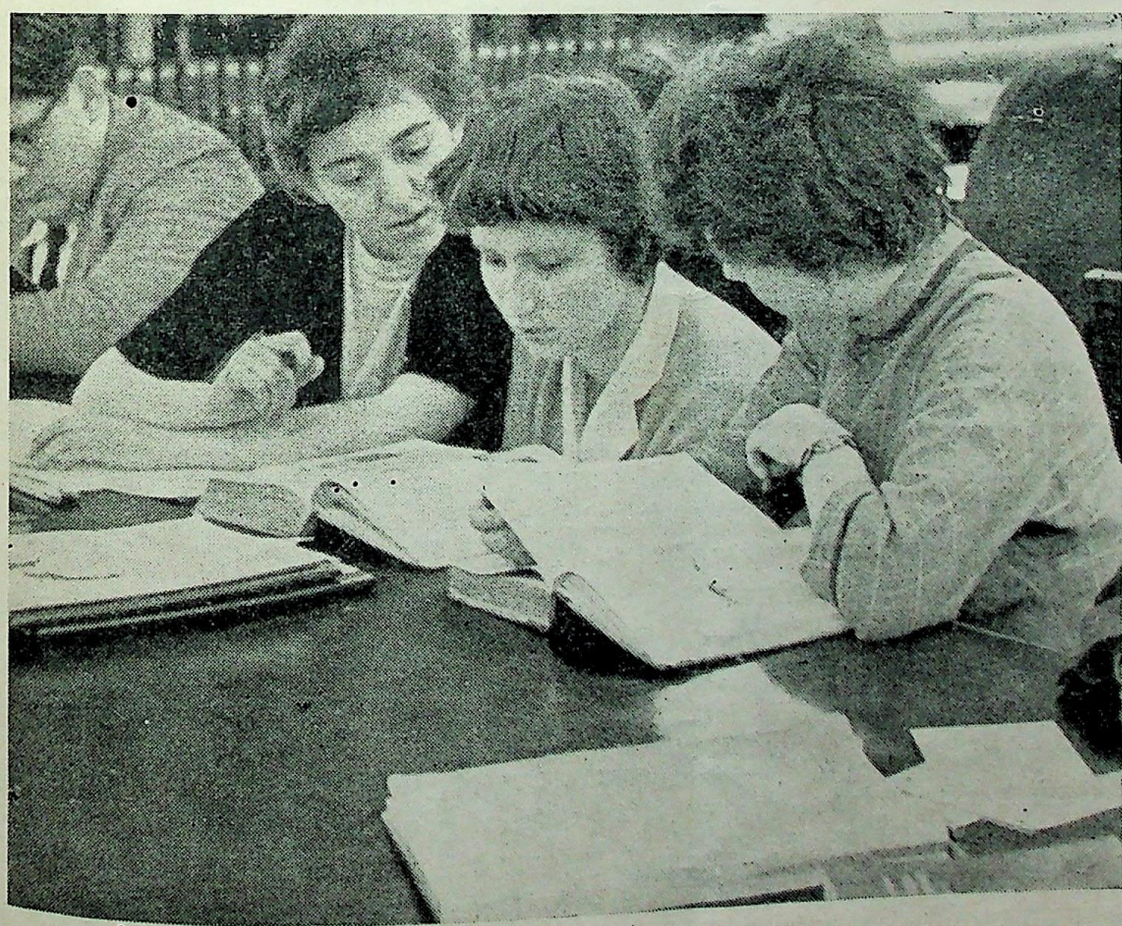

अध्ययन करती हुई गृह नारियाँ।

CC-0..In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्ती नारियां टाइप सीख रही हैं

हैं। निश्चित पाठ्य-क्रम समाप्त होने पर यह अकादमी परीक्षायें भी लेती है। धीरे-धीरे यह अकादमी अन्य विषयों का पाठन भी आरम्भ करेगी।

राष्ट्रीय विकास की आर्थिक योजनाओं में ४३ प्रतिशत नारियां काम कर रही हैं। समाजवादी विधान में नारी के वे ही अधिकार हैं जो पुरुष के हैं। इसलिए नारियां भी आधुनिकतम तकनीकी जानकारी को जानने तथा सीखने में पुरुषों के बराबर ही हैं। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि उनके प्रशिक्षण तथा अध्ययन की ओर ज.ज.ग. में विशेष ध्यान दिया जा रहा है।··इस सबके बावजूद नारियों को नवीनतम-तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति के साथ संपर्क बनाये रखने में कुछ कठिनाइयां आती ही हैं। उदाहरण के लिये, उन्हें मां तथा गृहस्त जीवन के कर्तव्यों को भी निभाना पड़ता है। बच्चों तथा अन्य प्रकार की समस्यायें उठ खड़ी होने पर, यहां के कानून के अनुसार माताओं को, स्कूलों अथवा काम करने वाले स्थलों से, कुछ समय के लिये छूट दी जाती है। दूसरे शब्दों में, यदि कोई काम करने वाली मां, कुछ समय के लिये अपना काम छोड़ कर, अपना पूरा समय अपने शिशु के लालन-पालन तथा घर-गृहस्ती पर लगा देना चाहती हो तो वह ऐसा कर सकती है। ज.ज.ग. के क़ानून के अनुसार उसकी नौकरी एक साल तक सुरक्षित रहेगी। लेकिन घर पर बैठे बैठे भी वह तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति के संपर्क में रहना चाहती है, क्योंकि फैक्ट्री या कारखाने में वापस आने पर तकनीकी कौशल की दृष्टि से वह पिछड़ना नहीं चाहती। इसमें, उल्लिखित टेलिविजन अकादमी तथा पत्र-व्यवहार की पाठन विधि आदि उसकी पूरी-पूरी सहायता करती है।

प्रायः ऐसा होता है कि काम करने वाली नारियों को मातृत्व का भार उठाने के लिये अथवा स्वास्थ्य या घर-गृहस्ती की समस्याओं के कारण, कुछ समय के लिये अपनी नौकरी से अलग होना पड़ता है। ऐसी नारियों को तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति की नवीनतम जानकारी से पूरी तरह परिचित रखने के लिये, सरकार ने पत्र-व्यवहार तथा रात्रि-श्रेणियों द्वारा प्रशिक्षण देने की व्यवस्था को क़ानून द्वारा स्वीकृत किया है। इसके फलस्वरूप ज.ज.ग. के विश्व-विद्यालयों के ३० विभागों तथा १५६ तकनीकी स्कूलों में गृहस्ती नारियों के लिये, पत्र व्यवहार पाठन-विधि तथा सायंकालीन कक्षाओं द्वारा ट्रेनिंग देने का प्रबन्ध किया गया है। इस संबंध में हमने श्रीमती यूटटा बर्गेर से बात-चीत की जो पत्र-व्यवहार द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

श्रीमती बर्गेर तीन बच्चों की मां है और वह कई वर्षों से एक सरकारी सूती कारखाने में काम कर रही हैं।··· "जब मेरी साबिने ने जन्म लिया", श्रीमती यूटटा बर्गेर बोली, "उस समय मेरे सर पर काफी काम था। मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। मेरे पति की स्पष्ट राय थी कि मुझे फिलहाल अपने

(शेष पृष्ठ १९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथ्य और आंकड़े

बर्लिन में विवाहों की भरमार :

इस वर्ष अगस्त मास के अन्त तक, ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन में लगभग ८००० शादियां हुईं। इनमें से अगस्त के महीने में, १२०० के करीब और जून मास में १,१५० विवाह रचे गये। इस प्रकार अगस्त मास को 'प्रियतम विवाह मास' की उपाधि प्राप्त करने का गौरव मिला।

* जर्मन जनवादी गणतंत्र का कुल क्षेत्र फल १०७,८३४ वर्ग किलोमीटर अर्थात् लगभग ३१,१६३ वर्ग मील है। इसकी दो सबसे लम्बी नदियां हैं 'एलबे' तथा 'ओडर', इनकी लम्बाई, क्रमशः ७२८·८ मील और ५३५.९ मील है। ३१ दिम्सबर सन् १९५९ की जन-गणना के अनुसार ज. ज. ग. की कुल आबादी १ करोड़ ७२ लाख थी। इसकी राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था, सामाजवादी सिद्धान्तों पर आधारित है।

* ज. ज. ग. की 'डेफा' फिल्म कम्पनी ने, अरब गणराज्य की टेलिविजन कम्पनी को, ५० फिल्में बेची हैं। इसी वर्ष मार्च के महीने में ४० फिल्में पहले भी बेची गई थीं। इसके अलावा, 'डेफा' तथा मिस्र सिनेमा संस्था ने, फिल्मों के आदान–प्रदान के बारे में एक समझौता भी किया है।

* येना (ज. ज. ग.) का फ्रीडरिख शिल्लर नामक विश्वविद्यालय ४०० वर्ष पुराना है। यहां के इतिहास विभाग ने विश्वविद्यालय का इतिहास तैयार किया है जिसका दूसरा, यानी अन्तिम भाग छपने जा रहा है।

* सन् १९६१ में स्नातकोत्तर अध्ययन के लिये 'जर्मन मेडिकल अकादमी' की स्थापना हुई। इसमें ज. ज. ग. के ६०० डाक्टर, सर्जन आदि हर साल कुछ दिनों के लिये, विशेष ट्रेनिंग लेते रहते हैं। जर्मनी में ऐसी एक मात्र यही अकादमी है। इसमें डाक्टरी विषयों के १९ विभिन्न विभाग हैं।

* विज्ञान से संबंधित उच्च स्तर की रचनात्मक कृतियों को प्रोत्साहन देने के लिये, बर्लिन के हमबोल्ट विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने एक स्थाई प्रतियोगिता आरम्भ की है। विज्ञान तथा टैक्नालोजी के नवीनतम सिद्धान्तों के विषय में सब से अच्छी रचना लिखने वाले विद्यार्थी को, हर साल, १९ मई के दिन 'फिख़ते पुरस्कार' दिया जायेगा। योहान्न गोट्टलीन फ़िखते, हमबोल्ट विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध रेकटर थे।

* ज. ज. ग. का सर्वोच्च विधानांग है यहां का पीपुल्स चेम्बर – अर्थात् लोक सभा। लोकसभा के कुल सदस्यों की संख्या ४६६ है जिनका चुनाव द्वारा निर्वाचन होता है। राजधानी बर्लिन, ६६ सदस्य चुनकर भेजती है इस लोकसभा में।

(पृष्ठ ४ का शेष)

तटस्थ देशों से व्यापार

ज.ज.ग. की सहायता से, भारत में हिन्दी तथा अन्य टाइपराइटर बनायेगी।

ये सभी नवजात राज्य यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि ज.ज.ग. अन्य देशों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव या असमानता का सलूक नहीं करता। ज.ज.ग. ग्राहक देशों से, वहां की स्थानीय वस्तुएं खरीद लेता है और बदले में उनको ऐसी वस्तुएं सप्लाई करता है जो वहां के लोगों के लिये आवश्यक और उनके आर्थिक विकास के लिये हितकर हों।

अन्त में मैं दो ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करूंगा जो यह बात एकदम सिद्ध करेंगे कि देशों के बीच व्यापार---अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार --- कितना श्रेयस्कर होता है संबंधित देशों के लिये : भारतवर्ष तथा अरब गणराज्य के साथ, सन् १९५६ से लेकर सन् ६० तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार तीन-गुना बढ़ गया। इसी प्रकार, इराक और ज.ज.ग. के व्यापार में, इसी अवधि में चौगुनीवृद्धि हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की खबरें

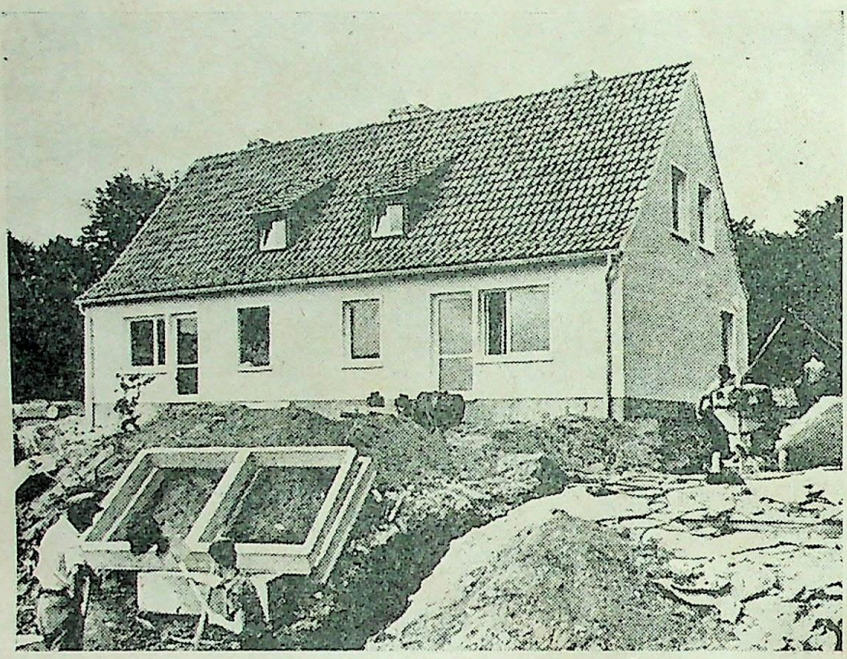

ज. ज. ग. के सूहल नामक स्थान में 'प्रि० फैब' विधि से बनाया जा रहा यह केवल १४ दिन में, पूरा पहला दो मंज़िला मकान लगभग तैयार है। ऐसे मकानों के बने बनाये हिस्से तैयार मिलते हैं जिनको क्रेन द्वारा जोड़कर, मकान खड़ा किया जा सकता है जो ईंट पत्थर के बने हुये मकान से काफी सस्ता होता है

जर्मनी जनवादी गणतंत्र के रोस्टोक विश्वविद्यालय में इस साल १०० नये विदेशी छात्रों ने दाखिला लिया है। ज०ज०ग० की सरकार तथा कई अन्य अफ्रो-एशियाई सरकारों में प्रशिक्षण से संबंधित जो समझौते हुए है, उनही के आधीन घाना, गिनी केनिया, माली, नाइजीरिया तथा हिन्द-चीन, क्यूबा और सीरिया आदि देशों से ये छात्र यहां पढ़ने आये हैं।

कुशल श्रमिक प्रमाण-पत्र अनिवार्य

सन् १९६३ में और उसके बाद, जर्मन जनवादी गणतन्त्र में कालेज अथवा विश्वविद्यालय में दाखिला लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के लिये साधारण शिक्षा पाने के साथ-साथ कुशल श्रमिक होने का सार्टिफिकेट प्राप्त करना भी अनिवार्य होगा। यह बात, हाल ही में, ज. ज.ग. के शिक्षा मंत्री, प्रोफेसर एलफ्रेड लेमिट्ज़ ने प्रोफेसरों, अध्यापकों तथा स्नातकों के एक सम्मेलन में बताई। इस वर्ष विश्वविद्यालय में दाखिला लेने वाले छात्रों की कुल संख्या में ८० प्रतिशत छात्र ऐसे थे जो मज़दूर परिवारों से संबंध रखते हैं।

प्रो. लेमिट्ज़ ने इस बात को भी स्पष्ट कर दिया कि कालेज और विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिये सबसे अच्छे तथा सबसे अधिक प्रतिभासम्पन्न छात्रों को दाखिल किया जाता है।

साधारण शिक्षा के साथ ही साथ 'कुशल श्रमिक' की उपाधि प्राप्त करने के लिये विद्यार्थियों को, किसी फैक्ट्री अथवा कारखाने में, चार साल का प्रशिक्षण लेना पड़ता है किसी विशेष पेशे में। शिक्षार्थी १०० पेशों में से किसी एक पेशे हैं। नस को चुकते

लइपज़िक में अन्तराष्ट्रीय खेलकूद सम्मेलन

लइपज़िक शहर के शारीरिक स्वास्थ्य का जर्मन कालेज में ८ अक्तूबर से १३ अक्तूबर तक 'प्रसारण तथा सूचना ब्यूरो' का खेलकूद से संबंधित, एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ। यह आयोजन, 'यूनेसको' के खेलकूद तथा शारीरिक स्वास्थ्य के विश्व परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। २० देशों के खेलकूद विशेषज्ञों ने इसमें भाग लिया।

उक्त 'प्रसारण तथा सूचना ब्यूरो' की स्थापना सन् १९६१ में हुई। जर्मन जनवादी गणतंत्र के खेलकूद कालेज के पुस्तकाध्यक्ष, डा. एर्नाल्ड इस 'ब्यूरो' के अध्यक्ष हैं। उल्लिखित आयोजन में केलकूद से संबंधित क्रमबद्ध सूचनाओं तथा विभिन्न देशों के तत्संबंधी अनुभवों का आदान प्रदान होने के साथ साथ संगठनात्मक तथा आयोजनात्मक बातों पर सोच विचार किया गया।

क्यूबा की शुभकामनायें

क्यूबा गणराज्य के विदेश मंत्री, श्री रौलराव ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र को इसके तेरहवें राष्ट्रीय दिवस पर हार्दिक बधाइयां तथा शुभकामनायें भेज दी हैं।

जापान के समाजवादियों का मत

जापान की शक्तिशाली समाजवादी पार्टी की विदेशी मामलों की कमेटी ने हाल ही में अपने देश की सरकार के सामने यह सुझाव रखा है कि वह जर्मन जनवादी गणतंत्र को राजनयिक मान्यता प्रदान करके एक ठोस वास्तविकता — अर्थात् दो जर्मन राज्यों का अस्तित्व स्वीकार करे।

यह सुझाव उस राजनीतिक दस्तावेज़ में सम्मिलित हैं जो समाजवादी पार्टी, नवम्बर मास में होने वाली अपनी पार्टी कांग्रेस के सामने रखेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेफा फिल्म कम्पनी की १०वीं वर्षगांठ

पहली अक्तूबर को, ज. ज. ग. की विश्व प्रसिद्ध डेफाफिल्म कम्पनी ने अपनी १०वीं वर्षगांठ मनाई। यह कंपनी बर्लिन के निकट बाबेलसबर्ग नामक स्थान में स्थित है। सारे यूरोप में यह दूसरी सबसे बड़ी फिल्म कंपनी है और इसमें ढाइ हज़ार लोग काम करते हैं। लगभग ५ लाख वर्ग मीटर के क्षेत्र पर इसके ९ स्टूडियो फैले हुए हैं। पिछले दशक में डेफा कंपनी ने १९१ फिल्में बनाई जिनमें १५ अन्य देशों—बलगेरिया, पोलेंड, फ्रांस और सोवियत संघ के साथ मिलकर बनाई गयीं। इस कंपनी की फिल्में ८९ देशों को निर्यात की जा चुकी हैं और २१ फिल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार, पदक तथा प्रशंसा के पत्र आदि मिल चुके हैं।

इस वर्ष, डेफा फिल्म कम्पनी २७ फिल्में बनायेगी जिनमें से १३ सामयिक विषयों से संबंधित होंगी। अगले वर्ष कंपनी के स्टूडियो, जर्मनी के श्रमिक वर्ग के आन्दोलन को चित्रित करेंगे।

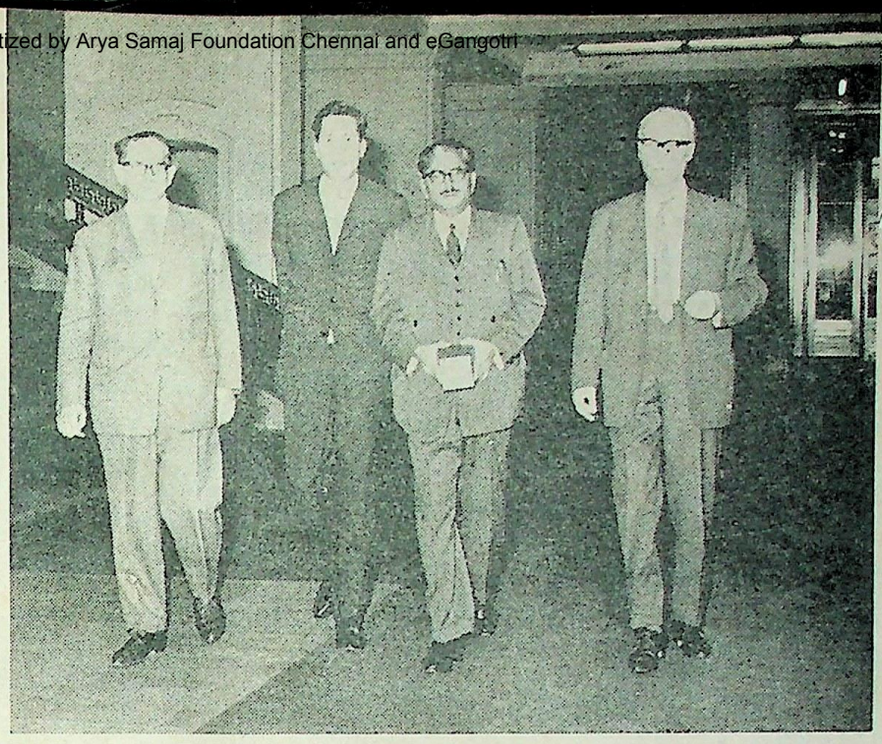

भारतीय लोक-सभा के सदस्य, श्री एम० एच० सेमुअल, ज. ज. ग. की लोक-सभा के अध्यक्ष, डा० दीक्षमन्न के साथ खड़े हैं। श्री सेमुअल, अक्तूबर में ज. ज. ग. के दौरे पर गये थे

तकनीकी सहयोग के लाभ

सोवियत यूनियन तथा ज.ज.ग. के बीच जो निकट तथा मैत्रीपूर्ण संबंध वर्तमान हैं, तकनीकी ज्ञान तथा उसके अनुभव का आदान प्रदान, उन संबंधों का एक अत्यन्त आवश्यक अनिवार्य अंग है। इन दो देशों के बीच, तकनीकी ज्ञान विज्ञान के सहयोग संबंधी समझौते पर २७ सितम्बर, सन् १९५१ के दिन दस्तखत हुये। उस दिन से लेकर सन् ६२ के मध्य तक, जर्मन सोवियत आयोग ने ४,७३० फैसलों को अमल में लाया। इन फैसलों में नवीनतम तकनीकी जानकारी तथा उत्पादन के अनुभव का आदान प्रदान भी शामिल

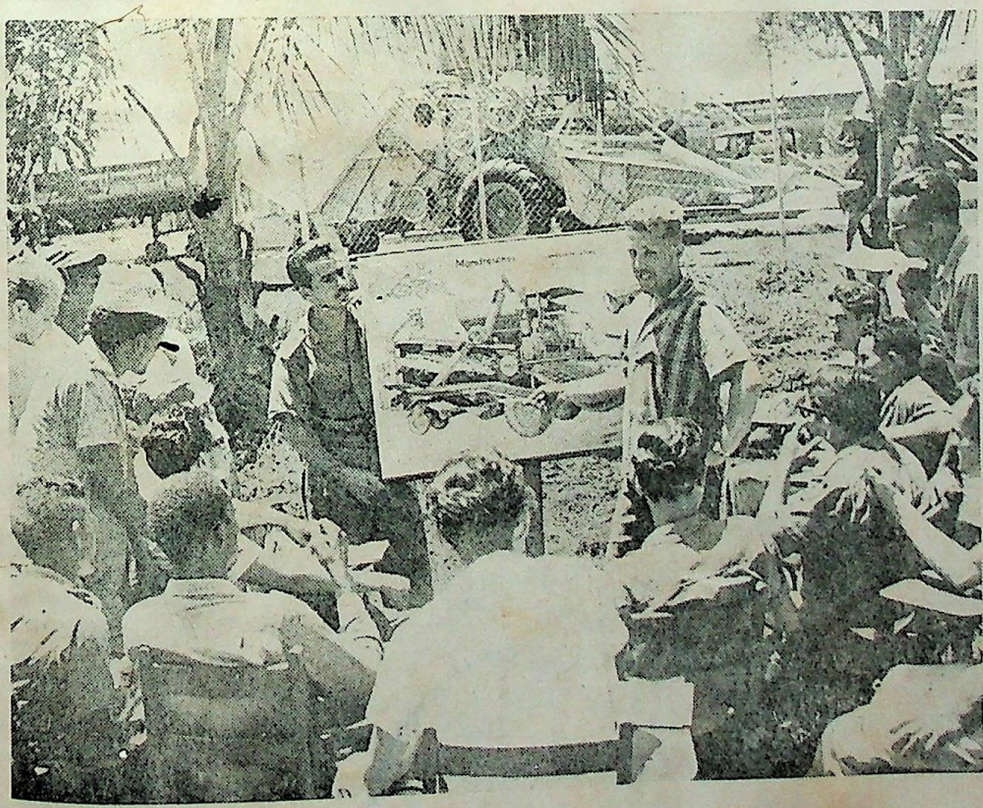

वाइमर के ट्रैक्टर कारखाने का इंजीनियर, श्री कार्ल क्राउसवाल्ड, क्यूबा के मेकनिकों तथा ट्रैक्टर-चालकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।.... आंकड़ों से यह पता चला है कि सोवियत ज.ज.ग. के इस तकनीकी सहयोग से, जर्मन जनवादी गणतंत्र को १० करोड़ मार्क की रकम का लाभ प्राप्त हुआ है।

खेलकूद कालेज में विदेशी छात्रों का प्रशिक्षण

लइपज़िक के 'शारीरिक स्वास्थ्य कालेज' में सन् ६२-६३ की टर्म में भारत, घाना, गिनी, माली, मोराक्को, नाइजीरिया, टोगा तथा क्यूबा के छात्रों को दाखिला दिया गया है। इस कालेज में ये विद्यार्थी तीन साल तक अध्ययन करेंगे। तदुपरान्त इनको खेलकूद के विशेषज्ञों का डिप्लोमा प्राप्त होगा। प्रशिक्षण के दौरान इन विद्यार्थियों को शारीरिक शिक्षा तथा शरीर विज्ञान के सिद्धांतों के अलावा जर्मन भाषा, गणित, रसायन शास्त्र, भौतिकी तथा प्राणि-शास्त्र का भी अध्ययन करना होगा। इसके अतिरिक्त, शारीरिक व्यायाम, खेलकूद, तैराकी आदि भी पाठ्यक्रम में ही सम्मिलित हैं।

दीवार : शांति की प्रहरी

आकलन तथा वाणिज्य समुदाय के निदेशक, केनिया के श्री ओकूतो बाला, 'वाइस आफ कूपरेशन' के प्रधान संपादक तथा टांगानीका के श्री एडुआर्ड कुमालिजा, हाल ही में ज.ज.ग. आये थे और यहां उन्होंने अन्य चीज़ों के अतिरिक्त बर्लिन की विश्व प्रसिद्ध दीवार भी देखी। इस दीवार को देखकर वे दोनों इस बात पर एकमत थे कि "ज. ज. ग. द्वारा बर्लिन के गिर्द बनाई गई दीवार विश्व शांति के लिये ज. ज. ग. की एक महत्वपूर्ण देन है।....

एडुआर्ड कुमालिजा ने सीमा सुरक्षा के सैनिकों को इस बात का यकीन दिलाया कि वे अपने देशवासियों को सही हालत से सूचित करेगा। श्री कुमालिजा ने विशेषकर इन सैनिकों तथा अफसरों के अनुशासन तथा संयम की प्रशंसा की जो पश्चिम बर्लिन की उत्तेजनाओं से विचलित नहीं होते। निदेशक, ओकूतो बाला ने कहा "यह मेरा निश्चित मत है कि इस दीवार के बिना विश्वशांति को हमेशा एक बहुत बड़ा खतरा रहता।...."

मज़दूरों की छुट्टियां : आमोद प्रमोद की सुविधायें

सन् १९४९ में ज. ज. ग. की स्थापना से लेकर आज तक, यहां के १ करोड़ और १० लाख से भी अधिक श्रमिकों ने, ज.ज.ग. की 'ट्रेड यूनियन फेडरेशन' के माध्यम से, यहां के अत्यन्त रमणीक स्थानों में अपनी छुट्टियां मनाई हैं। 'ट्रेडयूनियन फेडरेशन' अब यहां के कामगारों को, हर साल, १२ लाख से भी अधिक मनोरंजन गृह उपलब्ध करती है।

पिछले १३ वर्षों में, ज.ज.ग. के रमणीय स्थानों में, नये तथा आधुनिक ढंग के कई ट्रेडयूनियन गृह तामीर किये गये हैं। सन् १९४६ में 'ट्रेडयूनियन फेडरेशन' के पास इस तरह के केवल ९२ विश्राम गृह थे, जबकी आज इसके पास ४२० ऐसे गृह हैं।

ट्रेडयूनियन फेडरेशन के इन विश्राम गृहों में, मज़दूरों को, १३ दिन की छुट्टियां मनाने के लिये केवल ३० मार्क देने पड़ते हैं। इसके अलावा उनको केवल एक तिहाई रेल का किराया देना पड़ता है। श्रम करने वाले १६००० श्रमिकों को हर साल, विदेशों की यात्रा करने का अवसर मिलता है। इसके लिये 'ट्रेडयूनियन फेडरेशन' के पास अपने दो यात्रा-यान हैं।

'सूचना पत्रिका'

चन्दे की दर

वार्षिक २)

अर्ध-वार्षिक १)

एक प्रति २० न. पै.

'मुर्दे' ज़िन्दा हैं...

(पृष्ठ १२ का शेष)

निग्टवर्ग, दूसरा नौसेना हवाई स्क्वाड्रन, याडे-शलेसविग; हांइज़ डाइटेर ब्रेनिग, पहला आर्डनेन्स स्कूल ५०, एरडिनेजन; कलाउस राइखार्ड्ट, यानचालक ट्रेनिंग स्कूल, लैंडस्वर्ग-लेख

दूसरे चित्र में :

बैठे हुये (बाईं से दाईं ओर):

हरबर्ट बोइमर, बखतरबंद इंजीनियरी कम्पनी ११०, बोगेन डोराड; होबर्ट स्टूख़मान्न, परिवहन बटालियन ९१०, इवाइ ब्रूखेन-पाल्ज़; पीटर पिटज़ेन, दूसरी ६० बी० सी० डिफेन्स कम्पनी, सनथोपेन-अल्लागाड।

खड़े हुये (बाईं से दाईं ओर):

वोल्फगांग वोग्ट, जलथल इंजीनियरी ब्रिगेड क्रं १०१, मिनडेन वेस्टफालेन; एर्विन मिरात, बखतरबन्द बटालियन २९३, इम्मेनडिनजेन-वाड्रेन; बरथोल्ड विज़ीन, वायुसेना यान-मार बटालियन ४१, एस्सेन-क्रूक्फेरड्रेड; मानफ्रेड शूइस्सलेर, इंजीनियर बटालियन ७१९, कूलन-लोगेरिख़; विल्ली साल्ज़मन्न, सप्लाइ कम्पनी ४५३, कोबलेन्ज़; गुनट्राम हाफ्फमन्न, संचार बटालियन ७६१, वूप्पेरटाल; एलबर्ट केसटेडे, बखतरबन्द बटालियन २०३, हेम्मेर-इसेरलोह; पीटर जोज़फ, शुइड्डेर, ३२वीं बखतरबन्द बटालियन, नीनबुर्ग-वेसर।

112575

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी पत्री

सम्पादक महोदय,

आपके यहां से प्रकाशित 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। पाठक वर्ग, विशेषतः, भारत जर्मन सांस्कृतिक, व्यापारिक आदान-प्रदान के समाचारों को बड़े चाव से पढ़ते हैं। विद्यार्थी, नई वैज्ञानिक खोज में रुचि लेते हैं। 'सूचना पत्रिका' सचमुच उन सब की ज्ञानवृद्धि में सहायक होती है। भारत ज. ज. ग. सहयोग निरंतर बढ़ता रहे, ऐसी कामना है।... दीपावली की शुभ कामना!

आपका
संचालक, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ,
केडिया नगर, अमरावती।

मान्य महोदय,

आपकी अक्तूबर मास की 'सूचना पत्रिका' मिली। पढ़कर पता चला कि जर्मम जनवादी गणतंत्र ने, ७ अक्तूबर को, चौदहवें वर्ष में पदार्पण किया है। यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि इसने १३ वर्ष की अवधि में, आश्चर्यजनक उन्नति की है और इस समय यह देश, यूरोप के शक्तिशाली औद्योगिक देशों में से एक है। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह अधिक से अधिक उन्नति करे। 'फ्रिटज़ डेन' की जीवनी पढ़ी। इन जैसे महान व्यक्तियों से ही किसी देश का सिर ऊंचा उठता है।

भवदीय
दर्शन कुमार भाटिया,
अमृतसर।

श्रीमन्,

'पत्रिका' मिली, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। अनेक पाठकों ने 'पत्रिका' पढ़ी और यह निश्चित मत प्रकट किया कि यह ज. ज. ग. की संस्कृति, साहित्य, उद्योग एवं लोक जीवन की परिचायक है। स्वयं मेरी राय भी यही है कि 'पत्रिका' एक ऐसा आईना है जो, ज. ज. ग. के जन-जीवन का हर पहलू बड़े स्पष्ट रूप में हमारे सामने झलकाता है।

आपसे अनुरोध है कि 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से भेजते रहिये...

भवदीय
महेन्द्र कुमार
मंत्री, ज्ञान दाता संस्था,
बीकानेर।

मान्यवर,

अभी अभी 'सूचना पत्रिका' का अक्तूबर अंक प्राप्त हुआ। आप हम भारतीयों को कितना स्नेह देते हैं, यह आपकी दीपावली की शुभ कामनायें स्पष्ट करती हैं। एक दूसरे के प्रति यह स्नेह भावना बढ़ती रहेगी और एक दिन हम मित्र देश भाई के बन्धन में बंध जायेंगे।

आप एक सुन्दर पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। यह बात उस में प्रकाशित सामग्री का पठन करने पर स्वतः सिद्ध होती है। इस विषय में कुछ और कहना केवल पुनरुक्ति मात्र होगा।

जर्मन मित्रों से किस प्रकार संपर्क सम्भव हो सकता है, कृपया बताने की कृपा करें। धन्यवाद!

भवदीय
गिरिराज सरन,
मंत्री, हिन्दी साहित्य निकेतन,
सम्भल।

अध्ययन की सुविधाएं

(पृष्ठ १८ का शेष)

बच्चों तथा घर-गृहस्ती की ओर ही ध्यान देना चाहिये (नौकरी छोड़कर) इस राय से मैं भी सहमत थी। जब मैंने पूरी तरह घर-गृहस्ती संभाली तो मुझे पता चला कि केवल पैसा कमाना ही एक मात्र कार्य नहीं।... लेकिन गृहस्ती के साथ-साथ मुझे अपनी ट्रेनिंग (तकनीकी ज्ञान की जानकारी) की भी चिन्ता थी। मैं तकनीकी क्षेत्र में पिछड़ना न चाहती थी। इसलिये जब सरकार ने गृहस्ती नारियों के लिये पत्र-व्यवहार प्रशिक्षण विधि को चालू किया तो मेरे हर्ष की सीमा न रही। मैं ट्रेनिंग लेती रही हूँ घर बैठे-बैठे। अब अगले शरद्काल में मैं बर्लिन के तकनीकी हाई स्कूल में, इंजीनियर बनने के लिये, दाखिला लूँगी। दाखिला लेने के लिये, जन विश्वविद्यालय के आवश्यक परीक्षा में मैं उत्तीर्ण भी हो चुकी हूँ। मेरा पूरा विश्वास है कि जब तक नन्हीं साबिने के काम का बोझ हल्का हो जायेगा मैं तब तक इंजीनियर बन चुकी हूँगी और अपने कारखाने में इंजीनियर के रूप में ही नियुक्त हूँगी।..."

श्रीमती बर्गर के इन शब्दों में एक दृढ़ आत्मविश्वास झलक रहा था। श्रीमती बर्गर इस संदर्भ में एक अपवाद नहीं बल्कि ज़.ज.ग. में, उनकी तरह ही गृहस्ती नारियां, पत्र-व्यवहार आदि के माध्यमों से नवीनतम तकनीकी ज्ञान को प्राप्त करके देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

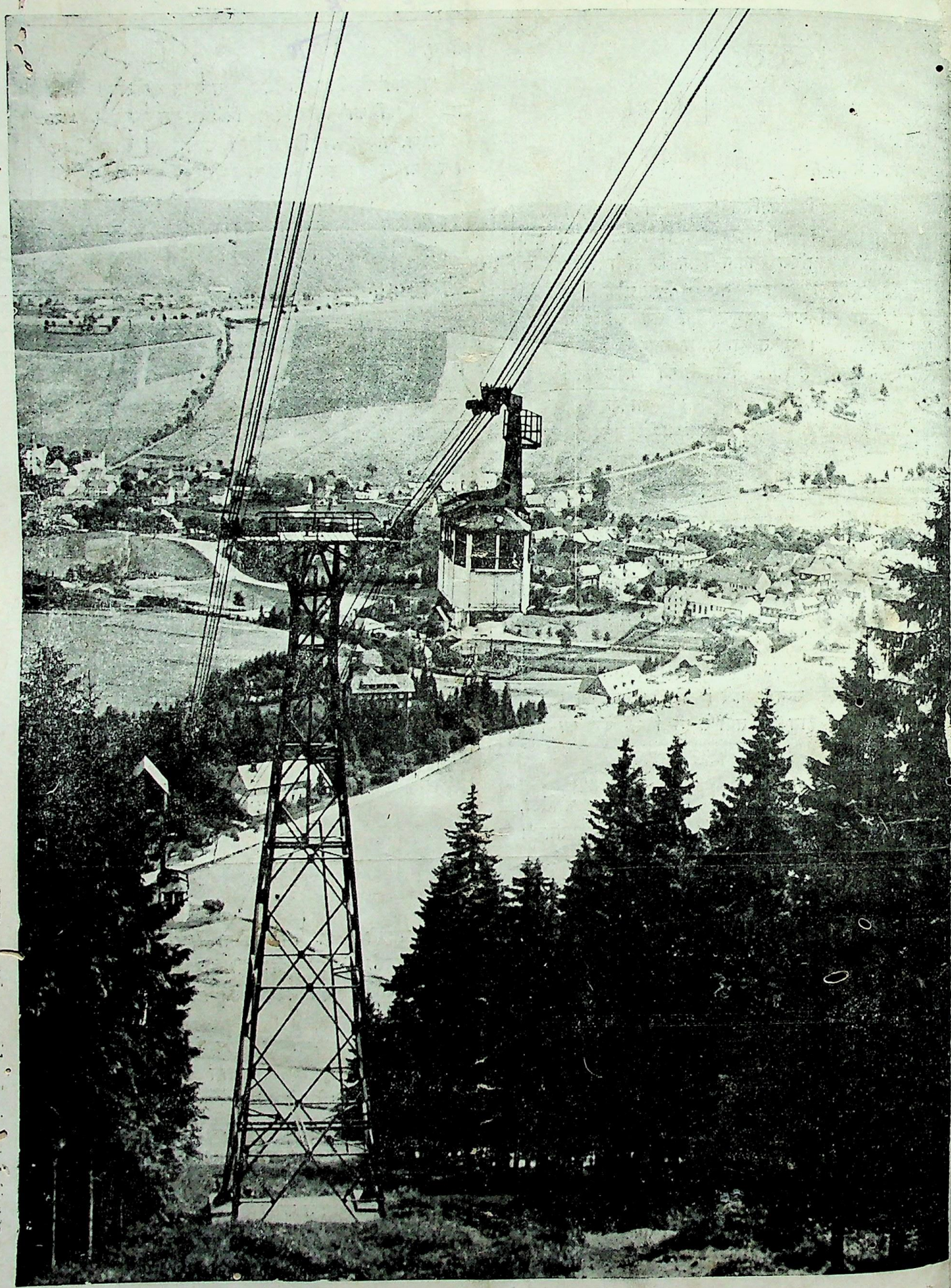

CC-0. In Public Domain. Gurukul-Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112575

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri